॥ अथ टीकावार्त्तिकसंघटितं समवायाख्यं चतुर्थाङ्गसूत्रं प्रारभ्यते ॥

बनारस जैनप्रभाकर छापाखाने मे

JAIN A.23.

St. 40. C 505 1/6

5774

॥ विज्ञापनम् ॥

सकल समान धर्मी श्रावक महाशयों से विनय पूर्वक निवेदन करता हूं कि दशविध दृष्टांत दुर्लभ मनुष्य शरीर पाके ज्ञान वृद्धि के हेतु यत्न करना बहुत आवश्यक है, क्योंकि जिस्सें जुआरी मद्यप चोर और व्यभिचारी इत्यादि दुष्कीर्त्ति और परभव में अंध पंगु कुष्टी काक कृमि और कीट इत्यादि नरक पीडा देनेवाले अकर्तव्य कर्म, धर्मी दयालु दाता सत्यवक्ता सुशील और सज्जन इत्यादि सुकीर्त्ति और परभव में धनसंपत्ति सुख सुन्दर शरीर आरोग्य पुत्र कलत्र सुख इत्यादि स्वर्गसुख मोक्षसुख देने वाले कर्त्तव्य कर्म जाने जाते हैं।

ज्ञानी से ज्ञान मिलता है, यद्यपि ज्ञान और ज्ञानी दोनों अनादि अनंत है तथापि एक पुरुष की अपेक्षा से परस्पर कार्य कारण सम्बन्ध सिद्ध है. क्यों कि ज्ञान विना ज्ञानी और ज्ञानी विना ज्ञान होना असंभव है। ज्ञान होने में श्रुत व्याकरण काव्य कोश ज्योतिष न्याय और अन्य अन्य दर्शन इनका सद्गुरु अध्ययन

अध्यापन श्रवण और मनन इत्यादि सामग्री अपेक्षित होती है. ऐसी आख्यायिका प्रसिद्ध है कि प्राचीन समय में मनुष्यों की धारणशक्ति ऐसी विलक्षण थी कि जिससे शृंखलाबद्ध अनेक ग्रंथ उनको कंठाग्र रहते थे । अन्य मतमें उनके वंशीय लोग अब भी प्रसिद्ध हैं जैसे चौबे दुबे त्रिपाठी यजुर्वेदी सामवेदी और अपने मतमें पाठक, वाचक, वाचनाचार्य औ उपाध्याय कहलाते हैं । प्रसिद्ध है कि उस समय में अठारह प्रकार की लिपि प्रचलित थी परन्तु ग्रंथकंठस्थ रहने के कारण पुस्तक लिखने का परिश्रम व्यर्थ समझते थे । और भी जो प्रथम गणधर तीर्थंकर महाराज के मुख से (उप्पन्ने इवा विगमे इवा धुवे इवा) त्रिपदी सुन के १२ अंग की रचना कर देते थे और स्मरण रखते थे इसमें केवल श्रुतज्ञान बलके सिवाय और कोई कारण नही समझा जासकता । अधुनातन मनुष्यों को जो अहर्निश अभ्यस्त भी ग्रंथ और उनका तात्पर्य नही याद रहता है ज्ञानावरणीय के सिवाय कौन कारण कहेंगे । ज्ञानावरणीयकर्म का उदय भी कुछ एकही समय नही हुआ किन्तु क्रमसें जौं जौं देश क्षेत्र काल और भाव विपरीत आते गये तौं तौं ज्ञानकी भी न्यूनता होती चली, होते होते श्री भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण से ९८० वर्ष (ईसवी सन् ४५४ । विक्रम संवत ५१०) बीत जाने पर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणने सोचा कि पुस्तक विनालिखे यह स्मरणशक्ति

जाती रहैगी इसलिये वल्लभी पुरमें साधु समुदायके कंठस्थ जो सूत्रादि ग्रन्थ थे पुस्तकों में लिखे, परन्तु उस समय कागद और स्याही बनानेकी रीति न होनेके कारण ताडपत्रके ऊपर लोह लेखनी से खुदवाके पुस्तकालय स्थापन किए, (यह बात कुछ मेरेही लिखने पर नहीं हर कोई स्वमती परमती जानते हैं और इतिहास प्रसिद्ध है, अबतक भी ताडपत्र के ऊपर लिखे ग्रन्थ देखने में आते हैं) पीछे जब कागद स्याही बनानेकी कला प्रसिद्ध हुई तब ताडपत्र से कागद पर लिखाके पुस्तकालय किए ताडपत्र के ऊपर लिखने से कागद के ऊपर लिखने में कम मेहनत है शीघ्रही लोगोंने अंगीकार कर लिया, कागद पर लिखने में एक ग्रंथ चिरकाल में लिखके तयार होगा जब कि बहुत ग्रंथ लिखाना होय तो बहुत से लेखक चाहियें द्रव्य व्यय भी अधिक होगा तिस्में भी यदि कोई तरहका विघ्न आय पड़े कार्य पूर्ण नहो. क्योंकि एकतो श्रेयांसि बहुविघ्नानि, दूसरे मनुष्यायु अल्प, जब तक कार्य समाप्त नहो चिन्ता लगी रहती है और पुण्योपार्जनभी तत्कर्म समाप्ति में है. ग्रंथ संग्रह किये विना अध्ययन अध्यापन श्रवण मननादि जिनसे ज्ञान वृद्धि होती है सर्वथा नष्ट हो जांयगे पहलेही द्वादश १२ वर्षके तीन दुर्भिक्ष होने से कितने ही ग्रंथ लुप्त होगये, और पीछे से मुसलमानोंने नष्ट किये. जो बचे हैं लिखने लिखाने की अशक्तता से वर्त्तमान काल में पैंतालीस आगम एक

जगह नही मिलता है, और अभ्यास करना तो एक कहानी सा होगया (वाहरे काल महिमा) इस हेतु वर्त्तमान कालाश्रित जितने ज्ञान वृद्धि के उपाय हैं देखा तो सर्वोत्कृष्ट मुद्रायन्त्र है इस कला से मेरा मनोरथ जो के ५०० ठिकाने ४५ आगम का भंडार करने की इच्छा है शीघ्रही सिद्ध होगी, लिखने लिखाने के परिश्रम से बचेंगे प्रायः लिखी पुस्तकों से छपी हुई पुस्तकें शुद्ध होगी यदि कोई गुणी अधिकारी होगा तो, यह कला हमको कृतार्थ करने को ही प्रचलित हुई है, कोई उपाय ज्ञानवृद्धि के लिए सहज और सुंदर पृथ्वी पर इसके सेवाय नही है ग्रंथ छपवाना सुरूकिया। यह कला युरूप देशीय अन्य धर्मियों से प्राप्त हुई है, अग्राह्य है, ग्रंथ छपवाने में आशातना होती है, इत्यादि असूया करना अनुचित है, क्योंकि वस्तु का उत्पत्तिस्थान और उत्पादक चाहै कोई हो सर्वोपकारिता, अल्पकालक्षेप, ज्ञानवृद्धि, पुस्तकशुद्धतादिक, महाकार्य के लिये अवश्य ग्रहण करनी चाहिये इस के ग्रहण करने में तथा पुस्तक छपवाने में वडा उपकार पुण्यबंधन है दोष कुछ भी नही है, पक्षपात छोड के ग्रहण करें। यदि वस्तुके उत्पत्तिस्थान की ओर देखियेगा जातक तथा पारसी जो यावनी विद्या है आप क्यों पढते हैं ? जो चीज उन लोगोंकी पैदा की है वहुतसी आपके परिभोग में आती है, कस्तूरी गोरोचनादि कहां पैदा होता है और किस काममें आप खरच

करते है ? केवल वस्तु में जो गुण हैं ग्रहण करना और दोषको छोडदेना उचित है । इसलिए पुस्तक सुलभता, ज्ञानवृद्धि की अति उत्कृष्ट अत्यंत सहज सुगम रीति को अस्वीकार करके ज्ञानहानि नही करनी चाहिये, और मध्यस्थ बुद्धिसे विचारिये तो पूर्वाचार्योंने वडे परिश्रम से परोपकारार्थ जो ग्रन्थ बनाये हैं किसी के देखने में न आवें ऐसा गुप्त रखना कि कुछ दिन में कीडे खाजांय और ग्रन्थ का नाममात्रही शेष रह जाय उनका परिश्रम व्यर्थ होजावे इसके सिवाय कोई अविनय और आशातना 'कर्मबंधका हेतु, नही है, वही ग्रन्थ छपवाके प्रसिद्ध करना हरएक विद्वानोंको देना तद्द्वारा वह लोक ज्ञान पावें इससे अधिक कोई विनय और श्रेष्ठकार्य नही है, यही सर्व कारण सोच मैं इस शुभ कार्यमें प्रवृत्त हुआ हूं आप लोगभी यथा शक्ति प्रवृत्त होंय कि जिससे पुन जैनमत युवावस्था को प्राप्त होय इति शम् ॥

राय धनपतिसिंह बहादुर

मकसूदाबाद अजीमगंज

भूमिका ।

समवाय नामक चउथे अङ्ग का अनयोग स्थाननाम तृतीय अङ्गानुयोग के अनन्तरही क्रमसे प्राप्तहै ,

और अनुयोग की प्रवृत्ति, फल योग मङ्गल समुदायार्थ द्वारभेद निरुक्तिक्रम और प्रयोजन आदिक द्वारों के निरूपण से होती है सो सब इहांभी स्थानाङ्ग के समान है ॥

समवाय चतुर्थ अङ्गानुयोग, राग तथा द्वेष आदि विषम भाव शत्रुओं की सेना के समूल उन्मूलन करने से, तथा त्रिभुवन के समस्त पदार्थों को हस्तामलक समान देखना और जानना तत्पूर्वक विसंवाद रहित वचन होने से त्रिभुवनरूप भवन के आंगन में सुधानिधान निर्मल जिनके यश की राशि फैल रही है ऐसे जिनेन्द्र परम कारुणिक श्री श्रमण भगवन्त महावीर वर्द्धमान स्वामी ने जैसा कहा उन के पांचवें गणधर आर्य सुधर्मास्वामीने श्रमणसंघ और अपनी साधुसंतति के लिये सूत्ररूप से संकलित किया, समवाय इस पदका समुदायार्थ यह है कि—सम्यक् प्रकार अधिकता करके जीव अजीव आदि अनेक पदार्थों का ज्ञान है जिसमें, अथवा समवाय सम्यक् ज्ञान इसग्रंथ मे कहाहै, समवाय शब्दसे आत्मा आदि कितने ही पदार्थ एक दो तीन चार इत्यादि एकोत्तर अर्थात् एक के बाद दो और दो के बाद तीन इस क्रमसे सौ पर्यंत और अनेकोत्तर अर्थात् अनेक की वृद्धि कोटा कोटि पर्यंत संख्या विशेषित इस ग्रंथ में कहे हैं, और द्वादशांग गणिपिटक के समाचार तथा आत्मादि पदार्थों को एकेंद्रियादि पर्याप्ता अपर्याप्त नारक

तिर्यंच मनुष्य देव भेदमें और इनके आहार लेश्या आवास नुपपात च्यवन अवगाहना उपधि वेदना उपयोग योग इंद्रिय कषायादि, मेरु आदि पर्वतों का विष्कंभादि, कुलकर तीर्थंकर गणधर चक्रधर बलदेव वासुदेव इत्यादि अनेक पदार्थ विशेषतया इस ग्रंथ में कहने से समवाय ऐसा नाम हुआ. वही समवाय क्षायोपशमिक भावरूप प्रवचन पुरुष के अगकी तरह अंग है इसलिए समवायांग नाम हुआ. इस ग्रंथ में भाव समवायांग काही अधिकार है, यह समवायांग एक अध्ययन रूप एक श्रुतस्कंध एक उद्देशक और एक समुद्देश है. इस समवायांग के पदार्थोंका तात्पर्य शीघ्र जानने के लिये उपक्रम १ निक्षेप २ अनुगम ३ और नय ४ अनुयोग अर्थात् सूत्रका अर्थसे संबंध अथवा अनुकूल व्यापार अर्थात् सूत्रार्थ प्ररूपण रूप क्रियाविशेष कहे हैं, यही चारों जैसे नगर मे सुखसे प्रवेश करने मे चार द्वार होते हैं वैसे इस प्रवचनमें प्रवेश करने के चार अनुयोग रूप द्वार (प्रवेशमुख) हैं. इन अनुयोगों से जीवाजीवादि पदार्थ ज्ञान होने से तत्त्वज्ञानरूप परम पुरुषार्थ सिद्ध होता है इसलिये इसके पढने पढाने में अवश्य यत्न करना चाहिये. परंतु पढने का अधिकारी वही होगा जोकि मोक्ष मार्ग का अभिलाषी गुरु का आज्ञाकारी और दीक्षा लिये आठ वर्ष जिसको व्यतीत हुआ होगा समवायाङ्ग सूत्र देनेका अवसर भी वहीहै. अन्यथा देनेमें तीर्थंकराज्ञा नाशादि दोषापत्ती होतीहै; इतिशम्॥

।८॥

नकल चिठी १

श्रीमज्जिनवरप्रसादलब्धसद्बुद्धिप्रकाशितधर्मरत्नेषु श्री ५ रायधन पतिसिंहबहादुरेषु सविनयमावेदनम् ।

आगे, मैंने सुनाहै आप की एसी इच्छाहै कि पैंतालिसों जैनागम की पुस्तकें मूल टीका और भाषाटीका सहित पांच२सौ कापी छपें और साधु श्रावकों के पठन पाठन के लिये पांच सौ स्थानमें पुस्तकालय स्थापित हों सो यह अति आनंदकी बातहै, परतु जिन महाशयों को द्रव्य देके पुस्तक लेने की इच्छा हो उन लोगों के निमित्त भी यदि आप की आज्ञा हो तो बेचने के वास्ते पांचसौ कापी जैन बुक सुसाइटी की ओर से भी छपवा ली जावें यह पुस्तकें में अजीमगज से प्रकाश करूंगा अग्रे शुभम्, संवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । ११

अजीमगज द० जैन बुक सुसाइटी

शहर मुरसीदाबाद कार्यसम्पादक

सुबुद्धिसेठ

नकल चिठी २

श्रीविविधविद्याविचारतत्परेषु जैन बुक सुसाइटीकार्यसम्पादक महाशयेषु प्रतिनिवेदनम् ।

जो कि पत्र आपका द्रव्य देके खरीदनेवाले लोगों के लिये सुसाइटी की ओर से पैंतालिसों जैनागम की पांचसौ पुस्तकें छपवा लेने की आज्ञा के विषय में आया सो मैं स्वीकार करता हूं कि आप जैन बुक सुसाइटी की तरफ से आगम की प्रत्यक्ष पांच२ सौ पुस्तकें बेचने के वास्ते छपवा लेवें, परतु पांचसौ से अधिक छपनेकी आज्ञा में नहीं देता, यदि और कोई छपवाना चाहै तो उचित है कि पहले मुज से आज्ञा लेलेवे क्योंकि इन ग्रन्थों पर रजस्टरी हुईहै, अग्रे शुभम् ।

संवत् । १८३३ । मि० । चै० । शु० । १३

अजीमगंज

शहर मुरसीदाबाद

द० रायधनपतिसिंह बहादुर

॥ विज्ञापनम् ॥



श्रीमज्जिनवरपदकमलमधुकरायमाण याचककल्पद्रुमायमाण वङ्गदेशभूषण कृतदम्भुतीषणा जीमगञ्जवास्तव्य गुणगणसंसव्य ज्ञातसार मानसारी सवाल दीनहीनपाल धृतव्यापारधुर रायबहादुर क्षितिपति धनपति सिंहस्य धर्मोपदेशेन शुभाशयेन ज्ञानवृद्धये मोहनिवृत्तये ध्यातजिनपतीनां सकलयतीनां श्रेयोग्राहकाणां श्रावकाणां चोपकाराय सकलविद्याकरे कल्याणकपुरे वाराणसीनगरे रुचिराचरतन्त्रे जैनप्रभाकरयन्त्रे कृतसम्य-ग्व्याख्यं समवायाख्यं जीवाजीवपरिच्छेदबोधकं हृदयमलशोधकं प्रवचनपुरुषस्याङ्गमिव तुरीयमङ्गं तपोधनिना मुनिना सदाऽतन्द्रेण नानकच न्द्रेण सुन्दर मुद्रितमभूत् ॥

समवायाख्यंसूत्रं तुरीयमङ्गंमयातिसंशोध्य ॥
मुद्रितमेतज्जनितं पुण्यंभविकान्सदापातु ॥ १ ॥

॥ टीका ॥

॥ श्रीजिनायनमः ॥ श्रीवर्द्धमानमानम्य समवायांगवृत्तिका । विधीयतेन्यशास्त्राणां प्रायःसमुपजीवनात् ॥ १ ॥ दुः[illegible]या भणिष्यतेयदितथं
मयेह । तद्दोधनैर्मामनुकंपयद्भिः शोध्यंमतार्थक्षतिरस्तुमेव ॥ २ ॥ इहस्थानाख्यतृतीयांगानुयोगानंतरं क्रमप्राप्तएवसमवायाभिधानचतुर्थांगानुयोगोभवतीति-
सोऽधुनासमारभ्यते तत्रचफलादिद्वारचिंतास्थानांगानुयोगवत्क्रमादवसेया नवरं समुदायार्थोयमस्य समिति सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमयः परिच्छेदो-
जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौसमवायः समवयंतिवा समवतरंति सं ति नानाविधाआत्मादयोभावाअभिधेयतयायस्मिन्नसौ समवायइति
सचप्रवचनपुरुषस्यांगमिवांगमितिसमवायांगं तत्रकिलश्रीश्रमणमहावीर वर्द्धमानस्वामिनःसंबंधी पंचमोगणधरआर्यसुधर्मस्वामीस्वशिष्यंजंबूनामानमभिसम
वायांगार्थमभिवित्सुः भगवतिधर्माचार्येबहुमानमाविर्भावयन् स्वकीयवचनेनच समस्तवस्तुविस्तारस्वभावभासिकेवलालोककलितमहावीरवचननिश्रिततयावि
गानेनप्रमाणमिदमिति । शिष्यस्यमतिंचारोपयन्निदमादावेवसंबंधसूत्रमाह ॥ सुयंमेइत्यादि श्रुतमाकर्णितंमेमयाहेआयुष्मन्चिरंजीवितजंबूनामन् तेणंति यो
सोनिर्मूलोन्मूलितरागद्वेषादिविषमभावरिपुसैन्यतया भुवनभावावभासनसहसवेदनपुरस्सराविसंवादिवचनतयाच त्रिभुवनभवनप्रांगणप्रसर्पत्सुधाधवलयशोरा
शिस्तेनमहावीरेणभगवतासमग्रैश्वर्यादियुक्तेन एवमितिवक्ष्यमाणेन प्रकारेणाख्यातं अभिहितमात्मादिवस्तुतत्वमितिगम्यते, अथवा आउसंतेणंति भगवतेत्यस्य

॥ मूल ॥

॥र्द्य॥ श्रीविघ्नराजायनमः ॥ सुयंमेआउसंतेणं भगवयाएवमक्खायं इहखलुसमणेणं भगवयामहावीरेणं

॥ भाषा ॥

॥ देवदेवंजिनंनत्वा पार्श्वचन्द्रादिसद्गुरून् । समवायांगसूत्रस्य वार्त्तिकंविदधाम्यहम् ॥ १ ॥ पांचमोगणधरसुधर्मास्वामीजंबूशिष्यप्रतेकहेछे सांभल्योमेंभगवंतनें
समीप ॥ हेसंयमसुहमाउखानाधणीजंबू तेणे भगवंतज्ञानवंतरूपवंते एहवोजे आगलकहीस्येंतेकह्यो एहवोजिनप्रवचनने विषेनिश्चे तेभगवंतकेहवाछे श्रमण

॥ टीका ॥

विशेषणमायुष्मतांचिरजीवितवताभगवतेति अथवापाठांतरेणमयेत्यस्यविशेषणमिदं आवसतामयागुरुकुलेआमृशतावासंस्पृशतावामयाविनयनिमित्तंकरत
लाभ्यांगुरोः क्रमकमलयुगलमिति यद्वा आउसंतेणंति आयुष्मताणेनप्रीतिप्रणवमनसेति । यदाख्यातंतदधुनोच्यते एगेआयाइत्यादि कस्यांचिद्वाचनायामपर
॥ १ ॥ मपिसंबंधसूत्रमुपलभ्यते यथा इहखलु समणेणं भगवएइत्यादि तामेवचवाचनांबृहत्तरत्वाद्वाख्यास्यामः इदंचद्वितीयसूत्रं संग्रहरूपप्रथमसूत्रस्यैवप्रपंचरूपमवसे
यमस्यचैवंगमनिका इहास्मिन्लोके निर्ग्रंथतीर्थेवा खलुवाक्यालंकारे अवधारणेवा यथाचइहैव नशाक्यादिप्रवचनेषु श्राम्यतितपस्यतीति श्रमणस्तेनेदंचांति
मजिनस्यसहसम्मतिसम्पन्नंनामांतरमेवयदाह सहसंमइयासमणेत्ति । भगवतेतिपूर्ववत् महांश्चासौ वीरश्चेतिमहावीरस्तेनेदंच महासात्विकतया प्राणप्रहाणप्र
वणपरीषहोपसर्गनिपातिप्यकंपत्वेनपीयूषपानप्रभुभिराविर्भावितमाहच अयलेभयभेरवाणंखंतिखमेपरीसहाणवयवग्गाणंपडिमाणंपरेदेवेहिंकएमहावीरेत्तिक
थंभूतेनेत्याह आदौप्राथम्येनश्रुतधर्ममाचारग्रंथात्मकंकरोतितदर्थप्रणायकत्वेनप्रणयतीत्येवंशीलआदिकरस्तीर्थकरस्तेन तरंतितेनसंसारसागरमितितीर्थंप्रव
चनंतद्व्यतिरेकाद्विहसंघस्तीर्थंतस्यकरणशीलत्वात्तीर्थकरस्तेन तीर्थकरत्वंचतस्यनान्योपदेशबुद्धत्वपूर्वकमित्यतआह स्वयमात्मनैवनान्योपदेशतः सम्यग्बुद्धोहे
योपादेयवस्तुतत्वंयेनेतिशानितिस्वयंसंबुद्धस्तेन स्वयंसंबुद्धत्वचास्यप्राकृतस्येवसंभाव्यं पुरुषोत्तमत्वादस्येत्यतआह पुरुषाणांमध्येतेनतेन अतिशयेनरूपादिनोन्नतत्वा

॥ मूल ॥ आइगरेणं तित्थगरेणं सयंसंबुद्धेणं पुरिसुत्तमेणं पुरिससीहेणं पुरिसवरपुंडरीएणं पुरिसवरगंधहत्थिणा लोगत्त

॥ भाषा ॥

तपस्वीतेणे भगवंतऐश्वर्यादिकगुणेकरीसहिततेणेकर्मरूपवैरीने विदारेतेमहावीरकहीयेतेणे श्रुतधर्मनीआदिनाकरणहारतेणे तीर्थचतुर्विधसंघनाकरणहा
रतेणे परनाउपदेसविनापोतेजप्रतिबोधपाम्यातेणेकरी स्वामीसर्वपुरुषमांहिउत्तमतेणे पुरुषमांहिसिंहसरीखातेणेकल्यानजाइतेणे पुरुषमांहिप्रवरप्रधान-

दूर्द्धर्षितत्वादुत्तमः पुरुषोत्तमस्तेन प्रथमपुरुषोत्तमत्वमेवसिंहाद्युपमानत्रयेणास्यसमर्थयन्नाह सिंहइवसिंहःपुरुषश्चासौसिंहश्चेतिपुरुषसिंहः लोकेनहिसिंहेशौर्यं ॥ टीका
मतिप्रकृष्टमभ्युपगतमतःशौर्येसउपमानंकृतः शौर्यंतुभगवतोबाल्येप्रत्यनीकदेवेनभाप्यमानस्याप्यभीतत्वात् कुलिशकठिनमुष्टिप्रहारप्रहतिप्रवर्द्धमानामरशरी
र कुब्जताकरणाच्चेत्यतस्तेन तथा वरंचतत्पुण्डरीकञ्चवरपुंडरीकंधवलंसहस्रपत्रं पुरुषएववरपुंडरीकं धवलताचास्यभगवतःसर्वाऽशुभमलीमसरहितत्वात् सर्वैश्च
शुभैरनुभावैःशुद्धत्वादित्यतस्तेन तथा वरश्चासौगंधहस्तीएववरगंधहस्तीपुरुषएववरगंधहस्तीयथागंधहस्तिनोगंधेनैवसर्वेगजाभज्यन्तेतथाभगवतस्तद्देशविहरणेन
ईतिपरचक्रदुर्भिक्षजनडमरिकादीनिदुरतानिनश्यंतीतिशतयोजनमध्येऽतस्तेनपुरुषवरगंधहस्तिनानभगवान्पुरुषाणामेवोत्तमःकिंतुसकलजीवलोकस्यापीत्यत
आहलोकस्यतिर्यग्नरनारकिनाकिलक्षणजीवलोकस्योत्तमश्चतुस्त्रिंशद्बुद्धातिशयाद्यसाधारणगणोपेततयासकलसुरासुरखचरनरनिकरनमस्यतयाचप्रधानोलोको
त्तमस्तेनलोकोत्तमत्वमेवास्यपुरस्कुर्वन्नाहलोकस्यसंज्ञिभव्यलोकस्यनाथःप्रभुर्लोकनायस्तेननाथत्वञ्चास्ययोगक्षेमकृत्त्वान्नाथइतिवचनादप्राप्तसम्यग्दर्शनादेर्योगकर
णेनलब्धस्यतस्यैवपालनेनचेतिलोकनाथत्वञ्चतात्विकंतद्धितत्वेसतिसंभवतीत्याह लोकस्यैकेंद्रियादिप्राणिगणस्यहितआत्यंतिकतद्रक्षाप्रकर्षप्ररूपणेनानुकूलवृत्ति
र्लोकहितस्तेन यदेतन्नाथत्वंहितत्वंवातद्भयार्त्तानांयथावस्थितसमस्तवस्तुस्तोमप्रदीपणेननान्यथेत्य।हलोकस्यविशिष्टतिर्यग्जन्मजरामरणरूपस्यांतरतिमिरनि
करनिराकरणेनप्रकृष्टपदार्थप्रकाशकारित्वात्प्रदीपइवप्रदीपोलोकप्रदीपस्तेनइदंचविशेषणं दृष्टलोकमाश्रित्योक्तमथदृश्यंलोकमाश्रित्याह लोकस्य लोक्यतेइति

पुंडरीककमलसमानजिमकमलपंकपाणीयेंनलीपैंतिमभगवंतकामभोगेंनलीपैंतणे पुरुषमांहिवरप्रधानगंधहस्तीसमानअन्यतीर्थीमदक्ष डेईतिमारीनासेभगवं
तमेदेखीनेतेणे लोकसमस्तमांहिउत्तमतेणे लोक ८४ लाखजीवायोनितेहनांनाथधणीतेणे लोकभव्यलोकतेहनेहितनाकरणहारतेणे लोक १४ राजप्रमाण ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

लोक इतिव्युत्पत्त्यालोकालोकरूपस्यसमस्तवस्तुस्तोमस्यभावस्याखंडमार्तण्डमण्डलमिव निखिलभावस्वभावावभासनसमर्थः केवलालोकपूर्वप्रवचनप्रभापटल
प्रवर्त्तनेनप्रद्योतं प्रकाशंकरोतीत्येवंशीलोलोकप्रद्योतकरस्तेन ननुलोकनाथत्वादिविशेषणयोगो हरिहरहिरण्यगर्भादिरपि तत्तीर्थिकमतेनसंभवतीतिको
॥ २ ॥ स्यविशेषइत्याशङ्कायांतद्विशेषाभिधानायाह नभयंदयतेप्राणापहरणरसिकोपसर्गकारिष्वपिप्राणिनि दयातीत्यभयदयः अभयावा सर्वप्राणिभयपरिहार
वतीदयाघृणायस्यासावभयदयो हरिहरादिस्तुनैवमितितेनाभयदयेन नकेवलमसावपकारकारिणामप्यनर्थपरिहारमात्रं करोत्यपित्वर्थप्राप्तिं करोती
तिदर्शयन्नाह चक्षुरिवचक्षुः श्रुतज्ञानंशुभाशुभार्थविभागकारित्वा त्तद्दयते इतिचक्षुर्दयस्तेन यथाहिलोकेचक्षुर्दत्वावांछितस्थानमार्गदर्शयन्महोपकारी
भवत्येवमिहापीतिदर्शयन्नाह मार्गसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रात्मकंपरमपदपथंदयत इतिमार्गदयस्तेन मार्गंदर्शयन्महोपकारीभवत्येवमिहापीति यथाहिलोकेच
क्षुरुद्घाटनंमार्गदर्शनंचकृत्वा चौरादिविलुप्तान् निरुपद्रवंस्थानंप्रापयन् परमोपकारी भवत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह शरणंत्राणमज्ञानोपद्रवोपहतानांतद्र
क्षास्थानंतच्चपरमार्थतोनिर्वाणं तद्दयतइतिशरणदयस्तेन यथाहि लोकेचक्षुर्मार्गशरणदानादूर्द्धस्थानजीवितव्यं ददातीत्येव मिहापीतिदर्शयन्नाह जीवनं

॥ मूल ॥

माणं लोगनाहाणं लोगहिएणं लोगपईवेणं लोगपज्जोअगरेणं अभयदएणं चक्खुदएणं मग्गदएणं सरणदएणं

॥ भाषा ॥

तिहांदीवासमाननिथ्यात्वअंधकारटाले लोकगणधरलोकनेंहनेप्रद्योतनाप्रकाशनाकरणहा[illegible]सहित सर्वजीवनेअभयदाननादातारतेणे सम्यकितरूपलो-
चनानादातारतेणे भूलाप्रांणीनेमोक्षमार्गनादातारतेणे सर्वजीवनेशरणनादातारतेणे संयमरूपजीवितव्यनादातारतेणे बोधिबीजसम्यक्त्वनादातारतेणे धर्म

॥ टीका ॥

जीवोभावप्राणधारणमनरणधर्मत्वमित्यर्थस्तं दयतइति जीवदयोजीवेषुशा दयायस्यसजीवदयोऽतस्तेन इदंचानंतरोक्तं त्रिविशेषणकदंबकं भगवतोधर्ममयस्तत्वात् संपन्नमिति धर्मात्मकतामस्यविशेषणपंचकेनाह धर्मंश्रुतचारित्रात्मकं दुर्गतिप्रपतज्जंतुधारणस्वभावंदयतेददातीतिधर्मदयस्तेन तद्दानंचास्यतद्देशनादेवेत्यतो माह धर्ममुक्तलक्षणं देशयति कथयतीतिधर्मदेशकस्तेन धर्मदेशकत्वंचास्य धर्मस्वामित्वेसति नपुनर्नटानटस्येतिदर्शयन्नाह धर्मस्यक्षायिकज्ञानदर्शनचारित्र: लक्षणस्यनायक: स्वामी यथावत्पालनाद्धर्मनायकस्तेन तथाधर्मस्यसारथिर्द्धर्मसारथि: यथारथस्यसारथी रथंरथिकं मश्वांश्चरक्षति एवंभगवांश्चारित्रधर्मांगानांसं यमात्मप्रवचनाख्यानां रक्षणोपदेशाद्धर्मसारथिर्भवतीति तेनधर्मसारथिना तथात्रय: समुद्रा श्चतुर्थो हिमवान् एतेचत्वार: अंता: पृथिव्या:पर्यन्तास्तेषु स्वामि तयाभवतीति चातुरंत: सचासौचक्रवर्तीच चातुरंतचक्रवर्ती वरश्चासौचातुरंतचक्रवर्तीचेति वरचातुरंतचक्रवर्त्ती राजातिशय: धर्मविषये वरचातुरंतचक्रव र्त्ती धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्ती यथाहि पृथिव्यांशेषराजातिशायी वरचातुरंतचक्रवर्त्ती भवति तथाभगवान्धर्मविषये शेषप्रणेतृणांमध्ये सातिशयत्वात्तथो

॥ मूल ॥

जीवदएणं बोहिदएणं धम्मदएणं धम्मदेसएणं धम्मनायगेणं धम्मसा
रहिणा धम्मवरचाउरंतचक्कवहिणा अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं

॥ भाषा ॥

नादातारतेणेकरी धर्मोपदेसनाकहणहारतेणे धर्मनानायकअधिकारीतेणे धर्मनासारथीभूलाप्राणीनेमार्गेआणेतेणे च्यारिगतिनोअंतकारकधर्मतेणेकरीच क्रवर्त्तिसरीखात्रिभुवननोराज्यपालेतेणे द्वीपनीपरेंसरणानात्राणआधारदेणहार चातुर्गतिकसंसारतेहनिवारिवानेविषेआधारभूत अप्रतिहतअरखलित

॥ टीका

ष्यत इति तेनधर्मवरचातुरंतचक्रवर्तिना एतच्च धर्मदायकत्वादिविशेषणपंचकत्वं प्रकृष्टज्ञानादियोगेसति. भवतीत्यत आह अप्रतिहतेकटकुड्यपर्वतादिभिर
स्खलिते अविसंवादकेवा अतएवक्षायिकत्वाद्वा वरेप्रधाने ज्ञानदर्शने केवललक्षणे धारयतीति अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधर स्तेन एवंविध संवेदनसंपदुपेतो
पि छद्मवान् मिथ्योपदेशित्वान्नोपकारीतिनिश्छद्मता प्रतिपादनायास्याह अथवाकथमस्याप्रतिहतसंवेदनत्वं संपन्नमत्रोच्यते आवरणाभावादेतदेवाहव्यावृ
त्तं निवृत्तमपगतं छद्मशठत्वमावरणंवा यस्यसतथातेन व्यावृत्तछद्मना मायावरणयोश्चाभावो ऽस्यरागादिजयाज्जातमित्यतआह जयतिनिराकरोति रागद्वे
षादिरूपानरातीनितिजिनस्तेन रागादिजयश्चास्यरागादिस्वरूपतज्जयोपायज्ञानपूर्वकएवभवतीत्येतदस्याह जानातिछाद्मस्थिकज्ञानचतुष्टयेनेति ज्ञायक
स्तेन अनंतरमस्यस्वार्थसंपत्युपायउक्तोऽधुनास्वार्थसंपत्तिपूर्वकं परार्थसंपादकत्वंविशेषणषट्केनाह तीर्णइवतीर्णः संसारसागरमितिगम्यते तेनतथातारयति
परानप्युपदेशवर्तिन इतितारकस्तेन तथाबुद्धेनजीवादितत्वं तथाबोधकेन जीवादितत्वमेवाऽपरेषां तथामुक्तेनबाह्याभ्यंतरग्रंथिबंधनात् मोचकेन ततएवपरे

॥ मूल ॥

वियट्टछउमेणं जिणेणं जावएणं तिन्नेणं तारएणं बुद्धेणं बोहिएणं मुत्तेणं मोयगेणं सव्वन्नुणा सव्वदरिसिणा

॥ भाषा ॥

वरप्रधानज्ञानदर्शनतेहनाधरणहारतेणे छद्मस्थपणाथीकपटपणाथकीनिवर्त्यावीतरागथयातेणे रागद्वेषनेजीपणहारतेणे अनेरानेरागद्वेषजीपावेतेणे पोतेसं
सारसमुद्रतरातेणे अनेरानेसंसारसमुद्रतारेतेणे आपणपेंतत्वनाजाणतेणे अनेरानेप्रतिबोधेतेणे आपणपेंकर्मथकीमूंकाणातेणे अनेरानेकर्मथकीमूंकावेतेणे
सर्वपदार्थना जाणतेणे सर्ववस्तुदेखणहारतेणे एहवामहावीरमोक्षजाइवावांछे छेतेमोक्षकेहवोछे उपद्रवरहितठामथकीचालेनहीतेणे जिहारोगनहीजेह

॥ टीका ॥

क्षांतथामुक्तत्वेपि सर्वज्ञेनसर्वदर्शिना नतुमुक्तावस्थायांदर्शनांतरा इतिमतपुरुषेणैवभाविजडत्वेन तथाशिवंसर्वाबाधारहितत्वात् अचलंस्वाभाविकप्रायोगिक चलनहेत्वभावात् अरुजमविद्यमानरोगंशरीरमनसोरभावात् अनंतमनंतार्थविषयज्ञानस्वरूपत्वात् अक्षयमनाद्यं साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् अक्षतंवापरि पूर्णत्वात् पूर्णिमाचंद्रमण्डलवत् अव्याबाधमपीडाकारित्वात् अपुनरावर्तक मविद्यमानपुनर्भवावतारं तद्बीजभूतकर्माभावात् सिद्धिगतिरितिनामधेयंयस्यतत् सिद्धिगतिनामधेयंतिष्ठतियस्मिन्कर्मकृत् विकाररहितत्वेन सदा वस्थितो भवति तत्स्थानंचक्षीणकर्मणोजीवस्य स्वरूपंलोकाग्रंवाजीवस्वरूपविशेषणानितुलोका भ्रस्याधेयधर्माणामाधारेष्वारोपादवसेयानि तदेवंभूतंस्थानं संप्राप्तुकामेनयातुमनसा नतुतत्प्राप्तेन तत्प्राप्तस्याकरणत्वेन प्रज्ञापनाभावात् प्राप्तुकामेनेति यदुच्यते तदुपचारादन्यथाहि निरभिलाषाएवभगवंत:केवलिनो भवंति मोक्षेभवेचसर्वत्र निस्पृहोमुनिसत्तम इतिवचनात् तदेवमगणितगुणगणसंपदुपेतेन भगवताइमेति इदंवक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षमासन्नञ्चद्वादशांगानियस्मिंस्तद्द्वादशांगं गणिनआचार्यस्य पिटकमिवपिटकं गणिपिटकं यथाहिवालंजुकवाणिजक

॥ मूल ॥

सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं
ठाणंसंपाविउकामेणं इमे दुवालसंगे गणिपिडगे पन्नत्ते ॥ तंजहा ॥

॥ भाषा ॥

नोपंतनथी जेहनोक्षयनथी जिहांकिसीआबाधानथी जिहांथकीऊपराठोआविवोनथी सिद्धिगतिएहवो जेहनोनामधेयछे एहवेठामें मोक्षेंजाइवानीवांछा करवेतेणेमहावीरेंएहवाद्वादशांगीसूत्रगणीकहियेआचार्यतेहनेपेटीसरिखाछे जिमव्यापारीयांनेपेटीरत्नादिकधननीआधारहोइ तिम आचार्यनेएहद्वादशां

॥ टीका ॥

श्वापिपिटकं सर्वस्वाधारभूतंभवतिएवमाचार्यस्य द्वादशांगं ज्ञानादिगुणरत्नसर्वस्वाधारकल्पं भवति इतिभावः प्रश्नम तीर्थंकरनामकर्मोदय वर्तितयाप्रायः कृतार्थेनापिपरोपकारायप्रकाशितंतद्यथेत्युदाहरणोपदर्शनेआचारइत्यादि द्वादशपदानि वच्यमाणानि निर्वचनानीतिकंठ्यानि तत्थणंति तत्रद्वादशांगेण

॥ मूल ॥

आयारे १ सूयगडे २ ठाणे ३ समवाए ४ विवाहपन्नत्ती ५ नायाधम्मकहाउ ६ उवासगदसाउ ७ अंतगडदसाउ ८ अणुत्तरोववाइदसाउ ९ पण्हावागरणं १० विवागसुए ११ दिठिवाए १२

॥ भाषा ॥

गीसूत्रज्ञानादिकगुणरत्ननोआधारछे कह्योछे तेकहेछे आचारांगसूत्रप्रथम १ जेहमांहिसाधुनोआचारपामीये । बीजुंसूत्रकृतांग जेहमांहिस्वसमयपरसमयनी वक्तव्यतापामीये २ त्रीजूंस्थानांग तेमांहिएकथकीमाडीदसलगेंसंख्यानादसअध्ययनछे ३ । चोथोसमवायांगजिहांएकथकीमाडीकोडाकोडिनीसंख्या ४ पांचमोविवाहप्रज्ञप्तीजेहमांहिछत्रीससहस्त्रप्रश्नपामीयेएतलेभगवतीसूत्र ५ छठोज्ञाताधर्मकथांगजिहां १९ न्यायअनेअउंठकोडिधर्मकथाएछठो ६ सातमोउपासकदशांगउपाशकश्रावकतेहनादशअध्ययनछे ७ आठमोअंतकृतदशांगजेणेयतीएसंसारनोअंतकीधोतेहनाआठवर्गजेमांहिछे नवमोअणुत्तरोपपातिकासूत्रजेहयतीअनुत्तरविमानेऊपनातेहनातीनवर्गजिहांपामीये ९ दशमोप्रश्नव्याकरणजेहमांहिअंगुष्टादिकप्रश्ननोअधिकारहुंतोहिवडांपांचआश्रवपांचसंवरद्वारदश १० अध्ययनछे १० इग्यारमोविपाकसूत्रजिहांसुखदुःखनोविपाकछेएतले १० सुखविपाकीया १० दुखविपाकीयाअध्ययनछे ११ बारमोदृष्टिवादते १४ पूर्वएक

॥ टीका ॥

मिथ्यलंकारे यत्तच्चतुर्थमंगं समवायइत्याख्यातं। तस्यायमर्थः आमादिरभिधेयोभवतीतिगम्यतेतद्बोधेतिवाऽनंतरद्वितीयसंबंधात्सूत्रव्याख्येति । इहचविदु षाम्पदार्थमभिदधता सक्रमेणवासा वभिधातव्यइति व्याख्येयस्तत्राचार्यःएकत्वादिसंख्याक्रमसंबद्धानर्थान् वक्तुकामआदावेकत्वविशिष्टानात्मनश्चसर्वेपदार्थाभा अत्वेनप्रधानत्वादात्मादीन्सर्वस्यवस्तुनः सप्रतिपक्षत्वेनसप्रतिपक्षानेव एगेआयाइत्यादिभिरष्टादशभिःसूत्रैराह स्थानांगेएकार्थानिप्रायस्तथापिकिंचिदुच्यते एकमामात्रार्थंविदितमितिगम्यते इदञ्चसर्वसूत्रेष्वनुगमनीयं तत्रप्रदेशार्थतयाअसंख्यातप्रदेशोपिजीवद्रव्यार्थतया एकः अथवा प्रतिक्षण पूर्वस्वभावक्षयाऽपरस्वरूपो त्पादयोगेनानंतभेदोपि कालत्रयानुगामिचैतन्यमात्रापेक्षयाएकएवआत्मा अथवा प्रतिसंतानं चैतन्यभेदेनाऽनंतत्वेप्यात्मना संग्रहनयाश्रितसामान्यरूपापेक्ष येकत्वमामनइति तथानआत्मा अनात्माघटादिपदार्थः सोपिप्रदेशार्थतया ऽसंख्येयानंतप्रदेशोपि तथाविधैकपरिणामरूपद्रव्यार्थापेक्षयाएकएवसंतानापेक्ष

॥ मूल ॥

तत्थणं जेसेचउत्थेअंगे समवाएत्तिआहिते तस्सणंअयमट्ठे पं० तंजहा एगेआया एगेअणाया

॥ भाषा ॥

अंगएद्वादशांगोतेद्वादशांगोमांहिजेहतेह चोथोअंगएतलेप्रवचनरूपपुरुषनेअंगमरीखोअंग समवायांगसूत्र आहियेकह्योसमवायांगकहतांसम्यक्प्रकारेअधि- कपणेजीवाजीवादिपदार्थजेहनेविषे तेसमवायांगकहिये अर्थाधिकारसूत्रेकहेतेमाटेप्रधानसकलपदार्थनेभोक्तारआत्माछेतेमांटेप्रधानपणाथकीआत्माप्रथम अवतरस्योचेतनावंतआत्माएकहोयेयद्यपिसंसारमांहिजीवअनंताछेपरंपरद्रव्यनोअपेक्षाएजीवद्रव्यएकजएकहोयेएमआगलेसगलेपदेजाणिवो १ तेसमवायांगनोएअ र्थकहियेछे १ तेअनुक्रमेकहेछे एकआत्माजीवसामान्यप्रकारेएकपणेएमसर्वत्र एकअनात्माजीवरहितघटादिकपदार्थ एकदंडभूंडोव्यापारयोगअणिनेतिदंड

॥ ५ ॥

॥ टीका ॥

यापि तुल्यरूपापेक्षयात् अनुपयोगलक्षणैकस्वभावयुक्तत्वात्कथंचिदिंद्रियस्वरूपाणामपि धर्मास्तिकायादीनामनात्मनामेकत्वमवसेयमिति तथा एकोदंडोदुःप्र
युक्तमनोवाक्कायलक्षणै हिंसामात्रं एकत्वंवास्यसामान्यतयोद्दिष्टादेवं सर्वत्रैकत्वमवसेयं तथा एकोऽदंडः प्रशस्तयोगत्रयमहिंसामात्रं वा तथाएकाक्रियाकायि
क्यादिका आस्तिक्यमात्रंवा तथा एकाअक्रिया योगनिरोधलक्षणा नास्तिकत्वंवा तथा एकोलोक स्त्रिविधोप्यसंख्येयप्रदेशोपिवा द्रव्यार्थतया तथा एकोऽलो
कोऽनंतप्रदेशोपिद्रव्यार्थतया अथचैते लोकालोकयोर्बहुत्वव्यवच्छेदेनपरैसूत्रेऽभ्युपगम्यंतेच केचिदिहयेलोकाअतस्तद्विलक्षणाअलोकाअपितावंतएवेति एवंसर्वत्र
गमनिकाकार्या । नवरंधर्मोधर्मास्तिकायः अधर्मोऽधर्मास्तिकायः पुण्यंशुभंकर्म पापमशुभंकर्म बंधोजीवस्यकर्मपुद्गलसंश्लेषः सचैकः सामान्यतः सर्वकर्मबंधव्य
वच्छेदावसरेया पुनर्बंधाभावादनेनोद्देशेन मोक्षाश्रवसंवरवेदनानिर्जराणामप्येकत्वमवसेयमिति इहचानात्मग्रहणेन सर्वेषामनुपयोगवतामेकत्वं प्रसाप्यपुन

॥ मूल ॥

एगेदंडेएगेअदंडे एगाकिरिया एगाअकिरिया एगेलोए एगेअलोए एगेधम्मे एगे
पुण्णे एगेपावे एगेबंधे एगेमोक्खे एगेआसवे एगेसंवरे एगावेयणा एगाणिज्जरा

॥ भाषा ॥

एकअदंडभलामनोप्रभृतियोगत्रय एकक्रियाकरिवोतेक्रियाकायिक्यादि एकअक्रियायोगविरोधलक्षण एकलोकयद्यपित्रणिलोकछेपरंद्रव्यार्थपणेएक एकअ
लोकपंचास्तिकायरहित एकधर्मास्तिकायचलनस्वभाव एकअधर्मास्तिकायस्थिरस्वभाव एकपुण्यशुभकर्म्म एकपापअशुकर्म्म एकबंधजीवनेअने कर्मपुद्गलनेजो
डिवो एकमोक्षसर्वकर्मबंधथकीमूंकावणो एकआश्रवकर्मबंधनोउपाय । एकसंवरकर्मबंधनाउपायनोनिरोधक एकवेदनाशुभाशुभकर्मनोउदयकालेभोग

लोकादितयाएकत्वप्ररूपणा तत्सामान्यविशेषोपेतमवगंतव्यमिति एवंचात्मादीनां सकलशास्त्रप्रपंचानामर्थानां प्रत्येकमेकत्वमभिधायाधुनाऽऽत्मपरिणा ॥ टीका ॥
मरूपाणामर्थानांतदेवाह जंबूद्दीत्यादिसूत्रसप्तकमाश्रयविशेषाणां तथा इमीसेरयणमित्यादिसूत्राष्टादशकमाश्रयिणांस्थित्यादिधर्माणां प्रतिपादनपरं सुबोधं
नवरं जंबुद्दिवेदीवे इहसूत्रेआयामविक्खंभेणंतिक्वचित्पाठोदृश्यते क्वचित्तुचक्कवालविक्खंभेणंति तत्र प्रथमःसंभवत्येवापि तथाश्रवणात्सुगमश्च द्वितीयस्त्वेवंव्याख्ये
यचक्रवालविष्कंभेणवृत्तव्यासेन इदंचप्रमाणयोजनमवसेयं यदाह आयंगुलेणवत्थुं उस्सेहपमाणओमिणसुदेहं नगपुढविविमाणाइं मिणसुपमाणंगुलेणंतु ॥ १ ॥
तथा पालकंयानविमानं सौधर्मेंद्रसंबंध्यपि आभियोगिकपालकाभिधान देवकृतं वैक्रियं यानंगमनंतदर्थंविमानं यायतेऽनेनेतियानं तदेवविमानं यानविमा

जंबुद्दीवेदीवे एगंजोयणसयहस्सं आयामविक्खंभेणंपन्नत्ते अप्पइठाणे
नरएएगंजोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पं० पालए जाणविमाणे ॥ मूल ॥

विशो एकनिर्जरा आत्मानाप्रदेशथोकर्मपुद्गलनूंवेगलूंकरिवो एजंबूद्दीपसकलद्दीपमांहिमुख्यद्दीप एकयोजनशतसहस्रएतले। एकलाखयोजनप्रमाणांगुले।
लांबपणेअनेपिहुलपणेकह्योतीर्थंकरे । सातमीनरकपृथिवीये पांचनरकावासाछे तेमांहिविचलो अपइठाणनामनरकावासोएकयोजनशतसहस्रएतलेएक
लाखयोजन लांबपणेअनें पिहुलपणेकह्यो । पालकयांनविमानसौधर्म्मेंद्रसंबंधिअभियोगीदेवताएनीपजाविओगमननेअर्थंते एकलाखयोजनजाणवो लां
बपणेअनेपिहुलपणेकह्योछे पंचानुत्तरविमानमांहिविचलोसर्वार्थसिद्धनामेविमानछेतेमांहिएकाभवतारीजीवउपजेतेमांटे महाविमानकहियेंतेएकलाखयो ॥ भाषा ॥

नं पारियानिकमितियदुच्यते अत्थीत्यादि अस्तिविद्यते ऐकेशांचिन्नैरयिकाणा मेकंपल्योपमं स्थिति रितिकृत्वाप्रज्ञप्ताप्रवेदितामया अन्यैश्वजिनैः साचचतुर्थप्र ॥ टीका ॥

गेएजोयणसयसहस्संआयामविखंभेणं प० सव्वट्ठसिद्धेमहाविमाणेएगंजोयणसयसहस्संआयामविखंभेणं प० अद्दानखत्तेएगतारे प० चित्तानखत्तेएगतारे प० सातिनखत्तेएगतारे प० इमीसेरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं एगंपलिउवमंठिई प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए नेरइआणं उक्कोसेणंएगंसागरोवमंठिई प० दोच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं जहन्नेणंएगंसागरोवमंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं उक्कोसेणंएगंसाहियं सागरोवमंठिई प० ॥ ॥ मूल ॥

जनलांबपणेंअनेपिहुलपणेंकह्यो। आर्द्रानचत्रनोएकतारोकह्योछे । चित्रानचत्रनोएकतारोकह्योछे। स्वातिनचत्रनोएकतारोकह्यो । एहतेरत्नप्रभापहिलीन रकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकोनीं एकपल्योपमनीस्थितिआउखोभगवंतेकह्योछे । एणीयेरत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीने नारकीयांनो उत्कृष्टोए- कसागरोपमनीस्थितिआउखोकह्योछेभगवते बोजीयेनरकपृथवीने नारकीयांनोजघन्यपणे एकसागरोपमनीस्थितिआउखोकह्यो अनंतज्ञानवंतेअसुरकुमारभवन पतीप्रथमनिकायना देवतानो केतलाएकनो एकपल्योपमनीस्थितिआउखोकह्योभगवंते असुरकुमारदेवनो उत्कृष्टोभाभेरोएक सागरोपमस्थितिआउखो ॥ भाषा ॥

स्तट मध्यमावसर्यात एवमर्कसागरोपम वयादग्रप्रस्तटउत्कृष्टास्थातागत असुरेन्द्रवर्ज्जयाणांतिचमरबलिवर्जितानां भोमिज्जाणंति भवनवासिनांभूमोपृथि
व्यांरत्नप्रभाभिधानायां भवत्वात्तेषामिति तेषांचैकंपल्योपमं मध्यमास्थितिर्यतउत्कृष्टा देशोनेद्विपल्योपमे सात्राहच दाहिणदिवड्ढपलियं दोदेसूणुत्तरिल्लाणं
ति असंखेज्जेत्यादि असंख्येयानिवर्षाण्यायुर्येषांते तथा तेचतेसंज्ञिनश्चसमनस्कास्तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेत्यसंख्येयवर्षायुः संज्ञिपंचेंद्रियतिर्यग्योनिका ॥ टीका ॥
स्तेषांकेषांचिद्धैमवतैरण्यवतवर्षयो रत्यमा स्तेषा मेकंपल्योपमस्थिति रेवंमनुष्यसूत्रमपि नवरं गर्भगर्भाशयेव्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांतेगर्भव्युत्क्रांतिका नसमूर्च्छन

असुरकुमारिंदवज्जियाणं भोमिज्जाणंदेवाणंअत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउय
सन्निपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं अत्थेगइआणं एगंपलिउवमंठिई प० । असंखिज्जवासाउयगब्भवक्कंति ॥ मूल ॥
यमणुयाणं अत्थेगइयाणंएगंपलिउवमंठिई प० । वाणमंतराणंदेवाणं उक्कोसेणंएगंपलिउवमंठिई प० ।

कह्यो असुरकुमारेंद्रचमरेन्द्रबलेन्द्रवर्जीने भवनपतीदेवतानो एककनोकितलाएकनो एकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो । असंख्यातावर्षनाआउखानासंज्ञी
गर्भजपंचेंद्रियतिर्यंचनोएतलेहैमवतऐरण्यवंतयुगलचे अनागर्भजतिर्यंचनोयुगलियागर्भजमनुष्यतिर्यंचनो आउषोउत्कृष्टोजहुवे अने जीवाभिगमनेविषे नपुंस ॥ भाषा ॥
कगर्भजमनुष्यनूंआउषपूर्वकोडिनूंपणिकह्योछेतेमाटे अत्थेगइयाणंपाठकह्योकितलाएकनूंएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो। असंख्यातावर्षनाआउखानागर्भज

॥ टीका ॥

आइत्यर्थः वाणमंतराणंदेवाणंति देवानामेव नतुदेवीनां तासामर्द्धपल्योपमस्यप्रतिपादितत्वात्जोइसियाणंदेवाणंति चन्द्रविमानदेवानां न सूर्यादिदेवानां मापिचन्द्रादिदेवीनां पलियंचमयसहस्सं चन्दाणंत्रिआउजाणं इतिवचनात् सोहम्मेकप्पेदेवाणंति इहदेवशब्देन देवादेव्योगृहीताःसौधर्मेहिपल्योपमाद्धीनत राखितिर्जघन्यतापिनास्ति इयंचप्रथमप्रस्तटेऽवसेया सोहम्मेकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणंएगंसागरोवममित्यत्र देवानामेवग्रहणं नतुदेवीनांउत्कृष्टतोपितत्रतासां पंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वात् तथा एकंसागरोपममितिमध्यमस्थित्यपेक्षया उत्कर्षतस्तत्रसागरोपमद्वयसद्भावात् प्रस्तटापेक्षयास्त्वेषां सप्तमेप्रस्तटेमध्यमावसे

॥ मूल ॥

जोइसियाणं देवाणंउक्कोसेणं एगंपलिउवमं वाससयसहस्समब्भहियं ठिई प०। सोहम्मेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं एगंपलिउवमंठिई प०। सोहम्मेकप्पे देवाणंअत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प०। ईसाणेकप्पेदेवाणं जह

॥ भाषा ॥

संज्ञीपंचेन्द्रियमाणसनंएतलेहिमवंतएरण्यवतक्षेत्रसंबंधीयुगलियांमाणसनोकेतलाएकनोपल्योपमस्थितिआउषूंकह्योभगवंतेवाणव्यंतरदेवनो उत्कृष्टोएकपल्योपम जघन्य १० सहस्रवरसनोकह्योजोतिषीचंद्रमाविमानवासीदेवतानोउत्कृष्टोएकपल्योपमएकवर्षलाखेअधिकएवडीस्थितिकहीतीर्थंकरदेवे। सौधर्मप्रथम देवलोकेदेवनो जघन्यएकपल्योपमस्थितिआउखोकह्यो सौधर्मदेवलोकेदेवतानोकेतला एकनो एकसागरोपमस्थितिआउखो देवीनोसागरोपमनकहिवोउत्कृष्टोपंचासपल्योपमकह्यो ईशानबीजेदेवलोके देवनोजघन्यभाभेरो एकपल्योपमएवडोस्थितअनंतग्यानीये कहो ईशानेदेवलोके देवनोकेतलाएकनो एकसाग

॥ टीका ॥

या । ईसाणेकप्पेदेवाणमित्यत्र देवग्रहणेनदेवादेव्यश्चगृह्यंते यतस्तत्रसातिरेकपल्योपमादन्याजघन्यतः स्थितिर्नास्ति ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणमित्यत्रदे वानामेवग्रहणंनदेवीनां तत्रतासामुत्कर्षतोपिपंचपंचाशत्पल्योपमस्थितिकत्वादिति तथा येदेवाः सागरं सागराभिधानमेवं सुसागरंसागरकांतं भवंमनुंमानु षोत्तरं लोकहित मित्यत्रचकारोद्रष्टव्यः समसुच्चयस्यद्योतनीयत्वाद्विमानं देवनिवासविशेषमासाद्येतिरिति एतानिचविमानानि सप्तमप्रस्तटेवसेयानिस्थित्यनु सारेणच देवानामुच्छ्वासादयो भवंति तान्दर्शयन्नाह तेणमित्यादि येषांदेवानामेकंसागरोपमंस्थिति स्तेदेवा णमित्यलंकारे अर्द्धमासस्यांत इतिशेषःआनंति प्राणंति एतदेवक्रमेणव्याख्यानयन्नाह उच्छ्वसंतिनिःश्वसंति वाशब्दोविकल्पार्थः तथा तेषामेववर्षसहस्रस्यान्त इतिशेषआहारार्थः आहारप्रयोजनमाहारपुद्ग

॥ मूल ॥

ल्लेणंसाइरेगंएगंपलिउवमंठिई प० । ईसाणेकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं एगंसागरोवमंठिई प० । जेदेवासागरं सुसागरं सागरकंतं भवं मणुं माणुसोत्तरं लोगहियं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणंउक्कोसेणंएगंसाग

॥ भाषा ॥

रोपमनोस्थितकही । ईशान देवलोके सातमेप्रतरेजेदेवताना सागर १ सुसागर २ सागरकांत ३ भव ४ मनुष ५ मानुषोत्तर ६ लोगहित ७ एणेविमांणे देवतपणेउपनाछे । ते देवतानी उत्कृष्टी एकसागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवताएकअर्द्धमासेएतलेएकपखवाडे आणमंतिथोडोस्वासलै पाणमंतिघणो लेमाणमंतिप्राणमंतिएहपंतहत्तिस्वासउसरसंतिनोससंतिएहशाह्यवृत्तिकेइकआचार्यएमकहेछे जेदेवतानेजेतलासागरोपमआउखोतेहनेतेतलेपखवाडेसासो

॥ टीका ॥

लानांग्रहणमाभोगतोभवति अनाभोगतस्तुप्रतिसमयमेव विग्रहादन्यत्रभवतीति गाथेइ जस्सजइसागरोवमा ठिइतस्सततिएहिंपक्खेहिं ऊसासो देवाणंवा ससहस्सेहिंआहारोत्ति संतिविद्यन्तेएगइयाएकेकेचनभवसिद्धियत्ति भवा भाविनोसिद्धिर्मुक्तिर्येषांते भवसिद्धिका भव्याः भवग्गहणेणंति भवस्यमनुष्यजन्मनो ग्रहणमुपादानं भवग्रहणंतेनसेत्स्यंति अष्टविधमहर्द्धिप्राप्त्याभोत्स्यंते केवलज्ञानेनतत्वं मोचंतेकर्मराशेःपरिनिर्वास्यंति कर्मकृतविकाररहिताभतीभविष्यन्ति किमुक्तंभवतिसर्वदुःखानामंतकरिष्यन्तीति ॥ १ ॥ सामान्यतयाश्रयणादेकतया वस्तून्यभिधायाधुना विशेषमप्याश्रयणाद्विलेनाह दोदंडेत्यादि सुगममादि

॥ मूल ॥

रोयमंठिई प० । तेणंदेवाएगस्सअद्धमासस्स आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणंएगस्सवाससहस्स आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजेजीवा तेएगेणंभवग्गहणेणं सिज्झिस्सं ति बुज्झिस्संति मुच्चिसंति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ दोदंडापन्नत्ता तं०

॥ भाषा ॥

सासकहे तेतले सहस्रेवर्षे आहारनीइच्छाजपजे। जंचोस्वास ते उत्स्वास नीचोमेल्हिवोतेनीसास तेहदेवने ऐकसहस्रवर्षे आहारनोअर्थजपजे । संतेकह तांछेएकेकभवसिद्धियाकहतांभाविनोहोणारोछे ढंकडोसिद्धिजेहनेतेभवसिद्धिकाभव्यजोव संसारमांहितेहलघुकर्मीएकभवनेआंतरेसीझस्ये ज्ञातार्थथास्ये बूझस्ये केवलज्ञानेकरीसकलसंसारनांपरमार्थजाणिस्ये कर्मेकोधोविकारतेहनारहितपणाथकोठाढाहोस्ये । सकलशरीरोदुःखनीमानसीदुःखनीअंतकरिस्यें-ऐतलेरकठाणोकहियो ॥ १ ॥ हिवेबीजोअविकारकहेछेबेदंडकह्या भगवंतेजेणेकरीपरनाप्राणदंडीयेहणीयेतेदंडकह्या तेकहेछे अर्थदंड तेआत्मानेअर्थे पर

॥ टीका ॥

स्थानकप्रमाणमेनंतरमिह दंडराशि बंधनार्थसूत्राणांद्वयं नक्षत्रार्थंचतुष्टयं स्थित्यर्थंत्रयंदमकमुच्चमासाद्यार्थंत्रयमिति तत्रार्थेनस्वपरोपकारलक्षणेन प्रयोजनेनदंडो हिंसाअर्थदंडएतद्विपरीतोऽनर्थदंडइति तथा रत्नप्रभायांद्विपल्योपमास्थितिस्वतुर्थप्रस्तटेमध्यमाद्वितीयायांद्विसागरोपमेस्थितिःषष्टप्रस्तटेमध्यमाज्ञेया तथाअसु

॥ मूल ॥

अट्ठादंडेचेव अणट्ठादंडेचेव दुवेरासी प० । तंजहा ॥ जीवरासीचेव अजीवरासीचेव दुविहेबंधणे प० । तंजहा ॥ रागबंधणेचेव दोसबंधणेचेव पुव्वाफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० । उत्तराफग्गुणीनक्खत्तेदुतारे प० पुव्वाभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० उत्तराभद्दवयानक्खत्तेदुतारे प० इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइयाणं दोपलिओवमंठिईप० । दुच्चाएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ

॥ भाषा ॥

नेअर्थेआगलानाप्राणहणीये तेऽर्थदंड निरर्थकपणेंपरप्राणनेहणीये तेअनर्थदंडनिश्चे बेराशिसमूहकही तेकिसी कहेछे । जीवराशिजीवनासमूह अजीवराशि अजीवनासमूह बेप्रकारे बंधनकह्या तेकहेछे रागबंधण रागेकरीकर्मनोबंधपडे एमज द्वेषबंधणपडे पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रनाबेताराकह्या भगवंते उत्तराफाल्गुनीनक्षत्रना बेताराकह्या पूर्वाभाद्रपदनक्षत्रतणा बितारा कह्या । उत्तराभाद्रपदनक्षत्रनाबेताराकह्या एणीइये रत्नप्रभापहिलीनरकपृथवीये केतलाएकनारकीनो चोथेपाथडे बेपल्योपमस्थितआउषूमध्यमकह्या बीजी नरकपृथवीनेविषे केतलाएक नारकीनो छठुपाथडे बेसागरोपममध्यमस्थितआ

5774

॥ मूल ॥

आणंदोपलिउवमाइंठिई प० असुरिंदवज्जिआणं नोमिज्जाणंदेवाणं उक्कोसेणंदेसूणाइं दोपलिउवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयतिरिक्खजोणिआणं अत्थेगइआणं दोपलिउवमाइंठिई प० असंखिज्जवासाउयसन्निमणुस्साणं अत्थेगइयाणंदोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेअत्थेगइयाणंदेवाणं दोपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मेकप्पेअत्थेगइआणंदेवाणं उक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० ईसाणेकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पेदेवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० माहिंदेकप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइंदोसागरोवमाइं ठिई प० ।

॥ भाषा ॥

आयूं कह्यो । असुरकुमारभवनपतीदेवनो । केतलाएकनो बेपल्योपमनूं आउषो कह्यो । असुरेंद्रचमरेंद्र बलेंद्रटालीने बीजोभूमिसंबंधि उत्तरदिशिनानागदेवतानो उत्कृष्टोकांइंकओछोबेपल्योपमनोआउषो कह्यो असंख्यातावर्षना आउखाना गर्भजमानुष्यनां एतले हरिवर्ष रम्यकक्षेत्रसंबंधी युगलियामनुष्यनुं केतलाएकनो बेपल्योपमआउषो कहिउ सौधर्म पहिलेदेवलोके केतलाएकदेवनो बिपल्योपममध्यमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके केतलाएक देवतानूं बिपल्योपमआउषोकह्यो । सौधर्मदेवलोकेदेवतानोउत्कृष्टो बेइसागरोपमआउषो कह्यो । ईशानबीजेदेवलोके देवतानो उत्कृष्टोझाझेरो

॥ टीका ॥

रेंद्रवर्जितभवनवासिनांह देशोनपल्योपमस्थितिरौदीच्यनागकुमाराणामित्यावसेयायतआह दोदेसुणुत्तरिल्लाणंति तथाअसंख्येयवर्षायुषांपंचेंद्रियतिरिश्चांमनु ष्याणांचहरिवर्षरम्यकवर्षजन्मनांद्विपल्योपमास्थितिरिति ॥ २ ॥ अथत्रिस्थानकंतत्रोइत्यादिसर्वंसुगमं नवरंनिहदंडगुप्तिशल्यगौरवविराधनार्थंसूत्राणां

॥ मूल ॥

जेदेवा सुभं सुभकंतं सुभवएणं सुभगंधं सुभलेसं सुभफासं सोहम्मवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणंउक्कोसेणंदोसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा दोएहंत्र्प्रद्धमासाणं त्र्प्राणमंतिवा पाणमंतिवा उससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणदोहिंवाससहस्सेहिं त्र्प्राहारट्ठेसमुपज्जइ त्र्प्रत्थेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे दोहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति मुच्चिस्संति बुज्झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २ ॥

॥ भाषा ॥

त्रिइसागरोपमआउषोकह्यो सनत्कुमार त्रीजेदेवलोकेदेवतानं जघन्यवेसागरोपमआउषोकह्यो माहेंद्रचोथेदेवलोकेदेवतानो जघन्य त्रिसागरोपमभाभेरी- आजषानीस्थितिकहीसौधर्मेदेवलोकेतेरमेप्रतरेजेदेवतानानाम शुभ १ शुभकांत २ शुभवर्ण ३ शुभगंध ४ शुभलेश ५ शुभस्पर्श ६ सौधर्मावतंसक ७ एहसातवि मांनेदेवतापणेऊपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो बेसागरोपमआउषोकह्यो तेहदेवनेबिहुंअर्द्धमासेएतलेबिहुपखवाडे आणप्राणइयेंआणथोडोस्वासप्राणतेघणोउ स्वास उत्स्वासतेउचोलेवोस्वास नीसासतेसासनोचो मेलिहवो तेहदेवताने बिहुयें वर्षसहस्त्रे तेहने आहारनोअर्थऊपजे आभोगआहारल्ये संसारमांहिकेत लाएकभवसिद्धीयाभव्यजीव जेबिहुंयेभवग्रहणे बेभवनेआंतरेसीझस्ये छूतार्थथास्ये तत्वनाजांणथास्ये कर्म्मबंधथकोमूंकास्येकर्म्मकततापटालवाथकीठाठायास्ये

॥ टीका ॥

पंचकं नवचार्थंसमकं स्थित्यर्थंनवकं मुक्त्वासाद्यर्थंत्रयमिति । तत्रदंड्यतेचारित्रैश्वर्यापहारतोऽसारीक्रियते एभिरात्मेतिदंडादुःप्रयुक्तमनःप्रभृतयः मनएवदंडो मनोदंडो मनसावादुःप्रयुक्तेनात्मनोदंडो दंडनमनोदंडएवमितरावपि तथा गोपनानिगुप्तयः मनःप्रभृतीनामशुभप्रवृत्तिनिरोधनानि शुभप्रवृत्तिकरणानि चेति तथा तोमरादिशल्यानीवशल्यानिदुःखदायकत्वात्मायादीनि तत्र मायानिकृतिः सैवशल्यं मायाशल्यंणमित्यऽलंकारे एवमितरेऽपि नवरंनिदानं देवादिरिद्धीनांदर्शनश्रवणाभ्या मितो ब्रह्मचर्यादेरनुष्ठानान्ममैताभूयासु रित्यध्यवसायो मिथ्यादर्शन मतत्वार्थश्रद्धानमिति तथा गौरवाणिअभिमान

॥ मूल ॥

तउदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे कायदंडे । तउगुत्तीउ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती । तउसल्ला प० तं० मायासल्लेणं नियाणसल्लेणं मिच्छादंसणसल्लेणं ॥

॥ भाषा ॥

सर्वदुःखसारीरी तथा मानसी तेहनोअंत करिस्ये ऐतले बीजोठाणो पूरोथयो ॥ ॥ २ ॥ ॥ हिवे तीजोठाणो कहेछे । तीनदंडकह्या जेणेकरी आत्मादंडीये चारित्ररूपधनगमाडीये ते दंडकहीये ३ मनेकरी आत्मादंडीये असारकरीये ते मनोदंड १ एम वचनदंड २ कायदंडपणिइमज ३ त्रिणिगुप्ती गोपविवो ते गुप्ति कहिये तेकहेछे मननो गोपवो ते मनोगुप्ती १ इम वचनगुप्ति २ कायगुप्ति ३ त्रिणिशल्यछे तीरनोपरे शल्यसरीखा शल्य भाव दुखदायकपणायकी ते कहेछे मायाकपटतेहीजशल्य तेमायाशल्य १ निदानशल्य ते तपसंजमेकरी इन्द्रादिकपदवीनो वांछवो २ मिथ्यातशल्य

ऽभाभ्यामात्मनोऽशुभभावगुरुत्वानि तानिचसंसारचक्रवालपरिभ्रमणहेतुकर्मनिदानानि तत्र ऋद्ध्यानरेंद्रादि पूज्याचार्यत्वादिलक्षणया गौरवमृद्धिप्राप्त्यभि मानतद्प्राप्तिप्रार्थनद्वारेणात्मनोऽशुभभावगौरवमित्यर्थः एवंरसेनगौरवंरसगौरवं सातयागौरवं सातागौरवंचेति तथाविराधनाः खंडनास्तत्रज्ञानस्यविराध नाज्ञानविराधना ज्ञानप्रत्यनीकतानिह्नवादिरूपाएवमितरेपि नवरं दर्शनंसम्यग्दर्शनंचारित्रंसामायिकादीनि । तथाऽसख्यातवर्षायुषांपंचेंद्रि

तउगारवा प० तं० । इड्ढीगारवेणं रसगारवेणं सायागारवेणं तउविराहणा प० तं० । नाणविराहणा दं सणविराहणा चरित्तविराहणा मिगसिरनक्खत्तेतितारे प० । पुस्सनक्खत्तेतितारे प० । जेठानक्खत्ते तितारे प० । अभीइनक्खत्तेतितारे प० । सवणनक्खत्तेतितारे प० । अस्सिणिनक्खत्तेतितारे प० भरणी नक्खत्तेतितारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । दो

तेगुरुदेवगुरुधर्मनोअसद्दहिवोविपरीतनोकरिवो १ त्रिणिगारवकह्यजेणेकरीआत्माभारीथाय संसारचक्रवालमांहिभमवानोकारणकर्मछेतिकहेछे । ऋद्धिगारव तेनरेंद्रादिकनोऋद्धितथाआचार्यादिकनीऋद्धितेणेकरीअभिमानकरतोआत्माभारीकरे रसेकरीमधुरादिकस्वादेकरीआत्माभारीकरवो तेरसगारवकहियेर सातानेगारवेकरीसातागारव ३ त्रिणि विराधनाखंडनाकही तेकहेछे सूत्रादिकज्ञानतेहनीविराधना प्रत्यनीकपणोकरिवोतेज्ञानविराधना दंसणतेसम्यक दर्शनक्षायकादिकसम्यक्त्वतेहनूंविराधवूंअवर्णवादनूंबोलिवूंतेदर्शनविरधना २ सामायिकादिकचारित्रनूंविराधवूंखंडवूंतेचारित्रविराधना ३ मृगसरनक्षत्र

च्चाएणंपुढवीएनेरइयाणं उक्कोसेणंतिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तच्चाएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंतिन्नि सागरोवमाइंठिई प० । असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंतिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा उयसन्नि पंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासा वक्कंतियमणुस्साणं उक्कोसेणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । असंखिज्जवासाउयसन्निग तिन्निपलिउवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० ॥ मूल ॥

त्रणितारा कह्या केवलज्ञानीये पुष्यनक्षत्रनात्रणितारा कह्या । जेष्ठानक्षत्रनात्रणितारा कह्या अभिजित् नक्षत्रनातीनतारा कह्या श्रवणनक्षत्रनात्रणितारा कह्या अश्विनीनक्षत्रनात्रणितारा कह्या भरणीनक्षत्रनात्रणतारा कह्या एणीयेरत्नप्रभापहिलीपृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो त्रणिपल्योपममध्यम आउखुं कह्युं वीजोसक्करप्रभापृथवीनेविषे नारकीनोउत्कृष्टो त्रणिसागरोपमनुंआउखो कह्यो त्रीजीवालुकप्रभापृथवीनेविषे नारकीनो जघन्य त्रणिसागरोपमआउखो कह्यो असुरकुमारभवनपतीनो पहिलीनिकायनादेवतानोकेतलाएकनो त्रणिपल्योपममध्यमआउखोकह्योछे असंख्यातवर्षनाआउखाना संज्ञीगर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंच एतलेदेवकुरु उत्तरकुरुनागर्भज तिर्यंचनो उत्कृष्टो तीनपल्योपमनो आउखो कह्यो । असंख्यातवर्षना आउखाना गर्भजमनुष्य देवकुरुउत्तरकुरुना ॥ भाषा ॥

यतिर्यग्मनुष्याणांदेवकुरूत्तरकुरुजन्मनां त्रीणिपल्योपमानीति। तथाश्राभंकरं प्रभंकरं श्राभाकरंप्रभाकरं चंद्रचंद्रावर्त्त चंद्रप्रभ चंद्रकांत चंद्र[illegible]
ध्वजं चंद्रशृंगं चंद्रसिद्धं चंद्रकूटं चंद्रोत्तरावतंसकं विमानमित्यादि ॥ ४ ॥ चतुःस्थानकमपिसुगममेव नवरं कषायध्यानविकथासंज्ञासंबंधयोजनार्थं सूत्राणांषट्

जेदेवा श्राभंकरं पभंकरं श्राभाकरं पभाकरं चंदंचंदावत्तं चंदप्पभं चंदकंतं चंदवन्नं चंदलेसं चंदज्झयं चंदसिंगं चंदसिठ्ठं चंदकूडं चंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवातिराहंश्रद्धमासाणं श्राणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं तिहिंवाससहस्सेहिंश्राहारठ्ठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे तिहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संतिपरिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ३ ॥ चत्तारिकसाया ॥ मूल ॥

युगलियातेहनो उत्कृष्टो तीनपल्योपम श्राउखो कह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएकदेवनो त्रणिपल्योपमश्राउखो कह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रश्री जेचोथेदेवलोके केतलाएक देवनो त्रणिसागरोपममध्यमश्राउखोकह्योजेदेवताश्राभंकर १ प्रभंकर २ श्राभाकर ३ प्रभाकर ४ चंद्र ५ चंद्रावर्त्त ६ चंद्रप्रभ ७ चंद्रकांत ८ चंद्रवर्ण ९ चंद्रलेस १० चंद्रध्वज ११ चंद्रशृंग १२ चंद्रसिद्ध १३ चंद्रकूट १४ चंद्रोत्तरावतंसक १५ विमानेंसनत्कुमारमाहेंद्रदेवलोकेंदेवतापणे उपनाछे तेहदेवतानोउत्कृष्टोत्रणि सागरोपमश्राउखो कह्यो तेहदेवतानेंत्रिहुंश्रद्धमसवाडे थोडोस्वासले घणोस्वास जंचोस्वासतेउस्वासनीचोस्वासमूंकवोते ॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

ढनरकन्नेचउत्तारे प० इमीसेणंरयणप्पज्ञाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प०
तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइणंनेरइयाणंचत्तारिसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणंच
त्तारिपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिपलिउवमाइंठिई प० सणं
कुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० जेदेवाकिठिंसुकिठिं किठियाप
त्तंकिठिप्पज्ञं किठिजुत्तं किठिलेसं किठिज्झयं किठिसिंगं किठिसिठं किठिकूडं किठुत्तरवडिंसगंविमाणंदे
वत्ताएउववन्ना तेसिंणंदेवाणं उक्कोसेणं चत्तारिसागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवाचउएहमासाणं आणमं

॥ भाषा ॥

इरत्नप्रभापहिलीपृथिवीनेविषेकेतलाएक नारकीनो च्यारपल्योपम आउषूंकहिंउ कह्या त्रीजीवालुकप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो च्यारिसा
गरमध्य आउषूंकह्योछे । असुरकुमारभवनपतीदेवनूं केतलाएकनूं च्यारिपल्योपमआउषूं कह्यो सौधर्मईशानदेवलोकनेविषेकेतलाएकनो देवतानोच्यारपल्यो
पममध्यआउषूंकह्यो सनत्कुमारमाहेंद्रत्रीजाचौथादेवलोकने विषेकेतलाएकदेवतानूं च्यारसागरोपममध्यआउषूंकह्यो त्रीजेचोथेदेवलोकेजेदेवता कृष्टि१ सु
कृष्टि २ कृष्टिकापत्र ३ कृष्टिप्रभ ४ कृष्टियुक्त ५ कृष्टिलेश्य ६ कृष्टिध्वज ७ कृष्टिशृंगः ८ कृष्टिसिद्ध ९ कृष्टिकूट कृष्टिकावतंसकएणेविमानने विषेदेवताप

ष्टिसुकृष्टादीनिषादशविमामानिपूर्वोक्तविमाननामानुसारवतीति । पंचस्थानकमपिसुगमं नवरं क्रियामहाव्रतकामगुणाश्रवसंवरनिर्जरास्थानसमित्य स्तिकायार्थसूत्राणामष्टकं नक्षत्रार्थपंचकं स्थित्यर्थषटकं उच्छ्वासाद्यर्थत्रयमेवेति । तथाक्रियादुर्व्यापारविशेषा: तत्रकायेननिवृत्ताकायिकीकायचेष्टेत्यर्थ: अधिक्रियतेआत्मानरकादिषुयेनतदधिकरणं । तेननिवृत्ताआधिकरणिकी खड्गादिनिर्वर्त्तनादिलक्षणेति । प्रद्वेषोमत्सर स्तेननिवृत्ताप्राद्वेषिकी परिताप- ॥ टीका ॥

तिवापाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंदेवाणं चउहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ अत्थेगइ आत्नवासिद्धियाजीवा जेचउहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणंअंतंकरिस्संति ॥ ४ ॥ पंचकिरिया प० तं० काइया अहिगरणिया पाउसिआ पारितावणिया पाणाइवायाकिरिया पंचमहव्वया ॥ मूल ॥

णेउपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टपणे च्यारसागरोपमआउषं कह्यो तेदेवताचिहुंअर्द्धमासवाडेएतलेचोथेपखवाडे थोडोसासलेइ घणोसासले मोचोमेलवेतेनि श्वास जंवालेअवेतेजसासतेहदेवताने चिहुंवर्ष सहस्रे आभोगआहारनोअर्थउपजे केतलाइकछेभव्यजीव चिहुंनेभवगृहणेच्यारभवनेअंतरे सीझस्येबूझस्ये मुं कास्येसंसारथकी सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये इतिचोथोठाणंसमत्तं ४ हिवेपांचनोअधिकारलिखीयेछे पांचक्रियाकही क्रियाते कायादिकनोव्यापारतेकहेछे कायायेंनोपजावीतेकायिकीक्रियाकायचेष्टा आत्मानरकादिकनेविषेजेणेकरीस्थापीयेंतेअधिकरणकीषड्गादिकनोपजाविवालक्षण प्रद्वेषमत्सरतेणेनोपिजा ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

नंताडनादिदुःखविशेषलक्षणं तेननिवृत्तापारितापकी प्राणातिपातक्रिया प्रतीतेति । तथाकाम्यन्तेअभिलष्यन्ते इतिकामास्तेचतेगुणाश्चपुद्गलधर्माः शब्दाद यइतिकामगुणाः कामस्यवादर्पस्योद्दीपकागुणाः शब्दादयइति तथाआश्रवद्वाराणिकर्मोपादनोपाया मिथ्यात्वादीनि संवरस्यकर्मानुपादानस्यद्वाराण्युपा याःसंवरद्वाराणि मिथ्यात्वाद्याश्रवद्वारविपरीतानिसम्यक्त्वादीनि तथा निर्जरादेशतःकर्मक्षपणात्तस्याःस्थानान्याश्रयाः कारणानीतियावदिर्जरास्थानानि प्राणातिपातविरमणादीनि एतान्येवसर्वशब्दविशेषितानि महाव्रतानिभवंति तानिचपूर्वसूत्रेभिहितानि स्थूलशब्दविशेषितानि अणुव्रतानिभवंति नि

॥ मूल ॥

प० तं० सव्वाउपाणाइवायाउवेरमणं सव्वाउमुसावायाउवेरमणं सव्वाउअदत्तादाणाउवेरमणं सव्वाउमेहु णाउवेरणं सव्वाउपरिग्गहाउवेरमणं पंचकामगुणा प० तं० सद्दा रूवा रसा गंधा फासा पंचआसवदारा प० तं० मिच्छत्तं अविरई पमाया कसाया जोगा पंचसंवरदारा प० तं० सम्मत्तं विरई अप्पमत्तया

॥ भाषा ॥

वीतराग [illegible] परप्राणने परितापवो ताडनादिकदुखनों उपजाववो ते पारितापनकीक्रिया परप्राणनो अतिपातविनाश तेणे नीपजावीक्रिया ते प्राण ातिपातकी पंचमहाव्रतश्रावकनांव्रत नी अपेक्षायें घणोमोटो व्रत तेमहाव्रत कह्या तेकहेछे सर्वथकी मन वचन कायानेकरी तथा करण कारण अनुमती भेदे करी छकायनां प्राणतेहने अतिपात विनाश तेहथकी विरमवो उसरवो तेसर्व प्राणातिपातविरमणपहिलामहाव्रत १ सर्व क्रोधें लोभें मृषा झूंठोबोल वाथी विरमवो तेसर्व मृषावादविरमण दूजोव्रत २ जीव स्वामि गुरु अदत्तथकीविरमवो ते सर्वादत्तादानविरमण तीजोव्रत ३ सर्व नवभेदथकी औदारिक

॥ टीका ॥

जंरास्थानत्वंपुनरेषांसाधारणमिति । नोदिहैषामभिहितं । तथासमितयः संगताः प्रवृत्तयः तत्रेर्यासमिति गमने सम्यक् सर्वपरिहारतः प्रवृत्तिर्भा
षासमितिर्निरवद्यवचनप्रवृत्तिः एषणासमिति र्द्विचत्वारिंशद्दोषवर्जनेनभक्तादिग्रहणेप्रवृत्तिः आदानेग्रहणे भांडमात्रयो रुपकरणपरिछदस्य निक्षेपणा
वस्था पादानसमितिः सुप्रत्युपेक्षितादिसांगतेनप्रवृत्तिश्चतुर्थी १ । तथोच्चारस्य पुरीषस्य प्रश्रवणस्य मूत्रस्य खेलस्य निष्टीवनस्य सिंघाणस्य नासिकाश्लेष्मणां।

॥ मूल ॥

अकसाया अजोगया पंचनिज्जरठाणा पं० तं० पाणाइवायाउवेरमणं मुसावायाउ अदिन्नादाणाउ मेहुणा
उवेरमणं परिग्गहाउवेरमणं । पंचसमिईउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाणभंडम

॥ भाष ॥

मैथुन नवभेदेवैक्रियमैथुनएवं १८ भेदेमैथुनथकीविरमवो तेसर्वमैथुनविरमणचोथोमहाव्रत नवविधपरिग्रहथीविरमवो तेसर्वपरिग्रहविरमणपांचमोमहा
व्रत पांचकामगुण कामियेअभिलखीयेते कामकहीये तेहीज गुणपुद्गलस्वभावतेकामगुण अथवा काममदनतेहना दीपावक ते कामगुणकह्या तेकहेछे
शब्दतेसांभलवो रूपते देखवो रसते आस्वाद गंधतेनाकनोविषय फरसतेकायनोविषय आश्रवते कर्मआववानोउपाय तेहनेद्वारसरीखाद्वारतेह
नेआश्रवद्वारकह्या तेकहेछे मिथ्यात्वतेविपरीतसद्दहणा तेहपापआविवानो उपाय १ एमअविरतिअप्रत्याख्यान २ प्रमादतेप्रमत्तपणो ३ कषायतेक्रो
धादिक ४ योगतेमनोयोगादिक ५ पंचसंवरद्वारजेणेकरी कर्मनोअणमलिवो तेसंवर तेहनाद्वार तेउपायपांचकह्यातेकहेछे सम्यक्तशुद्धदर्शन १ वि-
रतितेप्रत्याख्यान २ अप्रमादपणुं ३ कषायनेटालिवो ४ अजोगतामनोजोगादिकनेरोधवो निर्ज्जरातेदेशथकीजीवनाप्रदेशहुंती कर्मपुद्गलनूंखपाव-
णं जूओकरिवो तेनाथानककहितांउपाय तेनिर्ज्जराठाणकह्यापांचेभेदे तेकहेछे जीवमारिवाथकीविरमवोजसरिवो एहकर्मखपाविवानोउपाय १

॥ टीका ॥

जल्लस्यदेहमलस्य परिष्टापनायाः परित्यागेसमितिः स्थंडिलादिर्दोषपरिहारतः प्रवृत्तिरितिपंचमी । अस्तिकायाः प्रदेशराशयः धर्मास्तिकाया-
दयोगतिस्थित्यवगाहोपयोगस्पर्शादिलक्षणाख्यितिः सूत्रेषुउत्कृष्टादिविभागएवमनुगंतव्यः । यदुतः । सागरमेगं १ सिय २ सत्त ३ । दसय ४ सत्तरस ५ त
हयबावीसा ६ ॥ तेत्तीसंजावठिई । सत्तसुविकमेणपुढवीसु ॥ १ ॥ जापढमाएसुजेट्ठा । साबीयाएकणिट्ठियाभणिया ॥ तरतमजोगोएसो । दसवाससहस्सरय

॥ मूल ॥

त्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिठावणियासमिई । पंचअत्थिकायाप० तं० धम्मत्थि
काए अधम्मत्थिकाए आगासत्थिकाए जीवत्थिकाए पोग्गलत्थिकाए रोहणीनक्खत्तेपंचतारे प० पुणव्वसु

॥ भाषा ॥

एकमृषावादविरमणं २ इम अदत्तादानविरमण ३ इममैथुनवेरमण ४ परिग्रहरोविरमण ४ सावधानपणेप्रवर्त्तवोतेसमितिपांचप्रकारकही तेकहेछे-
चालतोसर्वजीवनेजोईप्रवर्त्तवोतेईर्यासमिति १ निरवद्यवचननीप्रवृत्तिभाषासमिति २ । ४२ दूषणटालीभातेपाणीनूंलेवोतेएषणासमतिकही ३ । आदानक
हतांभांडमात्रउपकरणने मूंकतां समति पूंजीजोईलेवो जोईमूंकिवो तेचोथीसमतिकही उच्चार विष्टा प्रश्रवण मूत्र खेल थूक सिंघाण नांकनोमल रिंट
जल्लमैलएतलापरठतांसमतितेस्थंडलदोषटालीप्रवर्त्तवो एपांचमीसमतिजाणवी ५ पांचअस्तिकायअस्तिकहतांप्रदेशतेहनाकाय तेराशितेअस्तिकायकहीये
तेकहेछे धर्मंकहियेंचलनस्वभावएहवाप्रदेशराशितेधर्मास्तिकाय १ अधर्मास्तिकायस्थितिस्वभाव २ आकाशास्तिकाय जीवने पुद्गलनेबिषे अवकासदेवा
नोस्वभाव जीवास्तिकायउपयोगलक्षण ४ पुद्गलास्तिकायस्पर्शलक्षणजाणिवो ५ रोहिणीनक्षत्रनापांचताराकह्या पुनर्वसुनक्षत्रना पांचताराकह्या ह

णाए ॥ २ ॥ तथा । दो १ साहि २ सत्त ३ साहिय ४ । दस ५ चोदम ६ सत्तरेवअयराइं ॥ सोहम्मजावसुक्को । तदुवरिंइक्किक्कमारोवा ॥ ३ ॥ पलियं १दोसार २साहिय३ सत्त ४ साहिय ५ दस ६ चउद्दस७ सत्तरस८ सहस्सारे तदुवरिंइक्किक्कमारोवित्ति तथावातंसवातमित्यादीनिहादशवाताभिलापेनविमानना ॥ टीका ॥

नक्खत्तेपंचतारे प० हत्थनक्खत्तेपंचतारे प० विसाहधणिठानक्खत्तेपंचतारे प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवी ए अत्थेगइआणंनेरइयाणं पंचपलिउवमाइं ठिई प० तच्चाएणंपुढवीएअत्थेगइआणं नेरइयाणंपंचसागरो वमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणंपंचपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेग इयाणंदेवाणं पंचपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणंदेवाणं पंचसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वायं सुवायं वायप्पभं पञ्चुतरं वायावत्तं वायकंतं वायप्पहं वायवन्नं वायलेसं वायज्झयं वा ॥ मूल ॥

स्तनचत्रना पांचताराकह्या विशाखानचत्रनांपांचताराकह्याधनिष्टानचत्रनापांचताराकह्या इणीअरत्नप्रभापहिलीपृथवीने केतलाएक नारकीनी पांचपल्यो पममध्यआउखूंकहियें तीजोवालुकापृथवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पांचसागरोपममध्यआउखोकहियें असुरकुमारभवनपतीकेतलाएकनोदेवतानोंपांच पल्योपमआउखोकह्यो भगवंतें सोधर्मईशान पहिले बीजेदेवलोके केतलाएकदेवतानो पांचपल्योपम आउखोकह्यो तीजेसनत्कुमारमाहेंद्रचउथेदेवलोकनेवि षेकेतलाएकदेवलोकना देवताने पांचसागरोपमआउखूंकह्यो भगवंते तीजेचउथे देवलोके जेदेवता वात १ । सुवात २ । वातप्रभ ३ । पोजेप्रतरे ४ । वाताव र्त्तनामके ४ । वातकांत ४ । वातप्रभ ५ । वातवर्ण ६ । वातलेश ४ । वातध्वज ८ । वातशृंग ८ । वातसिद्ध १० । वातकूट ११ । वातोत्तरावतंसक १२ ए ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मानितास्त्वेवंसूराभिलापेनेति ॥ ५ ॥ षट्स्थानकमथतत्त्वसुबोधं नवरमिहलेश्या १ जीवनिकाय २ बाह्य ३ ऽभ्यंतरतपः ४ समुद्घाता ५ व्यग्रहार्थानिस
र्गाश्च षट् नयनार्थैर्ह्रिश्चित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थंनयमेवेति तत्रलेश्यानांस्वरूपमिदं। कृष्णादिद्रव्यसाचिव्यात्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायंलेश्या

॥ मूल ॥

यसिंगं वायसिद्धं वायकूडं वाउत्तरवडिंसगं सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं
सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोव
माइंठिई प० तेणंदेवापंचण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंति ऊससंतिनीससंतिवा तेसिणंदेवाणं पंच
हिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतगइयाभवसिद्धियाजीवाजे पंचहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव
अंतंकरिस्संति ॥ ५ ॥ छलेसाउपन्नत्ता तंजहा कण्हलेसा नीललेसा काउलेसा तेउलेसा

॥ भाषा ॥

ह १२ विमाने तथावली। सूर १। सुसूर २। सूरावर्त्त ३। सूरप्रभ ४। सूरकांत ५। सूरवर्ण ६ सूरलेश्य ७। सूरध्वज ८। सूरशृंग ९। सूरसिद्ध १०। सूरकू
ट ११। सूरोत्तरावतंसक १२। एह २४ विमानेदेवतापणेऊपनाछे तेहदेवतानें उत्कृष्टपणे पांचसागरोपमआऊखोकह्यो तेहदेवतापांचपखवाडे पांचअर्द्ध
मासे थोडोसासले घणोसासले नोचोसासमूंके तेहदेवताने पांचवर्षसहस्रेंगये आहारनोअर्थऊपजेंछे केतलाएक संसारमांहिभव्यजीव जेहपांचभवने आंतरे
सोभस्यें बूझस्यें मूंकास्ये संसारसागरथको सर्वदुःखनोअंतकरिस्यें मोक्षजास्यें इति पांचमूंठाणोसम्पत्तं ॥ ५ ॥ छट्ठोठाणोकहेछे। छलेश्याकही

शब्दःप्रयुज्यतइति तथाबाह्यतपः बाह्यशरीरस्यपरिशोषणेनकर्मक्षपणहेतुत्वादिति । आभ्यंतरंचित्तनिरोधप्राधान्येनकर्मक्षपणहेतुत्वा[illegible] तथाछद्मस्थोऽकेव ॥ टीका ॥

पम्हलेसा सुक्कलेसा छजीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तस काए छव्विहे बाहिरेतवोकम्मे प० तं० अणसणे उणोयरिया वित्तीसंखेवो रसपरिच्चाउ कायकलेसो संली णया छव्विहेअभिंतरेतवोकम्मे प० तं० पायच्छित्तं विणउ वेयावच्चं सज्झाउ झाण उस्सग्गो छठाउ ॥ मूल ॥

कृष्णादिकपुद्गलनासंसर्गथकीआत्मानोपरिणाम अन्यथापणेपरिणमे ते लेश्याकहीये उक्तंच कृष्णादिद्रव्यसाचिव्या त्परिणामोयआत्मनः स्फटिकस्येवतत्रायं ले श्याशब्दः प्रयुज्यते । महाकाले पुद्गलेनीपनोकृष्णलेश्या १ । नीलासूडानें वर्णेतेनीललेश्या २ । अलसीनाफूलसरीषीकापोतलेश्या ३ । हींगलूपरेंत्यांसरीखा तेजोलेश्याजांणिये हरतालसरीषीपद्मलेश्या ५ । संखसारीषीउजलीशुक्ललेश्या ६ । संसारमांहि छप्रकारे जीवनिकाय जीवसमूहकहेछे तेकहेछे पृथवीकाय पृथवीमाटीकायसमूह १ । एमज अपजलकायपाणी २ । तेयकायअगनि ३ वायुकाय वायरो वनस्पतीकायतृणवृक्षादिक ५ त्रसकायवेंद्रियादिक पचेंद्रियलगे छप्रकारे बाह्यशरीरने शोषिकर्मखपावे तेबाह्यतप तेहनोकरिवो तेहबाह्यतपकर्मकहिये तेकहेछे अणसण उपवासएकथकीमांडी छमासलगे ऊणोदरीऊणे पेटेजमिवो पूरोआहारनलेवो २ । वृत्तिसंक्षेप वृत्तिन करिवो ३ । रसनोपरित्याग आंबिलनिवी प्रमुखकरिवो कायशरीरे कृशतादितापलोचआतापनादि कनोकरिवोसंलीनताअंगउपांगसंवरी अशयनादिकनोकरिवो छप्रकारेअभ्यंतरतप अंतरंगमलनो सोधणहारतप तेहनो कर्मकरिवो तेतपकर्मकह्यो तेस ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

लीनत्र भवाच्छाश्रयिकाः समेकीभावेनोत्प्राबल्येनघातानिनिर्जरणानिसमुद्घातावेदनादिपरिणतोहिजीवोबहून् वेदनीयादिकर्मप्रदेशान्कालांतरानुभाव योग्यानुदीरणेनाकृष्योदयेप्रक्षिप्यानुभूयनिर्जरयति आत्मप्रदेशैः संश्लिष्टान्शातयतीत्यर्थस्तेचेहवेदनादिभेदेनषडुक्ताः तत्रवेदानासमुद्घातोऽसावद्यकर्माश्रय कषायसमुद्घातः। कषायाख्यचारित्रमोहनीयकर्माश्रयः मारणांतिकसमुद्घातोंऽतर्मुहूर्तशेषायुष्ककर्माश्रयो वैकुर्विकतैजसाहारकसमुद्घाताः शरीरनामकर्मा श्रयास्तत्रवेदनासमुद्घातसमुद्घतआत्मावेदनीयकर्मपुद्गलशातंकरोति । कषायसमुद्घातसमुद्घतः कषायपुद्गलशातं मारणांतिकसमुद्घातसमुद्घत आयुःकर्मपु द्गलशातः वैकुर्विकसमुद्घातसमुद्घतस्तुजीवप्रदेशान् शरीराद्बहिर्निष्काश्यशरीरविष्कंभबाहल्यमात्रमायामतश्च संख्येयानियोजनानि दंडंनिसृजतिनिसृज्य

॥ मूल ॥

मत्थियासमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतिअसमुग्घाए विउव्वियसमुग्घाए ते यसमुग्घाए आहारसमुग्घाए छव्विहेअत्थुग्गहे प० तं० सोइंदियअत्थुग्गहे चक्खुइंदियअत्थुग्गहे घाणिं

॥ भाषा ॥

गलेशागलित्खाणस्थे अनुक्रमेकहेछे प्रायछित तेअतीचारदूसण निवारवा भणी आलोचनादिकनोंदेवो विनयतेवडेशाब्यांजठिवो वेयावच्च आहारादिक दानेंकरी भोउंभवो कालवेलायें सूत्रभणिवो ध्यानतेशुभध्याननों ध्यायवो उत्सर्गते कायोत्सर्गकरिवो छद्मस्थना छ समुद्घातकह्या सातमोकेवलिसमुद्घात तेकेव लीनो एकाभावे प्रवलपणे जीवप्रदेशथी कर्मपुद्गलनों हणिवो निर्जरवो तेसमुद्घातकहिये तेकहेछे प्रथमवेदनासमुद्घात १ वेदनाव्याप्योजीवघणावेदनीयकर्म नाप्रदेशकालांतरेअनुभववायोग्यछे तेउदीरणाकरिने आक्षेपोउदयावलिकायें प्रक्षेपीभोगवीने निर्जरेआत्मानाप्रदेशथीसंवद्धछे वेदनीयकर्मना पुद्गलतेविगला कषायसमुद्घातजीवकषायना पुद्गलनिर्जरावे मारणांतिकसमुद्घात समुद्घतजीव आउखाकर्मपुद्गलनिर्जरे ३ विकुर्वणासमुद्घातसमुद्घतजीवना प्रदेश शरीरथकी

घयथास्थूलोवैक्रियशरीरनामकर्मपुद्गलान्प्राग्बद्धान्शातयति एवंतैजसाहारकसमुद्घातावपिव्याख्येयाविति । तत्रार्थस्यसामान्यनिर्देशस्वरूपस्यशब्दादे रवेतिप्रथमव्यंजनावग्रहानंतरं ग्रहणं परिच्छेदनमर्थावग्रहः सचैकसामयिको नैश्चयिको व्यावहारिकस्त्वसंख्येयसामयिकः सचषोढा श्रोत्रादिभिरिंद्रियैर्न ॥ टीका ॥

दिअत्थुग्गहे जिब्भिंदियअत्थुग्गहे फासिंदियअत्थुग्गहे कत्तियानक्खत्तेछतारे प० असलेसानक्खत्तेछतारे प० ईमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइआणंनेरइआणं छपलिउवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीए अत्थेगइया णंनेरइआणं छसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणंअत्थेगइयाणंछपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मी ॥ मूल ॥

वाहिरकाढीशरीरनेंबाहल्यपणेविष्कंभपणे ऊंचपणें संख्यतायोजनदंडकरी वैक्रियशरीरनामकर्मना स्थूलपुद्गलनेनिर्जरे ४ तेजोलेश्यामूंकेतिवारे तेजसपुद्गल निर्जरे ५ पूर्वधरसंदेहटालिवानेअर्थे आहारकशरीरकरे आहारसमुद्घातकरतो आहारकशरीर पुद्गलनिर्जरावे ६ छ प्रकारेंअर्थावग्रह व्यंजनावग्रहानंतर अर्थनो सामान्यपणेग्रहिवोते अर्थावग्रह ते एकसमयरहै व्यवहारें असंख्यातसमयेंरहै तेकहैछै श्रोत्रेंद्रियकान तेणेकरी सामान्यप्रकारें शब्दरूपअर्थनोग्रहिव तेश्रोत्रेंद्रियोअर्थावग्रह १ चक्षुकहिये आंखतेणेकरी सामान्यप्रकारेंरूपनोंग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रिय अर्थावग्र २ एमनासिकायें गंधनोग्रहण ते घ्राणेंद्रियअर्थाव ग्रह ३ जीभनेस्वाद ग्रहिवोतेजिह्वेंद्रिय अर्थावग्रह ४ शरीरेंकरी स्पर्शनोग्रहिवो तेस्पर्शेंद्रियार्थावग्रह ५ मनेंकरी अर्थनोंग्रहिवो ते मनोइन्द्रिय अर्थावग्रह ६ कृत्तिकानक्षत्रनाछतारोकह्या असलेषा नक्षत्रना छतारोकह्या एणीयें रत्नप्रभापहिली पृथ्वीने विषेंकेतला एकदेवतानोंछपल्योपम मध्यमआउखोकह्यो। ॥ भाषा ॥

साणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणंछपलिओवमाइंठिई प० सणंकुमारमाहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइआणंदेवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सयंवाई सयंभू सयंभूरमणं घोसं सुघोसं महाघोसं किठिघोसं वीरं सुवीरं वीरगतं वीरसेणियं वीरवत्तं वीरप्पभं वीरकंतं वीरवन्नं वीरज्झयं वीरसिंगं वीरसिद्धं वीरकूडं वीरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणंछसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाछएहंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं छहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ

तीजोवालुकप्रभा पृथवीनेंविषें केतलाएक नारकीनीं छ सागरोपम आउखोंकह्यो। असुरकुमारदेवतानीं केतलाएकनीं छपल्योपमआउखोकह्यो। सौधर्मईशान देवलोकने विषें केतला एकदेवतानीं छपल्योपम आउखोकह्यो। तीजेसनत्कुमार चोथे माहेंद्र देवलोके केतलाएकदेवतानो छसागरोपम आउखो कह्यो। तीजेचोथे देवलोके जेदेवलोके जेदेवता स्वयंवादी १। स्वयंभू २। स्वयंभूरमण ३ घोस ४। सुघोस ५। महाघोस ६। कृष्टिघोस ७। वीर ८। सुवीर ९। वीरगत १०। वीरसेनिक ११। वीरावर्त्त १२। वीरप्रभ १३। वीरकांत १४। वीरवर्ण १५। वीरध्वज १६। वीरशृंग १७। वीरसिद्ध १८। वीरकूट १९। वीरोत्तरावतंसक २०। एहवेविमाने देवतापणे ऊपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो छसागरोपम आउखोकह्यो तेदेवता छठे अर्द्धमासे एतले छठेपखवाडेसासो सातले घणोसासले उंचालेवातेऊसास नीचोमेहलवोतेनीसास तेदेवताने छहजारवर्षे आहारनों अर्थऊपजे छेकेतलाएकभव्यजीव जेछेभवनेआंतरे सीझस्यें

इन्द्रियेणचमनसाजन्यमानत्वादिति स्थितिसूत्रेसर्वार्थादीनिविंशतिविमानानीति ॥ ६ ॥ अथसप्तमस्थानकंविव्रियते तत्रकंठा नवरंनिहभयसमुद्‌घातमहावीरोवर्षधरवर्षगोणमोहार्थानिचसूत्राणिषट् नवत्रार्थानिपंच स्थित्यर्थानिनव उच्छ्वासाद्यर्थानित्रीण्येवेति तत्रेहलोकभयंयत्स ॥ टीका ॥

संतेगइयाभवसिद्धियाजीवाजेठहिंभवग्गहणेहिंसिज्झिस्संति जावसव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥ ॥ मूल ॥
सत्तभयठाणा प० तं० इहलोगभए परलोगभए आदाणभए अकम्हाभए आजीवभए मरणभए असिलोगभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणंतियसमुग्घाए वेउव्वियसमुग्घाए तेयससमुग्घाए आहारसमुग्घाए केवलिसमुग्घाए समणेभगवंमहावीरे सत्तरयणीउ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्या स

बूझस्ये मूकासे भवमांहिथी सर्वदुखनो अंतकरिस्ये मोक्षजासे इतिछठोठाणोसमत्त ॥ ६ ॥ हिवेसातनो अधिकारकहेछे सातभयनाठामकह्या तेकहेछे ॥ भाषा ॥
स्वजातीयथकोभय उपजेतेइहलोकभय परजातीयथकी भयउपजेतेपरलोकभय द्रव्यआश्रीउपजेते आदानभयबाह्यनिमित्तविना अकस्मात् भयउपजेते आक स्मिकभय आजीविका जीवकानो उपायतेहनो भय तेआजीविकाभय मरणनोभय तेमरणभय अश्लोकअकीर्तितेहनोभय उपजेतेअश्लोकभय सातसमुद्घातपद नो अर्थछट्ठाणेकह्योछे तेकहेछे वेदनासमुद्घात कषाय समुद्घात मारणांत समुद्घात वैक्रियसमुद्घात तैजससमुद्घात आहारकसमुद्घात सातमोकेवलीसमुद्‌ घाततेहकोहक केवलीच्यार अघातीयाकर्मखपावणेअर्थे केवलीसमुद्घातकरे पोतानां प्रदेशलोकांतलगें विस्तारी कर्मपुद्गलनिर्जरे श्रमण तपस्वी भगवंतमहा

जातीयात् परलोकभयंयद्विजातीयात्आदानभयं द्रव्यमाश्रित्यजायते अकस्माद्भयंबाह्यनिमित्तनिरापेक्ष्यंस्वविकल्पाज्जातं शेषाणिप्रतीतानि नवरं मश्लो कोऽश्लोकीर्तिरिति। समुद्घाता:प्रागेव नवरं केवलिसमुद्घातो वेदनीयनामगोत्राश्रयइति। तथा रत्नि विततांगुलिर्हस्तइति जर्हीवलेनेतिद्दोत्थाबभूवेति तथा

त्तवासहरपव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते महाहिमवंते निसढे नीलवंते रूपी सिहरी मंदरे सत्तवासा प० तं० भरहे हेमवंते हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरन्नवए एरवए खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाउ सत्तकम्मपयडीउ वेएई महानरकत्तेसत्ततारे प० कत्तिआइआसत्तनरकत्ता पुव्वदारिआ प० महाइआसत्तन

वीर सातरत्निवितितांगुलहाथ रत्निकहियै एतलेसातहाथऊंचापणेहुया। सातवर्षधरपर्वतकहियै भरतादिकक्षेत्र तेहनाधरणहारकह्या। मर्यादाकारीतिकहै छै। भरतक्षेत्र हिमवंतक्षेत्र मर्यादाकारीतेलघुहिमवंतपर्वत हिमवंतक्षेत्र हरिवर्षक्षेत्र मर्यादाकारी तेमहाहिमवंत पर्वत हरिवर्षक्षेत्र महाविदेह मर्यादा कारी रूपीनिषधपर्वत महाविदेह रम्यकक्षेत्रमर्यादाकारी निषधनीलवंतपर्वत रम्यक ऐरण्यवतक्षेत्र मर्यादाकारीरूपीपर्वत ऐरण्यवतऐरवत क्षेत्र मर्यादा कारी शिखरीपर्वत। पूर्वापर महाविदेह मर्यादाकारी मेरुपर्वत। जंबूद्वीपमांहिसातवासाकहियै सातक्षेत्रछै तेकहैछै भरतक्षेत्र मनुष्यनो १ हेमवंतक्षेत्रयुगलियांनूं २ हरिवर्षक्षेत्रयुगलियांनूं ३ महाविदेहक्षेत्रचौथो कर्मभूमियामनुष्यनो ४ रम्यकक्षेत्रयुगलियांनूं ५ एरण्यवंतक्षेत्रयुगलियांनो ६ एरवतक्षेत्रमनुष्यनो ७ क्षीणसर्वथापिक्षयगयोछै मोहनीकर्म जेहनों एहवाभगवंतपूज्ययती मोहनीयकर्म वरजीनें सातकर्मनी प्रकृति ज्ञानावरणीय १। दर्शनावरणीय २। वेदनी

॥ टीका ॥

अभिजिदादीनि सप्तनक्षत्राणि पूर्वद्वारिकाणि पूर्वदिशि येषु गच्छतः शुभंभवति । एव मश्विन्यादीनि दक्षिणद्वारिकाणि पुष्यादीन्य परद्वारिकाणि स्वा त्यादी न्युत्तरद्वारिकाणीति सिद्धांतगतमिदंतुमतान्तरमाश्रित्यकृतिकादीनिसप्तपूर्वद्वारिकादीनिभणितानि चंद्रप्रज्ञप्तौतुबहुतराणिमतानि दर्शितानीहार्थं

॥ मूल ॥

रक्खत्तादाहिणदारिश्रा प० अणुराहाइआसत्तनरक्खत्ताअवरदारिया प० धणिठाइआसत्तनरक्खत्ता उत्तरदारिया प० पाठांतरेण । अभीयाइयासत्तनरक्खत्ता प० इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प० तच्चाएणंपुढवीएनेरइयाणंउक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० चउत्थीएणंपुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणंअत्थेगइयाणं सत्तपलिउवमाइंठिई प०

॥ भाषा ॥

य ३ । आउखो ४ । नामकर्म ५ । गोत्रकर्म ६ । अंतरायकर्म ७ । एहउदयकालेंवेदे भोगवें मघानक्षत्रना सातताराकह्या कृत्तिकाआदिलेईनें सातनक्षत्र पूर्वद्वारिकाकह्या पूर्वदिशिजाणहारने भलूंथाय । मघादिकसातनक्षत्र दक्षिणद्वारिकाकह्या । अनुराधादिक सातनक्षत्र पश्चिमद्वारिकाकह्या । धनिष्ठादिक सातनक्षत्रउत्तरद्वारिकाकह्या । पाठांतरेकरीकहियेछे । अभिजिदादिक सातनक्षत्रपूर्वद्वारिका अश्विनीथी सातनक्षत्र दक्षिणद्वारिका पुष्यादिकसातनक्षत्र पश्चिमद्वारिका स्वातिआदिक सातनक्षत्र उत्तरद्वारिकायहमूलमतजांणिवो एणीयेरत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनोसातपल्योपममध्यम आउखोकह्यो । तीजीनरकपृथिवीनेविषें नारकीनोउत्कृष्टोसातसागरोपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीनेविषें नारकीनो सातसागरोपमजघन्य आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपती केतलाएकदेवतानो सातपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोकनेविषें केतला एकदेवतानूंसातपल्योपम

॥ मूल ॥

सोहम्मीसाणेसुकप्पेसुअत्थेगइयाणं देवाणंसत्तपलिउवमाइंठिई प० सणंकुमारेकप्पे देवणंउक्कोसेणंसाइरेइंगा सत्तसागरोवमाइंठिई प० मांहिं देकप्पेउक्कोसेणंसाइरेगाइंसत्तसागरोवमाइंठिई प० बंभलोएकप्पेअत्थेगइ याणं देवाणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० जे देवा समं समप्पभं महप्पभं पभासं भासुरं विमलं कंचणकूडं सणं कुमारवडिंसगं विमाणं देवत्ताउएववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणंसत्तसागरोवमाइंठिई प० तेणं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आ हारठे समुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे सत्तहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावसव्वदु

॥ भाषा ॥

आउखोकह्यो । बीजासनत्कुमार देवलोके देवतानोउत्कष्टो सातसागरोपम आउखोकह्यो । माहेंद्रचउथे देवलोके देवतानोउत्कष्टो झांझेरोसातसागरोप म आउखोकह्यो । ब्रह्मपांचमे देवलोके केतलाएकदेवतानो सातसागरोपमआउखोकह्यो । सनत्कुमारदेदलोके जेदेवता सम १ । समप्रभ २ । महाप्रभ ३ । प्रभास ४ । भासुर ५ । विमल ६ । कंचनकूट ७ । सनत्कुमारावतंसक विमान ८ । एहआठविमाननेविषें जेदेवताउपनाछे तेहदेवतानों उत्कष्टोसात साग रोपम आऊखोकह्यो । तेहदेवता सातमें पखवाडे सासोसासले घणोमासलेवे नीचोसासलेवे । तेहदेवताने सातवे वर्षसहस्त्रे सातहजारवर्षे आहारनों अ र्थेऊपजेछे केतलाएकभव्यजीव जेहसातभवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्यें मूंकास्ये सर्वदुक्खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॰इति सातमोठाणोसमत्तं ॥ ७ ॥

इति स्थितिसूत्रेसमाहीनिमष्टैविमानननामानीति ॥ ७ ॥ अथाष्टमस्थानकं व्याख्यायते। सुगमंचैतनवरं मिहमदस्थानप्रवचनमातृचैत्यसूत्रजंबू शाल्मलीजगतीकेवलिसमुद्घातगणधरनक्षत्रार्थानिसूत्राणिनव स्थित्यर्थानिषट्उच्छ्वासाद्यर्थानिचोक्तानीति। तत्रमदस्याभिमानस्य स्थानानिजात्यादीनितान्येव मद्प्रधानतयाऽर्थयवाह जाइमएइत्यादि जात्यामदोजातिमदएवमन्यान्यपि अथवामदस्यस्थानानितान्येवाह जाइमएइत्यादिशेषंतथैव तथाप्रवचनस्यद्वादशांगस्य तदाधारस्यवा संघस्य मातरइव प्रवचनमातर ईर्यासमित्याद्ययोद्वादशांगेभिहिता आश्रित्य साक्षात्प्रसंगतोवाप्रवर्त्तते भवतिचयतो यत्प्रवर्त्तते तस्यतदाश्रित्यमातृकल्पतेति संत्रपक्षेतु यथा शिशुर्मातरममुंच नात्मलाभंलभते एवंसंघस्तामसुंचत्संघत्वंलभते नान्यथेतोर्याभिमित्यादीनांप्रवचनमातृकल्पमेवेति तथा

॥ टीका ॥

रक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ७ ॥ अठमयठाणा प० तं० जातिमए कुलमए बलमए रूवमए तवमए सुयमए लाभमए इस्सरियमए अठपवयणमायाउ प० तं० ईरियासमिई भासासमिई एसणासमिई आयाण

॥ मूल ॥

हिवे आठनोठाणोकहेछे। आठमदनास्थानकआश्रय तेमदस्थानककह्या। तेकहेछे जातिमदजातितेमातृपक्ष तेणेकरीमद अभिमान तेजातिमद १। इमकुलजेपितृपक्षतेणेकरीमद तेकुलमद २। बलते शरीरनो सामर्थ्यपणो ३। रूपतेसौंदर्यपणो ४। तपतेछठ आठमादिक ५। श्रुतजेशास्त्र घणोंभणे तेणेकरीमद ६। लाभतेफलप्राप्ति तेणेकरीमद ७। ऐश्वर्यतेठकुराई ८। यह आठमदकह्या। आठप्रवचनमाता प्रवचनद्वादशांगी अथवाद्वादशांगनं आधारतेसंघ तेहने मातासरिखो माताहितकारणी ते प्रवचनमाता कहीये। तेकहेछे ईर्यासमिति चालतांजीवने जोईचाले तेईर्यासमिति १। भाषानिवद्यबोलिते भाषासमिति २। ४२ दूषणटाली आहार भातपाणीलेवे तेएषणासमिति ३। उपकरणपूंजीलेवो मूंकवोते आदानसमिति ४ मलमूत्र पूंजीनिर्दोष स्थंडिले

॥ भाषा ॥

॥ २१ ॥

॥ टीका ॥

व्यंतरदेवानांचैत्यवृक्षास्तन्नगरेषु सुधर्मादिसभानामग्रतो मणिपीठिकानामुपरि सर्वरत्नमया छत्रचामरध्वजादिभिरलंकृताभवन्ति। तेचैवं श्लोकाभ्यामवगन्त व्याः कलंबोउपिसायाणं वडोजक्खाणचेइय। चुलसीभूयाणंभवे रक्खसाणंतुकंडउय १ असोगोकिंनराणंच किंपुरिसाणयचंपत्रो नागरुक्खोभुयंगाणं गंधव्वाण यतुंबुरुत्ति ॥ २ ॥ तथा जंबुत्ति उत्तरकुरुषु जंबूवृक्षः पृथिवीपरिणामः सुदर्शनेतितन्नाम एवंकूटशाल्मलीवृक्षविशेषः एवं देवकुरुषु गरुडजातीयस्यवेणुदेवाभि

॥ मूल ॥

जंऽमत्तनिक्खेवणासमिई उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिठावणियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती कायगुत्ती
वाणमंतराणंदेवाणंचेइयरुक्खाअट्ठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबूणंसुदंसणाअट्ठजोयणाइंउड्ढं उच्चत्तेणं प०
कूडसामलीणं गरुलावासे अट्ठजोयणइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० जंबुद्दीवस्सणं जगई अट्ठजोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं
प० अट्ठसामइए केवलिसमुग्घाए प० तं० पढमेसमएदंडंकरेइ वीएसमए कवाडंकरेइ तइएसमए मंथंकरेइ

॥ भाषा ॥

परिठवे तेपारिठावणियासमिति ५। मननोगोपिवो ठामेराखवो तेमनोगुप्ति १ इमवचननोगोपिवो २ इमजकायानो गोपिवो ३। वाणमंतरदेवतानाचैत्य वृक्ष तेहने निकटवरत्तोवृक्षतेचैत्यवृक्ष जेहव्यंतरेंद्रना घरआगलवृक्ष छत्रकरीरह्याछे तेहचैत्यवृक्ष आठयोजनऊंचा ऊंचपणेकह्या। हिवे उत्तरकुरुक्षेत्र नेमां हि जंबूवृक्ष पृथिवीपरिणाम सुदंसणाएहवेनामे अणाढियादेवनोठाम आठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो निषधपर्वतहेठे देवकुरुक्षेत्रमांहि शाल्मलीवृक्ष गरुड जातीय वेणुदेवतानो आवासभूत तेहआठयोजनऊंचोऊंचपणेकह्यो जंबूद्वीपनें चउफेरजगतीछे जिमनगरनेचउफेर गढहोये तिमतेजगती आठयोजनऊं चोकह्यो। केवलो छेहडे अंतर्मुहूर्त आउखोवके अघातियाकर्म वेदनो १। नाम २। गोत्र ३। आयु ४। बराबर करिवानेअर्थे आठसमयनो केवलसमुद्घा

धानस्यदेवस्याशामइति । जगतीजंबूद्वीपनगरस्यप्राकारकल्पापालीति । तथा पार्श्वस्यार्हतस्त्रयोविंशतितमस्तीर्थकरस्य पुरिषादाणीयस्सत्ति पुरुषाणांमध्ये ॥ टीका ॥
आदानीयग्रादेय: पुरुशादानीय स्तस्याष्टौगणा: समानवाचनाक्रिया साधुसमुदाया: अष्टौगणधरास्तन्नायका: सूरय: । इदंचैतत्प्रमाणं स्थानांगे पर्यूषणकल्पे
च श्रूयते केवलमावश्यके अन्यथा तदप्युक्तम् । दसनवगंगणाणमाणं जिणंदाणंति । कोर्थ: पार्श्वस्यदशगणा: गणधराश्च । तदिह दयोरल्पायुष्कत्वादिना का

चउत्थेसमए मंथंतराइपूरेई पंचमेसमए मंथंतराइपडिसाहरई छठेसमए मंथंपडिसाहरई सत्तमेसमएकवाडं ॥ मूल ॥
पडिसाहरई अठमेसमए दंडंपडिसाहरई ततोपच्छा सरीरत्थेभवइ पासस्सणंअरिहापुरिसादाणिअस्स अठ
गणा अठगणहराहोत्था तं० सुभेयसुभघोसेय वसिठेबंभयारिय ॥ सोमेसिरीधरेचेव वीरभद्देजसेइय ॥ १

तकरे । तेकहेछे केवलीपहिलेसमे आत्मप्रदेशबाहिरकाढी दंडाकारकरे हेठेसातमीलगे ऊपरलोकांतलगे विस्तारेतेकहेछे । बीजेसमेकपाटकरेदक्षिणलोकांत ॥ भाषा ॥
लगेप्रदेशेकरीपूरे तीजेसमयें मंथानकरेच्यारपांखडीनारवाइयानीपरे पूर्वपश्चिम लोकांतलगेपूरे । आत्मप्रदेशविस्तारे । चउथेसमए च्यारविदिशिनाभाग
आंतराप्रदेशेकरीपूरे । पांचमेसमयेमंथानना आंतराविदिशे जेप्रदेशपूर्याछे तेप्रदेशसंहरे पाछाले छठेसमये मंथानसंहरे । सातमे समयें क
पाटसंहरे १ । आठमेसमये दंडप्रतेसाहरे ८ । तिवारपछे शरीरस्थथाये मूलगेशरीरथाये । श्रीपार्श्वनाथ अरिहंतने पुरुषामांहि आदेयशुकमनाधणीजेह
नोवचनसद्दहनेग्राह्यमानतेह पुरुषादानीय तेहने आठगच्छने आठगणधरहुया सामान्य वाचना क्रियासाधु समुदाय तेगच्छतेहना नायक ते गणधर यद्यपि
पार्श्वनाथना १० । गणधर आवश्यके कह्याछे परं वे अल्पायुषहुआ तेमाटे आठलख्याछे तेकहेछे शुभेय १ । शुभघोष २ । वासिष्ट ३ । ब्रह्मचारी ४ । सोम ५

॥ टीका ॥

रणेनाविवचानुमंतव्येति सुभेत्यादिश्लोकः तथाअष्टौनचत्राणि चन्द्रेणसार्द्धम्प्रमर्द्दं चन्द्रोमध्येनतेषांगच्छतीत्येवंलचणंयोगंसंबंधंयोजयन्ति कुर्वन्ति अत्रार्थेऽभिहि
तं श्लोकत्रियम् पुणव्वसुरोहिणीचित्ता महाजेट्ठअणुराहकत्तियविसाहा चंदस्सयजोगत्ति । यानिच दचिणोत्तरयोगीनि तानि प्रमर्द्दयोगीन्यपिकदाचिद्भवन्ति
यतोलोकश्रीटीकाकृतोक्तं । एतानिनचत्राण्युभययोगीनि चन्द्रस्योत्तरेणदचिणेनच युज्यन्ते कदाचिच्चंद्रेण भेदमप्युपयान्तीति ॥ तथार्च्चिरादीन्येकादशविमान

॥ मूल ॥

अठनक्खत्ताचंदेणं सद्धिंपमद्दंजोगंजोएंति तं० कत्तिया १ रोहिणी २ पुणव्वसु ३ महा ४ चित्ता ५ ।
विसाहा ६ अणुराहा ७ जेठा ८ । इमीसेणंरयणप्पहाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठपलिउवमा
इं ठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणंअठसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थे
गइयाणं अठपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अठपलिउवमाइंठिई प०
बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अठसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा अच्चिं १ अच्चिमालिं २ वइरोयणं

॥ भाषा ॥

श्रीवर ६ । वीरभद्र ७ । यशोभद्र ८ । आठनचत्रचंद्रमासाथे प्रमर्दकयोगयोगे साथकरे तेकहेछे । कृत्तिका १ । रोहिणी २ । पुनर्वसु ३ । मघा ४ । चित्रा ५
विशाखा ६ । अनुराधा ७ । ज्येष्ठा । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो आठपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीनरक पृथिवीने विषेकेतलाएक
नारकीनो । आउसागरोपमआउखूंकह्यो असुरकुमारदेवतानोकेतलाएकनो आठपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोकनेविषे केतलाएकदेवतानो

नामानोति ॥ ८ ॥ अथ नवमस्थानकं सुखावबोधम्। नवरमिह ब्रह्मगुप्ति १ तद्गुप्ति २ ब्रह्मचर्याध्ययन ३ पाश्चात्यसूत्राणांचतुष्टयम् ज्योतिष्कार्थंच यमस्य १ भोम २ सभा ३ दर्शनावरणार्थंचतुष्टयं भित्यादर्थानि तथैव तत्र ब्रह्मचर्यगुप्तयो मैथुनविरति परिरक्षणोपाया: नोस्त्रीपशुपंडकैः संसक्तानि संकी ॥ टीका ॥

पभंकरं ३ चंदाभं ४ सूराभं ५ सुपइठाभं ६ अग्गिच्चाभं ७ रिठाभं ८ अरुणाभं ९ अरुणुत्तरवडिंसगं वि माणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं अठसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा अठण्हंअठमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं अठहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुपज्जइ संतेगइयाभवसिद्धियाजीवा जे अठेहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जावअंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥ नवबंभचेरगुत्तीउ प० तं० नोइत्थीपसुपंडगसंसत्ताणिसिज्जासणाणि सेवित्ताभवइ नोइत्थीणंकहंकहित्ता भ ॥ मूल ॥

आठपल्योपमआउखोकह्यो ब्रह्मलोके पांचमे कल्पे केतलाएक देवतानों आठसागरोपमआउखोकह्यो। पांचमेदेवलोके जेदेवता अर्चि १। अर्चिमाली २। वैरोचन ३। प्रभंकर ४। चंद्राभ ५ सूराभ ६। सुप्रतिष्ठाभ ७। अग्निगाध ७ रिष्टाभ८। अरुणाभ १०। अरुणोत्तरावतंसक ११। एम ११ विमाने देवता पणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो आठसागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता आठपखवाडे श्वासोस्वासले ऊंचोसासले नीचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेव ताने आठेवर्षसहस्त्रे गये आहारनोअर्थउपजे केतलाएकभव्यजीव जेआठभवनेआंतरे सोभस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनों अंतकरीस्ये। इति आठमोठाणोस मत्तो ॥ ८ ॥ हिवेनवनोअधिकार लिखियेछे। नवब्रह्मचर्य गुप्ति ब्रह्मचर्यरूप वृक्षने वाडिमोपरें राखिवानो उपाय ते ब्रह्मचर्य गुप्ति कहिये ॥ भाषा ॥

॥ २३ ॥

॥ टीका ॥

र्यानि शय्यासनानि शयनीय विष्टराणि वसत्यासनानि वासेवसयिता भवतीत्येका १ नोस्त्रीणां कथा कथिताभवतीति द्वितीया २ नोस्त्रीगणान् स्त्रीसमुदा यान् सेवयिता उपासयिता भवतीति तृतीया ३ नोस्त्रीणा मिंद्रियाणि नयननासा वेशादीनि मनोहराणि आक्षेपकरत्वात् मनोहराणि रम्यतया आलो कयिता दृष्टानि ध्याता तदेकाग्रचित्ततया दृष्टैवभवतीति चतुर्थी १४ नोप्रणीतरसभोजी गलत्स्नेहरस बिंदुकस्य भोजनस्य भोजको भवतीति पंचमी। नो पानभोजनस्यातिमात्रमप्रमाणं यथा भवत्येव माहारकः सदाभवतीति षष्ठी। नोपूर्वरतं पूर्वक्रीडित मनुस्मर्त्ताभवति रतंमैथुनंक्रीडितंस्त्रीभिः सहतदन्याक्री डेतिसप्तमी। नोशब्दानुपाती नोरूपानुपाती नोगंधानुपाती नोरसानुपाती नोस्पर्शानुपाती नोश्लोकानुपाती कामोद्दीपकान् शब्दादीन् आत्मनोवर्णवादंच

॥ मूल ॥

वइ नोइत्थीणं गणाइं सेवित्ता भवइ नो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता नो पणीयरसभोई नो पाणभोयणस्स अइमायाए आहारइत्ता नो इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं समर

॥ भाषा ॥

ते कहेछे। नही स्त्रीपशुपंडक संसक्त व्याप्तशयनपल्यंकादिक आसन ते बाजोटादिकसेविताहुयें। स्त्रीनोकथावार्तानकहे। स्त्रीना समुदायने सेवेनही स्त्रीना इन्द्रिय नयन नासिकादिक मनोहर मनोरमनदेखें एकाग्रचित्तध्यायेंनही। प्रणीतरसभोजी नहोय गलत्स्नेहरसबिंदुजिमेनही पाणीसरस भोज न अधिकमात्राएअधिकजीमे नहीं बत्रीसकवलउपरांत जीमेनही स्त्रीने पाछल्यासंभोगपूर्वक्रीडा संभारे नही नशब्दानुपाती शब्दसरागी गीतादिकप्रते अनुरागीहोयनसांभले एमजरूडारूपजोवे नही रूडागंधनलेवे न रूडारसनोस्वादकरें न रूडास्पर्शपोताने शरीरेलगाडे आत्मानी श्लाघा नवांछे एतलेशृं

॥ टीका ॥

मानुसरतीत्यर्थः इत्यष्टमी । सोमातसौख्यं प्रतिबद्धस्यापि भवति सातासातवेदनीया दुदयमाप्य प्रौद्यत्सौख्यंतत्तया अनेनच प्रशमस्गुरुत्वस्य व्यदास इतिनवमी इदंच व्याख्यानंवाचनाद्दयानुसारेणक्कृतं प्रत्येकं वाचनयोरेवंविधस्तवभावादिति तथा कुशलानुष्ठान ब्रह्मचर्यं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि ब्रह्मचर्याणि तानि चा चारांगप्रथमश्रुतस्कंध प्रतिबद्धानीति तथा अभिजित् नचत्रं साधिका नवमुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धंयोगं संबंधं योजयति करोति सातिरेकत्वंच तेषां चतुर्विंशो त्यामुहूर्त्तस्य द्विषष्ठिभागैः षट् षष्ट्याच द्विषष्टिभागस्य सप्तषष्ठिभागानामिति । तथाअभिजिदादीनि नवनक्षत्राणि चंद्रस्योत्तरेण योगंयोजयंति तत्रोत्तर

॥ मूल ॥

इत्तान्नवइ नोसद्दाणुवाई नोरूवाणुवाई नोगंधाणुवाई नोरसाणुवाइ नोफासाणुवाई नोसिलोगाणुवाई नो सायासोक्खपडिवद्धेयाविन्नवइ नववंभचेरगुत्तिउ प० तं० इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणं सिज्जासणाणं सेवणया जावसायासुक्खपडिवद्धेयाविन्नवइ नववंभचेरा प० तं० सत्थपरिण्णा लोगविजउ सीउसणिज्जं सम्मत्तं आवंती धुतं विमोहायणं उवहाणसुत्तं महपरिण्णा पासेणंअरहापुरिसादाणीए नवरयणीउ उड्ढं उच्चत्तेणंहो

॥ भाषा ॥

गार मकरे साता सुखनेंविषे प्रतिबद्ध नहोयें न डूबीरहै नवब्रह्मचर्यनी अगुप्ति नवेप्रकारे ब्रह्मचर्य नरहै तेकहैछे । स्त्रीपशुपंडके संसक्तव्याप्तजे शय्यापल्यंका दिक आसनबाजोटादिक तेहनेसेवे नही एमपाळल्या नवबोल बखाण्याछे ते उपराठालीजे एतले ब्रह्मचर्यनी अगुप्तिद्वार नउमूंवाले बेसातासुखनेविषे प्रतिबद्ध खूंचीरहे नवब्रह्मचर्य एतले आचारांगसूत्रना प्रथमश्रुतस्कंधना नवअध्ययन कह्या तेकहैछे । शस्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ सम्य क्त ४ । आवंती ५ । मतांतरे लोकसार धूताध्ययन ६ । मोचाध्ययन ७ । उपधानसूत्र ८ । महापरिज्ञा ९ । पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधाननवरत्नि

स्वांदिग्विस्थितानि दक्षिणार्धास्थित चंद्रेण सहयोगमनुभवंतीतिभाव: बहुसमरमणिज्जाओ इति अत्यंतसमो बहुसमो ऽत एवरमणीयो ऽस्यतस्माद्भूमिभा ॥ टीका ॥
गात्तेपर्वतापेक्षया नापि स्वाचारापेक्षयेति तात्पर्यं आबाहाएत्ति अंतरेकृत्वेतिशेष: उवरिल्लेत्ति उपरितनं ताराख्पं तारकजातीयं चारंभ्रमणं चरतिकरोति नवजोयणियत्ति नवयोजनायामा एवप्रविसन्ति लवणसमुद्रे यद्यपि पंचयोजनसत्काभत्या: संभवंति तथा नदीमुखेषु जगतीरंध्रेभित्थेनैव तावत्प्रमाणा: ज

त्या अभीजिनक्खत्तेसाइरेगेनवमहुत्ते चंदेणंसद्धिंजोगंजोएइ अभीजियाइयानवनक्खत्ता चंदस्सउत्तरेणंजोगं ॥ मूल ॥
जोएइ तं० अभीजिसवणोजावभरणी इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजो
यणसए उड्ढं आबाहएउवरिल्लेताराख्वे चारंचरइ जंबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणियामच्छापविसिंसुवा ३ विजय

नवहाथ जंचपणे देहहुया अभीचनक्षत्राभेरी नवमुहूर्तलगे चंद्रमासाथेंयोग जोजे संबंधकरे अभीचिथकी मांडीनव नक्षत्र चंद्रमाने उत्तरदिसेयोगजोजेसं ॥ भाषा ॥
बंधकरें चाले तेकहैछे । अभीचि १ । श्रवण २ । धनिष्ठा ३ । शतभिषा ४ । पूर्वभाद्रपद ५ । उत्तराभाद्रपद ६ । रेवती ८ । अश्विनी ८ । भरणी ९ । एनव नक्षत्रजाणिवा । एणीयेरत्नप्रभा पहिलो पृथिवीनो घणोसमो घणोरमणीक जेभूमिभाग भूमिनोऊपरलोभाग तेहथकी नवशतयोजनऊंचे आंतरेएतले पृथिवीथकी नवशतयोजनऊंचो जइयें तिहांऊपिल्यो ताराख्प एतलेशनीश्वरनोतारोऊंचोछे भ्रमणकरेछे पृथिवीथकी सातसेनेउयोजन तारामंडलछे । ७९० योजने तारा १० । योजनेसूर्य ८० । योजनेचंद्रमा ४ । योजनेअठ्ठावीस नक्षत्र ४ योजनबुधनोतारो ३ योजनमंगल ३ योजनशनैश्वर सर्वमिली नवसेयोजन थया । जंबूद्दीपमांहीं नवयो जनलांबामच्छपेसेछे लवणसमुद्रमांहि पांचसेयोजननांमच्छछे एणेजगतीनेछिद्रे नदीमुखें नवयोजननामच्छ जंबूद्दीपमांही

गतीरंध्रो चिंत्येनएतावानेव प्रवेशइति लोकानुभावोवायमिति विजय द्वारस्यजंबूद्वीपसंबंधिन: पूर्वदिश्यवस्थितस्य एगमेगाएत्ति एकैकस्मिन् बाहाएत्ति बाहौ ॥ टीका ॥

रसणंदाररसएगमेगाए बाहाए नवनवभोमा प० वाणमंतराणं देवाणं सभाउसुहम्माउनवजोयणाइंउढ्ढं उ च्चतेणं प० दंसणावरणिज्जस्सणंकम्मस्सनउत्तरपगडीउ प० तं० निद्दा निद्दानिद्दा पयला पयलापयला थीणद्धी चक्खुदसणावरणे अचक्खुदंसणावरणे उहिदंसणावरणे केवलदंसणावरणे इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणंणेरइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए अत्थेगइयाणंनेरइयाणं नवसागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणंदेवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थे ॥ मूल ॥

खाडोमांहीआवे जंबूद्वीपना विजयद्वारने एकेक बाहानेपासे भवनवभोमानगरछे तथा उत्तठामकह्याछे वाणमंतरदेवनी सभा सुधर्मा नवयोजन उंचीउंच पणेकहीजाणवी। दर्शनावरणीयबीजोकर्म तेहकर्मनी नव उत्तरप्रकृतिकही तेकहेछे सुखे जागे तेनिद्रा बइठांआवे ते प्रचला २ दुखेजागे तेनिद्रानिद्रा ३ चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला ४। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बलहुवे ५। चक्खुदंसणकहिये आंखतेहनो आवरण पडल तेचक्षुदंसणावरण ६। चक्षुविनाशेष थाकतां च्यारइन्द्रिय तेहनां आवरण तेअचक्षुदंसणावरण ७। अवधि दंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९। एणीयेरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवपल्योपम आउखोकह्यो। चउथी नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो नवसागरोपम आउखोकह्यो असुरकुमार देवनो केतलाएकनो नवपल्योपमआउखोकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवपल्योपम आउखोकह्यो। ब्रह्मदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो नवसागरोपम ॥ भाषा ॥

|| २५ ||

|| टीका ||

पाद्म भोमानि नवभूमिकानि नगराणीति एकोननगराणीत्येके विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथा व्यंतराणां सभा सुधर्मा नव योजनानिऊर्द्ध्वमुच्चत्वेन तथा पद्मा

|| मूल ||

गइयाणं देवाणं नवपलिउवमाइं ठिई प० बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं नवसागरोवमाइं ठिई प०
जेदेवा पम्हं सुपम्हं पम्हावत्तं पम्हप्पभं पम्हकंतं पम्हवण्णं पम्हलेसं पम्हज्झयं पम्हसिंगं पम्हसिद्धं पम्हकूडं
पम्हुत्तरवडिंसगं तहा सुज्जं सुसुज्जं सुज्जावत्तं सुज्जकंतं सुज्जप्पभं सुज्जलेसं सुज्जवण्णं सुज्जज्झयं सुज्जसिंगं
सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइल्लं रुइल्लावत्तं रुइल्लप्पभं रुइल्ललेसं रुइल्लवण्णं जावरुइल्लुत्तरवडिंसगं
विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं नवसागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवा नवण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा
पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणंदेवाणं नवहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइयाभव

|| भाषा ||

आउखोकह्यो । ब्रह्मलोके जेदेवता पद्म १ । सुपद्म २ । पद्मावर्त ३ । पद्मप्रभ ४ । पद्मकांत ५ । पद्मवर्ण ६ । पद्मलेश्य ७ । पद्मध्वज ८ । पद्मशृंग ९ । प
द्मसिद्ध १० । पद्मकूट ११ । पद्मोत्तरावतंसक १२ । एम १२ विमाने तथावली । सूर्य १ । सूर्यावर्त २ । सूर्यप्रभ ३ । सूर्यकांत ४ । सूर्यवर्ण ५ । सूर्यलेश्य ६
सूर्यध्वज ७ । सूर्यशृंग ८ । सूर्यसिद्ध ९ सूर्यकूट १० । सूर्योत्तरावतंसक ११ । तथावली रुचिर १ । रुचिरावर्त २ । रुचिरप्रभ ३ । रुचिरकांत ४ । रुचिरवर्ण ५
रुचिरलेश्य ६ । रुचिरध्वज ७ रुचिरशृंग ८ रुचिरसिद्ध ९ रुचिरकूट १० रुचिरावतंसक ११ एणेविमाने जेहदेवतापणे ऊपनाछे । तेहदेवतानो नवसागरो
पमआउखोकह्यो । तेहदेवता नवअर्द्धमासे पखवाडे श्वासोश्वासले घणोश्वासोश्वासले ऊंचोश्वासले नीचोश्वासले तेहदेवताने नववर्ष सहस्रे आहारनो अर्थ

दीनिहादश सूर्योद्यपि हादशैव रविरादीत्येकादश ॥ ९ ॥ दशस्थानकं सुबोधमेव तथापि किंचिल्लिख्यते इहपंचविंशतिसूत्राणि तत्रलाघवं द्रव्यतो ल्पोपधिना भावतो गौरवत्यागः संविग्नमनोज्ञ साधुदानं वा ब्रह्मचर्येण वसनमवस्थानं ब्रह्मचर्यवास इति तथाचित्तस्य समस्तसमाधानं प्रशांतता ॥ टीका ॥

सिद्धियाजीवा जे नवहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ ९ ॥

दसविहेसमणधम्मे प० तं० खंती १ मुत्ती २ अज्जवे ३ महवे ४ लाघवे ५ सच्चे ६ संजमे ७ तवे ८ चियाए ९ वंभचेरवासे १० । दसचित्तसमाहिठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुप्पज्जिज्जा स ॥ मूल ॥

उपजे । केतलाएक भव्यजीव नवे भवग्रहणे नवभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये २५८ इति नवमू ठाणूंसम्मत्तं ॥ ९ ॥ हिवेदशनोंअधिकारलिखेछे श्रमणकहिये साधुतेहनो धर्मदशप्रकारे तेश्रमणधर्मकह्यो तेकहेछे । क्षमाक्रोधनिग्रह १ । मुक्तिनिर्लोभपणो २ आर्जवमायानिग्रह ३ । मार्दवमाननिग्रह ४ । लाघव हलुआपणूं द्रव्यथकोहलको जेअल्पउपधि भावहलको गौरवत्रयत्याग ५ । सत्यभाषी ६ । संयम १७ प्रकारे ७ । तप १२ प्रकारे ८ । त्याग साधूनेआहारादिकदेवो ९ । ब्रह्मचर्यनेविषेवसिवो १० । दशप्रकारेचित्तना मननां समाधि प्रशांतपणो तेहनास्थानक आश्रय तेचित्तसमाधिस्थानक कहिये तेकहेछे धर्मनोचिंता जीवादिकपदार्थनो उपयोग तथा उपजिवो मरवो तेहनो स्वभावतेधर्म तेहनो चिंतविवो अथवाश्रुत चारित्रलक्षणधर्मनो चिंतावासे कहतां जेहपुण्यवंतने एहवोचिंतनहोयतेधर्मनो चिंताकहीछे । असमुत्पन्नपूर्वो पूर्वेअतीतकाले नही उपनो तेहधर्मनोचिंता उपन्यापछे सबधर्मजीवादिद्रव्यस्वभाव अथवाश्रुतचारित्र जाणितए सपरिज्ञायेकरो जाणे प्रत्याख्यानपरिज्ञायेकरो छांडवायोग्य कर्महुए तेछांडोये तेधर्मचिंतापहिलो स ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

तस्य स्थानान्याश्रया भेदावा चित्तसमाधिस्थानानि तत्रधर्मोजीवादिद्रव्याणामनुयोगोत्पादादयः स्वभावास्तेषां चिंतानुप्रेक्षा धर्मस्यवाश्रुतचारित्रात्मकस्य सर्व ज्ञभाषितस्य हरिहरादिनिगदितधर्मेभ्यः प्रधानोयमित्येवंचिंताधर्मचितावा शब्दोवक्ष्यमाणसमाधिस्थानांतरापेक्षया विकल्पार्थः सइति यःकल्याण भागी तस्यसाधोरसमुत्पन्नपूर्वा पूर्वस्मिन्नादोऽतोतेकाले ऽनुपन्नाता तदुत्पादेह्ययार्द्धपुद्गलपरावर्त्तान्ते कल्याणस्यावश्यंभावात् समुत्पद्येत जायेतसकिं प्रयोजनाय चेयम तआह सर्वं निरवशेषंधर्मं जीवादि द्रव्यस्वभाव मुपयोगोत्पादादिकं श्रुतादिरूपंवा जाणित्तए ज्ञपरिज्ञयाज्ञातुं ज्ञात्वाच प्रत्याख्यान परिज्ञया परिहरणीय कर्मपरिहर्त्तुमिदमुक्तंभवति धर्मचिंताधर्मज्ञानकारणभूता जायतइति इयंच समाधेरुक्तलक्षणस्य स्थानमुक्तलक्षणमेव भवतीति प्रथमं तथास्वप्नस्य निद्रावशवि कल्पज्ञानस्यदर्शनंसंवेदनंस्वप्नदर्शनं तद्वाकल्याणप्राप्ति सूचकसमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्यते यथाभगवतो महावीरस्या ऽस्थिकग्रामे शूलपाणियक्षोपसर्गावसाने किंप्रयो जनंचेद मित्याह अहातच्चं सुमिणंपासित्तएत्ति यथा येनप्रकारेणतथ्यः सर्वथानिर्व्यभिचार इत्यर्थः तंस्वप्नं स्वप्नफलमुपचारात्तंद्रष्टुंज्ञातुंअवश्यंभाविनोमुक्त्यादेः शुभस्वप्नफलस्यदर्शनायसाधोः स्वप्नदर्शनमुपजायत इतिभावः क्वचित्सुजाणंतिपाठ स्तत्राऽवितथमवश्य म्भाविसुयानंसुगतिंद्रष्टुंज्ञातुं सुज्ञानंवा भाविशुभार्थपरि

॥ मूल ॥

सव्वंधम्मंजाणित्तए सुमिणदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा अहातच्चंसुमिणंपासित्तए सन्निनाणवासे

॥ भाषा ॥

माञि १ तथास्वप्ननोदेखवो जेस्वप्नदीठे महाकल्याणनी प्राप्तिहोस्ये तेकहेछे असमुत्पन्नपूर्वक एहवो पूर्वेदीठोनथी तेस्वप्ननो स्यूंप्रयोजन अहातच्चं सुमिणंपासित्त ए यथातथ्यजूठोनही एहवोस्वप्ननो फलजाणि वानेअर्थे अवश्यमोक्षजाणहार शुभस्वप्नदेखी चित्तसमाधिपामे जिम श्रीमहावीरस्वामीए छेहलीरात्रियें १० स्वप्नपाम्या प्रभाते केवलज्ञानउपनूं एहवोजूं समाधिठाणूं २ । संज्ञा ज्ञान तेचित्तसमाधि स्थानक मनसहितनें संज्ञीकहिये तेहनूंज्ञान तेजातिस्मरण

च्छेदसंवेदितु मिति कल्याणसूचका वितथस्वप्नदर्शनाञ्चभवति चित्तसमाधिस्थानमिदं द्वितीयं तथासंज्ञानंसंज्ञा साचयद्यपि हेतुवाददृष्टिवाद दीर्घकालिकोपदे शभेदेनक्रमेण विकलेन्द्रिय सम्यग्दृष्टिसमनस्क संबंधित्वात्त्रिधाभवति तथाचाह दीर्घकालिकोपदेश संज्ञायाञ्चेति सायस्यास्ति ससंज्ञीसमनस्कस्तस्यज्ञानं संज्ञिज्ञानं तच्चेहाविवक्षितसूत्रान्यथा सपपक्तेर्जातिस्मरणमेव से तस्याममुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्येत कस्मैप्रयोजनायेत्याह पुव्वभवेसुमरिएत्ति पूर्वभावांत्स्मर्त्तुं स्मृतपूर्व भवस्यसंवेगात्समाधि रुत्पद्यतेइतिसमाधिस्थानमेतत् तृतीयमिति। तथादेवदर्शनं वासितस्याममुत्पन्नपूर्वसमुत्पद्यते देवाहितस्यगुणित्व दर्शनंददति किंफलमि त्याह दिव्यांदेवर्द्धिप्रधानपरिवारादिरूपां दिव्यांदेवद्युतिंविशिष्टांशरीराभरणादिदीप्तिंदिव्यं देवानुभावंउत्तमवैक्रियकरणादिप्रभावं द्रष्टुमेतद्दर्शनायेत्यर्थः दे वदर्शनाञ्चागमार्थेषुप्रत्ययाधानाद्यं धर्मेबहुमानश्चभवति ततश्चित्तसमाधिरितिचित्तसमाधिस्थानमिति चतुर्थं तथाअवधिज्ञानंवासितस्यासमुत्पन्नपू

समुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा पुव्वभवेसुमरित्तए देवदंसणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तं दिव्वंदेवाणुभावंपासित्तए ओहिनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंजाणित्तए ओहिदं

कहिये से कहतां तेहने अणसमुत्पन्नपूर्व पूर्वेंऊपनूंनथी सेइ अर्थेंऊपजे पूर्वभवसंभारवाने अर्थे पूर्वभवसंभरे विशेष संवेगउपजे एत्रीजुंचित्तसमाधि स्थानक ३ तथा देवदर्शन सेकहतां तेहनेअसमुत्पन्न पूर्वं पूर्वेंउपनो नथी तेहजेने उपजे ते संअर्थेउपजे। दिव्यप्रधान देवतानी ऋद्धिपरिवाररूप प्रधानदेवतानी द्युति विशिष्ट शरीराभरणदीप्ति प्रधान देवतानो अनुभाव वैक्रिय करिवानी समर्थाई देखवानेअर्थे देवदर्शनथी धर्मनेविषे विशेषआदरहोय तेहथीचित्तसमाधिहु इ एहचउथूठाणुं ४। अवधिज्ञान तेहजेने पूर्वेंनथी ऊपनूं तेहजेने ऊपजे अवधिज्ञानेकरी लोकस्वरूप जाणवाने अर्थे विशिष्टज्ञानथी चित्तसमाधिहोय एणां

॥ टीका ॥

वंसमुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतेजाणित्तएइत्याह अवधिनामर्यादया नियतद्रव्यक्षेत्रकालरूपेण लोकंज्ञातुं लोकज्ञानायेत्यर्थः भवतिचविशिष्टज्ञानाच्चित्तसमाधिरिति पंचमंतदिति। एवमवधिदर्शनसूत्रमपीतिषष्ठं। तथा मनःपर्यवज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येतकिमर्थमतआह मणोगतेभावेजाणित्तए अढ्ढतीयद्वीपसमुद्रेषु संज्ञिनांपंचेन्द्रियाणां पर्याप्तकानांमनोगतान् भावान्ज्ञातुमेतत्ज्ञानायेत्यर्थः इतिसप्तमं। तथाकेवलज्ञानं वासेतस्यासमुत्पन्नपूर्वं समुत्पद्येत केवलंपरिपूर्णंलोक्यतेदृश्यते केवलालोकेनेति लोकालोकस्वरूपं वस्तुतत्वंज्ञातुंकेवलज्ञानस्यच समाधिभेदत्वाच्चित्तसमाधिस्थानता इहवामनस्कतया केवलिनश्चित्तं चैतन्यमवसेय मित्यष्टमं। एवंकेवलदर्शनं सूत्रंनवरंद्रष्टु मितिविशेष इतिनवमं। तथाकेवलिमरणंवाम्रियतेकुर्यात् इत्यर्थः किमर्थमतआह सर्वदुःखप्र

॥ मूल ॥

सणेवासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा ओहिणालोगंपासित्तए मणपज्जवनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा। जावमणोगएभावेजाणित्तए केवलनाणेवासे असमुप्पन्नपुव्वेसमुपज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए केवलदंसणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुपज्जिज्जा केवललोयंपासित्तए केवलिमरणंवामरिज्जा सव्वदुक्खप्पहीणाए।

॥ भाषा ॥

पमूंठाणूं ५ अवधिदर्शन सेतेहनेपूर्वे उपनूं नथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अवधिदर्शनेकरी लोकस्वरूपदेखवाने अर्थे एछट्ठंठाणं ६ मनपर्यवज्ञानसेजेहने पूर्वे उपनूंनथी तेहजेहने उपजे तेसेअर्थेउपजे अढ़ाईद्वीपमांही संज्ञी पंचेंद्रियना मनोगतभावजाणे एहवूंज्ञानपामी चित्तसमाधिहोय एसातमूंठाणूं ७ केवलज्ञान सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेहजेहने उपजवाने अर्थे केवलसकललोकजाणिवानेअर्थे एहचित्तसमाधिनूं आठमूंठाणूं ८ केवलदंसण सेजेहने पूर्वेउपनूंनथी तेह जेहने उपजवाने अर्थेउपजे परिपूर्णलोक देखवाने अर्थे एहचित्तसमाधि नवमूंठाणूं ९ केवलीनेमरणे एतलेकेवलज्ञान उपार्जीनेमरे तेसे अर्थे सर्वदुःख

॥ टीका ॥

हाथायेति इदंतुकेवलिमरणं सर्वोत्तमसमाधिस्थानमेवेति दशममिति । तथाग्रकर्मभूमिकानां भोगभूमिजन्मनां मनुष्याणां दशविधारुक्खत्ति कल्पवृक्षाः । उवभोगत्ताएत्ति उपभोग्यत्वाय उवत्थियत्ति उपस्थिताउपनताइत्यर्थः तत्रमत्तांगकाः मद्यकारणभूताः भिंगत्ति भाजनदायिनः तुडियंगत्ति तुर्यांगसंपादकाः

॥ मूल ॥

मंदरेणपव्वएमूले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिट्ठनेमीदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था कण्हेणंवासुदेवे दसधणुइंउड्ढंउच्चत्तेणं होत्था रामेणंबलदेवेदसधणुइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था दसनक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा प० तं० मिगसिरअद्दापुस्सो । तिन्निअपुव्वाइमूलमस्सेसा । हत्थोचित्तायतहा । दसवुड्ढिकरायनाणस्स १ अकम्मभूमयाणंमणुस्साणं दसविहारुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थियाप० तं० मत्तंगयाय भिंगाय तुडि

॥ भाषा ॥

पण्डितमरणने अर्थे ए १ केवलोमरणते सर्वोत्तमचित्तसमाधिस्थानकदशम १० मेरुपर्वत मूलनेविषे दशसहस्रयोजन विष्कंभपणेविहुलपणेकह्यो अरिहंतअरिष्टनेमो बावोसमोतीर्थंकर दशधनुषऊंचपणेहुया कृष्णवासुदेव नवमा तेहनो देहदशधनुषऊंचोऊंचपणेहुयो रामबलदेव बलभद्र दशधनुषऊंचा ऊंचपणेहुया दशनक्षत्र ज्ञानना वृद्धिकरणहार कह्या भगवंते तेकहेछे मृगशिर १ । आर्द्रा २ । पुष्य ३ वलिपूर्वा पूर्वाफाल्गुनी ४ । पूर्वाषाढ ५ । पूर्वाभाद्रपद ६ । मूल ७ आश्लेषा ८ । हस्त ९ चित्रा १० । एह दशनक्षत्र ज्ञानने वधारेएह मांहि भणवाबेसे तो काहीं विघ्ननउपजे अकर्म भूमिजिहां धर्मतथा कर्मसंबंधी क्रिया नहो तेअकर्मभूमि ५७ अंतरद्वीप अनेत्रीस अकर्मभूमि एवं ८६ क्षेत्र युगलियानां सास्वतांछे । तिहांनां माणसें युगलियाने दशप्रकारेवृक्ष एतले कल्पवृक्ष । उपभोगने अर्थे उपस्थिता समीप आईरह्या अवाभोग्यभावे वांछापूरवे एहवा कह्यातेकहेछे । मत्तंगका मद्यनाकारणभूत आणिवा १ भाजनदातार २

॥ टीका ॥

दीवत्ति दीपशिखाः प्रदीपकार्यकारिणः जोइत्ति ज्योतिरग्निस्तत्कार्यकारिणइति चित्तंगत्तिचित्रांगाः पुष्पदायिनः चित्ररसाभोजनदायिनः मण्यंगाआभरण दायिनः गेहाकाराः भवनत्वेनोपकारिणः अनग्नत्वंसवस्त्रत्वं तद्धेतुत्वादनग्नाइति घोषादीन्येकादशविमाननामानीति । अथैकादशस्थानं तदपिगतार्थं नवर

॥ मूल ॥

अंगा दीव जोइ चित्तंगा चित्तरसा मणिअंगा गेहागारा अनिगिणाय १ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं दसजोयणसहस्साइंठिई प० इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइ आणं नेरइआणं दसपलियउवमाइंठिई प० चउत्थीएपुढवीए दसनिरयावाससहस्साइं प० चउत्थीएपुढ वीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ याणं जहन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्सा

॥ भाषा ॥

वाजित्रना संपादक ३ दीवा ४ तथा जोतिअग्नि तेहना कार्यकारी ५ फूलदायक ६ भोजनदातार ७ आभरणनादातार ७ घरनेकामआवनार ८ वस्त्रना दातार १० एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनो दशपल्योपम आउखोकह्यो । चउथीपंकप्रभा पृथिवीनेविषे दसलाख नरकावासा कह्या । चउथी पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनोउत्कृष्टो दससागरोपमो आउखोकह्यो । पांचमो धूमप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो जघन्यनो दससागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार भवनपतिदेवनूं केतलाएकनूं जघ न्य दशसहस्रवर्षनो आउखोकह्यो । असुरेंद्र चमरेंद्र बलेंद्र वर्जीने बीजाभवनपती देवतानो जघन्य दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो चमरेन्द्र बलेन्द्रनो उत्कृ

॥ मूल ॥

इं ठिई प० असुरिंदवज्जाणं भोमिजाणं अत्थेगयाइणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिउवमाइंठिई प० बायरवणस्सइ काइएणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइंठिई प० वाणमंतराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणंदसवाससहस्साइंठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिउवमाइंठिई प०बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० लांतकप्पेदेवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं नंदिघोसं सुसरं मणोरमं रम्मं रम्मगं रमणिज्जं मंगलावत्तं बंभलोगवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाणंदसण्हंअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं

॥ भाषा

ष्ट जघन्य आउखो एकसागरोपम झाझेरोछे। असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो मध्यमआउखो दसपल्योपमकह्यो। बादर प्रत्येक वनस्पतीकायनो उत्कृष्ट दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो भगवंते। वानव्यंतर देवतानो केतलाएकनो जघन्य दससहस्रवर्ष आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोकनेविषे केतलाएक देवतनो दसपल्योपम आउखोकह्यो। पांचमे ब्रह्मदेवलोकें केतलानो उत्कृष्टो दससागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेलांतक देवलोकनेविषे केतलाएक देवतानो जघन्य दससागरोपम आउखोकह्यो। पांचमे देवलोके जेहदेवता घोष १ सुघोष २ महाघोष ३ नंदिघोष ४ सुस्वर ५ मनोरम ६ रम्य ७ रम्यक ८ रमणीक ९ मंगलावर्त १० ब्रह्मलोकावतंसक ११ एहविमाणे देवतापणेउपना तेहनो देवतानो उत्कृष्टो दससहस्रवर्षनो आउखोकह्यो भगवंते। तेहदेवता दसपखवाडे स्वा

मिहप्रतिमाद्यर्थानि सूत्राणिसम स्थित्याद्यर्थानितुतदेति तत्रउपासंतेसेवंते श्रमणान्येते उपासका: श्रावकास्तेषांप्रतिमा: प्रतिज्ञाभिग्रहरूपा: उपासकप्र तिमा: तत्रदर्शनंसम्यक्त्वं तत्प्रतिपन्नश्रावकोदर्शनश्रावक: इहचप्रतिमानांप्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाप्रतिमावतोरभेदोपचारा त्प्रतिमावंतोनिर्देश: कृत: एवमुत्तरपदे ष्वपि प्रथमश्च श्रावकोदर्शनश्रावक: इहचप्रतिमानां प्रक्रांतत्वेपि प्रतिमाभावार्थ: सम्यग्दर्शनस्य शंकादिशल्य रहितस्याणुव्रतादि गुणविकल्पस्यायमभ्युपगम: सा प्रतिमाप्रथमेति। तथाकृतमनुष्ठितं व्रतादीनांकर्म तत्त्वाणुव्रतंज्ञानवांच्छाप्रतिपत्तिलक्षणं येनप्रतिपन्नदर्शनेन सकृतव्रतकर्माप्रतिपन्नाणुव्रतादिरिति भाव:

॥ मूल ॥

देवाणंदसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआ भवसिद्धियाजीवा तेहदसहिंभवग्गहणेहिं सि ज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १० ॥ एक्का रसउवासगपडिमाउ प० तं० दंसणसावए कयव्वयकम्मे सामाइअकडे पोसहोववासनिरए दियाबंभया

॥ भाषा ॥

सोश्वास घणोलेइ। उंचोश्वासले नीचोश्वासमूंके तेहदेवतानो दशसहस्रवर्ष गएंथके आहारनो अर्थउपजेछे केतलाएक भव्यजीव तेहदशभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति दशमूठाणूं सम्मत्तं ॥ १० ॥ हिवे ग्यारमो अधिकार लिखियेछे इग्यार उपासक कहतां श्रावकसाधुनो सेवाना करणहार तेहनी प्रतिमा तपविशेष तेकहेछे अनुक्रमे आगलो दंसणते सम्यक्त ते जे आदरे तेदर्शन श्रावककहिये इहां प्रतिमावंत बीचेंभेद नजाणिवो तेमाटे प्रतिमापाठ उचरीने दर्शनश्रावकनो नामलिधोंएम आगलीएतले सम्यक्तना अतिचार शंकादिकटाले तपनो अधिकार शक्यांत रथी आणवो एहपहिली दर्शनप्रतिमा १ कृतव्रतकर्म अणुव्रत जेउचराछे तेहना अतीचार विशेषपणेटाले बीजीप्रतिमा २ सावद्ययोगनो टालिवो निरवद्य

॥ टीका ॥

द्वतीयंद्वितीया । तथासामायिकं सावद्ययोगपरिवर्जन निरवद्ययोगोपसेवनस्वभावं कृतंविहितंदेशतोयेनसामायिककृत आहिताग्न्यादिदर्शनात् क्तांतस्योत्त रपदत्त्वं तदेवमप्रतिपन्नपौषधस्य दर्शनव्रतोपेतस्यप्रतिदिन मुभयसंध्यंसामायिककरणं मासत्रयंयावदिति तृतीयाप्रतिमेति । तथापोषंपुष्टिंकुशलधर्माणांधत्ते यदाहारत्यागादिक मनुष्ठानंतत्पौषधं तेनोपसेवनमवस्थान महोरात्रंयावदिति पौषधोपवासइति अथवा पौषधंपर्वदिन मष्टम्यादि तत्रोपवासउक्तार्थः पौष धोपवासइति इयंव्युत्पत्तिरेव प्रवृत्तिस्तस्यशब्दस्य आहारशरीरसत्कारा ब्रह्मचर्यव्यापारपरिवर्जनेष्विति तत्रपौषधोपवासे निरतआसक्तः पौषधोपवासनिर तः सएवंविधस्य श्रावकस्यचतुर्थीप्रतिमेति प्रक्रमः अयमत्रभावः पूर्वप्रतिमात्रयोपेतः अष्टमीचतुर्दश्यमावस्या पौर्णमासीष्वाहार पौषधादिचतुर्विधं पौषधंप्रतिप द्यमानस्यचतुरोमासान् यावत्चतुर्थी प्रतिमाभवतीति तथापंचमीप्रतिमायामष्टम्यादिषु पर्वस्वेकरात्रिकप्रतिमाकारी भवत्येतदर्थंच सूत्रं अधिकृतसूत्रपुस्त केषुनदृश्यते दशादिषुपुनरुपलभ्यते इतितदर्थउपदर्शितः तथाशेषदिनेषु दिवाब्रह्मचारी रत्तीति रात्रौकिमतआह परिमाणं स्त्रीणातद्भोगानांवा प्रमाणंकृतं येनसपरिमाणकृतइति अयमत्रभावोदर्शनव्रत सामायिकाष्टम्यादि पौषधोपेतस्यपर्वस्वेकरात्रिक प्रतिमाकारिणः शेषदिनेषुदिवाब्रह्मचारिणो रात्रौब्रह्मपरि

॥ भाषा ॥

योगनो सेविवो तेसामायिकव्रत एतले उभयकाले सामायिककरे मासत्रिणिलगे एत्रीजी प्रतिमा ३ कुशलधर्मनो पोखवो तेपौषध आहारादिकनो त्यागरूप अनुष्ठान तेपौषधतेणेकरी उपवसवो रहिवो अहोरात्रिलगेते पौषधोपवासनिरत पाछिलीत्रिणि प्रतिमासहित अष्टम्यादिक पर्वनेविषे मासच्यारलगे चतु र्विध पौषधकरे चउथी पौषधप्रतिमा ४ पांचमीप्रतिमानेविषे अष्टम्यादिकपर्वनेविषे एकरात्रि काउसग्गकरे शेषदिनेदोहे ब्रह्मचर्यपाले रात्रेंपरिमाणकरे अरात्रिभोजी अजानोकाछडो नबांधे पांचमासलगे एतले एपांचमीप्रतिमा ५ छट्ठीप्रतिमाएं दिवसे अनेरात्रिएंपिण ब्रह्मचर्यपाले अस्नायीस्नाननकरे विकट

॥ टीका ॥

माणकृतोऽस्नातस्याऽरात्रिभोजिनः अबद्धकच्छस्य पंचमासान् यावत्पंचमीप्रतिमाभवतीति उक्तंच अट्ठमिचउद्दसी सुपडिमट्ठाएगराईया। पचार्ध असिणाणवि

यडभोई मउलियडोदिवसबंभयारीएय। रत्तिंपरिमाणकडो पडिमावज्जेदिसुज्जहेसुत्ति ५। तथा दिवापिरात्रावपि ब्रह्मचारी असिणाइत्ति अस्नायीस्नानपरि

॥ ३० ॥ वर्जकः क्वचित्पठ्यते अनिसाइत्ति ननीशायामत्तीत्यनिशादी वियडभोईत्ति विकटे प्रकटप्रकाशेदिवानरात्रावित्यर्थः दिवापि एवाऽप्रकाशदेशेनभुंक्तेऽशनाद्यभ्य

वहरतीति विकटभोजी मोलिकडेत्ति अबद्धपरिधानकच्छइत्यर्थः षष्ठीप्रतिमेतिप्रकृतं अयमत्रभावः प्रतिमापंचकोक्तानुष्ठानयुक्तस्य ब्रह्मचारिणः षण्मासान्या

वत्षष्ठीप्रतिमाभवतीति तथा सचित्तइति सचेतनाहारपरिज्ञातः तत्स्वरूपादिप्रतिज्ञानात्प्रत्याख्यातोयेन ससचित्ताहारपरिज्ञातः श्रावकः सप्तमीप्रतिमेति

प्रकृतं इयमत्रभावना पूर्वोक्तप्रतिमाषट्कानुष्ठानयुक्तस्य प्रासुकाहारस्य सप्तमासान् यावत्सप्तमी प्रतिमाभवतीति तथाआरंभः पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि

ज्ञातस्तथैव प्रत्याख्यातोयेनासावारंभपरिज्ञातः श्राद्धोऽष्टमीप्रतिमेति। इहभावना समस्तपूर्वोक्तानुष्ठानयुक्तस्यारंभवर्जन मष्टौमासान् यावदष्टमीप्रतिमेति

तथाप्रेष्याआरंभेषु व्यापारणीयाः परिज्ञातास्तथैव प्रत्याख्यातायेन सप्रेष्यपरिज्ञातः श्रावको नवमीति भावार्थश्चेह पूर्वोक्तानुष्ठायिनः आरंभपरै रप्यकारयतो

री रत्तिपरिमाणकडे दिआविराउवियंभयारीअसिणाई वियडभोई मोलिकडे सचित्तपरिन्नाए आरं ॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥ भोजीदिवसेजिमे मौलिकृतनथी बांध्योपहिरणानो कछजेणिमासकलगे छट्ठीप्रतिमा ६ सचित्त आहारनो परिज्ञा पच्चक्खाण माससातलगेकरे प्रासुकआहा

रकरे सातमी प्रतिमा ७ आरंभपृथिव्यादिक उपमर्दनलक्षणते जेणेपरिज्ञात पचख्योते आरंभपरिज्ञात श्रावक आठमासलगेकरे एआठमी प्रतिमा ८ पेस्या

रंभनेविषे परिज्ञात पचखाणछे जेहनेते प्रेष्यपरिज्ञा श्रावककहिये एतलेनवमासलगे परपांहिं कामनकरावे एनवमीप्रतिमा ९ तेश्रावकने निमित्ते उद्देसी

॥ टीका ॥

नवमासान् यावन्नवमी प्रतिमेति । तथाउद्दिष्टं तमेवश्रावक मुद्दिश्यकृतं भक्तमोदनादि उद्दिष्टभक्तं तत्परिज्ञातं येनासावुद्दिष्ट भक्तपरिज्ञातः प्रतिमेतिप्रकृत इहायंभावार्थः पूर्वोदित गुणयुक्तस्याधाकर्मिकभोजन परिहारवतः क्षुरमुंडितशिरसः शिखावतोवा केनापिकिंचित्गृहव्यतिकरे पृष्टस्यतत् ज्ञानेसतिजानामी त्यज्ञानेचसति नजानामीति ब्रुवाणस्य दशमसान् यावदेवंविधविहारस्य दशमोप्रतिमेति । तथा श्रमणेति निर्ग्रंथस्तस्येवयस्तदनुष्टान करणात् संश्रमणभूतः साधुकल्पइत्यर्थः चकारःसमुच्चये अपिसंभावनेभवति श्रावकइतिप्रकृतं हेश्रमण हेआयुष्मन्इति सुधर्मस्वामिना जंबूस्वामिन मामंत्रयतोक्त मित्येकादशीति । इहचे यंभावना पूर्वोक्त समग्रगुणो पेतस्य क्षुरमुंडस्य कृतलोचस्यवा गृहीतसाधुनेपथ्यस्य इर्यासमित्यादिकं साधुधर्म मनुपालयतो भिक्षार्थंगृहिकुल प्रवेशेसति श्रमणो पासकाय प्रतिपन्नाय भिक्षांदेयेति भाषमाणस्य कस्त्वमिति कस्मिंश्चित्पृच्छति प्रतिपन्नश्रमणोपासकोहमिति ब्रुवाणस्यैकादशमासन् यावदेकादशी प्रतिमा भवतीति पुस्तकांतरेत्वेवंवाचना दंसणसावएप्रथमा कयवयकम्मेद्वितीया । कयसामाइए तृतीया । पोसहोववासनिरए चतुर्थी । राइभत्तपरिन्नाए पंचमीसचित्त

॥ मूल ॥

न्नपरिन्नाए पेसपरिन्नाए उद्दिठभत्तपरिन्नाए समणभूएआविभवइ समणाउसो लोगंताउ इक्कारसएहिं एक्का

॥ भाषा ॥

भातकरो तेजेणेपरिज्ञात पचख्यो तेउद्दिष्टभक्त परिज्ञात दसमासलगें दशमोप्रतिमा १० सघलीप्रतिमाएं पाछिली २ प्रतिमानीकिरिया साथलेता जइये एतलेइग्यारमी प्रतिमाएंश्रमण भूतहुए यतीनीपरी आधाकर्मी आहारटाले क्षुरमुंडितशिरहोय शिखामस्तकेराखे पांचघरनी भिक्षालेइ उपासकरे भावो जीमे मासइग्यारलगें इग्यारमीप्रतिमा साधुनीवेशवहे भिक्षाएजाए तिवारेकहिये मुझश्रमणोपासकने भिक्षाद्योकोइकपूछेथोको कहेहूं श्रावकछूं एतलेइग्यारमीप्रतिमाकही ११ श्रीमहावीर सुधर्मास्वामीने आमंत्रेछे हेआयुष्मन् चिरंजीवो सांभलि लोकनाछेहडाथकी इग्यारयोजनअधिक इग्यारसेयोजनेआबा

॥ टीका ॥

परिणाएषष्ठी दियाबंभयारी रात्रोपरिमाणकडेसप्तमी दियाविरात्रोवि बंभयारी । असिणाणपयाविभवति वोसट्ठकेसरोमनहेअष्टमो आरंभपरिणाएनवमी उद्दिष्ठभत्तवज्जएदशमी समणभूएयाविभवइति समणाउसोएकादशीति क्वचित्तुआरंभपरिज्ञातइतिनवमो प्रेष्यरंभपरिज्ञातइतिदशमो उद्दिष्टभक्तवर्जकः श्रमणभूतश्चैकादशीति तथा जंबूद्वीपेमंदरस्यपर्वतस्यएकादश एगविंसत्ति एकविंशतियोजनाधिकानियोजनशतानि अबाहाए अबाधयाव्यवधानेनकृत्वेतिशेषः ज्योतिषंज्योतिषक्रंचारंपरिभ्रमणं । चरत्याचरति तथालोकांतान् णमित्यलंकारे एकादशशतानि एक्कारेत्ति एकादशयोजनाधिकानि अबाधयाबाधारहित याकृत्वेतिशेषः ज्योतिसंतेति । ज्योतिषक्रपर्यंतः प्रज्ञप्तइति इदंचयावचनांतरं व्याख्यातं उक्तं एक्कारएक्कासीमा मयएक्काराहियायएक्कारा । मेरुअलोगावाहे जोइसचक्कंचरइठाइत्ति । अधिकृतवाचनायां पुनरिदमनंतरं व्याख्यातमालापकद्वयं व्यत्ययेनदृश्यते विमाणसयंभवतित्तिमक्खायन्ति इहमकारस्यागामिकत्वा

॥ मूल ॥

रेहिंजोयणसएहिं अबाहाएजोइसंतेपन्नत्ते जंबूदीवेदीवे मंदरस्सपव्वयस्स एक्कारसहिंएक्कवीसेहिं जोयणसए हिं जोइसेचारंचरइ समणस्सणंभगवओमहावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गि भूई वायभूई विअत्ते सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे मूलेनक्खत्तेएक्कारसतारे प०

॥ भाषा ॥

धार्येपवतेकहतांकह्यो भगवंते । एतलेअलोकथी इग्यारयोजने ज्योतिषचक्ररह्योछे । ज्योतिषनोछेहडोकह्यो भगवंते । जंबूद्वीपनेविषे मेरुपर्वतथकी वेगलोचो पखेर इग्यारसेयोजने उपरि एकवीसयोजन ज्योतिषक्रचारचरे भ्रमणकरे । श्रमणने भगवंतने महावीरने इग्यारगणधर साधुनासमुदायतेगण तेहनाधर पहारहुया । तेअनुक्रमे कहेछे आगलै । इन्द्रभूति १ । अग्निभूति २ । वायुभूति ३ । व्यक्तनामे ४ । सौधर्मा ५ । मंडित । ६ । मौर्यपुत्र ७ । अकंपित ८ । अच

दयमर्वो विमानशतंभवतीतिकृत्वा व्याख्यातंप्ररूपितं भगवता अन्यैश्चकेवलिभिरिति सुधर्मस्वामिवचनम् तथामन्दरेणंपव्वए धरणितलाओसिहरतलेएक्कारस भागपरिहीणे उच्चत्तेणंपन्नत्ते। अस्यायमर्थः मेरुर्भूतलादारभ्य शिखरतलमुपरिभागं यावद्विष्कंभापेक्षया अंगुलादेरेकादशभागेन परिहीणोहानिमुपगतस्य उच्चत्वेनोपर्युपरिप्रज्ञप्तः इयमत्रभावना मन्दरोभूतले दशयोजनसहस्राणिविष्कम्भतः ततश्चोच्चत्वेनांगुलेगतेंगुलस्यैकादशभागो विष्कम्भतोहीयते एं मेकादशस्वं गुलेष्वंगुलंहीयते एतेनैवन्यायेनैकादशसुयोजनेषु योजनं एवंसहस्रेषुसहस्रं ततोनवनवत्यांयोजनसहस्रेषु नवसहस्राणिहीयंते। ततोभवतिसहस्रंविष्कम्भ शिखरेइति अथवा धरणीतलाद्धरणीतलविष्कम्भात्सकाशाच्छिखरतलं शिखरविष्कम्भमाश्रित्य मेरुरेकादशभागेन परिहीणोभवति कस्यैकादशभागेनेत्याह उच्चत्तेणंति उच्चत्वस्यतथाहि मेरोरुच्चत्वं नवनवतिसहस्राणि तदेकादशभागोनवतैर्हीनोमूलं विष्कम्भापेक्षया शिखरतलेशिखरस्य साहस्रिकत्वान्मूलविष्कम्भ ॥ टीका ॥

हेठिमगेविज्जयदेवायं एक्कारसमुत्तरंगेविज्जाविमाणसतंत्नवइत्तिमक्खायं मंदरेणंपव्वए धरणितलाउसिहरतले ॥ मूल ॥

लभ्राता ८। मेतार्य १०। प्रभास ११। मूलनचनना इग्यारताराकह्या नवग्रैवेयकमानमाहें सघले हेठल्योत्रिक तेह त्रिकविमानवासी देवतानां इग्यारस धिकएकसो विमानभवनछे भगवंतेकह्या मेरुपर्वत भूतलथकी शिखरतिहां उपरिलोभाग जिहां पंडगविमानछे तिहांलगे विखंभनी अपेक्षाएं एकारसभाग परिहीन उपरिउपरिकीजे एतले मेरुपर्वत मूलेंदशयोजनपिहुलो मूलथकी इग्यार अंगुलऊंचा वडीये तिहां विखंभपणे एकअंगुलहीन करीये एमइग्यार गाऊयेगाऊ हीनकरिये। इग्यारयोजने इग्यारसहस्र योजन ऊगरता। पिहुलपणे एकसहस्र योजन घटाडिये। इमकरता नेउंसहस्र योजने ऊंचीवडिये तिहां नवसहस्रयोजन घटीयां उपरि एकसहस्र योजन ऊगरतां। पिहुलपणे मेरुपर्वत एकसहस्र जाणिवो ऊण्होभूमिमध्ये नेऊसहस्र भूमिथकी ऊंचोस ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥ ॥ ३२ ॥

खेति ब्रह्मादीनिद्वादशविमाननामानि। द्वादशस्थानमथतत्त्वसुगमं। नवरंस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागेकादशसूत्राख्याह। तत्रभिक्षुकांविशिष्ट संहननश्रुतवतां प्रति

॥ मूल ॥

एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं एक्कारसपलिउव माइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारसपलिउवमाइंठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिउवमा इंठिई प० लंतकप्पेअत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसागरोवमाइंठिई प० जेदेवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्प भं बंभकंतं बंभवसं बम्भलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं बंभसिठं बंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणं देवताएउववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइंठिई प० तेणंदेवाएकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उ

॥ भाषा ॥

वंमिली एकलाख योजननो मेरुपर्वत। मूलेदससहस्र पिहुलो। शिखरनेविषे एकसहस्र पिहुलो जाणिवो। एहअर्थ श्रीमहावीरें सुधर्मास्वामी पांचमे गण धर आगले वखाण्यो। एणीए रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतला एक नारकीनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार भवनपतीनोकेतलाएक देवतानो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म इशानदेवलोक नेविषे केतलाएकदेवनो इग्यार पल्योपम आउखोकह्यो। लांतक छट्ठेदेवलोकें केतलाएक देवनो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। छट्ठेदेवलोकें जेहदेवता ब्रह्म १ सुब्रह्म २ ब्रह्मावर्त ३ ब्रह्मप्रभ ४ ब्रह्मकांत ५ ब्रह्मवर्ण ६ ब्रह्मलेश ७ ब्रह्मध्वज ८ ब्रह्मशृंग ९ ब्रह्मसिद्ध १० ब्रह्मकूट ११ ब्रह्मोत्तरावतंसक १२ एणे विम

माअभिग्रहाभिक्षुप्रतिमा तत्रमासिक्याद्यः सप्तमासिक्यन्ताः सप्तमासेनमासेनोत्तरोत्तरं वृद्धाएकादिभिर्भक्तपानदत्तिभिर्येति तथासप्तसप्तराविदिवाद्याश्चो ॥ टीका ॥

रससंतिवा नीरससंतिवा तेसिणंदेवाणं एक्कारसएहं वाससहस्साणं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआजवसिद्धि आजीवा एक्कारसहिंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंक रिस्संति ॥ ११ ॥ बारसभिक्खुपडिमाउ पन्नत्ता तंजहा मासिआभिक्खूपडिमा दोमासिआ भिक्खूपडिमा तिमासिआभिक्खूपडिमा चउमासियाभिक्खूपडिमा पंचमासियाभिक्खूपडिमा छमासियाभि क्खूपडिमा सत्तमासियाभिक्खूपडिमा पढमासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा दोच्चासत्तराइंदिआभिक्खूपडिमा त ॥ मूल ॥

ने देवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो इग्यार सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता इग्यारे पखवाडे अर्द्धमासे स्वासोस्वास घणांले ऊर्द्धा स्वासले नीचोस्वास मूंके तेहदेवतानो इग्यार सहस्रवर्षे आहारनोअर्थ वंछाउपजेछे। संसारमाहिं केतलाएक भव्यजीव जेह इग्यारभव ग्रहणकरी एतले इग्यारभवने आंतरे सी झस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये। इतिइग्यारमुं ठाणुंसमाप्तं ॥ ११ ॥ हिवे बारमो अधिकार लिखियेछे। भिक्षु उत्तमसंहननना धणी तथा जघन्य नवमा पूर्वनूं त्रीजूंवस्तु तेहनो पारगामीहोय। उत्कृष्टो दसपूर्व कांइएकगुरुनी आज्ञा मांगी गच्छमांहि निकलीइ महासत्वनो धणीजे यति तेहनी बारप्रतिमा अभिग्रह रूपकही तेकहेछे। पहिली भिक्षुप्रतिमा एकमासिकी एकमासलगे भात पाणीनी एकदाथीले एकमासदीठ भातपाणी नी एकेकदाती वधारे सातमासलगें सातमेमासे सातसात भातपाणीनीदातीले लवणखंड मात्रदाती कहिये १। बीजी प्रतिमा बिमासिकी २। त्रीजीप्रति ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

चाथिंयासृता: सप्तराचिंदिवास्तावतिस्रोभवंतीति समानामुपरि अष्टमीप्रथमासप्तराचिंदिवा एवंनवमीद्दितीया दशमीतृतीया आसांचतिसृणामप्यनुष्ठा नकृतोविशेष: तथाहिप्रष्टम्यांचतुर्थभक्तंतप: ग्रामा[illegible]उत्कटुकाद्यासनेनविशेष: दशम्यांवीरासनादिना तथा अहोरात्रप्रमाणाहोराचिकी एकादशीयाथषष्ठभक्तेन भवतीतिविशेष: एकराचिकीराचिप्रमाणासाचाष्टमभक्तेन राचौप्रबलंबभुजस्य संहतपादावनतकायस्या निमेषोदयास्येति तथासमेकीभूय: समान:समाचाराणां साधुनांभोजनंसंभोग: सचोपध्यादिलचणविषयभेदात् द्दादशधा तचउवहीत्यादिरूपकद्दयं तचोपधि

॥ मूल ॥

चासत्तराइंदिआनिरूपडिमा अहोराइआनिरूपडिमा एगराइआनिरूपडिमा दुवालसविहेसंभोगे

॥ भाषा ॥

मा चिणिमासिकी ३ । चउथी प्रतिमा च्यारमासिकी ४ । पांचमी पांचमासनी प्रतिमा ५ । छठो छमासनी प्रतिमा ६ । सातमी सातमासनी प्रतिमा ७ आठमी पहिली प्रतिमा सातदिवसराचिनी आठमी प्रतिमाए सातदिनलगे अष्ठमीए चतुर्थभक्त तपकरे ग्रामबाहिररहे उत्तरासनकरे ८ । नवमी बीजी पणिसात अहोराचनी भिक्खुप्रतिमा नवमी प्रतिमाए उकडासनकरे ९ । दशमी चीजी पणिसात अहोराचनी तिहां वीरासनकरे १० । इग्यारमी एकअ होराचिनी भिखुप्रतिमाते षष्ठभक्ते उपवासे पूरिये ११ । बारमी भिखु प्रतिमा एकराची प्रमाणे अष्टमभक्त उपवासे समाप्तिहोइ राचिए प्रलंबभुजाकरि का उसग्गकरे कांइककाया नमाडे नेचमेखनकरे १२ । बारें प्रकारे संभोग एकसमाचारी साधनो एकभोजनादिकनो विचारहारकह्यो । उपधिवस्त्र पाचादि कनो संभोग लेवोदेवो संभोगी साधुसाथें तुध्रमोत्पादन दोषेविशुद्धकहोये अशुद्धलेई चिणिवेला प्रायश्चितलेई तोहोते संभोगीकरी चउथी वेलाप्रायश्चित्तलेतो

॥ टीका ॥

र्वस्त्रपात्रादिस्संसंभोगिकः संभोगिकेनसार्द्धंतुद्गमोत्पादनैषणादोषैर्विशुद्धं गृह्णन्शुद्धः अशुद्धंगृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चित्तो यावत्त्रयंयावत्संभोगार्हस्ततुर्थवेला
याः प्रायश्चित्तप्रतिपद्यमानोपिविसंभोगार्हइति । विसंभोगिकेनपार्श्वस्थादिनावा संयत्यवासार्द्धं मुपधिंशुद्धमशुद्धं वा निःकारणं गृह्णन्प्रेरितः प्रतिपन्नप्रायश्चि
त्तोपि वेलात्रयस्योपरिनेसंभोग्य एवमुपधेः परिकर्मपरिभोगंवाकुर्वन् संभोग्योविसंभोग्यश्चेति उक्तंच एगंचदोविति निच आउट्टंतस्सहोइच्छित्तं। आलोचयतइत्य
र्थः आउट्टंतवितम्मो परेणतिहिं विसंभोगोत्ति सुयस्ससम्भोगिकस्य विसम्भोगिकस्य चोपसंपन्नस्यश्रुतस्य वाचनाप्रच्छनादिकं विधिनाकुर्वन् शुद्धस्तस्यैवाऽविधिनोप
सम्पन्नस्यऽनुसम्पन्नस्यवा पार्श्वस्थादेर्वाश्रयवाचनादि कुर्वंस्तथैववेलात्रयोपरिसम्भोग्यः तथा भत्तपाणेत्ति । उपधिद्वारवदवसेया नवरमिहभोजनंदानंच परिक
र्मपरिभोगयोः स्थानेवाच्यमिति तथा अंजलीपग्गहेइत्ति इहेतिशब्दउपदर्शनार्थः चकारः समुच्चयार्थः तत्उपलक्षणत्वा दंजलिप्रग्रहस्यवंदनादिकमपीहद्रष्टव्यं
तथाहिसम्भोगिकानामन्यसम्भोगिकानांवा संविग्नानांवन्दनकं प्रणाममंजलिप्रग्रहं नमःक्षमाश्रमणेभ्यइतिभणनं आलोचनासूत्रार्थनिमित्तनिषद्याकरणंच कुर्वन्
शुद्धः पार्श्वस्थादेस्तानिकुर्वंस्तथैवसम्भोग्यो विसम्भोग्यश्चेति। तथा दायणायत्ति दानन्तत्रसंभोगिकायवस्त्रादिभिः शिष्यमाणोपग्रहासमर्थे सम्भोगिकेऽन्यसम्भोगि
केऽन्यसम्भोगिकं यथाशिष्यगणंयच्छन्शुद्धः निःकारणंविसम्भोगिकस्य पार्श्वस्थादेर्वासंयत्यावा तंयच्छंस्तथैव सम्भोग्योविसम्भोग्यश्चेति तथा निकाएयत्ति नि

॥ मूल ॥

प० तं० उवहिसुअभत्तपाणे अंजलिग्गहेइ अदायणेअ निकाएअ अब्भुठाणेतिआवरे किअकम्मस्सय

॥ भाषा ॥

शी तेहसंभोगीनकरीये १ । श्रुतकहिये सिद्धांत तेहनी वाचना पृछादिककरतो संभोगी तेहोज सिद्धांत अवधिए भणतो कोधीनें तथा पासथानें भणानो
विसंभोगीकहिये २ भात पाणी शुद्धमान लेतो देतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ३ अंजलि प्ररिग्रहमाहोमाहीं नमस्कारनो करवो उपासत्यानेकरतो विसंभो

॥ टीका ॥

निकाचनंच्छंदनं निमंत्रणमित्यनर्थांतरं तत्रशय्योपध्याहारैः शिष्यगणप्रदानेनस्वाध्यायेनच सम्भोगिकं निमंत्रयनशुद्धः शेषंतथैव तथाअब्भुट्ठाणेतियावरेत्ति अभ्यु त्थानमासनत्यागरूपमित्यपरं सम्भोगासम्भोगस्थानमित्यर्थः तत्राभ्युत्थानं पार्श्वस्थादेःकुर्वं स्तद्विसम्भोग्यउपलक्षणत्वाद्वाभ्युत्थानस्य किंकरतांचप्राघूर्णकग्लानाद्यव स्थायां किंविश्रामणादि करोमीत्येवंप्रश्नलक्षणं । तथा अभ्यासकरणं पार्श्वस्थादिधर्माच्युतस्य पुनस्तत्रैवसंस्थानलक्षणं तथा अविभक्तिंवापृथग्भावलक्षणं कुर्वन्न शुद्धो सम्भोग्यश्चाप्येतान्येवंयथागम्यं कुर्वन्शुद्धः सम्भोग्यश्चेति तथाकिइकम्मस्सयकरणेत्ति कृतिकर्मवन्दनकन्तस्य करणंविधानं तद्विधिनाकुर्वन्शुद्धः इतरथा तथैवासम्भोग्यस्तत्रचायंविधिर्यः साधु र्वातिनस्तब्धदेहउत्थानादिकर्तुमशक्तः ससूत्रमेवास्खलितादिगुणोपेतमुच्चारयति एवमावर्त्तशिरोनयनादियच्छक्नोति तत्क रोत्येवंचायथाशठप्रवृत्तिर्वंदन विधिरितिभावः वेयावच्चकरणेइयत्ति वैयावृत्त्य माहारोपधिदानादिना प्रश्रमणादिमात्रकार्प्पणादिना अधिकरणोपशमनेनचोपष्टं भकरणं तस्मिंश्चविषयेसम्भोगोभवतीति । तथासमोसरणंति जिनस्तवनरथानुयानपट्टयात्रादयोबहवः साधवोमिलन्ति तत्समवसरणं इहचक्षेत्रमाश्रित्यसाधूनां साधारणोवग्रहोभवति वसतिमाश्रित्यसाधारणो ऽसाधारणोवेति अनेनचान्येप्यवग्रहाउपलक्षितातेचानेके तथा वर्षावग्रह ऋतुबद्धावग्रहो वृद्धवासावग् हश्चेति एकैकश्चायंसाधारणावग्रहः प्रत्येकावग्रहश्चेतिद्विधा तत्रयत्क्षेत्रंवर्षोपकल्पाद्यर्थं युगपद्द्यादिभिः साधुभिर्भिन्नगच्छस्थैरनुज्ञाप्यते ससाधारणोयत्क्षेत्रमे

॥ मूल ॥

करणे वेआवेच्चकरणेअ समोसरणं संनिसिज्जाय कहाएअपबंधणे दुबालसावत्तेकित्तिकम्मे प० तं० दुउणयं

॥ भाषा ॥

गे। ४ । संभोगी साधुभणी वस्त्रशिष्यादिकदेतो संभोगी पासत्थानेदेतो विसंभोगी ५ निकाचन निमंत्रण माहोमांहो शिष्यउपाध्यायादिकै करतोशुद्ध ६ । व डेभावाएथकें उठीउभा थाइवो ७ । अपरकहतां अनिरतबोल तथा विविधंकरी कृतिकर्म वांदणानो करवो वडांनेवांदणानो देवो ८ । वेयावचमनो करवो

कसाधवोनुग्नाप्याश्रिताः सप्रत्येकावग्रहइति । एवंचैतेष्ववग्रहेषु आकुट्यादिना अभाव्यंमचित्तंशिष्य मचित्तंवस्त्रादिगृह्णन्तोऽनाभोगेनचगृहीतं तदनर्पयतः समनोज्ञा अमनोज्ञाश्च प्रायश्चित्तिनोभवंत्यसम्भोग्याः पार्श्वस्थादीनांचावग्रह एवनास्ति तथापियदितत् क्षेत्रं कुलंकमन्यच्चैवपसंविग्नानिर्वहंतिततस्तत्क्षेत्रंपरिहरं त्येशय्यं पार्श्वस्थादीनांवावग्रहक्षेत्रं शिक्षोर्णं संविग्नायाग्यभन निर्वहंति ततस्तत्रापि प्रविशंति सचित्तादिगृह्णंति प्रायश्चित्तिनोपिनभवंतीति आहच समणु समणुन्ने अदिन्नंगणा भवगिगहमाणेवामभोगवीसुकरणं पृथक्करणमित्यर्थः इयंग्यअलंभिणक्लिन्ति इतरानपार्श्वस्थादीनित्यर्थः तथा सन्निसिज्जायत्ति निषद्या आसनविशेषः साचसम्भोगकारणंभवति तथाहि संनिषद्यागत आचार्यो निषदागतेन सम्भोगिकाचार्येण सह श्रुतपरिवर्त्तनां करोतिशुद्धः अथामनोज्ञापा र्श्वस्थादिसाध्वीगृहस्थैः सह तदाप्रायश्चित्तीभवति तथाकहाण्यपबंधणेत्ति कथावादाऽनिषद्यां विनानुयोगंकुर्वतः शृण्वतः प्रायश्चित्तं तथानिषद्यायामुपवि ष्टः सूत्रार्थौप्रच्छति अतिचारान्वालोचयति तदातथैवेति । तथाकहाण्यपबंधणेत्ति कथावादादिकापंचधातस्याः प्रबंधनंप्रबंधेनकरणं कथाप्रबंधनंतत्रसम्भो गाऽसम्भोगोभवतः तत्रसमभ्युपगम्यपंचावयवेन त्र्यावयवेनवाक्येन यत्तत्समर्थनंसच्छलजाति विरहितो भूतार्थोऽन्वेषणापरोवादः सएवच्छलजाति निर्गतस्थानप रोजल्पः यत्रैकस्यपक्षपरिग्रहोऽस्तिनापरस्य सादूषणमात्रप्रवृत्ताविततण्डा तथाप्रकीर्णकथाचतुर्थी साचोत्सर्गकथास्तिकनयकथावा तथानिश्चयकथापंचमी । सा चापवादकथा पर्यायास्तिकनयकथाचेति तत्राद्यास्तिस्रः कथाश्रमणीवर्जैः सहकरोति श्रमणोभिस्तुसहकुर्वन्प्रायश्चित्तीचतुर्थवेलायांवा लोचनपिविसम्भोगा र्हइति रूपकद्वयस्य संक्षेपार्थोविस्तारार्थस्तु निशीथपंचमोद्देशकभाष्यादवसेयइति तथादुवालसावत्ते किइकम्मेत्ति द्वादशावर्त्तंकृतिकर्मवन्दनकं प्रश्नसंवाद शावर्त्ततामेवास्यानुवन्दनशेषांश्च तत्कर्मानभिधित्सितरूपकमाह दुर्णामएत्यादि अवनतिरवनमुत्तमांगप्रधानं प्रथमनमित्यर्थः द्वेऽवनतेयस्मिंस्तद्ववनतं तत्रैकंय

॥ टीका ॥

दाप्रथममेव इच्छामिखमासमणो वंदिउंजावणिज्जाएनिसीहियाएत्ति अभिधायावग्रहानुज्ञापनायावनति द्वितीयं। पुनर्यदावग्रहामुज्ञापनायैवावनमतीति यथाजातं श्रमणत्वभवनलक्षणं जन्माश्रित्य योनि:क्रमणलक्षणंच तत्ररजोहरणमुखवस्त्रिका चोलपट्टमात्रया श्रमणोजातोरचितकरपुटस्तुयोन्यानिर्गतएवंभू तएवंवन्दते तद्व्यतिरेकाद्वा यथाजातंभण्यते कृतिकर्मवंदनकं। बारसावयंति द्वादशावर्त्ता: सूत्राभिधानगर्भा: कायव्यापारविशेषा: यतिजनप्रसिद्वायस्मिं स्तद्द्वादशावर्त्तते। तथाचउसिरन्ति चत्वारिशिरांसियस्मिंस्तच्चतु:शिर: प्रथमप्रविष्टस्यक्षामणाकाले शैष्याचार्यशिरोद्वयंपुनरपिनि:क्रम्यप्रविष्टस्यद्वयमेवेति भावना। तथातिहिंगुत्तंति तिसृभिर्गुप्तिभिर्गुप्त: पाठांतरेपि तिसृभि:श्रद्धागुप्तिभिरेवेति तथादुपवेसन्ति द्वौप्रवेशौयस्मिंस्तद्द्विप्रवेशं तत्रप्रथमोवग्रहमनुज्ञाप्य प्रविशतो द्वितीय: पुनर्निर्गत्यप्रविशतइति एगनिक्खमणंति एकनि:क्रमणमवग्रहादावसिक्या निर्गच्छत: द्वितीयवेलायां ह्यवग्रहान्नर्गच्छति पादपतितएव

॥ मूल ॥

जहाजायं कितिकम्मं बारसावयं चउसिरं तिगुत्तं दुपवेसं एगनिक्कमणं विजयाणंरायहाणी दुवालसजोय

॥ भाषा ॥

आहार पाणी संभोगीने आंणीदेतो मात्रादिक परठवतो संभोगी अन्यथा विसंभोगी ९। समोसरण तेवणा यतीएकठा मिलिए तिहां समोसरण संभोग साधुनो अवग्रहलेई एकठोरहिवो १०। संनिषद्यागत संभोगीसाथें एके बैसतो बेसी शास्त्रचिंतन करतो पासत्यासाथे करतो विसंभोगी ११ संभोगीसाथें कथाप्रबंध करतोशुद्ध १२। पासत्यासाथें करतो विसंभोगी ॥ बारें आवर्तमाहें तेकृतिकर्म वांदणाकह्या भगवंते श्रीवर्द्धमानसामी ऐं तेकहेछे बेअवनत बेवेला मस्तकनमाडवो गुरुनो थापनाकोजि तेहथकी अजठहाथ वेगला रहीपडिकमीए अजठहाथमाहीं अवग्रहकहिये उभांथका इच्छामिखमासमणो कहिये बिहु वांदणे बिहुंवेला मस्तकनमाडिये पछेअवग्रहमांहि आंविये यथाजातमुद्रा जन्मअवसरो बालकनीपरें चलोटोभरोहायजोडोरहो कृतकर्मवांदणा १२ आ।

॥ टीका ॥

सूत्रंसमापयतीति तथाविजय राजधानी असंख्याततमेजंबूद्वीपे आद्य जंबूद्वीपविजयाभिधान पूर्वद्वाराधिपस्य विजयाभिधानस्य पल्योपमस्थितिकस्य देवस्यसं बंधिनीति तथारामोनवमोबलदेवः देवत्तिंगयत्ति देवत्वंपंचमदेवलोके देवत्वंगतः तथासर्वजघन्यारात्रि रुत्तरायणपर्यंताहोरात्रस्यरात्रिः साचद्वादशमौहूर्ति

॥ मूल ॥

णसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० रामेणं बलदेवे दुवालसवाससयाइंसव्वाउयं पालित्तादेवत्तिंगए मंद रस्सणं पव्वयस्सचूलिआमूले दुवालसजोयणाइं विक्खंभेणं प० जंबूदीवस्सणंदीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं प० सव्वजहन्निआराइ दुवालसमुहुत्तिआ प० एवंदिवसोविनायव्वो सव्वठसिद्धस्सणं

॥ भाषा ॥

वर्त छवेला गुरुनेपगे वांदणाकीजे। महोकाय एपाठकहे।विदुवेलाथई १२ आवर्तथया चोसरां ४ वेला गुरुनेपगे मस्तकनमाडिये। त्रिणीगुप्ती मनवचन कायानी गुप्तिकीजे। उपवेसवींवेला वांदणानेअर्थे [illegible] पहिलेवांदणे एकवेला नीकली बीजीवेला गरुपगे बेठा ज वांदणो समापीएपाठकह्यो एहसमवयांग वृत्तिनोभाव। जंबूद्वीपनी पूर्वनी पोलीनोधणी विजयदेवता तेहनीराजधानी असंख्यातमे जंबूद्वीपेछे बारयोज नसहस्र एतले १२ लाखयोजन लांबपणेपिहुलपणेकह्यो रामबलदेव कृष्णवासुदेवनो वडोभाई बारसेवर्ष सर्वआउखुंपालीने देवपणुंपाम्या पांचमेदेवलोके पहुंता मेरुपर्वत उपरि सहस्रयोजन पिहुलोछे। तेहनेसेविचि ४०० योजनऊंची चूलिकाछे। तेहनोमूल १२ योजनबीचो आठउपरि शिखरे च्यारयोजन पिहुलपणो कह्यो। जंबूद्वीपनो चोपखेर गढरूप वेदिका आठयोजन ऊंचीछे। जेहवेदिकानोमूल १२ योजनविचि ८ उपरि ४ योजन पिहुलपणेकह्यो भगवंते सर्वजघ न्यरात्रि उत्तरायणने छेहडे कर्कसंक्रांतिनी आसाढीपूनिमनी घणीनान्हीरात्रि बारहमूहूर्तहुई एतले २४ घडीनो रात्रिकह्यो। एमदिवसपणिजाणिवो।

चतुर्विंशति घटिकाप्रमाणा लोकप्रसिद्धासातिरेका सामान्या एवंदिवसोविति। सर्वजघन्योद्वादश मौहूर्त्तिकएवेत्यर्थः सचदक्षिणायनपर्यंतदिवसस्ति। ॥ टीका ॥

महाविमाणस्स उवरिल्लाउचूलिआउ दुवालसजोयणाइं उड्ढंउप्पइत्ता इसिपब्भारनामपुढवी प० इसिपब्भा ॥ मूल ॥

॥ ३६ ॥ राएणंपुढवीए दुवालसनामधिज्जा प० तं० इसित्तिवा इसिपब्भारात्तिवा तणूइवा तणूअरित्तिवा सिद्धित्तिवा

सिद्धालएत्तिवा मुत्तीवा मुत्तालएत्तिवा बंभेत्तिवा बंभवडिंसएत्तिवा लोकपडिपूरणात्तिवा लोगग्गचूलिआइ

दक्षिणायननो छेहल्योदिवस मकरसंक्राति पोसीपूनिमनो १२ मुहूर्तनो २४ घडीनो दिवसकह्यो सर्वअर्थ जिहांगई थकेंसीधा एकावतारीपणामाटे तेहसी ॥ भाषा ॥

र्वार्थसिद्ध महाविमान कह्यो तेहनी उपरिलो चूलिका शिखराग्रथकी १२ योजनछे ऊंचो उत्पत्तिने जईने ईषत्प्राग्भार नामपृथिवी सिद्धिशिलाकह्यो रत्नप्रभा

दिक बीजी पृथिवीनो अपेचाये ईषत् थोडोछे प्राग्भार विस्तार तथा पिण्ड जेहनो तेहईषत्प्रग्भार सिद्धिशिलाछे तेहना १२ नामधेय कहता नामकह्या ते

कहेछे। ईषत् कहीये थोडो ४२ लाखयोजन प्रमाणमाटे १ ईषत्प्राग्भार बीजी पृथिवीनो अपेचाएं थोडा २ तनूपातलीविचि ८ योजन जाडीछे हडेमाखि

नाश्रांख सरीखो पातलो ३ तनुतरोघणोज पातलो ४ तिहां पहुंतेथके जीवनाकार्य सोझे तेसिद्धिकहिये ५ सिद्धथयाछे तेहनू आलयकहतां घरते सिद्धाल

य ६ तिहां जीवपहुंताथको कर्मथको मूंकाणातेमुक्ति ७ मुक्तजेसिद्ध तेहनूं आलयघरते मुक्तालय ८ ब्रह्मसकललोक तेहमय ९ ब्रह्मावतंसक ब्रह्मसकललोक ते

हनो मुगुटरूप १० लोक १४ राजलोक तेणेकरी प्रतिपूर्णथया तेलोक प्रतिपूरण ११ लोक १४ राजलोक तेहनेसाथे चूलिकाचोटी रूपशिखररूप तेलो

काग्रचूलिका १२ एणेएरत्नप्रभा पहिलीपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो बारपल्योपम आउखोकह्यो। पंचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारक

॥ मूल ॥

वा इमीसेणं रयणप्पभाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं बारसपलिओवमाइंठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थे
गइयाणं नेरइआणं बारसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं बारसपलिओवमाइं
ठिईप० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं बारसपलिओवमाइं ठिई प० लंतेकप्पेसु अत्थेगइ
आणं देवाणं बारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिंदे महिंदज्झयं कंबु कंबुग्गीवं पुंखं सपुंखं महापुंखं
पुंडं सपुंडं महापुंडं नरिंदं नरिंदकंतं नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्को
सेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बारसएहं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा
नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बारसहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतगइआ भवसिद्धिआ जीवा

॥ भाषा ॥

नो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। असुरकुमार भवनपती देवतानो बारपल्योपम आऊखोकह्यो। सौधर्म ईशानकल्पें देवलोकें केतलाएक देवतानो बार
पल्योपम आऊखोकह्यो। लांतक छट्ठादेवलोके केतलाएक देवतानो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। लांतककल्पे जेदेवता महेन्द्र १ महेन्द्रध्वज २। कंबु ३।
कंबुग्रीव ४। पुंख ५। सपुंख ६। महापुंख ७। पुंड्र ८। सपुंड्र ९। महापुंड्र १०। नरेन्द्र ११। नरेन्द्रकांत १२। नरेन्द्रोत्तरावतंसक १३। एणे १३ विमाने दे
वतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो बारसागरोपम आऊखोकह्यो। तेहदेवतानो बारअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणाले ऊंचोले नीचोउस्वासले

॥ टीका ॥

महेन्द्रमहेन्द्रध्वज कंबुकंबुग्रीवादीनि त्रयोदशविमानानीति ॥ अथ त्रयोदशस्थानके किंचिल्लिख्यते इहस्थिति रूत्रेभ्योऽर्वागष्टसूत्राणि । तत्रकरणंक्रियाकर्मनिबं धनचेष्टातस्याः स्थानानिभेदाःपर्यायाः क्रियास्थानानि तत्रअर्थाय शरीरस्वजनधर्मादिप्रयोजनाय दण्डस्त्रसथावरहिंसा अर्थदण्डः क्रियास्थानंइतिप्रथमः १। तद्विलक्षणोऽनर्थदण्डः २ । तथाहिंसामाश्रित्य हिंसितवान्हिनस्ति हिंसिष्यतिवा अयंवैरिकादिर्मामित्येवं प्रणिधानेनदण्डोविनाशनं हिंसादण्डः ३ । तथा ऽकस्मादनभिसंधिना न्यवधार्यप्रवृत्त्यादण्डो ऽन्यस्यविनाशोऽकस्माद्दण्डः ४ । तथादृष्टेर्विपर्यासितावादृष्टिर्विपर्यासिका दृष्टिर्विपर्यासितावा मतिभ्रमइत्यर्थस्त

॥ मूल ॥

जेयारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १२ ॥ तेरसकरीयाठाणा प० तं० ॥ अट्ठादंडे अणठादंडे हिंसादंडे अकम्हादंडे दि

॥ भाषा ॥

तेहनो बारेवर्षसहस्त्रे आहारनो अर्थउपजें । केतलाएक संसारमाहे भव्यजीव बारभवग्रहणे १२ भवनेंआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बारमूंठाणूं सम्मत्तं २० ॥ १२ ॥ हिवे तेरक्रियानो अधिकार लखियेछे । तेरक्रियाठाणां कह्याकरिवो तेक्रिया कर्मबन्ध नचेष्टा तेहना स्थानकभेद तेक्रियास्थानकह्या तेकहेछे शरीरस्वजन धर्मादिकनेअर्थे त्रस थावरने दंडेहणिये तेअर्थदंड १ अनर्थक जीवहणिये तेअनर्थदंड २ एह मुझनेहणतोहुतोहणस्ये अथवा हणेछे तेमाटे हुंज एने पहिले हणूं ए हिंसादण्ड ३ अकस्मात् अनेराने बधवा प्रवर्त्योहुतो अने अनेरोहणाणो तेअ कस्मात्दंड ५ । दृष्टिविपर्यास तेमतिभ्रम तेणेप्राणिवध तेदृष्टिविपर्यासदंड अमित्रनेबुद्धि मित्रनोहणिवो ५ आत्मपरोभयार्थ जूठोबोलवो तेजप्रत्ययकारणछे जेहदंडनो तेमृषावाद प्रत्यया ६ । एमअदत्तादानप्रत्यया ७ । अध्यात्ममन तेहनेंविषेहो तेआध्यात्मिक मनमाहिं दुष्टभावनोचिंतवो ८ । मानप्रत्ययअ

॥ टीका ॥

यादृक्षः प्राणिवधोद्दृष्टिविपर्यासितावा एकोदण्डोदृष्टिविपर्यासितादण्डोवा मित्रादेरमित्रादिबुद्ध्या हननमितिभावः ५। तथमृषावादे आत्मपरोभयार्थम लोकव्ययनंतद्देत्प्रत्ययः कारणंयस्यदंडस्य समृषावादप्रत्ययः ६। एवमदत्तादानप्रत्ययोपि ७। तथाअध्यात्मनिमनसिभव आध्यात्मिको वाह्यनिनिमित्तानापेक्ष शोकाभिभवइतिभावः ८। तथामानप्रत्ययो जात्यादिमदहेतुकः ९। तथामित्रदेषप्रत्ययः मातृपित्रादीनामल्पेप्यपराधे महादंडनिर्वर्त्तनमितिभावः १०।

॥ मूल ॥

दिट्ठिविपरियासियादंडे मुसावायवत्तिए अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए मानवत्तिए मित्तदोसवत्तिए मायावत्तिए लोभवत्तिए इरियावहिए नामंतेरसमे सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरसविमाण।एपत्थडा प० सोहम्म

॥ भाषा ॥

भिमानिकरी आगयाने दंडदेवो ९। मित्रद्वेषप्रत्यय मातापितानें थोडाअपराधे घणोदंडदेवो १०। मायाप्रत्यय मायाकपट तेणेनिवर्तव्योदंड ते मायाप्रत्यय ११। एमलोभप्रत्यय १२। ऐर्य्यापथिकीनामे तेरमांक्रियास्थानक कायथोग प्रत्ययसंयोगी केवलीने पहिलीसमें क्रियालागे बीजेसमेवेदे तीजेसमेनिर्जरे १३। सौधर्मपहिलो देवलोक ईशानबीजोदेवलोक एहदोदेवलोक लगडाकारेछे तेमाटे विहुंदेवलोके तेरविमान प्रस्तटछे उपराउपरि पावडीरूप कह्यो। पहिलो सौधर्मलोक मेरुथको दक्षिणदिसें अर्द्धचंद्राकारछे। पूर्वपश्चिमेलांबो दक्षिणउत्तरेपिहुलो। तेहने तेरमेप्रस्तरे शक्रेंद्रनो आवासभूतविमान अथवा सौधर्मदेवलोकनो अवतंसकमुकुटरूप तेसौधर्मावतंसक विमान साढीबारलाख योजनलांबपणें पिहुलपणें कह्यो। एममेरुथको उत्तरदिसें अर्द्धचंद्राकारईशानदेवलोक तेहने तेरमेप्रस्तटे ईशानावतंसक विमान साढीबारलाखयोजननोकह्यो। जलचर पंचेंद्रिय तिर्यंचयोनीना जीवनी साढीबारजातिनेविषे कुलकोटिनी योनिप्रमुखउत्पत्तिस्थानक शतसहस्रकह्या एतलेसढीबार कुलकोटि जलचरपंचेन्द्रिय तिर्यंचनीछे। योनितेउत्पत्तिस्थानक जिमगोबर कुलते

॥ टीका ॥

मायाप्रत्ययो मायानिबंधनः ११ । एवंलोभप्रत्ययोपि १२ । ऐर्यापथिकः केवलयोगप्रत्ययःकर्मबंध उपशांत मोहादीनां सातवेदनीयबंधः १३ । तथाविमाणप त्थडेत्ति विमानप्रस्तटाउत्तराधर्यव्यवस्थिता तथासोहम्मवडिंसएत्ति सौधर्मस्यदेवलोकस्यार्द्धचन्द्राकारस्य पूर्वापरायतस्य दक्षिणोत्तरविस्तीर्णस्य मध्यभागेत्रयोद शप्रस्तटे शक्रावासभूतंविमानं सौधर्मदेवलोकस्याऽवतंसकः शिखरकः सद्दवप्रधानत्वादित्येवं यथार्थनामकमिति णंकारोवाक्यालंकारे अर्द्धत्रयोदशयेषुतान्य र्द्धत्रयोदशानि तानिचतानि योजनशतसहस्राणिचेतिविग्रहः सार्द्धानिद्वादशेत्यर्थः तथाअर्द्धत्रयोदशानिजातौ जलचरपंचेंद्रिय तिर्यग्गतौकुलकोटिनां योनि प्रमुखान्युत्पत्तिस्थानप्रभवानि शतसहस्राणि तानितथोच्यंतेइति तथापाणाउस्सत्ति यत्रप्राणिनामायुर्विकथनं सभेदमभिधीयते तत्प्राणायुर्द्वादशं पूर्वंतस्यच योदशवस्तूनि अध्ययनवद्विभागविशेषाः तत्रागर्भेगर्भाशये व्युत्क्रांतिरुत्पत्तिर्येषांते गर्भव्युत्क्रांतिकाः तेचते पंचेंद्रियतिर्यग्योनिकाश्चेतिविग्रहः प्रयोजने मनोवा

॥ मूल ॥

वडिंसगेणं विमाणे अद्धतेरसजोयणं सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० जलयरपंचिंदिअ तिरिक्खजोणि आणं अद्धतेरसजाइ कुलकोडीजोणीपमुह सयसहस्सा प० पाणाउस्सणं पुव्वस्सतेरसवत्थू प० गब्भवक्कंति अपंचेंदिअतिरिक्ख जोणिआणं तेरसविहेपत्तगे प० तं० सच्चमणपत्तगे मोसमणपत्तगे सच्चामोसमणपत्तगे

॥ भाषा ॥

हीजयोनिनेविषे अनेकआकारे जीवजिमगोबरमांहि अनेकप्रकार जेजीवउपजेछे तेकुलकहीये । जिहांप्राणीना आउखाना भेदकहिये तेप्राणीनोबारमो पूर्व तेहनेविषे अध्ययनना विभागविशेषकह्या गर्भोत्पन्नपंचेंद्रिय तिर्यंचजोनिना जीवने तेरप्रकारेप्रयोग मनवचनकायानो व्यापार एतले १३ योगकह्या तेक हेछे । सत्यमनोयोग तेसांचेमनेचिंतवो १ । जूठमनो व्यापारते मृषामनोयोग २ । सत्यासत्यमनोयोग ते मिश्रभावनो चिंतवो ३ । असत्यामृषामनोयोग ते

॥ टीका ॥

कायानां व्यापाराणांप्रयोगः सत्वयोदशविधः पंचदशानांप्रयोगाणांमध्ये आहारकाहारकमिश्रलक्षणकायप्रयोगद्वयस्य तिरश्चामभावात् तौहिसंयमिनाम वस्तः संयमवंतश्चसंयतमनुष्याणामेव नतिरश्चामिति तत्रसत्यासत्योभयानुभयस्वभावा श्चत्वारो मनःप्रयोगाः वाक्प्रयोगाश्चेति,, अष्टौपुनरौदारिकादयः पञ्च कायप्रयोगाः एवंत्रयोदशेति । तथासूर्यमण्डलस्यादित्यविमानवृत्तस्य योजनं सूर्यमंडलयोजनं तत् । तमित्यत्रंकारेत्रयोदशभिरेकषष्ठिभागै र्येषां भोगानामेकष ष्ठायोजनंभवति तैर्भागैर्योजनस्य संबंधिभिरूनंप्रज्ञप्तं मष्टचत्वारिंशद्योजनभागाइत्यर्थः वज्ञाभिलापेनद्वादश वइराभिलापेन लोकाभिलापेन चैकादशविमा

॥ मूल ॥

अुसच्चामोसमणपत्तगे सच्चवइपत्तगे मोसवइपत्तगे सच्चामोसवइपत्तगे अुसच्चामोसवइपत्तगे उरालिअुसरीरका यपत्तगे उरालिअुमीससरीरकायपत्तगे वेउव्विअुसरीरकायपत्तगे वेउव्विअुमीससरीरकायपत्तगे कम्मसरीरकाय पत्तगे सूरमंडलं जोयणतेरसेहिं एगसठिभागेहिं जोयणस्सऊणंइमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अुत्येगइआणं

॥ भाषा ॥

मनोव्यापार सांचोनहो जूठोपिणनहो ४ वचनयोग सांचोबोलवो तेसत्यवचनयोग १ एममृषावचनयोग तेहनंकारण २ । सत्यासत्य तेमिश्रभाषाएं बोलवो ३ । असत्यामृषा तेव्यवहारवचनयोग जाइआवो लेदे एहवोभाषा ४ । कायाना सातयोगछे तेमांहि आहारक १ । आहारकमिश्र २ । एह तिर्यंचनेनहोय तेहोय तेहपूरवधरनेहोइ तेमाटे पांचकाययोगलीजे औदारिक शरीरकाययोग १ औदारिकमिश्र शरीरकाययोग २ वैक्रियशरीरकाययोग ३ वैक्रियमिश्रश रीरकाययोग ४ अपर्याप्तावस्थाएं। कार्मणशरीर काययोग ५। एममनोयोग ४ वचनयोग ४ काययोग ५ सर्वमिलो १३ थया सूर्यनंमांडलू योजननं एकसठोए तेरभा गेऊंणोकह्यो । एतले एकयोजनना ६१ भागकीजे तेहवा १३ भाग सूर्यनंमंडलछे । एतले एकसठीया ४८ भागसर्यनूंमांडलूं पिहलूंछे । एणोएरत्नप्रभा पहिली

॥ मूल ॥

नेरइआणं तेरसपलिओवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं तेरससागरोवमाइंठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरसपलिओवमाइंठिई प० सोहम्मीमाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआ णं देवाणं तेरसपलिओवमाइं ठिई प० लंतएकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेरससागरोवमाइंठिई प० जेदेवा वज्जं सुवज्जं वज्जावत्तं वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवस्रं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिट्ठं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं वइरवस्रं वइरलेसं वइररूवं वइरसिंगं वइरसिट्ठं वइरकूडं वइरुत्तरवडिंसगं लोगं सुलोगं लोगावत्तं लोगप्पभं लोगकंतं लोगवस्रं लोगलेसं लोगरूवं लो

॥ भाषा ॥

नरकपृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो तेरपल्योपम आउखोकह्यो । पांचमी पृथिवीए केतलाएक नारकीनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवनोकेतलाएकनो तेरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो तेरपल्योपम आउखोकह्यो । लांतककल्पेकेतलाएकदेवनो तेरसागरोपम आउखोकह्यो । छट्ठेदेवलोके जेहदेवता वज्र १ । सुवज्र २ । वज्रावर्त ३ । वज्रप्रभ ४ । वज्रकांत ५ । वज्रवर्ण ६ । वज्रलेश ७ । वज्ररूप ८ । वज्रशृंग ९ । वज्रसिद्ध १० । वज्रकूट ११ । वज्रोत्तरावतंसक १२ । एम बारकनी ॥ वइर १ । सुवइर २ । वइरावर्त ३ । वइरप्रभ ४ । वइरकांत ५ । वइरवर्ण ६ । वइरलेश ७ । वइररूप ८ । वइरशृंग ९ । वइरसिद्ध १० । वइरकूट ११ । एमवज्रनी परिवैरसावे १२ विमानकरी छेहिलो वैरोत्तरावतंसक १३ । वली ॥ लोक १ । सुलोक २ । लोकावर्त ३ । लोकप्रभ ४ । लोककांत ५ । लोकवर्ण ६ । लोकलेश ७ । लोकरूप ८ । लोकशृंग ९ । लोकसिद्ध १० । लोककूट ११ ।

नानीति। अथचतुर्दशस्थानकंसुबोधंच नवरमिहाष्टौसूत्राणि पृथक् स्थितिसूत्रादिति तत्रचतुर्दशभूतग्रामाः समूहाः भूतग्रामास्तत्र सूक्ष्मासूक्ष्मनामकर्मोदयव र्तित्वात् पृथिव्यादयएकेन्द्रियाः किंभूताअपर्याप्तकासत्कर्मोदयाः परिपूर्णस्वकीयपर्याप्तयइत्येकोग्रामः एवमेतेएवपर्याप्तकास्तथैव परिपूर्णस्वकीयपर्याप्त इति द्वितीयः एवंबादराबादरनामोदयात् पृथिव्यादयएव तेपिपर्याप्तेतरभेदाद्द्विधा एवंद्वींद्रियादयोपि नवरंपंचेंद्रियाः संज्ञिनोमनःपर्याप्त्युपेताइतरेत्वसंज्ञिनइति

गसिंगं लोगसिद्धं लोगकूडं लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससा गरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवातेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेतेरसहिं भवग्गह णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १३ ॥ ॥ मूल ॥

चउद्दसभूअग्गामा प० तं० ॥ सुहुमाअपजत्तया सुहुमापज्जत्तया बादराअपज्जत्तया बादरापज्जत्तया

लोकोत्तरावतंसक १२। एम छवीसविमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानोउत्कृष्टो तेरसागरोपम आऊखोकह्यो। तेदेवता तेरअर्द्धमासे श्वासोश्वास घणोले ॥ भाषा ॥ ऊंचोले नीचोमूंके। तेदेवतानो तेरवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव तेरेंभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरिस्ये इति तेरमूंठाणूं सम्पूर्णं ॥ १३ ॥ हिवे चौदमो अधिकार लिखेछे। चौदभूतांनांग्रामभूतकहतां जीवनो ग्रामसमूह तेभूतग्रामकह्या तेकहेछे। सूक्ष्मए केंद्रिय अपर्याप्त सूक्ष्मनामकर्मोदयथको सूक्ष्मपणूंपाम्या एहवापृथिव्यादिक एकेंद्रिय तेकेहवाछे अपर्याप्तछे आहार १ शरीर २ इन्द्रिय ३ श्वासोश्वास ४

तथाउप्पायपुव्वेत्यादिगाथात्रयं तत्रउप्पायमग्गेणियंचत्ति यत्रोत्पादमाश्रित्य द्रव्यपर्यायाणां प्ररूपणाकृतातदुत्पादपूर्वं यचतेषामेवाग्रम्परिमाणमाश्रित्यतदग्रेणीयं तद्दयंचवीरियंपुव्वंति। यज्जीवादीनांवीर्यं प्रोच्यतेप्ररूप्यतेतद्वीर्यप्रवादं अत्थिनत्थिपवायंति यद्यथा लोकेअस्तिनास्तिचतद्यत्रप्रोच्यते तदस्तिनास्तिप्रवादं तत्तो ॥ टीका ॥

॥ ४० ॥ बेंदियाअपज्जत्तया बेंदियापज्जत्तया तेंदियाअपज्जत्तया तेंदियापज्जत्तया चउरिंदिआअपज्जत्तया च उरिंदियापज्जत्तया पंचिंदिआअसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियाअसन्निपज्जत्तया पंचिंदिआसन्निअपज्जत्तया पंचिंदियासन्निपज्जत्तया चऊद्दसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वंमग्गेणीयंच तइयंचवीरियंपुव्वं अत्थीनत्थिप्प ॥ मूल ॥

लक्षणपरिचारें पर्याप्तनथीकीधा तेमाटे अपर्याप्त एहवा सूक्ष्मएकेंद्रियनोभेद १। सूक्ष्मएकेंद्रियपर्याप्ता जेणेंआहारादिक चारपर्याप्त पूरीकीधी तेपर्याप्ता २। बादरएकेंद्रिय अपर्याप्ता ३। बादरएकेंद्रियपर्याप्ता ४। बेंद्रियअपर्याप्ता ५। बेंद्रियपर्याप्ता ६। तेंद्रियअपर्याप्ता ७। तेंद्रियपर्याप्ता ८। चतुरिंद्रिअपर्याप्ता ९ चतुरिंद्रियपर्याप्ता १०। पंचेंद्रियअसंज्ञी अपर्याप्ता ११। पंचेंद्रियअसंज्ञीपर्याप्ता १२। पंचेंद्रियसंज्ञीअपर्याप्ता १३। पंचेंद्रियसंज्ञीपर्याप्ता १४। एकेंद्रियमाहि ४ पर्याप्ताहोय आहार १ शरीर १ इन्द्रिय ३ स्वासोस्वास ४ एचारपर्याप्ति जेणेपूरीकरी तेपर्याप्ता विणिकरी मरेते अपर्याप्त। बेंद्रिय १ तेंद्रिय २ चउरींद्रिय असंज्ञीसमूर्छिम पंचिंद्रियमाहि पांचपर्याप्ति च्यारमूलनी पांचमीभाषाअधिकी संज्ञीगर्भजमांहि मनवध्यो जेमांहि जेतलीकही तेमांहीएक उछीहोय तेअपर्याप्तिकहिये। चौदपूर्वकह्या तेआगलिविस्तरपणे वखाणीस्येकहीस्ये अनुक्रमे। उत्पातपूर्व जेमांही द्रव्यपर्याप्तानोउत्पादछे १। बीजोअग्र णीय जेमांहि तेहिजपूर्वनो अग्रपरिमाणपाम्यो २। त्रीजोप्रवाद जिहांजीवादिकनो वीर्यप्ररूप्यो ३। अस्तिनास्तिप्रवाद जेहमांहि अस्तिनास्ति भाव ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

णाणप्पवायंचत्ति यत्रज्ञानंमत्यादिकं स्वरूपभेदादिभिः प्रोच्यते तत्ज्ञानप्रवादमिति । सच्चप्पवायपुव्वंति यत्रसत्यः संयमः सत्यवचनंवा सभेदेनयत्र प्रोच्यते तत्सत्यप्रवादपूर्वं तत्तोआयप्पवायपुव्वंवत्ति यत्रात्मजीवोनेकनयैः प्रोच्यते तदात्मप्रवादमिति कम्मप्पवायपुव्वन्ति यत्रज्ञानावरणादिकर्म प्रोच्यते तत्कर्मप्रवादमिति पच्चक्खाणंभवेनवमन्ति यत्रप्रत्याख्यानस्वरूपंवर्ण्यते तत्प्रत्याख्यानमिति । विज्जाअणुप्पवायन्ति यत्रानेकविधा विद्यातिशयावर्ण्यते तद्विद्यानुप्रवादं अवंझपाणाउ बारसंपुव्वन्ति यत्रसम्यग्ज्ञानादयोऽवंध्याः सफलावर्ण्यन्ते तदवंध्यमेकादशं यत्रप्राणाजीवाआयुश्चानेकधावर्ण्यन्ते तत्प्राणायुरितिद्वादशंपूर्वं तत्तोकिरियविसालंति यत्रक्रियाः कायिक्यादिकाः विशालाविस्तीर्णाः सभेदत्वादभिधीयंते तत्क्रियाविशालापुव्वं तहबिंदुसारवत्ति लोकशब्दोत्रलुप्तोद्रष्टव्यः तत

॥ मूल ॥

वायं तत्तोनाणप्पवायंच सच्चप्पवायपुव्वं तत्तोआयप्पवायंपुव्वंच कम्मप्पवायपुव्वं पच्चक्खाणं भवेनवमं वि
ज्जाअणुप्पवायं अवंझपाणाउ बारसंपुव्वं तत्तोकिरियविसालंपुव्वं तहबिंदुसारंच अग्गेणीअस्सणंपुव्वस्स चऊ

॥ भाषा ॥

प्रकर्यो ४ । ज्ञानप्रवाद जेमांहि मत्यादिकज्ञानस्वरूपभेदेंकह्यो ५ । सत्यप्रवादपूर्व सत्यसंयम तथा सत्यवचन तेह जेहमां विस्तुभेदेंकह्यो ६ । तिवारपछे आत्मप्रवादपूर्वं जिहां आत्मजीव अनेकनयकरीकह्यो ७ । कर्मप्रवाद जिहां ज्ञानावरणीयादिककह्यो ८ । प्रत्याख्यानपूर्वनवमं प्रत्याख्यान स्वरूप जिहांवर्णवीयो ९ । विद्यानुप्रवाद जिहां अनेकविद्यानां अतिशयवर्णव्याछे १० । अवध्य इग्यारमूं जिहां सम्यक् ज्ञानादिक अवध्यसफलवर्णव्या ११ । प्राणायु बारमूं पूर्वजिहां प्राणजीव अने आउखो अनेकधावर्णव्यो १२ । तिवार पछोक्रियाविशाल जिहांकायिक्यादिक क्रियाविशाल विस्तीर्णसातेकह्या १३ बिंदुसार जेह

॥ टीका ॥

स्तलोकस्य बिन्दुरिवाक्षरस्य सारं सर्वोत्तमंयत्तल्लोकबिंदुसारमिति तथाचोद्दसवत्थूणित्ति। द्वितीयपूर्वस्यवस्तूनि विभागविशेषास्तानिच चतुर्दशसूत्रवस्तूनि त
थासाहस्सिमोत्ति। सहस्राण्येवसाहस्रं तथाकम्मविसोहीत्यादि कर्मविशोधिमार्गणां प्रतीत्य ज्ञानवरणादिकर्मविशुद्धिगवेषणामाश्रित्य चतुर्दशजीवस्थानानि
जीवभेदाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा मिथ्याविपरीतादृष्टिर्यस्यासौ मिथ्यादृष्टिः उदितमिथ्यात्वमोहनीयविशेषः तथासासायणसम्मदिठ्ठित्ति। सहेषत्तत्वश्रद्धानरसास्वाद
नेन वर्त्ततेइतिसास्वादनः घण्टालालान्यायेनप्रायः परित्यक्तसम्यक्त स्तदुत्तरकालं षडावलिकस्तथाचोक्तं। उवसमसम्मत्ताउय यउमित्थअपाउपाणस्स। सासायण
सम्मत्तं तदंतरालंमिच्छबलियंति। सास्वादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चेतिविग्रहः सम्मामिच्छदिठ्ठित्ति सम्यक्तमिथ्याचदृष्टिरस्येति सम्यग्मिथ्यादृष्टिरुदितदर्शनमोहनी

॥ मूल ॥

द्दसवत्थू प० समणस्सणं भगवउमहावीरस्स चउद्दसमणसाहस्सिउ उक्कोसियासमणसंपया होत्था कम्मवि
सोहिमग्गणं पडुच्चचउद्दसजीवठाणा प० तं० मित्थदिठ्ठी सासायणसम्मदिठ्ठी सम्मामित्थदिठ्ठी अविरयस

॥ भाषा ॥

लोकने बिंदुनोपरि अक्षरनोसार सर्वोत्तम ते बिंदुसार चौदमोपूर्वकह्यो १४। अग्रणीयबीजंपूर्वजाणिवं तेहना चौदवस्तु भागविशेषभूलावस्तुनीतिकह्या। श्रम
णतपस्वीभगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीरने चौदश्रमणयतीनासहस्र एतले सहस्रपतीनो उत्कृष्टी साधुनी संपदाकहिहुई। ज्ञानावरणीयादिकर्म विशोधि
गवेषणा पडुच्च आश्रीने चौद जीवमास्थानक भेदकह्या एतले चौदगुणठाणा तेकहेछे। मिथ्याविपरीतछे दृष्टिजेहनी तेमिथ्यादृष्टि प्रथम १। थोडोतत्व
श्रद्धानरूपरसास्वादेकरी सहितवर्ते तेस्वादन सम्यग् दृष्टि बीजोगुणठान २। सम्यग् मिथ्या दृष्टिजेहनीछे ते सम्यग् मिथ्यादृष्टि एतले कांइकसम्यक्तो रुचि
कांइक मिथ्यात्वें रुचिएतले मिश्रगुणठाणूंत्रीजूं ३। अविरतिसम्यग् दृष्टिविरतिरहित सम्यग् दृष्टिचौथोगुणठान ४। विरताविरतिश्रावक ५ प्रमत्तसंयती

॥ टीका ॥

यद्विशेष: तथा अविरतसम्यग्दृष्टिर्देशविरतोदेशविरत: श्रावकइत्यर्थ: प्रमत्तसंयत: किञ्चित्प्रमादवान् सर्वविरत: अप्रमत्तसंयत: सर्वप्रमादरहित: सएव नियट्टि इहक्षपकश्रेणिमुपशमश्रेणिंवा प्रतिपन्नोजीव: क्षीणदर्शनसप्तकउपशांतदर्शनसप्तकोवा निवृत्तिबादरउच्यते तत्रनिवृत्तिस्तद्गुणस्थानकं समकालप्रतिपन्नानां जीवानामध्यवसाय भेदतत्प्रधानोबादरो बादरसंपरायोनिवृत्तिबादर: अणियट्टिबायरेत्ति अनिवृत्तिबादर: सचकषायाष्टकक्षपणारम्भान्नपुंसकवेदोपशमनारम्भादारभ्य बादरलोभखंडं क्षपणोपशमनेयावद्भवतीति सुहुमसंपराएत्ति सूक्ष्म: संज्वलनलोभासंख्येयखण्डरूप: संपराय: कषायोयस्यससूक्ष्मसंपरायो लोभानुवेदकइत्यर्थोयंद्विविधाइत्याह उपशमकोवाउपशमश्रेणीप्रतिपन्नक्षपकोवाक्षपकश्रेणिप्रतिपन्न इतिदशमंजीवस्थानमिति तथा उपशांत: सर्वथानुदयावस्थो मोहो मोहनीयकर्मयस्यउपशांतमोह: उपशमवीतरागइत्यर्थोऽयंचोपशमश्रेणि समाप्तावंतर्मुहूर्तंभवति तत:प्रच्यवतएवेति तथाक्षीणो नि:सत्ताकीभूतोमोहोय

॥ मूल ॥

सम्मादिट्ठी विरयाविरए पमत्तसंजए अप्पमत्तसंजए निअट्टिअनियट्टिबायरे सुहुमसंपराय उवसमएवाखव

॥ भाषा ॥

कांइक प्रमादवंत ६ । अप्रमत्तसंयतसर्वप्रमादरहित ७ । आठमोठाणाथी क्षपकश्रेणि तथा उपशमश्रेणी जडतनुजीव अणंतानुबंधीया ४ । क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ । दर्शनमोहनी सम्यक्त १ मिथ्या २ मिश्र ३ एम ७ । दर्शनसप्तक्षयकरतो क्षपकश्रेणी आरूढकहो अने निवृत्ति बादर आठमूगुणठाणुंकह्यूं ८ नवमूं अनिवृत्ति बादरतिहां पहिलोकषायाष्टखपायव्यानंतर नपुंसकवेदोदयोपशमाव्यानंतर बादर लोभखंडखपावे केउपशमावे ९ । सूक्ष्मसंपराय दसमूं तिहांसूक्ष्मसंज्वलन लोभासंख्येय खंडरूपसंपराय कषायनो सूक्ष्मलोभनो वेदकछे जिहां सूक्ष्मसंपराय गुणठाणेठाणो जीव उपशमश्रेणी प्रतिपन्नहोय के क्षपकश्रेणी प्रतिपन्नहोय १० । इग्यारमूं उपसंतमोह सर्वथापि उपशांत अनुदयछे मोहनीयकर्म तिहां इग्यारमूं गुणठाणे अंतमुहूर्तरही कालकरतो अनुत्तर

॥ टीका ॥

स्यस तया अयवीतरागइत्यर्थोऽयमप्यंतर्मुहूर्त्तं एवेति तथासंयोगीकेवली मनःप्रभृत्यतिव्यापारवान् केवलज्ञानीति तथाअयोगीकवली निरुद्धमनःप्रभृतियोगः शै
लेशीगतोह्रस्वपंचाक्षरोद्गिरणमात्रंकालंयावदिति चतुर्दशंजीवस्थानमिति भरहेत्यादि भारतैरवत्योर्जीवे इहभरतमैरवतंचारोपितगुणको दंडाकारपनस्तयज्जी
वेभवतः तत्रभरतस्यहिमवतोऽर्वागनन्तराः प्रदेशाः श्रेणिजीवाः ऐरवतस्यचशिखरिणः परतोनंतरप्रदेशाश्रेणीति भरतैरावतजीवा चाउरंतचक्कवट्टिस्सत्ति च

॥ मूल ॥

एया उवसंतमोहेवा खीणमोहे संजोगीकेवली अरहेवयाउणजीवाउ चउद्दसचऊद्दसजोयणसहस्साइं चत्तारि
यएऊत्तरेजोयणसए छव्वएकूणवीसेत्ताएगेजोयणस्स आयामेणं प० एगमेगस्सणंरन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चउ

॥ भाषा ॥

शिमाने अवतरे अने पाछोपडेतो छट्ठेआवी पहिले एउपशमश्रेणीनो धणी जोक्षपकश्रेणी करतो दशमगुणठाणाथी इग्यारमोमूंकी बारमेवडेतेह ११। बार
मोखीणमोह सर्वथापि खीणछे मोहजिहांछिणयीतराग १२। तेरमो संयोगी केवली मनोप्रभृति योगव्यापारवंत केवलज्ञानी १३। चौदमो असंयोगी केव
ली मनप्रभृतियोगवर्जि जिहांरंध्याछे ह्रस्वपंचअक्षरकालमान १४ गुणठानकालमान मिच्छे१ सासण२ अविरय३ परभवियाउणसे सगुणठाणमिच्छस्सति
नेभंगछावलियाहोय सासणे १ तित्तीसयरचाउत्थ ४ पुव्वाणकोडिपणग ५ तेरसमं १३। लहुपंचक्खरचरमं १४ अंतहुसे सगुणठाणा १८ भरतऐरवत एहबिहुं
क्षेत्रना जीव तिहां हिमवंतपर्वतथको ओरहे पूर्वपश्चिमसमुद्रलगी लांबीभरजोवा प्रत्यंचाकारें अने ऐरवतक्षेत्रनाजीव शिखरीपर्वतथकी परहोश्रेणी जाणी
वो एहबेहुंजीव चौदचौदयोजन सहस्रनो चारसेएकोत्तरयोजन एकयोजनना ओगणीसहाइयाछभागआयाम लांबापणेकह्या एकएकने राजाने पूर्वादिक
त्रणिसमुद्र चउथोहिमवंत पर्वत एतलालगी भूमिना अंतभाग ४ छे। जिहांतेह भूमिनोधणी एहवो चक्रवर्ती तेहने १४ रत्नहोय पोतानी जातिमांहि जे

त्वा रोमाविभागा यस्यांसाचतुरंताभूमिः तत्रभवः स्वामितयेतिचातुरंतः सचासौचक्रवर्त्तीचेतिविग्रहः रत्नानिस्वजातीयमध्ये समुत्कर्षंयंतिवस्तूनीति यदाह ॥ टीका ।

रत्नंनिगद्यते तज्जातोयदुत्कृष्टमिति गाहावइत्तिगृहपतिः कोष्ठागारिकः पुरोहियत्ति पुरोहितः शांतिकर्मादिकारी वड्ढइत्ति वर्द्धकिरथादिनिर्मापयिता मणिः

पृथिवीपरिणामः काकिणीसुवर्णमयी अधिकरणीसंस्थानेति इहमप्ताद्यानिपचेंद्रियाणि शेषाण्येकेंद्रियाणीति श्रीकांतमित्यादीन्यष्टौविमानानांनामानीति

हस्सरयणा प० तं० इत्थीरयणे सेणावइरयणे गहावइरयणे पुरोहियरयणे वड्ढइरयणे आसरयणे हत्थिरयणे ॥ मूल ।

असिरयणे चक्करयणे छत्तरयणे चम्मरयणे मणिरयणे कागिणिरयणे जंबूद्दीवेणंदीवे चउद्दसमहानईओ पुव्वा

वरेणलवणसमुद्दं समुप्पंति तं० गंगा सिंधु रोहिआ रोहिअंसा हरिया हरिकंता सीआ सीओदा नरकंता

नारिकांता सुवन्नकूला रूप्पकुला रत्ता रत्तवई इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयायाणं नेरइआणं

उत्कृष्टवस्तु तेहनेरत्नकहियेतेकहेछे। स्त्रीरत्न १। सेनापतिरत्न २। गृहपतिरत्नतेकोठारी ३। पुरोहितशांतिक कर्मकारी ४। वार्द्धकीसूत्रधार ५। अश्व ॥ भाषा

घोडोरत्न ६। हस्तिरत्न ७। एहसातपंचद्रियरत्न। असिखड्गरत्न ८। दंडरत्न ९। चक्ररत्न १०। छत्ररत्न ११। चर्मरत्न १२। मणिरत्न ६ पृथिवीपरिणाम १३।

काकिणी सुवर्णमयी अहिरणसंठाणि ७ एह एकेन्द्रियरत्न चौद १४ कह्या। जंबूद्वीपनेविषेचौद महानदीजाणवी। पूर्वपश्चिम समुद्रेसमर्प्पे पहुंचेछे। पूर्वलव

णसमुद्रे ७ पश्चिमसमुद्रे ७ पहुंचे तेकहेछे। गंगा १। सिंधु २। रोहिता ३। रोहितंसा ४। हरिता ५। हरिकांता ६। सीता ७। सीतोदा ८। नरकांता

९। नारिकांता १०। सुवर्णकूला ११। रूप्यकूला १२। रक्ता १३। रक्तवती १४। एणीएरत्नप्रभा पहिली पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदोपल्योप

॥ मूल ॥

चऊद्दसपलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० अ
सुरकुमाराणं देवाणं अात्थेगइयाणं चऊद्दसपलिउवमाइ ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं
देवाणं चउद्दसपलिउ वमाइ ठिई प० लंतएकप्पेसुदेवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प०
महासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं चउद्दससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिकंतं सिरिमहि
अं सिरिसोमनसं लंतयं काविठं महिंदं महिंदकंतं महिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं
देवाणं उक्कोसेणं चऊद्दससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा चऊद्दसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंति
वा ऊससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवाणं चऊद्दसहिंवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइआभ

॥ भाषा ॥

म आउखोकह्यो पंचमीधूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चौदसागरोपम आऊखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो चौदपल्योपमआउ
खोकह्यो। सौधर्म ईशानदेवलोके केतलाएक देवतानो चउदपल्योपम आउखोकह्यो। लांतक देवलोके केतलाएक देवतानो चौदसागरोपम आउखोकह्यो
महाशुक्र सातमे देवलोके केतलाएक देवतानो जघन्यो चौदसागरोपम आउखोकह्यो छट्ठेदेवलोके जेहदेवता श्रीकांत १ श्रीमहातक २ श्रीसोमनस १ लां
तक ४ काविष्ठ ५ महेंद्र ६ महेंद्रकांत ७ महेन्द्रोत्तरावतंसक ८ एह आठविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्ठो चौदसागरोपम आउखोकह्यो। तेह
देवता चौदेअर्धमासे पखवाडे वणोस्वासले थोडोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवताने चौदवर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केएक भव्यजीव चौ

अवपंचदशस्थानके सगमेर्जिअविशिष्यते इत्यस्थितेर्वाकमतेमथाणि । तत्र परमाधर्मिभाधिकास संक्लिष्टपरिणामत्वा परमाधार्मिकाः असुरविशेषा येतिसृषु पृथिवीषु नारकान् कदर्थयंतीति तत्रांबित्यादिश्लोकद्वयं एतेषव्यापारभेदेन पंचदशभवंति तत्रअंबेत्ति यःपरमाधार्मिकदेवो नारकान् हंतिपातयति बध्ना ति नीत्वावारं२ खतलेविमुंचति सइत्यभिधीयते १ अंबरिसीचेवत्ति यस्तुनारकान्निहता कल्पनिकाभिः खंडशः कल्पयित्वा भ्राष्ट्रपाकयोग्यान् करोति सौबरूषीति २ सामेत्ति यस्तुरज्जुहस्तः प्रहारार्दितानधःशातनपतनादिकरोति वर्णतश्चश्यामइति ३ सबलेत्तियावरेत्ति शबलइतिचापरः परमाधार्मिकइ ति प्रक्रमः सचांत्रवसाहृदयकालेयकादीन्युत्पाटयति वर्णतश्चशबलः कर्बुरइत्यर्थः ४ रुद्दोवरुद्दोत्ति यःशक्तिकुन्तादिषुनारकनान् प्रोतयतिसरौद्रत्वाद्रौद्रइति ॥ टीका ॥

यसिद्धिश्रा जीवाजेचऊद्दसहिं जवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति वुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १४ ॥ पन्नरसपरमाहमीश्रा प० तं० ॥ श्रंबे श्रंबरिसीचेव सामसव लेत्तिश्रावरे रुद्दावरुद्दकालेश्र महाकालेत्तिश्रावरे श्रसिपत्तेधणूकुंभे वालुए वेश्ररणीत्तिय खरस्सरेमहाघोसे ॥ मूल ॥

दभवग्रहणे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये इति चौदमोठाणो सम्मतो ॥ १४ ॥ हिवे पनरनो अधिकार लिखियेछे पनरभेद परमाधर्मीक असुरदेव विशेष महाअधर्मी संक्लिष्ट परिणामनाधणी त्रिणिनरकलगे नारकीने वेदनानादेणहारकह्या तेकहेछे । जेपरमाधर्मी देव नारकीने हणेपाडे अंबर आकाशे उछाले तेअंबकहिये १ । हण्यानारकीने रापशस्त्रेकरि अनेक खंडकरीभावे पचिवायोग्यकरे तेअंबरीषकहिये २ । जेहना रकीनें हाथपगनें प्रहारेकरी मारीनेहेठापाडे तेहने श्यामकहिये वर्णथकोकाला तेश्याम ३ । कर्बुरअनेरा नारकीना हृदयाकालिजा उपाडेतेशबलक कहि ॥ भाषा

॥ टीका ॥

५ यस्तुतेषामंगोपांगानि भनक्ति सोत्यंतरौद्रत्वादुपरौद्रइति ६ कालेत्ति यःकंद्वादिषुपचतिवर्णतः कालश्चसकालः ७ महाकालेइतिचापरे परमाधार्मिक इति प्रक्रमः सचश्लक्ष्णमांसानि खण्डयित्वाखादयति वर्णतश्चमहाकालइति असिपत्तेत्ति असिः खड्गस्तदाकारपत्रवद्दनंविकुर्व्य यस्तत्समाश्रितनारकानसिपत्र पातनेन तिलशश्छिनत्तिसोऽसिपत्रः ८ धणुत्ति योधनुर्विमुक्तार्द्धचन्द्रादिबाणैः कर्णादीनां च्छेदनभेदनादिकरोतिसधनुरिति १० कुंभेत्तिय: कुंभादिषुतान् पचतिसकुंभः ११ वालुत्ति यः कदंबपुष्पाकारासुवज्राकारासुवा वैक्रियवालुकाकारासु तप्तमासुचणकानिवतान् पचतिसवालुकाइति १२ वेतरणीयत्ति वेत रणीत्तिचपरमाधार्मिकः सचपूयरुधिरत्रपुताम्रादिभिरतितापात्कलकलायमानैर्भृतां विरूपंतरणंप्रयोजनमस्यांते वेतरणीति यथार्थांनदींविकुर्वंस्तत्तारणेन कदर्थयतिनारकानिति १३ खरस्सरेति योवज्रकण्टकाकुलं शाल्मलीवृक्षं नारकमारोप्य खरस्वरं कुर्वंतंकुर्वन्वा कर्षतिसखरस्वरेति १४ महाघोसेत्ति योभी

॥ भाषा ।

ये ४ खड्गभालानेविषे नारकीनेपाडे तेरुद्रपणाथकी रुद्र ५। नारकीना आंगोपांग भाजिते अत्यंतरौद्र ६। नारकीने कडाहीमां घालीनें पचावे तेकाल ७। महाकाल अपर अनेरो तेहनारकीना सूक्ष्ममासमां खंडकरीखाय वर्णकरी पिणमहाकाल ८ शाल्मलीवृक्ष हेठीं नारकीने बेसारी तेहनापत्र असिखड्गाकारे विकुर्वी तेह असिपत्रने पाडे वेकरी तिलतिलमात्र छेदेते असिपत्र परमाधर्मी ९। तेहना धनुषथकी अर्द्धचंद्रबाण तेणेकरी नारकीना कर्णनासादिकने छेदे भेदे तेधनुषनाम १०। कुंभत्ति कुंभीमांहि तेहनारकीने पचावे तेकुंभ ११। कदंबपुष्पाकारें वैक्रिय तातीवेलूकरी तेमांहि भाटीनाचणानेपरी पचावे तेवा लुक १२। वैतरणीनदी विकुर्वी पूतिरुधिरतरूंतांबो महातप्त कलकलायमानेभरी तेमांहि नारकीने बोलिकदर्थे तेहवैतरणीनाम १३। खरस्वरइति वज्रम य कांटासहित शाल्मलीवृक्ष विकुर्वी तेह उपरिनारकीने चढावीनेताणे जिमकांटा उपरि लूगडूंनाखीने तांणे तेखरस्वर१४ महाघोषेति वीहता नासता

तयत् पलायमानान् नारकान् पशुन्‌इववाटकेषु महापाप कुर्वाचकणाद्दसमहावाविपइति २३ इमत्वपन्नरसाहिय ...

दश व्याता: कथिताजिनैरिति ॥ ध्रुवराहुणमित्यादि द्विविधोराहुः पर्वराहुर्ध्रुवराहुश्च तत्र: पर्वणिपौर्णमास्याममावास्यायांवा चन्द्रादित्ययोरुपरागंकरोति

सपर्वराहु र्यस्तुचन्द्रस्यसदैवसन्निहित: संचरति सध्रुवराहुः आहच । किण्हंराहुविमाणं निच्चंचदेणहोइअविरहियं । चउरंगुलमप्पत्तं हिठ्ठाचन्दस्सतंचरइत्ति ततो

ऽसौध्रुवराहुः णमित्यलंकारे बहुलपक्षस्यप्रतीत्यस्य पाडिवयन्तिप्रतिपदं प्रथमतिथिमादौकृत्वेतिवाक्यशेषः पन्नदशभागंपंचदशभागेनेति वीप्सायांद्विर्वचनादि

एतेपन्नरसाहिज्जा णेमीणंअरहा पन्नरसधणूइंउड्ढं उच्चत्तेणंहोत्था णिच्चराहूणं बहुलपरकस्सपडिवए पन्नरसति ॥ मूल ॥

भागेणं चंदलेसआवरेत्ताणं चिठति तं० पढमाएपढमंभागं बीआएदुभागं तइयाएतिभागं चउत्थीएचउभागं

पंचमीएपंचभागं छठीएछभागं अठमीएअठभागं नवमीएनवभागं दसमीएदसभागं एक्कारसीए एक्कारसमं

नारकोने पशुनीपरि इवाडेघालीमेले पोकारकरे तानेहंणीमेले तेमहापाप परमाधर्मी एते पनरजातीना परमाधर्मीकह्या १५। नेमिनाथ अरिहंतएकवीस ॥ भाषा ।

मा पनरधनुषऊंचा ऊंचपणेकह्या । राहुना द्विहिभेद पर्वराहु ध्रुवराहु पर्वराहु पर्वविशेषे पौर्णमासीएं अमावास्याएं चंद्रादित्यनेआवरे ध्रुवराहु अंधारापख

नीराबीएं चंद्रमाने पनरमभागे चंद्रमानो लेश्यादीप्ति आवरीने आछादीने तिष्ठरहे तेकहेछे । एक पडिवामांडि प्रतिदिनें राहुचंद्रमानी एकएककला आ

छादे पहिली पडिवाहोय १ । बीजेदिने बीजोभाग २ । त्रीजेदिने त्रीजोभाग ३ । चउथें चौथोभाग ४ । पंचमीए पांचमोभाग ५ । छठेछठोभाग ६ । सातमे

सातमोभाग ७ । आठमेदिने आठमोभाग ८ । नवमीए नवभाग ९ । दशमीए दशमभाग १० । एकादशीए इग्यारभाग ११ । बारसे बारभाग १२ । तेरसे

॥ टीका ॥

यथापदं पर्दिनगच्छतीत्यादिषु प्रतिदिनंपञ्चदश भागमितिभाव: चन्द्रस्यप्रतीतस्यलेश्यामिति लेश्यादीप्तिस्तत्कारणत्वात् मण्डलंलेश्यातामावृत्याच्छाद्यतिष्ठति एतदेवदर्शयन्नाह तद्यथेत्यादि पढमाइत्ति प्रथमायांतिथ्यां प्रथमंभागं पंचदशांशलक्षणं चंद्रलेश्यायाआवृत्यतिष्ठतीति प्रक्रम: अनेनक्रमेणयावत् पन्नरसेसुत्ति पञ्चदशसुदिनेषु पञ्चदशंभागमावृत्यतिष्ठति तंचेवत्ति तमेवपञ्चदशभागं शुक्लपक्षस्य प्रतिपदादिषु चंद्रलेश्यायाउपदर्शयन् पंचदशभागत: स्वयमपसरणत: प्रकटयन् २ तिष्ठतिध्रुवराहुरिति इहचायंभावार्थ: षोडशभागीकृतस्यचंद्रस्य षोडशभागोऽवस्थितएवास्ते येचान्येभागास्तद्राहु: प्रतिदिनमेकैकंभागं कृष्णपक्षे आवृणोतिशुक्लपक्षेतु विमुंचतीति उक्तंचज्योतिष्करण्डके सोलसभागेकाऊण उलुवइहायएत्थपन्नरसं। तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपरिवढइजोण्हंति। ननुचन्द्रविमा

॥ मूल ॥

बारसमीए बारमन्नागं तेरसीए तेरसन्नागं चउद्दसीए चउद्दसन्नागं पन्नरसेसु पन्नरसन्नागं सुक्कपक्खस्स उवद सेमाणे चिठत्ति तं० पढमाएपढमंन्नागं जावपन्नरसेसु पन्नरसन्नागं छणक्खत्ता पन्नरस मुहुत्तसंजुत्ता प० तं० सतन्निसय न्नरणि अद्दा अस्सलेसा साइ तहाजेठाय एतेछणक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता चेत्तासोएसुणं

॥ भाषा ॥

तरमोभाग १३। चौदसीए चौदभाग १४। पनरमेदिने पनरमी कलाढाके १५। तेहीज चन्द्रनो पनरमोभाग शुक्लपक्षे राहुमूंकतो चंद्रनेप्रकटतो तिष्ठेरहे शुक्लपक्षने पहिले दिने पहिलो एकभाग बीजेदिनेबीजोभाग एमयावत् पनरमेदिने पनरमोभागमूंके। छनक्षत्र पनरमूहूर्तलगे चंद्रमा साथे चंद्रसंयुक्तथका रहे तेह तुलासंक्रांति जाणिवो तेकहेछे। शतभिषा १। भरणी २। आर्द्रा ३। आश्लेषा ४। स्वाती ५। तथाज्येष्ठा ६। एह छनक्षत्र पनरमूहूर्त संयुक्तकहीये १५ मुहूर्तलगे चंद्रमासाथेचाले। चैत्रआसो मसवाडे पनरमुहूर्तनो दिवस ३० घडीनोहुओ। तेणेमसवाडे पनरमुहूर्तनी ३० घडीनीरात्रीहोय। विषा

नस्यपंचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् राहुविमानस्य ग्रहविमानत्वेनार्द्धयोजनप्रमाणत्वात्कथंपंचदशैर्दिनैश्चंद्रविमानस्य मण्डलेनैतरस्य च लघुत्वेनसर्वा ॥ टीका ॥
नस्यपंचैकषष्ठिभागन्यूनयोजनप्रमाणत्वात् ...
वरणंस्यादित्यपोच्यते। यदिदंग्रहविमानोऽर्द्धयोजनमिति प्रमाणंतत्प्रायिकमिति । राहोर्ग्रहस्ययोजनप्रमाणमपिविमानंसभाव्यते लघीयसोपिवाराहुवि
मानस्यमहतातमिस्ररश्मिजालेन तस्यावरणाददोषइति तथा षण्नक्षत्राणि पंचदशमुहूर्त्तानि यावच्चंद्रेण संयोगोयेषांतानि पंचदशमुहूर्त्तसंयोगानि तद्य
था सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेसयाइजेट्ठाय। एएछ्णक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजुत्ता। संयुक्तं संयोगइति तथाचेत्तासोएसुमासेसुत्तिस्थूलन्यायमाश्रित्यचैत्रेऽश्व
युजिचमासे पंचदशमुहूर्त्तो दिवसोभवति रात्रिश्च नियतस्तु मेषसंक्रांतिदिनेचैवदृष्टव्यमिति पओगेत्ति प्रयोजनंप्रयोगः परिस्पंदआत्मनः क्रियापरिणामोव्यापा
रइत्यर्थः अथवा प्रकर्षेणयुज्यते संबध्यतेऽनेनक्रियासुपरिणामैरिहात्मेतिप्रयोगः तत्रसत्यार्थालोचननिबंधनंमनः सत्यमन स्तस्यप्रयोगोव्यापारः स

॥ मूल ॥

मासेसुपन्नरसमुहुत्ते दिवसोभवति सइच्छपन्नरसमुहुत्तारांईभवति विज्जाअणुप्पवायस्सणं पुव्वस्सपन्नरसव
त्थू प० मणूसाणंपन्नरसविहेपओगे प० तं० सच्चमणपओगे मोसमणपओगे सच्चमोसपओगे असच्चामोसमणप

॥ भाषा ॥

अनुप्रवाद दसमो पूर्वतेहनी १५ वस्तुअध्ययन विशेषकह्यो। मनुष्यने पनरप्रकारे प्रयोगकहतांयोगकह्या। तेकहेछे। सत्यमनोयोग मननोसांचोव्यापार १।
एमज मृषामननोव्यापार २। सत्यमृषामनोयोगमिश्र ३। असत्यअमृषा मनोयोग ४। एमज व्यापार वचनयोग सत्यवचनयोग ५। मृषावचनयोग ६।
मिश्रवचनयोग ७ असत्यामृषावचनयोग ८ कायानासातयोग औदारिककाययोग पर्याप्तावस्थाहुई ९ औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तावस्थाहुई उत्पत्ति
समय औदारिकपुद्गल अने कार्मणपुद्गलमिश्रीभावे अंतर्मुहूर्तलगे रहेतेभाटे औदारिक मिश्रकाययोग १०। एमज वैक्रियकाययोग ११। वैक्रियमिश्रकाय

त्यमनःप्रयोगः एवंशेषेष्वपि । नवरमौदारिकशरीरकायप्रयोग औदारिकशरीरमेव पुद्गलस्कंधसमुदायत्वेनोपचीयमानत्वात् कायस्तस्यप्रयोग इतिविग्रहः अयंचपर्याप्तकस्यैव वेदितव्यः तथौदारिकमिश्रकायप्रयोगः अयंचापर्याप्तकस्येति इहचोत्पत्तिमाश्रित्यौदारिकस्य प्रारब्धस्य प्रधानत्वादौदारिको वैक्रियेणमिश्रोयावद्वैक्रियपर्याप्त्यानपर्याप्तिंगच्छति एवमाहारकेण चौदारिकस्यमिश्रतावसेयेति तथा वैक्रियपर्याप्तकस्य तथा वैक्रियमिश्रशरीरकायप्रयोगादपर्याप्तकस्य ॥ टीका

उगे सच्चवइपउगे मोसवइपउगे सच्चमोसवइपउगे असच्चामोसवइपउगे उरालियसरीरकायपउगे उरालिअमीससरीरकायपउगे वेउव्वियसरीरकायपउगे वेउव्विअमीससरीरकायपउगे आहारयसरीरकायप्पउगे आहा ॥ मूल ॥

योग १२ । आहारक काययोग १३ । आहारकमिश्र काययोग १४ कार्मणकाययोग १५ । जिवारें केवली ८ समयक केवलसमुद्घातकरे केवलीनेत्रीजे चौथे पांचमेकार्मणकायहुया । एणीए रत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमी धूमप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो पनरेंसागरोपमआउखोकह्यो । असुरकुमारदेवताने केतलाएकनो पनरपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवनो पनरेपल्योपम आउखोकह्यो । महाशुक्रसातमे देवलोके केतलाएकदेवनो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । सातमेदेवलोकें जेदेवतानंद १ । सुनंद २ । नंदावर्त ३ । नंदप्रभ ४ । नंदकांत ५ । नंदवर्ण ६ । नंदलेश्य ७ । नंदध्वज ८ । नंदमित्र १० । नंदकूट ११ । नंदोत्तरावतंसक १२ । एहबारविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवता ॥ भाषा ॥

देवस्य नारकस्यवा कर्मणि नैवलब्धि वैक्रियपरित्यागे वा औदारिक प्रवेशाहारायामौदारिका पादानायप्रवृत्ते वैक्रियाप्रधान्यादौ दारिकेणापि मिश्रतेत्येवंमाहारकशरीरकाय प्रयोगस्तदनिनिवृत्तौ सत्यां तस्यैवप्रधानत्वा त्तथाहारकमिश्रशरीरकायप्रयोगः औदारिकेणसह आहारकपरित्यागे नेतरग्रहणायोद्यतस्य एतदुक्तं भवति यदाहारकशरीरी भूत्वाकृतकार्यः पुनरप्यौदारिकंगृह्णाति तदाहारकस्य प्रधानत्वा दौदारिकप्रवेशं प्रतिव्यापार भावाद्यावत् सर्वथैनंपरित्य जत्याहारकं तावदौदारिकेण सहमिश्रतेति आहमतत्त्तेनसर्वथामुक्तं पूर्वनिर्वर्त्तितं तिष्ठत्येवंतत्कायं गृह्णाति सत्यं तथाप्यौदारिकशरीरोपादानार्थं प्रवृत्तइतिगृ ह्णात्येवं तथाकर्मणःशरीरकायप्रयोगे विग्रहेसमुद्घातगतस्यच केवलिनस्तृतीय चतुर्थ पंचसमयेषु भवतीति ॥ १५ ॥ अथ षोडशस्थान मुच्यते सुगमंचेदं नवरं ॥ टीका ॥

रयमीसयसरीरकायप्पउगे कम्मयसरीरकायपउगे इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरस पलिउवमाइं ठिई प० पंचमीएपुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिउवमाइं ठिई प० महासुक्केकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा णंदं सुणदं णंदावत्तं णंदप्पभं णंदकंतं णंदवण्णं णंदलेसं णंदज्झयं णंदसिंगं णंदसिट्ठं णंदकूडं णंदुत्तर ॥ मूल ॥

ने उत्कृष्टो पनरेसागरोपम आउखोकह्यो । तेदेवतापनरे पखवाडे सासोसासवर्णाले ऊंचोसासले नीचोसासमूंके तेहदेवतानो पनरवर्षसहस्रे आहा रनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव पनरभवनेअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति पनरमूंठाणूंसम्पूर्त्तं ॥ १५ ॥ ॥ भाषा ॥

गाथाषोडशकादीनि स्थितिसूत्रेभ्यआरालमसूत्राणि तत्रसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधे षोडशाध्ययनानि तेषांच गाथाभिधानं षोडशमिति गाथा भिधान म ध्ययनं षोडशयेषांतानि गाथाषोडशकानि तत्रममेयत्ति नास्तिकादि समय प्रतिपादपरमध्ययनं समयएवोच्यते वैतालीयछंदोजातिवद्धं वैतालीयमेवमेषा

वडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवापन्नर सएहं श्रद्धमासाणं आणमंतिवापाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं पन्नरसहिं वाससह स्सेहिं श्राहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धियाजीवा जेपन्नरसहिं नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १५ ॥ सोलसयगाहासोलसगा प० तं० । समए वेयालिये उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरएधम्मे

हिवेसोलमो अधिकार लिखियेछे । सूगडांगने पहिलेखंदेसोल अध्ययन मांहि गाथा एहवोनाम सोलमोछे । तेकहेछे । समएति नास्तिकादिमतनो कथक प्रथम अध्ययन समयकहिये १ । वेतालिकछंदेबांध्यातेवैतालिय २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ नरकविभक्ति ५ । वीरस्तव ६ । कुशीलपरिभाषा ७ वीर्याध्ययन ८ । धर्माध्ययन ९ । समाधिअध्ययन १० । मार्गाध्ययन ११ । त्रिणिसय त्रिसठीपाखंडीनोमत जिहांतेसमोसरण १२ । सत्यभाषकहीते यथातथा नाम १३ । ग्रंथतेअध्ययन १४ । ग्रंथनोकथक यमकछंदेबांध्यातेयमक १५ । पूर्वोक्तपनर अध्ययननो जिहांभावपामीये तेगाथानाम १६ । सोलकषायकह्याभग वंते कषकहियेसंसार तेहनो आयलाभहोय जेहथी तेकषायकह्या तेकहेछे । अनंतानुबंधी क्रोध जेह अनंतांभवनो अनुबंधकरे जावज्जीवरहे सम्यक्त्वभाविवा

र्या यथाभिधेयमामामि समोसरणेत्ति समवसरणं वयाणां षव्ध धिकानां प्रवादिश्ततामां मतपिंडनरूपं ष्प्राहातहिएत्ति यथावस्तु तथाप्रतिपाद्यते तचतथ्या तथिका ग्रंथाभिधायकंग्रथ: जमइत्ति यमकीयं यमकनिवद्धंसूत्रं गाहंतिप्राक्तनपंचदशाध्ययनार्थस्य गानाद्गाथोगाथावातत्प्रतिभूतत्वादिति मेरुनामसूत्रे गाथा ॥ टीका ॥

समाही मग्गे समोसरणे श्राहातहिए गंथे जमइए गाहा सोलसकसाया प० तं० श्रणंताणुवंधीकोहे श्रणंताणुवंधीमाणे श्रणंताणुवंधीमाया श्रणंताणुवंधीलोभे श्रपच्चखाणकसाएकोहे श्रपच्चखाणकसाएमाणे श्रपच्चखाणकसाएमाया श्रपच्चखाणकसाएलोभे पच्चखाणावरणेकोहे पच्चखाणावरणेमाणे पच्चखाणावरणामाया पच्चखाणावरणेलोभे संजलणेकोहे संजलणेमाणे संजलणेमाया संजलणेलोभे मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनामधेया प० तं० मंदरे मेरू मणोरमे सुदंसणे सयंपभेय गिरिराया रयणुच्चए पियदंसणे मज्झलोगस्सनाभीय श्र ॥ मूल ॥

नदे १ एम श्रनंतानुबंधीमान २। श्रनंतानुबंधीमाया २। श्रनंतानुबंधीलोभ ४। एमज श्रप्रत्याख्यानक्रोध श्रणुव्रतश्रावीवा नदे वरसेलगेरहे १। श्रप्रत्याख्यानमान २। श्रप्रत्याख्यानमाया ३। श्रप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यान वरणक्रोधसर्वविरती यतीधर्मने श्राविवानदे चारमासलगेरहे १। एमज प्रत्याख्यानमान २। प्रत्याख्यानमाया ३। प्रत्याख्यानलोभ ४। संज्वलनक्रोध यथाख्यातचारित्र श्राविवानदेपनरेदिनरहे १ एम संज्वलनमान २ संज्वलनमाया ३ संज्वलनलोभ ४ सर्वमिली १६ कषायथया। मेरुपर्वतनासोलह नामकह्या तेकहेछे। मंदर १। मेरु २। मनोरम ३। सुदंसण ४। स्वयंप्रभ ५। गिरिराज ६। रत्नोचय ७। प्रियदर्शन ८। मध्यम लोकनीनाभि १०। अर्थ ११। सूर्यावर्त सूर्यमेरुनेपासेप्रदचिणादे १२। सूर्यावरण रात्रे सूर्यने श्रावरेश्राछादे १३। ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

ल्लोकस्य मज्झेलोगस्सनाभीयत्ति लोकमध्ये लोकनाभिरित्यर्थः उत्तरयति भरतादीना मुत्तरदिग् वर्त्तित्वाद्यदाह सव्वेसिंउत्तरोमेरुत्ति दिसाईयत्ति दिशामादि रित्यर्थः वडिंसेइयत्ति अवतंसः शेखरः सद्दवावतंस इतिचेति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणांमध्ये आदेयस्येत्यर्थः तथाआत्मप्रवादपूर्वस्य सप्तमस्य तथाचमरब ल्योर्दक्षिणोत्तरयो रसुरकुमारराजयोः उवारियालेणत्ति चमरचंचावली चंचाभिधान राजधान्योर्मध्योद्दताऽदतरत्नार्थ्ह पीठरूपेऽवतारिकल्पयने षोडशयोज नसहस्राण्यायामविष्कंभाभ्यांवृत्तत्वात्तयोरिति तथालवणसमुद्रे मध्यमेषुदशसु सहस्रेषु नगरप्राकार इवजलमूर्द्ध गतंतस्यचोत्सेधवृद्धिः षोडशसहस्राण्यऽतउ च्यते लवणसमुद्रः षोडशयोजनसहस्राण्युत्सेधपरिवृद्धा प्रज्ञप्तइति आवर्त्तादीन्येकादश विमाननामानि ॥ १६ ॥ अथसप्तदशस्थानकं तच्चव्यक्तं

॥ मूल ॥

स्सेत्र्प सूरिआवत्ते सूरिआवरणेतिआ उत्तरेय दिसाइआ वडिंसेइआ सोलसमे पासस्सणंअरहतो पुरिसादाणी यस्स सोलससमणसाहस्सीउ उक्कोसीआणंसंपदाहोत्था आयप्पवायस्सणं पुव्वस्ससोलसवत्थू प० चमरबली णं उवारियालेणेसोलसजोयणसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० लवणेणंसमुद्देसोलसजोयण सहस्साइं उस्से

॥ भाषा ॥

भरतादिकक्षेत्रथकी उत्तरदिशाछे तेमाटे उत्तरकह्यो १४। दिशानी आदिछेजेहथकी तेदिगादि १५। अवतंस सर्वपर्वतनो मुगटरूपछे एम १६ नामहु या। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषमांहि प्रधान आदानीय महासोभागी तेहनेसोले श्रमण सहस्र उत्कृष्टोसाधुनी संपदाहुई जाणवी। आत्मप्रवादनुंपूर्व तेहना सोलह वस्तुकह्या। भगवंते अधिकार विशेषेकह्या। चमर बलीचंचावली चंचानाम राजधानीने मध्यभागे उपकारीलयन तेहअवासनो पीठीका सोलसहस्र योजनलांबपणे पिहुलपणेकह्या। लवणसमुद्रथकी जगतीथकी पंचाणूं सहस्रयोजनेईहांतिहां मध्यभागेदशमाले दससहस्र योजननेविषे नगरना गढनीपरि

हपरिवड्डीए प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० पंच ॥ मूल ॥
मीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया
णं सोलसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिउवमाइंठिई प०
जेमहासुक्केकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा आवत्तं विआवत्तं नंदिआव
त्तं महाणंदियावत्तं अंकुसं पलंबं भद्दं सुभद्दं महाभद्दं सव्वतभद्दं भदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना
तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससारोवमाइं ठिई प० तेणंदेवासोलसहिं अद्धमासाणं आणमंतिवा पाण
मंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइयाभ

पाणी ऊंचोगयोछे। तेहनो ऊंचपणानीवृद्धि सोलसहस्र योजननीकही। एहरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। पां ॥ भाषा ॥
चमी पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो सोलेसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमार देवनो केतला एकनोसोलेपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशानदे
वलोके केतलाएकदेवनो सोलेपल्योपम आउखोकह्यो। महाशुक्रदेवलोके केतलाएक देवनोसोलेसागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता आवर्त १। विदावर्त २
नंदिकावर्त ३। महानंदिकावर्त ४। अंकुश ५। प्रलंब ६। भद्र ७। सुभद्र ८। महाभद्र ९। सर्वतोभद्र १०। भद्रोत्तरावतंसक ११। एह इग्यारविमाने देव
तापणेउपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टो सोलेसागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता सोलपखवाडेस्वासोस्वासलेले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेदे

॥ टीका ॥

नवरमिहस्थितिसूत्रेभ्योऽर्वागद्रष्ट तथा अजीवकायासंयमो विकटसुवर्णबहुमूल्यवस्त्रपात्रे पुस्तकादिग्रहणं प्रेक्षायामसंयमोयः सतथा सचक्षुनोपकरणादीनि

॥ मूल ॥

घसिठ्ठियाजीवा जेसोलसहिं नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १६ ॥ सत्तरसविहेअसंजमे प० तं० । पुढविकायअसंजमे आउकायअसंजमे तेउकायअसंजमे वाउकायअसंजमे वणस्सइकायअसंजमे वेइंदियअसंजमे तेइंदियअसंजमे चउरिंदियअसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायअसंजमे पेहाअसंजमे उपेहाअसंजमे अवहटूअसंजमे अप्प

॥ भाषा ॥

बताओ सोलसहस्रवर्षेआहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव सोलभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये ॥ इतिसोलसमंठाणं सम्मत्तम् ॥ १६ ॥ हिवे सतरमो अधिकारलिखियेछे । सतरप्रकारे असंजमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो पांचवोसंघटवो हणवोते पृथिवीकाय असंजम १ । एम अपकाय पाणीतेहनो असंजमते अपकाय असंजम २ । एम तेजकाय असंजम ३ । वायुकाय असंजम ४ । वनस्पतिकाय असंयम ५ । वेइन्द्रियअसंयम ६ । तेइन्द्रियअसंयम ७ । चउरिंदियअसंयम ८ । पचेंद्रियअसंयम ९ । वस्त्रप्रात्र अणपुंजोलेवो मेलवो तेअजीवकाय असंयम १० । अथवा बहुमूल्यवस्त्रपुस्तकनोलेवो ११ । उपकरणनोअविधि पडिलेहवो तेप्रेक्षासंयम १२ । असंयमयोगनेविषे व्यापारवो संयमयोगनेविषे अव्यापारवो तेउपेक्षा असंयम १३ । अवधिए परिठवणोमात्रादिकनो अवधिएपडिलेहवो तेअप्रमार्जन असंयम १४ । मननोभूंडोव्यापार तेमनअसंयम १५ । एमवचननो

॥ टीका ॥

मप्रत्युपेक्षणमविधि प्रत्युपेक्षणंवा उपेक्षाऽसंयमयोगेष्वव्यापारणं संयमयोगेष्वव्यापारणंवा तथाऽपहृत्यसंयमः अविधिनोच्चारादीनां परिष्ठापनतायः तथाप्रप्र-
मार्जनाऽसंयमः पात्रादेरप्रमार्जनयाचेति मनोवाक्कायाऽसंयमास्त्वेतामकुशलानामुदीरणानीति असंयमे विपरीतः संयमः वेलंधरानुवेलंधरावासपर्वतस्व

॥ मूल ॥

सत्तरसविहेसंजमे प० तं० पुढवीकायसंजमे
आउकायसंजमे तेउकायसंजमे वाउकायसंजमे वणस्सइकायसंजमे वेइंदिअसंजमे तेइंदिअसंजमे चउरिंदि
यसंजमे पंचिंदिअसंजमे अजीवकायसंजमे पेहासंजमे उपेहासंजमे अवहट्टुसंजमे अप्पमज्जणासंजमे मण
संजमे वइसंजमे कायसंजमे माणुसुत्तरेणंपव्वए सत्तरसएक्कवीसजोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणंवेलं
धरअणुवेलंधरणागराईणं आवसपव्वया सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० लवणेणंसमुद्दे

मज्जणाअसंजमे मणअसंजमे वइअसंजमे कायअसंजमे

॥ भाषा ॥

असंयम १६ । कायानोअसंयम १७ ॥ सतरप्रकारेसंयमकह्यो तेकहेछे । पृथिवीकायनो राखवो तेपृथिवीकायसंजय १ । एम अपकायसंजय २ । तेजकायस
जम ३ । वायुकायसंजम ४ । वनस्पतिकाय संजम ५ । वेइन्द्रियसंजम ६ । तेइन्द्रियसंजम ७ । चउरिंदियसंजम ८ । पचेंद्रियसंजम ९ । वस्त्रपात्रपुंजीन
लीजे तेअजीवसंजस १० । प्रेक्षासंजम ११ । उपेक्षासंजम १२ । अपहृत्यासंजम १३ । अप्रमार्जनसंजम १४ । मनसंजम १५ । वयणसंजम १६ । कायसंज
म १७ ॥ जंबूद्वीपआखो धातकीखंडआखो पुष्करार्द्धअर्द्धो एमअढाईद्वीप रूपनगरने चउपखेरगढरूप माणुषोत्तरपर्वतछे तेहसतरसे एकवीसयोजन ऊंचो
छेपणकह्यो, सगलेवेलंधर अनुवेलंधर देवतानागकुमार भवनपति तेहना आवास जगतीथकी चिहुंपासेछे बातीससहस्र योजनलवणसमुद्र मांहिजई

॥ टीका ॥

रूपं चेवसमासागाथाभिरवगंतव्यमेताः। दसजोयणसहस्सा लवणसिहाचक्कवालउरुंदा। सोलससहस्साउच्चा सहस्समेगंतुउगाढा। देसूणमट्ठजोयण लवणसिहोवरिदगंतुकालदुगे। अतिरेगं२ परिवड्ढइ हायएवावि। अब्भंतरियवेलं धारंतिलवणोदहिस्सनागाणं। बायालीयसहस्सा औसत्तरिसहस्सावाहरियं। सट्ठीनागसहस्सा धरंतिअग्गोदयसमुद्दस्स। वेलंधरआवासा लवणेयचउद्दिसिंचउरो। पुव्वादि अणुक्कमसो गोथुभ १ दगभास २ संख ३ दगसीम ४। गोथुभ १ सिवए २ संखे ३ मणोसिले ४ नागरायाणो। अणुवेलंधरवासा लवणेविदिसासुसंठियाचउरो। कक्कोडे १ विज्जुप्पभे २ केलासरुणप्पभेचेव। कक्कोडयकद्दमए केलसरुणप्पभेय नागरायाणो। बायालीससहस्से गंतुंउवहिंमिसव्वेवि। चत्तारिजोयणसए तीसेकोसंचउग्गयाभूमी। सत्तरसजोयणसए इगवीसेऊसियासव्वे

॥ मूल ॥

सत्तरस जोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाउ भूमिभागाउ

॥ भाषा ॥

तिहांवेलंधरदेवताना आवासपर्वतछेगोथुभ १। एम दक्षिणादिकेदगभास २। संख ३। दगसीम ४। तेहनाधणीगोथूभ १ शिव २। भद्र ३। मणसिल अनुवेलंधरनापर्वतविदिशिएं ईशानकोणेंकर्कोट १। एमजअग्निकोणेंविद्युतप्रभ २। केलाश ३। अरुणप्रभ ४। एहनाधणीनागराजकर्कोट १ कर्दम २ केलास ३ अरुणप्रभ ४ नाम लवणसमुद्रे मध्यभागे दशसहस्रयोजन चक्रवालआटलाकारे समपाणीछे तेहउपरि सोलसहस्रछगाउ जघापाछे तिहां दिनप्रति एवेटकवेलवधे तेहनेधरेराखे तेवेलंधर वेलमांहिलेपासे जंबूद्वीपभणी ४२ सहस्रबाहिरी धातकीखंडभणी ७२ सहस्रदेवता छसहस्रशिखें वाटेकरी पाणीबांधता उपराठांमारेछे। वेलंधरअनुवेलंधरनागराजना आवासपर्वत एकवीसयोजन अधिकसतरसेयोजन ऊंचाऊंचपणेकह्या। जगतीथकी पंचाणूं योजनसहस्रजइये समुद्रमांहि तिहां दससहस्रजोजन चक्रवालसमुद्रपाणीछे तिहांथकी सोलसहस्रयोजन शिखारूपपाणी ऊंचाआकाशेंगयाछे तोसमुद्रपाता

॥ टीका ॥

चारिणांति जंघाचारणानां विद्याचारणानांच तिर्यग् रुचकादि द्वीपगमनायेति तिगिंछिकूट उत्पातपर्वतो यत्रागत्य मनुष्यलोकागमनायोत्पतति सचेतो ऽसंख्याततमे ऽरुणोदयसमुद्रे दक्षिणतोद्विचत्वारिंशतं योजनसहस्राण्यतिक्रम्यभवति रुचकेंद्रोत्पातपर्वतस्त्वरुणोदयसमुद्रएव उत्तरत्यएवमेवभवतीति आ

॥ मूल ॥

सातरेगाइं सत्तरसजोयण सहस्साइं उद्धंउप्पातित्ता ततोपच्छा चारणाणं तिरिअगती यावत्तती चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररत्नो तिगिंछिकूडेउप्पायपव्वए सत्तरसएक्कवीसाइं जोयणसयाइं उद्धंउच्चत्तेणं प० बलिस्सणं असुरिंदस्सअगिंदे उप्पायपव्वए सत्तरसजोयणसयाइं सातिरेगाइं उद्धंउच्चत्तेणं प० सत्तरसविहेमरणे प०

॥ भाषा ॥

समांहिजंडो एकयोजनसहस्रऊंचो सोलहसहस्रसव्वगोणंसर्वमिलो १७ सहस्रयोजनसमुद्रकह्यो। एणीएरत्नप्रभा पृथिवोनेविषे घणोरमणीकसमोभूमिभागछे तेहथकोभाभेरोवीकोसअधिकसत्तरयोजन सहस्रलगेऊंचोउत्पति उडोनेएंतलेलवणसमुद्रनो शिखालगेऊंचाउत्पातितियारेपछे जंघाचारण विद्याचारणनी तिरछोगति पर्वततले तिरछिद्वीपे रुचिकवरद्वीपे एमनंदीश्वरद्वीपे जीवप्रतिमावांदिवाजाइ चमरेंद्रनो असुरकुमारदेवतानो इन्द्रतेहनो असुरनाजानो तिगिछकूट। उत्पातपर्वत जिहां चमरेंद्रादिकपातालथकी आवीनेमनुष्यलोकेआविवाभणीउत्पते उडेतेमाटे उत्पातपर्वतकहिये। तेअसंख्यातमे अरुणसमुद्रथको दक्षिणदिसें ४२ सहस्रयोजनजईये तिहां पांमिएते तिगिछकूट। १७२१ योजन ऊंचोऊंचपणेकह्यो। बलींद्रनो असुरेंद्रनो वलीरुचकेंद्रनो उत्पातपर्वत सतरसे एकवीस ऊंचोऊंचपणे तेद्वीपथि अरुणसमुद्र असंख्यातमो तेहमांहि उत्तरदिसे ४२ सहस्रयोजन जइयेतिहांरुचकेंद्र उत्पातपर्वतपामियेकह्यो। सतरप्रकारेमरणकह्यो तेकहेछे। अणअणविंतिएं आउखनोदल उछाथायते आवीचिमरण १। अवधिमर्यादातेणेकरी मरवोते अवधिमरण जिमनारकीनरका

॥ टीका ॥

वीईमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयश्रायुर्दलिकविच्युतिलक्षणाश्रयस्था यस्मिं स्तदावीचि अथयावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीचो दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे
वीईमरणेति आसमंताद्वीचयइव वीचयश्रायुर्दलिकविच्युतिलक्षणाश्रयस्था यस्मिं स्तदावीचि अथयावीचिर्विच्छेद स्तदभावादवीचो दीर्घत्वंतुप्राकृतत्वात्तदे
वंभूतंमरणंऽवीचिमरणं प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचेटनलक्षणं तथाअवधिर्मर्यादा तेनमरण मवधिमरणं यानिहि नारकादिभवनिबंधनतया युःकर्मदलियान्यनुभूय

॥ ५१ ॥ म्रियते यदि पुनस्तान्येवानुभूय मरिष्यति तदातदवधिमरणमुच्यते तद्द्रव्यापेक्षया पुनस्तद्ग्रहणावधिं यावज्जीवस्य मृतत्वादिति तथा आयंतियमरणेत्ति आ
त्यंतिकमरणं यानिमारकाद्यायुष्कतया कर्मदलिकान्यनुभूय म्रियते मृतश्च नपुनस्तान्यनुभूय मरिष्यतीत्येवं यन्मरणम् तद्द्रव्यापेक्षया अत्यंतभावित्वा दात्यंति
कमिति वलायमरणेत्ति संयमयोगेभ्यश्चलतां भग्नव्रतपरिणतीनां व्रतिनांमरणं वलान्मरणं। तथा वशेनेंद्रियविषयपारतंत्र्येण ऋतताबाधितावशार्त्ताः स्नि
ग्धदीपकलिकावलोकना कुलशभवन् तथा अंतर्मध्येमनसील्यर्थः शल्यमिव शल्यमपराधपदंयस्य सोतःशल्योऽभिनानादिभिरनालोचितातीचार स्तस्यमरणमंतः
शल्यमरणं तथायस्मिन् भवेतिर्यग् मनुष्यभवलक्षणेवर्त्तते जंतुस्तद्भवयोग्य मेवायुर्बद्धुनः तत् क्षयेन म्रियमाणस्ययद्भवति तत्तद्भवमरणमेतच्चतिर्यङ् मनुष्याणामेव
तदेवनारकाणां तेषां तेष्वेवोत्पादाभावादिति तथाबालाइव बालाअविरता स्तेषां मरणं बालमरणं तथापंडिताः सर्वविरता स्तेषांमरणं पंडितमरणं बालपंडि

॥ मूल ॥

आवीइमरणे ओहिमरणे आयंतियमरणे वलायमरणे वसट्टमरणे अंतोसल्लमरणे तब्भवमरणे बालमरणे पंडि

॥ भाषा ॥

युभवने बंधनकार्मदल अनुभवीमरेपर मारा नमरे २ आत्यंतिक मरण तेजेनरकनूंपूर्व आउखुं भोगवीओवलतो फरीने बीजिभवें तेहीजभावे ३ व्रतभांजीम
रेते वलातमरण ४। पतंगादिकनी परेइन्द्रियनेवशे मरेतेवशार्त्तमरण ५। अपराधअणालोई मरेअंतःशल्यमरण ६। जेआउखुंभोगवी मरेवलीउपराठो बी
जेभवेतेहीजआवे जिममनुष्यतिर्यंच पोतानूं आउखुं भोगवीकरी वलीबीजेभवेतेहीजमूं आउखुंपामे ७। अविरतीनूं मरणतेबालमरण ८। सर्वविरतीयतीन

॥ टीका ॥

तादेशविरतास्तेषांमरणं बालपंडितमरणं। तथाछद्मस्थमरणमेव केवलिमरणंतु प्रतीतं। वेहासमरणंति विहायसि व्योमनिभवं वेहायसं विहायोभवस्तंच तस्य वृक्षशाखाद्युद्बद्धत्वेसति भवेत् तथागृद्धैः पक्षिविशेषै रुपलक्षणत्वाच्छकुनिकाशिवादिभिदश्च स्पृष्टं स्पर्शनंयस्मिन् स्तद्गृध्रस्पृष्टं अथवागृध्राणांभक्ष्यं पृष्टमुपलक्षणत्वाउंदरादियत्र तद्गृध्रपृष्ट मिदंचकरिकरभादिशरीरमध्यपातादिनागृध्रादिभिरात्मानं भक्षयतो महासत्वस्य भवतीति भक्तस्ययावज्जीवं प्रत्याख्यानं यस्मिन् तत्तथा इदंच त्रिविधाहारस्य चतुर्विधाहारस्यवा नियमरूपं सप्रतिकर्मच भक्तपरिज्ञेतियदूहं। तथा इंग्यते प्रतिनियते देशएवचेष्यते आसामनशनक्रियामितींगिनी तया मरणमिंगिनीमरणं तच्चिचतुर्विधाहारस्य प्रत्याख्यातुर्निःप्रतिकर्मशरीरस्यें गितदेशाभ्यंतर वर्तिनएवेति तथा पादपस्येवोपगमनमवस्थानं यस्मिन् तत्पादपोपगमनं तदेव मरणमितिविग्रहः इदंच यथापादपः कथंचित् पतितः सममसममिति भावेभावयन्निश्चलमेवास्ते तथायोवर्त्तते तस्य

॥ मूल ॥

तमरणे बालपंडितमरणे छउमत्थमरणे केवलिमरणे वेहासमरणे गिद्धपिठमरणे भत्तपच्चक्खाणमरणे इंगिणीमरणे पाउवगमणमरणे सुहुमसंपराएणंभगवं सुहुमसंपरायभावेवट्टमाणो सत्तरसकम्मपगडीउ णिबंध

॥ भाषा ॥

मरणतेपण्डितमरण ९। श्रावकनूंमरणते बालपण्डितमरण१०। छद्मस्थपणेमरेते छद्मस्थमरण११। केवलीपणेमरेते केवलमरण१२। गलेफांसोलेईमरेतेविहासमरण १३। गृध्रपक्षी तेणे सियालियादिके आपणोआत्माखवाडोमरेते गृध्रपुष्टमरण १४। भातपाणीपच्चखीमरेते भक्तप्रत्याख्यानमरण १५। चारेआहारपच्चखी भूमिनियमीसंस्थारेमूये भवतोवेयावचनकरावेते इंगिनीमरण १६। पादपवृक्षनीशाखाछेदी भूमिएंपडेचलतोहालेनही तिमसंथारेकह्या पछीसाधुहाले बोलेनहीपासुंपालटे नहीतेपादपमरण१७। सूक्ष्मसंपराय दशमूंठाणुं सूक्ष्मसंलोभनोअसंख्यातमोभाग किट्टिरूपजेहनेहुएते सूक्ष्मसंपरायभावेंवर्ततोथ

॥ टीका ॥

तद्भवतीति ।' तथासूक्ष्मसंपरायउपशमकः क्षपकोवासूक्ष्मलोभकषाय किट्टिकावेदको भगवान् पूज्यत्वात् सूक्ष्मसंपरायभावे वर्त्तमानस्तत्रैव गुणस्थानकेऽवस्थि त नातीतागत सूक्ष्मसंपराय परिणामइत्यर्थः सप्तदशकर्म प्रकृतीर्निबध्नाति विंशत्युत्तरे बंधप्रकृतिशते अन्यानबध्नातीत्यर्थः पूर्वतरे गुणस्थानकेषुबंधंप्रतीत्या ष्यासांव्यवच्छिन्नत्वात्तथोक्तानां सप्तदशानां मध्यादेका सातप्रकृतिरुपशांतिमोहादिषु बंधमश्रित्यनुयाति शेषाः षोडशैहैवव्यवच्छिद्यंते । यदाह नाणं ५

॥ ५२ ॥ तराय ५ दसगं दंसणचत्तारि ४ उच्च १५ जसकित्ती १६ । एयासोलसपयडी सुहुमकसायं मिवोच्छिन्ना । सूक्ष्मसंपरायात्परेनबध्नंतीत्यर्थः ॥ आभिनादीनि सप्त

॥ मूल ॥

ति तं० आभिणिबोहियणाणावरणे सुयनाणावरणे उहिनाणावरणे मणपज्जवनाणावरणे केवलिनाणावरणे चक्खु दंसणावरणं अचक्खुदंसणावरणं उहीदंसणावरणं केवलदंसणावरणं सायावेयणिज्जं जसाकित्तिनामं उच्चागो यं दाणंतरायं लाभंतरायं भोगंतरायं उवभोगंतरायं वीरिअअंतरायं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थे गइयाणं नेरइआणं सत्तरपलीउवमाइं ठिई प० पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्त

॥ भाषा ॥

को तथा क्षपभावेंवर्त्ततोथको एकसोवीसप्रकृतिबंधछे तेमाहिली सतरकर्म प्रकृतिनोबंधपाडे तेकहेछे । आभिनिबोध ज्ञानावरण मतिज्ञानावरण १ । एमश्रु तज्ञानावरण २ । अवधिज्ञानावरण ३ । मनपर्यवज्ञानावरण ४ । केवलज्ञानावरण ५ । चक्षुदंसणावरण ६ । अचक्षुदंसणावरण ७ । अवधिदंसणावरण ८। केवलदंसणावरण ९ । सातावेदनी १० । यशकीर्तिनामकर्म ११ । उच्चैर्गोत्र १२ । दानांतराय १३ । लाभांतराय १४ । भोगांतराय १५ । उपभोगांतराय १६। वीर्यांतराय १७ ॥ एणीएरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीना सतरपल्योपमआउखोकह्यो । पांचमीधूमप्रभा पृथिवीएं केतलाएकनारकीनो उत्कृष्टोस

॥ मूल ॥

रससागरोवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० असुरकु
माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरसपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं
सत्तरसपलिउवमाइ ठिई प० महासुक्केकप्पेदेवाणं उक्कोसेणं सत्तरसागरोवमाइं ठिई प० सहस्सारेकप्पे दे
वाणं जहन्नेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सामाणं सुसमाणं महासामाणं पउमं महापउमं कु
मदं महाकुमदं नलिणं महानलिणं पोंडरीअं महापोंडरीअं सुक्कं महासुक्कं सीहं सीहकंतं सीहविअं भा
विअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तरससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तरस
हिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्से

॥ भाषा ॥

तरसागरोपमआउखोकह्यो। छट्ठीतमापृथिवीएं केतलाएकनारकीनो जघन्यो सतरसागरोपमआउखोकह्यो। असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो सतरप
ल्योपमआउखुंकह्यो। सौधर्मईशानदेवलोके केतलाएकदेवतानो सतरपल्योपमआउखोकह्यो महाशुक्रदेवलोके सातमेदेवतानोउत्कृष्टो सतरसागरोपमआउ
खोकह्यो। सहस्रार आठमेदेवलोके देवताने जघन्यो सतरसागरोपम आउखोकह्यो। सातमेदेवलोके जेदेवता सामायिक१। सुसामायिक२। महासामा
यिक३। पदम४। महापदम५। कुमद६। महाकुमद७। नलिन८। महानलिन ९। पौंडरीक१०। महापौंडरीक११। शुक्र१२। महाशुक्र१३।
सिंह१४ सिंहकांत१५। सिंहविद१६। भाविक१७॥ एवेविमानेदेवतापणे उपनाछे। तेहदेवतानो उत्कृष्टोसतर सागरोपमआउखोकह्यो। जेहदेवतासतरे

॥ टीका ॥

दशविमानानां नामानीति ॥ १७ ॥ अथाष्टादशस्थानक मिहचाष्टौसूत्राणि स्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्सुगमानिच नवरंबंभेत्ति ब्रह्मचर्यं तथौदारिकका
म भोगान् मनुष्यतिर्यंग् संबंधिविषयान् तथादिव्यकामभोगान् देवसंबंधिनइत्यर्थः तथासखुड्डगवियत्ताणंति सहक्षुद्रकैर्व्यक्तैश्च येक्षुद्रकाव्यक्ता तेषां तत्रक्षुद्र

॥ ५३ ॥

॥ मूल ॥

हिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिआजीवा जेसत्तरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति
मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १७ ॥ अठारसविहेबंभे प० तं० ।
उरालिएकामभोगे णेवसयं मणेणं सेवइ नोविअन्नंमणेणं सेवावेइ मणेणंसेवंतंविअन्नं नसमणुजाणाइ उरालि
एकामभोगे नेवसयं वायाएसेवइ नेविअन्नंवायापसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ उरालिएका
मभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोविअन्नंकाएणं सेवावेइ काएणं सेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेव

॥ भाषा ॥

अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वासघणोले अंचोले नीचोस्वासमेले तेहदेवताने सतरर्धसहस्रे आहारनोअर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीव जेसतरभवने आंतरे सीझ
स्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिसतरमुंठाणुंसम्पत्तं ॥ १७ ॥ हिवेअठारमोठाणोलिखियेछे । अठारभेदेब्रह्मव्रतकह्योतिकहे
छे । उदारिककामभोग तेमनुष्यनास्त्रीअनेतिर्यंचनीस्त्रीतेसाथेपंचेंद्रियानाविषयशब्दरूपतेकामगंधरस स्पर्शतेभोगमनेकरीपोतेसेवेनही १ । मनेकरीअनेरा
नेपिणसेवाडेनही २ । मनेकरी अनेराएंमैथुनसेवतांप्रति अनुभावनामकरे ३ । औदारिक कामभोगनपोतेवचनेकरीसेवे ४ । ननिश्चयेअनेरानेप्रतिवचनेकरी
वसेवाडे ५ वचनेकरी अनेराने प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनानकरे ६ । औदारिक कामभोगपोतेकायाएंनकरे ७ । अनेराने कायाएंनसेवाडे ८ । कायाएंकरीअ

सकं चोतरट्विमाननामानीति ॥ २१ ॥ द्वाविंशतितमंतुस्थानं प्रसिद्धार्थमेव नवरं सूत्राणिषट्स्थितेरर्वाक् तत्रमार्गाच्यवननिर्ज्जरार्थं परिषह्यंते इति ॥ टीका ॥
परीषहाः दिगिंछति बुभुक्षासैवपरीषहो दिगिंछापरीषहइति सहनंचास्यमर्यादानुल्लंघनेन एवमन्यत्रापि १ तथा पिपासाद्वट् २ शीतोष्णेप्रतीते ४ तथादं
शाश्चमशका दंशमशकाउभयाप्येते चतुरिन्द्रियामहत्वामहत्त्वकृतश्चैषांविशेषो ऽथवा दंशोदशनंभक्षणमित्यर्थः तत्प्रधानामशका दंशमशकाः एतेचयूकामत्कु
णमत्कोटक अविकादोना मुपलक्षणमिति ५ तथाचेलानांवस्त्राणांवासगंवनवीनाऽवदात सुप्रमाणानां सर्वेषांवाअभावः अचेलत्वमित्यर्थः ६ अरतिर्मानसोवि

झिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २१ ॥ बावीसपरीसहा प० तं० । ॥ मूल ॥
दिगिंछापरीसहे पिवासापरीसहे सीतपरीसहे उसिणपरीसहे दंसमसगपरीसहे अचेलपरीसहे अरइपरीसहे

मोक्षजास्ये इत्यादिकतीसमं ठाणूंसमाप्तं ॥ २१ ॥ हिवे बावीसमो समवाय लिखियेछे । बावीस परीसह परिसामस्तपणे निर्जराने अर्थेसहिवो
खमवो तेपरीसहकह्या । तेकहेछे । दिगिंछा परीसह दिगिंछाशब्द देशीभाषएं क्षुधा तेहनो सहिवो साधुमर्यादानो अनुल्लंघिवो तेदिगिंछापरीसह १ । एम ॥ भाषा ॥
पिपासा तृषापरीसह २ । शीतठाढ तेहनोपरीसह ३ । उष्णतापनोपरीसह ४ । डांस मसा तथा जू माकणनो परीसहवो ५ । आंचलवस्त्रनो अभावनोपरी
सह ६ । अरतिमानसी विकारपरीसह ७ । स्त्रीनोपरीसह ८ । चर्याग्रामादिकनेविषे अनियत विहारनोपरीसह ९ । सोपद्रवस्वाध्यायपरीसह १० । अम

॥ टीका ॥

कारः ७ स्त्रीप्रतीता ८ चर्या ग्रामादिष्वनियतविहारित्वं ९ नैषेधिकीसोपद्रवेतराचस्वाध्यायभूमिः १० शय्यामनोज्ञा ऽमनोज्ञवसतिः संस्तारकोवा ११ आक्रो शोदुर्वचनं १२ वधोयष्ट्यादिताडनं १३ याञ्चाभिक्षणं तथाविधे प्रयोजनेमार्गणंवा १४ अलाभरोगौप्रतीतौ १६ तृणस्पर्शः संस्तारकाभावे तृणेषुशयानस्य १७ ज ल्लःशरीरवस्त्रादिमलः १८ सत्कारपुरस्कारौ वस्त्रादि पूजनाभ्युत्थानादिसंपादनेन २ सत्कारेणवापुरस्करणं सन्माननं सत्कारपुरस्करः १९ ज्ञानंसामान्येनम त्यादि कश्चिदज्ञानमितिश्रूयते २० दर्शनंसम्यग्दर्शनंसद्दहनंचास्यक्रियादिवादिनां विवर्जनतः श्रमणेऽपिनिश्चलचित्ततयाधारणं २१ प्रज्ञास्वयंविमर्शपूर्वको वस्तुप रिच्छेदोमतिज्ञानविशेषइति २२ दृष्टिवादोद्वादशांगःसचपंचधा परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिका ५ भेदात्तत्रदृष्टिवादस्य द्वितीयेप्रस्थाने

॥ मूल ॥

इत्थीपरीसहे चरियापरीसहे निसीहियापरीसहे सिज्जापरीसहे अक्कोसपरीसहे वहपरीसहे जायणापरीसहे अलाभपरीसहे रोगपरीसहे तणफासपरीसहे जल्लपरीसहे सक्कारपुरक्कारपरीसहे पन्नापरीसहे अन्नाणपरी सहे दंसणपरीसहे दिठ्ठिवायस्सणंबावीसंसुत्ताइं छिन्नछेयणाइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं

॥ भाषा ॥

नोज्ञ तथामनोज्ञवसती उपाश्रय तथा संथारानो परीसह ११ । अक्रोध वा दुर्वचनपरीसह १२ । वधयष्टिआदिकें ताडवो तेहनोपरीसह १३ । याचनाभिक्षानो मांगिवो तेपरीसह १४ । अहारादिकनो अप्राप्ति तेपरीसह १५ । रोगमंदवाड तेहनोपरीसह १६ । संथारासंबंधी तृणतेनोपरीसह १७ । जल्लशरीर वस्त्रा दिकनोमल तेहनो परीसह १८ । सत्कार तेवस्त्रादिकनी पूजाऊठी ऊभोथाइवो तेणेकरी पुरस्कार सन्मान तेहनोपरीसह १९ । प्रज्ञातेमतिज्ञाननोभेद तेह नोपरीसह २० । ज्ञानमतिश्रुत तेनही तेअज्ञानपरीसह २१ । दंसणतेसम्यक्त्व तेहथकी अचलवो तेदंसणपरीसह २२ । दृष्टिवाद बारमो अंगतेहना पांचभेद

॥ टीका ।

द्वाविंशति:सूत्राणि तत्र सर्वद्रव्यद्रव्यपर्याय नयार्थंसूचनासूत्राणि च्छिन्नच्छेयणाइयाइंति इहयोनय: सूत्रंच्छिन्नंच्छेदनेच्छति सच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगल मुक्कट्ठमित्यादिश्लोक: सूत्रार्थत: च्छेदनम्यितो नर्तीयादिश्लोकानपेच्यते इत्येव यानिसूत्राणिच्छिन्नच्छेदनयवंति तानिच्छिन्नच्छेदनयिकानि तानित्तुस्वसमयाया: जिनमताश्रिताया: सूत्राणांपरिपाटि: पद्दतिस्त्वस्या: स्वसमयसूत्रपरिपाव्यांभवन्ति तथावाभवंतीति तथा अच्छिन्नच्छेयणपियाइंत्ति इहयोनय: सूत्रमच्छिन्नंच्छेदेनच्छतिर्माच्छिन्नच्छेदनयोयथा ॥ धम्मोमंगलमुक्कट्ठमित्यादिश्लोको ऽर्थतोद्वितीयादिश्लोकमापेच्चमाण इत्येवंयान्यच्छेदनयवंति तान्यच्छिन्नच्छेदनयिकानिता निचाजीविकसूत्रपरिपाट्या गोसालकमतानुसारिण्याऽभिधीयन्ते यस्मात्तेसर्वेंऽप्यात्मकप्रतिवद्दसूत्रपद्दत्यां तथावाभवन्ति अचररचनाविभागस्थितानप्यर्थतोन्यो

॥ मूल ॥

अछिन्नछेअणाइयाइं आजीवियसुत्तपरिवाडीए बावीसंसुत्ताइं तिणकणइयाइं तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए

॥ भाषा ।

परिकर्म १ । सूत्र २ । पूर्वगत ३ । प्रथमानुयोग ४ । चूलिका ५ । तिहां बीजिभेद दृष्टिवादना बावीससूत्र सर्वद्रव्यपर्याय सूचवाथकी सूत्रकहिये छिन्नछेयनया इतिनयक सूत्रतेछिन्न कहतांछेयांखंड्यांछेदयेकरीने तेछिन्नछेदनय कहिये जिमधम्मोमंगलमुक्किट्ठं इत्यादिश्लोक सूत्रार्थथकी छेदवेकरीरह्योबीजाश्लोकनी अपेचा वांछानकरे एहवा जेसूत्र छिन्नछेदनयवंत तेछिन्नछेदनयकानि कहिये स्वसमय जिनमत आश्रितभूत परिपाटी सूत्रपद्दतिने विषेछे । बावीससूत्र अछिन्नछेदनयकछे नयकहतां सूत्रछेदवेकरी छिन्नथी खंडितनथी तेअछिन्न छेदनय कहिये जिमधम्मोमंगल इत्यादिश्लोक अर्थथकी बीजाश्लोकनी वांछाकरी तेबावीससूत्र अछिन्नछेदनयक आजीविक गोसालमत प्रतिबद्दसूत्र परिपाटी सूत्रपद्दतिनेविषेछे । बावीससूत्र त्रिकनयवंत तेहगोसालकमतानुसारीय

॥ टीका ॥

न्यापेक्षमाणानिभवन्तीति भावना तथातिकनइयाइन्ति नयत्रिकाभिप्रायाश्चिन्त्यन्ते यानिनयद्विक त्रिकनयिकानीत्युच्यन्ते त्रैराशिकसूत्रपाट्या इहत्रैराशिकागो शालकमतानुसारिणोऽभिधीयंते यस्मात्तं सर्वं त्र्यात्मकमिच्छन्ति तद्यथा जीवोऽजीवोजीवाजीवश्चेति तथालोकोऽलोको लोकालोकश्चेत्यादि नयचिंतायामपि ते त्रिविधनयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यास्तिकः पर्यायास्तिकः उभयास्तिकश्चेति एतदेवनयत्रयमाश्रित्य त्रिकनयिकानीत्युक्तमिति तथाचउक्कनइयाइंति नयचतुष्का भिप्रायात्तेश्चिंत्यंतेयानितानि चतुष्कनयिकानि नयचतुष्कंचैवं नैगमनयोद्विविधः सामान्यग्राही विशेषग्राहीच तत्रयः सामान्यग्राहीससंग्रहेंऽतर्भूतो विशेषग्राहीतुव्यवहारे तदेवंसंग्रहव्यवहार ऋजुसूत्राः शब्दादित्रयंचैकएवेति चत्वारोनयाइति स्वसमयेत्यादि तथैवेतितथा पुद्गलानामण्वादीनांपरिणामोधर्मः पुद्गलपरिणामः सच पंचवर्णगंधद्वयरसपंचस्पर्शाष्टकभेदाद्विंशतिधा तथागुरुलघुरगुरुलघुइति भेदद्वयक्षेपाद्द्वाविंशतिः तत्रगुरुलघुद्रव्यं यत्तिर्यग्गामवाय्वादिः अगुरुल

॥ मूल ॥

बावीसंसुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्तपरिवाडीए बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प० तं० कालवन्नप रिणामे नीलवन्नपरिणामे लोहियवन्नपरिणामे हालिद्दवन्नपरिणामे सुक्किल्लवन्नपरिणामे सुब्भिगंधपरि

॥ भाषा ॥

सूत्रपरिपाटीएछे। जिम नयचिंतानेविषे त्रिणिराशी द्रव्यास्तिक १ पर्यायास्तिक २ उभयास्तिक ३ तथा जीव १ अजीव २ जीवाजीव ३ लोक १ अलोक २ लोकालोक ३ एहवा ३ छे। राशीना बावीससूत्रछे । बावीससूत्र चतुष्कनयवंतकह्या नैगमनय १ संग्रह २ व्यवहार ३ सूत्र ४ एम ४ नयसूत्रक २२ सूत्र स्वसमय जैनमतानुसारी सूत्रपरिपाटीनेविषेछे। बावीसभेदें पुद्गलपरिणाम जेपरमाणवादिक तेहने परिणामधर्म तेपुद्गलपरिणामकह्या तेकहेछे। कालवर्णेकरी परिणतश्याम तेकालवर्णपरिणाम १। एमजनीलवर्ण परिणाम २। लोहितरक्तवर्ण परिणाम ३ । हालिद्रपीतवर्णपरिणाम ४। शुक्लश्वेतवर्णपरिणा

॥ मूल ॥

णामे दुब्भिगंधपरिणामे तित्तरसपरिणामे कडुयरसपरिणामे कसायरसपरिणामे अंबिलरसपरिणामे महुरर सपरिणामे कक्खडफासपरिणामे मउअफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे लहुफासपरिणामे सीतफासपरिणामे उसिणफासपरिणामे णिद्धफासपरिणामे लुक्खफासपरिणामे अगुरुलहुपरिणामे गुरुलहुपरिणामे इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बावीसंपलिउवमाइं ठिई प० छट्ठीए पुढवीए उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु

॥ भाषा ॥

म ५ सुरभिसुगंध परिणाम ६। दुरभि दुर्गंधपरिणाम ७। तीखेंरसे परिणत तेतीक्ष्णरस परिणाम ८। कटुकरस परिणाम ९। कषायरस परिणाम १०। अंबिलरस परिणाम ११। मधुररस परिणाम १२। कर्कशस्पर्शे करी परिणतपुद्गल ते कर्कशस्पर्शपरिणाम १३। मृदुस्पर्शपरिणाम १४। गुरुस्पर्श परिणाम १५। लघुस्पर्शपरिणाम १६। शीतस्पर्श परिणाम १७। उष्णस्पर्श परिणाम १८। स्निग्धस्पर्श परिणाम १९। रूक्षस्पर्श परिणाम २०। अगुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेस्थिरसिद्धिचेत्र घंटाकारेरह्यामनुष्यचेत्र बाहिर जोतिषविमान २१ गुरुलघुस्पर्श परिणतद्रव्य तेतिर्यग्गामि जोतिषविमान जाणिवो तथा वालुआदिक २२ एणीयेंरत्नप्रभापृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो छट्ठीतमापृथिवीयेंउत्कृष्टो बावीससागरोपमआउखोकह्यो हेठेसातमपृथिवीयें केतालाएकनारकीनो जघन्योबावीससागरोपमआउखोकह्यो असुरकुमारकेतलाएक देवतानो बावीसपल्योपम आउखोकह्यो सौधर्मईशानदेवलोके

॥ टीका ॥ घुर्यः स्थिरंसिंहंतेवंवण्टाकारव्ययवस्थितो ज्योतिष्कविमामादीनि । तथामहितादीनिषट्विमानानि ॥ २२ ॥ त्रयोविंशतिस्थानकं सुगममेवनवरं

॥ मूल ॥ कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीसं पलिउवमाइं ठिई प० अच्चुत्ते कप्पेदेवाणं बावीसंसागरोवमाइं ठिई प० हेठिमहेठिमगेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा महिअं विसूहिअं विमलं पन्नासं वणमालं अच्चुतवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं बावीसाएअद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं बावीसं वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेबावीसंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति ॥ २२ ॥

॥ भाषा ॥ केतलाएकदेवतानी बावीसपल्योपम आउखोकह्यो। अच्युतबारमेलोकेदेवतानोउत्कृष्टोबावीस सागरोपमआउखोकह्यो नवग्रैवेयकमांहिसगलाहेठिलोग्रैवेयक एतलेपहिलेग्रैवेयकना देवतानोजघन्य बावीससागरोपम आउखोकह्यो । बारमेदेवलोके जेदेवता महित १ । विश्रुत २ । विमल ३ । प्रभास ४ । वनमाल ५ अच्युतावतंसक ६ । एहछविमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो बावीससागरोपम स्थितिकही । तेहदेवताबावीस अर्द्धमासेपखवाडे स्वासोस्वास घणोले नीचोमूके तेहदेवतानो बावीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएकभव्यजीवजे बावीस भवनेआंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति बावीसमां ठाणुंसमाप्तम् ॥ २२ ॥ हिवेतेवीसमोसमवायलिखियेछे । तेवीससूयगडांगबीजूंअंग तेहना अध्य

॥ मूल ॥

तेवीसंसुयगडज्झयणा प० तं० । समए वेतालिए उवसग्गपरिन्ना इत्थीपरिन्ना नरयविभत्ती महावीरथुई कुसीलपरिभासिए वीरिए धम्मे समाही मग्गे समोसरिए आहत्तहिए गंथे जमईए गाथा पुंडरीए किरियाठाणा आहारपरिन्ना पच्चक्खाणकिरिआ अणगारसुयं अद्दइज्जं णालंदइज्जं जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं उसप्पिणीए तेवीसाएजिणाणं सूरुग्गमणमुहुत्तंसि केवलवरनाणदंसणेसमुप्पन्ने जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसेणंउसप्पिणीए तेवीसं तित्थकरा पुव्वभवे एक्कारसंगिणो होत्था तं० अजितसंभवअभिणंदणसुमई जाव पासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए चोद्दसपुव्वी होत्था जंबूद्दीवेणंदीवे इमीसे उसप्पिणीए तेवीसं

॥ भाषा ॥

यनकह्या तेकहेछे । समय १ । वैतालिक २ । उपसर्गपरिज्ञा ३ । स्त्रीपरिज्ञा ४ । नरकविभक्ति ५ महावीरस्तुति ६ । कुशीलपरिभाषा ७ । वीर्याध्ययन ८ धर्माध्ययन ९ । समाधिनाम १० । मतनाम ११ । समोसरण १२ । यथातथ्यमान १३ । ग्रंथनाम १४ । जमक १५ । गाथा १६ । एहसोल अध्ययन प्रथम श्रुतस्कंधे बीजेश्रुतस्कंधे सात अध्ययनछे तेकहेछे । पुंडरीक १७ । क्रियाठाणो १८ । आहारपरिज्ञा १९ । प्रत्याख्यानक्रिया २० । अणगारश्रुत २१ । आर्द्रकुमार २२ । नालंदीनो २३ । जंबूद्वीपनेविषे भरतक्षेत्रने विषेएणी अवसर्पिणीनें । आदिनाथथकीमांडि पार्श्वनाथलगे तेवीस जिनने तीर्थंकरने सूर्यनेउदय मुहूर्ते एतले प्रभाते केवलवर प्रधानज्ञान दर्शन उपनोज्ञानतेविशेषाववोध दर्शनतेसामान्याववोध गाथाचाव तेवीसाएनाणा उप्पन्नजिणवराणपुव्वण्हे ॥ वीरस्सपच्छिमन्हा पमाणपत्ताइचरिमदेह ॥ १ ॥ जंबूद्वीप नामद्वीप इण अवसर्पिणीयें आदिनाथविना बीजावेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे एकादशांगीहुया इग्यारअं

॥ मूल ॥

॥ ६६ ॥

तित्थंकरा पुव्वे मंडलिरायाणो होत्था तं० अजितसंभव अभिणंदण जावपासोवद्धमाणोय उसभेणं अरहा कोसलिए पुव्वभवे चक्कवट्टी होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणाणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० हेट्ठिम मज्झिमगेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीसं सागरोवमाइं

॥ भाषा ॥

गन रगामीहुया । तेकहैछे । अजित १ । संभव २ । अभिनंदन ३ । सुमति ४ । जावत्शब्दें पार्श्वनाथ छेहडे वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभनाथआदिअरिहन्त कोशल [illegible] ना ऊपना पहिलेभवें वज्रनाभचक्रवर्तिपणे चौदपूर्वीहुया । जंबूद्वीपे भरतक्षेत्र एणी अवसर्पिणीयें त्रेवीसतीर्थंकर पहिलेभवे मंडलीक राजाहुया ते कहे [illegible] अजितनाथ संभव अभिनंदन यावत् वर्द्धमानस्वामीलगें ऋषभ अरिहंत कोशलदेशना उपना पहिलेभवे वज्रनाभचक्रवर्तिहुया । एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनातेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठेसातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो तेवीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमारदेवतानो केतलाएकनो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानो तेवीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठिममध्यम ग्रैवेयके एतले बीजा ग्रैवेयके देवतानो जघन्यतिवीससागरोपम आउखोकह्यो जेदेवता हेठिम ग्रैवेयके पहिले ग्रैवेयके विमाने देवतापणे उपनाछे । तेहदेवतानो उत्कृ

चत्वारिंसूत्राणि अर्वाक्स्थितिसूत्रेभ्यः तथसूत्रकृतांगस्य प्रथमेश्रुतस्कंधेषोडशाध्ययनानि द्वितीयेसप्ततेषांचान्वर्थस्तद्विगमाधिगम्यइति ॥ २३ ॥ च तुर्विंशतिस्थानके षट्सूत्राणिस्थितेःप्राक् सुगमानिच नवरं देवानामिन्द्रादीनामधिकादेवाः पूज्यत्वाद्देवाधिदेवाइति तथाजीवाउत्ति जंबूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य ॥ टीका ॥

ठिई प० तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिंणं दे वाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणे हिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २३ ॥ चउव्वीसं देवाहिदेवा प० तं० । उसभ अजित संभव अभिनंदण सुमइ पउमप्पह सुपास चंदप्पह सुवि धि सीअल सिज्जंस वासपूज्ज विमल णंत धम्म संति कुंथु अर मल्ली मुणिसुव्वय नमि नेमी पास वद्धमाण ॥ मूल ॥

छो तेवीस सागरोपमनी स्थितिकही । तेहदेवता तेवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक बोलकरे ऊंचाले नीचामूके तेहदेवताने तेवीसवर्ष सहस्रे आहारनी वां छाउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेत्रेवीसभवने आंतरे सीझस्ये बुझस्ये मुकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति तेवीसमो समवाय सम्मत्तम् ॥ २३ ॥ हिवे चोवीसमो समवाय लिखियेछे । चोवीस देवाधिदेव देवइंद्रादिक तेमांहि अधिकादेव पूज्यपणायकीते देवाधिदेवकह्या तेकहेछे ऋषभ १ अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सुविधि ९ । शीतल १० । श्रेयांस ११ । वासुपूज्य १२ । विमल १३ अनंत १४ । धर्म १५ । शांति १६ । कुंथनाथ १७ । अरनाथ १८ । मल्लिनाथ १९ । मुनिसुव्रत २० । नमिनाथ २१ । नेमिनाथ २२ । पार्श्वनाथ २३ । वर्द्धमान ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वर्षाणांवर्षधराणां ऋद्विसीमाजीवोच्यते आरोपितज्याधनुर्जीवाकल्पत्वात्तयोश्वलघुहिमवच्छिखरिसत्कयो: प्रमाणं २४ ९ ३२ । अष्टत्रिंशद्भागश्वयोजनस्य किं विद्विशेषाधिक: अत्रगाथा चउवीससहस्साइं नवयसएजोयणाणवत्तीसे चुल्लहिमवंतजीवा आयामेणंकलद्धंचत्ति ॥ १ ॥ कलार्द्धमितिएकोनविंशतिभागस्यार्द्धं तस्माऽष्टत्रिंशद्भाग एवभवतीति चतुर्विंशतिर्देवस्थानानिदेवभेदा दशभवनपतीनांअष्टौव्यन्तराणां पञ्चज्योतिष्कानां एकंकल्पोपपन्नं वैमानिकानां एवंचतुर्विंशति: सेंद्राणिचमरेंद्राद्यधिष्ठितानिशेषाणिच ग्रैवेयकानुत्तरसुरलक्षणानि अहं २ इत्येवं इन्द्रायेषुताम्यहमिंद्राणि प्रत्यात्मेंद्रकाणीत्यर्थ: अतएव अनिंद्राणि अविद्यमाननायकानि अपुरोहितानि अविद्यमानशांतिकर्मकारीणि उपलक्षणत्वात्पुरंदरस्य अविद्यमानसेवकजनानीति तथाउत्तरायणगत: सर्वाभ्यंतरमण्डल प्रविष्ट: सूर्य:कर्कसंक्रांतिदिनइत्यर्थ: चतुर्विंशत्यंगुलिकांपौरुष्यां प्रहरेभवाच्छाया पौरुषीया तांछायां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते निर्वर्त्यकृत्वा णंवाक्यालंका

॥ मूल ॥

चुल्लहिमवंतसिहरीणं वासहरपव्वयाणं जीवाउ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयणसहस्साइं णवयवत्तीसे जोयणस ए एगं अठतीसइभागंजोयणस्स किंचिविसेसाहिआउ आयामेणं प० चउवीसंदेवठाणा सइंदिया प० से

॥ भाषा ॥

२४ । मेरुथकी तीनपर्वत दक्षिणदिसेछे तेमांहि छेहल्यो लघुहिमवंत उत्तरदिसे तीनपर्वत तेमांहि छेहल्योशिखरिए बिहुंवर्षधरपर्वतनी जीवाचेत्रनी अने वर्षधर पर्वतनी सरलसीमाते जीवाकही ते २४९३२ योजन नवसे बत्रीस योजनना उगणीसभागकीजे तेहना अठीया ३८ थाय एहवी अर्द्धकला कांईक विशेषाधिक लांबपणेकही । चौवीस देवनास्थानक देवतानाभेद भवनपति १० व्यन्तर ८ ज्योतिषी ५ वैमानिक सर्वमिली एकभेदे एह २४ भेदे देवता सेंद्र

रंनिवर्त्तते सर्वाभ्यन्तरमंडलात्द्वितीयमण्डलमागच्छति आह च आसाढमासेदुपयेत्यादि पवहइति यतः स्थानान्नदीप्रवहति वोढुंप्रवर्त्तते सचपद्मह्रदात्तोरणेन ॥ टीका

साअहमिंदा अपुरोहिआ उत्तरायणगतेणंसूरिए चउवीसंगुलिए पोरिसीछायंणिव्वत्तइत्ताणं णिअट्टति गंगा सिंधूउणं महाणदीउपवाहे सातिरेगेणं चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० रत्ता रत्तवती उणंमहाणदीउ पवाहे सातिरेगे चउवीसं कोसे वित्थारेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइया ॥ मूल

क इन्द्रसहितकह्या । शेषथाकता नव ग्रैवेयक पांचअनुत्तरना देवता अहमिंद्र सेवक स्वामीनांभावनहो । उत्तरायणगत सूर्यहुए एतलेनिषधने माथे सर्वाभ्यन्तरमांडले कर्कसंक्रांतिदिने सूर्य चोवीस अंगुले हस्तप्रमाणे त्रणनोछाया एपोरुषीछाया प्रहरदिवसनो छाया प्रतिनिवर्तावीने निवर्तरहे । आसाढेसि दुपयाइति वचनात् । गंगापूर्वसमुद्र गामिनी सिन्धुपश्चिमसमुद्रगामिनी महानदी । प्रवहे तीजेस्थानकथको पद्मद्रहथको निकली तेप्रवाहनेविषे सातिरेकझाझेरी चोवीसकोस विस्तारे पिहुलपणेकह्यो झाझेरापणाथको २५ कोसहुई । रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी प्रवाहनेविषे पुंडरीकद्रहनेविषे सातिरेक झाझेरी २४ कोसविस्तार पिहुलपणेकह्यो झांझेरापणाथको २५ कोस । एणीएरत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो चोवीसपल्योपम आउखोकह्यो । हेठीएं सातमी पृथिवीएं केतलाएक नारकीनो चोवीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवना केतलाएकनो चोवीस पल्योपम आउखा ॥ भाषा

निर्गमइत्वसंभाव्यते नपुनर्यद्दत्यचप्रवहशब्देन मकरमुखप्रणालनिर्गमः प्रपातकुंडे निर्गमोवाविदसाचितसूत्रंहि जंबूद्दीपप्रज्ञप्त्यामिह चतुर्विंशतिक्रोसप्रमाणा ॥

णं चउवीसं पलिउवमाइं ठिई प० हेठिमउवरिमगेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउवीसं सागरोवमाइं ठिई
प० जेदेवा हेठिममज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउवीसं सागरोव
माइं ठिई प० तेणं देवा चउवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसि
णं देवाणं चउवीसाए वाससहस्सेहिं आहारठ्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे चउवीसाए भव
ग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥
पुरिमपच्छिमगाणं तित्थकराणं पंचजामस्सपणवीसं भावणाउ प० तं० इरियासमिई मणगुत्ती वयगुत्ती आ

कह्या। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो चोवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठिम उपरिम ग्रैवेयक तेत्रीजूं ग्रैवेयक तिहांना देवतानो जघन्यो चौ
वीस सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम मध्यम ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवनो उत्कृष्टो चोवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता
चोवीस पखवाडे स्वासोस्वासादिक चारित्रोलकरे तेहदेवताने चउवीसवर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेचौवीसभवने आंतरे सीझ
स्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये॥ इति चौवीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २४ ॥ हिवे पचीसमो समवाय लिखियेछे। प
हिला श्रीआदिनाथनेवारे छेहल्या महावीर तीर्थंकरनेवारे यतीना पंचमहाव्रतनी पंचवीस भावनाकही महाव्रतराखिवाना उपाय तिहां पहिला महा

॥ टीका ॥

॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधंनवरमिह स्थितिर्वाग्भेयसूत्राणि तत्रपञ्चजामस्सत्ति पञ्चानांयामानां महाव्रतानांसमाहारस्तत्पंचयामंतस्यभावणा
॥ पञ्चविंशतिस्थानकमपिसुबोधंनवरमिह स्थितिर्वाग्भेयसूत्राणि ... इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा
श्रीत्ति प्राणातिपातादिनिवृत्तिलक्षणमहाव्रतसंरक्षणायभाव्यन्ते इतिभावनास्ताश्च प्रतिमहाव्रतं पंचपंचेति तत्रेर्यासमित्याद्याःपञ्च प्रथमस्यमहाव्रतस्य तत्रा
लोकभाजनभोजनं आलोकनपूर्वंभाजनपात्रेभोजनं भक्तादेरभ्यवहरणं अनालोक्यभाजनभोजनेहि प्राणिहिंसासम्भवतीति तथानुविचिंत्यभाषणतादिकाहिती
यस्यतत्रक्रोधविवेकः परित्यागः तथाऽवग्रहानुज्ञापनादिकास्तृतीयस्य तत्रावग्रहानुज्ञापना १ तत्रचानुज्ञातेसीमापरिज्ञानं ज्ञातायांचसीमायांस्वयमेव उग्गह
मिति अवगृहस्यानुगृह्णता पश्चात्स्वीकरणमवस्थानमित्यर्थः ३ साधर्मिकाणां गीतार्थसमुदायविहारिणां संविग्नानामवगृहो मासादिकालमानतः पंचक्रो

॥ मूल ॥

लोयणभायणभोयणं आदाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिई ५ अणुवीइभासणया कोहविवेगे लोभविवेगे भयवि
वेगे हासविवेगे ५ उग्गहअणुणवता उग्गहसीमंजाणणया सयमेवउग्गहंअणुगेण्हणया साहम्मियउग्गहंअ

॥ भाषा ॥

व्रतनी पांचभावनाकही तेकहेछे। ईर्यासमितीयें मार्गे जोईचालवो एहप्राणातिपात निवर्तन लक्षण प्रथममहाव्रतने राखवानो उपाय १। एमसगलेकहेछे
मनोगुप्ति २। वचनगुप्ति ३। आलोकभोजने विपुलठामडे जिमवो ४। आदानलेवो भांडकहतां पात्रादिकनो निक्षेप मूकवो तिहां समिति पूंजीकरी पछे
लेवो मूकिवो ५। हिवे बीजा महाव्रतनो भावना पांच विचारी बोलवो १। क्रोधनो त्यागछांडिवो २। लोभनोत्याग ३। भयनोत्याग ४। हासनो छांडिवो
५। हिवे त्रीजा महाव्रतनो भावना पांच। गृहस्थने ओटलादिके रहिवानोअर्थ अवगृह आज्ञानो जणावणो १। अवगृहगृहस्थेदीधेथके सीमामर्यादानो ज
णावणो २। सीमाजाणेथके स्वयमेवपोतेज अवगृहनो अनुग्राहकता अंगीकारकरिवो रहिवो ३। साधर्मिक अनेरा यतीने अवगृहमागिएं तथा उपाश्रयने

॥ टीका ॥

गादिचेवरूपः साधर्मिकावग्रहस्ततोनचानुज्ञाप्यतस्यैव परिभोजनवतांस्थानं साधर्मिकाणां चैत्येवसतौवा तैरनुज्ञातएववास्तव्यमितिभावः ४ साधारणंसामा
न्यं यदन्नादितदनुज्ञाप्याचार्यादिकं तस्यपरिभोजनंचेति ५ ॥ तथास्त्र्यादिसंसक्तशयनादिवर्जनादिकाश्चतुर्थस्य प्रणीताहारांतिस्नेहवानिति । तथाश्रोत्रेंद्रिय
रागोपरत्यादिकाः पंचमस्य अयमभिप्रायोयोयत्रसजनितस्य तत्परिग्रहेवतरति ततश्चशब्दादौरागंकुर्वता तेपरिग्रहीताभवंतीति परिग्रहविरतिर्विराधिता

॥ मूल ॥

णुन्नवियपरिभुंजणया साहारणभत्तपाणं अणुन्नवियपडिभुंजणया ५ इत्थीपसुपंडगसंसत्तगसयणासणवज्ज
णया इत्थीकहाविवज्जणया इत्थीणइंदियाणमालोयणवज्जणया पुव्वरयपुव्वकीलियाणंअणुस्सरणया पणीता
हारविवज्जणया ५ सोइंदियरागोवरई चक्खिंदियरागोवरई घाणिंदियरागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई

॥ भाषा ॥

विषे तेहीज साधर्मीकयतीने अनुज्ञाप्य जणावीने परिभोजनतारहिवो ४ । साधारण सहुने समुदायें भातपाणी विहस्योहोय तेह आचार्यादिकने अनु
ज्ञाप्य जाणवीने भोजनता जिमिवो ५ । हिवे चौथाव्रतनी भावना ५ स्त्री पशु पंडकनपुंसके संसक्तव्याप्त शय्यासननो वर्जिवो १ । स्त्रीसाथे कथानो वर्जिवो
१ । स्त्रीनाइन्द्रियनो मुखकुचादिकनो आलोकन जोइवो तेहनोवर्जवो ३ । पूर्वेंग्टहस्थपणे संभोगे क्रीडाकीधीहुई तेहनो अनसंभारवो ४ । प्रणीत आहार
घृतदुग्धादिके अति सरस आहारनो वर्जिवो ५ । हिवे पांचमा महाव्रतनी पांचभावना । श्रोत्रेंद्रिय राग मधुरगीतादिक कर्णनो विषय तेह उपरि राग
तेहनी उपरति छांडवो १ । चक्षुरिंद्रियराग २ । घ्राणेंद्रियराग ३ । जिह्वेन्द्रियराग ४ । स्पर्शइन्द्रियराग एम पांचइन्द्रियनो विषयराग तेहनो छांडियो ५ । जेह

॥ मूल ॥

फासिंदियरागोवरई ५ मल्लीणंअरहापणवीसंधणुउहुंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविदीहवेयहुपव्वयापणवीसंजोयणाणि उहुंउच्चत्तेणं प० पणवीसंगाऊआणिउव्विहेणं प० दोच्चाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० आयारस्सणंभगवउ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्थपरिण्णा लोगविजउ सीउसणीअ सम्मत्तं । आवंति धुय विमोह उवहाणसुयं महपरिण्णा ॥ १ ॥ पिंडेसण सिज्जिरिआ भासज्झयणायवत्थ पए

॥ भाषा ॥

परिग्रहने भोगवीए तेपरिग्रह मांहिलेववीयें ५ मल्लिनाथ उगणीसमा तीर्थंकर अरिहंत पंचवीसधनुष ऊंचाऊंचपणेहुया । सवलाइ दीर्घवैताढ्य जंबूद्वीप मांहिल्या ३४ धातकी खंडना ६८ पुष्करार्द्धभाग ६८ एवं १७० दीर्घवैताढ्यपर्वत पंचवीस योजन ऊंचोऊंचपणेकह्या । पंचवीस पंचवीसगाऊ ऊंडपणे भूमिमांहि कह्या । बीजो नरक पृथिवीयें पंचवीस शतसहस्र एतले पंचवीसलाख नरकावासाकह्या । आचारांगना प्रथम पूज्यना पांचचूलिकासहितना पंचवीस अध्ययनकह्या तेकहेछे । शास्त्रपरिज्ञा १ । लोकविजय २ । शीतोष्णीय ३ । सम्यक्त ४ । आवंती ५ । मतांतरे लोकसार । धूताध्ययन ६ । विमोचाध्ययन ७ । उपधानश्रुत ८ । महापरिज्ञा ९ । पिंडेषणाध्ययन १० । सिज्जा ११ । ईर्या १२ । भाषाध्ययन १३ । वस्त्रेषणा १४ । पात्रेषणा १५ । अवग्रह प्रतिमा १६ । सातासातक्रिया एवं २३ भावनाध्ययन २४ विमुक्तिनाम २५ बीजा श्रुतस्कंधना अध्ययन १६ उद्देशा २५ चारचूलिकामांहि अंतर्भव्याछे अनेपांचमानी

॥ टीका ॥

भवत्यन्यथावारोधितेतिवाचनांतरे आवश्यकानुसारेणदृश्यंते तथामिथ्यादृष्टिरेव तिर्यग्गत्या संक्लिष्टपरिणामइत्युक्तमयमपि द्वींद्रियाद्यपर्याप्तादिकाः कर्म्मप्रक्र
तीर्वघ्नातिनसम्यग्दृष्टिस्तासां मिथ्यात्वप्रत्ययत्वादिति मिथ्यादृष्टिग्रहणं विकलेंद्रियोद्वित्रिचतुरिंद्रियाणामन्यतमः णमित्यलंकारे पर्याप्तोन्याअपिवघ्नातीत्यप
र्याप्तग्रहणमपर्याप्तकण्वघ्नेता अप्रशस्तपरिवर्त्तमानद्वयेतररूपावघ्नातिसोप्येताः संक्लिष्टपरिणामोवघ्नातीति संक्लिष्टपरिणामइत्युक्त मयमपिद्वींद्रियाद्यपर्याप्त

॥ मूल ॥

सा उग्गहपडिमा सत्तिक्कसत्तया भावण विमुत्ती ॥ २ ॥ निसीहज्झयणंपणवीसइमं मिच्छादिठिविगलिंदिए

॥ भाषा ॥

सीथ चूलिकानो अधिकारनथी परचूलिकाकही सूत्रमांहि तेमाटे इहांनिसीथपद ग्रन्थाख्य विमुक्त अध्ययन पणिनिसीथ चूलिकासहित पंचवीसनो जाणिवो
आचारांग बीजोश्रुतस्कंधछे तेमांहि पहिलेश्रुतस्कंधे नवअध्ययन तेमांहि नवमोअध्ययन महापरिज्ञानामे तेहना उद्देशा १६ तेहदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रम
णे विछेदोपल्योपृछ्योये आठअध्ययन उगरयां तेहना उद्देशा ४४ छे एकावनमे ठाणेलिख्याछे । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ उद्देशा २५ तेचूलिकामांहि
अंतर्भव्याछेतो पहिला श्रुतस्कंधना नवअध्ययन बीजे श्रुतस्कंधे अध्ययन १६ एवं पंचवीस अध्ययनकह्या । अने पहिला श्रुतस्कंधना ९ अध्ययनना उद्देसा
६० बीजा श्रुतस्कंधना उद्देशा २५ सर्वमिली ८५ उद्देशाथया । हिवे बीजे श्रुतस्कंधे १६ अध्ययनछे तेमांहि पहिला सात अध्ययन पहिली चूलिका रूपछे
आगलया ७ अध्ययन एकसरां बीजी चूलिकारूप पनरमं अध्ययन त्रीजी चूलिकारूप सोलमं अध्ययन चौथी चूलिकारूप पांचमा निशीथाध्ययननो इहां अ
धिकारनथी । मिथ्यादृष्टि । विकलेंद्रिय बेइन्द्रिय तेइन्द्रिय चउरिन्द्रिय अपर्याप्तथका संक्लिष्टपरिणामे महाभूंडो अध्यवसायें उपार्ज्योकर्म तेहनी पंचवीस उत्तर
प्रकृतिबांधे तेकहेछे । तिर्यंचगति नामकर्म १ । विकलेंद्रिय जातिनाम २ । औदारिक शरीरनाम ३ । तैजस शरीरनाम ४ । कार्मण शरीरनाम ५ । हुंडक

कप्रायोग्यंवध्नाति तत्रविगलिंदियजायनामंति कदाचित् द्वींद्रियजात्यासह पंचविंशतिः कदाचित्त्रींद्रियजात्या एवमितरयापीति । गंगेत्यादि पंचविंशतिगं व्यूतानि पृथुत्वेनयः प्रपातस्तेनेतिशेषः दुहश्चोत्ति इयोर्दिशोः पूर्वतोगंगा अपरतः सिंधुरित्यर्थः पद्मद्रहादिहिनिर्गते पंच २ योजनशतानि पर्वतोपरिगत्वादच्चि ॥ टीका ॥

णं अपज्जत्तएणं संकिलिठपरिणामेणामस्सकम्मस्सपणवीसंउत्तरपगडीउणिबंधति तिरियगतिनामं विगलिं दियजातिनामं उरालियसरीरनामं तेअगसरीरनामं कम्मगसरीरनामं हुंडगसंठाणनामं उरालियसरीरंगोवंग नामं छेवठसंघयणनामं वस्ननामं गंधनामं रसनामं फासनामं तिरियाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघाय नामं तसनामं बादरनाम अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं अथिरनामं असुभनाम दुभगनामं अणादेज्जना मं अजसोकित्तिनामं निम्माणनामं २५ गंगासिंधूउणंमहाणदीउपणवीसंगाऊयाणि पोहत्तेणं घडमुहपवित्तिए ॥ मूल ॥

संस्थाननाम ६ । औदारिक शरीरना अंगोपांग ७ । छेवठसंघयणनाम ८ । वर्णनाम ९ । गंधनाम १० । रसनाम ११ । स्पर्शनाम १२ । तिर्यंचनी आनुपूर्वी १३ । अगुरु लघुनाम १४ । उपघातनाम १५ । त्रसनाम १६ । बादरनाम १७ । अपर्याप्तकनाम १८ । प्रत्येककायनाम १९ । अस्थिरनाम २० । अशुभनाम २१ । दौर्भाग्यनाम २२ । अनादेयनाम २३ । अजस अकीर्तिनाम २४ । निर्माणनामकर्म २५ । गंगासिंधूनदीपंचवीस पंचवीस गाऊनेप्रवाहे पिहुलपणे पद्म द्रहथकी निकली पांचसय योजन हिमवंतपर्वत उपरचालीने दक्षिणदिशे प्रवर्ती घडमुहपवत्तिएणं घडानामुखनीपरी पंचवीसकोस पिहुलीजीभीयें मगर मुखप्रणालीयें मुक्तावलीहारसंठाणे संस्थितप्रपात सययोजनोच्च हिमवंतपर्वतथकी हेठीउतरी गंगानदी गंगाप्रपात कुंडमां पडेछे सिंधुनदी सिंधुप्रपाते पडे ॥ भाषा ॥

॥ ७१ ॥

॥ टीका ॥

याभिमुखेप्रवृत्ते घडमुहपविति्तएणंति घटमुखादिव पंचविंशतिकोसि प्रवृत्तजिह्वाकात् मकरमुखप्रणालात् प्रवृत्तेनमुक्तावलीनाम मुक्ताशरीराणां योहारस्तत्सं स्थितेन प्रपतज्जलसंतानेन योजनशतोच्छ्रितस्य हिमवतोऽर्धावर्त्तिनो: स्वकीययो: प्रपातकुण्डयो: प्रपतत: एवंरक्तारक्तवत्यौ नवरंशिखरिवर्षधरोपरि प्रतिष्ठित

॥ मूल ॥

णं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति रत्तारत्तवईउणं महाणदीउपणवीसंगाऊयाणिपोहत्तेणं मकरमुहपवि त्तिएणं मुत्तावलिहारसंठिएणंपवातेणपडंति लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० इमीसेणं रयणप्प भाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइया णं नेरइयाणंपणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिउवमाइं ठिई प० मज्झिमहेठिमगेवेज्जाणं दे

॥ भाषा ॥

छे। रक्तारक्तवती ऐरवतक्षेत्र संबंधिनी महानदी पचवीसगाऊ पिहुलपणे पुंडरीकद्रहथकी निकली शिखरी पर्वतउपरि पांचसय योजन चालीने मगरमुखप्रणालीयें मुक्ताहारसंठाणप्रपातेकरि हेठीउतरीछे रक्ता रक्ताकुंडमांहिपडेछे रक्तवती रक्तवतीकुंडमांहि पडेछे। लोकबिंदुसार चौदमा पूर्वना पंचवीसवस्तुअधिकार विशेषकह्या। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो पंचवीस पल्योपम आउखोकह्यो। हेठीयें सातमी पृथिवीयें केतलाएकनो २५ सागरोपम आउखोकह्यो। असुर कुमार देवतानो केतलाएकनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवनो २५ पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यम हेठिम ग्रैवेयकें एतले ऊंचेग्रैवेयक विमाने देवतानो जघन्य २५ सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता हेठिम उपरिम ग्रैवेयके त्रो

पुंडरीकइदाअपततइति तथाल्लोकबिन्दुसारं चतुर्दशपूर्वमिति ॥ २५ ॥ षड्विंशतिस्थानकंव्यक्तमेव नवरं उद्देशनकालायत्रश्रुतस्कन्धेऽध्ययनेच याव ॥ टीका ॥

वाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवाहेट्ठिमउवरिमगेवेज्जगविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ते सिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाण मंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भ वसिद्धियाजीवा जेपणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु क्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ छव्वीसंदसकप्पववहाराणं उद्देसणकाला प० तं० । दसदसाणं ॥ मूल ॥

जेग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो २५ सागरोपम आउखोकह्यो तेहदेवता पंचवीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमूके तेहदेवताने २५ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव जेपंचवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये संसारना परितापथकी ठाढाथा स्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये इति पंचवीसमो ठाणो सम्पत्तम् ॥ २५ ॥ हिवे छव्वीसमो समवाय लिखेछे । छवीस दशाकल्प व्यवहारना उद्देश नकाल जेह श्रुतस्कंधे जेतला अध्ययनइया तेतला उद्देसनकाल उद्देशनना अवसरकह्या तेकहेछे । दशदशानां उद्देशनकाल १० छकल्पना ६ दशव्यवहारना ॥ भाषा ॥

छकप्पस्स दसववहारस्स अभवसिद्धियाणं जीवाणंमोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसंकम्मंसासंतकम्मा प० तं०
मिच्छत्तमोहणिज्जं सोलसकसाया इत्थीवेदे पुरिसवेदे नपुंसकवेदे हासं अरति रति भयं सोगं दुगंछा इमी
सेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसंपलिओवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अ
त्थेगइयाणं नेरइयाणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसंपलिओव
माइं ठिई प० सोहम्मीसाणेणं देवाणं अत्थेगइयाणं छव्वीसंपलिओवमाइं ठिई प० मज्झिम मज्झिम गेवेज्ज
याणं देवाणं जहन्नेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई जेदेवा मज्झिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना

सर्वमिली २६ उद्देगन कालथया । जेहने अनादि अनंत अभव्यपणो सिद्धिनिष्पन्नछे ते अभव्यसिद्ध कहिये तेहजीवने मोहनीकर्म चौथो तेहनोमूल २८ प्र
कृतिछे तेमांहि अभव्यजीवने विपंजो करणतो आवरे छवीसकर्मना अंशकर्मनो प्रकृति सत्ताकर्मपणे रहे तेकहेछे । मिथ्यात्व मोहनीय १ अनेसोले कषाय
अनंतानुबंधी क्रोध मान माया लोभ ४ एम अप्रत्याख्यानी ४ प्रत्याख्यानीय ४ संज्वलन ४ सर्वमिली १६ कषाय अनेमिथ्यात्व मोहनो भेलतां १७ । प्रकृति
स्त्रीवेद १८ । पुरुषवेद १९ । नपुंसकवेद २० । हास्य २१ । अरति २२ । रति २३ भय । २४ । शोक २५ । दुगंछा २६ । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक
नारकीनो छव्वीस पल्योपम आउखोकह्यो । हेठोयें सातमीपृथिवीयें केतलाएक नारकीनो २६ सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार केतलाएक देवतानो
२६ पल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्म ईशानें केतलाएक देवना २६ पल्योपम आउखोकह्यो । मध्यम २ ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयके देवतानो जघन्य २६

॥ टीका ॥

स्यध्ययमान्युद्देशकावा तत्रतावंतएवउद्देशमकाला उद्देशावसरा:श्रुतोपचाररूपाइति। तथा अभव्यानांत्रिपुंजीकरणाभावेन सम्यक्तमिश्ररूपंप्रकृतिद्वयं सत्ता यांनभवतीति षड्विंशतिः सत्कर्मांशाभवंतीति ॥ २६ ॥ सप्तविंशतिस्थानकमपिव्यक्तमेव केवलं षट्सूत्राणिस्थितेरर्वाक् तत्रअनगाराणां साधूनां गुणाश्चारित्रविशेषाः अनगारगुणाः तत्रमहाव्रतानि पंचेंद्रियनिग्रहाश्चपंच क्रोधादिविवेकाश्चत्वारः सत्यानित्रीणि तत्रभावसत्यंशुद्धांतरात्मना करणसत्यंयत्प्र

॥ मूल ॥

तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं छव्वीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा छव्वीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं छव्वीसंवाससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेछव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २६ ॥ सत्तावीसंअणगारगुणा प० तं०। पाणाइवायाउ वेरमणं मुसावायाउ वेरमणं अदिन्नादाणाउ वेरमणं मेहुणाउ वेरमणं परिग्गहाउ वेरमणं सोइंदियनिग्गहे चक्खिं

॥ भाषा ॥

सागरोपम आउखोकह्यो। जेदेवता मध्यम हेठिम एतले चउथे ग्रैवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो उत्कृष्टो२६ सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता छव्वीसे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमिले तेहदेवताने २६ वर्ष सहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीवजे२६ भवने आतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये संसारदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये इति छव्वीसमो समवाय पूरोथयो ॥ २६ ॥ हिवे सत्तावीसमो समवाय लिखेछे सत्तावीस अणगारना साधूना चारित्र विशेषरूपगुणकह्या तेकहेछे। प्राणातिपातनो विरमण १। मृषावादनो विरमण २। अदत्तादाननो विरमण ३।

॥ टीका ॥

तिलेखनादिक्रियां यथोक्तांसम्यगुपयुक्तः कुरुते योगसत्यंयोगानांमनःप्रभृतीनामवितथत्वं १७ क्षमाऽनभिव्यक्तक्रोधमानस्वरूपस्य द्वेषसंज्ञितस्याप्रीतिमात्रस्याभा
वः अथवाक्रोधमानयोरुदयनिरोधः क्रोधमानविवेकशब्दाभ्यांतदुदयप्राप्तयोर्निरोधः प्रागेवाभिहितइति नपुनरुक्ततापीति १८ विरागता अभिष्वंगमात्रस्य
भावः अथवामायालोभयोरनुदयो मायालोभविवेकशब्दाभ्यांतूदयप्राप्तयोस्तयोर्निरोधः प्रागभिहित इतोहापिनपुनरुक्ततेति १९ मनोवाक्कायानां समाहरण
तापाठांतरतः समत्वाहरणता अकुशलानांनिरोधास्त्रयः २२ ज्ञानादिसंपन्नतास्तिस्रः २५ वेदनातिसहताशीताद्यतिसहनं २६ मारणांतिकातिसहनता क

॥ मूल ॥

दियनिग्गहे घाणिंदियनिग्गहे जिब्भिंदियनिग्गहे फासिंदियनिग्गहे कोहविवेगे माणविवेगे मायाविवेगे लो
भविवेगे भावसच्चे करणसच्चे जोगसच्चे खमाविरागया मणसमाहरणया वयसमाहरणया कायसमाहरणया
नाणसंपन्नया दंसणसंपन्नया चरित्तसंपन्नया वेयणअहियासणया मारणांतियअहियासणया जंबूद्दीवेदीवेभन्नि

॥ भाषा ॥

मैथुननो विरमण ४ । परिग्रहनो विरमण ५ । श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६ । चक्षुरिंद्रिय निग्रह ७ । घ्राणेंद्रिय निग्रह ८ । रसनेंद्रिय निग्रह ९ । स्पर्शनेंद्रिय निग्रह १०
क्रोधनो विवेकत्याग ११ । मान विवेक १२ । माया विवेक १३ । लोभ विवेक १४ । भावसत्य शुद्धआत्माराखिवो १५ । करणसत्यइन्द्रियनिरोधप्रतिलेखनादि
क क्रियानेविषे सावधानपणे प्रवर्तिवो १६ । योगसत्य मनःप्रभृतियोगत्रिक कुशलतानुष्ठाने प्रवर्तिवो १७ । खमा क्रोधनोमाननो उदयनिरोध १८ । विराग
ता केहसाथेप्रसंगनहो १९ । मननो समाहरणता अकुशल व्यापारथको रुंधिवो २० एम वचन समाहरणता २१ । काय समाहरणता २२ । ज्ञानकरी स
म्पन्नता सहितपणो २३ । एम दंसण सम्यक्त्वसंपन्नता २४ । चारित्र संपन्नता २५ । वेदना अधिसहनता सातादिकनो सहिवो २६ । मारणांतिक अधिसहन

॥ टीका ॥

ल्याणमित्रबुद्ध्यामारणांतिकोपसर्गसहनमिति २७ तथा जंबूद्वीपेनधातकीखण्डादौ अभिजिद्वर्जैः सप्तविंशत्यानक्षत्रैर्व्यवहारः प्रवर्त्तते अभिजितश्चनक्षत्रस्योत्तराषाढचतुर्थपादानुप्रवेशनादिति । तथामासोनक्षत्रचन्द्राभिवर्द्धित ऋत्वादित्यमासभेदात्पंचविधास्तत्रोक्तोनक्षत्रमासः चंद्रस्यनक्षत्रमण्डलभोगकाललक्षणः सप्तविंशतिरात्रिंदिवानि अहोरात्राणीति रात्रिंदिवाग्रेणेत्यहोरात्रपरिमाणापेक्षयेदंपरिमाणं नतुसर्वथातस्याधिकतरत्वादाधिक्यंवाहोरात्रसप्तषष्ठिभागानामेकविंशत्येति । विमाणपुढवित्ति विमानानांपृथिवीभूमिका । तथावेदकसम्यक्त्व बंधः क्षायोपशमिकसम्यक्त्वहेतुभूतशुद्धदलिकपुंजरूपा दर्शनमोहनीयप्रकृतिस्तस्य

॥ मूल ॥

इवज्जेहिं सत्तावीसाएणक्खत्तेहिं संववहारेवट्टति एगमेगेणंणक्खत्तमासे सत्तावीसाहिंराइंदियाहिं राइंदियग्गे णं प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणपुढवी सत्तावीसं जोयणसयाइं बाहल्लेणं प० वेयगसम्मत्तबंधोवरयस्स

॥ भाषा ॥

ता मारणांतिकोपसर्गनो सहिवो २७ साधुगुण । जंबूद्वीपनेविषे अभिजित्नक्षत्र तेउत्तराषाढाना चौथापायामांहि पइठांछे तेमांटे अभीचिनक्षत्र वर्जीने अश्विनी प्रमुख सत्तावीस नक्षत्रेकरी व्यवहार प्रवर्त्तेछे । नक्षत्रमास १ । चंद्रमास २ । अभिवर्द्धितमास ३ । ऋतुमास ४ । आदित्यमास ५ । एवं पांचमासछे तेमांहि एकें नक्षत्रमासें सत्तावीस रात्रिदिवस एतले सत्तावीस अहोरात्रि । रात्रिदिवाग्रें सत्तावीस अहोरात्रि प्रमाणें पूरोथाय । सौधर्म ईशान देवलोकें विमाननी पृथिवी सत्तावीस योजनसय बाहुल्यपणे जाडपणेंकही सत्तावीसमया इपुढवी पिंडाइति वचनात्कह्या । वेदकसम्यक्त्व बंध तेक्षायोपशमिक सम्यक्त्वनो कारणभूत शुद्धदलिक रूप दर्शनमोहनीय प्रकृतिछे तेहनो उपरांति विदोजक वेगलानो करणहार तेहने मोहनीय कर्मनी प्रकृति २८ छे तेमांही सत्तावीस उत्तर प्रकृति सत्ताकर्म्मे सत्तापणेकही १६ कषाय ९ नोकषाय एवं २५ थई मिश्रमोहनी एवं १७ प्रकृतिसत्तायें हुए एकसम्यक्त्व मोहनीटली २८

॥ टीका ॥

उव्वरउत्ति प्राकृतत्वाद्दुद्दलकोविर्योजर्कोजनुः तस्यमोहनीयकर्मणोष्टाविंशतिविधस्यमध्ये सप्तविंशतिरुत्तरप्रकृतयः सत्कर्मांशाः सत्तायामित्यर्थः एकस्योद्दलितत्वादिति । तथाश्रावणमासस्य शुद्धसप्तम्यांसूर्यः सप्तविंशत्यंगुलिकां हस्तप्रमाणशंकोरितिगम्यते पौरुषींछायां निर्वर्त्य दिवसक्षेत्रंरविकरप्रकाशमाकाशंनिवर्द्धयन् प्रकाशहान्याहानिंनयन् रजनीक्षेत्रमंधकाराक्रांतमाकाशमभिवर्द्धयन् प्रकाशहानिवृद्धिंनयन् चारञ्चरति व्योममण्डलेभ्रमणङ्करोति अयमत्रभावार्थः इहांकिलस्थूलन्यायमाश्रित्य आषाढ्यांचतुर्विंशत्यंगुलप्रमाणा पौरुषीछायाभवति दिनसप्तके सातिरेकच्छायांगुलंवर्द्धते ततश्चश्रावणशुद्धसप्तम्यामंगुलत्रयंवर्द्धते सातिरेकैकविंशतितमदिनत्वात्तस्याः तदेवमाषाढ्याः सातिरेकैरंगुलैः सहसप्तविंशतिरंगुलानिभवन्ति निश्चयतस्तुकर्कसंक्रांतेरारभ्य यत्सातिरेकैकविंशति

॥ मूल ॥

णं मोहणिज्जस्स कम्मस्स सत्तावीसं उत्तरपगडीउ संतकम्मंसा प० सावणसुद्धसत्तमीएणं सूरिएसत्तावीसं गुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताणं दिवसखेत्तंनियट्टमाणे रयणिखेत्तंअभिणिवट्टमाणेचारंचरइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थे

॥ भाषा ॥

मोहिनी मांहियी । श्रावणसुदि सातमदिने सूर्यहस्तप्रमाणे त्रणनी छायायेंनांपियें तेमांहि २७ अंगुलीयें पोरसीनी छायाने निवर्तावी करीने दिवसनूंक्षेत्र सूर्यनाप्रकाश घटाडतोथको रात्रिनोक्षेत्र अंधकारनोक्रांत आकाशने वधारतोथको चारभ्रमण प्रतिचरे एतले आषाढी पुनिमथकी पोसीपुनिमलगे मासे मुहूर्तना ६१ भागकरी दिनप्रतिविभाग दिवसघटाडी रात्रिवधारे । एणीयेरत्नप्रभा पृथिवीविषे केतलाएक नारकीनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो हेठिणं सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो सत्तावीस सागरोपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो

त्तमंदिनं तत्रोत्कृष्टपापोत्कृष्टोच्छायाभवति ॥ २७ ॥ अष्टाविंशतिस्थानकमपिव्यक्तं नवरंनिहपंच स्थितिःप्राक्सूत्राणि तत्राचारः प्रथमांगस्तस्य ॥ टीका ॥

गइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलि ॥ मूल ॥
उवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसंपलिउवमाइं ठिई प० मज्झिम
उवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं सत्तावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिमगेवेज्जयविमाणेसु देव
त्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा सत्तावीसाए अद्धमासे
हिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं सत्तावीसं वाससहस्सेहिं आहारठे स
मुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेसत्तावीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति
परिनिव्वाइस्संतिसव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २७ ॥ अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे प० तं० ।

सौधर्म ईशान देवलोके केतलाएक देवतानो सत्तावीस पल्योपम आउखोकह्यो। मध्यमउपरिम ग्रैवेयके एतले छट्ठे विमाने देवतानो जघन्य सत्तावीस सागरो ॥ भाषा ॥
पम आउखोकह्यो । जेदेवता मध्यम ग्रैवेयके एतले पांचमे ग्रवेयक विमाने देवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी सत्तावीस सागरोपमनी स्थितिकही । ते
हदेवताने सत्तावीसे वर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे । केतलाएक भव्यजीव सत्तावीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्ये मोक्षजा
स्ये इति सत्तावीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ २७ ॥ हिवे अठावीसमो समवाय लिखेछे । अठावीस प्रकारे आचारप्रथमांग तेहना प्रकल्प अध्ययन विपग

प्रकल्पोऽध्ययनविशेषोनिशीथमित्यपराभिधानस्यवाचारस्य वासाध्वाचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पोऽध्यवसायमित्याचारप्रकल्पः तत्रकश्चित्ज्ञानाद्याचारविष येअपराधमापन्नस्यकस्यचित् प्रायश्चित्तंदत्तं पुनरन्यमपराधविशेषमापन्नस्तत स्तत्रैवप्राक्तनेप्रायश्चित्ते मासवहनयोग्यंमासिकं प्रायश्चित्तमारोपितमित्येवं मासि क्यारोपणाभवति तथापंचरात्रिकशुद्धियोग्यंमासिकञ्चशुद्धियोग्यंचापराधद्वयमापन्न स्ततःपूर्वंदत्तप्रायश्चित्ते सपंचरात्रिमासिकप्रायश्चित्तारोपणात्सपंचरात्रमा सिक्यारोपणाषट् ६ एवंद्विमासिक्यः ६ त्रिमासिक्यः ६ चतुर्मासिक्यः ६ चतुर्विंशतिरारोपणाःतथासार्द्धदिनद्वयस्य पक्षस्यचोपघातनेनलघूनांमासादीनांप्राची नप्रायश्चित्ते आरोपणाउपघातिकारोपणा यदाह ॥ अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्धेणंतुसंजुयंकाउं॥ देज्जायलहुयदाणं गुरुदाणंतत्तियंचेवत्ति ॥ यथामासार्द्धं १५ पंचविं शतिकार्द्धंच सार्द्धद्वादशत्रयंसर्वमीलने सार्द्धसप्तविंशतिरितिलघुमासाः तथामासद्वयार्द्धं मासोमासिकस्यार्द्धंपञ्च उभयमीलनेसार्द्धोमासइति लघुद्विमासिकं २५ तथातेषामेवमार्द्धदिनद्वयाद्यनुद्घातनेनगुरूणामारोपणा आनुघातिकारोपणा २६ तथायावतोनपराधानापद्यते तावतोनांतच्छुद्धीनामारोपणाकृत्स्नारोपणा

मासियाआरोवणा सपंचराइमासियाआरोवणा सदसराइमासियाआरोवणा सपक्खरसराइमासियाआरोव

अथवा आचार तेसाधुनाआचार ज्ञानादिकविषय तेहनो प्रकल्पव्यापिवो तेआचारप्रकल्प अठावीसभेदेंकह्या तेकहेछे । किहांएक ज्ञानाचारविषे अपराधपा म्यो तेहनो कांइक प्रायश्चित्तदीधो वली अनेरो अपराध सेव्यो तेवारे तिहां पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे मासवहवायोग तेमासिको प्रायश्चित्त आरोप्यो तेमासिका रोपणाइइं पहिली १ । सपंचरायेति पंचरात्रीयें शुद्धियोग्य तथा मासें शुद्धियोग्य एहवा अपराध प्राप्तने पूर्वदत्त प्रायश्चित्तनेविषे पंचरात्रिसहित मासप्राय श्चित्त आरोपणाथको सपंचरात्रि मासिको आरोपणाकही बीजी २ ।एमज दसरात्रिसहित मासिक प्रायश्चित्तनो पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे आरोपवो तेदसरात्रि

॥ मूल ॥

णा सवीसइराइमासियाआरोवणा सपंचवीसराइमासियाआरोवणा एवंचेवदोमासियाआरोवणा सपंचराइदोमासियाआरोवणा एवंतिमासियाआरोवणा चउमासियाआरोवणा उवघाइयाआरोवणा अणुघाइया

॥ भाषा ॥

मासिकारोपणा ३। एमज सपनरसरात्रि मासिकारोपणा ४। सवीसरात्रि मासिकारोपणा ५। संपंचवीसरात्रि मासिकारोपणा ६। एमज पूर्वनेप री कहीने एकअपराधनो प्रायश्चित्तलाग्यो वली बीजो अपराधसेव्यो तेहने पूर्वप्रायश्चित्तनेविषे बेमासयोग्य प्रायश्चित्त आरोप्यो तेबेमासिकारोपणाकही ७। पंचरात्रि प्रायश्चित्तयोग्य अनेवली २ मास प्रायश्चित्तयोग्य एहवा बीयें अपराधे प्राप्तनेपूर्वदत्त प्रायश्चितने पंचरात्रिसहित बेमासिक आरोपणाकर वी तेसपंचरात्रि वेमासिकारोपणाकही ८। एमज सदसरात्रि बेमासिकारोपणा नौमी ९। सपनरसरात्रि बेमासिकारोपणा १०। सवीसरात्रि बेमासि कारोपणा ११। सपंचवीसरात्रि बेमासिकारोपणा १२। पूर्वनीपरेछे त्रिमासिकारोपणा एवं १८। चौमासिकारोपणा एवं २८ मासनोअर्द्ध १५। अनेपूर्व पूर्वपंचवीसनोअर्द्ध १२ ॥ उभयमिली साढासत्तावीस उपरि १ मास एतले लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तथा मासनुंअर्द्ध मासवली मासार्द्ध १५ विहुंमि लौ देढमास एह लघुद्विमासिक प्रायश्चित्तकह्यो तेहनेविषे साढावेदिनसहित १५ दिनएतले साढासतरे १७ ॥ दिनआरोपी तेहउपघातकारोपणा पंचवी समी २५। यदाह। अद्धेणछिन्नसेसं पुव्वद्धेणंतु संजुओकाओ। देज्जायलहुपहाणं गुरुदाणंतत्तियंचेव ॥ बेमाससमांहियकी अढीदिनकाढी एतले १ मासदिन साढासत्ताईस एहने उपघातकारोपणाकही तेमांहि अढीदिनघाति एतले पूराबेमासथया एहअनुघातिकारोपणा २६ तथा जेहने जेतलो अपराधला ग्योहोय तेहने तेतलोपूरो आलोयणां आरोपी तेहकृत्स्नारोपणा २७ जेहने घणाजघणा अपराधलाग्याछे परंछमासी उपरांत आलोयणनथी तोबीजा सग

२६ तथावह्ननपराधानापन्नस्य षण्मासांतंतेषु इतिषण्मासाधिकतपःकर्मतेष्वेवांतर्भाव्यशेषांतर्भाव्यशेषमारोप्यते यत्र साग्रकृत्स्नारोपणेत्यष्टाविंशतिरेतच्च ॥ टीका ॥
सम्यग्निशीथविंशतितमोद्देशकावगम्यमत्रैवनिगमनमाह एतावांस्तावदाचारप्रकल्प इहस्थानके आरोपणामाश्रित्यविवचितोऽन्यथा तद्व्यतिरेकेणापितस्यैत
द्वातिकरूपस्यभावात् अथचैतावानेवायंतावदाचारप्रकल्पः शेषस्यात्रैवांतर्भावात्तथापलालवत्तावदाचरितव्यमित्यपितथैव देवगतिसूत्रेस्थिरास्थिरयोः शुभा

आरोवणा कसिणाआरोवणा अकसिणाआरोवणा एतावताआयारकप्पे एतावताय आयरियव्वे नव ॥ मूल ॥
सिद्धियाणं जीवाणं अत्थेगइयाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स अठावीसं कम्मंसासंतकम्मा प० तं० सम्मत्तवेअ
णिज्जं मिच्छत्तवेयणिज्जं सम्ममिच्छत्तवेयणिज्जं सोलसकसाया णवणोकसाया आभिणिबोहिअणाणे अठा

लायेंकर्म छमासीमांहि अंतर्भव्याछे एमजाणी छमासीप्रते आरोपीये तेअकृत्स्नारोपणा १८ एतावता एतले आचार प्रकल्पनास्थानक आश्रीने एतलेश्रो आ ॥ भाषा ॥
चार आचरिवोकह्यो । जेहने सिद्धिमुक्ति होणारीछे तेभवसिद्धिका तेहजीवने केतलाएकने चोथामोहनीयकर्मनो अठावीस कर्मनाअंशकर्मनीप्रकृतिसत्ताये
कही तेकहेछे । सम्यक्त वेदनीय सम्यक्तमोहनीय १ । मिथ्यात्व वेदनी मिथ्यात्वमोहनी २ । सम्यक्त मिथ्यात्व वेदनी एतले मिश्रमोहनी ३ । सोलकषाय अणंता
नुबंधी यादिक कषकही संसार तेहनोआय लाभहोय जेहथकी तेकषाय कषायसरीखुं फलदे तेहास्यादिकनव नोकषायकह्या सर्वमिली २८ प्रकृति मोह
नी कर्मनो एहसघली २७ में ठाणेंलिखीछे । आभिनिबोधिक ज्ञान ते मतिज्ञान अठावीसप्रकारेंकह्यो तेकहेछे । श्रोत्रेंद्रियनो अर्थावग्रह अर्थनो सामान्य

शुभयोरादेयानादेययोश्चपरस्परंविरोधित्वेनैकदायम्भावादत्र्यभवत्वइष्टातोत्युक्तं तत्रचैकशब्दग्रहणंभाषामात्रएवावसेयमिति नारकसूत्रेविंशतिस्ताएव प्रकृतयो ॥ टीका ॥

वीसइविहे प० तं० सोइंदियअत्थावग्गहे चक्खिंदियअत्थावग्गहे घाणिंदियअत्थावग्गहे जिब्भिंदियअत्थावग्गहे फासिंदियअत्थावग्गहे णोइंदियअत्थावग्गहे सोइंदियवंजणोग्गहे घाणिंदिअवंजणोग्गहे जिब्भिंदियवंजणोग्गहे फासिंदिअ वंजणोग्गहे सोतिंदियईहा चक्खिंदियईहा घाणिंदियईहा जिब्भिंदियईहा फासिंदियईहा नोइंदियई हासोतिंदियावाए चक्खिंदियावाए घाणिंदियावाए जिब्भिंदियावाए फासिंदियावाए नोइंदियावाए सोतिंदिअ ॥ मूल ॥

प्रकारें ग्रहिवो तेश्रर्थावग्रह १ समयरहे १ चक्षुरिंद्रियकरी कांइक अर्थनो ग्रहिवो तेचक्षुरिंद्रियार्थावग्रह २। एम घ्राणेंद्रियार्थावग्रह ३। जिह्वेंद्रियार्थावग्रह ४। स्पर्शेन्द्रियार्थावग्रह ५। नोइंद्रियमन तेहनो अर्थावग्रह तेह नोइंद्रियार्थावग्रह ६। शब्दना पुद्गलआवी कानना इंद्रियमांहि भराइ तिवारपछी शब्दज्ञान उपजे तेश्रोत्रेंद्रिय व्यंजनावग्रह ७। गंधपुद्गल नासिकामांहि आवी भराइ तिवारपछी गंधज्ञान उपजे तेघ्राणेंद्रिय व्यंजनावग्रह ८। एम जिह्वेंद्रियव्यंजनावग्रह ९। स्पर्शेन्द्रियव्यंजनावग्रह १०। आंखीने अने मननोव्यंजनावग्रह नहोय तेमाटे ४ व्यंजनावग्रह जाणिवा। श्रोत्रेंद्रियेकरी शब्दनेविषे ईहा देवो आलोचवो जेह पुरुषनो शब्दकरेस्त्रीनो एहश्रोत्रेंद्रियईहा ११। आखेंकरी आलोचवो स्थाणुर्वापुरुषोवा एहचक्षुरिंद्रियईहा १२। एमघ्राणेंद्रियईहा १३ जिह्वेंद्रियईहा १४। स्पर्शनेंद्रियईहा १५। नोइंद्रियईहा १६। तेमनकरी आलोचवो। ईहा १ मुहूर्त्तलगेरहे। श्रोत्रेंद्रियावाय श्रोत्रेंद्रियेंकरी निश्चयकरिये ते श्रोत्रेंद्रियावाय १७। एम चक्षुरिंद्रियावाय तेखीलाने ऊपरिकागवइठो एखीलोज एहवो निश्चयार्थ तेचक्षुरिंद्रियावाय १८। इमघ्राणेंद्रियावाय १९। जिह्वें ॥ भाषा ॥

धारणा चक्खिंदियधारणा घाणिंदियधारणा जिब्भिंदियधारणा फासिंदियधारणा नोइंदियधारणा ईसाणेणं कप्पे अट्ठावीसंविमाणवाससहस्सा प० जीवेणंदेवगइम्मिबंधमाणे नामस्सकम्मस्स अट्ठावीसंउत्तरपगडी उ णिबंधति तं० देवगतिनामं पंचिंदियजातिनामं वेउव्वियसरीरनामं तेयगसरीरनामं कम्मणसरीरनामं समचउरंसमंठाणणामं वेउव्वियसरीरंगोवंगनामं वन्ननामं गंधनामं रसनामं फासनामं देवाणुपुव्विनामं अगुरुलहुनामं उवघायनामं पराघायनामं जसोनामं पसत्थविहायोगइनामं तसनामं बायरनामं पज्जत्तनामं

द्रियावाय २० । स्पर्शनेंद्रियावाय २१ । नोइंद्रियावाय तेमनेंकरी निश्चयार्थकरिवो २२ । अवाय अर्द्धमुहूर्त्तरहै । पूर्वेकाननेकरी शब्दसांभल्योहोय तेसांभलि ये तेश्रोत्रेंद्रियधारणा २३ । नेत्रेंकरी संभारिये तेचक्षुरिंद्रिय धारणा २४ । एमज घ्राणेंद्रिय धारणा २५ । जिह्वेंद्रियधारणा २६ । स्पर्शनेंद्रियधारणा २७ नोइंद्रियधारणा जेमनेकरीसंभारवो २८ । एहधारणा कालसंख्याता असंख्यातालगेंरहै । एहमतिज्ञानना २८ भेदकह्या । ईशान वीजे देवलोके अट्ठावीसला खविमान भगवंतेकह्या । जीवदेवतानो भवबांधतोथको नामकर्मछट्ठो तेहनी १०३ उत्तर प्रकृतिछे तेमांहियी २८ उत्तरप्रकृतिबांधै तेकहेछे । देवगतिना मकर्म १ । पचेंद्रिय जातिनाम २ । वैक्रियशरीर नाम ३ । तैजसशरीर नाम ४ कार्मणशरीर नाम ५ । समचउरंससंस्थान ६ । वैक्रिय शरीरांगोपांग ७ । वर्णनाम ८ गंधनाम ९ । रसनाम १० । फरसनाम ११ । देवानुपूर्वीनाम १२ । अगुरुलघुनाम १३ । उपघातनाम १४ । पराघातनाम १५ । यशनाम १६ प्रशस्त विहायोगतिनाम १७ । त्रसनाम १८ । वादरनाम १९ । पर्याप्तनाम २० । प्रत्येकशरीरनाम २१ । स्थिर तथा अस्थिर एहबिहुंमाहे अन्यतर अनेरो

पत्तेयसरीरनामं थिराथिराणंदोराहं अस्सयरंएगनामंणिबंधइ सुनासुत्ताणंदोराहं अस्सयरंएगनामंनिबंधइ सुत्त गनामं सुस्सरनामं आइज्जअणाइज्जनामेणं दोराहंअस्सयरं एगंनामंणिबंधइ जसोकित्तिनामं निम्माणनामं एवंचेवनरइयाविनाणत्तं अप्पसत्थाविहायोगइनामं हुंडगसंठाणनामं अथिरनामं दुभ्भगनामं असुत्तनामं दुस्स रनामं अणादिज्जनामं अजसोकित्तीणामं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावी सं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

एकनामबांधे २२ शुभतथा अशुभ एहविहुंमांहि एकबांधे २३। शुभगनाम २४। सुस्वरनाम २५। आदेयनाम अनादेयनाम एहविहुंमांहि एकनामबांधे २६ यशकीर्त्तिनाम २७। निर्माणनाम २८। एमज जीवनरक गतिनो बंधकरतो एहीज २८ नाम कर्मनो प्रकृतिनो बंधकरे। एतलो विशेष जाणिवो इहां अप्र शस्त विहायोगतिनाम १। हुंडकसंस्थान २। अस्थिरनाम ३। दुर्भगनाम ४। अशुभनाम ५। दुस्वरनाम ६। अनादेयनाम ७। अजस अकीर्त्तिनाम ८। नरक गती ९। नरकानुपूर्वी १०। एह १० प्रकृति बीजी प्रकृति १८ देवगतिमांहिली लीजे एतले २८ प्रकृति नरकगतियें नामकर्मनो होय। एणीयें रत्नप्रभा प हिली नरक पृथिवीनेंविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। नीचे सातमी पृथिवीनेंविषें केतलाएक नारकीनो अठावीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनों अठावीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशान देवलोकने विषें केतलाएक देवतानो अठावीस

॥ टीका ॥

ऽष्टानांतुस्थाने अष्टावल्याबभ्रातिएतदेवाह एवंचेवेल्यादि नानात्वंविशेषः ॥ २८ ॥ एकोनत्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तमेव नवरं नवेहसूत्राणि स्थितेःप्राक् तत्रपापोपदानानिश्रुतानि तेषांप्रसंगस्तथासेवनारूपः पापश्रुतप्रसंगः। सचपापश्रुतानामेकोनत्रिंशद्विधत्वात् तद्विधउक्तः पापश्रुतविषयतया

॥ मूल ॥

अत्थेगइयाणं अठावीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिम हेठिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अठावीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा मज्झिम उवरिम गेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं अठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा अठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं अठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेअठावीस भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २८ ॥ एगूणतीसइविहेपावसुयपसंगेणं प० तं। भोमे उप्पाए सुमिणे अं

॥ भाषा ॥

पल्योपमनी स्थितिकही। उपरिम हेठिम एतले सातमें ग्रैवेयक विमाने देवतानी जघन्य २८ सागरोपमनी स्थितिकही। मध्यम उपरिम एतले सातमे छठेग्रैवेयक विमानें जेदेवतापणे उपनाछे तेदेवतानी उत्कृष्टी अठावीस सागरोपमनी स्थितिकही। तेदेवता अठावीस पखवाडे सासोस्वास ऊंचोले घणोले नीचोमेले तेदेवतानें अठावीस वर्षसहस्त्रगयें आहारनी वंछा उपजे। केतलाएक भव्यजीव जेअठाईस भवनें आंतरें सीभस्यें बूझस्यें मूकास्यें सर्वदुःखनों अंतकारस्यें मोक्ष जास्यें अठावीसमो समवाय पूर्णथयो ॥ २८ ॥ हिवे गुणतीसमो समवाय लिखियेंछे। उगुणतीस प्रकारें पापश्रुत पापनाकारण जेहश्रु

पापश्रुतान्येवोच्यते ऽतएवाह भोमेइत्यादि तत्रभौमं भूमिविकारफलाभिधानप्रधानं निमित्तशास्त्रं तथाउत्पातं सहजरुधिरवृष्ट्यादिलक्षणोत्पातफलनिरूपकं निमित्तशास्त्रं एवंस्वप्नं स्वप्नफलाविर्भावकं अन्तरिक्षमाकाशप्रभवग्रहयुद्धभेदादिभावफलनिवेदकं अंगंशरीरावयवप्रमाणस्फुरितादिविकारफलोद्भावकं स्वरंजीवाजीवाश्रितस्वरस्वरूपफलाभिधायकं व्यञ्जनंमषादिव्यंजनफलोपदेशकं लक्षणं लांछनाद्यनेकविधलक्षणव्युत्पादक मित्यष्टावेतान्येवसूत्रवृत्तिवार्त्तिकभेदाच्चतुर्विंशतिः तत्राङ्गवर्जितानामन्येषां सूत्रं सहस्रप्रमाणं वृत्तिर्लक्षप्रमाणावार्त्तिकंवृत्तेर्व्याख्यानरूपंकोटिप्रमाणं अंगस्यतुसूत्रंलक्षणं वृत्तिःटीकावार्त्तिकमपिपरिमितमिति तथाविकथानुयोगोऽनर्थकामोपायप्रतिपादनपराणि कामन्दकवात्स्यायनादीनि भारतादीनिवाशास्त्राणि २५ तथाविज्जानुयोगोरोहिणीप्रभृतिविद्या ॥ टीका

तरिक्खे अंगे सरे वंजणे लक्खणे भोमेतिविहे प० तं० सुत्ते वित्ती वत्तिए एवंएक्केक्कंतिविहं विकहाणुजोगे ॥ मूल

तशास्त्र तेपापश्रुत तेहनोप्रसंग सेवारूप तेपापश्रुतप्रसंग कह्या । तेकहेछे । भौमशास्त्र जेभूमिकंपादिक फलनो सूचकशास्त्र १ । उत्पातशास्त्र जेआकाशथी रुधिर वृष्ट्यादि लक्षण उत्पात तेहनो फलनो सूचक २ । शुभाशुभ स्वप्न फलनो सूचक शास्त्र ३ । अंतरिक्ष आकाशथी ऊपनो ग्रहादिकनो युद्ध तेहनो फल सूचक ४ । अंगफुरकाण विचारसूचक शास्त्र ५ । जीवना स्वरस्वरूप फलसूचक स्वरशास्त्र ६ । व्यंजनमसतिलक फलसूचक ७ । लक्षण सामुद्रिक शास्त्र ८ । प्रथम भौमशास्त्र कह्यो तेत्रिहुंभेदे कहेछे । सूत्र १ । वृत्ति २ । वार्त्तिक ३ । भेदेंकरी एमजपूर्वे अष्टांग निमित्तकह्या तेत्रिणभेदे । एवं सर्वमिली २४ भेदथया विकथानुयोग अर्थकामना उपायशास्त्र व्यासायन कोकशास्त्रादिक २५ । विद्यानुयोग रोहिणी प्रज्ञप्त्यादि विद्यासाधन शास्त्र २६ । मंत्रानुयोग चेडादि ॥ भाषा

॥ टीका ॥

साधनाभिधायकानिशास्त्राणि २६ मंत्रानुयोगश्चेटकादिमंत्रसाधनाभिधायकानिशास्त्राणिपापशास्त्राणि २७ योगानुयोगो वशीकरणादिकानि हरमेखलादि योगाभिधायकानिशास्त्राणि २८ अन्यतीर्थिकेभ्यः कापिलादिभ्यः सकाशाद्यःप्रवृत्तः स्वकीयाचारवस्तुतत्वानामनुयोगो विचारस्तत्करणार्थं शास्त्रसन्दर्भइत्यर्थः सोऽन्यइति २९ तथाषाढादयएकांतरितापञ्चमासा एकोनत्रिंशद्रात्रिंदिवसपरिमाणनभवंति स्थूलन्यायेनकृष्णपक्षे प्रत्येकंरात्रिंदिवसैकस्यक्षयादाहच। आसाढब हुलपक्खे भद्दवएकत्तिएयपोसेय फग्गुणवइसाहेसुय बोधव्वाओमरत्ताओत्ति १ इयमत्रभावना चन्द्रमासोहि एकोनत्रिंशद्दिनानि दिनस्यचद्विषष्टिभागानां द्वात्रिं शत् ऋतुमासश्च त्रिंशदेवदिनानिभवन्तीति चन्द्रमासापेक्षया ऋतुमासोऽहोरात्रद्विषष्टिभागानां त्रिंशतामाधिकोभवति ततश्चप्रत्यहोरात्रं चंद्रदिनमेकैकेनद्विष

॥ मूल ॥

विज्जाणुजोगे मंताणुजोगे जोगाणुजोगे अण्णतित्थियपवत्ताणुजोगे आसाढेणंमासे एगूणतीसराइंदिआइंरा इंदियग्गेणं प० भद्दवएणंमासे कत्तिएणंमासे पोसेणंमासे फग्गुणेणंमासे वइसाहेणंमासे मासोचंददिणाणं

॥ भाषा ॥

कमंत्रसाधनोपायशास्त्र २७। योगानुयोग योग वशीकरणोपायादिशास्त्र हरमेखलादि २८। अन्यतीर्थिकप्रवृत्तानुयोग अन्य तीर्थी कपिलादिक थी प्र वर्त्या पोतानो आचार तेहनो अनुयोग मिथ्यात्वीना शास्त्रसमूह अर्थ २८ । आसाढमास गुणत्रीस रात्रिदिवसनो २९ रात्रीदिवस परिमाणे पूरोथाय एकतिथि ओछा पखवाडानी घटे एम एकांतरित छपखवाडा गुणतीस रात्रिदिवसना थाय। यदाह ॥ आसाढबहुलपक्खे । भद्दवएकत्तिएअपोसेअ ॥ फग्गुणवेसाहेसुअबोधव्वाओमरत्ताओ ॥ १ ॥ भाद्रवो मास २९ रात्रिदिवसनों। कार्तिक मास २९ रात्रि दिवसनों । पोसमास २९ रात्रि दिवसनों। फागुणमास २९ रात्रिदिवसनों। वैशाखमास २९ रात्रिदिवसनों। चंद्रदिवस पडिवातिथि एगूणत्रीसमुहूर्त्त झांझेरानों २९ मुहूर्त्तनों कह्यो। जीवभला

ठिभागेनहीयते इत्यवसीयते एवंद्विषष्ठयाचंद्रदिवसानामेकषष्ट्यहोरात्राणांभवतीति विशेषस्त्विहचंद्रप्रज्ञप्तेरवसेयइति तथाचन्द्रदिग्गगंति चंद्रदिनं प्रतिपदादि कातिथिः तच्चैकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ताः सातिरेकमुहूर्त्त परिमाणेनेति कथंयतः किलचंद्रमासएकोनत्रिंशद्दिनानि द्वात्रिंशच्चदिनद्विषष्ठिभागाभवन्ति ततश्चंद्रदिनं चंद्र मासस्यत्रिंशताभागेनलभ्यतेमुहूर्त्तराशीकृतस्यत्रिंशताभागइ।र एकोनत्रिंशन्मुहूर्त्ता द्वात्रिंशच्चमुहूर्त्तस्यद्विषष्ठिभागालभ्यंतइतिजीवः प्रशस्ताध्यवसानादिविशेषे णवैमानिकेषूत्पत्तुकामोनामकर्मण एकोनत्रिंशदुत्तरप्रकृतीर्बध्नाति ताश्चेमाः देवगतिः १ पंचेंद्रियजातिः २ वैक्रियद्वयं ४ तैजसकार्मणशरीरे ६ समचतु रस्रसंस्थानं ७ वर्णादिचतुष्कं ११ देवानुपूर्वी १२ अगुरुलघुः १३ उपघातं १४ पराघातं १५ उच्छ्वासं १६ प्रशस्तविहायोगतिः १७ त्रसं १८ बादरं १९ पर्याप्तं २० प्रत्येकं २१ स्थिरास्थिरयोरन्यतरत् २२ शुभाशुभयोरन्यतरत् २३ सुभगं २४ सुस्वरं २५ आदेयानादेययोरन्यतरत् २६ यशःकीर्त्तिः २७ निर्माणं २८ तीर्थ

एगूणतीसंमुहुत्ते सातिरेगेमुहुत्तगेणं प० जीवेणंपसत्यज्झवसाणजुत्ते भविएसम्मदिठी तित्थकरनामसहियाउ णामस्सणियमा एगूणतीसंउत्तरपगडीउनिबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ इमीसेणं रयणप्प

अध्यवसाय युक्तथको भव्यक सम्यग्दृष्टि तीर्थंकर नामकर्म सहित नामकर्मनी निश्चे २८ उत्तर प्रकृति बांधीने वैमानिक देवतानेविषे देवतापणे उपजे। ते कहेछे। देवगति १। पंचेंद्रिय जाति २। वैक्रिय शरीर ३। वैक्रियांगोपांग ४। तेजस ५। कार्मण ६। समचउरंससंस्थान ७। वर्ण ८। गंध ९। रस १०। स्पर्श ११। देवानुपूर्वी १२। अगुरुलघु १३। पराघात १४। उपघात १५। यशनाम १६। प्रशस्तविहायोगति १७। त्रस १८। बादर १९। पर्याप्त २०। प्रत्येक २१। स्थिर अस्थिर मांहियेक २२। शुभ अशुभ मांहियेक २३। शुभग २४। सुस्वर २५। आदेय अनादेय मांहियेक २६। यशः कीर्त्ति २७। निर्माण

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ मूल ॥

ज्ञाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणतीसं पलिउवमाइं ठिई प० उवरिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिम हेठिम गेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा एगूणतीसाए अ ठमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊससंतिवा नीससंतिवा तेसिणं देवाणं एगूणतीसं वाससहस्सेहिं आहारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेएगूणतीसंभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

॥ भाषा ।

२८। तीर्थंकरनामकर्म २९। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवीनेविषें केतलाएक नारकीनों २९ पल्योपमनो आउखो कह्यो। हेठें सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनों २९ सागरोपमनो आउखो कह्यो। असुरकुमार केतलाएक देवतानीं गुणत्रीस पल्योपमनो स्थितिकही। सौधर्म ईशानेंकल्पें केतलाएक देवतानीं २९ पल्योपम आउखोकह्यो। उपरिम मध्यम ग्रैवेयकें एतले आठमें ग्रैवेयकें देवतानो जघन्यतः २९ सागरोपमनी स्थितिकही। जेहदेवता उपरिम हेठिम ग्रैवेयकें एतले सातमे विमाने देवतापणे ऊपनाछे तेदेवतानो उत्कृष्टी २९ सागरोपमनी स्थिति कही। तेहदेवताने २९ पखवाडे सासोसास च्यार प्रकारेंहोय। तेहदेवताने २९ सहस्रं वर्षगए आहारनी इच्छा उपजे। छे केतलाएक भव्यजीव जे २९ भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सं

॥ टीका ॥

कांक्षेति ॥ २८ ॥ त्रिंशत्तमंस्थानकंसुगमं नवरं स्थविरैर्वागष्टौसूत्राणि तत्रमोहनीयंसामान्येनाष्टप्रकारं कर्मविशेषतश्चतुर्थीप्रकृतिः तस्यस्थानानिनि मित्तानि मोहनीयस्थानानि तथाजावित्तस्येत्यादिश्लोकः यथायंत्रसान्प्राणान्स्त्र्यादीन् वारिमध्येविगाह्य प्रविश्योदकेन शस्त्रभूतेनमारयति कथमाक्रम्यपादा दिनामइतिगम्यते मार्यमाणस्यमहामोहोत्पादकत्वात्संक्लिष्टचित्तत्वाच्चभवशतदुःखवेदनीयमात्मनोमहामोहंप्रकरोति १ तदेवंभूतंत्रसमारणेनैकं मोहनीय स्थानमेवंसर्वत्रेति १ शीर्षाश्लोकः शीर्षावेष्टेनार्द्रचर्मादिमयेनयः कश्चिद्वेष्टयतिस्त्र्यादित्रसानितिगम्यते अभीक्ष्णंभृशन्तीव्रोऽशुभः समारःसइति द्रव्यस्यगम्यमानत्वा त्समार्यमाणस्य महामोहोत्पादकत्वेनजात्मनो महामोहंप्रकुरुतइति यावत्करणात् केषुचित्सूत्रपुस्तकेषु शेषमोहनीयस्थानाभिधानपराः श्लोकाः सूचिताः केषु

॥ मूल ॥

च्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २९ ॥ तीसंमोहणियठाणा प० तं० ।
जेयावितसेपाणे । वारिमज्झेविगाहिया ॥ उदएणकम्ममारेई । महामोहंपकुव्वइ ॥ १ ॥ सीसावेढेइजेकेई ।

॥ भाषा ॥

मारना परितापथी ठांढायासे सर्वदुःखनों अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये । इति गुणत्रीसमनों ठाणो समस्तम् ॥ २९ ॥ हिवे तीसमो ठाणो लिखियेछे त्रीस मोहनीकर्मना ठाणाकह्या । तिहां सामान्येकर्म आठप्रकारना विशेषथी चतुर्थकर्म प्रकृति तेमोहनीयकर्म तेहना स्थानक त्रीसकह्या। तेकहेछे । जेकोइ स्त्रीआदिक त्रस प्राणीने पांणीमांहि बोलीनें उदक शस्त्रं करीने आक्रमें तेमहामोहनीय कर्मबांधे। भवनाशतसहस्त्रलगें वेदनीयकर्म उपार्जे १ । शीर्षा वेष्ठनंकरी चर्ममय बांधेकरी जेकोइ प्राणीनो मस्तक अत्यर्थं वींटे तीव्र अशुभ समाचारनो धणी आगला मारतानें महामोह उपजाविवा पणाथकी आत्मानें

श्रोतारंप्रमुखमित्यर्थः तथाआह्रत्यावरुद्धा प्राणिनंततः अंतर्नदंगलमध्येरवंकुर्वंतं
चित्तृद्दयंत एवेतितेव्याख्यायन्ते २ पाणिनाहस्तेनसंपिधाय स्थगयित्वाकिंतत्
घुरुघुरायमाणमित्यर्थः मारयतिमद्वतिगम्यते महामोहंप्रकरोतीतितृतीयं ३ जाततेजसंवैश्वानरं समारभ्यप्रज्वाल्यबहुंप्रभूतं अवरुध्यमहामण्डपवाटादिषुप्रचि
प्रजनंलोकं अंतर्मध्यंधूमेन वह्निलिंगेन अथवा अंतर्धूमोयस्यामावंतर्धूमस्तेनजाततेजसा विभक्तिपरिणामात् मारयति योसौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्थं ४
शीर्षेशिरसिय: प्रहंतिखड्गमुद्गरादिना प्रहरतिप्राणिनमितिगम्यते किंभूतेस्वभावतः शिरसिउत्तमांगे सर्वावयवानां प्रधानावयवे तद्विघातेऽवश्यंमरणा चेतसा

पाणिणासंपहित्ताणं । सयमाचरियपा
णावरुंदइअन्तिरकणं ॥ तिव्वासुन्नसमायारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ २ ॥ जायतेयंसमारप्प । वद्धुंरुंभियाजणा ॥ अंतोधूमेण
णिणं ॥ अंतोनदंतंमारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३ ॥ सीसम्मिजेपहणइ । उत्तमंगम्मिचेयसा ॥ विभज्जमत्थयंफाले । महामोहंप
मारेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ४ ॥ पुणापुणापणिधिए । हरित्ताउवहसेजणं ॥ फलेणअदुवदंडेणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ६ ॥ गूढा
कुव्वइ ॥ ५ ॥

तेमहामोहनीय कर्मउपार्जै ३ । जाततेजा
हाथेंकरी आगलानां मुखरुंधी आच्छादीभींचीनें गलामांहे घुर्घुराट शब्दकरतायकानेंमारे
महामोह उपार्जे २ । जेप्राणी दुष्टपरिणामे करी प्राणी
अग्नि वहीत प्रज्वालीने वाडादिकनें अवरुंधीने रोकीने अनो मडप।दिकमां धूमेकरी मारे तेमहा मोहनीय कर्मकरे ४ । पुनः पुनः वारंवार कपटें करीनें जि
ना उत्तमांगनें मांथानेविषे खड्गादिकेंकरी मारे विहचीनेमस्तकनें काटीने मारे तेपुरुष महामोहनीयकर्म उपार्जे ५। जिज्ञ
मवाटपाडा वाणियांनो वेषकरीने मार्ग परनै साथेचालीनेमार्ग मारीने आनंदपणायकी उपहसे विजोरादिक फलेकरी अथवा दंडेकरी हन्यमान मूर्खज

संक्लिष्टेनमनसा यथाकथंचिदित्यर्थः तथाविभज्यमस्तकं प्रकृष्टप्रहारदानेन स्फोटयतिविदारयति ग्रीवादिकं कायादपीतिगम्यते महत्वस्यगम्यमानत्वात् मह ॥ टीका ॥
मोहंप्रकरोतीतिपंचमं ५ पुनःपुन्येनप्रणिधिनामायातः यथा २ वणिजकादिवेषं विधाय गलावर्त्तकाःपथिगच्छतामहगत्वा विजनेमारयंति तथाहत्वा विना
श्ययइतिगम्यते उपहसेत् आनन्दातिरेकात् जनंमूर्खलोकंहन्यमानं केनहत्वा फलेन योगविभावितेनमातुलिंगादिना अथवा तथादण्डेन प्रसिद्देनसइतिगम्यते
महामोहंप्रकरोतीतिषष्ठं ६ गूढाचारीप्रच्छन्नाचारवान् निगूहयेतगोपयेत् स्वकीयंप्रच्छन्नंदुष्टमाचारं तथामायांपरकीयां माययास्वकीययाच्छादयेत् यथा
शकुनिमारकाश्छद्मगात्मानमावृत्यशकुनीन् गृह्णन्तः स्वकीयमायया शकुनिमायांछादयन्ति । तथाअसत्यवादीनिह्नवी अपलापकः स्वकीयायामूलगुणोत्तर
गुणप्रतिसेवायाः सूत्रार्थयोर्वामहामोहंप्रकरोतीति सप्तमं ७ ध्वंसयतिमाययाभ्रंशयति इतियःपुरुषाभूतेनासद्भूतेनकं अकर्मकमविद्यमानंदुश्चेष्टितं आत्मकर्मणा
त्मकृता ऋषिघातादिना दुष्टव्यापारेण अदुवा अथवायदात्मनः कृतंतदाश्रित्य परस्यसमक्षेमचलमकार्षीरिव तन्महापापमिति ददति वदिक्रियायोगः गम्य

यारीनिगूहिज्जा । मायंमायाएछायए ॥ असच्चवाईणिराहाई । महामोहंपकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसेइजोअभूएणं । अ ॥ मूल ॥

ननं हसे ते महामोहनीयकर्म उपार्जन करे ६ । गुप्तछे आचार कपट जेहना तेगूढाचारी पोतानुं प्रच्छन्नदुष्टाचारप्रते गोपवे परनी मायाप्रते पोतानी माया ॥ भाषा ॥
करीढांके असत्यवादी झूठबोलिवी मूलगुण उत्तरगुण खंडीने गोपवे ते महामोहनीयकर्म उपार्जे ७ । नथी चेष्टितहेकर्म जेहनो एहवा पुरुषप्रते पोताना
कीधा ऋषिघातादिक अणहुते कर्मकरीमारे अथवा पोतानुं कीधुं कर्म तेहने आश्रयणकरी परसमक्षेकहे जे एह खोटोकर्म एहनेहीज कीधो तेमहा मोहनी

॥ टीका ॥

मानत्वात् सद्दत्यस्यापि गम्यमानत्वात् महामोहंप्रकरोतीत्यष्टमं ८ जानानः यथा अनृतमेतत्परिषदः सभायांबहुजनमध्येइत्यर्थः सत्यामृषा किंचित्सत्यानि बह्
मयानिअस्तूनितिआक्यानिवाभाषते अच्चीणभंभः अनुपरतकलहः यःसइतिगम्यते माहामोहम्प्रकरोतीति नवमं९ अनायकोऽविद्यमाननायको राजातस्यनयवान्
नीतिमानमात्यः मतस्यैवराज्ञोदारान् कलत्रं दारंवा अर्थागमस्योपायं ध्वंसयित्वा भोगभोगान् विदारयतीति संबंधः किंकृत्वा विपुलं प्रचुरमित्यर्थः विच्चोभ्य
सामंतादिपरिकरभेदेन मंत्रीभनादनायकं तस्यक्षोभंजनयित्वेत्यर्थः कृत्वाविधाय णमित्यलंकारे। प्रतिवाह्या मनधिकारिणीं दारेभ्योऽर्थागमद्वारेभ्यो वादार
न् राज्यंवास्वयमधिष्ठायेत्यर्थः। तथाउपगंतमपि समीपमागच्छंतमपि सर्वस्वापहारेकृते प्रावृतेना तुल्योपमैः करुणैर्वचनैरनुकूलयितुमुपस्थितमित्यर्थः भं
पयित्वाऽनिष्टवचनावकाशंकृत्वा प्रतिलोमाभिस्तस्य प्रतिकूलाभिर्वाग्भि र्वचनै रेतादृशस्तादृशस्त्वमित्यादिभिरित्यर्थः भोगभोगान् विशिष्टान् शब्दादीन्

॥ मूल ॥

कम्मंत्तुत्तकम्मणा ॥ ऋदुवातुममकासित्ति। महामोहंपकुव्वइ ॥ ८ ॥ जाणमाणोपरिसत्त। सच्चमोसाइंत्तासइ
ऋज्झाणझंझपुरिसे। महामोहंपकुव्वइ ॥ ९ ॥ ऋणायगस्सनयवं। दारंतस्सेवधंसिया ॥ विउलंविक्खोभइत्ताणं

॥ भाषा ॥

यकर्म उपार्जे ८। जाणतोथको पर्षदामांहि बेसीने सत्यामृषा कांइक सांचो कांइएक भूठो वाणीबोलि कलहथको आसस्योनथी निवर्त्यो नथी तेपुरुष महामो
हनीयकर्म उपार्जे ९। नथी विद्यमान जेहनो नायकराजा तेहना राज्यना नयवंत अमात्यमंत्री तेहराजाना दारा कलत्रप्रति अथवा अर्थआयवाना उपाय
प्रति ध्वंसे विनसाडे स्युं करी ध्वंसे प्रचुर सामंतादिकप्रति क्षोभीने भेदपाडीने वली करीनें स्युं करीने कलत्रथकी अथवा अर्थागमद्वारथकी लेवाने योग्य
नथी एहवो राज्य लक्ष्मीयें पोतेंज अधिष्ठान करीने मध्या समीपें आवताने एतले सर्वधन लीयेंथकें दीनस्वरेकरी चाटुवचनबोलतो एहवाने भांपीने सामो

विद्मारयतियोमीमहामोहं प्रकरोतीतिदशमं १० अकुमारभूतो ऽकुमारब्रह्मचारीमन् यः कश्चित् कुमारभूतोहं कुमारब्रह्मचारी अहमिति वदति अथचस्त्रीषु ॥ टीका ॥
गृद्धोवमकस्त्रीणा मेवायत्तइत्यर्थः अथवावसतिग्रामे समहामोहंप्रकरोतीत्येकादशं ११ अब्रह्मचारी मैथुनादनिवृत्तोयः कश्चित्तत्कालएवामैव्याब्रह्मचर्यं
ब्रह्मचारी सांप्रतमित्यतिधूर्त्ततया परप्रपंचनायवदति तथाच एवमयोभावहं सतामनादेयं भणन् गर्दभइवगवांमध्ये विस्वरंनवृषभवन्मनोज्ञं नदतिमुह्यति
नदंनादशब्दमित्यर्थः तथायएवंभणत्यात्मनोऽहितो नहितकारी बालोमूढो मायामृषावादगग्राव्यानृतं प्रभूतंभाषते यस्त्वेवंनिंदितंभाषते कया स्त्रीविषयगृद्धया

किच्चाणंपडिवाहिरं ॥ १० ॥ उवगंतंपिझंपित्ता । पडिलोमाहिंवग्गुहिं ॥ भोगभोगेवियारेई । महामोहंप ॥ मूल ॥
कुव्वइ ॥ ११ ॥ अकुमारभूएजेकेई । कुमारभूएत्तिहंवए ॥ इत्थीहिगिद्धेवसए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १२ ॥
अबंभयारीजेकेई बंभयारीत्तिहंवए ॥ गद्दहेव्वगवंमज्झे । विस्सरंनयईनदं ॥ १३ ॥ अप्पणोअहिएबाले । माया

अतिचालो करीने प्रतिकूलवचने करी रे तुं एहवो नीचछे एहवा वचनेंकरी भोग विशिष्ट शब्दादिकने भोगविवाने अर्थे विदारे हरे तेमहामोहनीय कर्म ॥ भाषा ॥
करे १० । नथी कुमार भूत एतले परण्यो छे जेकोई लोकमांहि हुं कुमारभूतछुं एतले बालब्रह्मचारी हुं छुं एहवुं कहे वली स्त्रीसाथे गृद्ध लोलुप वली स्त्री
ने आधीन अथवा स्त्रीमाथेंवसे ते महामोहनीयकर्मकरे ११ । अब्रह्मचारीथको जेकोई लोकमांहि हुं ब्रह्मचारी एतले मैथुन विरत छुं एहवो कहे ते शोभा
रहित साधुजनने अग्राह्य गर्दभनीपरे गायना टोलामां वृषभनीपरें मनोज्ञ नथी एहवो शब्दकरे बोले एहवो जे बोले ते आपणा आत्मानो अहितकारी अ
ने बाल अज्ञानी स्त्रीसाथे लंपट थईने माया सहित मृषा घणुं बोले ते महामोहनीय कर्मकरे १२ । जेराजादिकप्रति आश्रितहोइ जीविकाने लाभेकरी

॥ टीका ॥

हेतुभूतया सद्दृत्थंभूतोमहामोहंप्रकरोतीति द्वादशं १२ यंराजानंराजामात्यादिकं वा निश्रितआश्रितउद्दहते जीविकालाभेनात्मानंधारयति कथंयशसातस्य राजादेः सत्कोयमितिप्रसिद्ध्याअभिगमनेन वासेवया आश्रितराजादे स्तस्यनिर्वाहकारणस्य राजादेर्लुभ्यतिवित्तेद्रव्येयः समहामोहंप्रकरोतीति त्रयोदशं १३ ईश्वरेणप्रभुणा अदुवा अथवा ग्रामेणजनसमूहेन अनीश्वरईश्वरीकृतः तस्यपूर्वावस्थायामनीश्वरस्य संप्रग्रहीतस्य पुरस्कृतस्य प्रभ्वादिनाश्रीर्लक्ष्मीरतुलाअसाधारणाआगताप्राप्ता अतुलंवाययाभवतीत्येवं श्रोः समागता आगता श्रीकस्यप्रभ्वाद्युपकारकविषये ईर्ष्यादोषेणाविष्टोयुक्तः कलुषेण द्वेषलोभादिलक्षणपापेनाविलमाकुलंवाचेतोयस्य सतथा योंतरायंव्यवच्छेदं जीवितश्रीभोगानां चेतयतेकरोति प्रभ्वादे स्सौमहामोहंप्रकरोतीति चतुर्दशं १४ सर्पीनागीयथाग्रण्डउडं

॥ मूल ॥

मोसंयकुंसे ॥ इत्थीविसयगेहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ १४ ॥ जंनिस्सिएउव्वहइ । जससाहिगमेणवा ॥ तस्सलुब्भइवित्तम्मि । महामोहंपकुव्वइ ॥ १५ ॥ ईसरेणअदुवागामेणं । अणिस्सरेईसरीकए ॥ तस्ससंपयहीणस्स । सिरीअतुलमागया ॥ १६ ॥ ईसादोसेणआविठे । कलुसाविलचेयसे ॥ जेअंतरायंचेएइ । महामोहंपकु

॥ भाषा ॥

पामानंधारे अने राजसंबंधनी प्रसिद्धियकी तथा सेवायकी तेआश्रित राजाना धननेविषे लोभकरे तेमहा मोहनीय कर्मकरे १३। ईश्वरें ठाकुरें अथवा ग्रामें जनसमूहें अनीश्वरहुतो तेईश्वरकीधो असमर्थहुतो तेसमर्थकीधो ते जेपूर्वे अनीश्वरहंतो संपदा रहितहुतो तेहने ठाकुरादि प्रसादेकरी श्रीलक्ष्मी अतुल असाधारण आवी पामीके जेहनेते उपकारी मूलगो ठाकुर तेहनेविषे ईर्ष्यादोषें मच्छरदोषेंकरी आविष्ट सहित द्वेष लोभादिकलक्षण पापेंकरी आकुल व्याप्यो छे चित्त जेहनो एहवो जेकोइ उपकारी प्रभुने अंतरायप्रति चेतेकरे तेहनी आजीविकानो विछेदकरे ते महामोहनीय कर्मकरे १४। सर्पिणी जिम पोता

॥ टीका ॥

अण्डककूटं स्वकीयमण्डकसमूहमित्यर्थः अण्डस्यवापुटं संबद्धदलद्वयरूपं हिनस्ति एवंभर्त्तारं पोषयितारं योविहिनस्ति सेनापतिंराजानं प्रशास्तारममात्यं धर्मपा ठकंवासमहामोहंप्रकरोतीति तन्मरणेवहुजनदुस्थताभवतीति पंचदशं १५ योनायकंवाप्रभुंराष्ट्रस्य राष्ट्रमहत्तरादिकमितिभावः नेतारं प्रवर्त्तयितारं प्रयोजनेषु निगमस्यवाणिजकसमूहस्य कं श्रेष्ठिनं श्रीदेवताङ्कितपट्टबद्धांकितभूतं बहुरवंभूरियशं प्रभुतरयशसमित्यर्थः हत्वा महामोहम्प्रकुरुतेइतिषोडशं १६ बहुंजनस्यपंच पादीनांलोकानां नेतारंनायकं द्वीपइवद्वीपःसंसारसागरगतानामाश्वासस्थानं अथवादीपइवदीपो ऽज्ञानांधकाराहतबुद्धिदृष्टिप्रसराणां शरीरिणांहेयोपादे यवस्तुस्तोमप्रकाशकत्वात् तं अतएवत्राणमापद्रक्षणंप्राणिनां एतादृशं यादृशागणधरादयोभवंति नरं प्रावचनिकादिपुरुषंहत्वामहामोहम्प्रकरोतीति सप्तदश

॥ मूल ॥

व्वइ ॥ १७ ॥ सप्पीजहाअंडउडं । भत्तारंजोविहिंसइ ॥ सेणावइपसत्थारं । महामोहंपकुव्वइ ॥ १८ ॥
जेनायगंचरठस्स । नेयारंनिगमस्सवा ॥ सेठिंबहुरवंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ १९ ॥ बहुजणस्सनेयारं ।
दीवंताणंचपाणिणं ॥ एयारिसंनरंहंता । महामोहंपकुव्वइ ॥ २० ॥ उवठियंपडिविरयं । जंन्निरकुंजगजीवणं ॥

॥ भाषा ॥

ना ईण्डानापुट समूह हणेमारें। तिम पोताना भर्तार पोषकने हणेमारे सेनापतियें राजायें प्रशस्त प्रधानने धर्मशास्त्रपठिकने हणेमारे तेमहामोहनीय कर्म करे १५। जेकोइ राष्ट्रना देशना नायकने तथा निगम वणिक्समूह तेहना नेताने प्रवर्त्तकने तथा श्रेष्ठि नगरमुख्य लक्ष्मीअंकित पट्टबद्ध तथा घणायशनो धणी एहवाने हणेमारे ते महामोहनीय कर्मकरे १६। बहुजननो घणालोकनो नेता नायकहोइ एहवाने तथा द्वीपसरीखा संसारसागरमां आश्रयभूत आपदाथकी रक्षक एहवा प्राणीने हणे ते महामोहनीय कर्मकरे १७। प्रव्रज्यानेंविषे उपस्थित सावधान थयोछे तथा सर्वसावद्य थकी निवर्त्यो जे कोइ

॥ टीका ॥

१७ उपस्थितंप्रव्रज्यायांप्रविव्रजिषुमित्यर्थः प्रतिविरतं सावद्ययोगेभ्योनिवृत्तं प्रव्रजितमेवेत्यर्थः संयतंसाधुंसुतपस्विनं तपांसिकृतवंतंशोभनंवातपः श्रितमा श्रितं क्वचित् जेभिक्खुंजगजीवणंतिपाठः तत्रजगन्ति जंगमानि अहिंसकत्वेनजीवयतीति जगज्जीवनस्तं विविधैः प्रकारैरुपक्रम्य बलादित्यर्थः धर्माद्भ्रंशयति यः समहामोहम्प्रकरोतीति अष्टादशं १८ यथैवप्राक्तनं मोहनीयस्थानं तथैवेदमपि अनंतज्ञानिनां ज्ञानस्यानंतविषयत्वेन अक्षयत्वेनवाजिनानामर्हतां वरदर्शिनां चायिकदर्शनत्वात् तेषां येज्ञानाद्यनेकातिशयसंपदुपेतत्वेनभुवनत्रयेप्रसिद्धाः अवत्तव्यंअवर्णवादोवक्तव्यत्वेनयस्यास्तिसो ऽवर्णवान् यथा स्तिकवान् सर्वज्ञोज्ञेयस्यानंतत्वात् उक्तंच अज्जविधावइनाणं अज्जविय अणंतओअलोगोवि अज्जविनकोइविउहं पावंतिसव्वसुयंजीवो महपावतितोसंभोहोइ अ लोउनवेयमठंतित्ति अदूषणंचैतदुत्पत्तिसमयएव केवलज्ञानं युगपल्लोकालोकौ प्रकाशयदुपजायते यथापवरकांतर्वर्त्तिदीपकशिखापवरकमध्यमित्यभ्युपगमादिति बालोऽज्ञोमहामोहं प्रकरोतीति एकोनविंशतितमं १९ नैयायिकस्यन्यायमनतिक्रांतस्य मार्गस्य सम्यग्दर्शनादेः मोचपथस्यदुष्टोद्विष्टोवा ऽपकरोति

॥ मूल ॥

कम्माधम्माउभंसेइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २१ ॥ तहेवाणंतणाणीणं । जिणाणंवरदंसिणं ॥ तेसिंअवसवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २२ ॥ नेआइअस्समग्गस्स । दुठेअवयरईबहुं ॥ तंतप्पियंतोभासेइ । महामोहंप

॥ भाषा ॥

भिक्षु जगजोवन अहिंसादि धर्मे जगतना जीवनभूत एहवा यतीने विविधप्रकारे करी बलात्कारे धर्मथकी भ्रंसे पाडे तेमहामोहनीय कर्मकरे १८। तिमज पूर्वनोपरी अनंतज्ञानी अनंत ज्ञानना धणी राग द्वेषना जयकरणहार वरप्रधान दर्शन चायक सम्यक्त्वना धणी एहवाने अवर्णवाद बोले बाल अज्ञानी ते महामोहनीय कर्मकरे १९। जे न्यायानुसार मार्गनो दुष्टप्राणी अपकारकरे द्रोहकरे घणो तया ते मार्गने निंदाकरी भासे बोले मिथ्यात्वे घाले ते महा

अपकारंकरोतीति बहुमत्यर्थंपाठांतरेणापहरति बहुजनं विपरिणमयतीतिभावः तंमार्गंतिप्पर्यंतीति निंदन्भावयति निंदयाद्वेषेणवावासयति आत्मानंपरं ॥ टीका ॥
चयःसमहामोहंप्रकरोतीति विंशतितमं २० आचार्योपाध्यायैः श्रुतंस्वाध्यायंविनयंच चारित्रंग्राहितः शिक्षितः तेनैवखिंसतिनिन्दति अल्पश्रुताएतेइत्यादि
मानतः अन्यतीर्थिकसंसर्गकारिणइत्यादिदर्शनतः मन्दधर्माणः पार्श्वस्थादिस्थानवर्त्तिनः इत्यादि चारित्रतः यःसएवंभूतोबालो महामोहंप्रकरोतीत्येकविंश
तितमं २१ आचार्यादीन्श्रुतदानात् ग्लानावस्थाप्रतिचरणादिनिस्तर्पितवतः उपकृतवतः सम्यक्नतान्प्रतितर्पति विनयाहारोपध्यादिभि र्नप्रत्युपकरोतीति
तथा अप्रतिपूजको न पूजाकारी तथास्तब्धोमानवान् समहामोहम्प्रकरोतीति द्वाविंशतितमं २२ अबहुश्रुतश्चयः कश्चिच्छ्रुतेन प्रविकत्थते आत्मानंश्लाघते श्रुत
वानहमनुयोगधरोहमित्येवं अथवा कस्मिंश्चित्त्वमनुयोगाचार्यो वाचकोवेति पृच्छति प्रतिभणति आत्मनःस्वाध्यायवादं वदति विशुद्धपाठकोहमित्यादिकंयः स

कुव्वइ ॥ २३ ॥ आयरियउवज्झाएहिं । सुयंविणयंचगाहिए ॥ तेचेवखिंसईबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ २४ ॥ ॥ मूल ॥
आयरियउवज्झायाणं । सम्मंनोपडितप्पइ ॥ अप्पडिपूयएथद्धे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २५ ॥ अबहुस्सुएयजे

मोहनीय कर्मकरे २० । जेणे आचार्ये उपाध्याये श्रुतशास्त्र तथा विनय चारित्र ग्रहिवाड्यो सिखाड्यो तेहीज आचार्यने खींसे निंदे बाल अज्ञानी ते महामो ॥ भाषा ॥
हनीय कर्मकरे २१ । जेकोइ आचार्य उपाध्यायने श्रुतदानादिकना महा उपकारीने सम्यक् प्रकारे तर्प्पनही उपरांठो उपकार नकरे तथा ते आचार्यनी
पूजा नकरणहार तथा स्तब्ध अभिमानी ते महामोहनीय कर्मकरे २२। अबहुश्रुत अपंडितथको जेकोइ श्रुतेंकरी शास्त्रेंकरी आत्माने प्रविकंथे श्लाघायेहुं श्रु
तवंतछुं एम कहे वली स्वाध्यायवादवदे विशुद्धशास्त्रनोहुं पाठकछुं एमकहे ते महामोहनीय कर्मकरे २३ । अतपस्वी थको जेकोइ तपेकरी पोताना आत्माने

॥ टीका ॥

महामोहं श्रुतालाभहेतुं प्रकरोतीति त्रयोविंशतितमं २३ सुगमं पूर्वार्द्धं पूर्ववत् नवरम् सर्वलोकात् सर्वजनात् सकाशात्परः प्रकृष्टस्तेनः चौरो भावचौरत्वात् पकुव्वई अतपस्विनोहेतुं प्रकरोतीति चतुर्विंशतितमं २४ साधारणार्थं मुपकारार्थं यःकश्चित् आचार्यादि ग्लानरोगवति उपस्थिते प्रत्यासन्नीभूतेप्रभुःसमर्थं उपदेशनौषधादिदानेनच स्वतोन्यतश्चोपकारं नकरोति कृतमुपेक्षते इत्यर्थः केनाभिप्रायेणेत्याह ममाप्येषनकरोति किंचनापिकृत्यम् समर्थोपिसन्विद्वेषेणासमर्थोवाऽयं बालत्वादिना किंकृतेनान्यंपुनरुपकर्तुमशक्तत्वादितिर्लाभेनेति शठः कैतवयुक्तः शक्तिलोपनात् निकृतिर्मायातद्विषये प्रज्ञानंयस्य तथा ग्लानःप्रतिचरणीया माभवत्विति ग्लानवेषमहंकरोमीति विकल्पवानित्यर्थः अतएवकलुषाकुलचेताः आत्मनश्चाबोधिको भवांतराप्राप्तव्य जिनधर्मलाभाप्रतिजागरणाश्रो

॥ मूल ॥

केई । सुएणंपविकत्थई ॥ सज्झायवायंवयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २६ ॥ श्रतवस्सीएउजेकेई । तवेणपविकत्थइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २७॥ साहारणठाजेकेई । गिलाणम्मिउवठिए ॥ पभूणकुणईकिच्चं । मज्झंएसेनकुव्वइ ॥ २८ ॥ सढेनियइपन्नाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ श्रप्पणोयअबोहीए । महामोहंप

॥ भाषा ॥

विकंथे श्रावाकरे हुंतपस्वी छुं एमकहे ते सर्वलोकथकी परमस्तेन चोरछे ते महामोहनीय कर्मकरे २४। साधारणने अर्थें उपकारने अर्थें जेकोइ आचार्यादिकने ग्लानपणे तथा रोगीपणे उपस्थित ढुंकडो आव्यो निकट आव्यो तेहने उपदेश औषधादि दानेंकरी उपकार करवामां समर्थछे पणि मुझने एह नकरतोहुतो एमाटेहुं कांइक नकरुं एह शठधूर्त निकृति मायातेहनेविषे चतुरथइ ग्लानीनूं हुं औषधोपचार करुंछुं एहवी कल्पनायेंकरी कलुषितछे चित्त जेहनो आपणा आत्मानो अबोधक भवांतरें धर्मनो अर्थीनथी ते महामोहनीय कर्मकरे २५। जेकोइ कथा प्रबंध शास्त्र तद्रूप जे अधिकरण एतले प्राणिना

त्रिबोधना श्रमश्रात्परेषांवाऽबोधिकः अविद्यमानो बोधोऽस्मादितिव्युत्पादनात् येहि तदीयं ग्लानाप्रतिचरणमुपलभ्य जिनधर्मपराङ्मुखाभवंति तेषामबो त्रिकस्तथेति सएवंभूतो महामोहम्प्रकरोतीति पञ्चविंशतितमं २५ यः कथावाक्यप्रबंधःशास्त्रमित्यर्थ स्तद्रूपाण्यधिकरणानि कथाधिकरणानिकौटिल्यशास्त्रा दीनि प्राण्युपमर्दनप्रवर्त्तकत्वेन तेषामात्मदुर्गतावधिकारित्वकरणात् कथया वा येनापि स्तुपत गानममृयतेत्यादि तया अधिकरणानि तथाविधंप्रवृत्तिरू पाणि अथवा कथा राजकथादिका अधिकरणानिच यंत्रादीनिकलहा वा कथाधिकरणानितानि संप्रयुंक्ते पुनःपुनरेवं सर्वतीर्थानां भेदायसंसारसागरतरण कारणत्वात् तीर्थानिज्ञानादीनि तेषांसर्वथानाशायप्रवर्त्तमानः समहामोहंप्रकरोतीति षड्विंशतितमं २६ । कंच्चं नवरं अधार्मिकायोगानिमित्तवशीकरणा दिप्रयोगः किमर्थंश्लाघाहेतोः सखिहेतोर्मित्रनिमित्तमित्यर्थः इतिसप्तविंशतितमं २७ । यश्चमानुष्यकान्भोगान् अथवापारलौकिकान् तेत्ति विभक्तिपरिणामः

॥ टीका ॥

कुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिगरणाइं । सपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणभेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥
जेअग्रहम्मिएजोए । संपउंजेपुणोपुणो ॥ साहाहेउसहीहेउ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जेअमाणुस्सएभोए ।

॥ मूल ॥

उपमर्दहेतु आत्मानि दुर्गतीमांहि अधिकार कारी एमाटे अधिकरण कौटिल्यशास्त्र तेहने वली वली प्रयुंजे विस्तारे ते सर्वतीर्थ ज्ञानादिकना सर्वथा नाशे प्रवर्त्तमान महामोहनीय कर्मकरे २६ । जेकोइ अधार्मिक प्रयोग निमित्त वशीकरणादिक प्रयोगप्रते श्लाघाने अर्थे वली मित्रने अर्थे संप्रयुंजे वली वली व्या पारे ते महामोहनीय कर्मकरे २७। जेकोइ मनुष्य संबंधी अथवा परलोक संबंधी भोग विषयादिकनेविषे अतृप्तहुओथको भोगप्रते आस्वादे अभिलासे आश्र यणकरे ते महामोहनीय कर्मकरे २८ । जेकोइ बाल अधर्मी ऋद्धि विमानादिकनी संपत् द्युति शरीराभरणनीदीप्ति यशकीर्त्ति वर्ण शुक्लादि शरीर संबंधी

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

तेषुवा अप्यतृत्प्तिमगच्छत् आस्वादते अभिलषति आश्रयतिवा समहामोहं प्रकरोतीति अष्टाविंशतितमं । २८ । ऋद्धिर्विमानादिसम्पत् द्युतिः शरीराभर
णादीनिः यशःकीर्त्ति वर्णः शुक्लादिः शरीरसंबन्धी देवानां वैमानिकानांबलंशरीरं वीर्यंजीवप्रभवंअस्त्यत्यध्याहारः तेषामिहअपेक्ष्यमानत्वात् तेषामपिदेवाना
मनेकातिशायिगुणवतामवर्णवान् अश्लाघाकारी अथवा अवर्णवान् केनोल्लापेन देवानाऋद्धिर्देवानांद्युतिरित्यादिका काश्लाघ्येयं नकिंचिद्देवानामृद्धयादि
कमस्तीत्यवर्णवादवाक्यभावार्थः यएवंभूतः समहामोहं प्रकरोतीति एकोनत्रिंशत्तमं२९ । अपश्यन्योब्रूतेपश्यामिदेवानित्यादिस्वरूपेणाज्ञानी जिनस्येवपूजाम
र्थयतेयः सजिनपूजार्थी गोशालकवत् समहामोहं प्रकरोतीति त्रिंशत्तम ३० । रौद्रादयोमुहूर्त्ताआदित्योदयादारभ्य क्रमेण भवन्ति एतेषांचमध्येमध्यमाः षट्

॥ मूल ॥

अदुवापारलोइए ॥ तेतिप्पयंनोञ्आमयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३२ ॥ इड्ढीजुईजसोवन्नो । देवाणंबलवी
रियं ॥ तेसिंअवसवंबाले । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३३ ॥ अपस्समाणोपस्सामि । देवेजक्खेयगुज्झगे ॥ अन्नाणी
जिणपूयठी । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३४ ॥ थेरेणंमंडियपुत्ते तीसंवासाइंसामन्नपरियायंपाउणित्ता सिद्धे बुद्धे

॥ भाषा ॥

देवतानो बल शरीर प्रभव वीर्य जीवप्रभव एहवा देवतानो अवर्णवाद बोले ते महामोहनीय कर्मकरे २९ । देवताने तथा यक्षने व्यंतर विशेषने गुह्यकने भ
नादरतो थको हुंआदरुं एमकहे तेस्वरूपथी अज्ञानी केवल जिननी अरिहंतनी पूजानो अर्थीछे गोशालानीपरे ते महामोहनीय कर्मकरे ३० । एह ३०
मोहनीय स्थानकह्या । स्थविर मंडितपुत्र छट्ठा गणधर तीस वर्षलगे सामान्य पर्याय दीक्षा पालीने सिद्धथयो । कृतार्थथयो तत्वनो जाणकार थयो यावत्

॥ मूल ॥

जावसव्वदुरकप्पहीणे एगमेगेणंश्रहोरत्ते तीसंमुहुत्ते मुहुत्तगेणंप० एएसिणंतीसाएमुहुत्ताणं तीसंनामधेज्जा प० तं० रोद्दे सत्ते मित्ते वाऊ सुपीए अभिचंदे माहिंदे पलंबे बंभे सच्चे आणंदे विजए विस्ससेणे पाया वच्चे उवसमे ईसाणे नठे भाविअप्पा वेसमणे वरुणे सतरिसभे गंधव्वे अग्गिवेसायणे आतवे आवत्ते नठवे भूमहे रिसभे सव्वठसिद्धे रक्खसे ३० । अरेणंअरहा तीसंधणु उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सहस्सारस्सणं देविंदस्स देवरन्नो तीसं सामाणियसाहस्सीउ प० पासेणंअरहा तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए समणेभगवं महावीरे तीसंवासाइं आगारवासमज्झे वसित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए

॥ भाषा ॥

सर्वकरी कर्मथको मुकाणा सर्वदुःखथको प्र[illegible] । [illegible] अहोरात्र त्रीस मुहूर्त्तनो होय । ते त्रीसमुहूर्त्तना त्रीसनामधेयनामकह्या । तेकहेछे । रौद्र १ शक्त २ । मित्र ३ । वायु ४ । सुपीत ५ । अभिचंद्र ६ । माहेन्द्र ७ । प्रलंब ८ । ब्रह्म ९ । सत्य १० । आनंद ११ । विजय १२ । विश्वसेन १३ । प्राजापत्य १४ । उपशम १५ । ईशान १६ । नष्ट १७ । भावितात्मा १८ । वैश्रमण १९ । वरुण २० । शतऋषभ २१ । गांधर्व २२ । अग्निवैश्यायन २३ । आतप २४ । आवर्त्त २५ । नष्टवान् २६ । भूमहान् २७ । ऋषभ २८ सर्वार्थसिद्ध २९ । राक्षस ३० । अरनाथ अठारमा तीर्थंकर त्रीस धनुष ऊंचपणेथया । सहस्रार नामा आठमा देवेंद्रना त्रीस हजार सामानिक देवताकह्या । पार्श्वनाथ अरिहंत त्रीस वर्षलगे गृहस्थावास मांहि वसीने गृहस्थथको अनगारपणे यतीपणे पाम्या श्रमण भगवंत श्री महावीर तीसवर्षलगे गृहस्थावासे वसीने घरवास छांडीने यतीपणो पाम्या । रत्नप्रभा पृथिवीना त्रीस लाख नरकावास कह्या । एणीयें र

॥ मूल ॥

रयणप्पन्नाएणं पुढवीए तीसं निरयावाससयसहस्सा प० इमीसेणं रयणप्पन्नाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइ
याणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाएपुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प०
असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तीसंपलिउवमाइं ठिई प० उवरिमउवरिमगेवेज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं
तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा उवरिममज्झिमगेवेज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं
उक्कोसेणं तीसंसागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवा तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससं
तिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तीसाएवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धियाजी
वा जे तीसाए नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करि

॥ भाषा ॥

त्नप्रभा पृथिवीने विषें केतलाएक नारकीनो त्रीस पल्योपमनो आउखोकह्यो । हेठे सातमी पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो त्रीस सागरोपमनो स्थितिकही
केतलाएक असुरकुमार देवतानो त्रीस पल्योपमनो स्थितिकही । उपरिम उपरिम ग्रैवेयकें एतले नवमे ग्रैवेयक विमानें देवतानो जघन्य त्रीस सागरोपम
नो स्थिति कही । जे देवता उपरिम मध्यम ग्रैवेयके आठमे ग्रैवेयक विमानें देवतापणे उपनाछे ते देवतानो उत्कृष्टो त्रीस सागरोपमनो स्थिति कही । ते देव
ता त्रीसें पखवाडें स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचो मूके ते देवताने त्रीसवर्ष सहस्रगये आहारनो अर्थ उपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जे त्रीसभवने अांत

कदाचिद्दिनेऽस्तमेंवंति कदाचिद्रात्राविति ॥ ३० ॥ एकत्रिंशत्तमस्थानकं सुगमं नवरं सिद्धानामादौ सिद्धत्वप्रथमएवसमयेगुणास्तेचाभिनिबोधिका ॥ टीका ॥

स्संति ॥ ३० ॥ एक्कतीसंसिद्धाइगुणा प० तंजहा खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे खीणे सुयणाणावरणे खीणे ओहिणाणावरणे खीणे मणपज्जवनाणावरणे खीणे केवलनाणावरणे खीणे चक्खुदंसणावरणे खीणे अचक्खुदंसणावरणे खीणे ओहिदंसणावरणे खीणे केवलदंसणावरणे खीणे निद्दा निद्दानिद्दा खीणे पयला पयलापयला खीणे थीणद्धी खीणे सायावेअणिज्जे खीणे असायावेयणिज्जे खीणे दंसणमो ॥ मूल ॥

रे सीझस्ये बूझस्ये मंकास्ये सर्वदुःखनो अंत करिस्ये मोक्षजास्ये ॥ इति त्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३० ॥ हिवे एकत्रीसमो समवाय लिखे छे। ॥ भाषा ॥ एकत्रीस सिद्धना आदिगुण प्रथमसमयमांहो ऊपना जे गुण ते सिद्धादिगुण कह्या ॥ ते कहेछे। क्षीण थयोछे आभिनिबोधिक ज्ञाननो आवरण एतले सर्व थापि मतिज्ञानावरण क्षय गयो छे जेहनो १। क्षीणथयो छे श्रुतज्ञानावरण २। वली अवधिज्ञानावरण क्षय ३। मनःपर्यवज्ञानावरण क्षय ४। केवल ज्ञानावरणक्षय ५। चक्षुदर्शनावरणक्षय ६। अचक्षुदर्शनावरणक्षय एतले आंखटाली वीजा च्यारइंद्रिय अचक्षु तेहना आवरणनो क्षय ७। अवधिदर्शना वरणक्षय ८। केवलदर्शनावरण क्षय ९। सुखेंजागे ते निद्रा तेहनोक्षय १०। दुःखेजागे ते निद्रानिद्रा तेहनो क्षय ११। वेठांऊभां आवे ते प्रचला तेहनोक्ष य १२। चालतां आवे ते प्रचलाप्रचला तेहनोक्षय १३। थीणद्धी अर्द्धवासुदेवनो बल तेहनोक्षय १४। सातावेदनीयकर्मक्षय १५। असातावेदनीयकर्मक्षय १६

॥ टीका ॥

वरणादित्रयस्वरूपाइति मन्दरोमेरुः सचधरणीतलेदशसहस्रविष्कंभइति कृत्वा यथोक्तपरिधिप्रमाणोभवतीति जयाणंसूरिएइत्यादि किलसूर्यस्य चतुरशी त्यधिकमण्डलशतंभवति मण्डलंचज्योतिष्कमार्गोभिधीयते तत्रजंबूद्वीपस्यांतराशीत्यधिकेयोजनशते पंचषष्ठि सूर्यमण्डलानिभवंति तथालवणसमुद्रेत्रीणित्रिं

॥ मूल ॥

॥ ७७ ॥ हणिज्जे खीणे चरित्तमोहणिज्जे खीणे नेरइआउए खीणे तिरिआउए खीणे मणुस्साउए खीणे देवाउए खीणे उच्चागोए खीणे निच्चागोए खीणे सुभनामे खीणे असुभनामे खीणे दाणंतराए खीणे लाभंतराए खीणे भोगांतराए खीणे उवभोगांतराए खीणे वीरिअंतराए ३१ मंदरेणंपव्वए धरणितले एक्कतीसंजोय णसहस्साइं छच्चेवतेवीसे जोयणसए किंचिदेसूणापरिक्खेवेणं प० जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियमंडलं उव

॥ भाषा ॥

दर्शनमोहनीय एतले सम्यक्त मोहनीय क्षय १७। चारित्रमोहनीय क्षय १८। नरकायुक्षय १९। तिर्यंचायुक्षय २०। मनुष्यायु क्षय २१। देवायु क्षय २२। उच्चैर्गोत्रक्षय २३। नीचैर्गोत्र क्षय २४ शुभनाम क्षय २५। अशुभनाम क्षय २६। दानांतराय क्षय २७ लाभांतरायक्षय २८। भोगांतराय क्षय २९ वीर्यांतराय क्षय ३०। उपभोगांतरायक्षय ३१। मेरुपर्वत भूमितले एकत्रीसहजार छसे त्रेवीस योजन कांइक न्यून परिधिये कह्यो। मेरुपर्वत भूमिने ऊपरें दसहजार योजन पिहुल पणेछे तेहनो परिधी त्रिगुणित एतले एकत्रीस हजार छसे त्रेवीस योजन कह्यो। सूर्यना पेंसठ मांडला निषधपर्वत उपरछे तेमांहिं सगला पहिलो एतले सर्वाभ्यंतर मंडल जगतीथकी एकसो अस्सी योजन छे। अने लवणसमुद्र मांहि तीन से तीस योजन अवगाहीने एकसो ओगणीस मांडला छे। सर्वमिली जंबूद्वीप मांहि एकसो चोरासी मंडल छे तेमांहि सर्वबाह्यमंडलें उपसंक्रमी आवीने सूर्य मकर संक्रांतिदिने भ्रमण करे। तेणें दिनें भरतक्षे

॥ टीका ॥

...योजनशतान्यवगाह्यकानाविंशत्याधिकं सूर्यमण्डलगतंभवति तत्रचसर्वबाह्यं समुद्रांतर्गतमंडलानांपर्यंतिमं तस्यचायामविष्कम्भो लक्षंषट्शतानि चयोजनानांषष्ठ्यधिकानि परिधिसुवृत्तक्षेत्रगणितन्यायेनत्रीणि लक्षाणि अष्टादशसहस्राणि त्रीणिशतानिपंचदशोत्तराणि ३१८३१५ एतावत्क्षेत्रमादित्योऽहोरात्रद्वयेनगच्छति तत्रचषष्ठिमुहूर्त्ताभवन्ति षष्ट्याभागापहारे यल्लब्धंतन्मुहूर्त्तगम्यक्षेत्रप्रमाणं भवति तत्र पंचसहस्राणित्रीणिचपंचोत्तराणिशतानि ५३०५। १५। ६० मुहूर्त्ते एतत्रदिवसार्द्धेनगुण्यते यदाचसर्वबाह्येमंडलेसूर्यश्चरति तदादिनप्रमाणं द्वादशमुहूर्त्ताः तदर्द्धंचषट् अतः षड्भिर्मुहूर्त्तैर्गुणितं मुहूर्त्तगतिप्रमाणं चक्षुः स्पर्शगतिप्रमाणंभवति एकत्रिंशत्सहस्राणि अष्टौचशतान्येकत्रिंशदधिकानि त्रिंशच्चयोजनद्विषष्टिभागाः ३१८३१। ३० अभिवर्द्धितमासोऽभिवर्द्धितसंवत्सर

॥ मूल ॥

संकमित्ता चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अठहिंअएक्कतीसेहिं जोयणसएहिं तीसाएसठिभागे जोयणस्स सूरिएचक्खुफासं हव्वमागच्छइ अभिवड्ढिएणं मासे एक्कतीसं

॥ भाषा ॥

...गत मनुष्यने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर एकयोजनना साठिया पंचत्रीसभाग अधिक वेगलोथको सूर्य चक्षुस्पर्श शीघ्र आवे । एतलेपोसी पूनिमि मकर संक्रांतिदिने एकतीसहजार आठसे एकतीस योजन ऊपर योजनना साठीया तीसभाग वेगलो होय सूर्य लवणसमुद्र मांहि तिवारे इहांनां मनुष्यने दृष्टिगोचर आवे । अभिवर्द्धितमास त्रीजे वर्षे आवे तेरहमासनो वर्ष होय । ते कहिके मास एकत्रीस रात्रिदिवस प्रमाणेंसातिरेक कांइएक भांझेरोजांणिवो । एतले अहोरात्रिना १२४ भागना १२१ अधिक एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरोथाय । जेणे काले सूर्य राशिभोगवे तेआदित्यमास सूर्यमा

॥ टीका ॥

स्य चतुश्चत्वारिंशदहोत्रद्विषष्टिभागाधिकत्र्यशीत्यधिकशतत्रयरूपस्य ३८३ । ४४ द्वादशोभागोऽभिवर्द्धितसंवत्सरस्यासौ यत्राधिकमासकोभवति तत्रत्रयोदशचंद्र मासात्मकत्वाच्चन्द्रमासस्य एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचदिनद्विषष्टिभागानांभवतोति साइरेगाइंति अहोरात्रस्यच चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानामेकविंशत्यु

॥ मूल ॥

सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० आइच्चेणं मासे एक्कतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइं राइं दियग्गेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसं पलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कतीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अ त्थेगइयाणं एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कतीसंपलिउव माइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिययाणं देवाणं जहन्नेणं एक्कतीसंपलिउवमाइं ठिई प० जे

॥ भाषा ॥

स कहिये एकत्रीसरात्रिदिवस कांइक विशेषाधिक जाणा ओछा अहोरात्रिअर्द्ध जाणा एकत्रीस रात्रिदिवस परिमाणें पूरा कह्यो। एणीयें रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी यें केतलाएक नारकोनी एकत्रीस पल्योपमनीस्थितिकही । हेठिम सातमीनरक पृथिवीयें केतलाएक नारकोनी एकत्रीससागरोपम आउखो कह्यो । केतलाएक असुरकुमार देवतानी एकत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही । सौधर्मईशाने कल्पें केतलाएक देवतानी एकत्रीस पल्योपम आउखोकह्यो ॥ पूर्वदिशायकोमांडीकरीने विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एचार अनुत्तरविमाननादेवतानी जघन्यएकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । जेदेवता उपरिमउपरिम ग्रैवेयके एतले नवमे ग्रैवेयकविमाने देवतापणेउपनाछेतेहदेवतानीउत्कृष्टी एकत्रीससागरोपमनी स्थितिकही । तेदेवता एकत्रीसें पखवाडे

॥ टीका ॥

रात्रिभाजनाविरतिश्च कायषट्

कायग्रसायुतेनवा व्यक्ताः व्यक्तास्तु येवयःश्रुताभ्यांपरिणताः स्थानानिपरिहाराः सेव्यतेसदाश्रयवस्तूनि व्रतषट्कं महाव्रतानि रात्रिभाजनाविरतिश्च कायषट्कं पृथिवीकायादि अकल्पोऽल्पनीयः पिंडशय्या वस्त्रपात्र रूपपदार्थः गृहिभाजनं स्थाल्यादिः पल्यंकंखट्वादि निषद्या स्त्रियासहासनं। स्नानंशरीरक्षालनं

॥ मूल ॥

दिव्वेकामभोगे नेवसयंवायाएसे

वइ नोविअन्नंवायाएसेवावेइ वायाएसेवंतंवि अन्नंनसमणुजाणाइ दिव्वेकामभोगे नेवसयंकाएणंसेवइ नोवि

अन्नंकाएणंसेवावेइ काएणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणाइ अरहतोणंअरिठनेमिस्स अठारससमणसाहस्सीउ

उक्कोसया समणसंपयाहोत्था समणेणं भगवयामहावीरेणं समणाणंनिग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अठारस

ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्कं अकप्पोगिहिभाणयं पलियंकनिसेज्जाय सिणाणं सोभवज्जणं आयारस्सणंअ

॥ भाषा ॥

सयंमणेणंसेवइ नोविअन्नंमणेणंसेववाइ मणेणंसेवंतंविअन्नंनसमणुजाणइ

नेरा प्रतिसेवतांथकां अनुमोदनाकरे ८। देवांगनासंबंधी कामभोगस्वयंपोतेसेवेनही १०। अनेरानेमनेकरी सेवाडेनही ११। मनेसेवतां आगिलाने पिण

अनुमोदेनही१२ दिव्यतेकहतां कामभोग देवांगनासंबंधी वचनेसेवेनही१३ अनेरानेवचनेकरी सेवावेनही१४ वचनेसेवतां प्रतिवीजाने अनुमोदेनही १५

देवांगनासंबंधी कामभोगकायाएंसेवेनही१६ अनेरापाहिकायाएंसेवावेनही१७ कायएंसेवतांथकां अनुमोदेनही१८ अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमातीर्थंकर

ने अठारश्रमणसहस्रनी उत्कृष्टीसाधूनी संपदाहुई। श्रमणनेतपस्वीने निग्रंथने बाह्याभ्यंतर गांठीरहितने क्षुद्रव्यक्तसाधेजेह तेसक्षुद्रव्यक्तएतले क्षुद्रबालिकाव्य

क्त तेवयकरी वडोतयाश्रुतेकरीप्रसिद्ध तेहने अठारस्थानकपरिहारसेवाश्रयविशेष कांइकछांडवो कांइकआदरवो तेकहेछे। व्रतषट्क पंचमहाव्रत छठोरात्रि

॥ टीका ॥

शोभावर्जनं प्रतीतं तथाआचारस्य प्रथमांगस्य सचूलिकाकस्य चूडासमन्वितस्य तस्य पिंडैषणाद्या: पंचचूला: द्वितीयश्रुतस्कंधात्मिका: सचनवब्रह्मचर्याभिधाना ध्ययनात्मक प्रथमश्रुतस्कंध रूपस्तस्यैवचेदं पदप्रमाणं नचूलानां यदाह। नवबंभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ। हवइसपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति यच सचूलिकाकस्येति विशेषणं तत्तस्य चूलिकासत्ता प्रतिपादनार्थं नतु पदप्रमाणाभिधानार्थं यतोवाचि नंदीटीकाकृता अट्ठारसपयसहस्साणि पुव्वपढमसुय खंधस्सनवबंभचेरमइयस्स पमाणं विवित्तयाणीय सुत्ताणि गुरुवए सवोतेसिं अत्थोजाणियव्वोत्ति पदसहस्राणीह यत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं पदोग्रेति पदपरिमाणेनेति तथा बंभित्ति ब्राह्मीआदिदेवस्य भगवतो दुहिता ब्राह्मीवा संस्कृतादिभेदा वाणी तामाश्रितेनैव यादर्शिताक्षरलेखनप्रक्रिया साब्राह्मीलिपि रतस्स्या

॥ मूल ॥

गयतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० बंभीएणंलिवीए अट्ठारसविहलेखविहाणे प०तं०

॥ भाषा ॥

भोजनविरति एमकायषट्क पांचप्रावरअनेछठ्ठो उत्तमकाय एम १२ अकल्पी अकल्पनीयपिंडशय्यावस्त्रपात्ररूप पदार्थ १३ गृहस्थनेभाजन १४। पल्यंकोमांचादिक १५। निषद्यासिंहासन १६। स्नानशरीरधोइवो १७। शोभावर्जन शरीरशृंगाररचना १८। आचारांग प्रथमअंगने पहिले श्रुतस्कंधे नवअध्ययनछे तहनां पूठ्यनांबीजे श्रुतस्कंधे पांचचूलिकाछे तेपांचचूलिकामांही १६ अध्ययन अवताराछे तो तेपांचचूलिकासहितना अठारपदसंहस्रजेतले अर्थनीसमाप्ति तेहपदकहीए। पदाग्रेसर्वसंख्याएंकह्या आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ब्रह्मचर्याभिधान नवअध्ययन तेहनीसंख्या १८ सहस्रपद परंचूलिकाछे। पांचबीजेश्रुतस्कंधे १८ सहस्रपदमांहिनही उक्तंच। नवबंभचेरमईओ अट्ठारसपयसहस्सीओ। हवइयपंचचूला बहुबहुतरओपयग्गेणंति। अनेंसूत्रमांहि चूलिकाग्रहीछे ते एकसूत्रनासंबंधीमाटे परंतेहनोप्रमाण १८ पदमांहिनलेवो। ब्राह्मीश्रीआदिनाथ भगवंतनीपुत्री तेहने अठारप्रकारे लेखविधान लिखिवानाभेदकह्या।

ब्राह्मालिपिर्वमित्यलंकारे लेखालेखन तस्याविधानभेदा लेखविधानं प्रथमं तद्यथा एतत्स्वरूपं नष्टमिति मदर्गितम् । तथायस्लोके यथास्ति यथावानास्ति अथवास्याद्वादाभिप्रायस्तत्देवास्तिनास्तिचेत्येवं प्रवदतीत्यस्तिनास्तिप्रवादं तच्चतुर्थंपूर्वंतस्य । तथा धूमप्रभापंचमी । अष्टादशोत्तर अष्टादशयोजनसहस्राधिकमित्यर्थः बाहुल्येनपिंडेन पोसासाढेत्यादि रेवंयोजना आषाढमासेसकृदिति सकृदेकदा कर्कसंक्रातावित्यर्थः उत्कर्षेणोत्कर्षतोऽष्टादशमुहूर्त्तोदिवस ‖ टीका ‖

बंभी जवणालिया दोसऊरिया वरोहिया खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया भोगवयत्ता वेयणतिया णिराहइया अंकलिवि गणिअलिवि गंधव्वलिवि आदस्सलिवि माहेसरलिवि दामिलिवि बोलिंदिलिवि अत्थिनत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्सअट्ठारसवत्थू प० धूमप्पभाएणं पुढवीए अट्ठारसुत्तरंजोयण सयसहस्सं बाहल्लेणं प० पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्तादिवसेभवइ सइउक्कोसेणं अट्ठारस ‖ मूल ‖

तेकहेछे । ब्राह्मीसंस्कृतादि भेदेकरी लिपिअक्षरस्थापना देखाडी तेब्राह्मीलिपि १ । जवनलिपि २ । दोषऊपरिका ३ । वरोट्टिकाप्रमुख निन्हइयापर्यंत नामविशेषजाणिवा ११ । अंकलिपि १२ गणितलिपि १३ । गांधर्वलिपि १४ । आदर्शलिपि १५ । माहेश्वरलिपि १६ । दामलिपि १७ । बोलिंदिलिपि १८ । अस्तिनास्तिलोएसासएविअसासएवि एहवो स्याद्वादाभिप्रायआस्तिनास्ति प्रकर्षपणे प्रवदेकहे तेआस्तिनास्तिप्रवादचउथुंपूर्व तेहना १८ वस्तु अधिकारविशेषकह्या । धूमप्रभापांचमीपृथिवी अष्टादशसहस्रअधिक एकलाखयोजन बाहल्यपणे जाडपणेकही । पोसाआसाढमासइति एकदाउत्कृष्टपणेअठारमुहूर्त्तोयोदिवसहुए एतलेकर्क संक्रांतिएं आषाढोपुनीमे अठारमुहूर्त्तोयोदिवसहुए सतिति एकवार मकरसंक्रांति अठारमुहूर्त्ती रात्रिहुई । एवीए रत्नप्र ‖ भाषा

मुजन्नारात्तीनवइ इमीसेणंरयणप्पन्नाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठारसपलिनवमाइं ठिई प०
छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइया
णं अठारसपलिनवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अठारसपलिनवमाइं ठिई
प० सहस्सारेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० आणएकप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं
जहन्नेणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा कालं सुकालं महाकालं अंजणं रिठिसालं समाणं दुमं म
हादुमं विसालं सुसालं पउमं पउमगुम्मं कुमुदं कुमुदगुम्मं नलिणं नलिणगुम्मं पुंडरीअं पुंडरीयगुम्मं सह
स्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं अठारससागरोवमाइं ठिई प० तेणं देवाणं अठा

॥ भाषा ॥

भा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो अढारपमल्योपम आउखोकह्यो छठ्ठीतमा पृथिवीयें केतलाएकनारकीनो अढारसागरोपम आउखोकह्यो। असुरकु
मारदेवतनो केतलाएकनो अढारपल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्मईशानकल्पें केतलाएकदेवतानो अढारपल्योपम आउखोकह्यो। सहस्रारआठमेदेवलोके
केतलाएकनोजघन्यो अढारसागरोपम आउखोकह्यो। आठमेदेवलोके जेदेवता काल १। सुकाल २। महाकाल ३। अंजन ४। रिष्ट ५। साल ६। समान
७। द्रुम ८। महाद्रुम ९। विशाल १०। सुसाल ११। पद्म १२। पद्मगुल्म १३। कुमुद १४। कुमुदगुल्म १५। नलिन १६। नलिनगुल्म १७। पौंडरीक
१८। पौंडरीकगुल्म १९। सहस्रारावतंसक २०॥ एम वीसविमाने देवतापणेंउपनाछे। तेहदेवतानो अढारसागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवता अढारस

भवति षविंशद्घटिकाइत्यर्थः तथापौषमासे सकृदिति मकरसंक्रांतौ रात्रिरेवंविधेति कालसुकालादीनि विंशतिर्विमानमानामानि ॥ १८ ॥ ॥ टीका

अथैकोनविंशतितमस्थानं तत्र स्थितिसूत्रेभ्यः पंचसूत्राणि सुगमानिच नवरं ज्ञातानि दृष्टांता स्तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानि षष्ठांगप्रथमश्रुतस्कंधवर्त्तीनि उक्षि

रसेहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंति तेसिणं देवाणं अठारसवास सहस्से हिं आहारठेसमुप्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धिया जेअठारसहिं नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चि स्संति परनिव्वाइस्संति सव्वदुख्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १८ ॥ एकूणवीसणायज्झयणा प० तं०। उख्कित्तणाए संघाडे अंडेकुम्मेअ सेलए तुंबेअ रोहिणी मल्ली मागंदी चंदमातिअ दावद्दवे उदगणाए मंडुक्के ते ॥ मूल

मासे पखवाडे स्वासोस्वासले यर्णले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवतनो अठारहर्षसहस्रे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएकभव्यजीव अठारभवनेअंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनोअंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॥ इति अठारमूठाणूं सम्मत्तम् ॥ १८ ॥ हिवेइगुणवीसनो अधिकारलिखियेछे। ॥ भाषा

ज्ञाताधर्म्मांग तेहने प्रथमश्रुतस्कंधे १९ ज्ञायकपनीतेमार्ग सूचकअध्यनकह्या। तेकहेछे यथाक्रमे। उत्क्षिप्तज्ञाय जेहाथीएं पगउपाड्यो पगहेठिशशलोराख्यो तेहमेघकुमारहुयो १। धनावहसेठीनो संघाडकज्ञाय २। त्रीजोमोरडीनाईडानो ३। चउथोकाछवानो ४। पांचमो सेलकाचार्यनो ५। छट्टोतुंबडानो ६ सातमो रोहिणीलघुवहूनो ७। आठमोमल्लिकुमारीनो ८। माकंदीसुतजिनरक्षतेजिनपालक ९। दशमोचंद्रमानो १०। इग्यारमोदावद्दवगामवृक्षनो ११। बा रमोउदकचोखजितशत्रु सुबुद्धिमंत्रीनो १२। मंडुकडेडकानो नंदमणीयारनो १३ चौदमोतेतलीपुत्रमुहुतानो १४। पनरमोनंदिफलनो १५। सोलमो अमरकंका

॥ ५६ ॥

॥ टीका ॥

तिवादिसावँक्रमत्वमर्थजिदंच बहांगाधिगमावसेयमिति । तथा जंबुद्दीवेणं इत्यादीभावनारत्वयः स्वस्थानादुपरियोजन शततपतोऽधश्चाष्टादश शतानि । तत्थ समभूतलेऽष्टौभवंति इयचापरविदेहजगतीप्रत्यासन्नदेशे जंबूद्दीपापरविदेहेहि निम्नीभवदेवचरंतिमविजयइयस्यदेशे अधोलोकदेशेसहस्त्रमिति दीपांतरसूर्या सूर्यंशतमधोष्टशतानि शेषसमत्वादिति तथा शुक्रसूत्रेनक्खत्ताइति विभक्तिपरिणामावचनैः समंसहचारंचरणं चरित्वाविधेयेइति तथाकलाभोत्ति पं

॥ मूल ॥

तलीइत्र नंदिफले श्रवरकंका श्राइसे सुंसमाइश्र श्रवरेश्र पोंमरीएणाए एकूणवीसमे जंबूद्दीवेणंदीवे सूरिश्रा उक्कोसेणं एगूणवीसजोयणसयाइं उह्वंमहातवयइ सुक्कोणंमहग्गहेश्रवरेणं उइश्रसमणे एकूणवीसंणक्खत्ताइं स मंचारंचरित्ता श्रवरेणं श्रत्थमणं उवागच्छइ जंबूद्दीवस्सणंदीवस्स कलाउ एगूणवीसंछेश्रणाउ प० एगूणवीसं

॥ भाषा ॥

राजधानीनो द्रुपदीनो १६ । सतरमो आकीर्णघोडानो १७ । अठारमो सुसामाधनावह सेठीपुत्रीनो १८ । अपरअनेरो पुंडरीक कुंडरीकनो न्यायउगणीसमो १८ जंबूद्दीपनेविषे सूर्यउत्कृष्टो इगुणवीस योजणसत उपरिहेठि मिलीनेतपे एतले पोंतानाविमानथी एकसोयोजन ऊंचोतपे प्रकासे अनेसमभूतलेगद्द आठसे योजन नीचोतपे वलीपश्चिममहाविदेहे जगतीपासे छेहलो विजयछे जिहां तिहां मेरुनी अपेक्षा एकसहस्त्रयोजन भुंईजंडीछे तिहां प्रकाशे एतले एक सो आठसे दससे सर्वमिली उगणीससय योजनलगे उपरिहेठि प्रकाशे । शुक्रमहाग्रह पश्चिमदिसें ऊगीयको उगणवीस नक्षत्रसाथे चारचरीने भ्रमणकरीने पश्चिमदिसें अस्तमनप्रति पामे जंबूद्दीपद्दीपनीकला उगणीसछेदना भागरूपएतले भरथक्षेत्र ५२६ योजन अनेउपरि छकलातेह एकयोजनना १८ छेदनाभा

वसएछव्वीसे छवकलाविययंभरहवासमित्यादिषु जंबूद्वीपगणितेषु याःकलाउच्यंते तायोजनस्यैकोनविंशतिभागच्छेदना एकोनविंशतिभागरूपा इतिभावः आगारमज्झेवसित्तत्ति अगारंगेहं अस्यैकोनविंशति चिरकालंराज्यपरिपालनतः आमर्यादायदीर्घा वसित्वाउषित्वा तत्रावासंविधायेति अध्येष्यप्रव्रजिताः श्रीवासुपंच कुमारभावएवेत्याह । वीरंअरिट्ठनेमिं पासंमल्लिंचवासपुज्जंच । एएमोत्तूणजिणे अवसेसाआसिरायाणोत्ति ॥ १९ ॥ अथविंशति तमस्था

तित्थयरा आगारवासमज्झेवसित्ता मुंडेभवित्ताणं आगाराओअणगारिअंपव्वइआ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीसपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसंपलिओवमाइं ठिई प० आणयकप्पे उक्कोसेणं एगू

गरूप एतलेभाग करी एहवी छकला प्रमाकही । श्रीमहावीर १ । नेमिनाथ २ । पार्श्वनाथ ३ । मल्लिनाथ ४ । वासुपूज्य ५ । एपांचतीर्थंकरविना बीजा उगणीसतीर्थंकर गृहस्थाश्रमेंवसीने मुंडपणुंपाम्या द्रव्यमुंडलोचादिकभावमुंड तेकषायत्याग गृहस्थाश्रमथकी अनगारपणाथकी प्रव्रज्याघरनथी जेहनेते अनगारीतेहपणुंपाम्या । एणी रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतला एकनारकीनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । छठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनी उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो उगणीसपल्योपम आउखोकह्यो । सौधर्मईशानकल्पे केतलाएक देवतानोउगणीस पल्योपम आउखोकह्यो । आनतनवमेकल्पेउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । प्राणतदशमे कल्पे केतला एकदेवतानो

णवीससागरोवमाइं ठिई प० पाणएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं जहन्नेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प०
जेदेवा आणतं पाणतं णतं विणतं पणं सुसिरं इंदं इंदकंतं इंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसि
णंदेवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पा
णमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्संतिवा तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वास्ससहस्सेहिं आहारट्ठेसमुप्पज्जइ संते
गइया भवसिद्धियाजीवा जेएगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइ
स्संति सव्वदुक्काणं अंतंकरिस्संति ॥ १९ ॥ वीसंअसमाहिठाणा प० तं० । दवदवचारिआ

जघन्यो उगणीससारोपम आउखोकह्यो । जेदेवता आनत १ । प्राणत २ । नत ३ । विनत ४ । पणक ५ । सुषिर ६ । इन्द ७ । इन्द्रकांत ८ । इन्द्रोत्तरावतंसक ९ । विमाने देवतापणेउपनाछे । तेहदेवतानोउत्कृष्टो उगणीससागरोपम आउखोकह्यो । तेहदेवतानो उगणीसे अर्द्ध मासे पखवाडे स्वासोस्वाले घणोले ऊंचोले नीचोमूंके तेहदेवतानो उगणीसवर्षसहस्रेगए आहारनीइच्छाउपजे केतला एकभव्यजीव उगणीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदुःखना अंतकरीसे मोक्षजासे ॥ इति उगणीसमूंठाणूं सम्मत्तम् ॥ १९ ॥ हिवे वीसनो अधिकारलिखिये छे । वीस असमाधिस्थानककह्या । तेसूचित्तठामिराखिवूं मोक्षमार्गेरहिवो तेसमाधि नहीसमाधि तेअधिकार तेहनास्थानकभेद तेअसमाधिस्थान तेकहेछे अनुक्रमे । द्रवद्रवउतावलो चालतो व्यग्रचित्तपणेथका जीवनेहणे तेमाटे संयमने अवाधाउपजावे अनेपडेतो आत्माने असमाधिउपजावे १ । अणपूंज्येचालेअर्द्ध

मे किंचिल्लिख्यते । तत्रस्थितिसूत्रेभ्यो ऽर्वाक्समस्तसूत्राणि तत्रसमाधानं समाधिश्चेतसः स्वास्थ्यंमोक्षमार्गेवस्थानमित्यर्थः नसमाधिरसमाधिस्तस्याः स्थानान्याश्र
यभेदा पर्याया वा असमाधिस्थानानि तत्र दवदवचारित्ति योहिद्रुतंचरतिगच्छति सोऽनुकरणशब्दतोदवदवचारीत्युच्यते वापीत्युत्तरासमाधिस्थानापेक्षया
समुच्चयार्था भवतीतिसिद्धम् । सचद्रुतं २ संयमात्मनिरपेक्षेव्रजन्नात्मानं प्रपतनादिभिरसमाधौ योजयति अन्यांश्चसत्वान् घ्नन्ऽसमाधौयोजयति सत्वबधजनि
तेनचकर्म्मणापरलोकेप्यात्मानमसमाधौ योजयत्यतोद्रुतगंतृत्व मसमाधिकारणत्वादसमाधिकं स्थान मेवमन्यचापियथायोगमवसेयं १ तथा अप्रमार्जितचारी २
दुप्रमार्जितचारी ३ स्थाननिषीदनत्वग्वर्त्तनादिष्वात्मादिविराधनांलभते तथा अतिरिक्ता अतिप्रमाणाशय्यावसतिरासनानिच पीठकादीनि यस्यसंति सोतिरि
क्त शय्यासनिकः सचातिरिक्तशय्या सनिकरः सचातिरिक्तायां शय्यायां घंघशलादिरूपाया मन्येपिकौटिकादय आवसयंति इतितैः सहाधिकरणत्वादसमा
धिस्थानमेव मन्यत्रापि यथायोगमवसेयं तथाप्रमार्जितचारी दुप्रमार्जितचारीच संभवादात्मापरंचासमाधौ योजयतीति एवमासनाधिक्येपि वाच्यमिति ४

विन्नवइ श्रुपमज्जिश्रुचारिश्राविन्नवइ दुप्पमज्जियचारिश्राविन्नवइ श्रुतिरित्तसज्जासणिए रातिणिश्रुप ॥ मूल

पूर्वनीपरी २ । भूंडीपरीपूजीचालेमर्यादाथकी अधिकशय्यापाटीपाटला आसनादिकसेवे३ । अधिकउपाश्रयराखे तिहां योगीसंन्यासी आवीउतरे तेसाथेवाद ॥ भाषा
करवोपडे आत्मानेसमाधिउपजे ४ । राचिकपरिभाषी आचार्यादिकाएंसाम्होबोले तथापराभवे एमकरतो आत्माने असमाधिउपजे ५ । थविरतेगुर्वादिकतेहने
उवघातीमारे तेस्थविरोपघाती ६ । एमभूतएकेंद्रियादि तेहनेहणेतेभूतोपघाती ७ । घणघणक्रोधकरेतेसंज्वलन ८ । अनंतक्रोधांधथइए तेक्रोधन ९ । परपूठिपा
रकोअवर्णवादेबोलेतेपुष्टिमांस १० । अभीक्ष्णमवधारयिता वलीवलीशंकितअर्थने निःशंकितथकोकहे तथापारकागुणस्वमीसकेनहीं नवांअधिकरणकलहतथा

॥ ५८ ॥

॥ टीका ॥

राजनीतिपरीभावी आचार्यादिषु परिभवकारी तथात्मानमन्यांश्चासमाधौ योजयत्येव ५ तथास्थविरा आचार्यादिगुरवः तानाचारदोषेण शीलदोषेण वा ज्ञा नादिभिर्वावहतीत्येवंशील: सएवचेतिस्थविरोपघातिकः ६ तथाभूतान्येकेंद्रियांस्तानमर्थत उपहंतीति भूतोपघातिकः ७ तथासंज्वलतीति संज्वलनः प्रतिक्षणं रोषणः ८ तथाक्रोधनः सकृत्क्रुद्धोऽत्यंतक्रुद्धोभवति ९ तथापृष्टिमांसिकः पराङ्मुखस्य परस्यावर्णवादकरी १० अभिक्ष्णं २ श्रोहारयित्तति अभीक्ष्णमभीक्ष्ण मवधारयिताशंकितस्याप्यर्थस्य निशंकितस्याप्यर्थस्य निःशंकितस्यैवमेवायमित्यर्थवक्ता अथवा अवहारियितापरगुणाना मवहारकरी यथाअदासादिकमपिप रंभणति दासस्त्वंचौरस्त्वमित्यादि ११ तथा अधिकरणनां कलहानां नवानां चोत्पादयति १२ पौराणाणंति पुरातनानां कलहानां क्षमितव्युपशमितनां क्षमितत्वेनोपशांतानां पुनरुदीरयिताभवति १३ तथासरजस्कपाणिपादो यःसचेतनादिरजोगुंडितेनहस्तेन दीयमानांभिक्षांगृह्णाति तथायोऽस्थंडिलादेः स्थंडिलादौ संक्रामनपादौप्रमार्ष्टि अथवायस्तथाविधेकारणे सचित्तादिपृथिव्यां कल्पाविना अनंतरितायां आसनादिकरोति ससरजस्कपाणिपादइति १४ त

॥ मूल ॥

रिजासी थेरोवघाइए भूतुवघाइए संजलणे कोहणे पिठिमंसए अभिक्खणं उहारइत्ताभवइ णवाणंअधिक रणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ पोराणाणंअधिकरणाणं खामिअविउ सविअाणंपुणोदीरेत्ताभवइ ससर

॥ भाषा ॥

गाडलादिक तेपूर्वेअनुत्पन्नछे उपनानथी तेहउपजावेछे १२। पुरातनजूनामेंकलहाने खभाविवापणे उपशमाव्याछे तेहनेपुनरपिवली उदारकहुएदारे १३। सरजस्कपाणिपाद सचित्तरजखरड्याएंहाथेंभिक्षदेतालि अथवासचित्त अचित्त स्थंडिलजेपमनपूजे १४। अकालेस्वाध्यायकरे पहिले प्रहरेअने पाछिले प्रह रें कालिकसूत्र उत्तराध्ययनादिकने अनेचौदप्रहरलगे उत्कालिक दशवै कालिक नभणे १५। अकालेभणतांदेवतादिकनोउपद्रवहोय। कलहकरे १६। शब्दकोरे

॥ टीका ॥

र्था अकालेस्वाध्यायकारकः प्रतीतः १५ तथाकलहकरः कलहकरोहेतुभूतकर्त्तव्यकारी १६ तथाशब्दकरः रात्रौमहताशब्देनोल्लापःस्वाध्यायादिकारको गृहस्थ भाषाभाषकोवा १७। तथाझंझाकरोत्येवं येनगणस्य भेदोभवति तत्तत्करो येनच गणस्यमनोदुःखंसमुत्पद्यत्यतोझंझा १८ तथासूरप्रमाणभोजी सूर्योदयादस्तम यं यावदशनपानाद्यभ्यवहारी १८ एषणाऽसमितश्चापि अनेषणांनैव परिहति प्रेरितश्चासौसाधुभिः कलहायते तथाअनेषणीय मपरिहरन् जीवोकोपराधो वर्त्तते एवंचात्मपरयोरसमाधिकरणा दसमाधिस्थानमिदं विंशतितममिति २० तथाघनोदधयः सप्तमपृथिवी प्रतिष्ठानभूताः सामानिकाः इन्द्रसमानर्द्ध यः साहस्यः विंशतिसहस्राणि बन्धतोबन्धसमयादारभ्यबन्धस्थितिः स्थितिरबन्धइत्यर्थः प्रत्याख्याननामकंपूर्वंनवमं सातादीनिचैकविंशतिर्विमानानीति ॥

॥ मूल ॥

रक्कपाणिपाए अकालसज्झायकारए आवि भवइ कलहकरे सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणभोई एसणासमिते आ विभवइ मुणिसुव्वएणंअरहा वीसधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था सव्वेविअणंघणोदही वीसंजोयणसहस्साइं बाह ल्लेणं प० पाणयस्सणं देविंदस्सदेवरस्रोवीसं सामाणिअसाहस्सीउ प० णपुंसयेअणिज्जस्सणं कम्मस्सवीसं

॥ भाषा ॥

रात्रिएमाटे सादेसज्झायकरेगृहस्थनेपरी उपडोबोले १७। झंझकार जेणेकरी गच्छनोभेदहोय एहवोकरे १८। सूरप्रमाणभोजी सूर्यआथमे तिहांलगीन जिमे १८। एषणाऽसमित असूझतो भातपाणीले बीजोयती इसोषदेतां कलहकरे २०। एहवीसअसमाधिस्थानकह्या २०। मुनिसुव्रत वीसमातीर्थंकर वीसधनुष उंचाउंचपणेथया। सातमेनरकपृथिवीने प्रतिष्ठानभूत आधारभूत घनोदधि कठिनसलाभूतपाणी तेघनोदधि। वीसयोजनसहस्र जाडपणेकह्यो। प्राणतदेव लोकदशमो तेहनोइन्द्र तेहनादेवतानो इन्द्र तेदेवेंद्र तेहना देवतानो राजा तेहनावीसहस्रसामानिक देवताकह्या। नपुंसकवेदनीयकर्म अर्थात् नपुंसककर्म

सागरोवमोकोडाकोडीउ बंधउ बंधठिई प० पच्चरकाणंपुव्वस्सवीसंवत्थू उस्सप्पिणिमंडले वीसंसागरोवम कोडाकोडीउकालो प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइ याणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसंपलिउवमाइं ठिई प० पाणतेकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीससारोवमाइं ठिई प० आरणेकप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीससागरोवमा इं ठिई प० जेदेवा सायं विसायं सिद्धत्थं उप्पलं भित्तिलं तिगिच्छं दिसा सोवत्थियं पलं रुइलं पुप्फं सुपु

मो वीससागरोपम कोडीबंधसमयथकीमांडी बंधनी स्थितिकही। प्रत्याख्यान नवमापूर्वनावीसवस्तु अधिकारविशेषकह्या। उत्सर्पिणी अवसर्पिणीमंड लनेविषे कालचक्रनेविषे वीसकोडीकालकह्यो। एतलेदशकोडाकोडी सागरोपम उत्सर्पिणीकाल दसकोडाकोडी सागरोपम अवसर्पिणीकालकह्यो। एणी ए रत्नप्रभापहिली पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीसपल्योपम आउखोकह्यो। छट्ठीतमा पृथिवीनेविषे केतलाएकनारकीनो वीससागरोपम आउखोक ह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो वीसपल्योपमआउखोकह्यो सौधर्मईशान देवलोके केतलाएक देवतानो वीसपल्योपम आउखोकह्यो प्राणतदशमीक ल्पे देवनोउत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। आरणइग्यारमेकल्पे देवनो जघन्योवीससागरोपमआउखोकह्यो दशमेकल्पे जेदेवता। सात १। विसात २ सिद्धार्थ ३। उत्पल ४। भित्तिल ५। तिगिच्छा ६। दिसा ७। सौवस्तिक ८। पल ९। रुचिर १०। पुष्प ११। सुपुष्प १२। पुष्पावर्त १३। पुष्पप्रभ १४।

॥ २० ॥ अथैकविंशतितमस्थानकं तत्रचत्वारिसूत्राणि स्थितिसुत्रैर्विनासुगमनानिच नवरंशबलंकर्बुरं चारित्रंय:क्रियाविशेषैर्भवति तत्रशबला स्त योगात्साधवोपिते एवंतत्रहस्तकर्म वेदविकारविशेषं कुर्वन्उपलक्षणत्वात्कारयन्वा शबलोभवत्येक: १ एवंमैथुनंप्रतिसेवनानि क्रमादिभिस्त्रिभि: प्रकारै: २ ॥ टीका

प्फं पुप्फावत्तं पुप्फपत्नं पुप्फकंतं पुप्फवत्नं पुप्फलेसं पुप्फज्झयं पुप्फसिंगं पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमा णं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं वीससागरोवमाइं प० तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आ णमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारठेसमु प्पज्जइ संतेगइया नवसिद्धियाजीवा जेवीसाए नवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परि निव्वाइस्संति सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ एक्कवीसंसबला पन्नता तंजहा। ॥ मूल

पुष्पकांत १५। पुष्पवर्ण १६। पुष्पलेश्य १७। पुष्पध्वज १८। पुष्पशृङ्ग १९। पुष्पसिद्ध २०। पुष्पोत्तरावतंसक २१। एहविमाने देवतापणे उपनाछे तेह देव तानो उत्कृष्टो वीससागरोपम आउखोकह्यो। तेदेवता वीसअर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास घणोले उंचोस्वासले नीचोस्वासमूंके तेहदेवतानो वीससहस्रवर्षे आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेवीसभवनेआंतरे सीझस्ये बुझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरिस्ये मोक्षजास्ये॥ इतिवीसमूं ठाणुं सम्पूर्णम्॥ ॥ भाषा

॥ २० ॥ हिवे एकवीसमो अधिकार लिखियेछे॥ एकवीस सबलाकह्या जेणिकरी शबल चारित्र करबुरकीजे तेशबला एकवीस सबलाकर तोथको साधुपणो शबलकह्यो तेकहेछे। हस्तकर्ममुष्टिआपकरतो शबलकह्यो। १। मैथुनप्रतें सेवतोथको शबल २। रात्रिभोजन करतोथको ३। आधाक

तथारात्रिभोजनं दिवागृहीतं दिवाभुक्तमित्यादिभिस्तु भिंभगक रतिक्रमादिभिश्चभुंजानः ३ आधाकर्म ४ सागारिकः स्थानदातातत्पिंडं ५ उद्देशिकं क्री तमाहृत्यदीयमानंभुंजानः उपलक्षणत्वात् पामिच्चेच्छाद्यानिसृष्टग्रहणमपीहद्रष्टव्यमिति ६ यावत्करणोपात्तपदान्येवमर्थतोऽवगन्तव्यानि अभीक्ष्णंप्रत्याख्यायाऽ शनादिभुजानः ७ अन्तः षण्णांमासानामेकतोगणाद्गणमन्यंसंक्रामन् ८ अंतर्मासस्यत्रीनुदकलेपान् कुर्वन् उदकलेपश्च नाभिप्रमाणजलावगाहनमिति ९ अंत र्मासस्यत्रीणिमायास्थानानिस्थानमितिभेदः १० राजपिण्डंभुजानः ११ आकुट्याप्राणातिपातंकुर्वन् उपेत्यपृथिव्यादिकं हिंसन्नित्यर्थः १२ आकुट्यामृषावादंव

॥ मूल

हत्थकम्मंकरेमाणे सबले मेहुणंपडिसेवमाणे सबले राइभोयणंभुंजमाणे सबले आहाकम्मंभुंजमाणे सबले सागारियंपिंडं भुंजमाणे सबले उद्देसियंकीयं आहट्टदिज्जमाणं भुंजमाणे सबले अभिरकणं अभिरकणं पडियाइरकेत्ताणं भुंजमाणे सबले अंतोछण्हं मासाणंगणाउ गणंसंकममाणे सबले अंतोमासस्स तउदगले वेकरेमाणेसबले अंतोमासस्सतउमाईठाणेसेवमाणे सबले रायपिंडंभुंजमाणेसबले आउट्टियाए पाणाइवायं -

॥ भाषा

र्भीभोजन भुंजतोथको ४। जेहनो उपासरोहुयो तेगृहस्थाना घरनोपिंड आहारभुंजतोथको ५। उद्देसकतेजे साधुने निमित्ते उद्देशी भातपाणिकरे तेउद्दश कतथा क्रीतवेंचातो आण्यो आहृतसमाहृतआण्यो आहारते तोशबल ६। अभीक्ष्णं वलीवली अशनादिक पचक्खीने जीमतो ७। छेहले छमासमांहि गच्छ पालटथको शबल ८। एकमासमांहि त्रिणिदगलेप करतो नाभिप्रमाण जलावगाहन तेदगलेप ९। मासमांहि त्रिणिठाण सेवतोथको १०। राजपिंडभुंज तो ११। आकुटीएप्राणातिपातकरतो पृथिव्यादिकनेहणतो १२। आकुटि एमृषावाद वदतो १३। आकुटीए अदत्तादान प्रतिलेतोको १४। आकुटीए

दन् १३ अदत्तादानंग्रहन् १४ आकुट्यवामंतर्हितायांपृथिव्यांस्थानं वानैषेधिवाचेत् यत्कायोत्सर्गंस्वाध्यायभूमिं वाकुर्वन्नित्यर्थः १५ एवमाकुट्या सस्निग्धसरज स्कायांपृथिव्यां विस्तारवत्यां सचित्तवत्यांशिलायां लेष्टौवा कोलावासेदारुणि कोलाघुणाः तेषामावासः १६ अन्यस्मिंश्च तथाप्रकारे सप्राणिसबीजादौ स्थाना

करेमाणेसबले आउट्टियाए मुसावायंवदमाणे सबले आउट्टिआएअदिन्नाणंगिण्हमाणे सबले आउट्टिआए अणंतरहिआए पुढवीएठाणं वानिसिहियंवावेतिमाणेसबले एवंआउट्टियाचित्तमंताए पुढवीए एवंआउट्टि या चित्तमंताए सलाएकुलावासंतिवादारुएठाणं वासहियंवा चेतमाणेसबले जीवपइठिएसपाणेसबीएसहरीए सउत्तंगेपणंगदगमट्टीमक्कडासंत्ताणए तहप्पगारंठाणं वासिज्जंवानिसहियंवा चेतमाणे सबले आउट्टियाए मूलभोअणंवा कंदभोयणंवा तयाभोयणंवा पवालभोयणंवा पुप्फभोयणंवा फलभोयणंवा हरियभोयणंवा

सचित्त पृथिवीऊपरि बैसतो अथवा सूवतो वा स्वाध्याकरतो १५। सचित्तशिला तथा पाषाण पृथिवी सचित्तउपरि घुणसहितकाष्ठ ऊपरिबैसतो सूवतो अथवा स्वाध्याय प्रमुखकरतो १६। जीवप्रतिष्ठित एहवो सप्राण बीजप्रमुखउपरि बैसतोथको एकेंद्रिय बेइन्द्रिय तेंद्रिय चउरिंद्रय इत्यादिक जीवविराधना करतोअथवा उपरिसूतो सज्झायकरतो १७। आकुटीएकरी मूलभोजन अथवा कंदभोजन त्वचाकहिये वृक्षनीछाल तेहनोभोजन प्रवालभोजन पुष्पभोजन वलीफलभोजन हरियभोजन करतोथको १८। एकवर्षमांहि दसदगलेपकरतो सबल १९। वर्षमांहि दसमायाठाण सेवतोथको २०। अभीक्ष्णम् वलीवली जातो

॥ टीका ॥ मूल ॥ भाषा

॥ टीका

दिकुर्वन् १७ माकुख्यामूलकंदादिभुंजानः १८ ग्रंतः संवत्सरस्यदशोदकलेपान् कुर्वन् १९ तथांतःसंवत्सरस्यदशमायास्थानानिच २० तथाग्रभीक्ष्णंपौनःपुन्येनश तोदकलक्षणं यद्विकटंवतंतेनव्यापारितोव्याप्तोयः पाणिर्हस्तः सतथा तेनग्रशनं प्रग्टह्यभुंजानः शबलाइत्येकविंशतितमः २१ तथाहि निवृत्तिबादरस्यापूर्वकर णस्याष्टमगुणस्थानकवर्त्तिनइत्यर्थः संवाक्यालंकारे क्षीणंसप्तक मनंतानुबंधिचतुष्टयदर्शनत्रयलक्षणं यस्यसतथा तस्यमोहनीयस्यकर्मणः एकविंशतिकर्मांशा अ प्रत्याख्यानादिकषाय द्वादशनोकषायनवकरूपाउत्तरप्रकृतयः सत्कर्मसत्तावस्थंकर्मप्रज्ञप्तमिति तथाश्रीवत्सम् श्रीदाम कांडं माल्यकृष्टिं चापोयतं ग्रारणावतं

॥ मूल ॥

भुंजमाणेसबले ग्रंतोसंवच्छरस्स दसदगलेवकरेमाणेसबले ग्रंतोसंवच्छरस्सदसमाईठाणाइं सेवमाणेसबले ग्रभिखणं सीतोदयवेयडवग्घारियपाणिणा ग्रसणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहित्ताभुंजमाणे सबले णियट्टिबादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एक्कवीसकम्मंसासंतकम्मा प० त० ग्रपच्च रकाणकसाएकोहे ग्रपच्चरकाणकसाएमाणे ग्रपच्चरकाणकसाएलोभे पच्चरकाणावरणकसाएकोहे पच्चरकाणाव

॥ भाषा

दकलक्षण जेविकटजल तेणेकरी वघारीयतिव्यापार्‍यो तथा व्याप्योभीनो पाणिहाथ जेहनो तेणेकरि ग्रसनपाणि खादिमसादिम पडिगाहेले तथा सचित्त पाणीभीने हाथेकरि जीमतोशबल २१ निवृत्तिबादरग्रपूर्वकरण ग्राठमे तिहांवर्त्तताने तथा खपाव्योछेजेणेसप्तकचारग्रनंतानुबंधी कषाय ग्रने त्रिणिदंसण मोहनीएम ७ प्रकृति जेणेखपावीछे तेहने मोहनीयना कर्मना एकवीस कर्मना ग्रंशउत्तरकर्म प्रकृति संतकम्मत्ति सत्तकर्मसत्तावस्था एकह्याते कहेछे। ग्रप्रत्याख्यान कषायक्रोध १। ग्रप्रत्याख्यानमान २। ग्रप्रत्याख्यानमाया ३। ग्रप्रत्याख्यानलोभ ४। प्रत्याख्यानावरणी बीजोकषायक्रोध ५। प्रत्याख्यानावर

रणकसाएमाणे पच्चक्खाणावरणकसाएमाया पच्चक्खाणावरणकसाएलोभे संजलणकसाएकोहे संजलणकसाए माणे संजलणकसाएमाया संजलणकसाएलोभे इत्थिवेदे पुंवेदे णपुंसगवेदे हासे अरति रति भय सोक दुगंच्छा एक्कमेक्काएणंउस्सप्पिणी पंचमछठाओसमाओ एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइंकालेणं प० तं० दूसमा दूसम दूसमाएगमे गाएणंउस्सप्पिणीए पढमबितिआओसमाओ एकवीस एकवीससहस्साइंकालेणं प० तं० दुसम दुसमाए दूसमायए इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीस पलिओवमाइं ॥ मूल

ण कषायमान ६। प्रत्याख्यानावरण कषायमाया ७। प्रत्याख्यानावरण कषायलोभ ८। संज्वलचौथो कषायक्रोध ९। संज्वलकषायमान १०। संज्वलनकषायमाया ११। संज्वलनकषायलोभ १२। स्त्रीवेद १३। पुरुषवेद १४। नपुंसकवेद १५। हास्य १६। अरति १७। रति १८। भय १९। शोक २०। दुगंछा २१। एकेकीए अवसर्पिणीएं पडते अरे पांचमोअरो अने छठोअरो समयकाल एवेवेनो एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाण कालेकह्यो तेकहेछे। दुखमअरो पांचमो २१ हजारवर्षनो दुखम दुखमआरो बिलवासीनो छठो २१ वर्षसहस्रनो एकेको उत्सर्पिणीएं चडते आरेपहिलो आरो बिलवासीनो अने बीजो आरो मनुष्यनो समयकाल एकवीस एकवीसवर्ष सहस्रप्रमाण कालेकह्यो तेकहेछे। उत्सर्पिणीनो दुखम दुखमापहिलो आरो २१ वर्षसहस्रनो दुखमा बीजो आरो २१ वर्षसहस्रनो। दुखमाबीजो आरो २१ सहस्रवर्ष। एंणीऐ रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलाएक नारकीनो एकवीसपल्योपम आउखोकह्यो। छठीतमापृथिवीए केतलाएक नारकीनो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। असुरकुमार देवतानो केतलाएकनो एकवीस पल्योपम आउखोकह्यो। सौधर्म ईशा ॥ भाषा

॥ मूल ॥

ठिई प० छठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकवीससागरोवमाइं ठिई प० असुकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगवीस पलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसंपलि उवमाइं ठिई प० आरणेसुकप्पे देवाणं उक्कोसेणंए क्कवीसंसागरोवमाइं ठिई प० अच्चुतेकप्पे देवाणं जहन्ने णं एक्कवीस सागरो वमाइं ठिई प० जेदेवा सिरिवच्छं सिरिदामं कंडं मल्लकिट्टं चावोस्रतं अरस्रवडिं सगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एक्कवीसाए अ

॥ ९१ ॥ ह्मासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ऊस्ससंतिवा नीस्ससंतिवा तेसिणंदेवा एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आ हारठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेएक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मु

॥ भाषा ॥

नकल्पें केतलाएक देवतानो एगवीस पल्योपम आउखोकह्यो। आरण इग्यारमेकल्पें देवतानो उत्कृष्टो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। अच्युते बारमेक ल्पे देवतानो जघन्यो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। इग्यारमे देवलोके जेदेवता श्रीवत्स १ श्रीदाम २ कांड ३ माल्यकष्ठ ४ चापोन्नत ५ आरणावतंसक ६ एहछ विमाने देवतापणे उपनाछे तेहदेवतानो एकवीस सागरोपम आउखोकह्यो। तेहदेवतानो एकवीसे अर्द्धमासे पखवाडे स्वासोस्वास वर्णीले उंचोले जीवोमूंके तेहदेवताने एकवीसवर्षसहस्रें आहारनो अर्थउपजे। केतलाएक भव्यजीव जेएकवीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरीस्ये

॥ टीका ॥

स्तरश्चतेनाधिकानीति आदित्यमासायेनकालेनादित्योराशिंभुंक्ते किंचिविसेसूणाइंति अहोरात्रार्द्धेनन्यूनानीति ॥ ३१ ॥ द्वात्रिंशत्तमस्थानकमपिव्यक्तं । नवरं । युज्यंते इतियोगा मनोवाक्कायव्यापारास्तेचेहप्रशस्ताएवंविवक्षितास्तेषां शिष्याचार्यगतानामालोचनानिरपलापादिनाप्रकारेणसंग्रहणानि संग्रहाः प्रशस्तयोगसंगृहाः प्रशस्तयोगसंगृहनिमित्तत्वादालोचनादय एवतथोच्यन्ते । तेचद्वात्रिंशद्भवन्ति तदुपदर्शकंश्लोकपंचकं आलोयणेत्याद्यस्यगमनिका तत्रआलोय

॥ मूल ॥

देवा उवरिमउवरिमगेवेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एक्कतीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा एक्कतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं एक्कतीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे एक्कतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३१ ॥ वत्तीसं जोगसंगहा प० तंजहा आलोयण निरवलावे आवइ सुदढधम्मया । अणिस्सिउवहाणेय सिक्खा

॥ भाषा ॥

स्वासोस्वास घणोले ऊंचोले नीचोमूंके ते देवताने एकत्रीस वर्षसहस्रगयें आहारनी इच्छाउपजे । छे केतलाएक भव्यजीव जेएकत्रीस भवने आंतरें सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये कृतकर्मना पडल टालवायको ठाढायास्ये सर्वदुःखनो अंतकरस्ये मोक्षजास्ये ॥ इतिएकत्रीसमूं समवाय संपूर्ण ॥ ३१ ॥ हिवे बत्रीसमो समवाय लिखेछे । बत्रीस योग संगृह मन वचन कायानायोग तेहनो संगृह शिष्यें आलोयणालेवो गुरुयें कहीआगली नकहिवो इत्यादि प्रकारें संगृह करिवो प्रशस्त योगना कारण ते योगसंगृह ते कहेछे । मोक्षसाधक योगसंगृहभणी शिष्ये आचार्यभणी आलोयणकही १ । आचार्यभणी आलोयण

॥ टीका ॥

णत्ति मोक्षसाधनयोगसंग्रहाय शिष्येणाचार्यायालोचनादत्ता १ निरवलावेत्ति आचार्योपिमोक्षसाधकयोगसंग्रहायैवदत्तायामालोचनायां निरपलापः स्या
न्नान्यस्मैकथयेदित्यर्थः २ आवईसुदढधम्मयत्ति प्रशस्तयोगसंग्रहाय नाऽनाऽऽपत्सुद्रव्यादिभेदासुदृढधर्मताकार्या सुतरां तासु दृढधर्मिणाभाव्यमित्यर्थः ३ अणि
स्सिओवहाणेयत्ति शुभयोगसंग्रहायैवानिश्रितंच तदन्यनिरपेक्षमुपधानं परसाहाय्यानपेक्षंतपोविधेयमित्यर्थः ४ सिक्खत्ति योगसंग्रहायशिक्षासेवितव्या सा
चसूत्रार्थग्रहणरूपा प्रत्युपेक्षाद्यासेवनात्मिकाचेतिद्विधा ५ निप्पडिकम्मयत्ति तथैवनिष्प्रतिकर्मताशरीरस्यविधेया ६ अन्नाययत्ति तपस्यज्ञानतानकार्या यशःपू
जाद्यर्थित्वेनाऽप्रकाशयद्भि स्तपःकार्यमित्यर्थः ७ अलोभेयत्ति अलोभता विधेया ८ तितिक्खत्ति तितिक्षापरीषहादिजयः ९ अज्जवेत्ति आर्जवः ऋजुभावः १०
सुइत्तिशुचिः सत्यंसंयमइत्यर्थः ११ सम्मदिट्ठित्ति सम्यग्दृष्टिः सम्यग्दर्शनशुद्धिः १२ समाहियत्ति समाविस्वचेतः स्वास्थ्यं १३ आयारविणओवएत्ति द्वारद्वयं तत्रा

॥ मूल ॥

निप्पडिकम्मया ॥ ९ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवे सुइ ॥ सम्मदिठी समाहीय । आयारे

॥ भाषा ॥

कहो अनेराआगल न कहिये २ । प्रशस्त योगसंग्रह भणी यतीने आपदा आव्यांथके दृढधर्म करिवो ३ । अनिश्रायें अपेक्षाविना उपधान तपकरिवो ४ ।
सूत्रार्थ गृहण रूप शिक्षानी सेवा ५ । शरीरनो निःप्रतिकर्मना करवो एतले सुश्रूषानकरवो ६ । यशपूजाने अर्थे अप्रकाशतोथको तपकरे ७ अलोभताकरवो
८ । तितिक्षा परीषहनो जयकरिवो ९ । आर्जव सरल स्वभाव १० सत्यमनियम ११ । सम्यग्दर्शन शुद्धि १२ । चित्तनुं स्वस्थपणुं १३ । आचार सहित थईने
मायानकरे १४ । विनय युक्तहोय मायानकरे १५ । धृदोनपणुं १६ । संवेग संसारथांभय अथवा मोक्षनो इच्छा १७ प्रणिधि कायादिकनोठामेराखिवो १८ ।

दोषोपगतःस्या समाधिंकुर्यादित्यर्थः १५ विनयोपगतोभवेत्समाधिं कुर्यादित्यर्थः १६ धिइमईयत्ति धृतिप्रधानामतिर्धृतिमतिरदैन्यं १६ संवेगोत्ति संवेगःसंसा ॥ टीका ।
राद्भयंमोक्षाभिलाषोवा १७ पणिहित्ति प्रणिधिर्मायाशल्यंनकार्यमित्यर्थः १८ सुविहि सदनुष्ठानं १९ संवरश्च आश्रवनिरोधः २० अत्तदोसोवसंहारेत्ति स्वकीयदोष
स्यनिरोधः २१ सव्वकामविरत्तयत्ति सर्वस्तुविषयवैमुख्यं २२ पञ्चक्खाणेत्ति प्रत्याख्यानंमूलगुणविषयं २३ उत्तरगुणविषयंच २४ विउसग्गेत्ति व्युत्सर्गोद्रव्यभावभे
दभिन्नः २५ अप्पमाएत्ति प्रमादवर्जनं २६ लवालवेत्ति कालोपलक्षणं तेन क्षणे २ सामाचार्य्यनुष्ठानकार्यं २७ झाणसंवरजोगेत्ति ध्यानमेवसंवरयोगो ध्यान
संवरयोगः २८ उदएमारणंतिएत्ति मारणांतिकेपिवेदनोदयेनक्षोभःकार्यः २९ संगाणयपरिन्नत्ति संगानांचपरिज्ञाप्रत्याख्यानपरिज्ञाभेदभिन्नापरिज्ञाकार्या

विणउवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीसुविहिसंवरे ॥ अत्तदोसोवसंहारे । सव्वकामविरत्तया ॥ ३ ॥ ॥ मूल ॥
पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमादेलवालवे ॥ ज्झाणे संवरजोगेय । उदएमारणंतिए ॥ ४ ॥ संगाणंयपरिन्ना

शुभ अनुष्ठान करिवो १९ । संवर आश्रवनिरोध २० पोताना दोषनो निरोध रोकिवो २१ । सर्वविषयथी विमुखपणो २२ । पचक्खाणनो करिवो २३ । ॥ भाषा ।
व्युत्सर्ग द्रव्यथको उपधीनो त्याग भावथको विगगौरवनो त्याग २४ । प्रमाद टालिवो २५ । क्षियानेकाले समाचरिवो २६ । धर्मध्यानादि करिवो २७ ।
संवरनो योग २८ । मारणांतिक वेदना उपजे मनने क्षोभ न करिवो २९ । संगनो परिज्ञा स्वजनादिक संगनो पचकवो ३० । प्रायश्चित्तनो करिवो ३१ ।
आराधना करी मरे ३२ । एह बत्रीस योग संग्रह जाणिवा ॥ बत्रीस देवेंद्र कह्या ते कहे छे । चमरेंद्र १ । बलेंद्र २ धरणेंद्र ३ । भूतानंद ४ । वेणुदेव ५ ।

॥ टीका ॥

३० पच्छित्तकरणेइत्ति प्रायश्चित्तंकरणंचकार्यं ३१ आराहणायमरणंते मरणरूपोन्तो मरणांतः सूत्रेत्यतोद्वात्रिंशद्योगसंग्रहाइति ३२ इन्द्रसूत्रेयावत्करणाद्वेणु देववेणुदालौ हरिकंते हरिस्सहे अग्गिसीहे अग्गिमाणवे पुण्णे वसिट्ठे जलकंते जलप्पहे अमियगई अमियवाहणे वेलंबे पहंजणे घोसे महाघोसे इतिद्रष्टव्यम्भुमर्या वत्करणात् माहिंदेबंभेलंतएसुक्के सहस्सारेत्ति द्रष्टव्यमिदं षोडशानांव्यन्तरेन्द्राणां षोडशानामेव वा अणपणकादीन्द्राणामल्पर्द्धिकत्वेनाविवक्षितत्वा दसंख्यातानामपिचंद्रसूर्याणां जातिग्रहणेनद्वयोरेवविवक्षितत्वाद्द्वात्रिंशदुक्ताइति। कुंथुनाथस्यद्वात्रिंशदधिकानि द्वात्रिंशच्चकेवलिशतान्यभूवन् द्वात्रिंशद्विधंनाट्यमभिनयविषय

॥ मूल ॥

या। पच्छित्तकरणेविय ॥ आराहणायमरणंते। बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ बत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे बली धरणे भूयाणंदे जाव महाघोसे चंदे सूरे सक्के ईसाणे सणंकुमारे जाव पाणए अच्चुए कुंथुस्सणंअरहओ बत्तीसं जिणसया होत्या सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाणवाससहस्साणं प० रेवइणक्खत्ते बत्तीसइतारे प०

॥ भाषा ॥

वेणुदाली ६। हरिकांत ७। हरिसिंह ८। अग्निशिख ९। अग्निमाणव १०। पूर्ण ११। वशिष्ठ १२। जलकान्त १३। जलप्रभ १४। अमितगति १५। अमित वाहन १६। वेलंब १७। प्रभंजन १८। घोष १९। महाघोष २०। चंद्रमा २१। सूर्य २२। शक्रेंद्र २३। ईशानेंद्र २४। सनत्कुमारेंद्र २५। माहेंद्र २६। ब्रह्मेंद्र २७। लांतकेंद्र २८। शुक्रेंद्र। २९। सहस्रारेंद्र ३०। प्राणतेंद्र ३१। अच्युतेंद्र। ३२। भवनपती ना इन्द्र २० सौधर्मेंद्रादिक इन्द्र १० ज्योतिषी ना २ एम ३२ यद्यपि ३२ व्यन्तरेंद्र छे पणित अल्पऋद्धिया तेमाटे न लख्या ज्योतिषी चन्द्र सूर्य असंख्याता छे पणि जातिशाची लख्या कुंथुनाथ १७ मां अरिहंत ने ३२ से जिन केवली थया। सौधर्म पहिले कल्पे बत्रीस विमान रूप आवासमां विमान वास शत सहस्र कह्या। एतले ३२ लाख विमान

बत्तीसतिविहेणहे प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसंपलिउवमाइं ठिई प० जेदेवा विजय वेजयंत जयंत अपराजियविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जेबत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ मूल ॥

कह्या। रेवती नक्षत्रना बत्रीस ताराकह्या। बत्रीसभेद नाटकना कह्या ते रायपसेणीयथकी जाणवा। एणीयें रत्नप्रभा पृथिवीयें केतलाएक नारकीनो बत्रीस पल्योपमनोस्थितिकही। छठेंसातमीपृथिवीयेंकेतलाएकनारकीनो बत्रीस सागरोपमनीस्थितिकही। केतलाएक असुरकुमारनी बत्रीस पल्योपमनीस्थिति कही। सौधर्म ईशाने कल्पें केतलाएक देवतानी बत्रीसपल्योपमनीस्थितिकही। जे देवता विजय १। वैजयंत २। जयंत ३। अपराजित ४। एहचिहुंअनुत्तरविमानें देवतापणेउपनाछे तेहदेवतानीबत्रीससागरोपमनीस्थितिकही। तेदेवता बत्रीसमें पखवाडे थोडोस्वासले घणोस्वासले ऊंचोस्वासले नीचोस्वासमूके तेहदेवतानें बत्रीसवर्षसहस्त्रे आहारनीवांछाउपजे। केकेतलाएकभव्यजीव जे बत्रीसभवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूकास्ये सर्वदुःखनो अंतकरिस्येमोक्षजास्ये ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वस्तुभेदा यथा राजप्रश्नकृताभिधान द्वितीयोपांग इति सम्भाव्यते सूचितं त्वादप्रतिबद्धमितिकेचित् ॥ ३२ ॥ अथत्रयस्त्रिंशत्तमस्थानकं तत्र आयः सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्याशातना: खण्डनानिमित्तादाशातनास्तत्र शैक्षोऽल्पपर्यायोरात्निकस्य बहुपर्यायस्य आसन्नमासत्ति यथारजोंचलादिस्तस्यलगति तथागन्ताभवतीत्येवमाशातनांशैक्षस्ये त्येवंसर्वत्र पुरओत्ति अग्रतोगंताभवति सपक्खंति समानपक्षं समपार्श्वंयथाभवति समश्रेण्यागच्छतीत्यर्थः चिठ्ठतिस्था ताआसिताभवति यावत्करण दशाश्रुतस्कन्धानुसारेणान्याइत्तद्रष्टव्यास्तास्चैवसर्वत: आसन्नपुर: पार्श्वत:स्थानेन तिस्रोऽ्ह्ननिषीदनेनचतिस्र: तथाविचारभूमौ

॥ मूल ॥

स्संति ॥ ३२ ॥ तत्तीसंआसायणाउ प० तं० । सेहेराइणिअस्स पुरउ गंताभवइ आसाय णासेहस्स १ सेहेराइणियस्स सपक्खंगंताभवइ आसायणासेहस्स २ सेहेराइणियस्स आसन्नंगंताभवइ आसायणासेहस्स ३ एवंएएणंअभिलावेणं सेहेराइणियस्स पुरउंचिठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ४ सेहेरा इणियस्स सपक्खंचिठित्ताभवइ आसायणासेहस्स ५ सेहेराइणियस्स आसन्नंचिठित्ताभवइ आसायणासेह

॥ भाषा ॥

इति बत्रीसमोसमवाय थयो ॥ ३२ ॥ हिवेतेत्रीसमोसमवाय लिखियेछे । तेत्रीस आशातना । ज्ञानदर्शनचारित्रप्राप्तिनो सातवो खंडवो तेआ शातना कही तेकहेछे । शिष्यअल्पकालीनदीक्षानोधणी रात्निकघणी दीक्षानोधणी तेहने आसन्नो ढूंकडोगंताहोय चालेएहपहिलीतेआशातना शिष्यने १ । रा त्निकवडानेआगलथकोगंताहोयचालेतेआशातनाशिष्यने २ । रात्निकने सपक्खंकहतांबराबरीचालेतेआशातनाशिष्यने ३ । इम एणे अभिलापें शिष्यवडाने आगलऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ४ । शिष्यगुरुनेआगल ऊभोरहेतेआशातनाशिष्यने ५ । शिष्यगुरुने बराबरऊभोरहे तेआशातना शिष्यने ६ । शिष्यगुरु

॥ टीका ॥

मलयोः पूर्वतरमाचमतः ग्रघस्याशातना १० एवं पूर्वंगमनागमनमालोचयतः ११ तथागत्रौक्ॆजागर्त्तीतिपृष्ठे रात्रिकिनतद्वचममप्रतिशृखतः १२ रात्रिकस्य।

॥ मूल ॥

स्स ६ सेहेराइणियस्स पुरत्नुनिसीइत्तान्नवइ आसायणासेहस्स ७ सेहेराइणियस्स सपरकंनिसीइत्तान्नवइ आसायणासेहस्स ८ सेहेराइणियस्स आसन्नंनिसीइत्तान्नवइ आसायणासेहस्स ९ एवंएएणंअन्निलावेणं सेहेराइणिएणंसद्धिंवहिया विहारन्नूमिनिरकं समाणे तत्यपुव्वामेवसेहतराए आयामेइ पच्छाराइणिए आसा यणासेहस्स १० सेहेराइणिएणंसद्धिं वहियाविहारन्नूमिं वा निरकंतेसमाणे तत्यपुव्वामेवसेहतराएआलोएइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स ११ सेहेराइणियस्सराउवावियालेवावाहरमाणस्स अज्जोकेसुत्ते केजागरेत त्यसेहेजागरमाणेराइणियस्स अप्पडिसुणेत्तान्नवइ आसायणासेहस्स १२ सेहेराइणियस्स पुव्वं संलवत्तए तंपु

॥ भाषा ॥

मे आगलथको बेसे तेआशातनाशिष्यने ७। शिष्यगुरूने बरोबर बेसे तेआशातनाशिष्यने ८। शिष्यआसन्नकहतां ढुंकडोथकोबेसे तेआशातनाशिष्यने ९। एवंएणे आलिलावे ९। आशातना। शिष्यगुरूबेहुंफेरेगयाथकां तिहांशिष्यपहिलेआचमनलेइ जलशुचि करे तेआशातनाशिष्यने १०। शिष्यगुरूसाथे बहिर्भूमिथंडिले चैत्यजिनमूर्ति अथवा भूमिकाये जातांथकां पहिलेशिष्य इरियावही पडिकमे पछेगुरुपडिकमे तेआशातना शिष्यने ११। शिष्यगुरूनेपहिलेहीज आवणहा रमाडे गुरु बोलाव्याविना बोले तेआशातना शिष्यने १२। शिष्य प्रते गुरूयें पूछ्यो कवण रात्रियेसूतोछे अथवा कवण जागेछे एहवं पूछेथके शिष्य जागतो थ

॥ टीका ॥

पूर्वमालपनीयं कंचनभवमस्यपूर्वतरमालपत: १३ अशनादिलब्धमपरस्य पूर्वमालोचयत: १४ एवमन्यस्योपदर्शयत: १५ एवंनिमंत्रयत: १६ रात्विकमनापृच्छ्या ऽन्यस्मैभक्तादिददत: १७ स्वयंप्रधानतरं भुंजानस्य १८ क्वचित्प्रयोजनेव्याहरतो रात्विकस्यवचाप्रतिशृण्वत: १९ रात्विकम्प्रतितत्समचतापृहताशब्देन बहुधा

॥ मूल ॥

ह्यामेवसीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १३ सेहे० असणंवापाणंवाखाइमंवासाइमंवा पडिगाहित्ता तंपुव्वामेवसीहतराएगिहस्सआलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणासेहस्स १४ सेहेअसणंवा४ पडिगाहित्तापुव्वामेवसीहतराएगिहस्सपडिदंसेइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १५ सेहेअसणंवा४पडिगा हित्ता पुव्वामेवसीहतराएअन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छाराइणिए आसायणासेहस्स १६ सेहेराइणिएणंसद्धिंअस णंवा४पडिगाहित्तातंराइणियं अणापुच्छित्ता जस्सजस्सइच्छइ तस्सतस्सखद्धं२दययइ आसायणासेहस्स१७

॥ भाषा ॥

को उत्तर न दे तेआशातना शिष्यने १३। शिष्यअशनपान खादिम स्वादिमविहरीने ते पहिले बीजाआगलआलोईनेपछे गुरुनेआगलआलोवे तेआशातना शिष्यने १४। शिष्यअशनपान खादिमस्वादिम विहरीनेपेहिले बीजासाधूने देखाडेपछे गुरुने देखाडे तेआशातना शिष्यने १५। शिष्य अशनपान खादिम स्वादिम विहरीने पहिले बीजासाधुने निमंत्रणादे पछे गुरुने निमंत्रे तेआशातना शिष्यने १६। शिष्यगुरु साथे अशन पान खादिम स्वादिम विहरीने गुरु ने अण पूछे थकें जेजे साधुवांछे तेह तेहने आपे तेआशातनाशिष्यने १७। शिष्य गु.ने साथे असनपान खादिम स्वादिम विहरीने मनोज्ञमनोज्ञ स्निग्धस्नि

॥ टीका ॥

भाषमाणस्य २० व्याहृतेनमस्तकेनवन्दे इतिसक्राश्रेकिंभणसीतिब्रुवाणस्य २१ प्रेरयतिशिष्ये कस्त्वंप्रेरणायामितिवदतः २२ आचार्यग्लानंकिंनप्रतिचरसीत्या युक्ते त्वंकिंनतंप्रतिचरसीत्यादिभणतः २३ धर्मंकथयतिगुरावन्यमनस्कतां भजतोऽनुमोदयतइत्यर्थः २४ कथयतिगुरौनस्मरसीतिवदतः २५ धर्मकथामाच्छिदतः

॥ मूल ॥

सेहेराइणिएणंसद्धिंअसणंवा ४ आहारेमाणे तत्थसेहे रक्कहं रक्कहं मायं मायं रसियं रसियं उसढं उसढं मणुस्सं मणुस्सं मणामं मणामं निद्धं निद्धं लुक्कं लुक्कं आहारित्ता भवइ आसायणासेहस्स १८ सेहेराइणियस्स वाह रमाणस्सअप्पडिसुणित्ताभवइ आसायणासेहस्स १९ सेहेरायणियं खद्धं खद्धं वत्ताभवइ आसायणासेहस्स २० सेहेराइणियं किंवइत्ताभवइ आसायणासेहस्स २१ सेहेराइणियंतुमंइइयवत्ताभवइ आसायणासेहस्स २२ सेहेरायणियं तज्जाएणं तज्जायंपडिहणित्ताभवइ आसायणा० २३ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसु

॥ भाषा ॥

घ रुचरुच आप भोजनकरे ते आशातना शिष्यने १८। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको वलतो उत्तर न आपे ते आशातना शिष्यने १९। शिष्य गुरुयें बोलाव्यो थको ठामे बेठोथको उत्तर दे ते आशातना शिष्यने २०। शिष्य गुरुयें बोलाव्योथको मत्थेण वंदामि एहने स्थाने शुंकहोछो एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने २१। वडायें प्रेरणाकरतां कांईक कार्यनी आज्ञा देतांथकां तुं कोण प्रेरणा करणहार एहवो बोलि तेआशातना शिष्यने २२। शिष्यप्रते वडाये ग्लान आचा र्यनी पर्युपासना केमनथी करतो एम कहतांथकां तुं केमनथी करतो एहवुं बोले ते आशातना शिष्यने २३। गुरुयें धर्मोपदेश करतांथकां अन्यचित्त होय तेणे अशिष्य अनुमोदे ते आशातना शिष्यने २४। शिष्य गुरुयें कांइएक वार्ता कहतांथकां तम्हे भूली गयाछो एमनथी एमछे एहवो बोले ते आशातना

१६ भिक्षावेलावर्त्ततइत्यादिवचनतः पर्षद्भिंदानस्य २७ गुरुपर्षदर्भदानुष्ठितायास्तथैवव्यवस्थितायाधर्मकथयतः २८ गुरोः संस्तारकंपादेनघट्टयतः २९ ॥ टीका ॥
गुरोः संस्तारकेनिषीदतः ३० उच्चासनेनिषीदतः ३१ समासनेपेत्र ३२ वयस्विगुरुसमासूक्तोक्ताच रात्रिकस्यालपतस्तत्रगतएवासनादिस्थितएव प्रतिशृणोति

मिणेन्नवइ आसायणासेहस्स २५ सेहेरायणियस्स कहंकहेमाणस्स नोसरसि एवंवत्ताभवइ आसायणा० २५ ॥ मूल ॥
सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स कहंआच्छिदित्तान्नवइ आसायणासेहस्स २६ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाण
स्स परिसंभित्ताभवइआसायणासेहस्स २७ सेहेराइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेयपरिसाए अणुठिआए
अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपितच्चंपि तामेवकहंकहेत्ताभवइ आसायणासेहस्स २८ सेहे
राइणियस्स सेज्जासंथारगंपाएणं संघट्टित्ता हत्थेणंअणुन्नवेत्तागच्छइआसा० २९ सेहेराइणियस्स सेज्जासंथा
रए चिट्ठित्ता वा निसीइत्ता तुयट्टित्तावा आसा० ३० सेहेराइणियस्स उच्चासणंसिवा ३१ समासणंसिवा
चिट्ठित्तावा निसीइत्तावा तुयट्टित्तावा भवइआसायणासेहस्स ३२ सेहेराइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए

शिष्यने २५। जेशिष्य गुरुयें धर्मकथा कहतां थकां धर्मकथानो छेदन करे तेआशातना शिष्यने २६। शिष्य गुरु सभायें बैठा थकां भिक्षानी वेलाथई इत्यादि
कहीने पर्षदानो भेदकरे ते आशातना शिष्यने २७। शिष्य गुरु सभायें बैठा थकां पर्षदा प्रति धर्मोपदेश करे ते आशातना शिष्यने २८। शिष्य गुरुना ॥ भाषा ॥
आसनप्रतें पांयथकी संघट्टकरे ते आशातना शिष्यने २९। शिष्य गुरुने आसनें बेसे ते आशातना शिष्यने ३०। शिष्य गुरु थकी ऊंचे आसने बेसे ३१ ।

आगत्यहिप्रत्युत्तरंदेयमिति गुरुस्याशातनेति ३३ तत्तीसंभोमत्ति भोमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरीएइत्यादि इहसूर्यस्यमंडलेषा आगत्यहिप्रत्युत्तरंदेयमिति गुरुस्याशातनेति ३३ तत्तीसंभोमत्ति भोमानिनगराकाराणि विशिष्टस्थानानीत्यन्ये तथाजयाणंसूरीएइत्यादि इहसूर्यस्यमंडलेषा

रंतरं द्वेद्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणंपंचयोजनानि पंचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागा एतावताहीनविष्कंभं सर्वबाह्यमंडलाद्वितीयं मंडलंभवति रंतरं द्वेद्वे योजनेऽष्टचत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाः एतद्विगुणंपंचयोजनानि पंचत्रिंशच्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनं द्वितीयमंडलंसर्वबाह्यमंडलाद्भवति एवंतृतीयमंडले एतद्विगुणमहीनंभ

ततश्चवृत्तक्षेत्रपरिधितः न्यायेनपरिधितः सप्तदशभिर्योजनैरष्टत्रिंशताचैकषष्ठिभागैर्न्यूनं द्वितीयमंडलंसर्वबाह्यमंडलाद्भवति परिधितस्तुपंचत्रिंशतायोजनैः पंचदशभिश्चैकषष्ठिभागैर्न्यूनंभवति तच

वति तथाहि तद्विष्कम्भतएकादशभिर्योजनैः नवभिश्चैकषष्ठिभागैः पर्यन्तिमाद्धीनंभवति परिधितस्तुपंचत्रिंशतायोजनैः पंचदशभिश्चैकषष्ठिभागाभ्यांदिनहद्विभि ॥ मूल ॥

र्यौगिलत्वाणि अष्टादशसहस्राणि द्वेशतएकोनाशीत्युत्तराःषट्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागाइति तथान्तिनमंडलाभ्यंहलेरद्वाभ्यांमुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागाभ्यांदिनहद्विभि

चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाएरायहाणीए एक्क

मेक्कवाराएतेत्तीसं २ भोमा प० महाविदेहेणं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसू

चेवपडिसुणित्तानवइ आसायणासेहस्स ३३ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाएरायहाणीए एक्क

मेक्कवाराएतेत्तीसं २ भोमा प० महाविदेहेणं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० जयाणंसू

रिए बाहिराणंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ताणं चारंचरइ तयाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयणसहस्से ॥ भाषा

गुरुने समान आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुने कांईक वार्ता पूछ्यां थकां आसने बेठांइ उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्रीस आशा

गुरुने समान आसने बेसे ते आशातना शिष्यने ३२ । गुरुने कांईक वार्ता पूछ्यां थकां आसने बेठांइ उत्तर दे ते आशातना शिष्यने ३३ । एह तेत्रीस आशा

तना कही ३३ ॥ असुरेंद्र असुर कुमारनो राजा एहवा चमरेंद्रनी चमरचंचा राजधानीने विषे एकेकां वारें तेत्रीस तेत्रीस नगरने आकारें भला स्थानक

कह्या । जंबूद्वीप संबंधी महाविदेहक्षेत्र तेत्रीस हजार योजन झाझेरो पिहुलपणे कह्यो । जिवारे सूर्य सर्वबाह्य मंडल थकी त्रीजे मंडले आवीने भ्रमणकरे

तिवारे भरतक्षेत्रगत मनुष्यने तेत्रीस हजार योजनथकी दृष्टिगोचर आवे । ते पोसो पूनिमे मकर संक्राति पछे माह वदी १ एकम दिने सूर्य उत्तरायण

वति तथाचतृतीयेमंडलेयदा सूर्य्यश्चरति तदाद्वादशमुहूर्त्ताश्चत्वारश्चेकषष्ठिभागा मुहूर्त्तस्य दिनप्रमाणम्भवति तदर्द्धं चैकषष्ठिभागीकृतेन अष्टषष्ठ्यधिक शतत्र यलक्षणेन स्थूलगणितस्यविवक्षितत्वात् परित्यक्तांशा: ३१८२२८ तृतीयमंडलपरिधौगुणितेसति एकषष्ठ्याचषष्ठिगुणितया भागेहृतेयल्लभ्यते तत्तृतीयमंडलेच क्षुः स्पर्शप्रमाणंभवति तच्चद्वात्रिंशत्सहस्राण्येकोत्तराणि ३२००१ अंशानामेकषष्ठ्याभागलब्धाश्च एकोनपंचाशत्षष्ठिभागा योजनस्य ४९ । ६० त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा योजनषष्ठिभागस्य २३ । ६१ एतत्तृतीयमंडले चक्षुःस्पर्शस्यप्रमाणं जम्बूद्वीपप्रज्ञप्त्यामुपलभ्यते इह यदुक्तं त्रयस्त्रिंशत्किंचिन्न्यूना तत्रसातिरेकस्ययोज नस्यापिन्यूनमहत्त्वता विवक्षितेतिसम्भाव्यते चतुर्दशमंडलेपुनरिदं यथोक्तमेवप्रमाणंभवति प्रतिमंडलंयोजनचतुरशीत्या: साधिकाया: प्रथममंडलमानेप्रक्षेप ॥ टीका॥

हिं किंचिविसेसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई अहेसत्तमाए पुढवीए काल महाकाल रोरुए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई अप्पइठाणे नेरइएनेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ मूल ।

चाल्यो निषध पर्वत भणी तिवारे त्रीजे मांडले तेत्रीस हजार झांझेरो दृष्टिगोचर आवे । त्रीजे मंडले सूर्य चारकरे तिवारे बारे मुहूर्त एक मुहूर्तना एकस ठिया चार भाग प्रमाणें दिवस होय । अने सर्वबाह्य मंडले सूर्य होय तिवारें अेकत्रीस हजार आठ से एकत्रीस योजनना साठिया त्रीस वेगलें थकें इहां नां माणसने दृष्टिगोचर आवे । एणीये रत्नप्रभा पृथिवीये केतला एक नारकीनो तेत्रीस पल्योपमनो आउखो कह्यो । हेठे सातमी पृथिवीयें पूर्वादिक दिस यकोमांडो काल १ । महाकाल २ । रुरुक ३ । महारुरुक ४ । एह चिहुं नरकावासाना नारकीनो उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनो स्थिति कहो । विचले ॥ भाषा

॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइमेसंति बुद्धानांतीर्थंकृतामष्य:तिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषा: अवस्थितमश्रुहि

णादिति ॥ ३३ ॥ अथचतुस्त्रिंशत्तमस्थानके किमपिलिख्यते बुद्धाइमेसंति बुद्धानांतीर्थंकृतामष्य:तिशेषा अतिशया बुद्धातिशेषा: अवस्थितमश्रुहि

॥ मूल

सोहम्मीसाणेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० असुराणं अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई प० जेदेवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० तेणंदेवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जेतेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ चोत्तीसंबुद्धाइ

॥ भाषा

अप्पइट्ठाण नरके नारकीनी जघन्य स्थिति नथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। केतलाएक असुर कुमार देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। सौधर्म ईशान देवलोकें केतलाएक देवतानी तेत्रीस पल्योपमनी स्थिति कही। विजय १ वैजयंत २ जयंत अपराजित ४ विमाने देवतानी तेत्रीस सागरोपमनी स्थितिकही। जेदेवता विचले सर्वार्थसिद्ध महाविमाने देवतापणे उपनाछे ते देवतानी जघन्य स्थितिनथी उत्कृष्ट तेत्रीस सागरोपमनी स्थिति कही। ते देवता तेत्रीस पखवाडे गयेथकें स्वासोस्वासले घणीले उंचोले नीचो मूंके तेह देवतानें तेत्रीस सहस्र वर्षगये आहारनी वांछा उपजे। छे केतला एक भव्यजीव जे तेत्रीस भवने आंतरे सीझस्ये बूझस्ये मूंकास्ये सर्वदु:खनो अंतकरस्ये मोक्ष जास्ये। इति तेत्रीसमो समवाय संपूर्णम् ॥ ३३ ॥

स्वभावकेशाश्च शिरोजा: श्मश्रूणि च कूर्चरोमाणि च शेषशरीरलोमानि नखाश्च प्रतीता इति द्वन्द्वैकत्वमित्येक: १ निरामया नीरोगा निरुपलेपा निर्मला गात्रयष्टिस्तनुलतेति द्वितीय: २ गोक्षीरपाण्डुरं मांसं शोणितमिति तृतीय: ३ तथा पद्मं च कमलं गंधद्रव्यविशेषो वा यत्पद्मकमिति रूढं उत्पलं च नीलोत्पलमुत्पलकुष्टं वा गंधद्रव्यविशेषस्तयोर्योगंध: सयत्रास्ति तत्तथोच्छ्वासनि:श्वासमिति चतुर्थ: ४ प्रच्छन्नमाहारनिर्हारं अभ्यवहरणमूत्रपुरीषोत्सर्गौ प्रच्छन्नत्वमेवस्फुटतरमाह अदृश्यं मांसचक्षुषा न पुनरवध्यादिलोचनेन इति पंचमं ५ एतच्च द्वितीयादिकमतिशयचतुष्कं जन्मप्रत्ययं आकाशके चक्रं षष्टं तथा आगाशगतं व्योमवर्ति आकाशकं वा प्रकाशमि

सेसा प० तं० अवठिए केसमंसुरोमनहे १ निरामया निरुवलेवा गायलठी २ गोक्खीरपंडुरे मंससोणिए ३ पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे ४ पच्छन्ने आहारनीहार अदिस्से मंसचक्खुणा ५ आगासगयं चक्कं ६

हिवे चौत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ चौत्रीस बुद्ध कहतां तीर्थंकरदेव तेहना अतिशय ते बुद्धातिशय बीजा देवनो अपेक्षाये अधिक पणो कह्या ते कहेछे। वधेनही मस्तकनाकेश श्मश्रू डाढीमूंछ शरीरनारोम। नीरोगवलीनिर्मलशरीर २। गायनादूधसरीखोधवल मांस रुधिर ३। पद्मकमलतेहनागंधसरीखो स्वासोस्वास नो गंध ४। अदृश्यदीसेनही मांस चक्षुयेंकरी येतले चर्मचक्षुयेकरी एहवोप्रछन्नगुप्तआहार जीमणनीविधि वलीनीहार मूत्रपुरीषनोत्याग ५। एणीयेछद्मस्थदृष्टीयें येपांचअतिशयथया। तेमांहिपहिलो मूकीबीजायकीपंचमालगें चारअतिशय जन्मथकी माडी ने होय ५। जेहनोआकाशगत धर्मचक्रचाले ६। आकाशगत छत्र ७। आकाशगतवर प्रधान श्वेतचामर ८। आकाशनीपरें अत्यंत निर्मल एहवास्फटिकरत्नमयीपादपीठसहितसिंहासन ९। आका

॥ टीका ॥

आगा त्यर्थः चक्रंधर्मचक्रमितिषष्ठः ६ आकाशगकेछत्रमितिसप्तमः एवमाकाशगंछत्रंछत्रत्रयमित्यर्थः ७ आकाशगकेप्रकाशे श्वेतवरचामरे प्रकीर्णकद्वयमष्टमः ८ आगा कुडिभित्तिस सफालियामयत्ति आकाशमिवयदत्यंत मच्छंस्फटिकं तन्मयं सिंहासनसहपादपीठमितिनवमः ९ आगामगओत्ति आकाशगतोऽत्यर्थतुङ्गमित्यर्थः कुडिभित्तिस घुपताका: संभाव्यन्ते तत्सहस्रैः परिमंडितश्चासावभिरामश्चातिरमणीय इतिविग्रहः इंद्रज्झओत्ति शेषध्वजापेक्षयातिमहत्वादिंद्रश्चासौध्वजश्च इन्द्रध्वजइति पुरओत्ति जिनस्याग्रतोगच्छतीतिदशमः १० चिट्ठतिवानिसीयंतिवेत्ति तिष्ठंतिगतिनिवृत्त्यानिषीदंत्युपविशंतितत्क्षणादेवत्ति तत्क्षणमेवाकालहीनमित्यर्थः पत्रैः संच्छिन्नइतिवक्तव्येप्राकृतत्वात् संच्छन्नपत्रइत्युक्तं सचासौपुष्पपल्लवसमाकुलश्चेतिविग्रहः पल्लवा अंकुराः सच्छत्रः सध्वजः सघंटः सपताकोऽशोकवरपादप

॥ मूल ॥

आगासगयं छत्तं ७ आगासगयाउ सेयवरचामराउ ८ आगासफालियामयं सपायपीढं सीहासणं ९ आगा सगउ कुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामो इंदज्झउ पुरउ गच्छइ १० जत्थ जत्थ वियणंअरहंताभगवंताचिठं तिवा निसीयंतिवा तत्थ तत्थ वियणं तक्कणादेव संछन्नपत्तपुप्फपल्लवसमाउलो सछत्तो सज्झउ सघंठो सपडा

॥ भाषा ॥

माटो तेमहेंद्रध्वजजिननेआगलथकोचाले १० । अ[illegible] एतले अत्यंतऊंचो लघुपताकाना सहस्रकरी परिमंडित मनोहर एहवोइन्द्रध्वज अन्यध्वजनीअपेक्षायें सर्वतः व्याप्त ध्वजासहित घंटापताका सहित जिहां जिहां अरहंत भगवंत ऊभारहे अथवा वेसे तिहांतिहां तत्काल पत्रे करीछायो अने फूलपल्लवेकरी वर प्रधान अशोकवृक्ष ऊपर छायाकरें ११ । वेगलो थोडोपूठें मस्तकने प्रदेशें तेजमंडल भामंडल होय तेभामंडल अंधकारने दसोदिशि नसाडे १२ । जिहां

॥ टीका ॥

त्येकादशः ११ ईसिमित्ति ईषदल्पं पिट्ठओत्ति पृष्ठतः पश्चाद्भागे मउडट्ठाणमिति मस्तकप्रदेशे तेजोमण्डलं प्रभापटलमितिद्वादशः १२ बहुसमरमणीयोभूमिभाग इतित्रयोदशः १३ अहोसिरत्ति अधोमुखाः कंटका भवंतीति चतुर्दशः १४ ऋतवोविपरीताः कथमित्याह सुखस्पर्शाभवंतीति पंचदशः ५१ योजनंयावत् क्षेत्र शुद्धिः संवर्त्तकवातेनेति षोडशः १६ जुत्तफुसिएणत्ति उचितबिन्दुपातेनेति निहयरयरेणुयंति वातोत्खातमाकाशवर्त्तिरजो भूवर्त्तीतुरेणुरिति गंधोदकवर्षाभिधा नःसप्तदशः १७ जलस्थलजं यद्भास्वरंप्रभूतंच कुसुमंतेनवृंतस्थायिताऊर्द्धमुखेनदशार्द्धवर्णेन पंचवर्णेनजानुनोत्सेधस्य उच्चत्वस्ययत्प्रमाणं यस्यसजानूत्सेधप्रमाणमा

॥ मूल ॥

गोअसोगवरपायवे अभिसंजायइ ११ ईसिंपिट्ठउ मउडठाणंमि तेयमंडलं अभिसंजायइ अंधकारे वियणं दसदिसाउ पभासेइ ११ बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे १३ अहोसिरा कंटया जायंति १४ उऊविवरीया सुहफासा भवंति १५ सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणामारुएणं जोयणपरिमंडलं सव्वउ समंता संपमज्जिज्ज

॥ भाषा ॥

तीर्थंकर विहारकरे तिहां वणीसम रमणीक भूमिभाग होय १३। जेणं मार्गें तीर्थंकर विहारकरे कांटा ऊंधेमस्तकेहोय १४। ऋतु विपरीत एतले उन्हा लायें शीयालानोभाव शीयालायेउन्हालानोभाव तेमाटें सुखरूपस्पर्शहोय १५। शीतल सुखस्पर्श सुगंधि ठाढो मंद गंधयुक्त एहवा संवर्तवायरेंकरी एकयोज नमंडललगे सगलो दिसाविदिसा प्रमार्जे १६। जेणे मार्गें तीर्थंकर विहारकरे तेहमार्गेमेघआकाशवर्तीरज भूमिवर्तीरेणु गंधजलनापरिमित सूक्ष्मसूक्ष्म विंदु ये करीनसाडे १७। स्थल कुसुम तेचंपाजाईप्रमुख जलकुसुम.तेकमलादिक भास्वर तेजवंत प्रभूतघणा नीचाढेवींट जेहना एतलेऊर्द्धमुखे पांचवर्ण फूलेंकरीढीं

॥ टीका ॥

षः पुष्पोपचारः पुष्पप्रकारइत्यष्टादशः १८ तथाकालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे भवइत्ति कालागरुश्चगंधद्रव्यविशेषः प्रवरकुंदुरुक्कञ्चचीडा
भिधानं गंधद्रव्यंतुरुक्कंच शिल्हकाभिधानं गंधद्रव्यमिति द्वंद्वस्ततंतल्लक्षणो योधूपस्तस्यमघमघायमानो बहुलसौरभ्यो योगंधउद्धुतउद्भूतस्तेनाभिराममभिरमणी
यंयत्तत्तथा स्थानंनिषीदनस्थान मितिप्रक्रमइत्येकोनविंशतितमः १९ तथाउभयोपासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवेजक्खाकडयतुडियथंभियभुयाचामरुक्खेव
णं करंतित्ति कटकानिप्रकोष्ठाभरणविशेषास्तुटितानि बाह्वाभरणविशेषास्तैरतिबहुत्वेनस्तंभिताविवस्तंभितौभुजौययोस्तौ तथायक्षौदेवाविति विंशतितमः २०
बृहद्वाचनायामनंतरोक्तमतिशयद्वयंनाधीयते अतस्तस्यांपूर्वेष्टादशैव अमनोज्ञानांशब्दादीनामपकर्षोऽभावइत्येकोनविंशतितमः १९ मनोज्ञानांप्रादुर्भावइति
विंशतितमः २० पञ्चाहरओत्ति प्रव्याहरतोव्याकुर्वतोभगवतः हिययगमणीउत्ति हृदयंगमः जोयणनीहारीत्ति योजनातिक्रमी स्वरइत्येकविंशः २१ अर्द्धमाग

॥ मूल ॥

इ १६ जुत्तफुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ १७ जलथलयभासुरपभूतेणं विंटठावियदसद्धवन्नेणं
कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ १८ अमणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं अवकरिसो
भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ १९ उभओ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवे

॥ भाषा ॥

चणना ऊंचप्रमाणमात्रें फूलनीपूजा फूलपगरकरे १८। खोटा शब्दस्पर्शरसरूप गंधनो अभाव होय १९। मनोहर शब्दस्पर्शरसरूपगंधनो प्रादुर्भाव होय
सिद्धांत मूलमतोयें वलीवाचनांतरें कृष्णागुरुप्रमुख धूपउखेवे बिहूंपासे वेयक्षजभा चामरउखेवे २०। वखाण करतां भगवंतनो हृदयंगम अनेसोहामणोयोज

॥ टीका ॥

हीयत्ति प्राकृतादीनांषण्णांभाषाविशेषाणां मध्येयामागधीनामभाषा रसोर्लसौमागध्यामित्यादिलक्षणवतीसा असमाश्रितस्वकीयसमग्रलक्षणार्द्धमागधीत्युच्यते तयाधर्ममाख्याति तस्याएवातिकोमलत्वादिति द्वाविंश: २२ भासिज्जमाणीति भगवताभिधीयमाना आरियमणारियाणंति आर्यानार्य देशोत्पन्नानां द्विपदा मनुष्याश्चतुष्पदागवादय: मृगाआटव्या: पशवोग्राम्या: पक्षिण: प्रतीता: सरीसृपा उर:परिसर्पाभुजपरिसर्पाश्चेति तेषांकिमात्मनआत्मातया आत्मीयएवेत्यर्थ: भाषा तया भाषाभावेनपरिणमतीतिसंबन्ध: किंभूतासौभाषित्याह हितमभ्युदय: शिवंमोक्ष: सुखंश्रवणकालोद्भवमानंदन्ददातीतिहितशिवसुखदे तित्रयोविंश: २३ पूर्वंभवांतरेऽनादिकालेवा जातिप्रत्ययबद्धं निकाचितं वैरसमित्रभावोयेषांतेतथा तेपिच आस्तांमध्येदेवावैमानिका असुरानागाश्चभवनपतिविशेषा:

॥ मूल ॥

जरका कणगतुंडियथंजियन्नुया चामरुक्खेवणं करंति २० पव्वाहरत्त वियणं हियपगमणीउ जोयणनीहारी सरो २१ नगवंचणं अद्धमागहीए न्नासाए धम्ममाइक्खइ २२ साविपणं अद्धमागहीन्नासा न्नासिज्जमाणी तेसिंसव्वेसिं आरियमणारियाणं दुप्पयचउप्पयमियपसुपक्खिसरीसिवाणं अप्पप्पणोहियसिवसुहदायन्नास

॥ भाषा ॥

नलगे विस्तरतो शब्दहोय २१ । भगवंत छ भाषामांहि अर्द्धमागधीभाषायेंकरीधर्मप्रते कहे २२ । तेहीजपणि अर्द्धमागधीभाषा सगलाआर्यअनार्यदेशनांउपनानेंद्विपदमनुष्यने चतुष्पदगवादिकने मृगअटवोजीव पशुग्रामसंबधी ढोर खेचर उरपरभुजपरसर्प एहनाआत्मानेहित अभ्युदयविशेष मोक्षसुखआनंदतेहने देणहारी भाषापणेपरिणमे २३ । भवांतरे अनादिकाले अथवा जातिहेतुकबद्धनिकाचित वैर बांध्या जेणे एहवादेव मावैनिक १ । असुरनागकुमार एहभवनपतीदेव सुराणे शोभनवर्णपितत ज्योतिषी यक्ष राक्षस किंनर किंपुरुष एह चारव्यंतर विशेष गरुडलांछनपणाथकी सोपर्णकुमार भवनपति विशेष गंधर्वमहोर

॥ टीका ॥

सुवर्णाः शोभनवर्णा एतेचज्योतिष्कायसुराश्चमकिन्नराः किंपुरुषाः व्यंतरभेदाः गरुडागरुडलांछनत्वात् सुपर्णकुमाराभवनपतिविशेषाः गन्धर्वामहोरगाश्चव्यंतरवि शेषाएव एतेषांद्वंद्वः पसंतचित्तमाणसा प्रशांतानिसमञ्जतानिचित्तानि रागद्वेषाद्यनेकविधविकारयुक्ततया विविधानिमानसान्यंतःकरणानियेषांते प्रशांतचि त्तमानसा धर्मनिशामयंति इतिचतुर्विंशः २४ वृद्धवाद्तयाइदमन्यद्तिशयद्वयमधीयते यदुत अन्यतीर्थिकप्रावचनिका अपिचणं वंदंतीभगवंतमितिगम्यते इतिपंचविंशः २५ आगताः संतोऽर्हतः पादमूले निःप्रतिवचनाभवंति इतिषड्विंशः २६ जओजओवियणंति यत्रयत्रापिचदेशे तओ २ त्ति तत्रतत्रापिच पंच विंशतौ योजनेषु ईतिर्धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूषकादि प्राणिगणइतिसप्तविंशः २७ मारिर्जनमरकइत्यष्टाविंशः २८ स्वचक्रं स्वकीयराजसैन्यं तदुपद्रवका

॥ मूल ॥

त्ताए परिणमइ २३ पुव्वबद्धवेरावियणं देवासुरनागसुवन्नजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाअरहन्त पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति २४ अन्नउत्थियपावयणियावियणमागया वंदंति २५ आगया समाणा अरहन्त पायमूले निप्पडिवयणाहवंति २६ जत्त जत्त वियणं अरहंतो भगवंतो विहरंति तत्त तत्त

॥ भाषा ॥

गव्यंतरविशेष एहसगला वैरभावछांडीने अरिहंतने पायमूले प्रसन्नचित्त प्रशांतथयाछे चित्तरागद्वेषादि अनेकविधविकार जेहना एहवाधर्मप्रतें सांभले २४ । अन्यतीर्थीअन्ययूथिकाकपिलादिक अन्य प्रवचन मिथ्यात्वशास्त्रनाधणीतेहीपणिआव्यायकाभगवंतप्रतें वांदें २५ । तेहअन्यशास्त्रनावादीप्रतिवादीआव्यायका अरिहंतना पायमूले निष्प्रतिवचना उत्तरदेवाभणी असमर्थथया २६ । जेणेप्रदेशे अरिहंत भगवंतविहरे विचरे तिहां योजन पंचवीसलगे ईति धान्यादिउप द्रवकारी प्रचुर मूषकादिक न होय २७ । मारी लोगमरकीनहोय २८ । स्वचक्र स्वदेशी कटक उपद्रवनकरे २९ । परचक्र परदेशी कटकनो भयनहोय ३० ।

॥ टीका ॥

रिनभवतीति एकोनत्रिंश: २९ एवंपरचक्रं परराजसैन्यमितित्रिंश: ३० अतिवृष्टिरधिकवर्षइत्येकत्रिंश: ३१ अनावृष्टिर्वर्षणाभावइतिद्वात्रिंश: ३२ दुर्भिक्षंदु:
ष्कालइतित्रयस्त्रिंश: ३३ उप्पाइयावाहित्ति उत्पाताअनिष्टसूचका रुधिरवृष्ट्यादयस्तद्धेतुकाये ऽनर्थास्तेऽभ्युत्पातिका स्तथाव्याधयोज्वराद्यास्तदुपशमोऽभावइति
चतुस्त्रिंशत्तम: ३४ अन्यत्र पच्चाहरओइतआरभ्ययेभिहितास्ते प्रभामंडलंचकर्मक्षयकृता: शेषाभवप्रत्ययेभ्योऽन्येदेवकृताइति एतेचयदन्यथापिदृश्यंते तन्मतांतर
मेवमंतव्यमिति चक्कवट्टिविजयत्ति चक्रवर्त्तिविजेतव्यानिक्षेत्रखण्डानि उक्कोसेणंएएचोत्तीसं तित्थगरासमुप्पज्जंतिति समुत्पद्यन्ते सम्भवन्तीत्यर्थ: नत्विकसमयेजा

॥ मूल ॥

वियणं जोयणपणवीसाएणं ईती नहवइ २७ मारी नहवइ २८ सचक्कं न हवइ २९ परचक्कं न हव
इ ३० अइवुठी न हवइ ३१ अणावुठी न हवइ ३२ दुब्भिक्खं न हवइ ३३ पुव्वुप्पन्नाावियणं उप्पाइया

॥ भाषा ॥

अतिवृष्टि अधिक वृष्टिनहोय ३१। अनावृष्टि अवर्षणनहोय ३२। दुर्भिक्षकालनहोय ३३। पूर्वे उपना पिण उत्पात अनिष्टसूचक रुधिर वृष्ट्यादिक तथा
व्याधि ज्वरादिक तत्कालेंही उपशमें ३४। एह एकवीसमाथकीमांडी चौत्रीसमालगे अनेप्रभामंडल एतला अतिशय कर्मक्षयथकीहोय शेषवीजाभवप्रत्यय
थकी वीजादेवकृतछे मतांतरे अन्यथा पणिछे। एहचौत्रीस अतिशयकह्या॥ जंबूद्वीपनेविषे चौत्रीस चक्रवर्तीयें जीपवायोग्य एतलेसाधनकरवायोग्य क्षेत्रखं
ड तेचक्रवर्तिविजय कह्या तेकहेछे। मेरुथकी पूर्वापर महाविदेहेंमिली ३२ विजय एकभरत एकऐरवत एवंसर्वमिली विजयखंड ३४ जंबूद्वीपनेविषे ३४।
दीर्घवैताढ्यकह्या बत्रीस महाविदेह विजयना ३२। भरतऐरवतना २ एवं जंबूद्वीपनेविषे उत्कृष्टआरे ३४। तीर्थंकरउपजे विदेहना बत्रीसविजय भरतऐरवत
ना २ एवं ३४ एकेंसमेंजन्मआश्रीचारहोय शीताशीतोदाने बिहुंकांठे एकसमयें बेवेहोय अनेवर्तता ३४ कह्या। महाविदेहरात्रीयेंतिवारे भरतऐरवते दिवस

यस्तं चतुर्णामेवैकदाजन्मसंभवास्तथाहि मेरौपूर्वापरशिलातलयोर्द्वेद्वेसिंहासनेभवतोऽतो द्वावेवद्वावेवाभिषिच्येतेऽतोद्वयोर्द्वयोरेवजन्मेति दक्षिणोत्तरयोः क्षेत्रयो स्तदानींदिवससद्भावा नभरतैरावतयोजिनोत्पत्तिरर्द्धरात्रएवजिनोत्पत्तेरिति पढमेत्यादि प्रथमायां पृथिव्यांत्रिंशन्नरकवासानांलक्षाणि पंचम्यांत्रीणिषष्ठ्यांपंचो नंलक्षं सप्तम्यां पंचनरका एवं सर्व मीलने चतुस्त्रिंशल्लक्षाणिभवंतीति ॥ ३४ ॥ पंचत्रिंशत्स्थानकं सुगमम् नवरं सत्य वचनातिशया आगमे ॥ टीका ॥

वाही खिप्पामेवउवसमंति ३४ जंबूद्दीवेणंद्दीवे चउत्तीसं चक्कवट्टिविजया प० तं० बत्तीसं महाविदेहे दो भरहेरवए जंबूद्दीवेणंद्दीवे चोत्तीसंदीहवेयड्ढा प० जंबूद्दीवेणंद्दीवे उक्कोसपएचोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं भवणावाससयसहस्सा प० पढमपंचमछठीसत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥ पणतीसं सच्चवयणाइसेसा प० ॥ मूल ॥

होय अनेद्दहांरात्रिहोय तिवारें तिहां दिवसहोय। तीर्थंकरनो जन्म अर्द्धरात्रीयें होय तेमाटे चौत्रीसनो जन्मसमकालेनकह्यो। मेरुनो पूर्वपश्चिम शिलात लने उपर दोयदोय सिंहासनछे एहथी बेबेनो होज अभिषेक थाय एमाटे एकसमये बेबे तीर्थंकरनो जन्म कहिवो। असुरकुमारनाराजा एहवा चमरेन्द्र असुरेन्द्रना चउत्रीसभवनवास शतसहस्र एतलेचउत्रीसलाख भवनकह्या। पहिलो नरक पृथिवीयें ३० लाख नरकावासा पांचमीये ३ लाख छट्ठीयें पांचऊणा एकलाख सातमीये पांच ४ एमचार नरकपृथिवीनांमिली चौत्रीसलाखनरकावासकह्या इतिचौत्रीसमोसमवाय संपूर्ण ॥ ३४ ॥ हिवे पैंत्रीसमो समवायलिखेछे पैंत्रीस सत्यवचनना अतिशयकह्या। संस्कारवचन संस्कृतलक्षणवंतपणो १। उदात्तत्व ऊंचेस्वरेंबोलवो २। उपचारोपेतत्व अग्रामीण वचनबोल ॥ भाषा ॥

न दृष्टा एतेतुग्रंथांतरेदृष्टाः संभावितवचनंहिगुणवदवक्तव्यं तद्यथा संस्कारवत् १ उदात्तं २ उपचारोपेतं ३ गंभीरशब्दं ४ अनुनादि ५ दक्षिणं ६ उपनीतराग ७ महार्थं ८ अव्याहतपौर्वापर्यं ९ शिष्टं १० असंदिग्धं ११ अपहृतान्योत्तरम् १२ हृदयग्राहि १३ देशकालाव्यतीतम् १४ तत्वानुरूपम् १५ अप्रकीर्णप्रसृतम् १६ अन्योन्यप्रगृहीतम् १७ अभिजातम् १८ अतिस्निग्धमधुरम् १९ अपरमर्मविद्धं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतम् २१ उदारं २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तम् २३ उपगतश्लाघं २४ अनपनीतम् २५ उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलम् २६ अद्भुतं २७ अनतिविलंबितम् २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम् ३० आहितविशेषम् ३१ साकारम् ३२ सत्वपरिग्रहम् ३३ अपरिखेदितम् ३४ अव्युच्छेदम् ३५ चेति। वचनम् महानुभावैर्वक्तव्यमिति तत्रसंस्कारवत्वंसंस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वम् १ उदात्तत्वमुच्चैर्वृत्तिता २ उपचारोपेतत्वमग्राम्यता ३ गंभीरशब्दंमेघस्येव ४ अनुनादित्वं प्रतिरवोपेतता ५ दक्षिणत्वंसरलत्वम् ६ उपनीतरागत्वं मालकोशादिग्रामरागयुक्तता ७ एतेसप्तशब्दापेक्षाअतिशयाः अन्येत्वर्थाश्रयास्तत्रमहार्थत्वम् बृहदभिधेयता ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वम् पूर्वापरवाक्याविरोधः ९ शिष्टत्वंअभिमतसिद्धांतोक्तार्थता वक्तुःशिष्टतासूचकत्वं वा १० असंदिग्धत्वं असंशयकारिता ११ अपहृतान्योत्तरत्वम् परदूषणाविषयता १२ हृदयग्राहित्वम् श्रोतृमनोहरता १३ देशकालाव्यतीतत्वम् प्रस्तावोचितता १४ तत्वानुरूपत्वम् विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता १५ अप्रकीर्णप्र

वो ३। गंभीर ऊंडेस्वरेबोलवो ४। बोलतां प्रतिशब्दहोय ५। सरलवचनबोलवो ६। मालकोशादि राग सहित स्वरें बोलवो ७। थोडेवचनें अर्थघणोएहवूं बोलवो ८। पूर्वापर विरोध रहित ९। सिद्धांतनो प्रतिपादक १०। संदेह रहित ११। अनेरावादीना वचने पराभवे नही १२। सांभलनारनो मनहरे १३। दे

॥ टीका ॥

सृतत्वम् सुसंबंधस्यसत: प्रसरणं अथवाऽसंबद्धाधिकारित्वातिविस्तरयोरभाव: १६ अन्योन्यप्रगृहीतत्वम् परस्परेण पदानां वाक्यानांवासापेक्षता १७ अभि
जातत्वंचक्षु: प्रतिपाद्यस्यैवभूमिकानुसारिता १८ अतिस्निग्धमधुरत्वम् घृतगुडादिवत् सुखकारित्वम् १९ अपरमर्मवेधित्वम् परमर्मानुद्घट्टनस्वरूपत्वम् २० अ
र्थधर्माभ्यामानपेतत्वम् अर्थधर्मप्रतिबद्धत्वम् २१ उदारत्वंअभिधेयार्थस्यातुच्छत्वंगुंफगुणविशेषंवा २२ परनिंदात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वमिति प्रतीतमेव २३ उपगतश्ला
घत्वम् उक्तगुणयोगात् प्राप्तश्लाघता २४ अनपनीतत्वम् कारककालवचनलिंगादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता २५ उत्पादिताछिन्नकौतूहलत्वम् स्वविषयेश्रोतॄ
णां जनितमविच्छिन्नं कौतुकं येनतत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २६ अद्भुतत्वमनतिविलंबितत्वचप्रतीतम् २७ २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिंचितादिविमुक्तत्वम् विभ्रमोवक्तॄ
मनसोभ्रांतता विक्षेपस्तस्यैवाभिधेयार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिंचितंरोषभयाभिलाषादिभावानां युगपदसकृत्करणमादिशब्दान्मनोदोषांतरपरिग्रहस्तैर्विमुक्तं
यत्तत्तथातद्भावस्तत्त्वम् २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वम् इहजातयोवर्णनीयवस्तुरूपवर्णनानि ३० आहितविशेषत्वम् वचनांतरापेक्षयाढौकितविशेषता ३१ सा

॥ भाषा ॥

शकालें उचितवचनबोलवो १४ अतिविस्तरकरी अणमिलतानहोय १५। कहिवाने वस्तुने अनुसारहोय १६। पहिलापदने पाछिलूंपद सापेक्षपणेबोलवो १७
प्रत्यक्ष समझवायोग्य बात कहिवो १८। घृतगुडनोपरे मधुर अनुभवे १९। अनेराना मननेव्यथा नकरे एहवो २०। अर्थ धर्म सहित बोलवो २१। उत्कृष्ट
पर्यनूं कथक २२। परनिंदा आत्मस्तुति रहित २३। प्रसंसा करवा योग्य २४। कारक काल वचन लिंगेकरी शुद्ध २५ सांभलहारना चित्तने चमत्कारकरे २६
बोलतां उतावलोनहोय २७। रहो रहो ने अक्षर उच्चारण करवूं एहदोषरहित २८। भ्रांतिरहित कहिवायोग्य वस्तुयें संबद्ध क्रोधभयादि रहित बोल
वो २९। जे पदार्थ वर्णवे तेहनो विशेष रूप कहिवो ३०। वचन कहतां वचनांतरनीअपेक्षायें बोलवो ३१। वेगला वेगला पदकरी अन्वय रूपेबोलवो ३२।

॥ टीका ॥

कारत्वम् विच्छिन्नवर्णपदवाक्यत्वेनाकारप्राप्तत्वम् ३२ सत्वपरिगृहीतत्वं साहसोपेतता ३३ अपरिखेदितत्वंअनायाससंभव: ३४ अव्युच्छेदित्वंविवक्षितार्थसम्यक् सिद्धियावदनवच्छिन्नवचनप्रमेयतेति ३५ तथादत्त: सप्तमवासुदेव: नंदन: सप्तमबलदेव: एतयोश्चावश्यकाभिप्रायेण षड्विंशतिर्द्धनुषामुच्चत्वभवति सुबोधंतत् यतोऽरनाथमल्लिस्वामिनोरन्तरेतावभिहितौ यतोवाचि अरमल्लिअंतरेदोन्निकेसवा पुरिसपुंडरीयदत्तत्ति अरनाथमल्लिनाथयोश्चोच्छ्रयेणत्रिंशत्पंचविंशतिश्च धनुषामुच्चत्वमेतदंतरालवर्त्तिनोश्चवासुदेवयो: षष्टसप्तमयोरेकोनत्रिंशत्षड्विंशतिश्चधनुषांयुज्यतइति इहोक्तानुपंचत्रिंशत्यदिदत्तनन्दनौ कुंथुनाथतीर्थकालेभवतो नचैतदेवंजिनांतरेष्वधीयतइति दुरवबोधमिदमिति सौधर्मकल्पेसौधर्मावतंसकादिषु विमानेषुसर्वेषुपंचसभाभवंति सुधर्मसभा १ उपपातसभा २ अभिषेकसभा ३ अलंकारसभा ४ व्यवसायसभा ५ तत्रसुधर्ममध्यभागेमणिपीठिकोपरि षष्ठियोजनमानोमाणवकोनामचैत्यस्तंभोऽस्ति तत्रवइरामएसुत्ति वज्रमयेषु

॥ मूल ॥

कुंथूणं अरहापणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था दत्तेणं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं बलदेवे पणतीसंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवएचेइयखंभे हेठाउव

॥ भाषा ॥

साहस सहित बोलवो ३३ । अनायासे बोलवो ३४ । कहिवानो विषय समाप्त नहोय त्यांलगे वचननो विच्छेदन नहोय ३५ । एह भगवंतनो वाणीनागुण जाणिवा एह पैंत्रीस वचनातिशय कह्या ॥ कुंथुनाथ सतरमा अरिहंत ३५ धनुष ऊंचपणे हुया । दत्तनामा सातमो वासुदेव अरनाथनेवारे संभूमचक्रवर्ति पछेहुवोते ३५ । धनुष ऊंच पणे हुआ । नंदननामा सातमो बलदेव ३५ । धनुष ऊचपणे कह्यो । सौधर्म कल्पें सभा सुधर्मा ने विषे साठियोजनप्रमाण माणवक नाम चैत्यस्तंभनेविषै हेठे अने उपरि अर्द्ध एतले साढाबारह योजन वर्जीने मध्यने विषे पैंत्रीस योजनें वज्रमय गोल वाटला समुद्गकडा तेहने विषे जिन

तया गोलवहत्ता वर्त्तुलायं समुद्गकाभाजनविशेषास्तेषु। जिणसकहाउत्ति जिनसक्थीनि तीर्थकराणांमनुजलोकनिर्वृतानांसक्थान्यस्थीनि प्रज्ञप्तानीति वीयचउत्थी ॥ टीका ॥
त्यादि द्वितीयपृथिव्यांपंचविंशतिर्नरकलक्षाणिचतुर्थ्यांस्तुदशेति पंचत्रिंशत्तानीति ॥ ३५ ॥ षट्त्रिंशस्थानकंस्पष्टमेव नवरं चैत्राश्वयुजोर्मासयो:

रिंच अट्ठतेरसअट्ठतेरसजोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीसजोयणेसु वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु जिणस ॥ मूल ॥
कहाउ प० वितियचउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावाससयसहस्सा प० ॥ ३५ ॥ छत्ती
संउत्तरज्झयणा प० तं०। विणयसुयं १ परीसहा २ चाउरंगिज्जं ३ असंखयं ४ अकामसकाममरणिज्जं ५
पुरिसविज्जा ६ उरब्भिज्जं ७ काविलियं ८ नमिपव्वज्जा ९ दुमपत्तयं १० बहुसुयपुज्जा ११ हरिएसिज्जं
१२ चित्तसंभूयं १३ उसुयारिज्जं १४ सभिक्खुगं १५ समाहिठाणाइं १६ पावसमणिज्जं १७ संजइज्जं १८

वीतरागनी दाढा कही बीजीपृथिवी अने चौथी नरक पृथिवी बिहुंनामिली ३५। नरकावासा शतसहस्र कह्या एतले बीजीयें २५। लाख नरकावासा ॥ भाषा ॥
चौथी यें १० लाख नरकावास कह्या ॥ एह पैंत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३५ ॥ हिवे छत्रीसमो समवाय लिखेछे। छत्रीस उत्तराध्ययनना अध्य
यन कह्या तेकहेछे। पहिलो अध्ययन विनयश्रुत १। परीसहाध्ययन २। चउरंगीयो ३। असंखयं ४। अकाम सकाम मरणाय ५। अविद्यावंतपुरुषनो ६
उरभिकबोकडानो ७। कपिलकेवलीनो ८। नमिप्रवज्यानमिराजानो ९ द्रुमपत्रकनो १० बहुश्रुतपूजानो ११। हरिकेशीबलनो १२। चित्रसंभूतिनो १३
इषुकारियराजानो १४। भिक्षु अध्ययन १५। समाधिस्थानक १६। पापश्रमणनो १७। संयतीराजानो १८। मृगापुत्रनो १९। वलीअनाथीनो २०। समुद्र

॥ टीका ॥

सकृदेकदापूर्णिमायामिति व्यवहारोनिश्चयतस्तु मेषसंक्रांतिदिने तुलासंक्रांतिदिनेचेत्यर्थः षट्त्रिंशदंगुलिकां पदत्रयमाना साहच चेत्तासोएसुमासेसुतिपया

॥ मूल ॥

मियाचारिया १९ अणाहपव्वज्जा २० समुद्दपालिज्जं २१ रहनेमिज्जं २२ गोयमकेसिज्जं २३ समितीउ २४ जन्नतिज्जं २५ सामायारी २६ खलुंकेज्जं २७ मोक्खमग्गगई २८ अप्पमाउ २९ तवोमग्गो ३० चरणविही ३१ पमायठाणाइं ३२ कम्मपयडी ३३ लेसज्झयणं ३४ अणगारमग्गे ३५ जीवाजीवविभत्तीय ३६ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुहम्मा छत्तीसंजोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था समणस्सणं अरहउ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणंसाहस्सीउ होत्था चेत्तासोएसुणंमासेसु सइछत्तीसंगुलियं सूरिए पोरिसी

॥ भाषा ॥

पालनो २१। रथनेमीनो २२ गौतम गणधर केशीअणगारनो २३। सुमति गुप्तिनो २४। जयघोष विजयघोषनो २५। समाचारीनो २६। खलुकीयं गर्गाचार्यनो २७। मोक्ष मार्गनो २८। अप्रमादनो २९। तप मार्गनो ३०। चरण विधिनो ३१। प्रमादस्थानकनो। ३२। कर्मप्रकृतिनो ३३। लेश्याध्ययन ३४। अणगारमार्गनो ३५। जीवा जीव विभक्तिनो ३६ ॥ असुरना राजा असुरेन्द्र चमरेन्द्रनीसभा सुधर्मा छत्रीस योजन ऊंचो कही। श्रमण तपस्वी भगवंत अनंत महावीरने छत्रीस आर्यानां सहस्र थया। एतले छत्रीस सहस्र साधवी हुई। चैत्रअने आसोज मासे सतिति सकृत् पुनिमदिने छत्रीसे अंगुले सूर्य पोरुषी छाया निवर्तावे एतले चित्तासोएमासेसुतिपया होइपोरसीतिवचनात् ३६ हाथ प्रमाण टणनी छाया मापीये ३६ अंगुल छाया तिणनी होय

होइपारमोति ॥ ३६ ॥ सप्तत्रिंशस्थानकम पव्यक्तम् नवरम् कुंथुनाथस्येहसप्तत्रिंशद्गणधराउक्ता आवश्यकेतुपंचत्रिंशत् इतिमतांतरम् तथाहैमव तादिजीवर्याद्युक्तप्रमाणसम्वादगाथा सत्ततीसहस्सा छच्चसयाजोयणाणचउसयरा हेमवयवासजीवा किंचूणाभोलसकलायति कलाएकोनविंशतिभागोयो जनस्येति तत्राविजयादीनिपूर्वादीनिजंबूद्वीपद्वाराणि तत्रायकाभ्यत्रामतोदेवास्तेषांराजधान्यस्तन्नामिकाउत्त पूर्वादिदिक्षुतोऽसंख्येयतमे जंबूद्वीपइति चुद्रि

ठायंनिव्वत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणंअरहत्र सत्ततीसंगणा सत्ततीसंगणहरा होत्था हेमवयएरन्न वयाउणं जीवाउ सत्ततीसं जोयणसहस्साइं छच्चचउसत्तर जोयणसए सोलसय एगूणवीसइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाउ आयामेणं प० सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा स

तेवारे पोरषी होय । इति छत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३६ ॥ हिवे सैत्रीसमो समवाय लिखे छे ॥ कुंथुनाथ अरिहंत ने सैत्रीस गच्छ । अने से त्रीस गणधर कह्या । आवश्यके पेंत्रीस सांभलियेछे तेमतांतरछे । हिमवंत क्षेत्र १ । एरवत २ । ए बेहु क्षेत्रनी जीवा सैत्रीस सैत्रीस योजन सहस्र छसे चि हुत्तरियोजन ३७६७४ । १८ कला ऊपरि १६ भाग उगुणीसभाग हाइआ एक योजनना कांइक विशेषऊणी लांबपणे कही । सगलाइ जंबूद्वीप ना पूर्वादि दिशे चार पोलीना धणी विजयादिकदेव तेहनी पूर्व विजय दक्षिण वैजयंत पश्चिमे जयंत उत्तर अपराजित राजधानी ने विषे प्राकार गढ सैत्रीस योजन ऊंच पणे कह्यो । क्षुद्रिकायें लहुडोयें विमान प्रविभक्ती कालिकश्रुत विषे पहिले वर्गे सैत्रीस उद्देशकाल अध्ययनदीठ उद्देशाना काल कहतां अवसरकह्या । आ

॥ टीका

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

कायां विमानप्रविभक्तौकालिकश्रुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्ययेकालादति यथाश्वयुजः पौर्णमा स्यांषट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिगतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशत्स्थानकंव्य क्तमेव नवरं धणुपिट्ठंत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यते तत्पर्यंतभृतिसरलप्रदेशपंक्तीत् जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थसत्ति अस्तोसिरुपर्यतस्तेनां

॥ १०३ ॥

॥ मूल ॥

त्तीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ ॥ ३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

॥ भाषा ॥

सोजोपूनिमे हस्त प्रमाण हणनो छाया मापीये ३६ अंगुलें पोरुषो होय अने अंगुल सत्तरेणं सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक कृष्ण सातमी दिने सूर्य सैंत्रीस अंगुल पौरुषी छाया प्रतें निवर्तावीकरीने चारचरें अरे। इतिसैत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सौभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जंबूद्वीपल क्षण वृत्तक्षेत्र ने हेमवंत ऐरवत वीजें अने छठे क्षेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखंड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भृत सरल सूक्ष्मप्र देश पंक्तिते जीवा सरीखी जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठत्रीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगणीसहाइया ए

॥ टीका

नरितोरविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टत्रिंशद्योजनसहस्राण्युच्चत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्टिसहस्राणिय दाह मेरुस्सतितिकंडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रयणयजायरूवे अंकफलिहेयवीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणंचवी यंतु २ तेवट्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिचूलाओ छिट्ठाजोयणद्वीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानकं व्यक्तमेव नवरं अहोहि यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति तेनमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादानिबन्धनानि भवन्तीती

॥ मूल ॥

या होत्था हेमवयएरन्नवइयाणं जीवा णं धणूपिट्ठे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अट्ठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहउ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

॥ भाषा ।

क योजनना कांइएक विशेष ऊणा परिक्षेपे परिधिये कह्यो । जेणाये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरुपर्वत सकलपर्वतनो राजा तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो । मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे । खुड्डिकायें लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ ठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवसर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधि ते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९ । हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया । समय

कायां विमानप्रविभक्तौकालिकश्रुतविशेषस्तत्रकिलबहवो वर्गा अध्ययनसमुदायात्मकाभवन्ति तत्रप्रथमेवर्गेप्रत्यध्ययनमुद्देशस्यएककालाइति यदाश्वयुजः पौर्णमा ॥ टीका
स्यांषट्त्रिंशदंगुलिकापौरुषीच्छायाभवति तदाकार्त्तिकस्यकृष्णसप्तम्यामंगुलस्य वृद्धिङ्गतत्वात्सप्तत्रिंशदंगुलिकाभवतीति ॥ ३७ ॥ अष्टत्रिंशस्थानकंव्य
क्तमेव नवरं धणुपिट्ठंत्ति जम्बूद्वीपलक्षणवृत्तक्षेत्रस्य हैमवतऐरण्यवताभ्यां द्वितीयषष्ठवर्षाभ्यामवच्छिन्नस्यारोपितज्या धनुः पृष्ठाकारेपरिधिखण्डे धनुःपृष्ठेउच्यते
तत्पर्यंतभृतिसरलप्रदेशपंक्तीतु जीवेइवजीवेइति एतत्सूत्रसंवादिगाथाच चत्तालासत्तसया अडतीससहस्सदसकलायधणुत्ति तथाअत्थस्सत्ति अस्तोमेरुर्यतस्तेनां

त्ततीसं सत्ततीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे सत्ततीसं उद्देसण ॥ मूल ।
काला प० कत्तियबहुलसत्तमीए णं सूरिए सत्ततीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ता णं चारंचरइ ॥
३७ ॥ पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जियासाहस्सीओ उक्कोसिया अज्जियासंप

सोजोपूनिमे हस्त प्रमाण तृणनो छाया मापीये ३६ अंगुलें पोरुषी होय अने अंगुल सत्तरेंगं सातेदिने एकेक अंगुल छाया वधारिये तिवारें कार्तिक कृष्ण ॥ भाषा
सातमो दिने सूर्य सैत्रीस अंगुल पौरुषी छाया प्रतें निवर्तावीकरीने चारचरें करे। इतिसैत्रीसनो समवाय संपूर्ण ॥ ३७ ॥ हिवे अडतीसमो सम
वाय लिखेछे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय पुरुषांमांहि महा सौभागी तेहने अठत्रीस आर्यांना सहस्र उत्कृष्टआर्या साध्वीनी संपदा हुइ। जंबूद्वीपल
क्षण वृत्तक्षेत्र ने हेमवंत ऐरवत बीजें अने छठे क्षेत्रे करी सहित ने आरोपित प्रत्यंचा धनुष पृष्ठाकारे परिखंड ते धनुपृष्ठ कहीये अने तेहने पर्यंत भृत सरल सूक्ष्मप्र
देश पंक्तिते जीवा सरीखो जीवा कहीये तेह धनुपृष्ठ अठतीस सहस्र सातसे चालीस योजन। ३८७४०। १९। १०। कला दश भाग उगुणीसहाइया। ए

॥ टीका ॥

यरितो रविरस्तंगतइतिव्यपदिश्यते तस्यपर्वतस्य गिरिप्रधानस्य द्वितीयकांडविभागोऽष्टविंशतियोजनसहस्राण्युच्चत्वेनभवतीति मतान्तरेणतुत्रिषष्ठिसहस्राणिय दाह मेरुस्सतिन्निकंडा पुढवीवलवइरसक्करापढमं रययएयजायरूवे अंकफलिहयवीयंतु एक्कागारंतइयंतंपुणजम्बूणयमयंहोइ १ जोयणसहस्सपढमंबाहल्लेणंचवी यंतु २ तेवट्ठिसहस्सातइयं छत्तीसंजोयणसहस्सा मेरुस्सुवरिंचूलाओ छिट्ठोजोयणदुवीसंत्ति ॥ ३८ ॥ एकोनचत्वारिंशस्थानवंव्यक्तमेव नवरं अहोहि यत्ति नियतक्षेत्रविषयाऽवधिज्ञानिनस्तेषांशतानीति कुलपव्वयत्ति क्षेत्रमर्यादाकारित्वेनकुलकल्पाः पर्वताः कुलानिहिलोकानां मर्यादनिबन्धनानि भवन्तीती

॥ मूल ॥

या होत्था हेमवएयरन्नवईया णं जीवा णं धणूपिट्ठे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस — एगूणवीसइभागे जोयणस्स किंचिविसेसूणा परिक्खेवेणं प० अत्थस्स णं पव्वयरन्नो बितिएकंडे अट्ठतीसं जोयणसहस्साइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए बितिएवग्गे अट्ठतीसंउद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ नमिस्स णं अरहओ एगूणचत्तालीसं आहोहियसया होत्था समयखेत्ते एगूणचत्ताली

॥ भाषा ॥

क योजनना कांइएक विशेष ऊणा परिक्षेपे परिधिये कह्यो। जेणेये अंतरित आच्छाद्यो सूर्य अस्तपामे ते अस्ताचल एतले मेरूपर्वत सकलपर्वतनो राजा तेहनो बीजो कांड अठत्रीस सहस्र योजन ऊंचपणे कह्यो। मतांतरे ६३ सहस्र योजन पणि कह्योछे। क्षुद्रिकायें लहुडियें विमान प्रविभक्तियें बीजे वर्गे अ ठत्रीस उद्देशनकाल अध्ययनना उद्देशनना अवसर कह्या ॥ इतिअठत्रीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे उगणचालीसमो समवाय लिखियेछे नमिनाथ एकवीसमा अरिहंतने अवधिते नियत क्षेत्र तेहने जाणे ते अवधिज्ञानी तेहना सत ३९। हुया एतले ३९। से अवधिज्ञानी हुया। समय

इतरूपमाक्षता तत्रवर्षधरास्त्रिंश ज्जंबूद्वीपधातकीखण्डपुष्करार्द्धपूर्वापरार्द्धेषुच प्रत्येकं हिमवदादीनांषणांभावात् मन्दराः पंचेषुकाराधातकीखण्डपुष्करार्द्धयोः पूर्वेतरविभागकारिणश्चत्वार एवमेवएकोनचत्वारिंशदिति दोच्चेत्यादि द्वितीयायांपंचविंशति श्चतुर्थ्यां दश पचम्यांत्रीणि षष्ठ्यांपंचोनलक्षं सप्तम्यांपंचेति यथोक्त संख्यानारकाणामिति। नाणावरणिज्जेत्यादि ज्ञानावरणीयस्यपञ्च मोहनीयस्याष्टाविंशतिः गोत्रस्यद्वे आयुषश्चतस्रइत्येवमेकोनचत्वारिंशदिति ॥ ३८ ॥ ॥ टीका

सं कुलपव्वया प० तं० तीसं वासहरा पंच मंदरा चत्तारि उसुकारा दोच्च चतुत्थ पंचम छठ सत्तमासु णं पंचसु पुढवीसु एगूणचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स आउयस्स एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूणचत्तालीसं उत्तरपगडीओ प० ॥ ३९ ॥ अरहत ॥ मूल

त्रेत्र अढाई द्वीप तेमांही ३८। कुल पर्वत चेत्रना मर्यादा कारी तेमाटे कुल पर्वत कह्या लोकमांहि पणि कुलते लोक मर्यादाना कारणछे तेकहेछे। जंबे द्वीप मांही ६ हिमवंतादिक वर्षधर धातकीखंडमांहि पूर्वपश्चिम मिली १२ वर्षधर पुष्करार्द्ध मांहि पिण १२ एवं ३० वर्षधर थया इषुकार चार पर्वत बेधातकी खंड मांहि बेपुष्करार्द्ध मांहि एवं ४। मेरू ५। जंबूद्वीप मांहि एक मेरू धातकीखंडमांहि २ मेरू पुष्करार्द्धमांहि २ मेरू एवं ५ मेरू सर्वनि लोकुल पर्वत ३८ थया। बीजो नरक पृथिवी यें २५ लाख नरकावासा चउथी ये १० लाख पांचमी यें ३ लाख छठीयें पांचे ऊंणा १ लाखसातमी यें १ नरकावासा सर्वमिली ३८। लाख नरकावासा कह्या। ज्ञानावरणीय कर्मनो उत्तर प्रकृति ५ मोहनीयनो २८। गोत्रनी २ आउखानी ४ एहचारकर्मनी प्रकृति उगुणचालीस उतर प्रकृति कही ॥ इति ३८ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ३८ ॥ हिवे चालीसमो समवाय लिखे छे। अरिष्टनेमी ॥ भाषा

॥ टीका

चत्वारिंशत्स्थानकं व्यक्तं नवरं वइसाहपुस्मिमासिणीएत्ति यत्केषुचित् पुस्तकेषुदृश्यते सोऽपपाठः फग्गुणपुन्निमासिणीएत्ति अत्राध्येयङ्क्यमुच्यते पोसेमासेचउप्पया इ तिवचनात् पौषीपूर्णिमा यामष्टचत्वारिंशदंगुलिकासाभवति ततोमाघेचत्वारि फाल्गुनेचचत्वारि अंगुलानिपतितानीत्येवं फाल्गुनपौर्णमास्यांचत्वारिंशदंगुल कापौरुषीच्छायाभवति कार्त्तिक्यामप्येवमेव यतः चेत्तासोएसुमासेसुतिपयाहोइपोरिसी त्युक्तं ततः पदत्रयस्यषड्त्रिंशदंगुलप्रमाणस्य कार्त्तिकमासातिक्रमे

॥ मूल

णं अरिहनेमिस्स चत्तालीसं अज्जियासाहस्सीओ होत्था मंदरचूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० संती अरहा चत्तालीसं धणूइंउड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भूयाणंदस्स णं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससयसहस्सा प० खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसणकाला प० फग्गुणपुस्मिमासिणीएणं सू

॥ भाषा

अरिहंतने चालीस आर्यानासहस्र एतले चालीस हजार साध्वीनो संपदायई। मेरुपर्वत ऊंचो एक लाखयोजनछे ऊपरथी पिहुलो एक सहस्रयोजन ते जिवे चूलिका चोटीनो परि जाणइ मेरुनो चूलिका चालीस योजन ऊंची कही। शांतिनाथ सोलमा अरिहंत चालीस धनुष ऊंचा थया उत्तरेंद्र नागराजा भूतानंद्रना चालीस भवनावासना शतसहस्र कह्या। एतले चालीस लाख भवन कह्या। क्षुद्रिका ये लहुडीये विमान प्रविभक्तिये एतले त्रीजे वर्गे ४० उद्देशनकाला अध्ययनना उद्देशाना अवसर कह्या। एतले जेटला उद्देशनकाला तेतला अध्ययन कह्या। फागुणनो पूनिमे सूर्यहस्त प्रमाणे तृणनी छाया मावीये तेहनी ४० अंगुल प्रमाणे पोरसी छाया प्रतें निवर्तावीने चार भ्रमण करे। कार्तिकी पूनिमे पणि एमज ४० अंगुल प्रमाणे पोरसी हुये पछे साते २ दिवसे

चतुरंगुलवृद्धौ चत्वारिंशदंगुलिकासाभवतीति ॥ ४० ॥ एकचत्वारिंशस्थानकंसुगमं नवरं चउसुइत्यादि क्रमेणसूत्रोक्तासुचतसृषु प्रथमचतुर्थ
षष्टसप्तमोषुपृथिवीषु त्रिंशतोदशानांचनरकलक्षाणां पंचोनस्यचैकस्यपंचानांचनरकाणां भावाद्यथोक्तसंख्यास्तेभवंतीति ॥ ४१ ॥ इचत्वारिंशस्था ॥ टीका ॥

रिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वट्टइत्ता णं चारंचरइ एवं कत्तियाएविपुण्णिमाए महासुक्के कप्पे चत्ता
लीसं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ४० ॥ नमिस्स णं अरहओ एकचत्तालीसं अज्जियासाह ॥ मूल ॥
स्सीओ होत्था चउसुपुढवीसु एक्कचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० तं० रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए
तमतमाए महालियाणं विमाणपविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४१ ॥

एकेक अंगुल वधारिये मासे ४ अंगुल वधे तिवारे कातिक पूनिमे ४० अंगुल वधे तिवारे कार्त्तिक पूनिमे ४० अंगुल छायपोरुषी । महाशुक्र सातमे देव
लोके ४० सहस्र विमान कह्या । इति ४० मो समवाय संपूर्ण ॥ ४० ॥ हिवे इगतालीसमो समवाय लिखेछे । नमिनाथ अरिहंतने ४१ । आर्याना ॥ भाषा
सहस्र थया एतलेसाध्वीना सहस्र हुया । च्यार नरक पृथिवीयें ४१ लाख नरकावासा कह्या । ते कहेछे । रत्नप्रभायें ३० लाख पंकप्रभायें १० लाख तमाये
पांच ऊणा १ लाख तमतमाये ५ एवं सर्वमिली ४१ लाख नरकावासा कह्या । वडाये विमानप्रविभक्तिय पहिले वर्गे ४१ लाख उद्देशनकाल अध्ययन अध्ययदी
ठ उद्देशना अवसर कह्याछे । इति ४१ मो समवाय ॥ ४१ ॥ हिवे बेयालीसमो समवाय लिखेछे । श्रमण भगवंत ज्ञानवंत श्रीमहावीर देव
बेयालीस वर्ष झाझेरे छद्मस्थ पर्यायें १२ वर्ष ६ मास १५ दिन केवल पर्याय कांईक न्यून ३० वर्ष सर्वमिली ४२ वर्ष सामान्य पर्याय पाली सिद्ध थया । याव

॥ टीका ॥

नकव्यक्रमेव नवरं बायालीसंति छद्मस्थपर्यायेद्वादशवर्षाणि षण्मासाद्धमासाधिकेति केवलिपर्यायस्तुदेशोनानि त्रिंशद्वर्षाणीति पर्यूषणाकल्पेद्विचत्वारिंशदेववर्षाणि महावीरपर्यायोनिहित इहतु साधिक उक्त स्तत्र पर्यूषणाकल्पे यदल्पमधिकं तन्नविवक्षितमिति सम्भाव्यतइति जावत्तिकरणात् बुद्धेमुत्तेअंतगडे परिनिव्वुडेसव्वदुक्खप्पहीणेत्ति द्दश्यं जम्बूद्वीपस्येत्यादि पुरत्थिमिल्लाओचरिमंताओत्ति जगतीबाह्य परिधिरपसृत्य गोस्तुभस्यावासपर्वतस्य वेलंधरनागराजसंबंधिनः पाश्चात्यसीमांतश्चरमविभागोवा यावतांतरेणभवति एसणंत्ति एतदंतरंद्विचात्वारिंशत्योजनसहस्राणिप्रज्ञप्त मंतरशब्देन विशेषोप्यभिधीयते इत्यतआह अ

॥ मूल ॥

समणेभगवंमहावीरे वायालीसं वासाइं साहियाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे — जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लचरमंते एसणं वायालीसं जोयणसहस्साइं अवाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे संखो दयसीमेय कालोएणंस

॥ भाषा ॥

त् शब्दे करी बुद्ध थया मुक्त थया सर्वदुःख थकी मुक्तथया अजरामर थया। जंबूद्वीपनां छेहल्या प्रदेश थकी जगतीना बाह्यप्रदेशथकी मांडी गोस्तूभनाम वेलंधर नागराजानो आवास पर्वत तेहनो पश्चिमनो चरमांत छेहल्यो प्रदेश एतले जगती थको मांडी गोस्तूभ पर्वतनो पश्चिमांत एतलाविच ४२ सहस्र योजन आवाधा विचे आंतरो कह्यो। एम चिहुंदिसे दक्षिण जंबूद्वीपनी जगती थको मांडी ४२ योजन सहस्रे दक्षिण समुद्रमांहीज दगभास पर्वत वेलंधर नागराजानो एम पश्चिम जगती थको मांडी पश्चिम समुद्र मांहि ४२ योजन सहस्र शंख पर्वत एम उत्तरे दगसीम। पर्वत कालोदधि समुद्रे ४२ चंद्रमा ४२ सूर्य उद्योत करेछे। समूर्च्छिम भुजपर सर्पनो जंदर गोह नोलियादिकनो उत्कृष्टो ४२ वर्ष सहस्र प्रमाण आउखूं कह्यं। नाम कर्म छहोते ४२ भेदें कह्यो

॥ टीका ॥

बाहाएत्ति व्यवधानापेक्षयायदंतरंतदित्यर्थः कालोयणेत्ति धातकीखण्डपरिवेष्टके कालोदाभिधानेसमुद्रे गइनामेत्यादि गतिनामयदुदयान्नारकादित्वेन जीवोव्यपदिश्यते जातिनामयदुदयादेकेंद्रियादिर्भवति शरीरनामयदुदयादौदारिकशरीरंकरोति यदुदयादंगानांशिरः प्रभृतीनांउपांगानांचांगुल्यादीनांविभागोभवति तच्छरीरोपांगनाम बध्यमानानांच संबंधकारणं शरीरोपांगनाम तथाऔदारिकादिशरीरपुद्गलानां पूर्वबद्धानां बध्यमानानांच संबंधकारणंशरीरबन्धनाम तथाऔदारिकादि शरीरपुद्गलानांगृहीतानां यदुदयाच्छरीररचनाभवति तच्छरीरसंघातनाम तथास्थायतस्तथाविधशक्तिनिमित्तभूतारचनाविशेषाभवति तत्संहनननाम संस्थानसमचतुरस्रादिलक्षणम्भवति तत्संस्थाननाम तथायदुदयाद्वर्णादिविशेषवतिशरीराणिभवन्ति तद्वर्णादिनाम तथायदुदया

॥ मूल ॥

मुद्दे बायालीसं चंदाजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा बायालीसंसूरियापभासिंसुवा ३ समुच्छिमभुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसंवाससहस्साइं ठिई प० नामकम्मे बायालीसविहे प० तं० गइनामे जाइनामे सरीरनामे सरीरंवंगनामे सरीरबंधणनामे सरीरसंघायणनामे संघयणनामे संठाणनामे वन्ननामे गंधनामे

॥ भाषा ॥

तेकहेछे । नरकादिक नीगति पामवी जेहने उदे तेगतिनाम १ एकेंद्रियादिक जाति पामिये ते जातिनाम २ औदारिकादि पांचशरीर जेहने उदे पामिये ते शरीर नाम ३ एम जे कर्मने उदे सर्वत्र कहिये औदारिकादिक त्रिणशरीरना अंगोपांग अंगते अंगुलीनखादि ते अंग उपांग ४ औदारिकादिक पांच शरीरनो बंधनो करवो ते शरीर बंधननाम ५ औदारिकादि पांचशरीरनांपुद्गल ग्रही ने रचनानो करिवो ते शरीरसंघातनाम ६ शक्ति निमित्तभूत रचनाना विशेष ते संहनननाम ७ संस्थान समचतुरस्रादिक लक्षण ८ वर्ण कृष्णादिक पांच ९ गंध सुगंधादिक सुरभि गंध दुरभिगंध १० रस मधुरादिक पांच

॥ टीका ॥

द्गुरुलघु स्वयंशरीरंजीवानांभवति तदगुरुलघुनाम तथायतंग्रगावयवः प्रतिजिह्विकादिरात्मोपघातकोजायते तदुपघातनाम तथायतोगावयव एवावव।

कोदंष्ट्रान्वगाहि परेषामुपघातकोभवति तत्पराघातनाम तथायदुदयांतरालेगतौजीवोयाति तदानुपूर्वीनाम तथायदुदयादुच्छासनिष्पत्तिर्भवति तदुच्छास

॥ मूल ॥

रसनामे फासनामे ऋगुरुलऋयनामे उवघायनामे पराघायनामे ऋाणुपुव्वीनामे उस्सासनामे ऋायव नामे उज्जोयनामे विहगगइनामे तसनामे थावरनामे सुऋमनामे वायरनामे पज्जत्तनामे ऋपज्जत्तनामे साहारणसरीरनामे पत्तेयसरीरनामे थिरनामे ऋथिरनामे सुभनामे ऋसुभनामे सुभगनामे दुब्भगनामे

॥ भाषा ॥

जाणिवा ११ स्पर्श गुर्वादिक आठ १२ जेह कर्मने उदे जीवनो शरीर अगुरुलघु हुये ते अगुरुलघुनाम १३ जेह कर्मने उदे पडिजीभी प्रमुखेकरी आत्माने उपघाते ते उपघात १४ जेह कर्मने उदे परने उपघात उपजे तेपराघात १५ अंतराल गतियें जोव जाय ते आनुपूर्वीनाम १६ उस्सास नीसासलीजे तेउस्सा स नाम १७। जेह कर्मने उदे शरीर तापवंत होय ते आतप नाम १८। जेह कर्मने उदे शरीर उद्योतवंत होय ते उद्योत नाम कर्म। १९। जेह कर्मने उ दयें भली भूंडी गति गमन सहित होय ते विहगगतिनाम २०। जेह कर्मना उदय थकी जीव चाले ते त्रस नाम २१। जेह कर्मना उदय थी जीव स्थिर रहे ते स्थावर नाम कर्म २२। जेह कर्मना उदय थी दृष्टि गोचर न होय ते सूक्ष्म नाम कर्म २३। जेह कर्मना उदय थी जीव दृष्टि गोचर होय ते बादर ना म कर्म २४। पूरी पर्याप्ति करे ते पर्याप्ति नाम २५। पूरी पर्याप्ति नकरे तेअपर्याप्ति नाम २६। जेह कर्मने उदये अनंता जीवनो एक शरीर पामिये ते साधारण नाम २७। जेह कर्मनें उदयें एक जीव एक शरीर पावे ते प्रत्येक नाम २८ स्थिर रहे जेहथी ते स्थिर नाम २९। अंगोपांग ताद्यांथकां तूटे ते

॥ टीका ॥

नाम तथायदुदयाज्जीवस्यातपवच्छरीरोभवति तदातपनाम यथादित्यबिंबपृथिवीकायिकानां तथायतोतुलोद्योतवच्छरीरोभवति तदुद्योतनाम तथायत: शुभे तरगमनयुक्तोभवति तद्विहायोगतिनाम त्रसनामादीन्यष्टौप्रतीतार्थानि तथायत: स्थिराणांदन्ताद्यवयवानांनिष्पत्तिर्भवति तत्स्थिरनाम यतश्चभ्रूजिह्वादीनाम स्थिराणांनिष्पत्तिर्भवति तदस्थिरनाम एवं शिर: प्रभृतीनांशुभानां तच्छुभनाम पापादीनामशुभनामइति शेषाणिप्रतीतानि नवरं यदुदयाज्जातोजीवदेहेपुरुष्या दिलिंगाकारनियमोभवति तत्सूत्रधारसमानं निर्माणंनामेति पंचमछठीओसमाउत्ति दु:खमाएकांतदु:खमाचेत्यर्थ: पढमबीयाउत्ति एकांतदु:खमादु:खमाचे

॥ मूल ॥

सुस्सरनामे दुस्सरनामे आएज्जनामे अणाएज्जनामे जसोकित्तिनामे अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे तित्थकरनामे लवणे णं समुद्दे बायालीसं नागसाहस्सीउ अभिंतरियंवेलं धारंति महालियाएणं विमाण पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसणकालाप० एगमेगाएउसप्पिणीए पंचमछठीउसमाउ बायालीसं —

॥ भाषा ॥

अस्थिर नाम ३० शुभनाम ३१। अशुभनाम ३२। जेह कर्मने उदये सहुने वल्लभ होय ते सुभगनाम ३३। जेह कर्मथी सहुने अनिष्ट होय ते दुर्भग नाम ३४ जेह कर्मनेउदये कंठभलोहोय तेसुस्वर नाम ३५। भूंडोकंठहोय ते दुस्वर नाम ३६ जेहकर्म थी बचन सहुने मान्यथाय तेआदेयनाम ३७। बचनकोईनमाने ते अनादेय नाम ३८। यशकीर्त्ति वाधे ते जसोकित्तिनाम ३९ यश कीर्त्ति न होय ते अयश कीर्त्ति नाम ४०। हाथें हाम कांनो इंगलो रचिदो ते निर्मा ण नाम ४१। जेह कर्मना उदयथी सहुने पूज्यथाय ते तीर्थंकर नामकर्म ४२। लवण समुद्रने विषे बेतालीस हजार नागदेवता जंबूद्वीप तरफनी पाणी नी वेला प्रते धरेछे। वडी विमान प्रविभक्तीयें बीजेवर्गे ४२ उद्देशनकाल कह्या अध्ययन कह्या। एकेक अवसर्पिणी कालें पडतेकालें पांचमो छठो दु:खमा

त्रि ॥ ४२ ॥ त्रिचत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते कम्मविवागज्झयणत्तिकर्मणः पुण्यपापात्मकस्य विपाकस्यफलं तत्प्रतिपादकान्यध्ययनानिकर्मविपाकाध्ययनानिएतानिच एकादशांगद्वितीयांगयोः सभाव्यंतइति जंबूदीवस्सणमित्यादि जंबूद्वीपपौरस्त्यांतात्गोस्तुभपर्वतो द्विचत्वारिंशद्योजनानां सहस्राणितद्विष्कंभश्च सहस्रंतदधिकाया द्वाविंशतेरल्पत्वेना विवचणा देवं त्रिचत्वारिंशत्सहस्राणिभवन्तीति एवंचउदिसिपित्ति उक्तादिगंतर्भावेन चतसृदिशउक्ता अन्यथा एवंति ॥ टीका ॥

वाससहस्साइं कालेणं प० एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाउ समाउ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ तेयालीसं कम्मविवागज्झयणा प० । पढमचउत्थपंचमासु पुढवीसु तेयालीसं निरयावाससयसहस्सा प० जंबूद्दी[illegible]स्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसिणं तेयालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउद्दिसिंपि दगभासे ॥ मूल ॥

दुखम दुखमा बेहुं मिलीने ४२ हजार वर्ष प्रमाणे थाय एतले पांचमो आरो २१ हजार वर्षनो छट्ठो २१ हजार वर्षनो बेहुं मिलो ४२ सहस्र प्रमाणे कह्यो एकेक उत्सर्पिणी कालें चढतेकाले पहिलो आरो अनेदूजो आरो बेहुं मिलो ४२ सहस्र वर्ष प्रमाण कह्या ॥ इति बेतालोसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४२ ॥ हिवे तेतालोसमो समवाय लिखिछे ॥ तेयालोस कर्म पुण्य पाप रूप तेहना विपाक फलरूप तेहनां प्रतिपादक अध्ययन ते कर्म विपाक अध्ययन तेह सुयगडांगना २३ अध्ययन अने दुख सुख विपाकना २० अध्ययन एवं ४३ अध्ययन कह्या। पहिलो यें ३० लाख चौथीयें १० लाख पांचमीये ३ लाख एवं पहिलो चौथो पांचमो नरक पृथिवो नां मिलो तेयालोसलाख नरकावासा कह्या। जंबूद्वीप नामा द्वीपनो जगतोना छेहल्या प्रदेश ॥ भाषा

दिसिंपिति वाच्यंस्यात् तत्रचैवमभिलापाः जंबूद्दीवस्सणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणं तेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशतं इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतैः ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोक च्युताभाषितानिक्वचित्पाठः देवलोयभुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइति पुरुषः शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा ॥ टीका ।

संखोदयसीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥ ॥ मूल ॥
चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्यो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आवाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थ को ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एवं ४३ सहस्र योजन थया । एम चिहुंदिशे दक्षिण जगतीथकी मांडो दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशे दगसीम ४ वडो विमान प्रविभक्तियें त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या ॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभासित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशे षनो पर अनुक्रमें साधमंपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपृष्ठें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट सीचें गया यावत् सर्व्दें करी सर्वदुःख थी प्रक्षीण थया । दक्षि ॥ भाषा ॥

इव क्रमसाधर्म्यात्पक्षयुगानि अणुपिट्ठत्ति आनुपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन.सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख प्पहीणाइंतिदृश्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाःप्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेलिखितंलिख्यते समयखेत्ते ति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तानरकेंद्रः सीमंतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त ॥ टीका ॥

सज़ुगाइं अणुपिट्ठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० एवंउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं ॥ मूल ॥

णदिशि धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कह्या। बडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमो लिखिये छे। पेंतालीसलाख योजन प्रमाणें पहिलो पृथिवीये पहिले पाथडे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणे कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

दिशिपितिवाच्यंस्यात् तत्रचैवमभिलापा: जंबूद्दीवस्सणं दीवस्सदाहिणिल्लाओदओभासस्सणं आवासपव्वयस्सदाहिणिल्लेचरिमंते एसिणंतेयालीसंजोयणसहस्सा इं अबाहाएअंतरे पन्नत्ते एवमन्यत्सूत्रद्वयं नवरं पश्चिमायांसंखो आवासपर्वत उत्तरस्यामुदकसीमइति ॥ ४३ ॥ चतुश्चत्वारिंशस्थानकेपिकिंचिल्लिख्यते चतुश्चत्वारिंशतं इसिभासियत्ति ऋषिभाषिताध्ययनानि कालिकश्रुतविशेषभूतानि दियालोयचुयाभासियत्ति देवलोकच्युतै: ऋषीभूतैराभाषितानि देवलोकच्युताभाषितानिक्वचित्पाठ: देवलोयभुयाणं चोयालीसंइसिभासियज्झयणा पन्नत्ता पुरिसजुगाइंति पुरुष: शिष्यप्रशिष्यादिक्रमव्यवस्थिता युगानीवकालविशेषा

॥ मूल ॥

संखोदयमीमे महालियाएणं विमाणपविभत्तीए तइयेवग्गे तेयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४३ ॥

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुयाभासिया प० विमलस्सणं अरहओ णं चउआलीसंपुरि

॥ भाषा ॥

थी माडोने गोस्तूभ नाम नागराजानां आवास पर्वतनो पूर्वनो चरिमांत छेहल्यो प्रदेश ४३ हजार योजन प्रमाणे आबाधाये अंतर कह्यो एतले जगती थकी ४२ हजार योजन गोस्तूभ पर्वतछे तेह पर्वत एक सहस्र योजन पिहुल पणेछे एवं ४३ सहस्र योजन थया। एम चिहुंदिशि दक्षिण जगतीथकी मांडी दक्षिण समुद्र मांहि दगभास २ पश्चिमे संख ३ उत्तरदिशि दगसीम ४ वडो विमान प्रविभक्तियें त्रीजे वर्गे ४३ उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या ॥ इति तेयालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४३ ॥ हिवे चौतालीसमो लिखेछे। चौतालीस ऋषिभाषित अध्ययन कालिकश्रुत विशेषभूत तेकेहवाछे देव लोक थी चव्या जेह पछे ऋषिभूत हुआ तेणे आभाषित कह्या। विमलनाथ अरिहंतना चौतालीस पुरिसयुग शिष्य प्रशिष्यादि क्रमें आव्या काल विशेषनी परें अनुक्रमें साधर्मपणा थको पुरिसयुग कहिये अनुपृष्ठें सीधा निरंतर पणे ४३ पाट मोक्षें गया यावत् शब्दें करी सर्वदु:ख थी प्रक्षीण थया। दक्षि

॥ टीका ॥

इव क्रमसाधर्म्यात्प्रकर्षयुगानि अणुपिट्ठत्ति आनुपूर्व्या अणुबंधंति पाठांतरे तृतीयादर्शनादनुबंध्येन.सातत्येनसिद्धानि जावंतिकरणेन बुद्धाइं मुत्ताइं सव्वदुक्ख प्पहीणाइंतिदृश्यं महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चतुर्थवर्गेचतुश्चत्वारिंशदुद्देशनकालाःप्रज्ञप्ताः ॥ ४४ ॥ पंचचत्वारिंशस्थानकेकिंचिद्लिख्यते समयखेत्तेत्ति कालोपलक्षितक्षेत्रं मनुष्यक्षेत्रमित्यर्थः सीमंतएणंति प्रथमपृथिव्यांप्रथमप्रस्तटे मध्यभागवर्तीवृत्तोनरकेंद्रः सीमंतइति उडुविमाणेत्ति सौधर्मेशानयोः प्रथमप्रस्त

॥ मूल ॥

सजुगाइं अणुपिठसिद्धाइं जावप्पहीणाइं धरणस्स णं नागिंदस्स नागरन्नो चोयालीसं भवणावाससयस हस्सा प० महालियाएणं विमाणपविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४४ ॥ समयखेत्ते णं पणयालीसं जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरएपणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयामविक्खंभे णं प० एवंउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवी एवंचेव धम्मेणंअरहा पणयालीसं

॥ भाषा ॥

णदिशे धरणेंद्र नागेंद्र नागराजानां चौतालीस लाख भवनावास कह्या। वडी विमान प्रविभक्तियें चउथे वर्गे चौतालीस उद्देशन काल अध्ययन विशेष कह्या॥ इति चौतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४४ ॥ हिवे पेंतालीसमो लिखेछे। पेंतालीसलाख योजन प्रमाणें पहिली पृथिवीये पहिले पाथडे मध्यभागवर्ती नरकेंद्र वाटलो सीमंतो नरकावासो पेंतालीस लाख योजन प्रमाणे लांबपणे पिहुलपणें कह्यो। एमज सौधर्म ईशाननां प्रथम प्रस्तट विमान मांहि मध्यभागवर्ती विमानेंद्रवालो उडुनामा विमान पेंतालीस लाख योजन लांबपणे पिहुलपणे कह्यो ईषत्प्राग्भारा पृथिवी पेंतालीसलाख योजन लांब

॥ टीका ॥ टवर्त्तिसर्वतस्त्रणांविमानावलिकानां मध्यभागवर्त्तिवृत्तं विमानकेन्द्रकमुडुविमानमिति ईसिंपब्भारत्ति सिद्धिपृथिवी मंदरस्सणंपव्वयस्सेत्यादिसूत्रे लवणसमुद्रान
न्तरम्परिध्यपेक्षांतरंद्रष्टव्यमिति सव्वेविणमित्यादि चन्द्रस्यत्रिंशन्मुहूर्त्तभोग्यंनक्षत्रक्षेत्रं समक्षेत्रमुच्यते तदेवसार्द्धंद्व्यर्द्धं द्वितीयमर्द्धमस्येतिद्व्यर्द्ध मित्येवंव्युत्पादना
त्तथाविधंक्षेत्रंयेषामस्ति तानिद्व्यर्द्धक्षेत्रिकाणि नक्षत्राणि अतएवपञ्चचत्वारिंशन्मुहूर्त्तांश्चंद्रेण सार्द्धंयोग:सम्बन्धोयोजितवंति तिन्नेवगाहा चोएदुत्तराणि उत्त

॥१०५॥ धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मंदरस्स णं पव्वयस्स चउदिसिंपि पणयालीसं २ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे ॥ मूल ॥
प० सव्वेविणं दिवड्ढखेत्तिया नक्खत्ता पणयालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिंजोगंजोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा
तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछनक्खत्ता पणयालमुहुत्तसंजोगा ॥ महालियाएणं विमाणपवि

॥ भाषा ॥ पणें पिहुलपणे कह्यो। एमज धर्मनाथ अरिहंत पेंतालीस धनुष प्रमाण ऊंचपणे हुआ। मेरु पर्वत ने चिहुंदिशें पेंतालीस पेंतालीस हजार योजननो अवा
धायें आंतरो कह्यो। लवण समुद्रनो अभ्यंतर परिधी ने विचे आंतरो कह्यो। महाविदेह क्षेत्रनो जीवा लाख योजन लांबपणेछे तेमांथी दसहजार योजन
नो मेरु काढिये तो नेऊ लाख जबस्या तेहनो अर्द्ध मेरुथको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजन थाय। एम चिहुंदिशे। चंद्रमाने ३० मुहुर्त्त पर्यंत भोग्य जे
नक्षत्रक्षेत्र ते समक्षेत्र कहिये तेहीज क्षेत्र सार्द्ध कीजिये एतले ३० मुहूर्त्त मांहि १५ घातिये तो ४५ मुहूर्त्तनो क्षेत्रथाय ते ४५ मुहूर्त्तिया नक्षत्र द्व्यर्द्ध क्षेत्रि
या कहिये एणें कारणें ते नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त्त लगें चंद्रमाने साथे योगकरेछे। करता हुआ करस्यें। तेकिहा नक्षत्रछे तेकहेछे। उत्तराफाल्गुनी १ उत्त
राषाढ २ उत्तराभाद्रपद ३ पुनर्वसु ४ रोहिणी ५ विशाखा ६ एह ६ नक्षत्र पेंतालीस मुहूर्त्त लगें चंद्रमानें साथे योग करे। वडी विमान प्रविभक्तिये पां

राफाल्गुन्यु त्तराषाढो त्तराभद्रपदाश्च ॥ ४५ ॥ अथ षट्चत्वारिंशस्थानके किंचिल्लिख्यते। दिट्ठिवायस्सत्ति द्वादशांगस्य माउयापयत्ति सकल वाङ्मयस्य अकारादिमातृका: पदानीव दृष्टिवादार्थप्रसवनिबंधनत्वेनमातृकापदानि उत्पादविगमध्रौव्यलक्षणानि तानिच श्रेणिमनुष्यश्रेण्यादिनाविषयभेदे नकथमपि भिद्यमानानि षट्चत्वारिंशद्भवंतीतिसम्भाव्यते। तथाबंभीएणं लिवीएत्ति लेख्यविधौ षट्चत्वारिंशन्मातृकाक्षराणि तानिचककारादीनिहकारां तानि सक्षकाराणि ऋॠऌॡक्षइत्येवं तदक्षरपञ्चकवर्जितानिसम्भाव्यन्ते तथापभंजणस्सत्ति औदीच्यामस्येति ॥ ४६ ॥ अथसप्तचत्वारिंशत्स्थानके किमप्युच्य ॥ टीका ॥

त्तीए पंचमेवग्गे पणयालीसं उद्देसणकाला प० ॥ ४५ ॥ दिट्ठिवायस्स णं छायालीसं माउयापया प० बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा प० पभंजणस्स णं वाउकुमारिंदस्स छायाली सं भवणावाससयसहस्सा प० ॥ ४६ ॥ जयाणंसूरिए सव्वब्भिंतरमंडलं उवसंकमित्ता णं चारंचरइ ॥ मूल ॥

चमे वर्गे पेंतालीस उद्देशनकाल अध्ययन विशेष कह्या। इति पेंतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४५ ॥ हिवे छेतालीसमो लिखेछे ॥ दृष्टिवाद पूर्व ना छेतालीस मातृकापद कह्या सकल शास्त्रने अकारादि छेतालीस अक्षर मातृकापद दृष्टिवादार्थप्रते प्रसववाना कारणथकी मातासरीखा कह्याछे। ब्राह्मी लिपीने विषे छेतालीस मातृका अक्षर कह्या। अकारादिक हकारांत क्षकारे सहित ५२। मांहियी ऋ ॠ ऌ ॡ क्ष एह ५ अक्षर वर्जित कीजे ४६ जगरे प्रभंजन अठारमो भवनपती वातकुमारेंद्र तेहनां ४६ लाख भवनावास कह्या। इति छेतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४६ ॥ जिवारे सूर्य ॥ भाषा ॥

ते जयाणमित्यादि इहलक्षप्रमाणस्य जंबूद्वीपस्याभ्यतो ऽशीत्युत्तरयोजनशते ३६० ऽपनीते सर्वाभ्यंतरस्य सूर्यमंडलस्य विष्कंभोभवति तत्परिधिस्त्रीणिलक्षाणि ॥ टीका ॥
पञ्चदशसहस्राणि एकोननवत्यधिकानि ३१५०८९ एतत्सूर्योमुहूर्त्तानांषष्ट्याग च्छतोति षष्ट्याऽस्यभागहारैमुहूर्त्त गतिर्लभ्यते साचपञ्चयोजनसहस्राणि द्वेचैकपञ्चा
शदुत्तरेयोजनशते एकोनत्रिंशच्चषष्ठिभागायोजनस्य ५२५१। २९ यदाचाभ्यंतरमण्डले सूर्यश्चरति तदाष्टादशमुहूर्त्तोदिवसप्रमाणं तदर्द्धेननवभिर्मुहूर्त्तैः मुहूर्त्त
॥११०॥ गतिर्गुण्यते ततश्चयथोक्तं चक्षुः स्पर्श प्रमाणमागच्छतीति अग्निभूएत्ति वीरनाथस्य द्वितीयोगणधरस्तस्यचेह सप्तचत्वारिंशद्वर्षाण्यगारवासउक्तः आवश्यकेतुष
ट्चत्वारिंशत् सप्तचत्वारिंशत्तमवर्षस्यासंपूर्णत्वादविवक्षा इहत्वसंपूर्णस्यापि पूर्णविवक्षेतिसम्भावनयानविरोधइति ॥ ४७ ॥ अष्टचत्वारिंशस्थानके

तयाणं इहगयस्स मणूसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाए ॥ मूल ॥
यसट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसंवासाइं अगारमज्झेव
सित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ४७ ॥ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्क

सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढी पूनिमे कर्क संक्रांतिये निषध पर्वतने ऊपरि ६५ मांडलाछे तेमांहिथी पहिले मांडले उपसंक्रमीने भ्रमणकरे तिवारे इहां भर ॥ भाषा ॥
तक्षेत्रगत मनुष्य ने सेतालीस हजार बेसे त्रेसठि योजन अने १ योजनना ६० हिया २१ भाग एतनो वेगलो थको दृष्टिगोचर आवे। स्थविर बड़ा वयपर्या
यश्रुतेकरी अग्निभूति बीजा गणधर सेतालीसवर्ष गृहस्थाश्रमे वसीने द्रव्यभाव भेदे मुंड थईने गृहस्थाश्रमथी साधुपणो पाम्या। इति सेतालीसमो समवाय
संपूर्ण ॥ ४७ ॥ हिवे अठतालीसमो समवाय लिखिछे॥ एकेक चिहुंदिशिनां अंतना धणी चक्रवर्त्ति राजाने अडतालीस हजार पाटण कह्या।

॥ टीका ॥

क्रिमपिलिख्यते। पट्टणंति विविधदेशपण्यान्यागत्ययत्रपतंति तत्पत्तनंनगरविशेषः पत्तनंरत्नभूमिरित्याहुरेके धम्मस्सत्ति पंचदशमतीर्थंकरस्येहाष्टचत्वारिंशद्‌गणा गणधराश्चोक्ता आवश्यकेतुत्रिचत्वारिंशत्पठ्यंते तदिदं मतांतरमिति सूरमंडलेत्ति सूर्यविमानं येषांभागानामेकषष्ट्यायोजनंभवति तेषामष्टचत्वारिंशत् त्रयोदशभिस्तैर्न्यूनंयोजनमित्यर्थः ॥ ४८ ॥ अथैकोनपंचाशस्थानकंलिख्यते। सत्तसत्तमियाणं सप्तसप्तमानिदिनानियस्यांसासप्त २ दिनानिभवंति सप्तसु सप्तकेषुयतः सासप्तकेषु अतः सासप्तदिनसप्तकमयत्वा देकोनपंचाशतावादिनैर्भवतीति पडिमत्ति अभिग्रहः छन्नउणंभिक्खासएणंति प्रथमेदिनसप्तकेप्रतिदिनमेकोत्तरयाभिक्षावृद्धया अष्टविंशतिर्भिक्षाभवति एवञ्चसप्तस्वपिषण्णवतिभिक्षाशतंभवति अथवा प्रतिसप्तक मेकोत्तरयावृद्धायथोक्तं भिक्षामानंभवति तथा

॥ मूल ॥

वहिस्स अडयालीसं पट्टणसहस्सा प० धम्मस्सणंअरहउ अडयालीसंगणा अडयालीसं गणहरा होत्था सूरमंडलेणं अडयालीसं एकसठिभागे जोयणस्स विक्खंभेणं प० ॥ ४८ ॥ सत्तसत्तमियाणं भि

॥ भाषा ॥

धर्मनाथ अरिहंत ने अठतालीस गच्छ अने अठतालीस गणधर हुया। आवश्यके ४३ पणि लख्याछे तेमतांतरछे। सूर्यनो मंडल एक योजन ना एकसठिया ४८ भागप्रमाणे विष्कंभपणे अने पिहुलपणे कह्यो। एक योजनना एकसठ भाग करिये ते मांथी १३ भाग ओछो सूर्य मंडलछे ॥ इति अठतालीसमो समवाय संपूर्ण ॥ ४८ ॥ हिवे एकूनपंचासमो लिखेछे ॥ सातदिन सात गुणाछे जेहने विषे एहवो भिक्षुप्रतिमा साधुना अभिग्रह विशेष ते सप्तसप्तमिका भिक्षुनीप्रतिमा उगुणपंचास रात्रि दिवसे अहोरात्रीयें पूरीथाय। एकसो छन्नूं १९६ भिक्षाये करी यथासूत्रोक्त विधियें सिद्धांतोक्तमार्गे आराधी होय एतले पहिलेदिन १ बीजेदिन २ त्रीजेदिन ३ एम सातमेदिन ७। एम बीजे सप्तकें पहिले दिन २ बीजेदिन ४ त्रीजेदिन ६ एमसातमेदिन १४। एम

॥ टीका ॥

ह्वि प्रथमेसप्तके प्रतिदिनमेकैकभिक्षाग्रहणात् सप्तभिक्षाभवंति द्वीतीयेद्वयो २ र्ग्रहणाच्चतुर्दश एवंसप्तमेसप्तानांग्रहणा देकोनपंचाशदित्येवंसर्वमीलनेयथोक्त मानभ्भवतीति अहासुत्तंति यथासूत्रंयथागमंसम्यङ्न्यायेनस्पष्टाभवंतीति शेषोद्रष्टव्यः संपन्नजोव्वणाभवंतित्ति नमातापितृपरिपालनामपेक्षंतइत्यर्थः ठिइत्ति आयुष्कं ॥ ४९ ॥ तत्रपुरिसोत्तमत्ति चतुर्थवासुदेवोऽनंतजिज्जिनकालभावी तथाकंचणत्ति उत्तरकुरुषुनीलवदादीनां पश्चानामानुपूर्व्यीव्यवस्थिता

॥ मूल ॥

स्कुपडिमाए एगूणपन्नाए राइंदिएहिं छन्नउयभिक्खासएणं अहासुत्तं आराहिया भवइ देवकुरुउत्तरकुरा सुणं मणुया एगूणपन्नराइंदिएहिं संपन्नजोव्वणा भवंति तेइंदियाणं उक्कोसेणं एगूणपन्नराइंदिया ठिई प० ॥ ४९ ॥ मुणिसुव्वयस्सणं अरहउ पंचासंअज्जियासाहस्सीउ होत्था अणंतेणं अरहा पन्ना

॥ भाषा ॥

त्रीजे सप्तके पहिलेदिन ३ बीजेदिन ६ त्रीजेदिन ९ एम सातमेदिन २१। एम चौथे सप्तके पहिलेदिन ४ बीजेदिन ८ त्रीजेदिन १२ एम सातमेदिन २८। एम पांचमेसप्तके पहिलेदिन ५ बीजेदिन १० त्रीजेदिन १५ एम सातमेदिन ३५। एम छट्ठे सप्तके पहिलेदिन ६ बीजेदिन १२ त्रीजेदिन १८ एम सातमे दिन ४२ एम सातमे सप्तके पहिलेदिन ७ बीजेदिन १४ त्रीजेदिन २१ एम सातमेदिन ४९। एमसर्वमिली १९६ भिक्षाथई। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे युगलिया मनुष्य ४९ रात्रि दिवसें ४९ अहोरात्रीयें संप्राप्त यौवन होय एतले ४९ दिनलगें माइत पालना करे पछे भाई बहिन धणी धणियाणी थईने प्रवर्ते। तेइन्द्रिय जीवनी उत्कृष्टी ४९ रात्रि दिवसनो आउखो कह्यो। इति ४९ समवाय संपूर्ण ॥ ४९ ॥ हिवे ५० मो समवाय लिखेछे। मुनिसुव्रत वीस

मांमहाद्रदानांपूर्वापरपार्श्वयो: प्रत्येकंदशकांचनपर्वताभवंति तेचसर्वेशतं एवंदेवकुरुषुनिषधादीनां महाद्रदानां पार्श्वत: शतंभवति सर्वएतेजंबूद्वीपेद्वि शतमानाभवंति तेयोजनशतोच्छ्रिता: शतमूलविष्कंभा स्वनामकदेवनिवासभूतभवनालंकृतशिखरतला: ॥ ५० ॥ अथैकपंचाशस्थानकं। तत्र ॥ टीका ॥

सं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पुरिसुत्तमेणं वासुदेवे पन्नासं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं प० लंतएकप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० सव्वाउणं तिमिस्स गुहा खंडगप्पवाउ गुहाउ पन्नासं २ जोयणाइं आयामेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया सिहरतले पन्नासं२ ॥ मूल ॥

मा अरिहंतने पंचास आर्यानी साध्वीनी संपदाना सहस्र थया। अनंतनाथ तेरमा अरिहंत पंचास धनुष ऊंचा ऊंचपणे थया। अनंतनाथने वारें पुरुषोत्त म नामा चौथो वासुदेव पंचास धनुष ऊंचो ऊंचपणे हुयो। सगलाई दीर्घ वैताढ्य ३४ जंबूद्वीपना ६८ धातकीखंडना ६८ पुष्करार्द्धना एवं १७० दीर्घ वैताढ्य मूलने विषे पंचास पंचास योजन विष्कंभपणे पिहुलपणें कह्या। लांतक छठे देवलोके पंचास सहस्र विमानावास कह्या। सगला जंबूद्वीप ने विषे ३४ दीर्घ वैताढ्य पर्वत छे एकेक वैताढ्यें बेबे गुफा छे तेमांहि तिमिस्रागुफा पैसारानी खंडप्रपात गुफा नीसारानी एबिहुं गुफा पंचास पंचास योजन आयामपणें कही। उत्तर कुरुने विषे नीलवंतादिक पांच द्रहअनुक्रमे रह्याछे ते एकेक द्रहने पूर्व पश्चिमने पासे प्रत्येके प्रत्येके दश दश कांचन पर्वतछे तेसर्वमिली एम ज देव कुरुने विषे १०० सर्वमिली २०० कांचनगिरि हुआ। ते सगला कांचनगिरि शिखर तलने विषें पंचास योजन पिहुलपणे कह्या एकसो योजन ऊं ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

बंभचेराणंति आचाराः प्रथम श्रुतस्कन्धाध्ययनानां शस्त्रपरिज्ञादीनां तत्र प्रथमे सप्तोद्देशका इति सप्तैवोद्देशनकाला एवं द्वितीयादिषु क्रमेण षट् चत्वारः चत्वारः एवं पंच अष्टौ चत्वारः षट् सप्तैवमेकपञ्चाशदिति सुप्पहेत्ति चतुर्थोबलदेवअनंतजिज्जिननाथकालभावी तस्यैहैकपंचाशद्वर्षलक्षाण्यायुः पुनरुक्तमावश्यकेतु पंचपंचाशदुच्यते तदिदंमतांतरमिति एकावन्नंउत्तरपगडीओत्ति दर्शनावरणस्यनव नाम्नोद्विचत्वारिंशदित्येकपंचाशदिति ॥ ५१ ॥ अथद्विपंचाश

॥ ११२ ॥

॥ मूल ॥

जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ नवण्हंबंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविठा प० एवंचेवबलिस्सवि सुप्पभेणं बलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावसव्वदुक्खप्पहीणे दंसणावरणनामाणं दोण्हंक

॥ भाषा ॥

चाछे। इति ५० समवाय संपूर्ण ॥ ५० ॥ हिवे ५१ मा समवाय लिखेछे। आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे नव ब्रह्मचर्याध्ययन शस्त्रपरिज्ञादिक तेहना ५१ उद्देशानाकाल कह्या। प्रथमाध्ययमे ७ उद्देशा द्वितीयाध्ययने ६ तृतीये ४ चतुर्थे ४ पंचमे ५ षष्ठे ८ सप्तमे ४ अष्टमे ६ नवमे ७ सर्व मिली ५१ उद्देशनकाला कह्या। बीजो विचार २५ ठाणें जाणिवो सही। चमरेंद्र असुरराजनो सुधर्मासभा एकावन से स्तंभेकरी संनिविष्ट सहित कही। बलेंद्र असुरेंद्रनो असुरराजानो सभा सुधर्मा ५१ सेस्तंभेकरी सन्निविष्ट कही। अनंतनाथने वारे सुप्रभनामा चोथा बलदेव ५१ लाख वर्षनो उत्कृष्ट आउखो पालीने सिद्धबुद्धथयो सर्वदुःखथको प्रक्षीणथयो मोक्षगयो। आवश्यके ५० लाखवर्षकह्या तेमतांतर। बीजोकर्म दर्शनावरणीय तेहनो उत्तरप्रकृति ८ छट्ठोनामकर्म तेहनो

स्थानकं ॥ तत्रमोहणिज्जस्सकम्मस्सत्ति । इहमोहनीयकर्मणोऽवयवेषु चतुर्षुक्रोधादिकषायेषु मोहनीयमुपचर्यावयवेसमुदायोपचारन्यायेन मोहनीयस्येत्युक्तं तथा पिकषायसमुदायापेक्षया इपंचाशन्नामधेयानि नपुनरेकैकस्यकषायमात्रस्यैवेति तत्रक्रोधइत्यादीनि दशनामानि क्रोधकषायस्य चंडिकेत्ति चांडिक्यं तथा मानादीन्येकादश मानकषायस्य अनुक्कोसेत्ति आत्मोत्कर्षः उक्कोसेति उत्कर्षः उन्नत्तं उन्नामेति उन्नामः तथा मायादीनि सप्तदश मायाकषायस्य णूमेत्ति ॥ टीका ॥

मणाणं एकावन्नं उत्तरकम्मपगडीओ प० ॥ ५१ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स बावन्नंनामधेज्जा प० तं० कोहे कोवे रोसे दोसे अखमा संजलने कलहे चंडिक्के भंडणे विवाए। माणे मदे दप्पे थंभे अणुक्कोसे गब्बे परपरिवाए उक्कोसे अवक्कोसे उन्नए उन्नामे । माया उवही नियडी वलए गहणे णूमे कक्के कुरुए दंभे कूडे जिम्मे किब्बिसे अणायरणया गूहणया वंचणया पलिकुंचणया सातिजोगे। लोभे इच्छा मुच्छा ॥ मूल ॥

उत्तरप्रकृति ४२ त्रिहुंकर्मनी ५१ उत्तरप्रकृतिकही । इति ५१ समवायययो ॥ ५१ ॥ हिवे ५२ समवाय लिखेछे। मोहनीय चौथोकर्म तेहना ५२ नामधेयकह्या । मोहनीयकर्ममांहि ४ कषाय अवतस्याछे तेमाटे क्रोधकषायना १० नामकह्या तेकहेछे । क्रोध १ कोप २ रोष ३ द्वेष ४ अक्षमा ५ संज्वलन ६ कलह ७ चांडिक्य ८ भंडण ९ विवाद १० । मानाश्रित ११ नाम मान १ मद २ दर्प ३ थंभ ४ आत्मोत्कर्ष ५ गर्व ६ परपरिवाद ७ उत्कर्ष ८ अपकर्ष ९ उन्नत्त १० उन्नाम ११ ॥ मायाश्रितनाम १७ माया १ उपधि २ निकृति ३ वलय ४ गहन ५ नूमनीचो ६ कल्क ७ कुरुक ८ दंभ ९ कूड १० जिह्म ११ किल्बिषिक १२ आनाचरणता १३ गूहनता १४ वंचनता १५ परिकुंचनता १६ सातियोग १७ । लोभाश्रितनाम १४ । लोभ १ इच्छा २ मूर्छा ३ कांक्षा ४ गृद्धि ५ ॥ भाषा ॥

॥ ११३ ॥

व्यवमं कक्केत्ति कल्कं कुरुएत्ति कुलकं झिमेत्ति जह्यं तथालोभादीनि चतुर्दश लोभकषायस्य भिज्झाअभिज्झत्ति अभिध्यानमभिध्येत्यस्य पिधानमित्यादि ॥ टीका
विच वैकल्पिके अकारलोपे भिध्यावेति शब्दभेदानाम ;यमिति गोथूभेत्यादि गोस्तुभस्य प्राचांलवणसमुद्र मध्यवर्त्तिनो वेलंधरनागराज निवास भूतपर्वतस्य
पौरस्त्याच्चरमांतादपसृत्य बडवामुखस्य महापाताल कलशस्य पाश्चात्यच्चरमांतोयेन भवतीति गम्यते एसणंति एदृतन्तरमध्ये बाधया व्यवधानलक्षणमित्यर्थः
द्विपंचाशद्योजनसहस्राणि भवन्ती त्यक्षरघटना भावार्थस्त्वयं इह लवणसमुद्रं पंचनवतियोजनसहस्राण्यवगाह्य पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारः क्रमेण वडवामुखकेतु

कंखा गेही तिण्हा भिज्जा अभिज्जा कामासा भोगासा जीवियासा मरणासा नंदी रागे। गोथूभस्सणं आ ॥ मूल ॥
वासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं बावन्नं

तृष्णा ६ भिध्या ७ अभिध्या ८ कामाशा ९ भोगाशा १० जीविताशा ११ मरणाशा १२ नंदी १३ रागो १४। सर्वमिली ५२ थया। पूर्व लवण समुद्रमांहि
गोस्तूभ नाम वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमांत थकी छेहलाप्रदेश थकी मांडी वडवामुख महा पातालकलशनो पश्चिमनो ॥ भाषा ।
चरिमांत छेहलो प्रदेश एह बावन सहस्र योजन आबाधा विचाले आंतरो कह्यो। जंबूद्वीपनी जगती थकी मांडी चिहुंदिसे ९५ सहस्र योजन लगे समुद्र
अवगाहीये तिहां पूर्वादिक चिहुंदिशि क्रमे वडवामुख १ केतु २ यूप ३ ईसर ४ एह चार पातालकलश पामीयें तथा जंबूद्वीप पर्यंत थकी ४२ सहस्र
योजने समुद्र मांहि जइ तिहां चिहुंदिसे ४ वेलंधरनां पर्वत गोस्तूभादिक छे ते सहस्रना पिहुला छे सर्वमिली ४३ हजार योजन प्रमाण थया ते ९५ सहस्र
माहिथी ४३ सहस्र योजन काढीये तो पूठें गोस्तूभ पर्वतनो बडवा मुख महापाताल कलशनो ५२ सहस्र योजन आंतरोइमरे एमज चिहुंदिसि एम दक्षिणे

॥ टीका ॥

कजूगकेश्वराभिधाना महापातालकलशा भवंति तथा जंबूद्वीपपर्यंता द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्राण्यवगाह्य सहस्रविष्कंभा श्चत्वारएव वेलंधरनागराजपर्वता गोस्तुभादयो भवंति ततश्च पंचनवत्या स्त्रिचत्वारिंशत्यपकर्षितायां द्विपंचाशत्सहस्राण्यंतरं भवति सौधर्मे त्रिंशद्विमानानांलक्षाणि सनत्कुमारेद्वादश माहेंद्रे चाष्टाविंशतिः सर्वाणि द्विपंचाशत् ॥ ५२ ॥ त्रिपंचाशस्थानके लिख्यते महाहिमवंतेत्यादि सूत्रे संवादगाथा । तेवन्नसहस्साइं नवयसएजोयणाणिइगतीसे

॥ मूल ॥

जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्सणं केउगस्स संखस्स जूयगस्स दगसीमस्स ईसरस्स नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतासिण तिण्हं कम्मपगडीणं बावन्नं उत्तरपयडीउ प० सोहम्म सणंकुमार माहिंदेसु तिसुकप्पेसु बावन्नं विमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥ देवकुरुउत्तरकुरु

॥ भषा ॥

दगभास पर्वतनां पूर्वांत थकी मांडी। केतुक पाताल कलश विचाले ५२ सहस्र योजन आंतरो कह्यो । पश्चिमें शंख पर्वतना पूर्वांत थकी मांडी यूपनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत विचे ५२ सहस्र योजन । उत्तर समुद्रमांहि दगसोम पर्वतना पूर्वांत थी मांडी ईसरनाम पाताल कलशनो पश्चिमांत विचाल ५२ सहस्र योजन आंतरो । ज्ञानावरणीय कर्मनी प्रकृति ५ नाम कर्मनी ४२ प्रकृति अंतरायनी प्रकृति ५ एहत्रिहुंकर्मनी ५२ उत्तर प्रकृति कही। सौधर्म कल्पे ३२ लाख विमान । सनत्कुमारें १२ लाख विमान माहेंद्रे ८ लाख विमान । एम त्रिण देवलोकना मिली ५२ लाख विमानावास शतसहस्र कह्या एतले ५२ लाख विमानावास कह्या । इति ५२ मो समवाय पूर्णथयो ॥ ५२ ॥ हिवे ५३ समवाय लिखेछे । देवकुरु उत्तरकुरु संबंधिनी

॥ टीका ॥

जीवामहाहिमवश्रो श्रवकलाछक्कलाश्रोत्ति ॥ १ ॥ संवच्छरपरियागत्ति संवच्छरमेकं यावत् पर्याय: प्रव्रज्यालक्षणो येषां ते संवत्सरपर्याया: महइमहालएसु महाविमाणेसुत्ति महांतिच तानि विस्तीर्णानिच अतिमहालया श्रात्यंतमुत्सवाश्रयभूतानि महांतिमहालयास्तेषु महांतिचतानिप्रशस्तानि विमानानिचेति विग्रह: एतेचाप्रतोता अनुत्तरोपपातिकांगेतु ये धोयंते तत्र त्रयस्त्रिंशत् बहुवर्षपर्याया येति ॥ ५२ ॥ चतु:पंचाशस्थानके लिख्यते । पाउणित्तत्ति प्राप्य

॥ मूल ॥

यातणं जीवात तेवन्नं २ जोयणसहस्साइं साइरेगाइं श्रायामेणं प० महाहिमवंतरुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवात तेवन्नंजोयणसहस्साइं नवयएगतीसे जोयणसए छच्चएगूणवीसइभाए जोयणस्स श्रायामेणं प० समणस्सणं भगवतमहावीरस्स तेवन्नं श्रणगारासंवच्छरपरियाया पंचसुश्रणुत्तरेसु महइमहालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना समुच्छिमउरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नंवाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥

॥ भाषा ॥

जीवा प्रत्यंचारूप त्रेपनत्रेपन योजन सहस्र भाभेरी लांब पणे कही । महाहिमवंत बीजो वर्षधर एह बिहुं वर्षधरनी जीवा प्रत्यंचा त्रेपन २ सहस्र योजन प्रमाण उपरि नवसे एकत्रीस योजन एक योजन नाउगुण सहाइ छकला । ५३९३१ योजन १९ । ६ कला आयामे लांब पणे कह्या । श्रमण भगवंतमहावीरना ५३ अणगारयती संवच्छर पर्याया एकवर्षनो पर्याय दीक्षा जेहने एहवा ५३ हुया । पछे संथारोकरी अनुत्तर विजयादिक अतिमोटो घणो विस्तीर्ण महाविमान तेहने विषे देवता पणे उपना । समूर्छिम उरपर सर्पनो उत्कृष्टो त्रेपन वर्ष सहस्रनो आउखो कह्यो ॥ इति ५३ मो समवाय पूर्ण थयो ॥ ५३

एगणिसेज्जाएत्ति एकेनासनपरिग्रहेण वागरणाइंति व्याक्रियंते अभिधीयंते इति व्याकरणानि प्रश्ने सति निर्वचनतापादमानाः पदार्थाः वागरित्थत्ति व्याकृतवांस्तानि वा प्रतीतानि अनंतनाथस्येह चतुःपंचाशद्गणधरा योक्ताः आवश्यकेतु पंचाशदुक्ता स्तदिदं मतांतरमिति ॥ ५४ ॥ पंचपंचाशत् ॥ टीका ॥

भरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाएउसप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं २ उत्तमपुरिसा उप्पज्जिंसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकराबारसचक्कवट्टी नवबलदेवा नववासुदेवा अरहोणं अरिठनेमी चउवन्नंराइंदियाइं छउमत्थपरिया यंपाउणित्ता जिणेजाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी समणेभगवं महावीरे एगदिवसेणं एगनिसिज्जाए चउप्पन्ना इं वागरणाइं वागरित्था अणंतस्सणं अरहओ चउपन्नं गणहरा होत्था ॥ ५४ ॥ मल्लिस्सणंअरह ॥ मूल ॥

हिवे ५४ मो समवाय लिखेछे। भरत ऐरवत क्षेत्रने विषे एकेकीयें अवसर्पिणीयें एकेकीयें उत्सर्पिणीये चोपन २ उत्तम पुरुष उपना उपजे छे। उपजस्ये ते कहेछे। २४ तीर्थंकर। १२ चक्रवर्त्ती। ९ बलदेव। ९ वासुदेव। सर्वमिली ५४ थया। अरिहंत अरिष्टनेमी ५४ रात्रि दिवस लगे छद्मस्थ पर्याय पाली ने जिन हुया केवली। सर्व जाणे ते सर्वज्ञ सर्वसज्ञज्ञ संसारना भाव पदार्थ देखे ते सर्वदर्शी हुया। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर एके दिवसे एक निषद्याये एके आसणे बेठे ५४। व्याकरण प्रश्न प्रति व्याकृतवंत कहता हुया। अनंतनाथ अरिहंतने ५४ गणधर हुया। इति चोपनमो समवाय थयो॥ ५४ ॥ हिवे ५५ मोसमवाय लिखेछे। मल्लिनाथ अरिहंत पंचावन वर्षसहस्रलगे उत्कृष्टो आउखोपालीने सिद्धथया बुद्धथया यावत् अस्ते सर्वदुःख थकी ॥ भषा ॥

॥ टीका ॥

स्थानकेलिदं लिख्यते। मंदरस्से त्यादि इह मेरोः पश्चिमांतात् पूर्वस्य जम्बूद्वीपद्वारस्य पश्चिमांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि योजनानां भवतीत्युक्तं तत्र किल मेरो विष्कम्भमध्यभागात् पंचाशत्सहस्राणि द्वीपांतो भवति लक्षप्रमाणत्वा द्वीपस्य मेरुविष्कम्भस्य च दशसाहस्रिकत्वा द्वीपार्द्ध पंचसहस्रक्षेपेण पञ्चपंचाशदेव भवतीति इह च यद्यपि विजयद्वारस्य पश्चिमांत इत्युक्तं तथापि जगत्याः पूर्वान्त इति किल सम्भाव्यते मेरुमध्यात् पञ्चाशतो योजनसहस्राणां जगत्यां द्यन्ते पूर्यमाणत्वात् जंबूद्वीपजगतीविष्कंभेन च सह जम्बूद्वीपलक्षणपूरणीय लवणसमुद्र जगतीविष्कम्भेनच लक्षद्वय मन्यथा द्वीपसमुद्रमाना ज्जगतीमाने पृथग्भणने मनुष्यक्षेत्रपरिधिरतिरिक्तास्यात् साहि पंचचत्वारिंशल्लक्षप्रमाणक्षेत्रापेक्षया भिधीयते तत स्यैव मतिरिक्ता स्यादिति अथचेह किंचिदूनापि पंचपंचाशत्

॥ मूल ।

तेपणपन्नंवाससहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंता उ विजयदारस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पणपन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवंचउदिसिंपि विजयवेजयंतजयंतअपराजियंति समणेभगवंमहावीरे अंतिमराइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाणफलविवा

॥ भाषा ।

प्रक्षीण रहित थया। मेरू पर्वतना पश्चिमना चरिमांत थको छेहल्यो प्रदेश थको जंबूद्वीपनो पूर्वनोद्वार विजयनाम तेहनो पश्चिमनो चरिमांतु छेहलो प्रदेशएह ५५ योजन सहस्र आवाधा विचाले आंतरो कह्यो। मेरुथको विजय दरवाजा ४५ सहस्र योजने होय ते मांहि दश सहस्रनो मेरुघालिये एतले सर्वमिली ५५ सहस्र योजन थया। इहां यद्यपि विजय द्वारनो पश्चिमांत ग्रह्योछे परंजगतीनो पूर्वांत लीजे तो पूरा५५ सहस्र योजन थया। एमज चिहुंदिसे मेरु पर्वतमांहि घालतां मेरुथकी दक्षिणदिसे वैजयंत द्वारनो पश्चिमे जयंतनो उत्तरे अपराजितनो आंतरो जाणिवो। श्रमण भगवंत महावीर छेहलीरा

पूर्णतया विवर्जितेति अंतिमरायंसित्ति सर्वायुः कालपर्यवसानरात्री रात्रेरंतिमे भागे पापायां मध्यमायां नगर्यां हस्तिपालस्य राज्ञःकरणसभायां कार्त्ति कमासामावास्यायां स्वातिनक्षत्रेण चन्द्रमसा युक्तेन नागकरणे प्रत्यूषसि पर्यंकासनेनिषसः पंचपंचाशदध्ययनानि कल्लाणफलविवागाइंति कल्याणस्य पुण्य स्य कर्मणः फलं कार्यं विपाच्यंते व्यक्तीक्रियन्ते यै स्तानि कल्याणफलविपाकानि एवं पापफलविपाकानि व्याकृत्य प्रतिपाद्य सिद्धोबुद्धः यावत्करणात् मुक्ते अंतकडे परिनिब्बुडे सव्वदुक्खप्पहीणेत्ति द्दश्यं पढमेत्यादि प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशति रिति पंचपंचाशत् दंसणेत्यादि दर्शनावरणी ॥ टीका ॥

गाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफलविवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे पढमबिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावाससयसहस्सा प० दंसणावरणिज्जनामाउयाणं तिरहं कम्मपगडीणं पणपन्नं उत्तरपग डीउ प० ॥ ५५ ॥ जंबूद्दीवेणंद्दीवे छप्पन्नं नक्खत्ताचंदेण सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ विमलस्सणं ॥ मूल ॥

त्रिये कार्त्तिकवदी अमावसनी रात्रिये पाछलीरात्रे बेठेथके ५५ अध्ययन पावानगरीमें हस्तिपाल राजानी दानसभाये कल्याण शुभकर्मनोफल कार्य विपा कीये प्रगटकरीये जेणे अध्ययने तेकल्याण फल विपाक कहीये सुबाहु कुमार प्रमुख ५५ अध्ययन जाणिवा। पाप फल विपाक मृगापुत्रादिकना कह्या सिद्धां तनेविषे सिद्ध थया बुद्धथया वलीयावत्शब्दे सर्वदुःख थकी प्रक्षीणथया । पहिलीये ३० लाख नरकावासाकह्या बीजीयें २५ लाख बिहुं नरक पृथिवीना मिली ५५ लाख नरकावासा कह्या। दर्शनावरणीय प्रकृति ८ नाम कर्मनी ४२ आउखानी ४ एमत्रीहु कर्मनी ५५ उत्तर प्रकृति कही। इति ५५ मो समवा यथयो ॥ ५५ ॥ हिवे ५६ मोसमवाय लिखेछे। जंबूद्वीप द्वीपने विषें ५६ नक्षत्र चंद्रमा साथे योग संबंध योजना करता हुया संबंध करेछे संबंध ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

यस्य नव प्रकृतयो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् आयुषश्चतस्र इत्येवं पंचपंचाशदिति ॥ ५५ ॥ अथषट्पंचाशत्स्थानके लिख्यते। जंबूद्दीवेत्यादि तत्र चन्द्रद्वयस्य प्रत्येकमष्टाविंशते र्भावात् षट्पंचाशन्नक्षत्राणि भवन्ति विमलस्येह षट्पंचाशद्गणा गणधरा प्रोक्ताः आवश्यके तु पञ्चपञ्चाशदुच्यते तदिदं मतांतरमिति ॥ ५६ ॥ अथ सप्तपंचाशत्स्थानके किमपि लिख्यते। गणिपिडगाणंति गणिन आचार्यस्य पिटकानीव पिटकानि सर्वस्वभाजनानीति गणिपिटकानि तेषां आचारस्य श्रुतस्कन्धद्वयरूपस्य प्रथमांगस्य चूलिका सर्वान्तिममध्ययनं विमुक्त्यभिधान माचारचूलिका तद्वर्जानां तत्राचारे प्रथमश्रुतस्कंधे नवाध्ययनानि द्वितीयेषोडश निशीथाध्ययनस्य प्रस्थानांतरत्वे नेहानाश्रयणात् षोडशानां मध्ये एकस्या चारचूलिकेति परिहृतत्वात् शेषाणां पंचदश सूत्रकृते

॥ मूल ॥

अरहउ बप्पन्नं गणा गणहरा होत्था ॥ ५६ ॥ तिरहं गणिपिडगाणं आयारचूलियाव ज्जाग सत्तावन्नं अज्झयणा प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ

॥ भाषा ॥

कह्या एतले जंबूद्वीपमांहि २ चंद्रमाछे एकेका चंद्रमाने परिवारे २८ नक्षत्र होइ तिहां चंद्रमानां मिली ५६ नक्षत्र होय। विमलनाथ अरिहंतना ५६ गणधर सूत्रे कह्या आवश्यके ५० गणधर कह्याछे मतांतर छे। इति ५६ समवाय संपूर्ण ॥ ५६ ॥ हिवे ५७ समवाय लिखिछे। तिण गणी कहिये आचार्य तेहने पेटीरत्नभाजन सरीखाते गणिपिटक एहवासूत्रना आचारांग प्रथम श्रुत स्कंधे ८ अध्ययन बीजे १६ अध्ययनछे । तेमांहीथी छेहल्या अध्ययन विमुक्ति नाम आचार चूलिकाते एकटाली बीजा १५ अध्ययन लीजे तो २४ अध्ययन आचारांग सूयगडांग पहिले श्रुतस्कंधे १६ अध्ययन बीजे ७ सर्वमिली २३ ठाणांगे १० अध्ययन सर्वमिली ५७ अध्ययन कह्या। तेसूत्रनानाम कहेछे अनुक्रमे आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३। जगतीथकी ४२ सहस्र योजने समुद्र

॥ टीका ॥

द्वितीयांगे प्रथमश्रुतस्कन्धेषोडश द्वितीयेसप्त स्थानांगे दशैत्वं सप्तपंचाशदिति गोथूभित्यादौ भावार्थोयं द्विचत्वारिंशत् सहस्राणि वेदिका गोस्तुभपर्वतयो रंतरं सहस्रं गोस्तुभस्य विष्कंभः द्विपंचाशद्गोस्तुभवडवामुखयो रंतरं दशसहस्रमानत्वा वडवामुखविष्कंभस्य तदर्द्धं पंचेति ततो द्विपंचाशतः पंचानां च मीलने सप्त पंचाशदिति जीवाणंधणुपिठ्ठत्ति मण्डलं खण्डाकारं क्षेत्रं इह सूत्रे सम्वादगाथाहिं सत्तावन्नसहस्सा धणुपिठ्ठणउयदुसयदसकलत्ति ॥ ५७ ॥

॥ मूल ॥

चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं सत्तावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं दगभासस्स केउस्सय संखस्स य जूवस्सय दगसीमस्स ईसरस्सय मल्लिस्सणं अरहउ सत्तावन्नं मणपज्जवनाणिसया होत्था महाहिमवंतरुप्पीणंवासहरपव्वयाणं धणुपिठं सत्तावन्नं २ जोयणसहस्साइं

॥ भाषा ॥

मांहि पूर्वदिशि गोस्तुभनामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत तेहना पूर्वना चरिमंतथकी छेहल्या प्रदेशथकी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्य देशभाग एहने ५७ योजन सहस्र आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो एतले गोस्तुभ पर्वतथकी शुद्ध पूर्वे ५२ सहस्र योजने वडवामुख पाताल कलशके अनें ते वडवामुख १० सहस्र पिहुलो तेहनो मध्यभाग ५ सहस्रनो ५२ सहस्र भेला करतां ५७ सहस्र योजन थया। एम दक्षिणे दगभास पर्वतना पूर्वना छेहला प्रदेशथकी मांडो केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। एमज पश्चिमे शंखनामा वेलंधरथकी मांडो यूपकनामा पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। उत्तरे दगसीम वेलंधर थकी ईश्वरनाम पाताल कलशनो मध्यभाग ५७ सहस्र योजने। मल्लिनाथ अरिहंतने ५७ मन पर्यवज्ञानी ५७०० थया। जंबूद्वीप लघव मंडलक्षेत्र तेमांहो हिमवंत बीजो वर्षधर रुपी पांचमो एहबीहुं वर्षधर पर्वतनो धनुपृष्टि ५७ योजन सहस्र बली वेसय पने बाणो

अष्टपञ्चाशत्स्थानकमपि लिख्यते । पढमेत्यादि तत्र प्रथमायां त्रिंशन्नरकलक्षाणि द्वितीयायां पंचविंशतिः पंचम्यां त्रीणीति सर्वाण्यष्टपंचाशदिति नाणेत्यादि तत्र ज्ञानावरणस्य पंच वेदनीयस्य द्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नो द्विचत्वारिंशत् अंतरायस्य पंचेति सर्वा अष्टपंचाशदुत्तर प्रकृतयः गोथूभस्सेत्यादि अस्य च भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेण वसेयः एवंचउद्दिसिंपि नेयव्वति अनेन सूत्रत्रयमतिदिष्टं तच्चैवं दओभासस्सणंआवासपव्वयस्स उत्तरिल्लाओ चरमंताओ केउगस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभागे एसणं अठावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे पन्नते एवं संखस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरिमंताओजूयगस्स महा

दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ पढमदोच्चपंचमासु तिसुपुढवीसु अठावन्नंनिरयावाससयसहस्सा प० नाणावरणिज्जस्स वेयणिय आउय नाम अंतराइयस्स एएसिणंपंचण्हंकम्मपगडीणं अठावन्नं उत्तरपगडीउ प० गोथूभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमि

योजन दसभाग उगुणीस हाइया एक योजनना ५७२६३ योजनना एगुणीस हाइया भाग १० कला परिक्षेपे परिधि कही ॥ इति ५७ नोसमवाय संपूर्ण ॥ ५७ ॥ हिवे अठावन मो समवाय लिखेछे । पहिलीयें ३० लाख नरकावासा बीजीयें २५ लाख पांचमीये ३ लाख एमत्रिणना मिली अठावन नरकावासा सतसहस्र एतले ५८ लाख नरकावासा कह्या । नाणावरणीय ५ प्रकृति वेदनीयनी २ आउखानी ४ नामकर्मनी ४२ अंतरायनी ५ एह ५ कर्मनी उत्तर प्रकृति अठावन कही । समुद्र मांहि पूर्वदिशें गोस्तूभ नामा वेलंधर नागराजानो आवासपर्वत छे तेहनां पश्चिम चरमांतथी छेहला प्रदेशथकी मांडी वडवामुख महापाताल कलशनो बहुमध्यदेशभाग एह ५८ सहस्र योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । जंबूद्वीपनी पूर्व जगतीथकी मांडी ४२ सह

॥ टीका ॥

पातालस्स एवंदगसोमस्स आवासंपव्वयस्सदाहिणिल्लाओ चरमंताओ ईसरस्स महापायालस्सत्ति ॥ ५८ ॥ अथैकोनषष्ठिस्थानके लिख्यते। चंदस्सणमित्यादि संवत्सरो ह्यनेकविधः स्थानांगादिषू क्त स्तत्र य श्चंद्रगति मंगीकृत्य संवत्सरो विवक्ष्यते स चंद्र एव तत्र च द्वादशमासाः षट्चऋतवो भवन्ति तत्रचैकैकऋतु रेकोनषष्ठिरात्रिंदिवाग्रेण भवति कथं एकोनत्रिंशद्द्वात्रिंशच्च द्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्ये त्येवं प्रमाणः कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीपरिनि

॥ मूल ॥

ल्लाउ चरमंताउ वलयामुहस्स महापायालस्स वज्जमज्झदेसभाए एसणं अठावन्नं जोयणसहस्साइं अवाहा ए अंतरे प० एवंचउदिसंपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥ चंदस्सणं संवच्छरस्स एगमेगे उऊ एगूणसठि

॥ भाषा ॥

स्र योजन गोस्तूभ पर्वतछे ते एकसहस्रनो पिहुलो छे ते एकमहस्र योजन टालीजे अने गोस्तूभ थी ५२ सहस्र योजन वडवामुख कलशछे। तो गोस्तूभसं बंधी एक सहस्र ५२ सहस्र मांहि घालिये तो ५३ सहस्रथाय अने वडवामुख १० सहस्र पिहुलोछे तेहनो मध्य भाग पांच सहस्रनो ते ५३ सहस्र मांही घालिये एतले ५८ सहस्र योजन एतलो आंतरो जाणियो। एम चिहुंदिशि ना वेलंधर पर्वत अने चिहुं पाताल कलशनो आंतरो जाणिवो दगभास पर्वत दक्षिण समुद्र मांही तेहनां उत्तर चरिमांतथी मांडी केतुक पाताल कलशनो मध्यभाग ५८ सहस्र योजन आंतरो कह्यो। पश्चिमे शंखपर्वतनां पूर्वचरिमांत अने यूप कलशनो मध्यभाग५८ सहस्र योजननो आंतरो कह्यो उत्तरे दकसीम पर्वतनो दक्षिण चरिमांत ईसर पातल कलश ५८ सहस्रनो। इति ५८ समवाय पूर्णथयो ॥ ५८ ॥ हिवे ५९ मोसमवाय लिखेछे। चंद्रमानी गतिने अंगीकार करीने जे संवत्सर विचारिये ते चंद्रसंवत्सर कहीये। चंद्र संवत्सर १२ मासनो ऋतु ६ होय। एकेक ऋतु तेमां उगुणसाठि रात्रि दिवस छे तिहां एहवो रात्रि दिवायें ५९ अहोरात्रि प्रमाणे कह्यो तो चिहुं

॥ टीका ॥

ष्टितचंद्रमासो भवति द्वाभ्यांचताभ्यामृतुर्भवति तत एकोनषष्टिरहोरात्राख्तसौभवति यच्चेहद्विषष्ठि भागद्वयमधिकं तन्नविवक्षितं । संभवस्यैकोनषष्ठिः पूर्व लक्षाणि गृहस्थपर्याय इहोक्त: आवश्यकेतु चतु:पूर्वांगाऽधिकासोक्तेति ॥ ५८ ॥ अथषष्ठिस्थानकं तत्र एगमेगेत्यादि चतुरशीत्यधिकशतसंख्या

॥ मूल ॥

राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० संभवेणं अरहा एगूणसठिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे जाव पव्वइए मल्लिस्सणं अरहओ एगूणसठिं ओहिनाणिसया होत्था ॥ ५९ ॥ एगमेगेणं मंडले सूरिए सठिए सठिए मुहुत्तेहिं संघाइए लवणस्सणं समुद्दस्स सठिनागसाहस्सीओ अग्गोदयं धारंति विम

॥ भाषा ॥

मासे ऋतु होय । अने एकेक मासे तीसतीस दिहाडा जोडूये तो बिहुं मासना ६० दिन जोडूये तो ५८ किम कह्या । कृष्ण पक्षनो पखवाडा थी मांडी पूनिमे मास पूरो थाय एके मासे दिन २९ अने एक दिनना बासठिया बत्तीस भाग होय एह २९ दिन बेगुणा करीये तिवारे ६४ भागनो १ दिन बे भाग थाय ते पाछला ५८ दिन मांहि घालिये एतले ५९ दिननो ऋतु होय उपरि २ भाग उगरथा ते अल्पमाटे न लेखव्या जाणिवा । संभवनाथ अरिहंत बीजा उगुणसठो पूर्व लाख लगे गृहस्थाश्रम मांहि बसीने मुंड द्रव्य भावभेदे होय आगाराओ अणगारियं गृहस्थाश्रम थकी अणगारितायती पवूपाम्या । आ वेश्यके चार पूर्वांग लगे गृहस्थाश्रम कह्यो छे । मल्लिनाथ अरिहंतने उगणसठिसे अवधि ज्ञानी थया ॥ इति ५९ समवाय थयो ॥ ५९ ॥ हिवे ६० मोसमवाय लिखेछे । सूर्यना १८० मांडला छे एकेक मांडले सूर्य साठ साठ मुहूर्त्ते बेअहोरात्रियेंजगे । लवण समुद्रनी अग्रोदक शिखानो पाणी साठ हजार नागदेवता धरे छे एतले सोले हजार योजन ऊंची पाणीनो वेल तेऊपर २ कोस पाणीवटे वधे ते अग्रोदक सीमा कहिए । विमलनाथ अरिहंत

॥ टीका ॥

नां सूर्यमंडलानामेकैकं मंडलं तथाविधचारभूमिः सूर्यः षष्ट्याषष्ट्यामुहूर्त्तैर्द्वाभ्यां द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामित्यर्थः संघातयति निष्पादयति अयमत्रभावार्थः एक
स्मिनद्वितयस्थाने उदितः सूर्यः तत्स्थाने पुनर्द्वाभ्यामहोरात्राभ्यामुदेतीति अर्गोदयंति षोडशसहस्रोच्छ्रिताया वेलायायदुपरिगव्यूतद्वयमानं हृद्धिहानिस्वभा
वंतद्ग्रोदकं वलिशति मोदोच्यस्य असुरकुमार निकायराजस्य भवनं बंभरसति ब्रह्मलोकाभिधान पंचमदेवलोवेंद्रस्य सहिस्ति सौधर्मेद्दाचिंद्रदीशानेदाप्टा
वंशतिविमान लक्षाणोतिकृत्वा षष्ठिस्तानिभवन्तीति ॥ ६० ॥ अथैकषष्ठिस्थानकं तत्रपंचेत्यादि पंचभिः सम्वत्सरैर्निहक्तमिति पंचसांवत्सरिकं तस्यणमि
त्यलङ्कारे युगस्य कालमानविशेषस्य ऋतुमासेन चंद्रादिमासेन मीयमानस्य एकषष्ठिः ऋतुमासाः प्रज्ञप्ताः इहचायं भावार्थः युगंहि पंचसंवत्सरानिष्पादयन्ति

॥ मूल ॥

लेणं अरहा सट्ठिंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था बलिस्सणं वइरोयणिंदस्स सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ प०
बंभस्स णं देविंदस्स देवरन्नो सट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ प० सोहम्मीसाणेसु दोसुकप्पेसु सट्ठिं विमाणा
वाससयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ पंचसंवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स इग

॥ भाषा ॥

साठ धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया। वलेंद्र वैरोचनेंद्र उत्तर असुर कुमारना राजाने साठ हजार सामानिक देवता आप समान देवता कह्या। ब्रह्मनामा ५
मां देवेंद्र देवराजा ने साठहजार सामानिक देवता कह्या। सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशानें २८ लाख विमान बेहुं देवलोकनां मिली साठलाख
विमानावास कह्या ॥ इति ६० समवाय संपूर्ण ॥ ६० ॥ हिवे ६१ मो लिखेछे। चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एम पांच
वर्षनो १ युगथाय ते ऋतुमासे करी मीयमानछे चंद्रमासनोमान २९ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिना ३२ भाग ६२ ठिया ते कृष्णपक्षनी पडिवा थी पोषें

॥ टीका ॥

तद्यथा चंद्रश्चंद्रोऽभिवर्द्धितश्चंद्रोभिवर्द्धितश्चेति तत्रएकोनत्रिंशदहोरात्राणि द्वात्रिंशच्चद्विषष्ठिभागा अहोरात्रस्येत्येवं प्रमाणेन २९ । ३२ । ६२ । कृष्णप्रतिपदामारभ्य पौर्णमासीनिष्ठितेन चन्द्रमासेन द्वादशमासपरिमाण श्चन्द्रसम्वत्सर स्तस्यच प्रमाणमिदम् त्रीणिशतान्यह्नांचतुः पञ्चाशदुत्तराणि द्वादशच द्विषष्ठिभागा दिवसस्य ३५४ । १२ । ६२ तथा एकत्रिंशदह्नां एकविंशत्युत्तरंचशतं चतुर्विंशत्युत्तरशतभागानां दिवसस्येत्येवं प्रमाणोऽभिवर्द्धितमास इति एतेन ३१ १२१ । १२४ चमासेन द्वादशमासप्रमाणोऽभिवर्द्धित संवत्सरोभवति सचप्रमाणेन त्रीणिशतान्यह्नांत्र्यशीत्यधिकानि चतुश्चत्वारिंशच्चद्वि षष्ठिभागा दिवसस्य ३८३ । ४४ ६२ तदेवंत्रयाणांचन्द्रसंवत्सराणां द्वयोश्चाभिवर्द्धितसंवत्सरयो रेकीकरणेजातानि दिनानां त्रिंशदुत्तराणि अष्टादशशतानि अहोरात्राणां १८३० ऋतुमासस्य त्रिंशताहोरात्रैर्भवतीति त्रिंशताभागहारेलब्धा एकषष्ठिःऋतुमासाइति । मंदरस्सेत्यादि इह मेरुर्नवनवतियोजनसहस्रप्रमाणो द्विधाविभक्तस्तत्रप्रथमोभाग

॥ मूल ॥

सठिं उऊमासा प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पढमेकंडे एगसठिजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० चंदमंडले

॥ भाषा ॥

मासीये पूरो थाय एहमास मान १२ गुणाकीजे तिवारे वर्षनोमान ३५४ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना १२ भाग ६२ ठिया थाय तेहने त्रिगुणो कीजे तिवारे१०६२ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिनां ६२ ठिया ३६ भाग थाय एम अभिवर्द्धित मासनो मान ३१ अहोरात्रि अने १ अहोरात्रिनां १२४ भागहाद्दय १२१ भाग प्रमाणें थाय तेहने १२ गुणो कीजे तिवारे अभिवर्द्धितवर्षनोमान ३८३ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना ४४ भाग ६२ ठिया तेहने बेगुणांकीजे ७६७ सातसे सडसठ अहोरात्रि अनें १ अहोरात्रिना २६ भाग ६२ ठिया थायतेहने पहिले ३ चंद्र वर्षका मानमांहि घातिये तिवारे १८३० अहोरात्रि थाय ऋतु मासनो मान ३० अहोरात्रि तेमाटे १८३० नें ३० भागें हरिये तो १ युगनेविषें ६१ ऋतुमास थांय । मेरुपर्बतनो पहिलोकांड ६१ हजार योजन ऊंचपा

॥ टीका ॥

एकषष्ठिःसहस्राण्युक्तः द्वितीयस्तु अष्टत्रिंशत्स्थानके ऽष्टत्रिंशदितिप्रोक्तः वेत्रसमासेतु कन्देनसहलक्षप्रमाणस्त्रिधा विभक्त स्तत्र प्रथमकांडं सहस्रं द्वितीयंत्रिष ष्ठिः स्तृतीयंषट्त्रिंशदिति । चन्द्रमण्डले चन्द्रविमानंणमित्यलंकृतो एगसट्ठित्ति योजनस्यैकषष्ठिभागेन षट्पंचाशद्भागप्रमाणैर्विभाजितंविभागैर्व्यवस्थापिते समांशंसमविभागं प्रज्ञप्तम् विषमांशं योजनस्यैकषष्ठि भागानां षट्पंचाशद्भागप्रमाणत्वा त्तस्यचभागभागस्या विद्यमानत्वादिति । एवंसूर्यस्यापिमण्डलंवाच्यम् अष्टचत्वारिंशदेकषष्ठिभागमात्रम् इतिवचापरमंशांतरं तस्याप्यस्तीति समांशतेति ॥ ६१ ॥ अथद्विषष्ठिस्थानकं पंचेत्यादि तत्रयुगेत्रयश्चंद्रसंवत्स राभवंति तेषुषट्त्रिंशत् पौर्णमास्योभवन्ति द्वौचाभिवर्द्धित संवत्सरौभवत स्तत्रचाभिव र्द्धितसंवत्सर स्त्रयोदशभिश्चंद्रमासैर्भवतीति तयोः षड्विंशतिः पौर्ण

॥ मूल ॥

एगसट्ठिं विभागविभाइए समंसे प० एवंसूरस्सवि ॥ ६१ ॥ पंचसंवच्छरिए णं जुगे बावट्ठिं पुन्निमाउ बावट्ठिं अमावसाउ प० वासुपुज्जस्स णं अरहउ बासट्ठिं गणा बासट्ठिं गणहरा होत्था सुक्कपक्ख

॥ भषा ॥

कह्यो । मेरु पर्वत ९९ हजार योजन ऊंचोछे तेहना त्रिभाग कीजे तेहमा पहिलो भाग ६१ हजार योजन नो बीजो ३८ हजार योजननोकह्योक्षेत्रसमासमेतो कंदसहित मेरू येकलाख योजन प्रमाण छे तेहना तीनभागकीधाछे पहिलो १ हजार योजननो बीजो ६३ हजार योजननो त्रीजो ३६ हजार योजननो चंद्रमानो मंडल चंद्र विमान १ योजनना ६१ हाइया ५६ छप्पनभाग प्रमाणे व्यवस्थापितछे तेमाटे समांस समभाग कह्योछे । चंद्रमाना मंडलमांहिथी ५ विषमांस नीकल्या तोरह्या ५६ समांस एणेपरे सूर्य मंडल मांथो १३ विषमांस नीकल्या रह्या ४८ समांस ॥ ६१ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६१ ॥ हिवे ६२ मो लिखेछे । पांच संवत्सरनो युगहोय तेमांहि ६२ पूनिम अनें ६२ अमावास्या कही १ युगमाहि ३ चंद्रवर्ष होय तेमांहि मास ३६ वारेत्रिक ३६ पूर्णिमाअने ३६

॥ टीका ।

मास्यइत्येवं द्विषष्ठिस्ताभवंति इत्येवममावास्याअपीति वासुपूज्यस्येह द्विषष्ठिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु षट्षष्ठिरुक्तेति मतांतरमिदमपीति । सुक्कपक्ख
रसेयादि शुक्लपक्षस्य संबन्धीचन्द्रो द्विषष्ठिभागान् प्रतिदिनंवर्द्धते एवंकृष्णपक्षेचंद्रः परिहीयते अयंभावार्थः सूर्यप्रज्ञप्त्यामप्युक्तस्तथाहि किण्हंराहुविमाणं निच्चं
चंदेण होइअविरहियं चउरंगुलमप्पत्तं हेट्ठाचंदस्सतं चरइ ॥ १ ॥ बावट्ठिं बावट्ठिं दिवसे२ उसुक्कपक्खस्स जंपरिवड्ढइचंदो खवेइ तंचेवकालेण ॥ २ ॥ पन्नरसयभागेणय
चंदंपन्नरसमेवतंचरइ पन्नरसयभागेणय पुणोवितंचेववक्कमइ ॥३॥ एवंवड्ढइचंदो परिहाणीएवहोइचंदस्स कालोवाजोण्हावाएयणुभावेणचंदस्स ॥४॥ तथातत्रैवो
क्तं सोलसभागा काऊण उडुवइं हायएथपन्नरस तत्तियमेत्तेभागे पुणोविपविक्कण जोण्हत्ति ॥१॥ तदेवं भणितद्वयानुसारेणानुमीयते यथाचंद्रमण्डलस्य एकत्रिं
शदुत्तरनवशतभागविकल्पितस्य एकांशोवस्थितएवास्तेशेषाः प्रतिदिवसं द्वाषष्ठिकल्पा वर्द्धन्ते ततःपंचदशे चंद्रदिनेसर्वेसमुदिताभवन्ति पुनस्तथैवहीयंते पंचद
शेदिने एकावशेषा भवन्तीति वचनद्वयसामर्थ्यंलभ्यं व्याख्यानमेतत् जीवाभिगमेतु बावट्ठिं २ गाहा तथा पन्नरसति भागेण गाथा एतद्गाथे एवंव्याख्याते

॥ मूल ॥

स्सणं चंदे बासठिं बासठिं भागे दिवसे दिवसे परिवड्ढइ तंचेवबहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ सोह

॥ भाषा

अमावास्या होय युगमांहि अभिवर्द्धितवर्ष २ तेहनां मास २६ होय तेमाटेपूनिम २६ अमावास्या२६ सर्व पांचवर्षना मिली ६२ पूर्णिमा अनें ६२ अमावास्या
होय । वासुपूज्य अरिहंतने वासठ गच्छ अने ६२ गणधर हुया सुक्लपक्षनो चंद्रमा प्रतिदिवसे ६२ वासठ भागें वधे एतले चंद्रमंडलनां ६२ भाग कल्पनाय
कोजेपक्षे १५ तिथि भागेहरिये तिवारे झाझेरा च्यार च्यार भाग आवे तो पनरेदिन लगि राहुविमान झाझेरा च्यार २ भाग चंद्रमाने मूकें चंद्रज्योत्स्नावधे
पनरेदिने ६२ भाग थाय तिमज कृष्णपक्षे राहुविमाने झाझेराच्यार २ भाग दिवसे चंद्रविमान आक्रमे पनरे दिवसेमिली झाझेरा च्यार २ भाग करतां

॥ टीका ॥

यावद्विं २ इत्यत्र द्विषष्ठि २ भागानां दिवसे २ च प्रत्यह मित्यर्थः शुक्लपक्षस्य सम्बन्धिनि यत् परिवर्द्धते चन्द्र श्चतुरंशाधिकान् द्विषष्टिभागान् चपयन्ति तदे
व कालेन तदेवाह पन्नरसइत्यादिना चंद्रविमानं द्विषष्टिभागान् क्रियते ततः पञ्चदशभिर्भागो ऽपक्रियते तत्र चत्वारो भागाः समधिका द्विषष्ठिभागानां
पंचदशभागेन लभ्यन्ते यत उच्यते पंचदशभागेन चोक्तलचणेन चंद्रमसंक्रम्य पंचदशैवदिवसां स्तद्राहुविमान श्चरति एवमुपक्रामतीत्यपि भावनीयमिति
यत्रा स्माभि र्यथादृष्टे लिखिते उपनीते बहुश्रुते निर्णयः कार्यइति सोहम्मीत्यादि तत्र सौधर्मेशानयो स्त्रयोदशविमानप्रस्तटा भवन्ति सनत्कुमारमाहेंद्रयो
दिश ब्रह्मलोके षट् लांतके पंच शुक्रे चत्वार एवं सहस्रारे आनत प्राणतयो श्चत्वार एव मारणाच्युतयोः ग्रैवेयके च्चधस्तनमध्यमोपरिमेषु त्रयः २ अनुत्तरे
ष्वेकः सर्व्व द्विसष्ठि रते भवन्ति एतेषां च मध्यभागे प्रत्येक मुडुविमानादिकाः सर्वार्थसिद्धविमानांता वृत्तविमानरूपा द्विषष्ठिरेव विमानेंद्रका भवन्ति
तत्पार्श्वतश्च पूर्वादिषुदिक्षु त्र्यस्रचतुरस्रवृत्तविमानक्रमेण विमानानामावलिका भवन्ति तदेवं सौधर्मेशानयोः कल्पयोः प्रथमे प्रस्तटे सर्वाधस्तन इत्यर्थः पढ
मावलियाएति प्रथमाउत्तरोत्तरावलिकापेचया आद्या यतम् आवलिकायस्मिन् स प्रथमावलिकाक स्तत्र अथवा प्रथमान्मूलभूताद्विमानेंद्रकादारभ्य या चा

॥ मूल

सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमेपत्थडे पढमावलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठिं विमाणा प० सव्वे वेमाणियाणं

॥ भाषा

सौधर्म्म ईशाने देवलोके १३ प्रतरछे तेमांहि पहिले प्रतरे पहिली आवलिकाये श्रेणीये ४ श्रेणीमां
६२ भाग होय वासठिया चार चार भाग दिन २ तेजघटे सौधर्म्म ईशाने देवलोके १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
उचे तिहां पहिली श्रेणिये पूर्वादिक येकेके दिशि आवलिकाये ६२ वासठ विमान घणां मोटा कह्या। १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान सर्वमिली
वतानां ६२ विमान प्रस्तर प्रस्तराय परिमाणे कह्या सौधर्म ईशाननां १३ सनत्कुमार मांहिंद्र १२ ब्रह्मे ६ लांतके ५ शुक्रे ४ सहस्रारे ४ आनत प्राणते

॥ टीका

वलिका विमानानुपूर्वी तथा अथवोत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यांदिशि या प्रथमाआद्यावलिका तस्यां पढमावलियत्ति पाठांतरे तु उत्तरोत्तरावलिकापेक्षया एकैकस्यां दिशि प्रथमावलिका सा द्विषष्ठिविमानप्रमाणा प्रमाणेन प्रज्ञप्तेति एगमेगाएत्ति उडुविमानाभिधानदेवेंद्रकापेक्षया एकैकस्यां पूर्वादिकायां दिशि द्विषष्ठिर्विमानानि प्रज्ञप्तानि द्वितीयादिषु पुनः प्रस्तटेषु एकैकहान्या विमानानि भवन्ति यावद्विषष्ठितमेऽनुत्तरे प्रस्तटे सर्वार्थसिद्धदेवेंद्रकपार्श्वे तदेकैकमेव भवतीति तथा सव्वेत्ति सर्ववैमानिकानां देवविशेषाणां सव्वबिंमी द्विषष्ठिर्विमानप्रतराः प्रस्तटाग्रेण प्रस्तटपरिमाणेन प्रज्ञप्ता इति ॥ ६२

अथत्रिषष्ठिस्थानकं तत्र संपत्तजोव्वणत्ति मातापितृपरिपालनापेक्षा इत्यर्थः निसहेणमित्यादि किलसूर्यमण्डलानां चतुरशीत्यधिक शतसंख्यानां मध्ये

॥ मूल ॥

बासठिविमाणपत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसन्नेणं अरहाकोसलिए तेसठिं पुव्वसयसहस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता आगाराउ अणगारियं पव्वइए हरिवासरम्मयवासेसु णं मणुस्सा

॥ भाषा ।

मिलो ४ आरण अच्युतनां४ सर्व १२ देवलोकनां ५२ प्रतर नव ग्रैवेयकें ९ पांच अनुत्तरनो १ एवं सर्वमिलो ऊर्द्ध लोकें ६२ प्रतर थया प्रतर २ दीठविचें एकैक बिनानखस्वविमानेंद्रनो आणिवो। इति ६२ सम्पूर्ण ॥ ६२ ॥ हिवे ६३ लिखेछे ॥ ऋषभनाथ अरिहंत कोशल देशना जपना तेह ६३ लाख पूर्वलगे महाराज्य वासमांहि वसीने मुंडपणो पामो गृहस्थाश्रमथकी अनगारतापणो यतीपणो पाम्या दीक्षा ग्रहण करी एतले २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व महाराजपणे १ लाख पूर्व चारित्रपालन कियो एवं सर्व ८४ लाख पूर्वनो आउखो थयो हरिवर्षतोजोक्षेत्र रम्यक्पांचमो क्षेत्र तेह युगल क्षेत्रने विषे माणस ६३ रात्रि दिवसे संप्राप्तयौवन थाय एतले ६३ अहोरात्रिलगे माइतपालना करे। देवकुरु उत्तरकुरु ने विषे सदैव पहिलो आरो होय। हरिवर्ष रम्यक

॥ टीका ॥

जम्बूद्वीपस्य पर्यन्तिमे अशीत्युत्तरे योजनशते पञ्चषष्ठिर्भवन्ति तत्र च निषधवर्षधर पर्वतस्योपरि नीलवद्वर्षधरपर्वतस्योपरि च त्रिषष्ठिः सूर्योदयस्थानानि सूर्यमण्डलानी त्यर्थः तदन्ये तु द्वे जगत्याउपरि शेषाणि तु लवणे त्रिषुत्रिंशदधिकेषु योजनशतेषु भवन्तीति भावार्थः ॥ ६३ ॥ अथ चतुःषष्ठि स्थानकं अट्ठेत्यादि अष्टावष्टमानि दिनानि यस्यांसाष्टाष्टमिका यस्यांहि अष्टौदिनाष्टकानि भवन्ति तस्यामष्टावष्टमानि भवंत्येवेति भिक्षुप्रतिमा ऽभिग्रहवि

॥ मूल ॥

तेवठीए राइंदिएहिं संपत्तजोव्वणा भवंति निसढेणं पव्वएतेवठिं सूरोदया प० एवंनीलवंतेवि ॥ ६३ ॥

अठ्ठमियाणं भिक्खुपडिमा चउसठीए राइंदिएहिं दोहियअठासीएहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जावभवइ-

॥ भाषा

क्षेत्रे बीजोआरोहोय । हिमवंत ऐरण्यवंतक्षेत्रे तीजोहोय । महाविदेहे चोथोआरोहोय । देवकुरु उत्तरकुरु ना युगलियां ने ४९ दिननो अपत्यपालनाछे । आरादीठ १५ दिननो वृद्धि अपत्यपालनामें छे । एम करतां ४९ मांहि १५ दिन वधारिये तिवारे हरिवर्ष रम्यक क्षेत्रे ६४ दिन थाय। इहां सूत्रमांहि ६३ दिन थांख्यां तेकिममिले जनमदिन नगिणिये एह उत्तर जाणिवो । सूर्यना मंडल १८४ सगलाईछे तेमांहि निषधपर्वतने माथें १८० योजनमांहो तेवठो तेवठो सूर्योदयस्थानरूपमांडला बेबे मांडला जगती उपरि शेषथाकता ३३० योजन लवण समुद्रमांहि ११९ सर्वमिलो १८४ एवंनीलवंत पर्वत नेपणि एम जाणिवो ऐरवत क्षेत्र संबंधी सूर्यनांजगवानां मांडला ६५ नीलवंतपर्वत जगती मिलीने बीजा ११९ पश्चिम समुद्रमांहि जाणिवा ॥ इति ६३ मोसमवाय पूर्णथयो ॥ ६३ ॥ हिवे ६४ समवाय लिखेछे। आठ दिहाडा आठगुणांछे जेहनेविषे तेभिक्षु प्रतिमा अभिग्रह विशेष आठुंआठी चौसठदिनहोय जिहां तेअट्ठमिया भिक्षु प्रतिमा चौसठि रात्रिदिवसे समापिये । पहिलेदिने एक भिक्षा बीजेदिने २ त्रीजे दिने ३ एम आठदिन एकेक भिक्षा वधारियेतो

॥ टीका ॥

शेषः अष्टावष्टकानियतो सौ भवत्यत्र वतुः षष्ट्या रात्रिंदिवैः सापालिता भवति तथा प्रथमेष्टके प्रतिदिनमेकैका भिक्षा एवं द्वितीये द्वे द्वे यावदष्टमे अष्टा वष्टानिति संकलनया दीयते भिक्षाणामष्टाशीत्यधिके भवतो ऽतउक्तं हाभ्यं चेत्यादि यावत्करणात् अहाकप्पं अहामग्गं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्मं आणाए आराहियावि भवतीति इत्यत्र मन्येति नन्दि... चतुष्टस्मि नन्दीश्वराख्ये द्वीपे पूर्वादिषु दिक्षु चत्वारोंजनकपर्वत भवन्ति तेषां चः प्रत्येकं चतसृषुदिक्षु चतस्रः पुष्करिण्यो भवन्ति ताभांच मध्यभागेषु प्रत्येकं दधिमुखपर्वता भवन्तितेच षोडशपल्यंक संस्थानसंस्थिताः समानाः सर्वत्रसमाविष्क म्भेन मूलादिषु दशसहस्र विष्कम्भत्वा त्तेषां क्वचित्तु विक्खंभुस्सेहेणति पाठ स्तत्रतृतीयैकवचनलोपदर्शना द्विष्कंभेनेति व्याख्येयं तथा उत्सधेनो च्चत्वेन चतु

॥ मूल ॥

चउसट्ठिं असुरकुमारावाससयसहस्सा प० चमरस्सणं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं दधिमुहापव्वया पल्लासंठाणसंठिया सव्वत्थसमा विक्खंभुस्सेहेणं चउसट्ठिंचउसट्ठिं जोयणसहस्साइं प०

॥ भाषा ॥

आठेदिने ३२ भिक्षाथाय एम करतायका आठ अष्टकलगी ३६ भिक्षालीजे एतले सर्वेमिली २८८ भिक्षाये यथामार्ग आराध्योंहोय पालीहोयने असुरनिकाय नां २ इन्द्र चमरेंद्र बलेंद्र २ दक्षिण दिशे चमरेंद्र तेहना ३४ लाख भुवन उत्तरें वली तेहने ३० लाख भुवन बिहुं भवन मिली असुर कुमारेंद्रना ६४ लाख आवास भवन कह्या। चमरंद्रअसुर नागराजाने ६४ सामानिक आप समान देवता कह्या। जंबूद्वीपथको आठमूं नंदीश्वरद्वीप तेहनेविषे चिहुंदिशे ४ अंज नगिरिछे एकेक अंजन गिरिने चौफेर चार २ पुष्करिणी वावी छे ते वावीने मध्यभागे प्रत्येकें दधिमुख पर्वतछे एतले बिहुं। पालागुर्जरदेशे धान्य भाजन तेहने संठाणे आकारे संस्थित छे। सघले समान मूले विष्कंभ पणे पिहुलपणे दससहस्र योजन परिमाण जाणवा। उत्सेधे ऊंचपणे चउसट्ठि २ हजार यो

॥ टीका ॥

ष्टिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मे द्वात्रिंशदीशाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारि विमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसट्ठिं लट्ठीएत्ति चतुःषष्टिलष्ठ

ष्टिरिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मे द्वात्रिंशदीशाने ऽष्टाविंशतिः ब्रह्मलोके च चत्वारि विमानलक्षाणि सर्वाणि चतुःषष्ठिरिति चउसट्ठिं लट्ठीएत्ति चतुःषष्टिलष्ठ

नांशराणांयस्मिन्नसौचतुः षष्ठिलष्ठिकः मुत्तामणिमयेत्ति मुक्ताश्चमुक्ताफलानि मणयश्चंद्रकांतादिरत्नविशेषाः मुक्तारूपावामणयोरत्नानिमुक्तामणयस्तद्विकारो

मुक्तामणिमयः ॥ ६४ ॥ अथ पञ्चषष्ठिस्थानकं तत्रमोरियपुत्तेणंति मौर्यपुत्रो भगवतोमहावीरस्य सप्तमोगणधरः तस्यपञ्चषष्ठिवर्षाणि गृहस्थ

पर्याय आवश्यकेप्येवमेवोक्तो नवरमेतस्यैव यो बृहत्तरोभ्राता मण्डितपुत्राभिधानः षष्ठोगणधरः तद्दीक्षा।दिन एवप्रव्रजित स्तस्यावश्यके त्रिपंचाशद्वर्षाणि गृह

स्थपर्यायउक्तो मत्वबोधविषयमुपगच्छति यतोबृहत्तरस्य पञ्चषष्ठिर्युज्यते लघुतरस्यत्रिपंचाशदिति सोहम्मेत्यादि सौधर्मावतंसकं विमान सौधर्मदेवलोकस्यम

॥ मूल ॥

सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसुकप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावाससयसहस्सा प० सव्वस्सवियणं रन्नोचाउरंत

चक्कवट्टिस्स चउसट्ठिलट्ठीए महग्घेमुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे पणसट्ठिं सूरमंड

ला प० थेरेणंमोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराओअणगारियं पव्वइए

॥ भाषा ।

सौधर्मे ईशाने ब्रह्मलोकें एहतीन देवलोके चौसठिलाख एतला विमानावास कह्या

सब प्रमाण कह्या । सौधर्मे ३२ लाख विमान ईशाने २८ लाख विमान ब्रह्मलोके ४ लाख विमान एहतीन देवलोके चौसठिलाख एतला विमानावास कह्या

सगलाने राजाने चातुरंत चक्रवर्तिने चिहुंदिशिना अंतना धणीने चउसट्ठिलट्टि कहतां सरी छे तिहां ते चतुष्षष्टि कहिये एतले ६४ सरी महग्घो महार्घ्य

बहुमूल्य मोती मुक्ताफल मणि चंद्रकांतादिकरत्न विशेष तेहमय हारकह्या । ॥ इति ६४ मोसमवाय संपूर्ण ॥ ६४ ॥ हिवे पैंसठमो समवाय

लिखेछे । जंबूद्वीपने विषे १८० सूर्यमंडलछे निषधमाथे ६३ जगती उपरि २ सर्वमिली ६५ कह्या । स्थविर वयश्रुत पर्यायें वडा मौर्यपुत्र सातमा गणधर

॥ टीका ॥

ध्यभागवर्त्तिशक्रनिवासभूतं एगमेगाएत्ति एकैकस्यांदिशिप्राकाराभ्यर्णवर्त्तीनि भौमानि नगराकाराणिविशिष्टस्थानानीत्येके ॥ ६५ ॥ अथषट्षष्ठिस्था
नकं तत्रदाहिणेत्यादि मनुष्यक्षेत्रस्यार्द्ध मर्द्ध मनुष्यक्षेत्रं दक्षिणंच तत्रेति दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रं तत्रभवादक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्राणामिन्द्रलंकारे षट्षष्टिश्चंद्राः प्रभासितव
न्तः प्रभासनीयं अथवा जिनप्रत्ययाद्दक्षिणानियानि मनुष्यक्षेत्राणामर्द्धानि तानि तथा शिष्टाः जितवन्तः पाठांतरे दक्षिणार्द्धमनुष्यक्षेत्रप्रकाशनीयं प्रभासित
वंत स्तेषएवं जंबूद्वीपेचंद्रौचत्वारोलवणसमुद्रे द्वादशधातकीखंडे द्विचत्वारिंशत्कालोदधिसमुद्रे द्विसप्ततिश्चपुष्करार्द्धे सर्वेचैतेद्वात्रिंशदधिकं शतं एतदर्द्धंचषट्ष

॥ मूल ॥

सोहम्मवडिंसयस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए पणसट्ठिं पणसट्ठिं भोमा प० ॥ ६५ ॥
दाहिणड्ढ माणुस्सखेत्ताणं छावट्ठिं चंदापभासिंसुवा ३ छावट्ठिं सूरिया तविंसुवा ३ उत्तरड्ढमाणुस्सखेत्ताणं

॥ भाषा ॥

६५ वर्ष लगे गृहस्थाश्रम मांहि वसीने मुंड द्रव्यभावभेदे थईने अगार गृहस्थाश्रमथकी अणगार पणूं साधूपणूं पाम्या एतले ६५ वर्षगृहवास १४ वर्ष छद्मस्थप
णे १६ केवलपर्याय सर्वायुवर्ष ८५ जाणिवा। सौधर्म देवलोके मध्यवर्ति सौधर्मावतंसकविमान शक्रेंद्रनोनिवासभूत तेह महाविमानने एकेकीये बाहाये एके
की दिशेगढने समीपवर्त्ती ६५ भोमा नगराकारे विशिष्टस्थानक कह्या। इति पेंसठमो समवाय संपूर्ण ॥ ६५ ॥ हिवे ६६ मो लिखे छे। मनु
ष्यक्षेत्र साढीअढी द्वीप २ समुद्र मिलीने ते मांहि दक्षिणार्द्ध मनुष्यक्षेत्र मांहि ६६ चंद्रमा प्रभासता हुया उद्योत करता हुया प्रभासेछे प्रभासिस्ये। एतले
जंबूद्वीप मांहि २ सूर्य २ चंद्रमा लवणसमुद्र मांहि ४ सूर्य ४ चंद्रमा धातकीखंड मांहि १२ सूर्य १२ चंद्रमा कालोदधि मांहि ४२ सूर्य ४२ चंद्रमा पुष्करार्द्ध
मांही ७२ सूर्य ७२ चंद्रमा सर्वमिली १३२ सूर्य १३२ चंद्रमाथया। सुदर्शण मेरुथकी चारपंक्ति चिहुंदिसे मांडिये मेरुथकी दक्षिणदिशे मानुसोत्तर पर्वत

॥ टीका ॥

न्निर्दक्षिणपंक्तौस्थिता षट्पष्टिश्चोत्तरपंक्तौ यदाचोत्तरपंक्तिः पूर्वस्यांगच्छति तदादक्षिणापश्चिमायामित्येवं सूर्यसूत्रमप्यवसेयमिति छावट्ठिंगणत्ति आवश्यकोक्तु

षट्सप्ततिरभिहितेतौदम्मतांतरमिति छावट्ठिंसागरोवमाइंठिइत्ति यच्चातिरिक्तं तदिहनविवक्षितं यतएवमिदमन्यत्रोच्यते दोवारेविजयाइसु गयस्सतिन्निच्चुए

॥ मूल ॥

छावट्ठिंचंदापन्नासिंसुवा ३ छावट्ठिंसूरियातविंसुवा ३ सेज्जंसस्सणं अरहउ छावट्ठिंगणा छावट्ठिंगणहरा

॥ भाषा ॥

लगे रात्रिये ६६ चंद्रमा प्रकाश करे एतले मनुष्यक्षेत्र मांहि १३२ चंद्रमाछे। तेहनो अर्द्ध ६६ होय ते ६६ चंद्रमा जंबूद्वीप संबंधी हरिवर्ष १ हिमवंत २ भरत

क्षेत्र ३ एवं दक्षिण धातकी खंडे ३ क्षेत्र एमज दक्षिण पुष्करार्द्धे एहीज त्रिहूंक्षेत्रे रात्रिकरे मेरुथकी उत्तर दिशें जंबूद्वीप संबंधी रम्यक १ ऐरण्यवत २ ऐर

वत ३ धातकी खंडना एहीज ३ पुष्करार्द्धना एहीज ३ क्षेत्रें ६६ चंद्रमा प्रकाश करे तिवारे जंबूद्वीप संबंधी पूर्वविदेह १ धातकीखंड पूर्वविदेह २ पुष्करार्द्ध

पूर्वविदेह ३ तिहां ६६ सूर्यतपे पश्चिम जंबूद्वीप विदेह १ धातकीखंड पश्चिम विदेह २ पुष्करार्द्ध पश्चिम विदेहें ६६ सूर्य तपे दिवस करे। अने जिवारे मेरु

थकी दक्षिण पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे तिवारे मेरुथकीउत्तर पुष्करार्द्धलगे ६६ सूर्य दिवसकरे। जिवारे मेरुथकी पूर्वपुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रि

करे तिवारे पश्चिम पुष्करार्द्ध लगे ६६ चंद्रमा रात्रिकरे एम १३२ सूर्य १३२ चंद्रमा कह्या। श्रेयांस ग्यारमा अरिहंतने ६६ गणधरहुआ। आवश्यके ७६ गण

धर कह्याछे तेमतांतरछे। आभिनिबोधिकज्ञान एतले मतिज्ञाननी ६६ सागरोपम झाझेरालगे स्थितिकही। यदाह दोवारे विजयाइसु गयसातिन्निच्चुएअ

हवताइं अइरेगनरभवीयं नाणाजीवाणसिद्धंति। विजयविमाने मतिज्ञानी दोवेलाजाय तिहांतितीस सागर २ वेलाउत्कृष्टो आउखो भोगेतो तेत्रीसदूणा

॥ टीका ॥

षट्ट्वताइं अच्युतेगंनरभवोयंनाणाजोवाणसव्वडंति ॥ १ ॥ ६६ ॥ अथसप्तषष्ठिस्थानके किंचिद्विव्रियते तत्रपंचसंवच्छरेत्यादि नक्षत्रमासोये नकालेन चंद्रोनक्षत्रमण्डलंभुंक्ते सचसप्तविंशतिरहोरात्राणि एकविंशति श्चाहोरात्रस्यसप्तषष्ठिभागाः २७ । २१ । ६७ । युगप्रमाणंचाष्टादशशतानि त्रिंशदधि कानीति प्राक्दर्शितम् १८३० तदेवंनक्षत्रमासस्योक्त प्रमाणराशिनादिनसप्तषष्ठिभागतया व्यवस्थापितेनत्रिंशदुत्तराष्टादशशतप्रमाणेनयुगदिनप्रमाणराशिः सप्तषष्ठिभागतयाव्यवस्थापित एकंलक्षंद्वाविंशतिः सहस्राणिषट्शतानिदशचेत्येवं रूपोविभज्यमानःसप्तषष्ठिनक्षत्रमासप्रमाणोभवतीति बाहाओत्ति लघुहिम

॥ मूल ॥

होत्था आभिणिबोहियनाणस्स णं उक्कोसेणं छावट्ठिं सागरोवमाइं ठिई प० ॥ ६६ ॥ पंचसं वच्छरियस्सणंजुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० हेमवयएरन्नवयाउणं बाहाउ

॥ भाषा ॥

६६ सागर आउखो । तथा अच्युतदेवलोगे त्रीण वेलाजाय तिहां उत्कृष्टो २२ सागरआउखो बाईतो ६६ सागरहोय । विचेंमनुष्यनोभव करेते भांभेरा मांहि गणिये इति ६६ समवाय संपूर्ण ॥ ६६ ॥ हिवे ६७ समवाय लिखेछे । पचसंवत्सरे युग १ पूरोथाय । तेयुग नक्षत्रमासे मावीये ६७ नक्षत्रमासहोय जेणे काले चंद्रमा नक्षत्र मंडलनेभोगवे तेनक्षत्रमासकहिये तेनक्षत्रमास २७ अहोरात्रि अने एकअहोरात्रिना सडसठिया २१ भा प्रमाणेहोय । पूर्वें ६१ मेंठाणें एक १८३० दिनकह्याछेते ६७ गुणांकरिये तिवारे एकलाख बाईस हजारछसे दसभागहोय तेसडसठभागें एकअहोरात्रि थाविये २७ अहोरात्रियें सडसठिया एक वीसभागे एकनक्षत्रमासहोय एहवे ६७ नक्षत्रमासे एकनक्षत्र युगपूराय । लघु हिमवंतपर्वतनी जीवाथको पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेहिमवंतक्षेत्रनी प्रदेशपं

वज्जोवाया: पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानत्तेत्रप्रदेशपंक्तौ हैमवतवर्षजोवांयावत्ते हैमवतबाहुउच्यते एवमैरण्यवतबाहुअपिभावनीयौ इहप्रमाणसंवाद: बाहासत्त
वज्जोवाया: पूर्वापरभागतो येप्रवर्द्धमानचेत्रप्रदेशपंक्तौ हैमवतवर्षजोवांयावत्ते हैमवतबाहुउच्यते एवमैरण्यवतबाहुअपिभावनीयौ
छिसहपणपन्नेतिनियकलाओत्ति कलाएकोनविंशतिभाग: एतच्चबाहुप्रमाणं हैमवतधनु:पृष्ठात् चत्तालाससत्तसया अडतीससहस्स दसकलायधणुत्ति ॥ एवं
लवणात् ३८०४० । १० । १८ हिमवद्धनु:पृष्ठे धणुविट्ठकलचउक्कं पणवीससहस्सदुसयतीसहियंत्ति एवंलच्चणं २५२३० । ४ । १८ । अपनीतेयच्छेषंतदर्द्धी
छतंसञ्जवतीति आयामेनदैर्घ्येणेति मदरस्सेत्यादि मेरो: पूर्वांताज्जंबूद्वीपोपरस्यांदिशि जगतीबाह्यांतपर्यवसान: पंचपंचाशद्योजनसहस्राणितावदस्ति तत:
परंद्वादशयोजनसहस्राण्यतिक्रम्य लवणसमुद्रमध्ये•गौतमद्वीपाभिधानोद्वीपोस्ति तमाश्रित्यसूत्रार्थ: सम्भवति पंचपंचाशतोद्वादशनांच सप्तषष्टित्वभावात्

सत्तठिं सत्तठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिन्नियन्नागाजोयणस्स आयामेणं प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पु
रत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए

तिके हिमवंतचेत्रनो जोवालगें तेहिमवंतचेत्रनो बाहुसरीखोबाहुछे। एम शिखरोनो जोवायकी पूर्वपश्चिमे प्रवर्द्धमान जेऐरण्यवंतचेत्रनो प्रदेशपंक्तिछे ऐर
ण्यवंतचेत्रनो जोवालगे ते ऐरण्यवंतचेत्रनो बाहुकहिये। जेहिमवंत ऐरण्यवंतचेत्रनोबाहु ६७ से ५५ योजन एकयोजनना उगणोसहाय्याविणिकला ६८५५।
२ १८ योजनना २ भाग लांबपणे कह्यो। मेरूपर्वतना पूर्वचरिमांतथकोमांडो लवणसमुद्रमांहो पश्चिमदेशे १२ सहस्र योजन जइये तिहां सुस्थितनामे ल
वणसमुद्राधिपति तेहना निवासभूत गौतम द्वीपछे तद्दोपनो पूर्व चरिमांत एह सतसठ योजन हजार लगे आवाधायें विचाले आंतरो कह्यो। मेरूप
र्वत १० हजार योजन विष्कंभलोजे अने तिहांथो ४५ हजारे पश्चिम जगतो तिहांथो १२ हजार गौतम द्वीप सबमिलो ६७ हजार योजन आंतरो थयो

॥ टीका ॥

यद्यपिसूत्रपुस्तकेषु गोतमशब्दोनदृश्यते तथाप्यसौदृश्य: जीवाभिगमादिषु लवणसमुद्रे गौतमचंद्ररविद्वीपात्विनाद्वीपांतरस्याश्रूयमाणत्वादिति सव्वेसिंपिणमि त्यादि सर्वेषामपि णमित्यलंकारे नक्षत्राणांसीमाविष्कंभ: पूर्वापरतश्चंद्रस्य नक्षत्रभुक्तिक्षेत्रविस्तार: नक्षत्रेणाहोरात्रभोग्यक्षेत्रस्य सप्तषष्ट्याभागैर्भाजितोविभक्त: समांस: समच्छेद: प्रथम: भागांतरेणतुभज्यमानस्य नक्षत्रसीमाविष्कंभस्य विषमच्छेदनाभवतिभागांतरेण नवक्तुंशक्यतेइत्यर्थ: तथाहि नक्षत्रेणाहोरात्रगम्य स्य क्षेत्रस्यसप्तषष्टिभागीकृतस्यक्षेत्रस्यैकविंशतिर्भागा अभिजिन्नक्षत्रस्यक्षेत्रत: सीमाविष्कंभोभवति ॥ एतावतिक्षेत्रेचंद्रेणसह तस्ययोगोव्यपदिश्यतइत्यर्थ: तथातस्यामेवैकविंशतौ त्रिंशन्मुहूर्त्तत्वादहोरात्रस्य त्रिंशतागुणितायां ६३० सप्तषष्ट्याहृतभागायांयल्लब्धम् तत्कालसीमाभवति चन्द्रेणसहतस्य योगकालइ त्यर्थ: साचनवमुहूर्त्ता: सप्तविंशतिश्चसप्तषष्टिभागा: ९ । २७ । ६७आहच अभिइस्सचंदजोगो सत्तट्ठीखंडिए अहोरत्ते भागाओएक्कवीसं होंतिहिगानवमुहुत्ता यत्ति क्षेत्रत: कालतस्तथा शतभिषग्भरण्यार्द्राश्लेषास्वातिज्येष्टानां त्रयस्त्रिंशत्सप्तषष्टिभागास्तद्भागार्द्धंच क्षेत्रसीमाविष्कंभोभवति तस्यामेवसार्द्धत्रयस्त्रिंशति: त्रिंश तागुणितायां १००५ सप्तषष्ट्याहृतभागायां यल्लब्धम् तदेषांकालसीमा तच्चपंचदशमुहूर्त्ता: आहच सयभिसयाभरणीओ अद्दाअस्सेससाइजेट्ठाय एएछनक्खत्ता पन्नरसमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ तथोत्तरात्रय: पुनर्वसुरोहिणीविशाखानां सप्तषष्टिभागानांशतं तद्भागार्द्धंच क्षेत्रविष्कम्भ: सीमाभवति तथातस्मिन्नेवत्रिंशद्गुणि

॥ मूल ॥

श्यंतरे प० सव्वेसिं पिणं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिभागभइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

॥ भाषा ॥

सगला नक्षत्रनो सीमा विष्कंभपणे पिहुलपणें सतसठ भागें विभजिये विहचेथके समोअंश क्षेत्रनो भागआवे एम कह्यो नक्षत्रें अहोरात्रीयें जेक्षेत्रनो सी मा क्षेत्रथको विष्कंभपणो होय। एतले क्षेत्रे चंद्रमा साथें तेभोगवनो योग संबंध कहीये बीजा नक्षत्रनो वार्ता सर्वटीकाथको जाणिवी ॥ इति ६७ समवा

॥ टीका ॥

ते २०१५ तथैवद्वत्तभागेयत्नक्ष्यम् तदेषांकालसीमाभवति साधपंचचत्वारिंशन्मुहूर्त्तादिति आहच तिन्नेवउत्तराइं पुणव्वसूरोहिणीविसाहाय एएछन्नक्खत्ता पी

णयालमुहुत्तसंजोगत्ति ॥ १ ॥ शेषाणांपंचदशानां नक्षत्राणांसप्तषष्टिभागानां चैवसीमाविष्कम्भोभवति तस्याष्वतथैवगुणितायां २०१० द्वतभागायांचयत्नक्ष्यम्

तत्कालसीमातच्चत्रिंशन्मुहूर्त्ता आहच अवसेसानक्खत्ता पन्नरसविहुंति तीसइमुहुत्ता चंदम्मितेहिंजोगोसमासओएसवक्खामि ॥ ३ ॥ एवंचैकस्यपक्षा २ पंचद

शानां चैत्येयमष्टाविंशतेर्नक्षत्राणामष्टादशशतानि त्रिंशदधिकानि सप्तषष्टिभागाना मेतदेवद्विगुणं षट्पंचाशती नक्षत्राणांभवति तत्रसहस्रत्रयंषट्शतानिष

ष्ष्यधिकानि ३६६० ॥ ६७ ॥ अथाष्टमषष्टिस्थानके किंचिल्लिख्यते धायइसंडेत्यादि इहयदुक्तम् एवंचक्रवर्त्ती वलदेवावासुदेवत्ति तत्रयद्यपिचक्रवर्त्ति

नांवासुदेवानांनैकदाअष्टषष्टिः संभवति यतोजघन्यतोप्येकैकस्मिन् महाविदेहेचतुर्णांतीर्थकरादीनामावश्यंभावः स्थानांगादिष्वभिहितः नचैकत्रचक्रवर्त्ती

वासुदेवश्चैकदा भवतोऽतः अष्टषष्टिरेवोत्कर्षतश्चक्रवर्त्तिनां वासुदेवानां चाष्टषष्ट्यांविजयेषु भवति तथापीहसूत्रे एकसमयेनेत्यविशेषणात् भवति कालभेदभा

॥ मूल ॥

धायइसंडेणं दीवे अडसठिं चक्क वहिविजया अडसठिंरायहाणीउ प० उक्कोसपए अडसठिंअरहंता स

य पूरीसयो ॥ ६७ ॥

॥ भषा ॥

हिवे ६८ मो लिखेछे। पूर्व पश्चिम धातकी खंडे ६८ चक्रवर्त्तीनोविजय चक्रवर्त्तिये जीपिवा योग्य चेत्रना खंड कह्या। एतले पूर्वधातकोखंडे ३२ विजय विदेहमांहि अने भरत ऐरवत मिली २ एवं ३४ विजय पश्चिम धातकी खंडे पणि ३४ सर्वमिली ६८ विजयहोय। वि

अवदीठ राजधानी एकेक होय तेमाटे पूर्वापरधातको खंडे ६८ राजधानीछे जिहांराजा राज्यकरे तेराजधानी कहिये। उत्कृष्ट पदे पूर्वापरधातको खंडे

६८ अरिहंत उपजताहुया उपजेछे उपजसे। एतले एकेकविजयदीठ एकेक अरिहंत उपजे। एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव जाणिवा। यद्यपि वर्त्तमान

॥ टीका ॥

शिनांचक्रवर्त्यादीनां विजयभेदेनाष्टषष्टिरविरुद्धा अभिलप्यंतेच जंबूद्वीपप्रज्ञप्त्यांभारतकच्छाद्यभिलापेन चक्रवर्त्तिनइति ॥ ६८ ॥ अथैकोनसप्ततिस्था नकेकिञ्चिल्लिख्यते समयक्षेत्रादिमंदरवर्ज्जामेरुवर्जा: वर्षाणिचभरतादिक्षेत्राणि वर्षधरपर्वताश्चहिमवदादयस्तत्सीमाकारिणो वर्षधरपर्वता: समुदिताएकोन सप्तति: प्रज्ञप्ता: कथंपंचसुमेरुषु प्रतिबद्धानि सप्तसप्तभरतहैमवतादीनि पंचत्रिंशद्वर्षाणि तथाप्रतिमेरुषट्षट् हिमवदादयोवर्षधरास्त्रिंशत्तथाचत्वार एवेषुका

॥ मूल ॥

मुप्पज्जिंसुवा ३ एवंचक्कवट्टी बलदेवा वासुदेवा पुक्खरवरदीवड्ढेणं अडसट्ठिं विजया एवंचेवजाववासुदेवा विमलस्सणं अरहउ अडसट्ठिं समणसाहस्सीउ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥ समयखित्तेणं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासावासधरपव्वया प० तं० पणतीसंवासा तीसंवासहरा चत्तारिउ

॥ भाषा ॥

काले वर्त्तता ६८ चक्रवर्त्तिनहोय ६८ वासुदेव नहोय अनें एकेक विदेहें जघन्य पदे च्यारच्यार तीर्थंकरादि उत्पन्न होय। एकेक्षेत्रे चक्रवर्त्ति वासुदेव न होय। बत्रीस विजयनेविषें उत्कृष्टपदे २८ चक्रवर्त्तिहोय ४ वासुदेवहोय अनें २८ वासुदेवहोय तिवारे ४ चक्रवर्त्ति होय तो६८ किमसिले सूत्रमांहि एकेसमि एहवो पाठनथी तेमाटे कालभेदें पाठछे ६८ होय विजयने भेदें तेमाटे विरुद्ध नथी। धातकीखंडनीपरे पुष्करार्द्ध द्वीपे ६८ विजय कहिवी ६८ राजधानी कहवी। उत्कृष्ट पदें ६८ अरिहंत कहिवा एम चक्रवर्त्ति बलदेव वासुदेव कहिवा। विमलनाथ अरिहंत ने अडसठ हजार श्रमणहती हुय उत्कृष्ट श्रमण संपदा थई ॥ ६८ ॥ हिवे ६९ मो लिखेछे। काले करी ओलखाणी क्षेत्र ते समयक्षेत्र कहिये ते क्षेत्र अढाई द्वीपनें विषे मेरु वर्जीने ६९ क्षेत्र अने वर्षधर कुलगिरि हिमवंतादिक क्षेत्रनी सीमानां करणहार कह्या। ते कहेछे अठाई द्वीपे ५ मेरु छे एक मेरुने पासे सातसात

॥ टीका ॥

द्राइति सर्वसंख्यैकोनसप्ततिरिति। मंदरस्येत्यादि लवणसमुद्रंपश्चिमायांदिशि द्वादशयोजनसहस्राण्यवगाह्य द्वादशसहस्रमानः सुस्थिताभिधानस्य लवणसमुद्राधिपतेर्भवनेनालंकृतोगौतमद्वीपोनामद्वीपोऽस्तितस्यचपश्चिमांतोमेरोः पश्चिमांतादेकोनसप्ततिसहस्राणि भवंति पंचचत्वारिंशतोजंबूद्वीपसंबंधिनांद्वादशानांमन्तरसंबंधिनांद्वादशानामेवद्वीपविष्कंभसंबंधिनांचमीलनादिति।मोहनीयवर्ज्जानांकर्म्मणामेकोनसप्ततिरुत्तरप्रकृतयो भवंतीति कथं ज्ञानावरणस्यपंच दर्शनावरणस्यनव वेदनीयस्यद्वे आयुषश्चतस्रो नाम्नोद्विचत्वारिंशद्गोत्रस्यद्वेअंतरायस्यपंचेति ॥ ६९ ॥ अथसप्ततिस्थानकंकिमपिलिख्यते समणेत्यादि वर्षा

॥ मूल ॥

सुयारा मंदरस्सपव्वयस्सपच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोयमद्दीवस्स पच्चत्थिमिल्लेचरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अवाहाएअंतरे प० मोहणिज्जवज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तरपगडीउ

॥ भाषा ॥

भरत हिमवंतादिक क्षेत्रछे ते पांचसतां पैंत्रीस थाय एकेक मेरुने पासें विजयंत सत्ताविसमंतादिक ६।६। वर्षधर छे छपंच त्रीस वर्षधर थया धातकी खंड मांहि २ इषुकार पर्वतछे पुष्करार्द्ध मांहि २ एवं ४ इषुकार पर्वतथया सर्व मिली उगुणहत्तरि वर्षधर थया ६९ मेरुनां पश्चिम चरमांत थी गौतम द्वीपनो पश्चिम चरमांत एहने ६९ हजार योजन नो विचाले आंतरो कह्यो। एतले ४५ हजार योजने पश्चिमनो जगती छे तेह थको १२ हजार योजन गौतम द्वीप सुस्थितनामा लवण समुद्राधिपति देवतानो निवास भूत छे ते १२ हजार योजननो पिहुलो छे ते सर्व एको करिये तिवारे ६९ हजार योजन थाय। मोहनीय कर्म वर्जी नें सात कर्मनो ६९ उत्तर प्रकृतिकहो। ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनीय २ आयु ४ नाम ४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली उगुणहत्तरि प्रकृति थई इति ६९ समवाय संपूर्ण ॥ ६९ ॥ हिवे ७० मो लिखे छे। श्रमण भगवान महावीर देव च्यार मास प्रमाण वर्षाकाल

॥ १२७ ॥

यांवतर्मासप्रमाणस्य वर्षाकालस्य सविंशतिदिवसात्रिके मासे व्यतिक्रांते पंचाशतिदिनेष्वतीते ष्वित्यर्थः सप्तत्यां च रात्रिंदिनेषु शेषेषु भाद्रपदशुक्लपंचम्यामित्यर्थः वर्षासु आवासो वर्षावासः वर्षावस्थानं पज्जोसवेइत्ति परिवसति सर्वथा करोति पञ्चाशतिप्राक्तनेषु दिवसेषु तथाविधवसत्यभावादिकारणे स्थानांतरमप्याश्रयति अतिभाद्रपदशुक्लपञ्चम्यां तु वृक्षमूलादावपि निवसतीति हृदयमिति पुरिसादाणीयत्ति पुरुषाणामादानीय उपादेयः पुरुषादानीयः अबाहूणिया कम्मट्ठिई कम्मणिसेगेपण्णत्तेत्ति इह किलात्मा अविशिष्टमेव कर्म्मपुद्गलोपादानं कृत्वा उत्तरकालं ज्ञानावरणीयादिकर्म्मणां स्वंस्वमबाधाकालंमुक्त्वा ज्ञानावरणीयादिप्र ॥ टीका ॥

प० ॥ ६१ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासाणंसवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासंपज्जोसवेइ पासेणं अरहापुरिसादाणीए सत्तरिंवासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धेबुद्धे जावप्पहीणे वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था मोहणिज्जस्स णं ॥ मूल ॥

तो ते मांहि २० रात्रिये अधिक मास वीतियके एतले आषाढी पूनिम थकी पंचासमे दिहाडे भादों सुदि ५ दिने संवच्छरी करी पछे शेष थाकती ७० रात्रियें वर्षाकाल रह्यो पज्जोसवेइ सर्वथापि करे। पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषां मांहि श्रेष्ट प्रतिपूर्ण ७० वर्ष लगे सामान्य पर्याय पाली सिद्धथया सर्वदुःखथकी प्रक्षीणथया एतले ३० वर्ष गृहवासे ७० वर्ष चारित्र सर्व मिलो १०० वर्षनो आयु जाणिवो। वासुपूज्य बारहमां अरिहंत ७० धनुष ऊंचपणे हुया। मोहनीय कर्मनी स्थिति ७० सागरोपम कोडाकोडि लगे अबाधायें ७ हजार वर्ष ऊणी ज्ञानावरणी आदि कर्मदल भोगविवाने अर्थे रचना पूर्वे जे बांध्योछे ते उदयकाले आंणिजे एतले उत्कृष्टो ७० कोडाकोड सागरोपमनों जेणे समये मोहनीय कर्मनो बंधपाम्यो ते बंधकालथी मांडी ७ हजार वर्ष लगें तेकर्म ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

र्ततिविभागतया अनाभोगिकेन वीर्य्येणोदयसहितं तद्दलिकं निषिञ्चति उदययोग्यं रचयतीत्यर्थः अतो द्विविधास्थितिः कर्म्मत्वोपादानमात्ररूपा अनुभवद्य पाय यतः स्थितिरवस्थानं तेनभावेनाप्राप्तवनं तत्र कर्म्मत्वोपादानरूपां तामधिकृत्य सप्ततिसागरोपमकोटीकोट्यः अनुभवरूपां त्वधिकृत्य सप्तवर्षसहस्रोनेति तत्र अबाहत्ति किमुक्तं भवति बन्धावलिकाया आरभ्य यावत्सप्तवर्षसहस्राणितं तावत्कर्म्म नबाधते नोदयं यातीत्यर्थः ततोनन्तरसमये कर्म्मदलिकं पूर्वनिषि त्तं उदये प्रवेशयति निषेकोनाम ज्ञानावरणादिकर्म्मदलिकस्या ऽनुभवनार्थं रचना तत्र प्रथमसमये बहुकं निषिंचति द्वितीयसमये विशेषहीनं तृतीयेसमये विशेषहीन मेवंयावदुत्कृष्टस्थितिकर्म्मदलिकं तावद्विशेषहीनं निषिंचति तथाचोक्तं मुत्तूणसंगबाहुं पढमाएठिईएवहुतरंदव्व सेसेविसेसहीणंजाबुक्कोसंतिसव्वेसिं ति बाधृलोडने बाधत इति बाधा कर्म्मणउदयइत्यर्थः नबाधाअबाधा अन्तरं कर्म्मोदयस्येत्यर्थः तया ऊनिका आबाधोनिका कर्म्मस्थितिः कर्म्मनिषेकोभवती त्येवमेकेप्राहु रन्येपुनराहु रबाधाकालेन वर्षसहस्रसप्तकलक्षणेनोना कर्म्मस्थितिः सप्तसहस्राधिकसप्तेति सागरोपमकोटाकोटीलक्षणः कर्म्मनिषेको भवतिसच क्रियानुच्यते सत्तरिसागरोपमकोडाकोडीओत्ति ॥ ७० ॥ अथैकसप्ततिस्थानके लिख्यते किञ्चित् । चउत्थस्सेत्यादि इहभावार्थोयं युगेहि पञ्चसम्व

॥ मूल ॥

कम्मस्स सत्तरिंसागरोवमकोडाकोडीओ अबाहूणिया कम्मठिई कम्मनिसेगे प० माहिंदस्सणं देविंदस्स देवरन्नो सत्तरिसामाणियसाहस्सीओ प० ॥ ७० ॥ चउत्थस्सणं चंदसंवच्छरस्स हेमंताणं एक्का

॥ भाषा ॥

उदयेनाउे ते माटे ७० कोडाकोड सागर मांहि थी ७ हजार वर्ष ऊंणा कीजे एतली स्थिति मोहनीय कर्मनी कोइक कहेछे सात हजार वर्ष अधिक ७० कोडाकोडि सागर सघल कर्म निसेक होय । माहेंद्र चौथा देवलोकना राजाने ७० हजार सामानिक देवता कह्या इति ७० समवाय संपूर्ण ॥ ७०

॥ टीका ॥

त्सरा भवन्ति तत्राद्यो चन्द्रसम्वत्सरो तृतीयोभिवर्द्धितसम्वत्सर चतुर्थचन्द्रसम्वत्सरस्तृतीयोभिवर्द्धितसंवत्सरएव तत्र च एकोनत्रिंशतादिनानां द्वात्रिंशताचद्विष
ष्टिभागैर्दिनस्य चन्द्रमासो भवति अयञ्च द्वादशगुण: चन्द्रसंवत्सरोभवति त्रयोदशगुणस्त्वायमेवा भिवर्द्धितोभवति ततश्चन्द्रचन्द्राभिवर्द्धितलक्षणे सम्वत्सरत्रयेर्दि
नानांसहस्रं द्विनवति: षट् द्विषष्टिभागाभवन्ति १०९२ । ६ । ६२ तथाआदित्यसंवत्सरे दिनानांशतत्रयं षट्षष्ठिश्चभवंति तत्त्रितयेच सहस्रमष्टनवत्यधिक
भवति इत्थचक्रिलचन्द्रयुगमादित्ययुगं चाषाढ्या मेकंपूर्यते ऽपरञ्चश्रावणकृष्णप्रतिपदिआरभ्यते एवंचादित्ययुगसंवत्सरत्रयापेक्षयाचन्द्रयुगसंवत्सरत्रयं पंचभिर्दि
नै:षट्पंचाशताचदिनद्विषष्टिभागैरूनंभवतीतिकृत्वा आदित्ययुगसंवत्सरत्रयं श्रावणकृष्णपक्षस्य चन्द्रदिनषट्केसाधिकेपूर्यते चन्द्रयुगसंवत्सरत्रयंत्वाषाढ्यां तत

॥ मूल ॥

सत्तरीए राइंदिएहिं वीक्कंतेहिं सव्वबाहिराउ मंडलाउ सूरिएआउट्टिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स

॥ भाषा ॥

हिवे ७१ मो लिखेछे । १ युग मांहि ५ संवच्छर होय ते चंद्र १ चंद्र २ अभिवर्द्धित ३ चंद्र ४ अभिवर्द्धित ५ एह ५ मांहि तीन चंद्र संवच्छर एकेको चंद्र
मास २९ अहोरात्रि १ अहोरात्रना ३२ भाग ६२ सठिया ते १२ गुणा कीधां चंद्र संवत्थाय तेहनां ३५४ दिन भाभेरा थाय २९। ३२।६२ अहोरात्रि १३
गुणाकरिये तो अविभर्द्धित वर्षथाय तोदोय चंद्र संवत् १ अभिवर्द्धित संवत्ना येकसहस्र बाणूंदिन बासठिया ६ भागहोय अनें आदित्य संवत्सरना त्रिण
से छासठिथाय एहवा त्रिण वर्षना एक हजार अठाणूंदिन थाय एतले चंद्रयुग अने सूर्ययुग येके आषाढी पूनिमदिने पूराथाय वीजोयुग श्रावण बदी प
डिवाये प्रारंभियें एम आदित्ययुग संवत्सरनी अपेक्षायें चंद्रसंवत्सरत्रिण पांच दिहाडे साठिया छप्पन्न भागें ऊणां करिये। आदित्ययुग संवच्छर ३ श्रावण
बदी पञ्चमा चंद्र दिन थकी छठें दिने अधिक पूराय चंद्रयुग संवच्छर ३ आषाढी पूनिमें पूरे तिवारपछी सावण बदी सातमदिन थकी दक्षिणायनें

॥ टीका ॥

श्रावणकृष्णपक्षसप्तमदिनादारभ्य दक्षिणायने नादित्य चरम् चंद्रयुगचतुर्थसंवत्सरस्य चतुर्थमासांतभूताया मष्टादशोत्तरशततमदिनभूतायां कार्त्तिक्यां द्वाद शोत्तरशततमे स्वकीयमण्डले चरति ततश्चान्यान्येकसप्ततिमण्डलानि तावत्स्वेव दिनेषु मार्गशीर्षादीनां चतुर्णांहेमन्तमासानां सम्बन्धिषु चरति ततोद्विसप्त तितमे दिने माघमासे बहुलपक्षत्रयोदशीलक्षणे सूर्यश्चावृत्तिं करोति दक्षिणायनान्निवृत्योत्तरायणेन चरतीत्यर्थः ॥ उक्तञ्च ज्योतिष्करण्डके पञ्चसुयुगसम्वत्स रेषूत्तरायणतिथयः क्रमेणैवं यदुतबहुलस्ससत्तमीए १ सूरोशुद्धस्सतोचउत्थीए २ बहुलस्सयपाडिवए ३ बहुलस्सयतेरसीदिवसे ४ सुद्धस्सयदसमीए ५ पवत्तएपं चमीउश्रावट्टी एयाश्राउट्टीश्रोसव्वाश्रोमाघमासंमित्ति दक्षिणायनदिनानिचैवं पढमाबहुलपडिवए १ बीयाबहुलस्सतेरसीदिवसे २ सुद्धस्सयदसमीए ३ बहुल स्सयसत्तमीए ४ सुद्धस्सचउत्थीए पवत्तएपंचमीउश्राउट्टो एयाश्राउट्टीश्रो सव्वाश्रोसावणेमासेत्ति वीरियपुव्वस्सत्ति तृतीयपूर्वस्य पाहुडत्ति प्राभृतमधिकारवि शेषः। अजिरत्यादि तस्यहि अष्टादशपूर्वलक्षाणि कुमारत्वं त्रिपञ्चाशच्चैकपूर्वांगाविकाराज्यमित्येकसप्तति रिहच पूर्वांगमधिकमल्पत्वा न विवक्षित मिति

॥ मूल ॥

एक्कसत्तरिंपाहुडा प० अजितेणं अरहा एक्कसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता जा

॥ भाषा ॥

सूर्य चालतोथको चउथा चंद्र युगना चउथा मासमांहि अंतर्भूतके एकसो अढारमा दिन कार्तिकीयें येकसो बारमां पोतानां मंडलमांहि सूर्यचार करी तिवारपछे सोमाला संबंधी मागशिरादिक मासमांहि एकत्तर मांडला सूर्य चरे पछे बहुत्तरिमें दिन माघमासे वदी १३ दिने समुद्रमांहिला सर्वबाह्यमां डला थको सूर्य आवृत्तिकरे प्रदक्षिणावर्त्तकरे उत्तरायणे सूर्य फिरे ॥ वीर्य प्रवाद त्रीजा पूर्व नां एकत्तरि प्राभृतका अधिकार विशेष कह्या। अजितनाथ

॥ टीका ॥

५ सगरोद्वितीयचक्रवर्त्ती अजितस्वामिकालीनः ॥ ७१ ॥ अथद्विसप्ततिस्थानके किमपि लिख्यते सुवर्णकुमाराणांद्विसप्ततिलक्षाणि भवनानिक
थम् दक्षिणनिकाये अष्टत्रिंशदुत्तरनिकायेतु चतुस्त्रिंशदिति नागसाहस्सीओत्ति नागकुमारदेवसहस्राणि वेलां षोडशसहस्रप्रमाणामुत्सेधतो विष्कम्भतश्च
दशसहस्रमानांलवणजलधिशिखांवाह्यां धातकीखण्डद्वीपाभिमुखां महावीरो द्विसप्ततिवर्षाण्यायुः पालयित्वासिद्धः कथंत्रिशद्गृहस्थभावे द्वादशसार्द्धानिषपक्षश्च

॥ मूल ॥

व पव्वइए एवं सगरेवि रायाचाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्वजावपव्वइए ॥ ७१ ॥ बावत्तरिं
सुवन्नकुमारावाससयसहस्सा प० लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं नागसाहस्सीउ बाहिरियं वेलं धारंति समणेन्न

॥ भाषा ॥

अरिहंत अठार पूर्व लाख लगे कुमारपणे अनें एक पूर्वांगाधिक ५३ लाख पूर्व लगे राज्यपालीने एवं ७१ लाख पर्व लगी गृहवासमांवसीने मुंडथया। गृह
स्थाश्रमथकी यतीपणुं पाम्यां एम १ पूर्वलाख चारित्रपालीसर्वायु ७२ लाख पूर्व जाणिवा। एमज अजितनथ स्वामी कालीन सगरपणे बीजोमहाराजा चा
तुरंत चक्रवर्त्ती एकहत्तर लाखपूर्वलगी गृहवासमांहिवसोने राज्यपालीने मुंडपणे गृहस्थथकी यतीपणो पांम्या॥ इति ७१ मो संपूर्ण ॥ ७१ ॥
हिवे ७२ मो लिखेछे। भवनपतोनों तोजोनिकाय सुवर्ण कुमार देवता तेहना दक्षिणेंद्र नें ३८ लाख भवनावास उत्तरेंद्र ने ३४ लाख भवनावास बेहुंमि
ली ७२ लाख भवनावास कह्या। ७२ हजार देवता लवण समुद्रनो बाहिरली धातकी खंड तरफनी पांणीनीवेला प्रते धरेछे। एतले १६ हजार योजन
ऊपरि २ कोशनो वेलावढे तिशरे चाटूये करी पाणो उपराठो मारेछे। श्रमण भगवंत महाबीरस्वामी ७२ वर्षलगेसर्वायु पालन कियो। एतले ३० वर्षगृह
वासे १२ वर्ष मास ६ दिन १५ छद्मस्थभावें देशोन ३० वर्ष केवल पर्याय एवं ७२ वर्ष लगें सर्वायु पालीने सिद्ध थया सर्व दुःखथकी प्रक्षीण थया। स्थविर

॥ टीका ॥

द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे अचलभायत्ति अचलोमहावीरस्य नवमो गणधरः तस्यायु द्विसप्ततिवर्षाणि कथं षट्चत्वारिंशद्गृहस्थत्वे छद्मस्थभावे देशोनानिविंशत्केवलित्वे इतिद्विसप्ततिः बावत्तरिंकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थः द्वादशछद्मस्थतायां चतुर्दशकेवलित्वेइति पुष्करार्द्धेद्विसप्तति चंद्रास्तत्रैकस्यां पंक्तौ षट्त्रिंशदन्यस्यांच तावंत एवेति बावत्तरिंकलाओत्ति कलाविज्ञानानीत्यर्थः तत्र ताश्च कलनीयभेदा द्विसप्ततिर्भवन्ति तत्रलेखनं लेखो ऽक्षरविन्यासः तद्विषया कला विज्ञानं लेख एवोच्यते एवं सर्वत्र सच लेखो द्विधा लिपिविषयभेदात् तत्र लिपि रष्टादशस्थानकोक्ता अथवा लाटादिदेशभेदतस्तथा पत्रादि त्रिविधवित्तोपाधिभेदतोवा ऽनेकविधेति तथाहि पत्रं वल्ककाष्टदन्तलोहताम्ररजतादयो अक्षराणामाधार स्तथा लेखनोत्कीर्णनस्यूतव्यूतछिन्नभिन्नदग्धसंक्रांतितो ऽक्षराणि भवन्तीति विषयापेक्षयाप्यनेकधा स्वामिभृत्यपितृपुत्रगुरुशिष्यभार्यापति

॥ मूल ॥

एवंमहावीरे बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं अयलभाया बावत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे अभिंतरपुक्खरद्धेणं बावत्तरिं चंदापभासिंसु ३ बावत्तरिंसूरिया तविंसुवा ३ एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स बावत्तरिपुरवरसाहस्सीओ प० बावत्तरिकलाओ प० तं०

॥ भाषा ॥

गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभा महावीरना नवमा गणधर अचलभ्राता ७२वर्ष लगें सर्वायुपालीने यतीपणं पामी सिद्ध थया सर्वदुःखयकी प्रक्षीण थया। गृहस्थपणे ४६ वर्ष छद्मस्थभा वें १२ वर्ष केवलि पर्यायें १४वर्ष एवं ७२ वर्षपालीने सिद्ध थया। पुक्खरवरद्वीप १६ लाखनोछे तेमांहि ८ लाख मानुषोत्तर पर्वतमांहिते अभ्भिंतर पुष्क रार्द्ध कहिये तिहां ७२ चंद्रमा ७२सूर्य प्रभासता हुया प्रभासेछे प्रभासस्यें पहिलो पंक्तिये ३६ दूजी ३६ एवं ७२ थया। तपता हुया तपेछे तपस्यें एकेक चातुरंत चक्रवर्ती नें ७२ पुरवर मोटा श्री नगरना सहस्र कह्या। पुरुषनी ७२ कला कही ते कहेछे। लिखवो अक्षरनो स्थापिवो तेहीजकलाते लेख क

॥ टीका ॥

शस्त्रभित्त्यादीनां लेख्यविषयाणामप्यनेकत्वा त्तथाविधप्रयोजनभेदाच्च अक्षरदोषा श्चैते अतिकार्श्यमतिस्थौल्यं वैषम्यम्पंक्तिवक्रता अतुल्यानांचसादृश्य मभागोऽव यवेष्विति ॥ १ ॥ तथा गणितं संख्यानम् सङ्कलिताद्यनेकभेद म्पाटीप्रसिद्धं २ रूपं लेप्यशिलासुवर्णमणिवस्त्रचित्रादिषु रूपनिर्म्माणं ३ नाट्यकला भरतमार्ग स्थलिककलास्यविधान मित्यादिभेदादृष्टवा नाट्यग्रहणात् नृत्तकलापि गृहीता साच अभिनयिका अङ्गहारिका व्यायामिका चेति त्रिभेदा स्वरूपं चास्यभरत शास्त्रादवसेयं ४ तथा गीतकला साच निबन्धनमार्ग स्थलिकमार्ग भिन्नमार्गभेदात्त्रिधा तत्र सप्तस्वरास्त्रयोग्रामा मूर्छनाएकविंशतिः तानाएकोनपञ्चाशत्समा संस्वरमण्डलं इत्यस्य विशाखिलशास्त्रादवसेयेति ॥ ५ ॥ वादयंति वाद्यकला साच तत वितत शुषिर घन वाद्यानां चतुः पंचत्र्येक प्रकारतया त्रयोदशधा ४ ॥ इत्यादिकः कलाविभागो लौकिकशास्त्रेभ्यो ऽवसेयः इहच द्विसप्ततिरिति कलासंख्योक्ता बहुतराणिच सूत्रे तन्नामान्युपलभ्यन्ते तत्रच कासांचित् का

॥ मूल ॥

लेहं १ गणियं २ रूवं ३ नट्टं ४ गायं ५ वाइयं ६ सगरयं ७ पुक्खरगयं ८ समतालं ९ जूयं १० जणवायं ११ पोरकच्चं १२ अट्ठावयं १३ दगमट्टियं १४ अन्नविही १५ पाणविही १६ वत्थविही १७ सयणविही १८

॥ भाषा ॥

ला १८ भेदे कहीछे ।१। गणित अंकनीकला २ । चित्राम करिवो ३ नाटकनीकला ४ गानकरिवानीकला ५ बाजित्र वजाववानीकला ६ । कंठ संबंधी स्वर ने ओलखिवानीकला ७ । बाजित्रनीगतिनोजाणवो ८ । ताल देवानीकला ९ । जूवारमवानीकला १० । लोगथी आलाप संलापनी कला ११ नगररचा दिकनी कला १२ । सारपासारमवानी कला १३। पाणीअनेंमाटी एकठीकीधांअमुकयोग होय तेकला १४। अन्ननोपजाविवा रांधिवानीकला १५। पाणी नोपजाववानी विधि १६ । वस्त्र नोपजाविवारंगवानी पहिरवानीविधि १७। सोवानीविधि १८ । आर्या संस्कृतनोबंध तेहनो जाणिवो १९ । प्रहेलिका

॥ मूल ॥

अज्जं १९ पहेलियं २० मागहियं २१ गाहं २२ सिलोगं २३ गंधजुत्तिं २४ मधुसित्थं २५ आभरण
विही २६ तरुणी पडिकम्मं २७ इत्थीलक्खणं २८ पुरिसलक्खणं २९ हयलक्खणं ३० गयलक्खणं ३१
गोणलक्खणं ३२ कुक्कुडलक्खणं ३३ मिंढयलक्खणं ३४ चक्कलक्खणं ३५ छत्तलक्खणं ३६ दंडलक्खणं ३७
असिलक्खणं ३८ मणिलक्खणं ३९ कागणिलक्खणं ४० चम्मलक्खणं चंदलक्खणं सूरचरियं राहुचरियं गह
चरियं सोभागकरं दोभागकरं विज्जागयं मंतगयं रहस्सगयं ४१ सभासंचारं ४२ बूहं ४३ खंधावा

॥ भाषा ॥

नीकला २० । मगधदेशसंबंधीगाथानीकला २१ । प्राकृतबंध गाथानो जाणपणुं २२ । श्लोक रचवानी कला २३ । गंध नया अबीरादिकनीयुक्ति २४ । मधु
रादिक ६ रसनां प्रयोगनी कला २५ । आभरण घडवानी जडवानी पहरवानी कला २६ । तरुणी स्त्रीजातिने प्रति क्रम क्रियाकलापनोसिखाविवो २७ ।
स्त्रीनालक्षण जाणिवानी कला २८ । पुरुषनां बत्तीस लक्षणजाणिवानी कला २९ । घोडानां लक्षण जाणिवानी कला ३० । हाथीनां लक्षण जाणिवानीक
ला ३१ । वृषभ लक्षण कला ३२ कूकुडाना लक्षण कला ३३ । मींढानां लक्षण । ३४ । चक्रना लक्षण ३५ । छत्रना लक्षण ३६ । दंडवंशलठीनालक्षण ७३ ।
खड्गना लक्षण ३८ । मणिचंद्रकांतादिकनालक्षण ३९ । काकिणीरत्न विशेषना लक्षण ४० । चर्मनोगुण अवगुण जाणिवो चंद्रनाग्रहणादिकनो जाणिवो सू
र्यनो चरित्र एहवो उद्योतो एमथासे एम जाणिवो राहुनो चरित्रजाणिवो ग्रहनो चरित्र जाणिवो सौभाग्यनोकारण जाणिवो दौर्भाग्यनोकारण जाणिवो
विद्या प्रज्ञप्ति रोहिणी तद्गत विचार मंत्र आराधे हरिणेगमेषीआवे । रहस्यगति प्रछन्न वस्तुनो जाणिवो सद्भाव वस्तु भावना प्रयोग चार कटक मानो छ

|| मूल ||

रमाणं ४४ नगरमाणं ४५ वत्थुमाणं ४६ खंधारनिवेसं ४७ वत्थुनिवेसं ४८ नगरनिवेसं ४९ ईसत्थं
|१३१|| छरुप्पवायं ५० आससिक्खं ५१ हत्थिसिक्खं ५२ धणुवेयं ५३ हिरण्णपागं ५४ सुवन्नपागं ५५ मणिपागं ५६
धातुपागं ५७ बाहुजुद्धं ५८ लयाजुद्धं ५९ मुट्ठिजुद्धं ६० जुद्धं ६१ निजुद्धं ६२ जुद्धाइजुद्धं ६३ सुत्तखेडं
६४ वट्टखेडं ६५ नालियखेडं ६६ चम्मखेडं ६७ पत्तछेज्जं ६८ कडगछेज्जं ६९ सजीवं ७० निज्जीवं ७१

|| भाषा ||

तरिवो ४१ । युद्ध कटक नी रचना ४२ । खंधार कटक उतारिवानो प्रमाण जाणिवो ४३ । नगरवासिवानोमान ४४ वस्तुनामान गजतोलादिक ४५ । खंधार कटकनो निवासस्थापन ४६ । नगर निवेशनो वासवो ४७ । वस्तुनोस्थापना वस्तुनिवेश ४८ । ईषदर्थ थोडानूं घणुं घणानूं थोडूं करवूं ४९ । त्सरुखड्गमुष्टि था खुरप्रवाण तसत रिवारनो जाणिवो ५० । घोडानी गति शिखाडवो ५१ । हाथीनी गति शिखाडवो ५२ । धनुर्वेद धनुर्धारी थावूं ५३ । हिरण्य रूपानोपाक पचाववो ५४ । सुवर्णनो पचाविवो ५५ । मणिरत्नादिकनो पाक ५६ । धातुतांबादिकनो पाक ५७ । युद्ध सामान्य प्रकारे तेहनो जाणि वो ५८ । नियुद्ध अतिशय युद्ध जाणिवो ५९ । युद्धनेअति क्रम करीने जूझवो ६० । मुष्टियें जूझवो ६१ । लताविलडोयेजूझवो ६२ । बाहुथी जूझवोतेबा हु युद्ध ६३ । सूत्रनो खेडवोवेभ्रनोमांडो सूत्रनो छेदिवो ६४ । वर्त्त वाटलो खेडं मांडीने जूझिवो ६५ । नालिकाकमल डांडो तेहनो खेडवो वेभूमांडीने वे धवूं ६६ । चर्म खेडू वेडूंमाडीवेधिवो ६७ पत्रपानडानो छेदिवो ६८ । कडग सुवर्णादिकनाचूडो कुंडलादिकनो छेदिवो ६९ । मंत्रामनुष्यतिर्यंचने मंत्रशक्तिक री सजीव करिवो ७० । जीवतानोनरचांपाने निर्जीव करिवो ७१ । शकुन पक्षीकाकादिकना स्वरभेदनो जाणिवो ७२ । एकत्ताथई । सन्मूर्च्छिम खेचर

॥ टीका ॥

सुवि दंऽतर्भावोऽवगन्तव्य इति ॥ ७२ ॥ अथत्रिसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। हरिवासेत्ति अत्र सम्वादगाथा॥ एगुत्तरानवसया तेवत्तरि मेवजोयणसहस्सा जीवासत्तरसकलायअद्धकलाचेवहरिवासेत्ति तथा विजयो द्वितीयोबलदेवस्तस्येह त्रिसप्ततिवर्षलक्षाण्यायु रत्र मावश्यकेतु पंचसप्तति रितीदमपिमतांतरमेव ॥ ७३ ॥ अथचतुःसप्ततिस्थानके किंचित्लिख्यते। तत्राग्निभूतिरिति महावीरस्यद्वितीयोगणधरःगणनायकस्तस्येह चतुः

॥ मूल ॥

सउणरुयं ७२ ॥ समुच्छिमखहयरपंचिंदियतिरिक्खजोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिंवाससहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥ हरिवासरम्मयवासयाउ णं जीवाउ तेवत्तरिं २ जोयणसहस्साइं नवयएगुत्तरं जोयणसए सत्तरसयएगूणवीसइभागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० विजएणंबलदेवे तेवत्तरिं वाससयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ७३ ॥ थेरेणंअग्गिभूइ गणहरेचोवत्तरिं वा

॥ भाषा ॥

पक्षीनो पचेंद्रियतिर्यंचनो उत्कृष्टी ७२ हजार वर्षनो स्थिति कही॥ इति ७२ मो संपूर्ण ॥ ७२ ॥ हिवे ७३ मो लिखेछे। हरिवर्ष अने रम्यक्षेत्रयुगल क्षेत्रसंबंधी जीवा धनुषरूप ते हुत्तरी २ हजार योजन जाणवी। नवसे एक योजन ७३९०१ योजन। एक योजनना उगणीसहाइया सत्तर भाग एकयोजनना वली उपरि अर्द्धभाग आयामपणे लांबपणेकही। विजय बीजो बलदेव ७३ लाख वर्षलगें पूरो आउखुंपालीने सिद्धथया सर्वदुःखथको प्रक्षीण थया। आवश्यके ७५ लाख वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया ते मतांतर छे॥ इति ७३ मो संपूर्ण ॥ ७३ ॥ हिवे ७४ मो लिखेछे। स्थविर व

॥ टीका ॥

सप्ततिवर्षाण्यायु रव्वार्यविभागः षट्चत्वारिंशद्वर्षाणि गृहस्थपर्यायः द्वादश छद्मस्थपर्यायः षोडशकेवलिपर्यायइति निसहाओणमित्यादि अथभावार्थः

निलनिषधवर्षधरस्य विष्कम्भो योजनानां षोडशसहस्राणि अष्टौशतानि द्विचत्वारिंशत्कलाद्वयंचेति तस्यच मध्यभागे तिगिच्छिमहाह्रदः सहस्रद्वयविष्कम्भ

चतुःसहस्रायाम स्तदेवंपर्वतविष्कम्भार्द्धस्य ह्रदविष्कम्भार्द्धेनन्यूनतायां शीतोदामहानद्याः पर्वतस्योपरि चतुःसप्तति शतान्येकविंशत्यधिकानि कलाचैकेत्येवं प्र

॥ १३२ ॥ वाहो भवति वइरामयाएजिब्भियाएत्ति वज्रमय्याजिह्विकया प्रणालस्थमकरमुखजिह्विकया चतुर्योजनदीर्घया पञ्चाशद्योजनविष्कम्भया वइरतलेकुंडेत्ति नि

षधपर्वतस्याधोवर्त्तिनि वज्रभूमिके अशीत्यधिकचतुर्योजनशतायामविष्कम्भे दशयोजनावगाहे शीतोदादेवीभवनाध्यासितमस्तकेन तद्वीपेनालंकृतमध्यभागे

॥ मूल ॥

साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे निसहाउणं वासहरपव्वयाउ तिगिंच्छिदहाउ सीतोयामहानदीउ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुहीपवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्ना

॥ भाषा ॥

हा अग्निभूति श्रीमहावीरना बीजागणधर ७४ वर्ष लगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया। तेकेम ४६ वर्ष गृहाश्रम १२ वर्ष छद्मस्थपर्याय १६

केवल पर्याय एम ७४ सर्वायु। निषध वर्षधरपर्वत ४०० योजन उंचो उपरि १६ हजार ८ से ४२ योजन २ कला उगणीसहाइया पिहुलो तेहनां मध्यभागेते

गछो महा द्रहछे ते २ हजार योजन पिहुलो ४हजार योजन लांबोछे। निषध वर्षधर पर्वतथको तेगछोद्रहथको निकलो एहवी सीतोदामहानदी ७४ से

२१ योजन साधिक एक कला एतले प्रवाहें पर्वत ऊपरि उत्तराभिमुखी वहीने वज्रमईजीभीयें ४०० योजन लांबी५० योजन पिहुली वहीने जायछे। नि

षध पर्वतने हेठें वज्रमयी भूमिकाछे जेहनी एहवी ४८० योजन पिहुलो १० योजन ऊंडो सीतोदा देवीयें अलंकृत सीतोदाप्रपात वज्रमय कुंडे महया मो

॥ टीका ॥

शीतोदाप्रपातकुंडे महयत्ति महाप्रमाणेन यत्पुनः दृश्यतेक्वचित्दृश्यते तदपपाठइतिमन्यते घडमुहपवत्तिएणंति घटमुखेनेव कलशवदनेनेव प्रवर्त्तित स्तेन प्रवाहेण मुक्तावलीनां मुक्ताफलशरीराणां सम्बन्धी हारस्तस्य यत्संस्थानं तेनसंस्थितो यस्तेन प्रपातः पर्वताग्रपतज्जलसमूह स्तेन महाध्वनिना प्रपतति एवंशीतापि नवरं नीलवत्पर्वतस्योत्तराहत्क्षिणाभिमुखी प्रपततीति चउत्थवज्जेत्यादि तत्र प्रथमायांत्रिंशत् द्वितीयायांपंचविंशतिः तृतीयायांपञ्चदश पंचम्यांत्रीणिलक्षाणि षष्ठ्यां पञ्चोनंलक्षं सप्तम्यांपंचेत्येतानि मीलितानि चतुःसप्तति र्भवन्ति ॥ ७४ ॥ अथ पंचसप्ततिस्थानके किमपिलिख्यते। सुविधे र्नवमतीर्थंकरस्य ना

॥ मूल ॥

सजोयणविक्कंभाए वइरतले कुंडे महयाघडमुहपवत्तिएणं मुत्तावलिहारसंठाणसंठिएणं पवाएणं महयासद्देणं पवडइएवंसीताविदक्खिणमुहीभाणियव्वा चउत्थवज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावाससयसहस्सा प०

॥ भाषा ॥

टो प्रमाणे घडाना मुखथकी जेमनीकले तेम प्रवाह मगर मुखथी प्रवर्त्यो निकल्यो एहवो मुक्तावली हारने संठाणें संस्थित एहवे प्रपातें पर्वतथकी पाणी नो समूह मोटे सब्दें पडेछे। एम नीलवंत पर्वत उपरि केसरीद्रहथकी निकली दक्षिणाभिमुखी प्रवर्तीहुती शीता महानदी नीलवंत पर्वत हेठें शीताप्रपात कुंडनेविषे पडेछे। सर्व शीतोदा नदीनी परे जाणिवो। चोथी नरक पृथिवी टालीने शेष छ नरक पृथ्वीने विषे ७४ लाख नरकावासाकह्या पहिलीयें ३० लाख बीजीयें २५ लाख त्रीजीयें १५ लाख पांचमीये ३ लाख छठीये पांच उंणा १ लाख सातमीयें ५ सर्वमिली ७४ लाख नरकावासा कह्या इति ७४ मो संपूर्ण ॥ ७४ ॥ हिवे ७५ मो लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ पुष्पदंत अरिहंतने ७५०० केवलीहुया। सीतलनाथ अरिहंत ७५००० हजार पूर्व लगी

॥ टीका ॥

मांतरत: पुष्पदन्तस्येति तथाशीतलस्य पंचसप्ततिपूर्वसहस्राणि गृहवासे कथ मध्ये पंचविंशति: कुमारत्वे पंचाशत्सुराज्य इति तथाशांति: पंचसप्ततिवर्षसहस्रा

णि गृहवासमध्युष प्रव्रजित: कथं पंचविंशति: कुमारत्वे पंचविंशति: मांडलिकत्वे पंचविंशति श्चक्रवर्तित्व इति ॥ ७५ ॥ अथषट्सप्ततिस्थानके

॥ १३३ ॥ लिख्यते किंचित्। तत्र विद्युत्कुमाराणां भवनावासलक्षाणि दक्षिणस्यां चत्वारिंश दुत्तरस्यांतु षट्त्रिंशदिति षट्सप्ततिरिति एवमिति इहमेवभवनमानं शेषा

॥ मूल ॥

॥ ७४ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहनो पन्नत्तरि जिणसया होत्था सीतलेणं अरहा पन्न त्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवासमज्झवसित्ता मुंडे जावपव्वइए संतीणंअरहापन्नत्तरिवाससहस्साइं अगा रवासमज्झे बसित्ता मुंडेभवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ छावत्तरिंविज्जुकुमा रावाससयसहस्सा प० एवं दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंदथणियमग्गीणं छण्हंपिजुगलयाणं छावत्तरिस

॥ भाषा ॥

गृहवास मांहि वसीनेमुंडथया यतीपणंपाम्या। २५ हजार पूर्व कुमारपणे ५० हजार पूर्व राज्याश्रमे एम ७५ हजार पूर्वथया २५ हजार पूर्व दीक्षा सर्वायु १ लाख पूर्व जाणिवो। शांतिनाथ अरिहंत ७५ हजार वर्षलगें गृहाश्रम मांहि वसीने मुंडथया गृहस्थथको यतीपणुं पाम्या। २५ हजार वर्ष कुमारपणे २५ हजार वर्ष मंडलीक राज्यपणे २५ हजार वर्ष चक्रवर्ती पणेंवसीने प्रव्रज्या पाम्या। २५ हजार वर्ष दीक्षा सर्वायु १ लाख वर्ष। इति ७५ मो संपूर्ण ॥ ७५ ॥ हिवे ७६ मो लिखेछे। विद्युत्कुमार भवन पतिना दक्षिणदिशें ४० लाख भवन उत्तरदिसे ३६ लाख भवन एवं ७६ लाख भवन कह्या एमज दीप कुमार १ दिक्कुमार २ उदधि कुमार ३ विद्युत्कुमार ४ स्तनित कुमार ५ अग्नि कुमार ६ एकेकना बेबे इंद्र करतां १२ थया। एहना छहंतर

णां द्वीपकुमारादि भवनपतिनिकायाना मित्यर्थं गाथा द्वीदेत्यादि युगलानामिति दक्षिणोत्तरनिकायभेदेन युगलं निकायेभवतीति ॥ ७६ ॥ ॥ टीका ॥

अथसप्तसप्ततिस्थानके निरूप्यते किंचित्तत्र भरतचक्रवर्त्ती ऋषभस्वामिनः षट्सु पूर्वलक्षेष्वतीतेषुजात स्त्र्यशीतितमेचतत्रातीतेभगवतिचप्रव्रजिते राजासंहृत्तः ततषस्वशीत्याः षट्सु निष्कान्तेषु सप्तसप्ततिस्तस्यकुमारवासोभवतीति अंगवंशोंगराजसन्तानस्य संबंधिनः सप्तसप्ततिराजानः प्रव्रजिताः गर्द्दतोयेत्यादि ब्रह्मलोकस्याधोवर्त्तिनीष्वष्टासु कृष्णराजिष्वष्टौ सारस्वतादयो लोकांतिकाभिधाना देवनिकाया भवन्ति तत्र गर्द्दतोयानांतुषितानांच देवाना मुभयपरिवार

यसहस्साइं १ ॥ ७६ ॥ भरहेरायाचाउरंतचक्कवट्टी सत्तहत्तरि पुव्वसयसहस्साइं कुमारवासम ज्झेवसित्ता महारायाभिसेयंसंपत्ते अंगवंसाणं सत्तहत्तरि रायाणोमुंडे जावपव्वइया गद्दतोयतुसियाणं ॥ मूल ॥

६ लाख भवन कह्या दक्षिण उत्तर नामिलीने। इति ७६ मो संपूर्ण ॥ ७६ ॥ हिवे ७७ मो लिखेछे। श्री आदिनाथने ६ लाख पूर्व गयें थके भ ॥ भाषा ॥
रत चक्रवर्ती जन्म पाम्या। ८३ लाख पूर्वमांहेथी ६ लाख पूर्व काढेथके ७७ लाख पूर्व उगस्यातीभरत चातुरंत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्व कुमार वासमांहि वसीने महाराज्याभिषेक चक्रवर्त्तपदवीनोअभिषेक पाम्या। एतले ७७ लाख पूर्व कुमारपणे ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे १ लाख पूर्व दीक्षापणे सर्वायु चउरासी लाख पूर्व जाणिवो। अंगराजाना संतान संबंधी अंगवंशना ७७ राजा मुंड थईने गृहस्थथकी अणगार पणुं पाम्या। पांचमो ब्रह्मलोक तेहने विषे अधोवर्ती ८ कृष्णराजी विमान ने विषे सारस्वतादिक ८ लोकांतिक देवताछे तेमांहि गर्द्दतोय १ तुसित २ एबिहुं देवतानो ७७ हजार देवतानो परिवार कह्यो। एके के मुहूर्तें ७७ लवकाल विशेष लवाप्र परिमाणे कह्या। इति ७७ मो संपूर्ण ॥ ७७ ॥ हिवे ७८ मो लिखेछे। शक्रेंद्र देवेंद्र देवरा

॥ टीका ॥

संख्यामीलनेन सप्तसप्ततिर्देवसहस्राणि परिवारः प्रज्ञप्तानीति तथैकैकोमुहूर्त्तः सप्तसप्ततिर्लवान् लवाग्रेणलवपरिमाणेन प्रज्ञप्तः कथमुच्यते हट्ठस्सअनवगल्ल स्स निरुवकिट्ठस्सजंतुणो एगेऊसासनीसासे एसपाणुत्तिवुच्चई १ सत्तपाणूणिसेथोवे सत्तथोवाणिसेलवे लवाणंसत्तहत्तरिए एसमुहुत्तेवियाहियत्ति ॥ ७७ ॥ अथाष्टसप्ततिस्थानके लिख्यते। सक्कस्सेत्यादि वेसमणेमहारायत्ति सोमयमवरुण वैश्रमणाभिधानानां लोकपालानां चतुर्थउत्तर दिक्पाल सद्विवैश्रमणदेवनिकायिकानां सुपर्णकुमारदेवदेवीनां द्वीपकुमारदेवदेवीनां व्यंतरव्यंतरीणां चाधिपत्यंकरोति तदाधिपत्याच्च तन्निवासानामप्याधिपत्यमसौ करोतीत्युच्यते अष्टसप्तत्याः सुपर्णकुमारद्वीपकुमारावासशतसहस्राणामिति तत्रसुपर्णकुमाराणां दक्षिणस्यामष्टत्रिंशद्भवनलक्षाणि द्वीपकुमाराणांच चत्वारिंश द्त्येवमष्टसप्ततिरिति द्वीपकुमाराधिपत्यमेतस्य भगवत्यां नदृश्यते इहतूक्त मितिमतांतरमिदं आहेवच्चंति आधिपत्यमधिष्ठतिकर्म्म पोरेवच्चंति पुरोवर्त्तित्व

॥ मूल ॥

देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्स परिवारा प० एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥
सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारावास सयसहस्साणं आहेवच्चं पोरेवच्चं सामित्तं भट्टित्तं महारायत्तं आणाईसरसेणावच्चं कारेमाणे पालेमाणे विहरइ थेरेणं अकं

॥ भाषा ॥

आनो वैश्रमण चौथोलोकपाल उत्तर दिशानो धणी। दक्षिणदिशि सुवर्णकुमारना ३८ लाख भवना द्वीपकुमारना ४० लाख भवन एवेइंद्रना ७८ लाख भव नछे तेहनो आधिपत्य पणो अग्रगामीपणो भर्त्तपणो स्वामिपणो महाराजापणो आज्ञाप्रधान सेनानायकपणो सेवकपाहेंकरावतो थको आज्ञानीपरे पाल तोथको रहेछे। स्थविर श्री महावीर नो ८ मो अकंपित गणधर अठहोत्तर वर्षलगे सर्वायुपालीने सिद्धथया सर्वदुःख रहित थया गृहस्थपणें ४८ वर्ष छद्म

मग्गगामित्व मित्यर्थः भट्टित्तं ति भर्तृत्वं पोषकत्वं सामित्तं ति स्वामित्व स्वामिभावेन महत्तरगत्तं ...

मयगामित्व मित्यर्थः भट्टित्तं ति भर्तृत्वं पोषकत्वं सामित्तंति स्वामित्व ...

आज्ञाप्रधानसेनानायकत्वं कारेमाणेत्ति अनुनायकैः सेवकानां कारयन् पालेमाणेत्ति आत्मनापि पालयन् विहरइत्ति आस्ते अकंपितः स्थविरोमहावीरस्या

ष्टमोगणधर स्तस्य चाष्टसप्ततिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थपर्याये अष्टचत्वारिंशत् छद्मस्थपर्याये नव केवलि पर्यायेचैकविंशतिरिति उत्तरायणनियट्टेणंति

उत्तरायणादुत्तरदिग्गमना न्निवृत्तः उत्तरायणनिवृत्तः प्रारब्धदक्षिणायनइत्यर्थः सूरिएत्ति आदित्यः पढमाओमंडलाओत्ति दक्षिणदिग्गंगच्छतो रवे र्यत्प्रथम

तस्मा त्तनु सर्वाभ्यन्तरसूर्यमार्गात् एकूणचत्तालीसइमेत्ति एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले दक्षिणायनप्रथममण्डलापेक्षया सर्वाभ्यंतरमण्डलापेक्षयातु चत्वारिंशे

मउत्तरिंति अष्टसप्तति एगसट्ठि भाएत्ति मुहूर्त्तस्यैकषष्ठिभागान् दिवसखेत्तस्सत्ति दिवसलक्षणस्य क्षेत्रस्य दिवसस्येवेत्यर्थः निवुड्ढेत्तत्ति निर्वर्ह्याहापयित्वेत्य

र्थः तथारयणिखेत्तस्सत्ति रजन्याएव अभिनिवुड्ढेत्तत्ति अभिनिवर्ह्याच वर्द्धयित्वेत्यर्थः चारंचरइत्ति भ्राम्यतीत्यर्थः भावार्थोस्यैवं चन्द्रप्रज्ञप्तिवाक्यैरुपदर्श्यते

॥ मूल ॥

पिए अठहत्तरिंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उत्तरायणनियट्टेणं सूरिएपढमाउ मंडलाउ एगू

॥ भाषा ॥

स्थपणे ९ वर्ष केवलीपणे २१ वर्ष सर्वमिली ७८ थया । उत्तरदिग्ग गमन थकी निवर्त्यो प्रारंभ्यो छे दक्षिणायन पणो जेणे एहवो सूर्य पहिला मांडला थकी

एकोन चालीसमें मांडले एक मुहूर्तना अठहोत्तरि एकसठिया भाग दिवस लक्षण क्षेत्रने एतले दिवसने निवर्द्धीने घटाडीने रजनी लक्षण क्षेत्रने

रात्रिने अभिवर्द्धावीवधारीने चार चरेछे एतले आषाढी पूनिमे सर्वाभ्यंतर मंडले १८ मुहूर्त दिवसहोय तिवारे पछे दक्षिणायने सूर्यथयो तिवारे एक मुहूर्त्त

॥ टीका ॥

॥ १३५ ॥

जंबूद्वीपेवर्त्तेती सूर्यौ सर्वाभ्यन्तरमण्डलमुपसंक्रम्य चारंचरत स्तदा नवनवतियोजनसहस्राणि षट्चत्वारिंशदधिकानि योजनशतान्यन्योन्यमन्तरंकृत्वा चरत एतच्च जंबूद्वीपेपि यूत्तरं योजनशतं प्रविश्याभ्यंतरंमण्डलंभवति एतस्मिंश्च द्विगुणे जंबूद्वीपप्रमाणादपकर्षिते यथोक्तमन्तरंभवतीति तथा तत्रतयो श्चरतो रुत्कृष्टो ष्टादशमुहूर्त्तो दिवसो भवति जघन्यकाच द्वादशमुहूर्त्ताराविर्भवति ततोभ्यन्तरमण्डलान्निष्क्रम्य प्रथमेऽहोरात्रे भ्यन्तरानन्तरं मण्डलमुपसंक्रम्य यदा चारंचरत स्तदा नवनवतिर्योजनसहस्राणिषट्चपंचचत्वारिंशदधिकानि योजनशतानि पंचत्रिंशच्च एकषष्ठिभागायोजनस्यांतरंकृत्वा चारंचरत स्तदा च। ष्टादशमुहूर्त्तोदिवसो भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तस्यैकषष्टिभागाभ्यांन्यून: द्वादशमुहूर्त्ताचरात्रि भवति द्वाभ्यां मुहूर्त्तैकषष्टिभागाभ्यामधिकेत्येवं दक्षिणायनस्य द्वितीयादिषु मण्डले ष्वहोरात्रेषु चान्योन्यांतरं प्रमाणस्य पंचभि: पंचभिर्योजनै: पंचत्रिंशताचैकषष्ठिभागै र्योजनस्य वृद्धिर्वाच्या द्वाभ्यांच मुहूर्त्तैकषष्ठिभागाभ्यां दिनहानौ रात्रि वृद्धिश्चेति एवंच एकोनचत्वारिंशत्तमे मंडले सूर्ययोरन्तरं नवनवतिसहस्राण्यष्टशतानि सप्तपंचाशच्च योजनानां त्रयोविंशतिश्चैक षष्ठिभागा दिनप्रमाणं चाष्टादशानां मुहूर्त्तानां मध्या देकषष्ठिभागाना मष्टसप्तत्यां पातितायां षोडशमुहूर्त्ताश्चतुश्चत्वारिंशच्चैकषष्ठिभागामुहूर्त्तस्य रात्रे

॥ मूल ॥

णचत्तालीसइमे मंडले अठहत्तरिं एगसठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुढेत्ताणं चा

॥ भाषा ॥

माएकसठ भाग करी एहवा वेभेभाग प्रतिदिन दिनघटाडिये रात्रिवधारिये एकमासे २ घडी दिवसघटाडीये तो ३८ मे मांडले. एक योजनना एकसठीया ७८ भाग दिवस घट्यो रात्रीवधी।एमज सर्वबाह्य मंडलथको दक्षिणायनथको सूर्यनिवर्त्यो पाछोचाल्यो उत्तराभिमुखथयो तिवारे३८ मे मांडले सूर्य गयो एक मुहूर्त्तना एकसठिया ७८ भाग कह्या । दिवस वधारिये रात्रिघटाडिये दक्षिणायननोपरिभागघटाडीये वधारिये । इति ७८ संपूर्ण

सप्टसप्तत्यां विस्तायां त्रयोदशमुहूर्त्ता सप्तदशैकषष्टिभागावेति एवंदक्षिणायननियट्टेत्ति यथोत्तरायणनिवृत्त एकोनचत्वारिंशत्तमे मण्डले अष्टसप्तति मेकषष्ठिभागान् ह्रापयति वर्द्धयतिच एवंदक्षिणायननिवृत्तावपि सूर्यस्तान्ह्रापयति वर्द्धयतिच केवलं दक्षिणायने दिनभागान् ह्रापयति रात्रिभागां श्चवर्द्धयति इहतु दिनभागान् वर्द्धयति रात्रिभागांश्च ह्रापयति ॥ ७८ ॥ अथैकोनाशीतितमे स्थानके किंचिल्लिख्यते । तत्र वलयामुहस्सत्ति वड वामुखाभिधानस्य पूर्वदिग्व्यवस्थितस्य पायालस्सत्ति महापातालकलशस्याधस्तनचरमांता द्रत्नप्रभापृथ्वीचरमान्त एकोनाशीत्यासहस्रेषु भवति कथंरत्नप्रभा हि अशीति सहस्राधिकं योजनानां लक्षबाहल्यतो भवति तस्याश्चैकं समुद्रावगाह सहस्रं परिहृत्या धोलक्षप्रमाणावगाहो वलयामुखपातालकलशो भवति तत सचरमांतात् पृथिवी चरमांतो यथोक्तांतरमेव भवति एवमन्येपित्रयो वाच्या इति छट्ठीरित्यादि अस्यभावार्थः षष्ठपृथिवीहि बाहल्यतो योजनानां लक्ष ॥ टीका ॥

रंचरई एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ वलयामुहस्सणं पायालस्स हिट्ठिल्लाउ चरमंताउ ॥ मूल ॥

॥ ७८ ॥ हिवे ७९ मो लिखेछे । पूर्व समुद्र मांहि पाताल कलश वडवामुखनो हेठिलो चरिमांत भाग तेहथकी एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो हेठिलो चरिमांत एह ७९ हजार योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । रत्नप्रभा पृथिवी एक लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेमांहेथी एक सहस्र योजन समुद्र ऊंडोते काढीने १ लाख योजन पाताल कलशो छे तेकाढो तेहनो हेठलो विभाग लीजे तो पूठें ७९ हजार योजन उगरया जाणिवा । एमज दक्षिण समुद्रें केतु पाताल कलश २ पश्चिमे यूप ३ उत्तरे ईसर कलश ४ एह सगलानो हेठलोभाग अने रत्नप्रभानो हेठिलोचरमांत एह विचाले ७९ ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

षोडशसहस्राणि भवन्ति घनोदधय स्तु यद्यपि समापि प्रत्येकं विंशतिसहस्राणि स्यु स्तथाप्येतस्य ग्रंथस्य मतेन षष्ठ्या मसावेकविंशतिः संभाव्यते तदेवं ष ष्ठपृथिवीबाहल्यार्द्धमष्टपञ्चाशत्घनोदधिप्रमाणं चैकविंशति रित्येव मेकोनाशीति र्भवति ग्रंथांतरमतेन तु सर्वघनोदधीनां विंशतियोजनसहस्रवाहल्यत्वा त्वं षमीमाश्रित्येदं सूत्रमवसेयं यत स्तद्बाहल्यमष्टादशोत्तरं लक्षमुक्तं यतआह पढमाशीइसहस्सा १ वत्तीसा २ अट्ठवीस ३ वीसाय ३ अट्ठार ५ सोल ६ अ ट्ठय ७ सहस्सलक्खोवरिंकुज्जत्ति ॥ १ ॥ अथवा षष्ठ्याः सहस्राधिकोपि मध्यभागो विवक्षित एव मर्थसूचकत्वा द्दहुशब्दस्येति तथाजम्बूद्वीपस्य जगत्या खल्वा रिद्वाराणि विजयवैजयंतजयंतापराजिताभिधानानि चतुश्चतुर्योजनविष्कम्भानि गव्यूतपृथुलद्वारशाखानि क्रमेण पूर्वादिषु दिक्षु भवन्ति तेषांच द्वारस्यचद्वा

॥ मूल ॥

इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं केउ स्सवि जूयस्सवि ईसरस्सवि छठीए पुढवीए वहुमज्झदेसभायाउ छठस्स घणोदहिस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासीतिजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणा

॥ भाषा ॥

हजार योजन अंतरो जाणिवो। छट्ठी नरक पृथिवीना बहुमध्य देशभागथकी एतले छट्ठीनो जाडपणो १ लाख १६ हजार योजनछे तेहनो मध्यभाग ५८ हजार योजन छट्ठी पृथिवीनो घनोदधि यद्यपि २० हजारनो छे तोहो पणि इहां २१ हजार योजन घनोदधि एह ७९ हजार योजन आवाधाये विचा ले आंतरो कह्यो। एतले छट्ठीनो मध्यभाग ५८ हजार योजन अने २१ घनोदधि सर्वमिलो जे एह ग्रंथने मते एतले तेहनो हेठिलो चरमांत ७९ हजार योजन थयो। एह २१ हजार योजन घनोदधि पिंड परिमाण कह्यो। तेएहने मते छट्ठीयेज कहिवो अन्यथा सात नरकने हेठे घनोदधि पिंड २० हजार

॥ टीका ॥

रस्य चान्योन्यं मित्यर्थः एसणंति एतद्देकोनाशीतियोजनसहस्राणि सातिरेकाणी त्येवंलक्षण मबाधया व्यवधानेन व्यवधानरूप मित्यर्थान्तर मप्रमं कथं ज म्बूद्वीपपरिधेः ३१६२२७ योजनानि क्रोशाः ३ धनूंषि १२८ अंगुलानि १३ सार्द्धानीत्येवं लक्षणस्यापंकर्षितद्वारशाखाविष्कम्भस्य चतुर्विभक्तस्यै वंफलत्वादिति ॥ ७९ ॥ अथाशीतितमस्थानके किञ्चिल्लिख्यते । श्रेयांसएकादशाजिन स्त्रिपृष्टः श्रेयांसजिनकालभावीप्रथमवासुदेवः अचलःप्रथमबलदेवोपि तथा त्रिपृष्टवा

॥ मूल ॥

सीइं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७९ ॥ सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणू इं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था तिविठ्ठेणं वासुदेवे असीइंधणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था अयलेणं बलदेवे असीइंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था तिविठ्ठेणं वासुदेवे असीइवाससयसहस्साइं महाराया होत्था आउवकुले कंठे असीइजोय

॥ भाषा ॥

योजन कहिवो । जंबूद्वीप नो जगतीना ४ द्वारछे पूर्वादिकें विजय १ वैजयंत २ जयंत ३ अपराजित ४ एकेक दरवाजो चार २ योजन पिहुलोछे । चार दरवाजानो परस्पर अंतर कांइक अधिक ७९ हजार योजननोछे । जंबूद्वीपनीपरिधी ३१६२२७ योजन त्रिणगाऊ १२८ धनुष १३ अंगुल एतला मांहीथी ४ दरवाजानो पिहुलपणो काढीयें पूठे उगरया योजन चिहुं भागदीजेतो दरवाजानो आंतरो पामिये । इति ७९ मो संपूर्ण ॥ ७९ ॥ हिवे ८० मो लिखेछे । श्रेयांस इग्यारमा अरिहंत ८० धनुष ऊंचा ऊंचपणे हुया । श्रेयांस जिननेवारे त्रिपृष्ट वासुदेव पहिलो ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो । पहिलो अचल बलदेव ८० धनुष ऊंचो ऊंच पणे थयो । त्रिपृष्ट वासुदेव ८० हजार वर्ष लगे महाराज हुया ४ लाख वर्ष महाकुमारपणे बीजाराज्याव स्थायें सर्वायु ८४ लाखवर्ष आणिवो । रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी १ लाख ८० हजार योजन जाडपणेछे तेहनां ३ कांडछे । प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन

॥ १३१ ॥

॥ टीका ॥

सुदेवस्य चतुरशीतिवर्षसहस्राणि सर्वायुरिति चत्वारिंशत्वाखिकुमारत्वे शेषंतुमहाराज्येइति आउबहुलत्यादि किलरत्नप्रभाया अशीत्युत्तरयोजनलक्षबाहल्याया स्त्रीणिकांडानि भवन्ति तत्र प्रथमं रत्नकांडं षोडशविधरत्नमयं षोडशसहस्रबाहल्यं द्वितीयं पंककांडं चतुरशीतिसहस्रमानं तृतीय मब्बहुलकांड मशीतिर्योजनसहस्राणीति जंबूद्वीवेणमित्यादि ओगाहित्तत्ति प्रविश्य उत्तरकट्ठोवगयत्ति उत्तरां काष्ठांदिश मुपगत उत्तरकाष्ठोपगत: प्रथममुदयं करोति सर्वाभ्यन्तरमंडले उदेतीत्यर्थ: ॥ ८० ॥ अथैकाशीतिस्थानके किंचिदुच्यते। नवमनवमिकेति नवनवमानि दिनानि यस्यां सा नवनवमिका भवति नवसु नवकेषु नवनवमदिनानि तस्यांच भिक्षुप्रतिमाया मेकाशीति रात्रिंदिनानि भवंत्येवं नवानां नवकाना मेकाशीतिरूपत्वा त्तथा प्रथमेनवके प्रतिदिनमेकै

॥ मूल ॥

णसहस्साइं बाहल्लेणं प० ईसाणस्सदेविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणियसाहस्सीओ प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे असी उत्तरं जोयणसयं ओगाहेत्ता सूरिए उत्तरकठोवगए पढमं उदयं करेई ॥ ८० ॥ नवनवमियाणं

॥ भाषा ॥

जाडपणे। सोलेभेदे रत्नमय १ बीजो पंक कांड ८४ हजार योजन। त्रीजो अप बहुलकांड ८० हजार योजन जाडपणेकह्यो। ईशानेंद्र बीजो इन्द्र देवतानो राजा तेहना ८० हजार सामानिकदेवता आपणसारिखा कह्या। जंबूद्वीपनी जगतीने मांहीले पासे एकसो असी योजनलगी अवगाहीने प्रवेशकरीने सूर्य उत्तरदिशि भणी सनिमुख थयोथको सर्वाभ्यंतर मांडले आषाढा पूनिम दिने निषध पर्वतने माथेप्रथम उदय करे। इति ८० ठाणुं संपूर्ण ॥ ८० ॥ हिवे ८१ मोठाणुं लिखेछे। पहिला नवदिनलगे एकेको भिक्षा बीजा ९ दिन लगे २ भिक्षा एमनवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारीये नवनवमिका भिक्षुप्रतिमा एकासी दिने पूरीथाय। नवनवक लगे प्रतिदिन एकेक भिक्षावधारतां ८१ दिने मिली चार से पांच अधिक भिक्षायें दातेंकरी यथासूत्र क

भाभिधा एवमेकोत्तरया वृद्धा नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिधाध्ययतानि भवन्तीत्यतउक्तं चउहियेत्यादि इहच भिधाशब्देन ॥ टीका ॥
भाभिधा एवमेकोत्तरया वृद्धा नवमेनवके नवनवेति सर्वासां पिण्डने चत्वारिपञ्चोत्तराणि भिधाध्ययतानि भवन्तीत्यतउक्तं यथामार्गं यथातत्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्तिता
इतिरभिप्रेता यथासुत्तंति यथासूत्रं सूत्रानतिक्रमेण जावत्तिकरणा द्यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्तिता
आराधिता राधिते तिद्रष्टव्यं विवाहपन्नत्तीएत्ति व्याख्याप्रज्ञप्त्या मेकाशीति र्महायुग्मशतानि प्रज्ञप्तानि इहच शतशब्देना ध्ययना न्युच्यन्ते तानि कृतयुग्मा
दिराशिविशेषविचाररूपाणि अवांतराध्ययनस्वभावानि तदवगमावगम्यानीति ॥ ८१ ॥ अथद्व्यशीतिस्थानके किमपिलिख्यते । तत्र ज
म्बूद्वीपे द्व्यशीतिद्व्यशीत्यधिकंमण्डलशतम् सूर्यस्य मार्गशतं तद्भवतीति वाक्यशेषः किम्भूतं यत् सूर्योद्विःकृत्वो द्वौवारौ संक्रम्य प्रविश्य चारंचरति तद्यथानि

निस्कुपक्कमा एक्कासीइराइंदिएहिं चउहियपंचुत्तरेहिं भिक्खासएहिं अहासुत्तं जाव आराहियाकुंथुस्सणं ॥ मूल ॥
अरहत्त एक्कासीतिं मणपज्जवनाणिसया होत्था विवाहपन्नत्तीए एकासीतिमहाजुम्मसया प० ॥ ८१ ॥
जंबू द्दीवेद्दीवे वासीयं मंडलसयं जंसूरिए दुक्खुत्तो संकमित्ताणं चारंचरइ तं० निक्खममाणेय पविसमाणेय

हेके सूत्रोक्त विधिमार्गे आराधी होय । कुंथुनाथ सतरमा अरिहंतने ८१ शत मनपर्यवज्ञानी थया । व्यवहार पन्नतीने विषे ८१ शत महायुग्म कह्या । इहां ॥ भाषा ।
शत शब्दे अध्ययन कह्याछे युग्मशब्दे गणितराशि विशेष एतले ८१ ठाणूं संपूर्ण ॥ ८१ ॥ हिवे ८२ ठाणो लिखेछे । जंबूद्वीप ने विषे १८२ मां
डला सूर्यनाछे यद्यपि जंबूद्वीप मांही ६५ मांडलाछे परं बाह्य मांडले पणि जंबूद्वीप संबंधी सूर्यनो चार छे तेमाटे जंबूद्वीप बाहिरला ११८ मांडला पणि
जंबूद्वीपमा कह्या । ते १८२ मांडला सूर्य बे वेला संक्रमी प्रवेश करी चारचरे अने एतले १४८ मांडलाछे तेमांहि निषध उपरलो सर्वाभ्यंतर मांडलो अने

॥ टीका ॥

ऽत्रामेव जंबूद्वीपात् प्रविशंश्च जंबूद्वीपएवेति अयमत्र भावार्थः किल चतुरशीत्यधिकं सूर्यमंडलशतं भवति तत्र सर्वाभ्यन्तरे सर्वबाह्ये सकृदेवसंक्रामति शेषाणि तु द्वौवारावितिति इहच द्व्यशीतिविवचयै वेदं द्व्यशीतिस्थानके ऽधीत मितिभावनीयं यद्यपि जंबूद्वीपे पञ्चषष्ठिरेव मंडलानां भवति तथापि जंबूद्वीपादिकसूर्य चारविशयत्वा च्छेशाण्यपि जंबूद्वीपेन विशेषितानीति समणे इत्यादि आषाढस्यशुक्लपक्षषष्ठ्यामारभ्यद्व्यशीत्यांरात्रिंदिवेष्वतिक्रांतेषु त्र्यशीतितमेवर्त्तमाने अश्वयुजः कृष्णत्रयोदश्या मित्यर्थः गर्भात् गर्भाशया द्देवानंदाब्राह्मणो कुक्षित इत्यर्थः गर्भं त्रिशलानिधानक्षत्रियाकुक्षिं संहृतो नीतो देवेंद्रवचनकारिणा ह रिणैगमेष्यभिधानदेवेनेति इदं च सूत्रे द्व्यशीतिरात्रिंदिवान्यविकल्प्य द्व्यशीतिस्थानकेऽधीयते त्र्यशीतितमं रात्रिंदिवमाश्रित्य तु त्र्यशीतितमस्थानके इति महा

॥ मूल ॥

समणेभगवंमहावीरे बासीएराइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं गप्भाउ गप्भं साहरिए महाहिमवंतस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंत एसणं बासीइंजोयणसयाइं अबाहाए अंतरेप०

॥ भाषा ॥

समुद्रमांहिलो छेहिलो सर्वाभ्यंतर मांडलो सूर्य एकवेला चरिसे एक कर्क संक्रांतियें शेष थाकता १८२ मांडला बेवेलाफिरस्ये सर्वाभ्यंतर मांडलाथकी जंबूद्वीपे निकलतो एकवेलां जंबूद्वीप मांही पैसतो एम बेवेला १८२ मांडला सूर्यचरे भ्रमे गगने फिरे। श्रमण भगवंत श्रीमहावीर आषाढ शुक्ल षष्ठी थकी मांडी ८२ रात्रिदिवसव्यतिक्रमे थके ८३ मीरात्री वर्ततेथके आशोजवदी १३ नीरात्रीयें देवानंदानो कूखथकी गर्भ त्रिशला देवीनो कूखविषे हरिणैगमे षी देवतायें साहर्यो पहुंचाव्यो ॥ महाहिमवंत बीजो वर्षधर पर्वत २०० योजन ऊंचो छे ते महाहिमवंतनो उपरलो चरमांत छेहल्यो प्रदेश तेह थकी मांडी रत्नप्रभाना सौगंधिक कांडनो हेठिलो चरमांत एह ८२ शत योजन आबाधायें बिचाले आंतरोकह्यो। कांड दूजो अपबहुल ३ तेमांही पहिलो कांड

॥ टीका ॥

हिमवतो द्वितीयवर्षधरपर्वतस्य योजनशतद्वयोच्छ्रितस्य उवरिल्लाओ त्ति उपरिमा चरमांतात् सौगन्धिककांडस्या धस्तनचरमान्तो द्व्यशीतिर्योजनशतानि
बाधं रत्नप्रभापृथिव्यां हि त्रीणि कांडानि खरकांडं पंककांडमब्बहुलकांडं चेति तत्र प्रथमं काण्डं षोडशविधं तद्यथा रत्नकांडं १ वज्रकांडं २ एववैडूर्यं ३ लो
हिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगन्धिक ८ ज्योतीरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११ रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ रिष्टकांडंचे
ति १६ एतानि च प्रत्येकं सहस्रप्रमाणानि ततश्च सौगंधिककांडस्या ष्टमत्वा दशीति शतानि द्वे च शते महाहिमवदुच्छ्रय इत्येवं द्व्यशीतिशतानीति
एवं रुक्मिणो पि पञ्चमवर्षधरस्य वाच्यं महाहिमवत्समानोच्छ्रयत्वात्तस्येति ॥ ८२ ॥ अथ त्र्यशीतितमस्थानके किमपि लिख्यते । इह शीतलजिन
स्य त्र्यशीतिर्गणा स्त्र्यशीतिर्गणधरा उक्ता आवश्यकेत्वेकाशीतिरितिमतांतरमिदमिति तथा स्थविरोमंडितपुत्रो महावीरस्य षष्ठोगणधरः तस्य चत्र्यशीतिवर्षा

॥ मूल ॥

एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ समणेभगवंमहावीरे वासीइ राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए
राइंदिए वट्टमाणे गब्भाउ गब्भं साहरिए सीयलस्सणं अरहउ तेसीइगणा तेसीइगणहरा होत्था थेरेणं मंडि

॥ भाषा ॥

१६ भेदे रत्नकांड १ वज्रकांड २ एम वैडूर्य कांड ३ लोहिताक्ष ४ मसारगल्ल ५ हंसगर्भ ६ पुलक ७ सौगंधिक ८ ज्योतिरस ९ अंजन १० अंजनपुलक ११
रजत १२ जातरूप १३ अंक १४ स्फटिक १५ मसारगल्ल १६ एह १६ कांड प्रत्येकें १ सहस्र योजन प्रमाणछे तोसौगंधिक कांड आठमो तो आठ कांड मि
लीने ८० शत योजनथया अने वेसे योजन महाहिमवंत ऊंचोछे सर्वएकठा करतां ८२ शत योजनथया। इति ८२ मो ठाणोथयो ॥ ८२ ॥ हिवे
८३ मो लिखेछे। श्रमण भगवंत महावीर ८२ रात्रीदिवस गयेथके ८३ मी अहोरात्रि वर्त्ततां थकां देवानंदाना गर्भ थकी त्रिशलाने गर्भे साहस्या हरिणे

॥ १३९ ॥

॥ टीका ॥

चि सर्वायुः कथं त्रिपञ्चाशद्गृहस्थपर्याये चतुर्दश छद्मस्थपर्याये षोडश केवलित्वइत्येवं त्र्यशीतिरिति तथा कोशलिएत्ति कोशलदेशेभवः कौशलिकः तेसीइंति विंशतिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे त्रिषष्ठिराज्ये इत्येवं त्र्यशीतिः तथा भरतश्चक्रवर्त्ती सप्तसप्ततिः पूर्वलक्षाणि कुमारत्वे षट्चक्रवर्त्तित्वे इत्येवंत्र्यशीतिमगारवासम ध्युष्य जिनोजातः राज्यावस्थस्यैव रागादिजयात्केवली संपूर्णासहायविशुद्धज्ञानादिजययोगात्सर्वज्ञो विशेषबोधा त्सर्वभावदर्शी सामान्यबोधात्ततः पूर्वलक्षं

॥ मूल ॥

यपुत्ते तेसीइंवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे उसन्नेणं अरहा कोसलिए तेसीइपुव्वसयसहस्सा इं अगारमज्झे वसित्ता मुंडेभवित्ता णं जावपव्वइए भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी तेसीइपुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी ॥ ८३ ॥ चउरासीइनिरया वास

॥ भाषा ॥

गमेसीये पहुंचाड्या। शीतलनाथ दशमा अरिहंत ने ८३ गणधर आवश्यकें ८१ कह्या ये मतांतरछे। स्थविर मंडित पुत्र छठ्ठो महावीरनो गणधर ८३ वर्षल गे सर्वायुपालीने सिद्धथयो सर्वदुःख रहित थयां ५३ वर्ष गृहस्थपणें १४ वर्ष छद्मस्थपणें १६ केवलीपर्याये सर्वमिली ८३ वर्ष थया। ऋषभ आदिनाथ अरि हंत कोसल देशमा उपना ८३ हजार पूर्वलगे गृहस्थावास मांहो वसीने द्रव्यभावभेदें मुंडथयोने अगार गृहस्थथकी अणगारी यतीपणुं पाम्या। २० लाख पूर्व कुमारपणें ६३ लाख पूर्व राज्याश्रमें एवं ८३ लाख पूर्व वर्ष। भरत राजा श्रीआदिनाथनो पुत्र प्रथम चिहुंदिशिना अंतनोधणी चक्रवर्ती एहवा ७७ लाख पूर्व कुमारपणें ६ लाख पूर्व चक्रवर्ती पणे एवं ८३ लाख पूर्व लगे गृहस्थमांहीवसीने गृहस्थपणे जिनथया। राग द्वेषनो जयकरे तेजिन केवली असहज्ञान् जेहनेछेते केवली विशेष जाणें ते सर्वसामान्य बोधथकी सर्वभावदर्शी थया। इति ८३ मो समवाय थयो ॥ ८३ ॥ हिवे ८४ मो समवायलिखेछे।

॥ टीका ॥

प्रव्रज्याग्रहणपूर्वकं केवलित्वेन विहृत्य सिद्ध इति ॥ ८३ ॥ चतुरशीतिस्थानके किमपि लिख्यते। चतुरशीति नरकलक्षाण्यमुना विभागेन तीसा यपणवीसा २ पणरस ३ दसेव ४ तिन्निय ५ हवंति पंचूणसयसहस्सं पंचेव ७ अनुत्तरानिरयत्ति ॥ १ ॥ श्रेयांसएकादशस्तीर्थंकरः एकविंशतिर्वर्षलक्षाणि कुमारत्वे तावंत्येव प्रव्रज्यायां द्विचत्वारिंशद्राज्ये इत्येवं चतुरशीतिमायुः पालयित्वा सिद्धः तथा तिविट्ठुत्ति प्रथमवासुदेवः श्रेयांसजिनकालभावीति अप्रतिष्टा

॥ मूल ॥

सयसहस्सा प० उसभेणं अरहा कोसलिए चउरासीइं पुव्वसयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे एवं भरहो बाहुबली बंभी सुंदरी सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वाससयसहस्साइं सव्वाउयंपालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे तिविट्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वाससयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइठाणे नरए नेरइ

॥ भाषा ॥

सातें नरक मिली ८४ लाखनरकावासा कह्या। पहिलीयें ३० बीजीये २५ त्रीजीये १५ चौथीये १० पांचमीये ३ छट्ठीये ५ ऊंणा १ लाख सातमीये ५ एवं ८४ लाख थया। आदिनाथ अरिहंत कोसल देशना ऊपना ८४ लाख पूर्व लगे सगलो आऊखोपालीने सर्वदुःख प्रचीण थया। २० लाख पूर्व कुमारपणे ६३ लाख पूर्व राज्यपणे १ लाख पूर्व तीर्थंकर पणें एवं ८४ लाख पूर्व थया। एमज भरतचक्रवर्ती आदिनाथनोपुत्र सुमंगला जातक बाहुबली नंदाजातक आदीश्वर नो पुत्र ब्राह्मी सुमंगलाजातक आदिनाथनी पुत्री सुंदरी सुनंदा जातक आदिनाथनी पुत्री एहचार ८४ लाख पूर्व आयुपाली सिद्ध थया। श्रेयांस ११ मा अरिहंत २१ लाख वर्ष कुमारपणें ४२ लाख वर्ष राज्यपणें २१ लाख वर्ष दीक्षा एवं ८४ लाख वर्ष लगे सगलो आयूपाली सिद्धथया। सर्वदुःखःथी प्रचीणथया

॥ टीका ॥

मी नरकः सप्तमपृथिव्यां पञ्चानां मध्यम इति तथा समाणियत्ति समानर्द्धयः तथा बाहिरयत्ति जंबूद्वीपकमेरुव्यतिरिक्ता चत्वारो मन्दरा चतुरशीतिः सह स्राणि प्रज्ञप्ताः अंजणगपव्वयत्ति जंबूद्वीपा दष्टमे नन्दीश्वराभिधाने द्वीपे चक्रवालविष्कम्भमध्यभागे पूर्वादिषुदिक्षुचत्वारोंजनरत्नमया अञ्जनपर्वताः हरि प्रासेत्यादि चत्तारियभागजोयणस्सत्ति एकोनविंशतिभागा इहार्थेगाथार्द्धं धणुपिट्ठकलचउक्कं चुलसीइसहस्ससोलसहियत्ति तथा पंकबहुलंकाण्डं द्वितीयं

॥ १४० ॥ ॥ मूल ॥

यत्ताए उववन्ने सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणियसाहस्सीउ प० सव्वेविणं बाहिरया मंद रा चोरासीइं जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं धणुपिठा चोरासी चोरासी जोयणसहस्साइं सो लसजोयणाइं चत्तारियन्नागा जोयणस्स परिक्खेवेणं प० पंकबहुलस्सणं कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ

॥ भाषा ॥

त्रिपृष्ट पहिलो वासुदेव श्रेयांस जिन काल भावी ८४ लाख वर्ष परमायुपाली ने सातमीये ५ नरकावासा छे तेमांही बिचले अपइट्ठाण नरकावासेनारकी पणे उपनो । पहिला देवलोकनो राजा शक्रेंद्र देवेंद्र देवराजाना ८४ सहस्रसामानिक देवता कह्या । जंबूद्वीप संबंधी सुदर्शन मेरुटाली बीजाससलाधातकी खंडना २ पुष्करार्द्धना २ मेरु चौरासी चौरासीहजारयोजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या । १ सहस्र योजन ऊंडा छे सर्वमिली ८५ हजार योजननाथाय जंबूद्वी पथकी आठमे नंदीश्वर द्वीपे चक्रवाल मध्यभागें पूर्वादिक चिहुंदिशि ४ अंजनक पर्वत छे चारोअंजनक पर्वत चौरासी २ सहस्र योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या । १ सहस्र योजन ऊंडा सर्वमिली ८५ हजारना । हरिवर्षनोजो रम्यकपांचमो तेहनो धनुवर्ती प्रत्यंचा चौरासी चौरासी सहस्र योजन उपरि सोले योजन उपरि चारभाग एकयोजनना परिक्षेपे परिधीयें कही । रत्नप्रभायें त्रिणकांडछे तेमांही पंकबहुल बीजोकांडतेहनो उपरलो चरमांत छेहलो

॥ टीका ॥

तस्यच बाहल्यं चतुरशीतिः सहस्राणीति यथोक्त सूत्रार्थ इति तथा व्याख्याप्रज्ञप्त्यां भगवत्यां चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेण पदपरिमाणेन इहच यत्रार्थोपलब्धि स्तत्पदं मतान्तरेणतु अष्टादशपदसहस्रपरिमाणत्वादाचारस्य एतद्द्विगुणद्विगुणत्वाच्च शेषाङ्गानां व्याख्याप्रज्ञप्तिर्द्विलक्षे अष्टाशीतिः सहस्राणि पदानाभवन्तीति तथा चतुरशीति र्नागकुमारा वासलक्षाणि चतुश्चत्वारिंशतो दक्षिणायां चत्वारिंशच्चोत्तरायां भावादिति चतुरशीतिर्योनयोजीवोत्पत्ति स्थानानि तएव प्रमुखानिद्वाराणियोनिप्रमुखानि तेषां शतसहस्राणि लक्षाणि योनिप्रमुखशतसहस्राणि प्रज्ञप्तानि कथं पुढविदगअगणिमारुय एक्केक्केसत्त जोणिलक्खाओ वणपत्तेयअणंते दसचउदसजोणिलक्खाओ विगलिंदिएसुदोदो चउरोचउरोयनारयसुरेसु तिरिएसुहोंतिचउरो चोद्दसलक्खाउमणुएसुत्ति २

॥ मूल ॥

हेठिल्ले चरमंते एसणं चोरासीइजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० विवाहपन्नत्तीए णं भगवतीए चउरासीइं पयसहस्सा पदग्गेणं प० चोरासीइनागकुमारावाससयसहस्सा प० चोरासीइपइन्नगसह

॥ भाषा ॥

प्रदेश तेहथकी हेठिलो चरमांत एह ८४ सहस्र योजनकह्यो । पांचमोअंग विवाहपन्नती भगवती सूत्रने विषें ८४ पदनां सहस्र छे पदाग्रे पदने परिमाणें जिहां अर्थनी समाप्ति होय तेपद कहीये मतांतरें आचारांगना १८ सहस्र पदछे पछे आगल्ये २ अंगे बेगुणा २ कीजे तिवारे पांचमे अंगे २ लाख ८८ हजार पद थाय । नाग कुमारना दक्षिण दिशनाभवन ४४ लाख उत्तरदिशि ४० लाख सर्वमिली नागकुमारावासा ८४ लाख कह्या । ८४सहस्र पइन्ना यतीना कीधा ग्रंथविशेष कह्या । ८४ लाख जीवायोनि जीवना उत्पत्तिस्थानक तेहीजछे प्रमुखद्वार जिहां ७ लाख पृथिवी काय इत्यादिक यद्यपि जीवोत्पत्तिस्थानक असंख्यातछे पणि समान वर्ण गंध रस स्पर्श होय ते एक योनिकही । पूर्वछे आदि प्रथम अने शीर्षप्रहेलिका आंक पर्यवसान छेह

॥ टीका ॥

इहचजीवोत्पत्तिस्थानानामसंख्येयत्वेपि समानवर्ण गन्धरसस्पर्शानां तेषामेकत्वविवक्षणा नयथोक्त योनिसंख्याव्यभिचारोमन्तव्य इति पुव्वाइयाणमित्यादि पूर्वमादिर्येषांतानि पूर्वादिकानि तेषां शीर्षप्रहेलिकापर्यवसाने येषान्तानि शीर्षप्रहेलिकापर्यवसानानि तेषांस्वस्थानात् पूर्वपूर्वस्थानादुत्तरोत्तरस्य संख्या स्थानस्योत्पत्तिस्थानात् संख्याविशेषलक्षणात् गुणनीयादित्यर्थः स्थानान्तराणि अनन्तरस्थानान्यव्यवहितसंख्याविशेषा गुणकारनिष्पन्ना येषु तानि स्वस्थान स्थानान्तराणि क्रमव्यवहितसंख्यानविशेषा इत्यर्थः अथवा स्वस्थानानिच पूर्वस्थानानि स्थानांतराणिच अनंतरस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि अथवास्वस्थाना त् पूर्वाङ्गलक्षणात् स्थानांतराणि विलक्षणस्थानानि स्वस्थानस्थानांतराणि तेषां चतुरशीत्यालक्षै रितिशेषः गुणकारोभ्यासराशिः प्रज्ञप्तः तथाहि किल चतुरशीत्यालक्षैः पूर्वाङ्गंभवतीति स्वस्थानांतरादेवचतुरशीत्यालक्षै गुणितं पूर्वमुच्यते तच्च स्थानान्तरमिति एवं पूर्वस्वस्थानांतरादेव चतुरशीत्यालक्षै गुणित मनन्तरस्थानं त्रुटिताङ्गाभिधान भवतीति इहसंग्रहगाथे पुव्वतुडियाडडावइ जहुयतहउप्पलेयपउमेय नलिणत्थिनिउरअउय नउएपउएयनायव्वो ॥ १ ॥ चू लियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअंगसंजुत्ता अठ्ठावीसंठाणा चउणउयंहोइठाणसयंति ॥२॥ अभिलापाश्चैषां पूर्वाङ्ग म्पूर्वं त्रुटितांगंत्रुटित मित्यादि रिति चउ रासीतिमित्यादि इहविभागोयं बत्तीसअठ्ठवीसा वारसअठचउरोसयसहस्सा आरेणवंभलोगो विमाणसंख्याभवेएसा १ पंचासचत्तछच्चेव सहस्सालंतसुक्कसहस्सारे

॥ मूल ॥

स्साइं प० चोरासीइं जोणिप्पमुहसयसहस्सा प० पुव्वाइयाणं सीसपहेलियापज्जवसाणाणं सठाणठाणंत

॥ भाषा ॥

डे छे स्वस्थानक थकी स्थानांतरे २ चौरासी आंके गुणाकार करतां छेहडे शीर्षप्रहेलिका आवे पहिलूं स्वस्थानक पोतानूंस्थानक पूर्वांगतेह ८४ लाख वर्ष होय । ते ८४ लाख गुणोकरीये स्थानांतरे तिवारे त्रुटितांग होय । इहां संग्रह गाथा । पुव्वतुडियाडडावहु जहुयतहउप्पलेयपउमेय । नलिणत्थिनिउरअनु

॥ टीका ॥

सयचउरोश्राणय पाणएसुतिन्नारणच्चुयश्रो ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठ्ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवश्रणुत्तरविमाणत्ति ॥ भवंतीति मक्खायंति एतानि
विमानान्येवश्रवन्ति इतिहेतो राख्यातानि भगवता सर्वज्ञत्वात् सत्यवादित्वा च्चेति ॥ ८४ ॥ अथ पञ्चाशीति स्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्राचारस्य

॥ मूल ॥

राणं चोरासीए गुणकारे प० उसभस्सणं अरहउ कोसलियस्स चउरासीइगणा चउरासीइगणहरा होत्था

उसभस्सणं अरहउ कोसलियस्स उसभसेण पामोक्खाउ चउरासीइ समणसाहस्सीउ होत्था सव्वेविचउरा

सीइ विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइं च सहस्सा तेवीसं च विमाणा भवंतीतिमक्खायं ॥ ८४ ॥

॥ भाषा ॥

रानउएपउएयनायव्वो । चूलियसीसपहेलिय चोद्दसनामाउअंग संजुत्ता । अट्ठावीसंठाणा चउणउयंहोइठाणसयं ॥ एम चौदेठामे ८४ लाख ८४ लाख गुणाकरे
करतां करतां छेहडे शीर्ष प्रहेलिका आवे तिहां १८४ आंक आवे । आदिनाथ अरिहंतने ८४ गणधर ८४ गच्छ हुआ। कोसलदेसना उपना आदिनाथ अरिहं
तने ऋषभसेन प्रमुख ८४ श्रमणयतीनी संपदा हुई । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान ईशान देवलोके २८ लाख त्रीजे १२ चौथे ८ पाचमें ४ लाख छट्ठे ५०
सहस्र सातमें ४० हजार आठमे ६० सहस् नोमेंदसमे मिली ४०० इग्यारमे बारमें मिली ३०० ग्रैवेयक पहिलेत्रिके १११ मध्यत्रिके १०७ उपरिलेत्रिके १०० वि
मान । पांचे अनुत्तरविमाने ५ । १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तरविमान मिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ विमान भगवंते कह्या । इति ८४ समवाय
थयो ॥ ८४ ॥ हिवे ८५ मो लिखेछे। आचारांग सूत्रना चूलिका सहितना ८५ उद्देसण काल कह्या प्रथम श्रुतस्कंधे ९ अध्ययन छे पहिले

॥ टीका ॥

प्रथमांगस्य नवाध्ययनात्मकप्रथमश्रुतस्कन्धरूपस्य सचूलियागस्स इति द्वितीयेहि तस्य श्रुतस्कन्धे पञ्चचूलिका स्तासुच पञ्चमी निशीथाख्ये ह नस्य इते भिन्नप्र स्थानरूपत्वात्तस्या स्तदन्या स्तस्त्र स्तासुच प्रथमद्वितीये सप्तसप्ताध्ययनात्मिके तृतीयचतुर्थ्यौ चैकैकाध्ययनात्मिके तदेवं सह चूलिकाभिर्वर्त्तत इति सचूलि

॥ १४२ ॥ काका स्तस्यपञ्चाशीति रुद्देशनकाला भवन्तीति प्रत्यध्ययनं उद्देशनकालाना मेतावत्त्वं स्यत्वा त्तथाहि प्रथमश्रुतस्कन्धे नवस्वध्ययनेषु क्रमेण सप्त षट् चत्वार चत्वारः षट् पञ्च अष्ट चत्वारः सप्त चेति द्वितीयश्रुतस्कंधेतु प्रथमचूलिकायां सप्तस्वध्ययनेषु क्रमेण एकादश त्रय स्त्रयः चतुर्षु द्वौ द्वौ द्वितीयायां सप्तैकस राणि अध्ययनान्येवं तृतीयैकाध्ययनात्मिका एवं चतुर्थ्यपीति सर्वमीलने पञ्चाशीतिरिति तथा धातकीखंडमन्दरौ सहस्रमवगाढौ चतुरशीति सहस्राण्यु च्छ्रि ताविति पञ्चाशीतिर्योजनसहस्राणि सर्वाग्रेण भवतः पुष्करार्द्धमन्दरावप्येवं नवरं सूत्रेनाभिहितौ विचित्रत्वात्सूत्रगते रिति तथा रुचको रुचकाभिधानस्त्रयो

॥ मूल ॥

आयारस्सणं भगवऊ सचूलियागस्स पंचासीइ उद्देसणकाला प० धायइखंडस्सणं मंदरस्स पंचासीइजोयण

॥ भाषा ॥

अध्ययने ७ उद्देशा बीजे ६ त्रीजे ४ चौथे ४ पांचमे ६ छट्ठे ५ सातमे ८ आठमे ४ नोमे ७ सर्वमिली प्रथम श्रुतस्कंधे ५१ उद्देशा। बीजे श्रुतस्कंधे ५ चूलिका तेमांहि पांचमी निशीथ नामे ते इहां नथही बीजी ४ ग्रही तेमांहिली बीजी चूलिका मांहि सात सात अध्ययन तेमांहीपहिली चूलिकाना साते अ ध्ययने अनुक्रमे ११ त्रिण त्रिण चिहुंअध्ययने वेवे उद्देशा एवं उद्देशा २५ पहिली चूलिकायें अने बीजी चूलिकायें सातएकसराअध्ययन त्रीजी चौथी चू लिकायें एक एक अध्ययनना सर्व मिली ८५ उद्देशण कालाथया। ८५ उद्देशानोधडो पूरी २५ मे समवायांगे मेलयोछे। पूर्वापरधातकी खंडे वेमेरुपर्वतछे ते वे मेरुपर्वत ८५ सहस्र योजन सर्वाग्रे सर्वपरिमाणिकह्या एकसहस्र योजनऊंडा ८४ सहस्र ऊंचा सर्वमिली ८५ सहस्रथया। एम पुष्करार्द्धे पणि कह्या।

दृश्यद्वीपान्तर्गतः प्राकाराकृतीरुचकद्वीपविभागकारितयास्थितो ऽतएव माण्डलिकपर्वतो मण्डलेन व्यवस्थितत्वा त्सच सहस्रमवगाढश्चतुरशीतिरुच्छ्रित इति पञ्चाशीतिः सहस्राणि सर्वाग्रेणेति तथा नन्दनवनस्य मेरोः पञ्चयोजनशतोच्छ्रितायां प्रथममेखलायां व्यवस्थितस्या धस्ताच्चरमांतात् सौगंधिककाण्डस्य रत्नप्रभापृथिव्याः खरकाण्डाभिधान प्रथमकाण्डस्या ऽवान्तरकाण्डभूतस्याष्टमस्य सौगन्धिकाभिधानरत्नमयस्य सौगन्धिककाण्डस्याधस्त्यचरमांतः पञ्चाशीतियोजनशतान्यंतरमाश्रित्य भवति कथ मष्टशतानि मेरोः सम्बन्धीनि प्रत्येकं सहस्रप्रमाणत्वादपान्तरकाण्डाना मष्टमकाण्डमशीतिशतानीति ॥ ८५ ॥ टीका ॥

सहस्साइं सव्वग्गेणं प० रुयएणं मंडलियपव्वए पंचासीइजोयणसहस्साइं सव्वग्गेणं प० नंदणवणस्सणं हेठिल्लाउ चरमंताउ सोगंधियस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं पंचासीइ जोयणसयाइं अवाहाए अंतरे प० ॥ मूल ॥

रुचकनामापर्वत तेरमाद्वीप मांही गढने आकारे मंडलाकारेछे तेमाटे मंडलीकपर्वत १ हजार योजन ऊंडो ८४ हजार योजन ऊंचो सर्वमिली ८५ हजार योजन सर्वांगे सर्वपरिमाणे कह्यो। भूमिथकी ५०० योजन लगे मेरुपर्वत ऊंचोचढीये तिहां प्रथममेखलानेविषे नंदन वन छे तेहनां हेठिला चरमांतथी रत्नप्रभानो आठमो सौगंधिक कांड तेहनो हेठिलो चरमांत एह ८५ से योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। रत्नप्रभाये ३ कांड छे पहिलो १६ हजारनो कांड एकेक हजार योजन प्रमाणे तो आठमो सौगंधिक कांडछे तो ८ कांड मिली ८० से योजन थया। नंदन वनना ५०० सर्वमिली ८५ से योजन थया इति ८५ समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ मो समवाय लिखेछे। नवमा सुविधिनाथ बीजूंनाम पुष्पदंत अरिहंतने ८६ गणधर हुआ आवश्यके ॥ भाषा ॥

अथ षडशीतिस्थानके किमपि लिख्यते । तत्र सुविधे नवमजिनस्येह षडशीतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यके त्वष्टाशीति रिति मतांतरमिदं तथा द्वितीयाए || टीका ||
थिवीशर्करप्रभा सा च बाहल्यतो द्वात्रिंशत्सहस्राधिकलक्षमाना तदर्द्धं षट्षष्ठिः सहस्राणि घनोदधिश्च तदधोवर्त्ती द्वितीयपृथिवीसम्बन्धित्वात् द्वितीयो विंश
तिसहस्राणि बाहल्यत इति षडशीति र्यथोक्तमन्तरं भवतीति ॥ ८६ ॥ अथ सप्ताशीति स्थानके किंचिल्लिख्यते मन्दरस्या दिमेरोः पौरस्त्यांतात्
॥१४३॥ जम्बूद्वीपांतः पञ्चचत्वारिंशत्सहस्राणि द्विचत्वारिंशच्चसहस्राणि लवणजलधिमवगाह्य गोस्तुंभो वेलन्धरनागराजावासपर्वतः प्राच्यांदिशि भवत्येवं सूत्रोक्तमंतर

॥ ८५ ॥ सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था सुपासस्स || मूल ||
णं अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था दोच्चाएणं पुढवीए वहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेठि
ल्ले चरमंते एसणं छलसीइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ मंदरस्सणं पव्वय
स्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणस

८८ गणधर तेमतांतरछे सातमा सुपार्श्व अरिहंतने ८६ से वादीनीसंपदा हुई । बीजी शर्करप्रभा पृथिवी १ लाख ३२ हजार योजन जाडपणेंछे तेह बीजी || भाष |
पृथिवीना वहु मध्यभागथकी मांडी एतले १ लाख ३२ हजारनो अर्द्ध ६६ हजार योजन ते साथे लीजे बीजीनोघनोदधि २० हजार नो तेहनो हेठिलो च
रमांत ८६ हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो ॥ इति ८६ समवाय थयो ॥ ८६ ॥ हिवे ८७ मो लिखेछे । मेरुपर्वतना पूर्व चरमांत
थकी वेलंधर नागराजा वास गोस्तुभ नामापर्वत तेहनो पश्चिम चरमांत ८७ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । मेरुपर्वतथकी पूर्वनो जगती

.भवतीति एवमन्येषां भयाणा मंतरमवसेयमिति तथा पष्ठां कर्मप्रकृतीना मादिमोपरिमवर्जानां . ज्ञानावरणांतरायरहितानां दर्शनावरणवेदनीयमोहनो यायुकनाम गोत्रसंज्ञितानामित्यर्थः सप्ताशीतिरुत्तरप्रकृतयः प्रज्ञप्ताः कथं दर्शनावरणादीनांषष्णां क्रमेणनव द्वे अष्टाविंशतिः चतस्रो द्विचत्वारिंश द्वेचे त्यत ॥ टीका ॥

हस्साइं अबाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स दक्खिणिल्लाउ चरमंताउ दगभासस्स आवासपव्वयस्स उत्तरिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमं ताउ संखस्स वा पुरत्थिमिल्ले चरमंते एवं चेव मंदरस्स उत्तरिल्लाउ चरमंताउ दगसीमस्स आवासपव्व स्स दाहिणिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० छण्हं कम्मपगडीणं आइम ॥ मूल ॥

४५ हजार योजन तिहांथकी ४२ हजार योजने गोस्तुभ पर्वत सर्वमिली ८७ हजार योजन थया । दक्षिण चरमांतथकी दक्षिण समुद्रमांही दगभास पर्व त तेहनो उत्तर चरमांत ८७ हजार योजन गोस्तुभ पर्वतनो परें अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना पश्चिमचरमांत थकीमांही पश्चिमे श ङ्खनामा आवासनो पूर्वचरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । एमज मेरुपर्वतना उत्तर चरमांतथकी उत्तर समुद्रमांहि दगसीम आवासपर्वतनो दक्षिण चरमांत ८७ सहस्र योजन अवाधायें विचाले आंतरो कह्यो । आठकर्मनी प्रकृति मांहो थी आदिकर्म ज्ञानावरणीनी पांच प्रकृति उपरिम कर्मअंतराय तेहनी ५ प्रकृति एवं १० प्रकृतिटाली शेष छ कर्मनी ८७ उत्तर प्रकृतिकही दर्शनावरणी९ वेदनीय२ मोहनीय २८ आउखो ४ ना ॥ भाषा ॥

तासां मीलने सूत्रोक्त संख्यास्यादिति महाहिमवंतेत्यादि महाहिमवति द्वितीयवर्षधरपर्वते अष्टौ सिद्धायतनकूटमहाहिमवत्कूटादीनि कूटानि भवन्ति तानि पञ्चशतोच्छ्रितानि तत्र महाहिमवत्कूटस्य पञ्चशतानि द्वेशते महाहिमवद्वर्षधरोच्छ्रयस्य अशीतिश्चशतानि प्रत्येकं सहस्रमानानामष्टानां सौगन्धिककाण्डावसानानां रत्नप्रभा खरकाण्डावान्तरकाण्डाना मित्येवं मीलिते सप्ताशीति रन्तरम्भवतीति एवं रुप्पिकूडस्सवित्ति रुक्मिणिपंचमवर्षधरे यद्द्वितीयं रुक्मिकूटाभिधानं कूटं तस्याप्यन्तर महाहिमवत्कूटस्येववाच्यं समानप्रमाणत्वा द्वयोरपीति ॥ ८७ ॥ अष्टाशीतिस्थानके किंचिद्विख्रियते ॥ ॥ टीका ॥

उवरिल्लाओ सत्तासीइ उत्तरपगडीओ प० महाहिमवंतकूडस्सणं उवरिमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥ ॥ मूल ॥

मकर्म ४२ गोत्र २ सर्वमिली ८७ उत्तर प्रकृति थई । महाहिमवंत बीजो वर्षधर तेह ऊंचो बेसत योजन तेह उपरि महाहिमवंत कूटछेते ५०० योजन ऊंचो पर्वतना कूटना मिली ७०० योजन थया । तेमहाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी रत्नप्रभाये ३ कांड छे ते मांहि पहिलो खर कांड १६ हजारनो तेमांही रत्नप्रभादिके प्रत्येके २ हजार २ ना १६ कांडछे तेमांहि सौगंधिककांड आठमो तेहनो हेठिलो चरमांत एतले आठो कांडना ८० से योजन थया अने महाहिमवंतकूटमिली ७०० सर्वमिली ८७०० योजन थया अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । महाहिमवंत कूटनी परें पांचमोरुपीवर्षधर पर्वतनो रूपी नामकूट अने सौगंधिक कांडनो आंतरो जाणिवो इति ८७ मो समवाय थयो ॥ ८७ ॥ हिवे ८८ मो लिखे छे । चंद्रमा सूर्य असंख्या ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

एकैकस्यासंख्यातानामपि प्रत्येकमित्यर्थः चन्द्रमाश्चसूर्यश्चचन्द्रमसूर्यं तस्य चन्द्रसूर्ययुगलस्येत्यर्थः अष्टाशीतिर्महाग्रहाः एतेच यद्यपि चन्द्रस्यैवपरिवारो ऽन्यत्र श्रूयते तथापि सूर्यस्यापींद्रत्वा देतएवपरिवारतया ऽवसेया इति दिट्ठिवाएत्यादि दृष्टिवादस्य द्वादशाङ्गस्य परिकर्मसूत्रपूर्वगतप्रथमानुयोगचूलिकाभेदेन पंच प्रकारस्य सुत्ताइंति द्वितीयप्रकारभूतानि अष्टाशीतिर्भवन्ति जहानंदीएत्ति अतिदेशतः सूत्राणि दर्शितानि तानि चाग्रे व्याख्यास्यामः मंदरस्सेत्यादि मेरोः पूर्वान्तात् जम्बूद्वीपस्य पंचचत्वारिंशद्योजनसहस्रमानत्वात् जम्बूद्वीपान्ताच्च द्विचत्वारिंशद्योजनसहस्रेषु गोस्तुभस्य व्यवस्थितत्वा त्तस्यच सहस्रविष्कम्भत्वा द्य थोक्तः सूत्रार्थो भवतीति अनेनैव क्रमेण दक्षिणादिदिग्व्यवस्थितान् दकावभाससंखदकसीमाख्यान् वेलन्धरनागराजनिवासपर्वतानाश्रित्य वाच्यमतएवाह

॥ मूल ॥

एगमेगस्सणं चंदिमसूरियस्स अट्ठासीइ अट्ठासीइ महग्गहा परिवारो प० दिट्ठिवायस्सणं अट्ठासीइसु त्ताइं प० तं० उज्जुसुयं परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणिजहानंदीए मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणंअट्ठासीइं जोयणसहस्साइं

॥ भाषा

ताछे तेसहुने प्रत्येके अठ्यासी २ महाग्रह भौमादिक अठ्यासीनो परिवार कह्यो। यद्यपि ८८ ग्रह २८ नक्षत्र परिवार चंद्रमानोछे तोहीपणि सूर्य इंद्रछे तेहनो पिण एतलो ग्रहनो परिवार जाणिवो। दृष्टिवाद पूर्व बारमोअंग तेहमा ५ भेद परिकर्म १ सूत्र २ पूर्वगत ३ प्रथमानुयोग ४ चूलिकाभेदे ५ एह ५ प्रकारे पूर्व कह्या तेहना सुत्ताइंति बीजो सूत्र पूर्व तेहना ८८ सूत्रछे तेकहेछे। ऋजुसूत्र १ परिणता परिणतएम ८८ सूत्रभणिवा। जिमनंदीसूत्रे कह्योछे तेम जाणिवो। मेरु पर्वतथको पूर्वनो जगती ४५ हजार योजनछे तिहांथको पूर्वसमुद्रमांहि ४२ सहस्र योजन गोस्तूभपर्वतछे ते १ हजारपिहुलोछे सर्वमिली ८८ हजार मेरुपर्वत

॥ टीका ॥

एवं चउसुविदिसासुनेयव्वमिति बाहिराओण मित्यादि बाह्यायाः सर्वाभ्यन्तरमण्डलरूपाया उत्तरस्याःकाष्ठायाः क्वचितु बाहिराओत्ति न दृश्यते सूर्यः प्रथ मंषण्मासं दक्षिणायनलक्षणं दक्षिणायनादित्वात् संवत्सरस्य अयमाणेत्ति आयात्प्रागच्छन् चतुश्चत्वारिंशत्तममण्डलगतो घटाशीतिमेकषष्टिभागान् दिवस

॥ १४५ ॥ खेत्तस्सत्ति दिवसस्यैव निवुड्ढेत्ति निवर्द्धह्रापयित्वा रयणिखेत्तस्सति रजन्यास्तु अभिवर्द्ध सूरिएचारंचरइत्ति भ्राम्यतीति इहच भावनैव मतिमण्डल न्दिन स्यमुहुर्त्तैकषष्ठिभागद्वयस्थाने दक्षिणायनापेक्षया चतुश्चत्वारिंशत्तमे अष्टाशीतिभागा हीयन्ते रात्रेस्तु तएव वर्द्धंत इति द्विःसूर्यग्रहण श्चेह दिनरात्र्याश्रितवा क्यद्वयभेदकल्पनया न पुनरुक्त मवसेयमिति इदंच सूत्रमष्टसप्ततिस्थानकसूत्रवद्भावनीयमिति दक्खिणाओइत्यादि सूत्रं पूर्वसूत्रवदवगन्तव्यं नवर मिह दिनवृद्धी

॥ मूल ॥

अबाहाए अंतरे प० एवं चउसुविदिसासुनेयव्वं बाहिराउ उत्तराउणं कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अय माणे चोयालीसइमे मंडलगते अठासीति एगसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स

॥ भाषा ॥

अबाधायें बिचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा ना चरमांतथकी नागराज वेलंधरनो गोस्तूभ आवासपर्वतनो चरमांत ८८ हजारयोजनथयो अवाधायें बिचाले आंतरोकह्यो । एम चिहुंदिसि जा णिवो दक्षिणे दगभास पश्चिमें शंख उत्तरे दगसीम एसर्वना आंतरा जणिवा । निषधपर्वत संबंधी सर्वाभ्यंतर मांडलायकी सूर्य पहिलो छम्मास दक्षिणायन लक्षण तेहप्रतें अयमान दक्षिणायनें आवतो चुंमालीसमे मांडले गयोथको एकसठिया ८८ भाग १ मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसने घटाडो रजनीनोक्षेत्र रात्रो तेहने वधारीने सूर्य चारचरेभ्रमे । सर्वाभ्यंतर मांडले ३६ सो दिहाडो २४ रात्रीकरी निषधपर्वतथकी सर्वाभ्यंतर मं डलथकी दक्षिणायने सूर्य चालतोथको दिनप्रतें एकमुहुर्तना एकसठिया बे भाग दिवस घटाडीयें रात्रिवधारियें एकमासे एकमुहूर्तबाधीयें वली ३१ मां

॥ टीका ॥

अथैकोननवतिस्थानके किंचिद्विचार्यते। तद्यथाएसमाएत्ति सुखमदुःखमाभिधानाया एकोननवत्यामर्द्धमासेषु

रात्रिहानिश्च भावनीयेति ॥ ८८ ॥

त्रिषु वर्षेषु अर्द्धनवसु च मासेषु सत्स्विति गम्यते जावत्तिकरणात् अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते त्तिदृश्यं हरिषेणचक्रवर्त्तीदशम स्तस्यच दशवर्षसहस्राणि सर्वायु स्त

॥ मूल ॥

मंडलग चोयालीसतिमे छम्मासं अयमाणे सूरिए दोच्चं दक्खिणकठाउणं सूरिए चारंचरइ अग्गिनिवुद्धेत्ता
ते अठासीइ इगसठिभागे मुहुत्तस्स रयणिखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं
चरइ ॥ ८८ ॥ उसन्नेणं अरहाकोसलिए इमीसे उसप्पिणीए ततियाए सुसमदुसमाए समा

॥ भाषा ॥

बे बे भाग दिवस घटाडे रात्रिवधारता ४४ मे मांडले ८८ भाग वधेरात्रि। दिवस घटे। समुद्र माहिलो १८४ मौं मांडलाथकी एकसठिया दिनप्रतें
सर्ववाह्य मंडले मकर संक्रांतिये सूर्य जगो दक्षिण दिशि थको सूर्य बीजे छम्मासे उत्तर दिशिभणी आवतो थको ४४ में मांडले गयो थको १ मुहूर्त्तना
एकसठिया ८८ भाग रात्रि घटाडो दिवस वधारो सूर्य चार करे सर्ववाह्य मांडले दिवसमान २४ रात्रिमान ३६ करीउत्तरायणे चालतो १ मुहूर्त्तना
एकसठिया बे बे भाग रात्रि घटतां ३० मे मांडले १ मुहूर्त्त रात्रि घटे दिवस वधे इमकरतां ४४ मे मांडले ८८ भाग रात्रि घटे दिन वधे इति ८८ थयो ॥
॥ ८८ ॥ हिवे ८९ लिखेछे। श्रीआदिनाथ अरिहंत कोशलदेसना उपना एणी अवसर्पिणी ने त्रीजा समाने सुखम दुखम नामने पाछिले
भागे ८९ अर्द्धमासे एतले ८९ पखवाडे त्रीजा आरा मांहि शेष थाकते थाके त्रीजे आरे व्यतिक्रमे गये थके सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया। आदिनाथने
मोक्ष पहुता पछी तीनवर्ष साढा आठ मास एतले ८९ पखवाडा त्रीजो आरो रह्यो पछे चौथो आरो लाग्यो एह भाव। श्रमण भगवंत महावीर एणी

॥ टीका ॥

अथ शतोमानि च नवसहस्राणि राज्यं शेषाख्येकादश शतानि कुमारत्वमाण्डलिकत्वाऽनगारत्वेषु अवसेयानि इह शान्तिजिनस्यैकोननवतिरार्यिकासहस्राण्यु
क्तान्यावश्यकेत्वेकषष्ठिः सहस्राणि शतानिचषडभिवीयंत इति मतांतरमेतदिति ॥ ८८ ॥ अथ नवतिस्थानके किंचिदिदं व्याख्यायते। तथा

॥ मूल ॥

ए पच्छिमेनागे एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्वदुक्खप्पहीणे समणे ३ इमीसे उस
प्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेनागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जावसव्व
दुक्खप्पहीणे हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी एगूणनउइवाससयाइं महाराया होत्था संतिस्सणं अरहउ
एगूणनउइ अज्जासाहस्सीउ उक्कोसिया अज्जियासंपया होत्या ॥ ८९ ॥ सीयलेणं अरहा

॥ भाषा ॥

अवसर्पिणी ने चौथे समाने दुखम सुखम समाने पाछले भागे ८८ पखवाडे शेष थाकतां चौथा आरालक्षण काल व्यतिक्रमें गये थके सिद्ध थया सर्व दुःख
प्रक्षीण थया। एतले श्रीमहावीर मोक्ष गये पछी ३ वर्ष साढा आठ मास एतले ८८ पखवाडे गये थके चौथो आरो उतरी पांचमो आरो लाग्यो एह भाव
जाणिवो। नमिनाथने वारे हरिषेण राजा दशमो चक्रवर्त्ती ८८ वर्षलगे एकसोवर्ष ऊणो नव हजार वर्षलगे महाराज चक्रवर्त्ती हुआ। शेष थाकतां ११००
वर्ष मांहि कुमार पणे मंडलीक पणे यतीपणे जाणिवा साधुपणूं पामी सर्वायु दश सहस्र वर्ष पाली मुक्त गया। शांतिनाथ अरिहंतने ८८ हजार साध्वी
एके ऊणी हुई एतले ८८ सहस्र ८८८ उत्कृष्टी आर्यासाध्वीनो संपदा हुई इति ८८ मो समवाय थयो ॥ ८८ ॥ हिवे ८० लिखेछे। शीतलनाथ

॥ टीका ॥

जितनाथस्य शांतिनाथस्य चेह नवतिर्गणागणधराश्चोक्ता आवश्यकेतु पंचनवतिरजितस्य षट्त्रिंशत्तु शान्तेरुक्ता स्तदिदमपि मतान्तरमिति तथा स्वयंभूर्तृतीय
वासुदेव स्तस्य नवतिवर्षाणि विजयः पृथिवीसाधनव्यापारः सर्व्वेषामित्यादि सर्वेषां विंशतेरपि वर्तुलवैताढ्यानां शब्दापातिप्रभृतीनां योजनसहस्रोच्छ्रित
त्वात् सौगन्धिककाण्डचरमान्तस्य चाऽष्टसु सहस्रेषु व्यवस्थितत्वा न्नवसु सहस्रेषु नवतेः शताना भावात् सूत्रोक्तमन्तरमनवद्यमिति ॥ ९० ॥

॥ मूल ॥

नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अजियस्सणं अरहओ नउइंगणा नउइगणहरा होत्था एवंसंतिस्सविसयंभुस्सणं वासुदेवस्स णउइवासाइं विजए होत्था सव्वेसिणं वट्टवेयड्ढपव्वयाणं उवरिल्लाउ सिहरतलाउ सोगंधियकंडस्स हेट्ठिल्लेचरमंते एसणं नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९० ॥ एकाणउइ

॥ भाषा ॥

शां
दयमा अरिहंत ९० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। अजितनाथ बीजा अरिहंतने नेउ गछ नेऊ गणधर हुया। आवश्यके ९५ गणधर कह्या एमतांतर। शांतिनाथ १६ अरिहंतने ९० गणधर हुया। आवश्यके ३६ कह्या ते मतांतर छै। विमलनाथकालीन स्वयंभू त्रीजो वासुदेव तेहने ९० वर्ष लगे विजय पृथिवी साधन व्यापार हुयो देश साधनाने ९० वर्ष लाग्या एभाव। सगलाई वृत्त वैताढ्य २० जंबूमांहि हिमवंत १ हरिवर्ष २ रम्यक ३ ऐरण्यवत ४ ए चिंहुं क्षेत्रे शब्दापाती प्रमुख ४ वृत्त वैताढ्य छै धातकीखंड मांहि एक्षेज क्षेत्रे आठछै पुष्करार्द्धे आठ सर्वमिलो २० वृत्त वैताढ्यछै सगला १ सहस्र योजन ऊंचा छै सगलाई वृत्त वैताढ्य पर्वतना उपरिला शिखरतला थको रत्नप्रभाये ८ सहस्र योजने सौगंधिक कांड छै तेहनो हेठिलो चरिमांत ९० से योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले वृत्त वैताढ्य १००० योजन ऊंचा सौगंधिक कांडलगे ८० से योजन सर्वमिलो ९० से योजन थया॥ इति ९० समवाय

॥ १४७ ॥

॥ टीका ॥

प्रथैकानवतितमस्थानके किञ्चिद्विलिख्यते। तत्र परेषामात्मव्यतिरिक्तानां वैयावृत्यकर्माणि भक्तपानादिभि रुपष्टंभक्रिया स्तद्विषया: प्रतिमा अभिग्रहविशेषा: परवैयावृत्त्यकर्मप्रतिमा एतानिच प्रतिमात्वेनाभिहितानि क्वचिदपिनोपलब्धानि केवलं विनयवैयावृत्यभेदा एते सन्ति तथाहि दर्शनगुणाधिकेषु सत्कारा दिदशधा विनय: आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ सणअभिग्गहो ४ तहय आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलि गहोय ७ ॥ १ ॥ इंतस्सणुगच्छ ण या ८ ठियस्सतहपज्जुवासणाभणिया ९ गच्छंताणुव्वयणं १० एसोसुस्सूणाविणओत्ति तत्र सत्कारोवंदनस्तवनादिः अभ्युत्थानमासनत्याग: सन्मानोवस्त्रादिपूज नं आसनाभिग्रह: तिष्ठतएवासनानयनपूर्वकमुपविश्यतामितिभणननिति आसनानुप्रदानमासनस्य स्थानात् स्थानान्तरसञ्चारणं कृतिकर्मादीनि प्रकटानि तथा तीर्थंकरादीनां म्पंचदशानां म्पदानां मनाशातनादि पदचतुष्टयगुणितत्वे षष्टिविधोऽनाशातनादिविनयो भवति तथाहि तित्थयर १ धम्म २ आयरि

॥ मूल ॥

परवेयावच्चकम्मपडिमाउ प० कालोयेणं समुद्दे एक्काणउइजोयगसयसहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प०

॥ भाषा ॥

थयो ॥ ९० ॥ हिवे ९१ मो समवाय लिखेछे। ९१ भेदें वेयावच्च कर्म प्रतिमा परनो वेयावच्च करे भक्तपानादिके उपष्टंभक्रिया तेहनेविषे प्र तिमा अभिग्रह विशेष ते पर वेयावच कर्म प्रतिमा कही। दर्शन गुणाधिक ने विषे सत्कारादिक १० भेदें विनय आहच सक्कार १ भुट्ठाणे २ सम्माणा ३ सणभिग्गहो तहय ४ आसण अणुप्पयाणं ५ किइकम्मं ६ अंजलिगहोय ७ तस्सअणुगच्छणया ८ ठियस्सतहपज्जुवासणा ९ भणिया गच्छंताणुवयण एह दश प्रकारे विनय कह्यो तथा तित्थयर १ धम्म २ आयरिय ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोगीय ९ किरिया १०। मतिज्ञानादिक ५ ज्ञान एवं १५ बोलने विषे बोल लगाडो एह १५ नो आसातना टालवी १ भक्ति २ बहुमान ३ गुणवर्णवोयें ४ तोपनरचौकें साठिथया पछे ७ लोकोपचार विनय अ

॥ टीका ॥

य ३ वायगे ४ थेर ५ कुल ६ गणे ७ संघे ८ संभोइय ९ किरियाए १० मइनाणाईणयतहेव ॥ १ ॥ अप्रभावना तीर्थंकराणामनाशातना तीर्थंकराऽनाशातना तीर्थंकरप्रज्ञप्तस्य धर्मस्य अनाशातना एवं सर्वत्र कायव्वापुणभत्ती बहुमाणोतहयवसवाओय अरहंतमाइयाणं केवलणाणावसाणाणंति ॥ २ ॥ तथोपचारिकविनयः सप्तधा यदाह अभासासण १ छंदाणु वत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुक्खत्तगवेसणातहय ॥ १ ॥ तहदेसकालजाणणस व्वत्थेसुतहयअणुमईभणिया ७ उवचारिओउविणओ एसोभणिओसमासेणंति ॥ २ ॥ अभ्यासासनं उपचरणीयस्यान्तिके ऽवस्थानं छन्दानुवर्त्तनमभिप्रायानुवृत्तिः कृतप्रतिकृतिनाम प्रसन्ना आचार्याः सूत्रादिदास्यन्ति ननाम निर्ज्जरेति मन्यमानस्याहारादिदानं पदकारितनिमित्तकरणं सम्यक्शास्त्रपदमध्यापितस्य विशेषेण विनयेवर्त्तनं तदर्थानुष्ठानं च शेषाणि प्रसिद्धानि तथा वैयावृत्त्यं दशधा यदाह आयरियउवज्झाए थेरतवस्सीगिलाणसेहाणं । साहम्मियकुलगणसंघ संगयंतमिहकायव्वंति ॥ १ ॥ तत्र प्रव्राजना १ दिशु २ देश ३ समुद्देश ४ वाचना ५ चार्यभेदादाचार्यस्य पंचविधत्वा त्तदेवं चतुर्दशधेत्येकनवति विनयभेदा एते एव अभिगृहविषयीभूताः प्रतिमाउच्यन्त इति तथा कालोयणेत्ति कालोदः समुद्रः सचैकनवतिर्लक्षाणि साधिकानि परिक्षेपेण आधिक्य

॥ भाषा ॥

अभासासण १ छंदाणुवत्तणं २ कयपडिकिईतहय ३ कारियनिमित्तकरणं ४ दुःखत्तगवेशणा ५ तहय तह देशकाल जाणण ६ सव्वत्थेसतहयअणुमईभणिया ७ एह सात लोकोपचार विनय तथा दशमनो वेयावच्च करो आयरिय १ उवज्झाय २ थेर ३ तवस्सी ४ गिलाण ५ सेहाणं ६ साहम्मिय ७ कुल ८ गण ९ संघ १० संगयंतमिहकायव्वं ११ आचार्य ५ भेदें प्रव्राजना १ दिगु २ देश ३ समुद्देस ४ वाचनाचार्य ५ एह पांच आचार्य टाली विनय १ पछे उपाध्याया दिक नवने पांच १४ पछे सात लोकोपचार विनय भेद ६० तीर्थंकरादिकनो आशातना दस विनय सत्कारादिक सर्व मिली ९१ बोलथया । कालोदधि वी

॥ टीका ॥

घ समत्वासहस्रैः षड्भिःशतैः पञ्चोत्तरैः सप्तदशभिर्धनुःशतैः पंचदशोत्तरैः सप्ताशीत्या चाङ्गुलैः साधिकैरिति आहोहियत्ति नियतक्षेत्रविषयावधयः आयु
गोत्रवर्ज्जानां षण्णामिति ज्ञानावरण दर्शनावरण वेदनीय मोहनीयनामान्तरायानां क्रमेण पंच नव द्वा घ्टाविंशति द्विचत्वारिंशत् पंच भेदानामिति " ॥
९१ ॥ अथ द्विनवतिस्थानके किमप्यभिधीयते। द्विनवतिः प्रतिमा अभिग्रहविशेषाः ताश्च दशाश्रुतस्कन्धनिर्युक्त्यनुसारेण दर्श्यन्ते तत्र किल पंच प्र
तिमाउक्ता स्तद्यथा समाधिप्रतिमा १ उपधानप्रतिमा २ विवेकप्रतिमा ३ प्रतिसंलीनता प्रतिमा ४ एकविहारप्रतिमाचेति ५ समाधिप्रतिमा द्विविधा श्रु

॥ मूल ॥

कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहियसया होत्था आउयगोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्त
रपगडीओ प० ॥ ९१ ॥ बाणउइपडिमाओ प० थेरेणं इंदभूती बाणउइवासाइं सव्वाउयं पाल

॥ भाषा ॥

जोसमुद्र ९१ लाख योजन साधिक झांझेरी ते कहेछे ७० सहस्र ६ से ५ योजन पनरसे धनुष ८७ अंगुल एतलो परिक्षेप परिधि कह्यो। कुंथुनाथ अरिहंत
ने ९१०० अवधि ज्ञानी नियतक्षेत्र संबंधी अवधि ज्ञानो हुआ। चउथो आऊखा कर्म सातमो गोत्र कर्म २ एह कर्म टाली शेष थाकता छ कर्मनी उत्तर
प्रकृति ९१ ज्ञानावरनीयनो ५ दर्शणावरणीनो ९ वेदनो २ मोहनो २८ नाम कर्म ४२ अंतराय ५ सर्व मिली ९१ उत्तर प्रकृति कही। इति ९१ समवाय
थयो ॥ ९१ ॥ हिवे ९२ लिखेछे। ९२ भेदें प्रतिमा अभिग्रह विशेष पहिलो ५ प्रतिमा समाधि प्रतिमा १ उपधान प्रतिमा विवेक प्रतिमा ३
प्रतिसंलीनप्रतिमा ४ एक विहार प्रतिमा ५ पहिलो समाधिप्रतिमाना २ भेद श्रुतसमाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमा चारित्र समाधि प्रतिमाना ६२
भेद आचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे ५ बीजे ३७ ठाणांगे १६ व्यवहारे ४ सर्वमिली ६२ भेदथया। उपधान प्रतिमा २३ यतिनो १२ श्रावकनो ११ एवं २३ विवेकनो

॥ टीका ॥

तत्रश्रुतसमाधिप्रतिमा द्विषष्ठिभेदा कथं आचारे प्रथ

तसमाधिप्रतिमा चारित्रसमाधिप्रतिमांच दर्शनं ज्ञानान्तर्गतमिति न भिन्नादर्शनप्रतिमा विवक्षिता विशिष्ट श्रुतवताभवन्तीति श्रुतप्रधानत

मे श्रुतस्कन्धे पंच द्वितीये समविंशत् स्थानांगे षोडश व्यवहारे चतस्र इत्येता द्विषष्टि एताश्च चारित्रस्वभावा अपि

या श्रुतसमाधिप्रतिमात्वेनोपदिष्टा इतिसम्भावयाम: पंचसामायिकच्छेदोपस्थापनीयाद्या चारित्रसमाधिप्रतिमा उपधानप्रतिमा द्विविधा भिक्षुश्रावकभेदा

तत्र भिक्षुप्रतिमा मासाईसत्तंताइत्यादिना भिहितस्वरूपा द्वादश उपासकप्रतिमाश्च दंसणवए इत्यादिना भिहितस्वरूपा एकादशेति सर्वास्त्रयोविंशति

र्विवेकप्रतिमा त्वेका क्रोधादेराभ्यन्तरस्य गणशरीरोपधिभक्तपानादे र्बाह्यस्य विवेचनीयस्यानेकत्वे प्येकत्वविवक्षणादिति प्रतिसंलीनताप्रतिमाप्येकैव इन्द्रि

यस्वरूपस्य पञ्चविधस्य नोइन्द्रियस्वभावस्यच योगकषायविविक्तशयनासनभेदत स्त्रिविधस्य प्रतिसंलीनताविषयस्य भेदेनाविवक्षणादिति पञ्चस्येकविहारप्र

तिमैकैव नचेह सा भेदेन विवक्षिता भिक्षुप्रतिमास्वन्तर्भावितत्वादित्येवं द्विषष्टि: पञ्च त्रयोविंशति रेका एकाच द्विनवति स्ता भवन्तीति स्थविरइन्द्रभूति मेहा

वीरस्य प्रथमगणनायक: सच गृहस्थपर्यायं पञ्चाशतं वर्षाणि त्रिंशतिं छद्मस्थपर्यायं द्वादशच केवलित्व म्पालयित्वा सिद्धइति सर्वाणि द्विनवतिरिति मंदर

॥ मूल ॥

पच्चत्थिमिल्लेचरमंते

इत्ता सिद्धे बुद्धे मंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभागाओ गोथुभस्स आवासपव्वयस्स

॥ भाषा ॥

वादिकनो त्याग एकभेद प्रतिसंलीन तायें इन्द्रियनो गोपिवो एकभेद एकविहार प्रतिमा भेद १ एवं ६२ पांच तेवीस एकएक सर्वमिली ६२ भेद प्रतिमाना

थया। स्थविर इंद्रभूति महावीरनो प्रथम गणधर गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थ पर्याये ३० वर्ष १२ वर्ष केवल पर्याये सगलो ९२ वर्षनो आउखोपालीने सिद्धथया

मोचपहुंता तत्लना आमोथया। मेरुपर्वतनो बहुमध्यदेशभाग ५ सहस्र योजन तेहथकी ५ हजार योजमनो जगतोइइ तेहथकी वेलंधर नागराजानो आ

॥ टीका ॥

खेत्यादि भावार्थः मेरुमध्यभागात् जम्बूद्वीपस्य पञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशत् सहस्राण्यतिक्रम्य गोस्तुभपर्वतः इति सूत्रोक्तमन्तरं भवतीति एवं शेषा णामपि ॥ ९२ ॥ अथ त्रिनवतिस्थानके किमपि वितन्यते । तेणउइमंडलेत्यादि तत्र अतिवर्त्तमानोवा सर्वबाह्यात् सर्वाभ्यन्तरम्प्रति गच्छन् नि वर्त्तमानोवा सर्वाभ्यन्तरात् सर्वबाह्यंप्रति गच्छन् व्यत्ययोवा व्याख्येयः सममहोरात्रं विषमं करोतीत्यर्थः अहश्च रात्रिश्च अहोरात्रं तयोः समता तदा भवति यदापञ्चदशमुहूर्त्ता उभयोरपि भवन्ति तत्र सर्वाभ्यंतरमण्डले अष्टादश मुहूर्त्तमह भवति रात्रिश्च द्वादशमुहूर्त्ता सर्वबाह्ये तु व्यत्ययः तथा द्व्यशीत्यधिकमण्ड लयते द्वौद्वावेकषष्टिभागौ वर्द्धते हीयेतेच यदाच दिनवृद्धि स्तदा रात्रिहानिः रात्रिवृद्धौच दिनहानिरिति तत्र त्रिनवतितमे मण्डले प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तेकाष्ट

॥ मूल ॥

एसणं वाणउइं जोयणसहस्साइं अबाहाएअंतरे प० एवंचउरहंविआवासपव्वयाणं ॥ ९२ ॥

चंदप्पहस्सणं अरहउ तेणउइगणा तेणउइगणहरा होत्था संतिस्सणं अरहउ तेणउइ चउद्दसपुव्विसया

॥ भाषा ॥

वास गोस्तूभपर्वत पूर्वसमुद्र मांहि ४२ हजार योजनहुयो तो मेरुनामध्यभागथकी गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांत ९२ हजार योजन आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । मेरु पर्वतना दक्षिण पासना चरमांत दगभास पर्वतनो उत्तरपासनो छेहलो भाग ९२ हजार योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी शंखआवास पर्वतनो पूर्वाभिमुख चरमांत ९२ सहस्र योजन अबाधायें विचाले आंतरोकह्यो । मेरुपर्वतना उत्तराभि मुख चरमांतथी दगसीम आवास पर्वतना दक्षिण दिशनो चरमांत ९२ सहस्रयोजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो । इति ९२ समवायथयो ॥ ९२ ॥ हिवे ९३ बोलिखेछे । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंतना ९३ गछ ९३ गणधरहुया । शांतिनाथ सोलमा अरिहंतने ९३ से चौदहपूर्वधर हुवा । सूर्यनो एकओची

॥ टीका ॥

ष्टिभागद्वयवृद्धा यथोमुहूर्त्ता एकैकैकषष्टिभागेनाधिका: वर्द्धन्ते वा हीयन्ते वा तेषुच द्वादशमुहूर्त्तेषु मध्येचितेषु अष्टादशभ्यो पसारितेषु वा पञ्चदशमुहूर्त्ता उभयत्रैकैकैकषष्टिभागेनाधिका हीनावा भवंत्यतो त्रिनवतितममण्डलस्यार्द्ध समाहोरात्रता तस्यैवचांते विषमाहोरात्रता भवति त्रिनवतितमलण्डलं चादित आरभ्य त्रिनवतितममण्डले यथोक्तसूत्रार्थं इति ॥ ९३ ॥ अथ चतुर्नवतिस्थानके किञ्चिद्विलिख्यते । निसहेत्यादि द्रहपादोना सम्वादगाथा

॥ मूल ॥

होत्था तेणउइमंडलगतेणं सूरिए अभिवट्टमाणे विनिवट्टमाणे वा समंअहोरत्तं विसमंकरेइ ॥ ९३ ॥

॥ भाषा ॥

रात्रिमो मांडलो समुद्रमांहि तेसर्ववाह्य मंडलतेहयको सूर्यअनिवर्त्तमान सर्वाभ्यंतर मंडलभणी उत्तरादणी जातो तथा निषधमांहे सर्वाभ्यंतर मंडल तेहय को दक्षिणायन सर्ववाह्य मांडलाप्रति जायछे तेवारे ९३ मे मंडले सूर्य गयो थको दिवसने रात्रिने विषमकरे एतले अषाढो पूनिमे सर्वाभ्यन्तर मंडले निषधमाहे सूर्यउगे तेवारे दिवस ३६ रात्रि चोबीसी पछे श्रावणवदी १ दिने बीजेमांडले सूर्यआवे तेवारे एकमुहूर्तना ६१ भाग करीये तेहवा प्रतिमांडले प्रतिदिन बे बे भाग दिवस घटाडी रात्रो वधारी दक्षिणायने चालतां ३१ मेमांडले एक मुहूर्त दिवसघटे रात्रिवधे । वली तेमज एकसठिया बेबेभाग दिवस घटाडो एमकरतां ९२ मांडलेजाय तिवारे आसोजीपुनिमें ३० दिवस ३० रात्रि समदिवस समरात्रिकरेपछे ९३ मेमांडले सूर्य जाय तेवारे दिवसघटे रात्रि वधे तेमाटे दिनरात्रि विसमकरे अने सूर्य सर्ववाह्यमांडले दिवस २४ रात्रि ३६ पोसोपूनिमेंकरी उत्तरायणभणी चाल्यो तोहो एक मुहूर्तना एकसठिया २ भाग प्रतिदिवस दिनवधारे रात्रिघटाडे ९२ मेमांडले चैत्रोपूनिमे सम दिवसरात्रि ३० दिवस ३० रात्रोकरी ९३ मांडले दिवसरात्रि विषमकरे दिवस वधे रात्रिघटे एभावार्थ जाणिवो । इति ९३ मो समवाय थयो ॥ ९३ ॥ हिवे ९४ लिखेछे । बीजोवर्षधर निषध पर्वत चौथो नीलवंत एबेहुनी जो

॥ टीका ॥

चउणउइसहस्साइं छप्पणहियंसयंकलादोय जीवानिसहस्सेसत्ति ॥ ९४ ॥ अथ पंचनवतिस्थानके किंचिल्लिख्यते । लवणसमुद्रस्योभयपार्श्वतोपि पंचनवतिः २ प्रदेशाउद्वेधोत्सेधपरिहानिभ्यांविषये प्रज्ञप्ताः अयमत्रभावार्थः लवणसमुद्रमध्ये दशसाहस्त्रिकक्षेत्रस्य समधरणीतलापेक्षया सहस्रमुद्वेधउण्डत्व मित्यर्थः तदनन्तर मंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्योद्वेधस्य प्रदेशाहीयन्ते ततोपिपंचनवतिं प्रदेशान् गत्वा उद्वेधस्य प्रदेशाः परिहीयन्ते एवं पंचनवति २ प्रदेशाति क्रमे प्रदेशमात्रस्योद्वेधस्य हान्या पंचनवत्यांयोजनसहस्त्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रतटप्रदेशेषु उद्वेधतः सहस्रस्यापिपरिहानिर्भवतीत्यर्थः समभूतलत्वम्भवतीति तथा समुद्रमध्यभागापेक्षया तत्तटस्य साहस्त्रिकउत्सेधोभवति उत्सेधश्चोच्चत्वं तत्र समधरणीतलरूपा त्तत्तटा त्पंचनवतिप्रदेशानतिक्रम्य एकप्रदेशिका उत्सेधस्य

॥ मूल ॥

निसह नीलवंतियाउणं जीवाउ चउणउइ जोयगसहस्साइं एक्कं छप्पन्नं जोयणसयं दोन्निय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स आयामेणं प० अजियस्सणं अरहउ चउणउइ उहिनाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥ सुपासस्सणं अरहउ पंचाणउइगणा पंचाणउइगणहरा होत्था जंबूद्दीवस्स णं द्दीवस्स चरमंताउ चउद्दि

॥ भाषा ॥

वा ९४ हजार योजन एकसोछप्पन योजन उपरि बे उगणीसहाइया भाग एकयोजनना ९४१५६ योजन १९ कला आयामपणे लांबपणेकही। अजितनाथ अरिहंतने ९४ से अवधिज्ञानी हुआ। इति ९४ मो समवाय थयो ॥ ९४ ॥ हिवे ९५ मो लिखेछे। सुपार्श्व सातमा अरिहंतने ९५ गछ ९५ गणधर हुया। जंबूद्दीपना चरमांतथकी पूर्वादिक चिहूंदिशि लवण समुद्रमांहि ९५ हजार योजन लगे गाहीने प्रवेश करीने चार महापाताल कलश कह्या। तेकहेछे। पूर्व मुद्रमांहि बडवामुख। दक्षिणे केतुक। पश्चिमें यूपक। उत्तरे ईसर। धातकीखंडथकी समुद्रमांहि उरह्यामध्यभाग भणी ९५ सहस्र

॥ टीका ॥

परिहानिर्भवति ततोपि पंचनवतिंप्रदेशान् गत्वा प्रादेशिक्ये चोत्सेधहानि र्भवति एवं पंचनवतिपंचनवतिप्रदेशातिक्रमेणैवप्रादेशिक्या उत्सेधहान्या पंचनव त्यांयोजनसहस्रेष्वतिक्रांतेषु समुद्रमध्यभागे सहस्रमपि उत्सेधस्य परिहीयते एवंसाहस्रिकोत्सेधपरिहानौ साहस्रिकोद्वेधता भवति लवणस्सेत्ति अथचोद्वेधा र्थं योत्सेधपरिहानिस्तस्यांपंचनवतिः प्रदेशाः प्रत्नमा स्तेष्वतिलङ्घितेषु उत्सेधतः प्रदेशहान्यामुद्वेधः प्रादेशिको भवतीति तथा कुंथुनाथस्य समदशतीर्थंकरस्य कुमारत्वमांडलिकत्वचक्रवर्त्तित्वानगारत्वेषु प्रत्येकं त्रयोविंशते र्वर्षसहस्राणा मर्द्धाष्टमवर्षशतानां च भावात्सर्वायुः पंचनवतिर्वर्षसहस्राणि भवन्तीति तथा

॥ मूल ॥

सिं लवणसमुद्दं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं उगाहित्ता चत्तारिमहापायालकलसा प० तं० वल या मुहे केऊए जूए ईसरे लवणसमुद्दस्स उभउ पासंपि पंचाणउयं पंचाणउयं पदेसाउ उव्वेऊस्सेहपरिहा

॥ भाषा ॥

योजन श्रावी जंबूद्वीपथकी परहा ९५हजार योजन लगे परहो मध्यभाग भणी जईयेतो बिहुं ९५ मिलो १ लाख ९० हजार योजन थया बिचाले दस स हस्र योजन लगे समोपीठिकानेरूपे पाणीछे तिहां पृथ्वी तलनी अपेचायें १ हजार योजननो ऊंडो खाड पडोछे १ हजार योजन लगे ऊंचोपाणी चढ्यां पछे पिहुला १० हजार योजन लगेछे तेहने दगमालकहिये ताते मध्यपिंड १० हजार योजनलगे दगमालथकी उभयपासे धातकी खंड भणीजाय। त था जंबूद्वीप भणी उरहाश्रावीयेतोही ९५ श्रांगुले एकश्रंगुल तथा ९५ हाते १ हात ९५ योजने १ योजन एम ९५ हजार योजन १ हजार योजनप्रदेशे २ मात्राये २ उव्वेधपणो ऊंडपणोघटाडोये एमकरतां ९५ सहस्र योजन श्रतिक्रमेथके समुद्रनोपाणी अनेभूमिबराबरीथाय ऊंडपण सगलोटले तथा समुद्रतट थकी ९५ श्रांगुले योजन २ समुद्रमध्यभागभणी जातां २ तट भूमिनो उत्सेधनो ऊंचपणो प्रदेशे २ मात्राये २ हानिकरी भूमिऊंडोकरतांजईये एमकरतां

मौर्यपुत्रो महावीरस्यसप्तमगणधरस्तस्य पंचनवतिर्वर्षाणि सर्वायुः कथं गृहस्थत्व छद्मस्थत्व केवलित्वेषुक्रमेण पंचषष्टिचतुदर्शषोडशानां वर्षाणांभावादिति ॥ ॥ टीका ॥

८५ ॥ अथ षरावतिस्थानके किमपि व्याख्यायते वायुकुमाराणांषरावतिर्भवनलक्षाणि दक्षिणस्यां पंचाशत् उत्तरस्यांच षट्चत्वारिंशतो भावादिति वाव

।१५१॥ हारिएत्ति व्यावहारिको येन गव्यूतादिप्रमाणं चिंत्यते अव्यावहारिको लघुर्दीर्घो वा भवत्युक्तप्रमाणात् दंडोहि चतुःकरउक्तः करश्चतुर्विंशत्यंगुलः एवं चतुर्विं

णीए प० कुंथूणं अरहा पंचाणउइवाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे थेरेणं मोरि ॥ मूल ॥

यपुत्ते पंचाणउइवासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे ॥ ९५ ॥ एगमेगस्सणं

रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स छसउइं छसउइं गामकोडीउ होत्था वायुकुमाराणं छसउइभवणावाससयसह

८५ हजार योजन अतिक्रमेथके तटभूमिनोऊंचपणो हजार योजननोटले १ हजारनो ऊंडपणो समुद्रनोथाय एतलो। कुन्थुनाथ अरिहंत २ ३ सहस्र अने ७५० ॥ भाषा ॥

वर्ष कुमार पणे एतलाज वर्ष मांडलीक राजपणे एतलाजवर्ष चक्रवर्तिपणे एतलाज वर्ष तीर्थंकरपणे सगलामिली ६५ सहस्र वर्ष उत्कृष्टा आउखोपालीने

सिद्धथया तत्वनाजाण थया सर्वदुःख रहित थया। स्थविर मोर्य पुत्र महावीरनो सातमो गणधर ८५ वर्ष सर्वायुपालीने सिद्धथया। गृहाश्रमे ६५ छद्मस्थपणे

१४ केवली पणे १६ सर्वमिली ८५ वर्षथया। इति ८५ मो समवाय थयो ॥ ८५ ॥ हिवे ८६ समवाय लिखेछे। एकेक चातुरंतचक्रवर्तीने ८६ कोडी

गाम थया। वायुकुमार भवनपतीने ८६ लाख भवनावासा कह्या। दक्षिणदिशे ५० लाखउत्तरदिशें ४६ लाख बिहुंमिली ८६ लाख थया। व्यवहारिक दंड

अतो चतुर्गुणितायां षण्णवतिः स्यादेवेति अभ्यंतराओ इत्यादि अभ्यन्तरादभ्यन्तरमण्डलमाश्रित्येत्यर्थः आदिमुहूर्त्तः षण्णवत्यंगुलच्छायः प्रज्ञप्तः अयमत्रभावार्थः ॥ टीका ॥
सर्वाभ्यन्तरमण्डलेयत्रदिने सूर्यश्चरति तस्यदिनस्य प्रथमो मुहूर्त्तोद्वादशांगुलमानं शंकुमाश्रित्य षण्णवत्यंगुलच्छायो भवति तथाहि तद्दिनमष्टादशमुहूर्त्त प्रमाण
भवतीति मुहूर्त्तोष्टादशभागो दिनस्य भवति ततश्च्छायागणितप्रक्रिययाच्छेदेनाष्टादश लक्षणेन द्वादशांगुलः शंकुर्गुण्यत इति ततोद्वे शते षोडशोत्तरे भवतः
२१६ तयोरर्द्धीकृतयो रष्टोत्तरं शत भवति १०८ ततश्च शङ्कुप्रमाणे १२ पनीते षण्णवतिरंगुलानि लभ्यन्ते इति ॥ ९६ ॥ अथ सप्तनवतिस्थानके

रसा प० ववहारिएणं दंडे छन्नउइअंगुलमाणेणं एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसलेवि अभिंतरउ आइ ॥ मूल ॥
मुहुत्ते छन्नउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ९६ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ

तेजेणे गाउकोस चिंतवीयें अव्यवहारिक नान्होपणि होय मोटोपणि होय ते व्यवहारिक दंड ९६ अंगुल प्रमाणि कह्या २४ अंगुल नोहाथहोय चिहुंहाथे १ ॥ भाषा ॥
दंड होय एम करतां ९६ अंगुल कह्या। एम ९६ अंगुलनोधनुषनालिका यूप भूमरी अच मुंशलएहसर्व ९६। ९६ अंगुलनो होय। निषधने माथे सर्वाभ्यं
तर मांडले दिवस अठारह मुहूर्तनो होय तो सर्वाभ्यंतर मंडले सूर्यउगे तिवारे पहिलो मुहूर्त ९६ अंगुल छाया प्रमाणि होय १२ अंगुलनो ढषजभोकरीये
तेहनी छाया ९६ अंगुल होय तिवारे कर्क संक्रांतिनो पहिलो मुहूर्त कहिये एतले ९६ अंगुल २ वडो दिवस कहिये तेकेम १८ मुहूर्त दिवसनाते १२ अं
गुल ढष चिगुण कीजे एतले १८ बार गुणा कीजे तो २१६ होय तेहनो अर्द्ध १०८ एह आंकमां हि ढष प्रमाण अंगुल १२ काढो पूठो ९६ अंगुल उगरे ॥
इति ९६ मो संपूर्ण ॥ ९६ ॥ हिवे ९७ मो लिखेछे। मेरु पर्वत १० सहस्र पिहुलो तेहथको पूर्वनी जगती ४५ सहस्र योजन तेहथी ४२ सह

॥ १५२ ॥

॥ टीका ॥

किञ्चिदभिधीयते। मंदरेत्यादि भावार्थोयं मेरोः पश्चिमान्तात् जम्बूद्वीपांतः पञ्चपञ्चाशत्सहस्राणि ततो द्विचत्वारिंशतो गोस्तुभइति यथोक्तमेवान्तर मिति
हरिषेणो दशमचक्रवर्त्ती देशोनानि सप्तनवतिम्वर्षशतानि गृहमध्युषित स्त्रीणिचाधिकानि प्रव्रज्यां पालितवान् दशवर्षसहस्रत्वा त्तदायुष्कस्येति ॥
९७ ॥ अथाष्टनवतिस्थानके किंचिदभिधीयते नंदणवणेत्यादि भावार्थोयं नन्दनवन मेरोः पंचयोजनशतोच्छ्रितप्रथममेखलाभावि पंचयोजनशतोच्छ्रि

॥ मूल ॥

गोथुभस्सणं आवासपव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प०
एवं चउदिसिंपि अठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तरपगडीउ प० हरिसेणेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी दे
सूणाइं सत्ताणउइवाससयाइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ताणं जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥
नंदणवणस्सणं उवरिल्लाउ चरमंताउ पंडयवणस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं अठाणउइजोयणसहस्साइं अबा

॥ भाषा ॥

सयोजन गोस्तूभपर्वत मेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथकी वेलंधर नागराजानो गोस्तूभ आवास पर्वतनो पश्चिमचरमांतएह ९७ सहस्र योजन आवाधाये
विचाले आंतरो कह्यो । एमज चिहुदिशि दक्षिण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमेशंख उत्तरे दगसीम एह ४ नो आंतरोकह्यो आठे कर्मनी ९७ उत्तर
प्रकृति कही नाणावरणी ५ दरसनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आउखा ४ नामकर्म४२ गोत्र २ अंतराय ५ सर्वमिली ९७ उत्तरप्रकृति हुई । नमिनाथ
अरिहंतने वारे हरिषेण दशमोचक्रवर्ती राजा देशोन कांइकऊणां ९७ सेवर्षलगे गृहस्थाश्रमे वसीने मुंडथईने अगारथकी साधुपणूं पाम्यो ३०० वर्षझांझेरा
दीक्षापालो १० हजारवर्ष सर्वायुपालो सीधोमोक्षपहुंतो ॥ इति ९७ मोसमवायथयो ॥ ९७ ॥ हिवे ९८ मोलिखेछे। मेरुनो नंदनवनपहिलो मेख

. तं तद्गतपञ्चयोजनशतोच्छ्रितकूटाष्टकस्य तद्रूपेण ग्रहणात् तथा पण्डकवनंच मेरुशिखरव्यवस्थितम् तो नवनवत्यामेरो रुक्तैस्तस्य मध्ये सहस्रे अपकृष्टे यथो ॥ टीका ॥
क्तमन्तर भवतीति गोस्तुभसूत्रभावार्थः पूर्वव मवरं गोस्तुभविष्कम्भसहस्रे चिप्ते यथोक्तमन्तर भवतीति वैयट्टस्सणमित्यादि यः केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोप
पाठः सम्यक्पाठ स्वायं दाहिणभरहड्ढस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइं जोयणसयाइं किंचूणाइं आयामेणं पणत्ते इति यतोन्यत्रोक्तं नवचेवसहस्साइं छावट्ठाइं सया
इं सत्तभवे सविसेसकलाचेगा दहिणभरहधणुपट्ठंति वैताढ्यधनुः पृष्टं लवमुक्त मन्यत्र दसचेवसहस्साइं सत्तेवसयाहवंतितेयाला धणुपट्ठंवेयड्ढे कलायपसर

हाए अंतरे प० मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाउ चरमंताउ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अठा
णउइजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० एवं चउदिसिंपि दाहिणभरहस्सणं धणुप्पिठे अठाणउइजोयण

लायें भूमिथकी ५०० योजन ऊंचोछे तेमांहि ५०० योजनना कूटऊंचाछे तोभूमीथकी तेकूटनां शिखर १ सहस्रयोजनऊंचा तिहांलगि नंदनवनकहीये मेरुपर्वत ॥ भाषा ॥
लाख योजनकह्यो तेमांहि १ हजार योजन भूमिमांहि १ सहस्रनो नंदनवन एवं २ सहस्रनोकल्या लाखमांहियो तेमाटे नंदनवननो उपरिलो चर
मांत मेरुने माथे पडकवनछे तेहनो हेठिलो चरमांत एह ९८ सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। मेरुपर्वत थकी ४५ हजार योजन जगती हुईते
थकी पूर्व समुद्रमांहि गोस्तूभ पर्वत ४२ हजारयोजन १ हजारयोजन तेपिहुलोछे। मेरुपर्वत १० हजार योजन जाडोछे तामेरुपर्वतना पश्चिम चरमांतथी
वेलंधर नाग राजानो आवास गोस्तूभ पर्वत पूर्वसमुद्रमांहिछे। तेहनो पूर्वचरमांत ९८ हजार योजन अवाधाये विचाले आंतरोकह्यो। एमचिहुंदिशि दचि
ण समुद्रमांहि दगभास पश्चिमसमुद्रमांहि शंख उत्तरसमुद्रमांहि दगसीम एइचिहुंनोआंतरोगोस्तुभनोपरेजाणवो दक्षिणार्द्ध भरतक्षेत्रनो धनुपृष्ट ९८।

॥ टीका ॥

सइवंति उत्तराश्रेणमित्यादि भावार्थः पूर्वोक्तानुसारेणावसेयः नवर मिह एकत्तालीसइमे इति केषुचित्पुस्तकेषु दृश्यते सोपपाठः एगूणपंचासइमेत्ति एको

॥ मूल ॥

सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० उत्तराउ कठाउ सूरिए पढमं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडल
गते अठाणउइ एकसठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुढित्ताणं सूरिए
चारं चरइ दक्खिणाउणं कठाउ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अठाणउइ एक

॥ भाषा ॥

से योजन कांइ ओछो लांबपणे कह्यो । उत्तर दिसथको सर्वाभ्यंतर मांडलाथको सर्वाभ्यंतर मांडले निषधने माथे आषाढी पूनिमे अठारह मुहूर्तनोदिवस
१२ मुहूर्तनी रात्रिहुये पछे श्रावण वदी १ दिने सूर्य उत्तर दिशिथको दक्षिणायने चाल्यो तिवारे बीजे मांडले आयो तेवारे १ मुहूर्तना ६१ या भाग
कीजे एहवा प्रतिदिन मांडले बेबेभाग दिवस घटाडे रात्रिवधारे चोथमे मांडले जाय तेवारे १ मुहूर्त दिवस घटे रात्र वधे एमज सर्वबाह्य मंडला लगें
कीजे सर्वबाह्य मंडले दिवस १२ मुहूर्त रात्रि १८ मुहूर्त वलीफरी मांडी उत्तरायणे सूर्य चाल्यो तिवारे बीजामांडलाथको मुहूर्तना ६१ या बेबे भाग प्रति
दिन दिवस वधारे रात्रि घटाडे साठि भागे मुहूर्त एक बांधोये सर्वाभ्यंतर मंडल लगे पछे सर्वाभ्यंतर मंडले १८ मुहूर्त दिवस १२ मुहूर्तरात्री हुयें सूर्य प
हिले छमासे दक्षिणायन भणी आवतोथको एकोनपंचासे मांडले गयोथको ९८ एकसठिया भाग एक मुहूर्तना दिवसनो क्षेत्र दिवसे घटाडी रात्रीनूं क्षेत्र
रात्रियेवधारी सूर्य चारचरे । सर्वबाह्य मंडल थको दक्षिणायनथको सूर्य बीजे छमासे उत्तरायनभणी आवतोथको एकोनपंचासमे मंडले गयोथको ९८ एक
सठिया भाग एक मुहूर्तना रजनीना क्षेत्रने घटाडीने दिवसनोक्षेत्रने वधारीने सूर्य चारचरे एतले उत्तरायणे रात्रि घटे दिवस वधे दक्षिणायने रात्रि वधे

॥ टीका ॥

.नपंचाशतो द्विगुणत्वे अष्टनवतिर्भवति द्वयगुणनंच प्रतिमण्डलं मुहूर्त्तैकषष्टिभागद्वयस्हद्वे दिंनस्यरात्रे र्वंति । रेवईत्यादि रेवतिः प्रथमायेषां तानि रेवतिप्रथ मानि तथाज्येष्ठापर्यवसानानीति तानिचतानिचेति कर्म्मधारयः तेषामेकोनविंशते र्नक्षत्राणामष्टनवतिस्तारा स्तारापरिमाणेन प्रज्ञप्ता स्तथाहि रेवतिनक्षत्रं द्वात्रिंशत्तारं अश्विनीत्रितारं कृत्तिकाषट्तारं रोहिणीपंचतारं मृगशिरस्त्रितारं आर्द्राएकतारं पुनर्वसुः पंचतारं पुष्यस्त्रितारं अश्लेषा षड्तारं मघा सप्ततारं पूर्वाफाल्गुनीद्वितारं उत्तराफाल्गुनीद्वितारं हस्तः पंचतारं चित्राएकतारं स्वातिरेकतारं विशाखापंचतारं अनुराधाचतुस्तारं ज्येष्ठात्रितारमित्येवं सर्वतारामी लने यथोक्तं तारात्रमेकोनं ग्रंथांतराभिप्रायेण भवति अधिकृतग्रंथाभिप्रायेण त्वेषा मेकतरस्य एकताराधिकत्वम् सम्भाव्यते ततो यथोक्ता स्तत्संख्याभवतीति ॥

॥ मूल ॥

सट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिक्खित्तस्स वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ता णं सूरिए चारं चरइ रेवईप ढम जेठापज्जवसाणाणं एगूणवीसाए नक्खत्ताणं अट्ठाणउइतारा‍उ तारग्गेणं प० ॥ ९८ ॥

॥ भाषा ॥

दिवस घटे प्रतिदिवस १ मुहूर्तना ६१ या बेबेभाग प्रति मंडले घटाडीये वधारिये । रेवतीनक्षत्रछे पहिलो ज्येष्टानक्षत्रछे पर्यवसान छेहडो जेहने एहवा उ गणीसनक्षत्र ने ९८ तारा तारात्रेणंतारापरिमाणे कह्या । रेवतीनक्षत्रना ३२ तारा । अश्विनीना ३ तारा । भरणीना ३ । कृतिकाना ६ । रोहिणीना ५ मृगसिरना ३ । आर्द्रानो १ । पुनर्वसुना ५ । पुष्यना ३ । अश्लेशाना ६ । मघाना ७ । पूर्वाफाल्गुनीना २ । उत्तराफाल्गुनीना २ । हस्तना ५ । चित्रानो १ । स्वाती १ । विशाखाना ५ । अनुराधाना ४ । जेष्टाना ३ । एह १९ नां सर्वमिली ९८ ताराथया । इति ९८ मो थयो ॥ ९८ ॥ हिवे ९९ मो लिखेछे

॥ टीका ॥

९८ ॥ अथ नवनवतिस्थानके किमपि लिख्यते । नंदनवणेत्यादि अस्यभावार्थः मेरुविष्कम्भो मूले दशसहस्राणि नन्दनवनस्थानेतु नवनवतिर्योजनश तानि चतुःपंचाशच्चयोजनानि षट्योजनैकादशभागा बाह्योगिरिविष्कम्भो नन्दनवनाभ्यन्तरस्तु मेरुविष्कम्भ एकोननवति शतानि चतुःपंचाशदधिकानि ष ट्चैकादशभागा स्तथा पंचशतानि नन्दनवनविष्कम्भः तदेवमभ्यन्तरगिरिविष्कंभो द्विगुणं नन्दनवनविष्कम्भश्चमीलितो यथोक्तमन्तर मायोभवति पढमसूरिय

॥ मूल ॥

मंदरेणं पव्वएणवणउइजोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० नंदणवणस्सणं पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थि मिल्ले चरमंते एसणं नवनउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं दक्खिणाउ चरमंताउ उत्तरिल्लेचरमंते एसणंणवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० उत्तरे पढमसूरियमंडले नवणउइजोयणसहस्साइं

॥ भाषा ॥

मेरूपर्वत ९९ सहस्र योजन ऊंचो ऊंचपणे कह्यो । भूमिथकी ५०० योजन मेरुने विषे ऊंचा चढीये पहिलो मेखला तिहां नंदनवन पामीये तेह नंदन वन ५०० योजन पिहुलो छे नंदनवननो पूर्व चरमांत तेहथी पश्चिम चरमांत लगे ९९०० से योजन आबाधाये विचाले आंतरो कह्यो । मेरुनो विष्कंभ मूले १०००० योजन नंदनवन स्थाने बाह्य गिरि विष्कंभ ९९०० योजन १ योजनना ११ हिया ६ भाग नंदनवन मांहि मेरुनो विष्कंभपणो ८९ से योजन ५४ योजने ११ हीया ६ भाग नंदनवन ५०० योजन पिहुलोते दुगणोलीजे अनेमेरुनो अभ्यंतर विष्कंभपणो लीजेतो ९९०० योजन आंतरो हुयो। एमज नंदनवननां दक्षिण चरमांतथकी नंदनवननो उत्तर चरमांतनो आंतरो ९९०० से योजन थयो । निषधने माथे सर्वाभ्यंतर मांडलीछे तेहपूर्व दिशनो तेहीज कंकणने

॥ टीका ॥

मंडलेत्ति इहजम्बूद्वीपप्रमाणस्याशीत्युत्तरशते द्विगुणिते अपहृते योराशिः सप्रथममण्डलस्यायामविष्कंभः सच नवनवतिसहस्राणि षट्च शतानि चत्वारिंशद विकानि द्वितीयन्तु नवनवतिः सहस्राणि षट्शतानि पंचचत्वारिंशच्च योजनानि योजनस्यच पंचत्रिंशदेकषष्टिभागाः कथं मण्डलस्यमण्डलस्यचान्तरं द्वेद्वेयोज ने सूर्यविमानविष्कम्भ श्चाष्टचत्वारिंशदेकषष्टिभागाः एतद्विगुणितं पंचयोजनानि पंचत्रिंशदेकषष्टिभागाश्चेति जातमेतच्च पूर्वमण्डलविष्कंभे चिप्तं जातमुक्तप्र

॥ मूल ॥

साइरेगाइं आयामविक्खंभेणं प० दोच्चे सूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खं

॥ भाषा ॥

आकारे फिरतो पश्चिमनोनीलवंत ने माथे ते सर्वाभ्यंतर मांडलो जम्बूद्वीपमांही १८० योजनछे पूर्वदिशिनो अने पश्चिमनो पणि एतलोजछे तो जंबूद्वीपन जीवा लांबपणे लाख योजनछे ते मांहि थी ३६० योजन मांडलो भूमिमांकाढो लाख योजनमांहि थी पूठें पूर्वसर्वाभ्यंतर मंडल अने पश्चिम सर्वा भ्यंतर मंडलने ९९४० योजन आंतरो थयो। पहिलो सर्वाभ्यंतर सूर्यना मांडलो ९९ सहस्र योजन सातिरेक भाझेराते ६४० योजन आयाम पश्चिमे लांब पणे दक्षिण उत्तरे विष्कंभपिहुलपणे आंतरो जाणिवो लाख योजन मांहिथी ३६० योजन काढो पूठें ९९६४० योजन ऊगरे पहिले मांडले पूर्वनो बीजो मांडलो अने पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६४५ योजन १ योजनना ६१ या भाग ३५ लांबपणे पिहुलपणे आंतरो। तेकेम पहिला मांडलाथी बीजो मांड लो २ योजन अने मांडलानूं पिहुलपणूं १ योजनना ६१ या ४८ भाग पश्चिमनो पणि एतलोजविहुंदिशमिलो पहिला बीजामांडलाना आंतराना योजन मंडल पिहुलपणो मिलो ५ योजन भाग ३५ एह सर्वाभ्यंतर मांडलाना प्रथमना आंकमांहि घातिये एतले ९९६४० योजन मांही ५ योजन ६१ यापैंत्रीस भाग घातिये तिवारे ९९६४५ १ योजन ६१ या ३५ भाग आंतरोबीजामांडलानो हुवे हिवेसूर्यनो पूर्व पश्चिमनो बीजो मांडलो ९९६५१ योजन ६१।९

॥ १५५ ॥ भागमिति तृतीयमण्डलविष्कम्भोप्येवमेवावसेय: सच नवनवतिसहस्राणि षट्शतानि एकपंचाशत्योजनानि नवैकषष्टिभागाश्चेति इमीसेणमित्यादि भावा ॥ टीका
र्थोयं अञ्जनकाण्डंदशमं तत्र रत्नप्रभोपरिमांतादष्टतं शतानां भवति प्रथमकाण्डे प्रथमशतेच व्यन्तरनगराणि सन्तीति तस्मिन्नपसारिते नवनवतिशतान्य
न्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ९८ ॥ अथ शतस्थानके किञ्चिल्लिख्यते। तत्र दशदशमदिनानि यस्यां सा दशदशमिका याहि दिनानांदशदशका

न्नेणं प० तइएसूरियमंडले नवनउइजोयणसहस्साइं साहियाइं आयामविक्खंभेणं प० इमीसेणं रयणप्प ॥ मूल ॥
भाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेठिल्लाउ चरमंताउ वाणमंतरभोमेज्जविहाराणं उवरिमंते एसणं नव
नउइजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ९९ ॥ दसदसमियाणं भिक्खुपडिमा एगेणं रा

भाग पूर्व अने पश्चिमनां मंडलने आंतरो दक्षिणने उत्तर मंडले आंतरो तेहोपिण वीजामांडलानोपरे ५ योजन भाग ३५ त्रीजेमांडलेवधारिये ९९६४५ यो ॥ भाषा
जन भाग ३५ माहिघातिये तिवारे ९९६५१ योजन ६१। ९ भाग आंतरो थाय। त्रीजो मांडलो आयाम लांबपणे विस्कंभ पिहुलपणे कह्यो। एणीये रत्न
प्रभा पृथिवी ये ३ कांड मांहिपहिलोकांड १६ हजारनो १६ जाति रत्ननो तेकांडप्रत्येकें १ सहस्रनोछे ती रत्नप्रभानो दशमो अंजन कांड तेहनो हेठिलो
चरमांत समभूतलथी १० हजारयोजनछे तिहांथकीमांडी उपरि रत्नप्रभामा १०० योजन मांहीवानव्यंतरनाभूमि संबंधी विहार क्रीडा नगरछे तेहनोउ
परिलो चरमांत ९९०० से योजनआबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले १० हजार योजन मांहिथी व्यंतर संबंधी १०० योजन बाहिर काढीये तिवारे
९९ से योजन उगरे। इति ९९ मोसमवाय थयो ॥ ९९ ॥ हिवे १०० मोलिखेछे। पहिला दस दिहाडा लगे एकेको भिक्षा दातीले पछे बीजे

णि भवन्ति तत्र भवन्ति दशदशमदिनानि शतञ्च दिनाना मतउच्यते एकेनराविंदिवसशतेने ति यस्यांच प्रथमेदशके प्रतिदिनमेकैकाभिचा द्वितीयेद्वेद्वे एवं यावद्दशमेदशदशेत्येवं सर्वभिचासंकलने सूत्रोक्तसंख्याभवत्येव इति पार्श्वनाथ स्त्रिंशद्वर्षाणि कुमारत्वं सप्ततिचानगारत्वमित्येवं शतमायुः पालयित्वा सिद्धः एवं थेरेविअज्जसुहमेत्ति आर्यसुधर्म्मामहावीरस्य पंचमोगणधरः सोपि वर्षशतं सर्वायुः पालयित्वा सिद्ध स्तथाच तस्यागारवासः पंचाशद्वर्षाणि छद्मस्थपर्याय। ॥ टीका ॥

इंदियसतेणं अट्ठब्ठेहिं णिक्खासतेहिं अहासुत्तं जावआराहियाविभवइ सयहिस्सिया नक्खत्ते एक्कासय तारे प० सुविहीपुप्फदंतेणं अरहा एगंधणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था पासेणंअरहापुरिसादाणीए एक्कंवा ससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धेजावप्पहीणे एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे सव्वेविणं दीहवेयड्ढपव्वयाएगमेगं गा ॥ मूल ॥

दशके बे बे भिचा एम दस दसक लगे एकेक भिचावधारीये ते प्रतिमा दश दशमिका कहीये। तेप्रतिमा दश दशमिका भिचा प्रतिमा एकरात्रि दिवस सते एतले १०० अहोरात्रियें अने साढे पांच से भिचाये करी यथा सूत्रोक्त प्रकारे यथा मार्गें आराधी होय एणे प्रकारे। शतभिषा नचत्रना एक सो तारा कह्या। नवम सुविधिनाथ बीजोनाम पुष्पदंत अरिहंत १०० धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया पार्श्वनाथ अरिहंत पुरुषादानीय महासोभागी ३० वर्ष गृहाश्रमे कुमारपणें ७० वर्ष यतिपणे १०० वर्ष सगलो आउखोपालीने सिद्ध थया समस्तदुःखथकी प्रचीणथया। एमज श्री महावीरनो पांचमो गणधर आर्य सुधर्म स्वामी गृहाश्रमे ५० वर्ष छद्मस्थपणें ४२ वर्ष केवलीपणे ८ वर्ष सर्वमिली १०० आउखोपालीने सिद्धथया। जंबूद्वीप मांहि ३२ विजयना ३२ भ ॥ भाषा ॥

विचत्वारिंश त्वेवलिपर्यायोष्टौभवति चैतद्राशिद्वयमीलने वर्षशतमिति वैताढ्यादिषूच्चत्वम् चतुर्थांशउद्वेधः कांचनका उत्तरकुरुषु देवकुरुषु क्रमव्यवस्थितानां पंचानां महाह्रदाना मुभयतो दशव्यवस्थिता स्तेच जंबूद्वीपे शतद्वयसंख्यासमवसेया इति ॥ १०० ॥ अथैकोत्तरस्थानवृद्ध्या सूत्ररचनां परित्यज्य

उयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया एगमेगंजोयणसयं उड्ढंउत्तेणं प०

॥ १५६ ॥ एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं कंचणगपव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूले विक्खंभेणं प० ॥ १०० ॥ चंदप्पभेणं अरहा

रत ऐरवतनां २ एवं ३४ दीर्घवैताढ्य एह बेगुणा धात की खंड पुष्करार्द्ध मांहि तो सगला दीर्घ वैताढ्य पर्वत एकेक सो गाऊ ऊंचपणें कह्या । एतले वैताढ्य पर्वत २५ योजन ऊंचा तेहनागाऊ १०० हुया अने ऊंचपणानो चौथो भाग भूमि मांहिहोय । सगलाही अढीद्वीप मांहिला चुल्ल लघु हिमवंत वर्षधर पर्वत वर्ष कहतां क्षेत्रतेहनो मर्यादाना करणहार ५ अने शिखरीपर्वत ५ एकेक १०० योजन ऊंचा जाणिवा । अने एकेक १०० गाऊ उद्वेधपणे भूमि मांहि ऊंडपणें कह्या । उत्तर कुरु मांहि नीलवंतादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचन गिरिछे सर्वमिली १०० थया । देवकुरुमांहि निषधादिक ५ द्रहछे एकेक द्रहने बिहूंपासे दस दस कांचनगिरिछे सर्वमिली १०० योजन देवकुरु उत्तरकुरु मिली २०० कांचनगिरि छे । जंबूद्वीप मांहि बेगुणा धातकी खंड पुष्करार्द्धमांही तेसगलाई सो सो योजन ऊंचा कह्या । एकेकसो गाऊ उद्वेधें भूमि मांहि ऊंडा एकेकसो योजन मूलें एतला पिहुला कह्या । इति १०० मो समवाय थयो ॥ १०० ॥ हिवे १५० मो समवाय लिखेछे । चंद्रप्रभ आठमा अरिहंत १५० धनुष ऊंचा ऊं

॥ टीका॥

.पश्चाग्रच्छतादि दृष्ट्वा तां कुर्व्वंनाह चंदप्पहेत्यादि सुगमश्च सर्वमाहादशाङ्गगणिपिटकसूत्रा मवरं॥ १५०॥ २००॥ पासायवडिंसयत्ति अवतंसकाः शेखरकाः कर्ण्ण पूराणिवा अवतंसकाः प्रधानाइत्यर्थः प्रासादाश्च ते अवतंसकाः प्रासादानाम्वा मध्ये अवतंसकाः प्रासादावतंसकाः ॥ २५०॥ तथा पंचधणुसतियस्सणमित्यादि

॥ मूल ॥

दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था आरणे कप्पे दिवड्ढं विमाणावाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं महाहिमवंतरुप्पीवासहरपव्वया दो दो जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दोदोगाउयसयाइं उव्वेहेणं प० जंबूद्दीवेणं द्दीवे दोकंचणपव्वयसया प० पउमप्पभेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था असुरकुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥ सुमईणं अरहा तिन्नि धणुसयाइं उड्ढं

॥ भाषा ॥

चपणें हुया। इग्यारमा आरणदेव लोकने विषे १५० विमाना वासा कह्या। बारमेअच्युतकल्पे १५० विमान विहूंमिली ३०० विमानछे। इति १५० नो थयो ॥ १५० ॥ हिवे २०० नो लिखेछे। सातमा सुपार्श्व अरिहंत २०० धनुष ऊंचा ऊंच पणें थया। सगला महाहिमवंत पांच रूपी वर्षधर अढाई दीप मांहिला बेबेसो योजन ऊंचा ऊंच पणें हुया। बेबेसे गाऊ उद्वेधपणे भूमिमांहि ऊंड पणें कह्या। जंबूद्वीपने विषे २०० कांचन पर्वत ते पूठें कह्याछे॥ इति २०० मो थयो ॥ २०० ॥ हिवे २५० मो लिखेछे। छठा पद्मप्रभ अरिहंत २५० धनुष ऊंचाऊंच पणें हुया। असुरकुमार ते भवनपति देवतानां प्रासादावतंसक मोटाप्रासाद २५० योजन ऊंचाऊंच पणें कह्या॥ इति २५० मो थयो ॥ २५० ॥ हिवे ३००

॥ टीका ॥

पञ्चधनुः शतप्रमाणस्य अंतिमसारीरियस्सत्ति चरमशरीरस्य सिद्धिङ्गतस्य सातिरेकाणि त्रीणिशतानि धनुषां जीवप्रदेशावगाहना प्रज्ञप्ता यतोसौ शैलेशीकर णसमये शरीररन्ध्रपूरणेन देहत्रिभाग म्विमुच्य घनप्रदेशोभूत्वा देहत्रिभागद्वयावगाहनः सिद्धिमुपगच्छति सातिरेकत्वञ्चैवं तिन्निसयातेत्तीसा धणुत्तिभागोय

॥ मूल ॥

॥१५७॥ उच्चत्तेणं होत्था अरिठनेमीणं अरहा तिन्निवाससयाइं कुमारवासमज्झे वसित्ता मुंडे नवित्ता जाव पव्व इए वेमाणियाणं देवाणं विमाणपागारा तिन्नि तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्स भगवउ महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दसपुव्वीणं होत्था पंचधणुसइयस्सणं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स साति रेगाणि तिन्निधणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा प० ॥ ३०० ॥ पासस्सणं अरहउ पुरिसादा

॥ भाषा ॥

मो लिखेछे । पांचमा सुमतिनाथ अरिहंत ३०० धनुष ऊंचा ऊंच पणेंहुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहंत ३०० वर्ष कुमारपणें वसी मुंडथया ७०० वर्ष दीक्षापाली सिद्धथया सर्वदुःख प्रक्षीण थया । वैमानिक देवताना विमाननाप्राकार गढ ३०० योजनउंचा उंचपणें कह्या । श्रमण भगवंत श्री महावीरने ३०० चौदह पूर्वधरहुया । ५०० धनुष जेहनूं शरीर होय अंतिम शरीरी होय चरमशरीरी होय चरम सिद्धियें पहुतो होय तेहने सिद्धिने विषे ३०० धनुष भाभेरा तेउपरि ३३ धनुष जीवप्रदेशनी अवगाहणाकही । केवलीनांजेतलो शरीर होय उंचपणें तेहनां ३०० भाग करीयें त्रीजे भागे नासिका कर्णादिक ना शरीरांतर्गत पोलार पूरीयें पछे २ भाग जीव सिद्धिउपर योजनने २४ मे भागे आकाश प्रदेश छाईनेरहेतो ५०० धनुष त्रिभागोक्त शरीरना ३३३ ध नुषथावे एतला सिद्धना जीवनी अवगाहणा जीव प्रदेश समान इति ३०० मो समवायथयो ॥ ३०० ॥ हिवे ३५० मो लिखेछे पार्श्वनाथ अरिहंत पुरु

॥ टीका ॥

. हीद्दबोधव्वो एसाखलुसिद्धाणं उक्कोसोमाइणाभणियत्ति ॥१॥ ३०० ॥ ३५० ॥ सव्वेविणंवक्खारपव्वएत्यादि वक्षस्कारपर्वता एकमेरुप्रतिबद्धाविंशति स्तेच वर्षधरा

॥ मूल ॥

णीयस्स अद्धुठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था अभिनंदणेणं अरहा अद्धुठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३५० ॥ संभवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सव्वेविणं णिसहनीलवं तावासहरपव्वया चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वक्खार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहरपव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउसयाइं उव्वेहेणं प० आणयपाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारिविमाणसया प० समणस्सणं भगवउ

॥ भाषा ॥

पादानी महा सोभागी तेहना ३५० चौदह पूर्वधर हुया। चौथा अभिनंदन अरिहंत ३५० धनुष ऊंचा उंच पणे कह्या। इति ३५० नो थयो ॥ ३५० ॥ हिवे ४०० नो लिखे छे। त्रीजा संभवनाथ अरिहंत ४०० धनुष उंचा उंच पणे हुया। सगलाही अढाई द्वीप मांहिला ५ निषध ५ नीलवंतवर्षधरपर्वत क्षेत्र मर्यादा कारी चार चार से योजन उंचा उंच पणे हुया। चार चार से गाउ उद्वेध पणे उंडपणे कह्या। जंबूद्वीप मांहि सगलाई वीस वक्षस्कार पर्वत छे ते किम महाविदेह मांहि ३२ विजय १२ अंतर नदी १६ वक्षस्कार ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदंत छे तो १६ वक्षस्कार अने ४ गजदंत मिली २० वक्षस्कार पर्वत कह्या। निषध नीलवंत वर्षधर एह पर्वत चार चार से योजन उंचा उंच पणे कह्या। सीता नदीने पासे मेरुने पासे ५०० योजन उंचा छे चार चार से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंड पणे कह्या। आनत प्राणत नवमा दशमा देवलोकने विषे ४०० विमान कह्या।

सत्तौ चतुःचतुशतोचाः ॥४००॥४५०॥ शीतादिनदीप्रत्यासत्तौ मेरुप्रत्यासत्तौ च पञ्चशतोच्चा इति तथा सव्वेविणंवक्खारेत्यादि तत्र वर्षधरकूटानि शतद्वयमशीत्य ॥ टीका ॥

महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ अजितेणं अरहा अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सागरेणं रायाचाउरंतचक्कवट्टी अद्धपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४५० ॥ सव्वेविणं वक्खारपव्वयासीआ सीओआउ महानईउ मंदरेणं वापव्वएणं पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वे विणं वासहरकूडा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच ॥ मूल ॥

श्रमण तपस्वी भगवंत श्रीमहावीरने ४०० वादीनो संपदा हुई। ते वादी केहवा छे। देवतायें करी सहित जे मनुष्य अने असुर भवनपत्यादिक लोक ते हने विषे अपराजित छे केहथी जीत्या न जाय एहवी उत्कृष्टी वादीनी संपदा हुई। इति ४०० नो समवाय संपूर्ण ॥ ४०० ॥ हिवे ४५० नो लिखे छे। अजितनाथ अरिहंत अर्द्ध पंचम साढा चार से धनुष उंचा उंच पणे हुया। सगर बीजो चक्रवर्ती राजा चिंहु दिशना अंतनो धणी ते ४५० धनुष उंचा उंच पणे हुया इति ४५० नो समवाय थयो ॥ ४५० ॥ हिवे ५०० नो लिखे छे। महा विदेह दीठ ३२ विजय मर्यादा कारी १६ वक्खार पर्वत अने ४ गजदंत एवं २० वक्खार निषध नीलवंतने पासे उंचा ४०० योजन अने शीता शीतोदा महानदीने पासे मेरुने पासे पांच पांचसे यो जन उंचा उंच पणे ते २० वक्खार निषध नीलवंतने पासे ४०० गाउ उंडा भूमि मांहि अने मेरुने पासे ५०० सेगाउ उद्वेध पणे उंड पणे कह्या। वर्षधर ॥ भाषा ॥

धिकं कथं लघुहिमवन्तिसहे एक्कारसअट्ठनवयकूडाइं नीलाद्रसुतिसुनवगं अट्ठिक्कारसजहासंखं एतेषा म्पञ्चगुणत्वात् वक्खारकूटानि त्वशीत्यधिकचतुःशतीसंख्या ॥ टीका ॥
नि कथं विज्जुपहमालवंते नवनवसेसेसुसत्तसत्तेव सोलसवक्खारेसुं चउरोचउरोयकूडाइं एतेषा म्पचगुणत्वात् पंचगुणत्वं जम्बूद्वीपादिमेरूपलक्षितद्वीपाणां पंच

जोयणसयाइं विक्खंभेणं प० उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था भरहेणं राया ॥ मूल ॥
चाउरंतचक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था सोमणसगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारप
व्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंच पंच गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० सव्वेविणं व
क्खारपव्वयकूडा हरिहरिस्सहकूडवज्जा पंच पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले पंच पंच जोयणसयाइं

र कहिये हिमवंतादिक ६ कुलगिरी तेह उपरि कूट किहां इंक ११ छे किहां इंक ८ छे तो सगला वर्षधर कूट २८० छे ते पांच पांच से योजन उंचा ॥ भाषा ॥
मूले पांच पांचसे योजन विष्कंभपणे पिहुल पणे कह्या । आदिनाथ अरिहंत कोसल देसना उपना ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया । भरत राजा चाउरत
चक्रवर्ती ५ से धनुष उंचा उंच पणे हुया । मेरु पर्वत थको विदिशि थकी नीकल्या ४ गजदंत एहवा कह्या सोमनस १ गंधमादन २ विद्युत्प्रभ ३ मालवंत
४ एह चार वक्खार पर्वत मेरु पर्वतने पासे पांच पांच से योजन उंचा उंच पणे पांच पांच से गाउ उद्वेध पणे भूमि मांहि उंडपणे कह्या । सगलाई
वक्खार पर्वतना कूट पणि हरिकूट हरिसहकूट वर्जीने एतले एह २ कूट । गजदंत संबंधीकूट सहस्र योजन उंचा छे । ते माटे एह २ टालीने बीज
कूट पांच से योजन उंचा उंच पणे कह्या । मूलने विषे पांच पांच से योजन लांब पणे पिहुल पणे कह्या । सगलाई नंदनवनना कूट पणि दलकूट वर्जीने

॥ टीका ॥

स्या सर्वोस्येतानि पंचशतोच्छ्रितानि एवंमानुषोत्तराद्रिष्वपि वैताढ्यकूटानितु सक्रोशषट्योजनोच्छ्रयाणि वर्षकूटानितु ऋषभकूटादीन्यष्टयोजनोच्छ्रितानीति
हरिकूट हरिसहकूट वर्जनंत्विहतयोः सहस्रोच्छ्रयत्वा दाहच विज्जुप्पहहरिकूडो हरिस्सहोमालवंतवक्खारो तहनंदणवणकूडो उव्विद्धाजोयणसहस्संति ॥
५०० ॥ चुल्लहिमवंत कूडस्सेत्यादि इहभावार्थो हिमवान् योजनशतोच्छ्रित स्तत्कूट मपंचशतोच्छ्रितं इति सूत्रोक्तमन्तर भवतीति अभिचंदे पंकुलकरेत्ति

॥ मूल ॥

आयामविक्खंभेणं प० सब्वेविणं नंदणकूडावलकूडवज्जापंच २ जोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं मूले पंच २
जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं प० ॥
५०० ॥ सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयणसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं प० चुल्लहिमवंतकूड
स्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ चुल्लहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितलेएसणं छजोयणसयाइं अबा
हाए अंतरे प० एवं सिहरीकूडस्सवि पासस्सणं अरहउ छसयावाईणं सदेव मणुयासुरेलोए वाए अप
राजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था अभिचंदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उद्धं उच्चत्तेणं होत्या वासुपुज्जेणं

॥ भाषा ॥

एतले बलकूट ते सहस्र योजन उंचो छे मोटाई टालीने बीजा सातकूट पांचपांचसे योजन उंचा उंच पणे मूलने विषे ५ से योजन लांबपणे पिहुलपणे
कह्या । सौधर्म ईशान पहिले बीजे कल्पे विमान पांच पांच से योजन प्रमाणे उंचा उंच पणे कह्या । इति ५ से नो समवाय थयो ॥ ५०० ॥
हिवे ६ सें नो लिखेछे । सनत्कुमार माहेन्द्र कल्पे त्रीजा चोथा देवलोकें विमान ६ सें योजन उंचा उंचपणेकह्या । लघु हिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत

.अभिचन्द्रः कुलकरो ऽस्यामवसर्पिण्यां सप्तानां कुलकराणां चतुर्थः तस्योच्छ्रयः षट्धनुःशतानि पंचाशदधिकानि ॥ ६०० ॥ श्रमणस्य भगवतोम हावीरस्य सप्तजिनशतानि केवलिशतानीत्यर्थः तथा श्रमणस्य भगवतोमहावीरस्य सप्तवैक्रियशतानि .वैक्रियलब्धिमत्साधुशतानीत्यर्थः अरिष्टेत्यादि देसूणाइंति ॥ टीका ॥

अरहा छहिंपुरिससएहिं सद्धिं मुंडे नवित्ता अगाराउ अणगारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥ ॥ मूल ॥

बंनलंतएसु कप्पेसु विमाणासत्त सत्त जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० समणस्सणं नगवउ महावीरस्स सत्तजिणसया होत्या समणस्स नगवउ महावीरस्स सत्तवेउव्वियसया होत्या अरिठ्ठनेमीणं अरहा सत्त

अने लघुहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणीतल भूमिभाग ६ स्से योजन आशाधायें विचाले आंतरो कह्यो । एतले हिमवंत पर्वत १ सो योजन ऊंचोछे उप रि पांचसेनोकूटछे सर्वमिली ६ स्से योजन थया । वलीएमज छठा शिखरि पर्वत ने उपरिकूटछे तेहनो उपरिलोभाग तेहथकी पृथ्वीतल ६ स्से योजन थ यो । पार्श्वनाथ अरिहंतने ६ स्से वादीथया तेकेहवा । देवता सहित मनुष्य तथा असुर भवनपत्यादिकछे जिहां एहवो त्रिहुंभुवन लक्षण लोकतेहने विषे अपराजित जीत्यानजाय एहवा वादीनो उत्कृष्टी संपदा हुई । एह अवसर्पिणी कालने विषे सात कुलकर मांहि चौथो कुलकर अभिचंद्रनामा ६ स्से धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया । बारमा वासु पूज्य अरिहंत ६ स्से पुरुष साथे मुंडथई गृहाश्रमथकी अनगार पणो पाम्या ॥ इति ६ स्से नो समवाय थयो ॥ ६०० ॥ हिवे ७ से नो लिखेछे । ब्रह्मलांतक पांचमे छठे देवलोके विमान सातसे योजन ऊंचा ऊंचपणे कह्या । श्रमण तपस्वी भगवंत महा वीरना सातसे जिन केवली थया । श्रमण भगवंत महावीरने ७ से वैक्रिय लब्धिनाधणी हुया । बावीसमा अरिष्टनेमी अरिहंत १ से वर्ष कुमारपणे ७ से ॥ भाषा ॥

॥ १६० ॥

॥ टीका ॥

त्तु:पंचशताद्दिगाननमूलानि तत्प्रमाणत्वाच्च शस्यकालस्येति महाहिमवंतेत्यादौ भावार्थोयं हिमवान् योजनशतद्वयोच्छ्रित स्तत्कूटंच पंचशतोच्छ्रितमिति

॥ मूल ॥

वाससयाइं देसूणाइं केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जावप्पहीणे महाहिमवंतकूडस्स णं उवरिल्लाउ चरमंताउ महाहिमवंतस्स वासहरपव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ७०० ॥ महासुक्कसहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अट्ठजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतरभोमेज्जा

॥ भाषा ॥

वर्ष देशोन ५४ दिन ऊणा केवली पर्याय चारित्रपालीने संपूर्ण १ हजार वर्ष आऊखोपालीने सिद्धथया बुद्धतत्वना जाणथया सर्वदु:खथकी प्रक्षीण थया। महाहिमवंतवर्षधर २ से योजन ऊंचोछे ते ऊपरि ५ से योजन महाहिमवंत कूटछे सर्वमिली भूमि लगे ७ से योजन महाहिमवंत कूटनो उपरिलो चरमांत तेहथकी महाहिमवंतवर्षधर पर्वतनो समोधरणो तल भूमिभाग ७ से योजन आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एमज रूपी कूट ५ से योजन ऊंचो रूपी पर्वत २ से योजन उंचो सर्वमिली ७ से योजन थया ॥ इति ७ से नो थयो ॥ ७०० ॥ हिवे ८ से नोलिखेछे। महा शुक्र-सहस्रार सातमे आठमे देवलोके विमान ८ से योजन उंचा उंच पणे कह्या। एह रत्नप्रभा पृथिवीना त्रिणकांड छे ते मांहि पहिलो खरकांड तेहना १६ विभाग तेहमी पहिलो रत्नकांड १ हजार योजन पिंड छे। ते मांहि १ सो योजन हेठे मूकिए १ सो योजन उपर मूकिये विचाले ८ से योजन ते मांहि काल पिशाचादिक वान व्यंतर कह्या। ते केहवा छे भौम कहतां भूमि संबंधी नगर तिहां विहार क्रीडा करे व्यंतर देवता ते माटे वान व्यंतर भौमेयक विहार

सुवीत्तमगतरभवतीति ॥ ७१० ॥ इमीसेणमित्यादि प्रथमंकाण्डं खरकाण्डं खरकाण्डस्य षोडशविभागस्य प्रथमविभागरूपं रत्नकाण्डं तत्र योज नसहस्रप्रमाणे अधउपरिच योजनशतद्वय म्विमुच्यान्येष्वष्टसु योजनशतेषु वनेषु भवा याना स्तेच ते व्यन्तराश्च तेषां सम्बन्धिनः भूमिविकारत्वा द्भौमेयका स्तेच ते विहरन्ति क्रीडन्ति तेष्विति विहाराश्च नगराणि वानव्यन्तरभौमेयकविहारा इति अठ्ठसयत्ति अष्टशतानि केषामित्याह अणुत्तरोववाइयाणंदेवाणंति देवे षूत्पद्यमानत्वा द्देवा द्रव्यदेवा इत्यर्थः तेषाङ्गति र्देवगति लक्षणा कल्याणं येषान्ते गतिकल्याणा स्तेषामेवस्थिति स्त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमलक्षणः कल्याणं येषांते

विहारा प० समणस्स णं भगवउ महावीरस्स अठ्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइ कल्लाणाणं आगमेसिभद्दाणं उक्कोसिया अणुत्तरोववाइया संपया होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

कह्या छे। श्रमण तपस्वी भगवंत महावीरने ८ से यती अनुत्तर विमाने उपपात ऊपजवो छे जेहनो एहवा देवता तथागति देवगति लक्षण कल्याण छे जेहनो स्थिति कल्याण छे जेहनो। आगामिये कालें एक भवने आंतरे भद्र मोक्ष गमन लक्षण छे जेहने उत्कृष्टी एहवी अनुत्तरोपपातिक साधुनी संपदा हुई। एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवी नो घणो समरमणीक भूमि भाग तेह थकी ८ सो योजन सूर्य चारचरे एतले समभूमिभाग थकी ७ से नेउ योजने तारा मंडल छे तेह उपरि दश योजन सूर्य सर्व मिली ८ सो योजन थया। अरिहंत अरिष्टनेमी बावीसमा तीर्थंकर ने ८ सो वादीनी संपदा हुई ते माटी बोलवा छे देवताये करी सहित मनुष्यलो असुर भवनपत्यादिक लोक एतले त्रिहुं भुवने वादने विषे अपराजित जीत्याम जाय एहवो

॥ टीका ॥ तथा तेषांतथात्तरद्भुतानामागमिष्यद्गामिभद्रं कल्याणं निर्वाणगमनलक्षणं येषान्ते आगमिष्यद्भद्राः तेषां किमित्याह उक्कोसिएत्यादि ॥ ८०० ॥

॥ मूल ॥ वइरसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ अठहिं जोयणसएहिं सूरं चारंचरति अरहउणं अरिठनेमिस्स अठस

॥ १६१ ॥ याइं वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाएअपराजियाणं उक्कोसिया वाईसंपया होत्था ॥ ८०० ॥

आणयपाणय आरणअच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयणसयाइं उढ्ढं उच्चत्तेणं प० निसढकूडस्सणं उवरि

ल्लाउ सिहरतलाउ णिसढस्स वासहरपव्वयस्स समेधरणितले एसणं नवजोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प०

एवं नीलवंतकूडस्सवि विमलवाहणेणं नवधणुसयाइं उढ्ढं उच्चत्तेणं होत्था इमीसेणं रयणप्पभाए वइरसमरम

॥ भाषा ॥ उत्कृष्टी वादीनी संपदा हुई ॥ इति ८ सो नो थयो ॥ ८०० ॥ हिवे नौ सै नो लिखे छे। आनत ९ प्राणत १० आरण ११ अच्युत १२ एह

चिहुं कल्पने विषे विमान नौ सै योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। निषध पर्वत चार सै योजन ऊंचो तेह उपरि पांच सै योजन निषध कूट छे सर्वमिली

नवसै योजन थया। तो निषध कूटनो उपरिलो शिखरनो तलो तेहथकी निषध पर्वतनो वर्षधर पर्वतनो समोभूमितल नौ सै योजन अबाधायें विचाले

आंतरो कह्यो। एमज नीलवंत कूटथकी पणि धरणीतल नौसै योजन आंतरो उपरिलो शिखरनोतलो तेहथकी निषध पर्वतनो समो भूमितल नौसै योज

न आंतरो कह्यो। एह अवसर्पिणी ये विमल वाहन पहिलो कुलगर ९ सै धनुष ऊंचा ऊंच पणे हुया। एणीये रत्नप्रभा पृथिवीनो पहिलो घणो समरम

णीक भूमिभाग तेह थकी ९ सै योजने सर्व उपरिलो तारा रूप शनैश्चरनो तारो चार चरे छे। समभूतल थकी ७ सै नव्वे योजन उपर तारा मंडल छे तेह

निसढकूडस्सणंमित्यादि इहायम्भावः निषधकूटम्पञ्चशतोच्छ्रितं निषधश्चतुःशतोच्छ्रितमिति यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ९०० ॥ सव्वेविणंजमगेत्यादि उत्तरकुरुषु नीलवद्वर्षधरस्य दक्षिणतः शीतायामहानद्या उभयोः कूलयो र्द्वौ यमकाभिधानौ पर्वतौस्तः तेच पंचस्वप्युत्तरकुरुषु द्वयोर्द्वयो र्भावाद्दश एवं चित्त ॥ टीका ॥

णिज्झाउ भूमिभागाउ नवहिंजोयणसएहिं सव्वुवरिमे ताराख्वे चारंचरइ निसढस्सणं वासहरपव्वयस्स उवरि ॥ मूल ॥
ल्लाउ सिहरतलाउ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमस्सकंडस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं नवजोयणसयाइं

ने दस योजन उपरि सूर्य चरे छे तेह उपर ८० मो योजने चंद्रमा चरे छे तेह थी ४ योजने २८ नक्षत्र छे तेह थी ४ योजने बुधनो तारोछे। तेह थी ३ ॥ भाषा ॥
योजने शुक्र नो तारो छे तेह थी ३ योजन बृहस्पति नो तारो छे तेहने ३ योजन उपर मंगल नो तारो छे तेहथी ३ योजन उपर शनैश्वर नो तारो छे
एवं नौ से योजन थया। निषध वर्षधर पर्वतना उपरला शिखरना तलथकी रत्नप्रभा पहिली पृथ्वी नो पहिलो कांडनो बहुमध्य देश भाग एह ९ से यो
जन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो। एतले निषध पर्वत ४ से योजन ऊंचो अने रत्नप्रभानो पहिलो कांड हजार योजन तेहनो अर्द्ध ५ से योजननो
एवं ९ से योजन थया। एमज नीलवंतना शिखरतल थी रत्नप्रभाना रत्नकांड नां मध्यभाग ९ से योजन जाणिवो ॥ इति ९ से नो समवाय थयो ॥
९००॥ हिवे हजार नो समवाय लिखे छे। सगलाई ९ ग्रैवेयक ना विमान ३१८ छे ते हजार योजन ऊंचा ऊंच पणे कह्या। सगलाई यमक
पर्वत उत्तर कुरुने विषे नीलवंत पर्वत थो दक्षिण पासे शीता नदी ने बिहुं पासे २ यमक पर्वत छे मेरुदीठ बे बे करता ५ मेरुने पासे दस थाय ते दशसे

॥ टीका ॥

विचित्तकूटा इति पंचसु देवकुरुषु यमकवत्तत्सद्भावात्पंचचित्रकूटाः पंच विचित्रकूटा इति सव्वेविणमित्यादि सर्वेपिवृत्ता वैताढ्या विंशतिः शब्दापात्यादयः सव्वेविणंहरीत्यादि हरिकूट भ्विद्युत्प्रभाभिधानेगजदन्ताकारवक्षस्कारपर्वते हरिसहकूटन्तुमाल्यवद्वक्षस्कारे तानिच पंचस्वपि मन्दरेषुभावात् पञ्चपञ्चभवन्ति

॥ मूल ॥

अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंतस्स वि ॥ १०० ॥ सव्वेविणं गेवेज्जाविमाणे दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० सव्वेविणं जमगपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० मूले दस दस जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० एवं चित्तविचित्तकूडावि भाणियव्वा सव्वेविणं वट्टवेयड्ढपव्वया दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दस दस गाउयसयाइं उव्वेहेणं प०

॥ भाषा ॥

योजन उंचा उंच पणे कह्या । दश दश से कोस उद्वेध पणे भूमि मांहि दश दश से योजन लगे आयाम विष्कंभ पणे लांबपणे पिहुलपणे कह्या । एमज ५ देवकुरुने विषे निषध थकी उत्तरदिशि शीतोदा महानदीने बिहुंपासे सर्वमिली दशचित्र विचित्रकूट यमक पर्वतनी परें जाणिवा । सगलाई वृत्त वैताढ्य बीस छे तेहिम जंबूद्वीप मांहि हिमवंत क्षेत्र मांहि रम्यक क्षेत्र ऐरवण्यत क्षेत्र मिली बीस एवं ४ वृत्त वैताढ्य थया । ८ धातकी खंडमांहि ८ पुष्करार्द्धमां हि सर्वमिली बीस शब्दापाती प्रमुख दश दश से योजन उंचा उंच पणे कह्या । दश दश से कोस उद्वेधपणे भूमिमांहि उंडपणे मूलने विषे हजार योजन पिहुलपणे। सगलाई समा गुर्जरदेश मांहि धानभरिवानो पालो तेहने संस्थाने संस्थित छे । १ हजार योजन आयाम विष्कंभपणे कह्या । मेरु पर्वत ने

सहस्रोच्छ्रितानि वक्खारकूडवज्जत्ति शेषवक्खारकूटेष्वेव मुच्चलं नास्त्येतेष्वेवास्तीत्यर्थः एवंबलकूडाविति पंचसुमन्दरेषु पंचनन्दनवनानि तेषु प्रत्येकमैशान्या ॥ टीका ॥
न्दिशि बलकूटाभिधानं कूटमस्ति ततः पंचशतानि सहस्रोच्छ्रितानि च नंदनकूडवज्जत्ति शेषाणि नन्दनवनेषु प्रत्येकं पूर्वादिदिग्विदिग्व्यवस्थितानि चत्वारिंश

मूले दसेवजोयणसयाइं विक्खंभेणं प० सव्वत्थसमा पल्लयसंठाणसंठिया सव्वेविणं हरिहरिस्सहकूडावक्खार ॥ मूल ॥
पव्वयकूडवज्जा दस दस जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० मूले दसजोयणसयाइं विक्खंभेणं एवं बलकूडावि
नंदणकूडवज्जा अरहाविअरिट्ठनेमी दसवाससयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धेजावसव्वदुक्खप्पहीणे पा
सस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जावस

विद्युत्पासे चार गजदंत के आकारे पर्वतछे तेमांहि विद्युत्प्रभ गजदंतने उपर हरिकूटछे। माल्यवंत ने उपर हरिसहकूटछे। एहकूट पांचसें योजननांछे ॥ भाषा ॥
मेरु पर्वत मिलो १ हजार योजन उंचा उंच पणे कह्या। मूले मेरु १ हजार योजन पिहुल पणे छे शेष थाकता वचस्कार कूट वर्जो नें वचस्कार कूट
हजार योजन उंचा नथी तेहथी ते वर्जो ने कह्या। एमज ५ मेरुने विषे ५ नंदन वन छे। दिशि विदिशि ने विषे प्रत्येकें बलकूट नामें करी कूट छे । त
५ बलकूट हजार योजन ना उंचा छे नंदन वन कूट वर्जो ने नंदन वनने विषे पूर्वादिक दिशि विदिशि ४० कूट छे ते हजार योजन उंचा नथी ए माटे
छोडीने कह्या। अरिहंत अरिष्टनेमी तीनसे वर्ष कुमार पणे सात से दीक्षा एवं हजार वर्षनो सगलो आयु पालीने सिद्ध थया तत्वना जाण थया सर्वदुः
ख प्रक्षीण थया। पार्श्वनाथ अरिहंतने १ हजार केवलीनी संपदा थई। पार्श्वनाथ अरिहंतना १ हजार शिष्य कालगत थकी सीधा यावत् सर्व्वंकरी स

॥ टीका ॥

संख्यानि नन्दनकूटानि वर्जयित्वा तानि साहस्रिकाणि न भवन्तीत्यर्थः अरहंतेत्यादि कुमारत्वे त्रीणिवर्षशता न्यनगारत्वे समेत्येवं दशशतानि पउमद्दहपुंडरी यद्दहत्ति पद्मद्रदः श्रीदेवीनिवासो हिमवद्वर्षधरपर्वतोपरिवर्त्ती पुण्डरीकद्रदो लक्ष्मीदेवीनिवासः शिखरिवर्षधरोपरिवर्त्तीति ॥ १००० ॥ ११०० ॥ तथा म

॥ मूल ॥

ब्बदुक्खप्पहीणाइं पउमद्दहपुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारसजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ ११०० ॥ महापउममहापुंडरीयदहाणं दो दो जोयणसह

॥ भाषा ॥

र्वदुःख प्रक्षीण थया। लघुहिमवंत पर्वत उपर पद्मद्रह छे शिखरी पर्वत उपर पुंडरीक द्रह छे एह बिहुं द्रह श्री अनें लक्ष्मी देवीना निवास भूत छे ते १ हजार योजन लांबपणे कह्या इति १ हजार नो समवाय थयो ॥ १००० ॥ हिवे ११ से नो लिखे छे। अनुत्तरोपपातिक देवताना विमान इग्यारह से योजन उंचा उंच पणे कह्या। पार्श्वनाथ अरिहंतने इग्यारह से वैक्रिय लब्धिवंत थया इति इग्यारह से समवाय थयो ॥ ११०० ॥ हिवे २ हजार नो लिखे छे। महाहिमवंत उपर महापद्मद्रह छे रूपी पर्वत उपर महा पुंडरीकद्रह छे ते श्री बुद्धि देवीना निवास भूत छे ते बे हजार योजन लांबपणे कह्या। इति बे हजार नो समवाय थयो ॥ २००० ॥ हिवे ३ हजार नो लिखे छे। रत्नप्रभा पृथिवीना वज्रकांडना उपरला चरमांत थी लोहिताक्ष कांडनो हेठिलो चरमांत तेह तीन हजार योजन अबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। इति तीन हजार नो समवाय थयो ॥

हापद्ममहापुण्डरीकद्रहौ महाहिमवद्रुक्मिवर्षधरयोरुपरिवर्त्तिनौ ह्रीबुद्धिदेव्योर्निवासभूताविति ॥ . २००० ॥ इमीसेणंरयणेत्यादि अयमिहभावार्थः रत्नप्रभापृथिव्याः प्रथमस्य षोडशविभागस्य खरकाण्डाभिधानकाण्डस्य वज्रकाण्डं नामरत्नकाण्डं द्वितीयं वैडूर्यकाण्डं तृतीयं लोहिताक्षकाण्डं चतुर्थं तानिच प्रत्येकं साहस्रिकाणीति चयाणां यथोक्तमन्तरम्भवतीति ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिद्रहौ निषधनीलवर्षधरोपरिस्थितौ धृतिकीर्त्तिदेवीनिवासाविति ४००० ॥ धरणितलेत्यादि धरणीतले धरण्यांसमेभूभागइत्यर्थः रुचयनाभीओत्ति अट्ठपएसोरुयगो तिरियंलोगस्समज्झयारंमि एसपहवोदिसाणं एसे

॥ टीका ॥

स्साइं ञ्चायामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्सउवरि ल्लाउ चरमंताउ लोहियक्खकंडस्स हेठिल्ले चरमंते एसणं तिन्निजोयणसहस्साइं ञ्चबाहाए ञ्चंतरे प० ॥ ३००० ॥ तिगिच्छिकेसरिदहा चत्तारि चत्तारि जोयणसहस्साइं ञ्चायामेणं प० ॥ ४००० ॥ धरणितलेमंदरस्सणं पव्वयस्स बहुमज्झदेसभाए रुयगनाभीउ चउदिसि पंच २ जोयणसहस्साइं ञ्चबाहाए

॥ मूल ॥

३००० ॥ हिवे ४ हजार नो लिखे छे। तिगिच्छिद्रह निषधने उपर नीलवंतने उपर केसरीद्रह ए बिहुं धृति देवी कीर्त्ति देवी ना निवास भूत छे ते ४ हजारयोजन लांब पणे कह्या इति ४ हजार नो समवाय थयो ॥ ४००० ॥ † × † × † + † × † × हिवे ५ हजार नो लिखेछे। धरणीनेविषे मेरु पर्वतनो बहुमध्य देश भाग रुचक तेहीज नाभिचक्र तुंबानी परे आठ प्रदेशो रुचक नाभि कह्या नाभिथकी चिहुंदिशि विदिशिपांच पांच सहस्र योजन अवाधाये विचाले आंतरो कह्यो। मेरु पर्वत दश हजार योजन जाडो छे तेमाटे मध्यभाग थकी चिहुंदिशि

॥ भाषा ॥

॥ १६७ ॥

वभवेमएदिसायंति ॥१॥ रुचकएव नाभि चक्रस्य तुंबमिवेति रुचकनाभि स्ततस्तस्मात्सर्वपिदिक्षु पंचसहस्राणि मेरु स्तस्य दशसहस्रविष्कंभत्वादिति ॥ ५००० ॥ टीका ॥

००० ॥ इमीसेणमित्यादि रत्नकाण्डंप्रथमं पुलककांडंसप्तममिति सप्तसहस्राणि ॥ ७००० ॥ हरिवासेत्यादि इहार्थे गाथार्द्धं हरिवासेइग

मंदरपव्वए प० ॥ ५०० ॥ सहस्सारे कप्पे छविमाणावाससहस्सा प० ॥ ६००० ॥ ॥ मूल ॥

इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणस्स कंडस्स उवरिल्लाउ चरमंताउ पुलगस्स कंडस्स हेठिल्ले चरमंते

एसणं सत्तजोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००० ॥ हरिवासरम्मयाणं वासा अठ

जोयणसहस्साइं साइरेगाइं वित्थरेणं प० ॥ ८००० ॥ दाहिणद्धउत्तरहस्स णं जीवा पाईण

पांच पांच हजार योजन पामीये। इति पांच हजारनो थयो ॥ ५००० ॥ हिवे ६ हजार नो लिखे छे। सहस्रार आठमे देव लोकें ६ हजार वि ॥ भाषा ॥

मान कह्या इति ६ हजार नो समवाय थयो ॥ ६००० ॥ हिवे ७ हजार नो लिखेछे। एणी ये रत्नप्रभा पृथिवी नो पहिलो रत्नकांड तेहनो

उपरिलो चरमांत तेहथकी पुलककांड सातमो तेहने हेठिलो चरमांत सातहजार योजन लगे आबाधाये बिचाले आंतरो कह्यो ॥ इति सात हजार नो

थयो ॥ ७००० ॥ हिवे आठ हजारनो लिखेछे। एह प्रत्येक हजार योजन छे तेमाटे युगलियाना हरिवर्ष अने रम्यक वासक्षेत्र ८ सहस्र

योजन सातिरेक झांझेरा एतले एकवीस योजन उगणिसहाइया एककला विस्तारपणे पिहुलपणे कह्या ॥ इतिआठ हजारनो थयो ॥ ८००० ॥

वीसा चुलसीबसयाकलायएकायत्ति ॥ ८००० ॥ दाहिणेत्यादि दक्षिणोभागो भरतस्येति दक्षिणार्द्धभरतं तस्य जीवैवजीवा ऋज्वीसीमा प्राचीन म्पूर्वत: प्रतीचीन म्पश्चिमत आयता दीर्घा प्राचीनप्रतीचीनायता दुहओत्ति उभयत: पूर्वापरपार्श्वयोरित्यर्थ: समुद्रं लवणसमुद्रं स्पृष्टा शुभवतोनवसहस्राण्यायामत इहोक्ता स्थानान्तरेतु तद्विशेषोऽयं नवसहस्राणि सप्तशतान्यष्टचत्वारिंशदधिकानिद्वादशच कला इति ॥ ८००० ॥ १०००० ॥ ॥ टीका ॥

पईणायया दुहउ समुद्दं पुठा नवजोयणसहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयणसहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १००० ॥ जंवूद्दीवेणं द्दीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्दे दोजोयणसयसहस्साइं ॥ मूल ॥

हिवे नवहजार नो लिखेछे। दक्षिणार्द्ध भरतनी जीवा सरल समा प्राचीन पूर्वथकी मांडी प्रतीचीन पश्चिमें आयत लांबी पूर्व समुद्र अने पश्चिम समुद्र लगे स्पर्शीछेते नवसहस्र योजन आयामपणे लांबपणेकह्यो इति ८ हजारनोथयो ॥ ८००० ॥ हिवे दश हजार नो लिखेछे। मेरुपर्वत धरणीतले दश सहस्र योजन पिहुलपणें कह्यो इति दश हजार नो थयो ॥ १०००० ॥ हिवे लाख नो लिखेछे। असंख्यात द्वीप मांहि मध्य जंवूद्वीप ग्रंतसहस्र एतले लाख योजन लांबपणें पिहुलपणें कह्यो इति लाखनो थयो ॥ १००००० ॥ हिवे बे लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र पहिलो बे लाख योजन पिहुल पणें चक्रवाल चक्राकारे जंबूद्वीपने वीटो रह्यो छे॥ इति बे लाख नो थयो ॥ २००००० ॥ हिवे त्रिण लाख नो लिखे छे। ॥ भाषा ॥

१०००० ॥ २००००० ॥ ३००००० ॥ ४००००० ॥ लवणेत्यादि तत्र जम्बूद्वीपस्य लक्षं चत्वारिच लवणस्येति पंच ॥ ५००००० ॥ ॥ टीका ॥

चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ २००००० ॥ पासस्सणं अरहउ तिन्निसयसाहस्सीउ सत्तावीसंचसहस्साइं उक्कोसिया सावियासंपया होत्था ॥ ३००००० ॥ धायइखंडेणं दीवे चत्तारि जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्स णं समुद्दस्स पुरत्थिमिल्लाउ चरमंताउ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं पंचजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ५००००० ॥ भरहेणं राया चाउरंतचक्कवट्टी छपुव्वसयसहस्साइं रज्जमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराउ अणगारियं ॥ मूल ॥

पार्श्वनाथ अरिहंतने त्रिण लाख उपरि वली सत्तावीस हजार उत्कृष्टी श्राविकानी संपदा हुई ॥ इति त्रिण लाखनो थयो ॥ ३००००० ॥ हिवे चार लाखनो लिखे छे। बीजो धातकी खंड द्वीप चार लाख योजन चक्रवाल विष्कंभपणें पिहुलपणें कह्यो ॥ इति चार लाख नो थयो ॥ ४००००० ॥ हिवे पांच लाखनो लिखेछे। लवण समुद्र ना पूर्व चरमांत थकी पश्चिम चरमांत पांच लाख योजन अबाधाये विचाले आंतरो कह्यो ॥ पूर्व लवण समुद्र ना बेलाख लीजे अने पश्चिम समुद्र लवणपणि बेलाख विचे जंबूद्वीप लाख सर्वमिली पांच लाख योजन थया ॥ इति पांच लाखनो थयो ॥ ५००००० ॥ हिवे छ लाखनो लिखेछे। श्री आदीश्वरनो वडा पुत्र भरत राजा चातुरंत चक्रवर्ती सतहुत्तरी पूर्व लाख वर्ष कुमारपणें रह्या छ लाख पूर्व महाराज पणें वसीने मुंड थया अगार थकी अनगारी थया। एतले यतीपणो पाम्या। इति छ लाखनो थयो ॥ ६००००० ॥ भाषा ॥

६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सेत्यादि तत्र लक्षं जंबूद्दीपस्य द्वे लवणस्य चत्वारिधातकीखण्डस्येति सप्तलक्षाण्यन्तरं सूत्रोक्तं भवतीति ॥ ७००००० ॥ ॥ टीका ॥
८००००० ॥ अजितस्यार्हतः सातिरेकाणि नवावधिज्ञानि सहस्राण्यतिरेकश्च चत्वारिंशतानि इदं सहस्रस्थानकमपि सप्तलक्षस्थानकाधिकारे यदधो

पव्वइए ॥ ६००००० ॥ जंबूद्दीवस्सणं द्दीवस्स पुरत्थिमिल्लाउ वेइयंताउ धायइखंडचक्कवा ॥ मूल ॥
लस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते सत्तजोयणसयसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७००००० ॥ मा
हिंदेणं कप्पे अठविमाणवाससयसहस्सा प० ॥ ८००००० ॥ अजियस्सणं अरहउ साइरेगा
इं नवउहिनाणिसहस्साइं होत्या ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवाससयसहस्साइं

हिवे सात लाखनो लिखेछे। जंबूद्दीपना पूर्वदिशिना वेदिकानां प्रांतथकीमांडी धातकी खंड चक्रवालरूप तेहनो पश्चिम चरमांत सातलाख योजन आवा ॥ भाषा ॥
धायें विचाले आंतरो कह्यो तेकेम। जंबूद्दीप १ लाख योजन लवण समुद्र २ लाख धातकीखंड ४ लाख सर्वमिली ७ लाख योजन थया। इति ७ लाखनो
थयो ॥ ७००००० ॥ हिवे ८ लाखनो लिखेछे। माहेंद्र चोथे कल्पे ८ लाख विमान कह्या ॥ इति ८ लाख नो थयो ॥ ८००००० ॥
हिवे ९ हजार नो लिखेछे। अजितनाथ अरिहंतना सातिरेके ४० अधिक ९ सहस्र अवधि ज्ञानी हुआ। लाख लगी संख्या कहे वली उपराठा ९ सहस्र
कह्या ते सूत्रनी गति विचित्र छे एहवी अथवा लेखकने प्रमाद थी जाणिवा ॥ इति ९ हजारनो थयो ॥ ९००० ॥ हिवे दश लाखनो लिखे छे

॥ १६६ ॥

तत्तत् सहस्रमब्दसाधर्म्या द्विचित्वाद्वा सूत्रगते लेखकदोषाद्वेति ॥ १००० ॥ पुरुषसिंहः पञ्चमवासुदेवः ॥ १०००००० ॥ सम ॥ टीका ॥
णेत्यादि किलभगवान्पोटिलाभिधानो राजपुत्रो बभूव तत्र वर्षकोटिम्प्रव्रज्या म्पालितवानित्येकोभवः ततो देवोभूदिति द्वितीय स्ततोनन्दनाभिधानो राज
सूनुः छत्राग्रनगर्यां जज्ञे इति तृतीयः तत्र वर्षलक्षम् सर्वदा मासक्षपणेन तप स्तप्त्वा दशमदेव लोके पुष्पोत्तरवरविजयपुण्डरीकाभिधाने विमाने देवोभव
दिति चतुर्थ स्ततो ब्राह्मणकुण्डग्रामे ऋषभदत्तब्राह्मणस्य भार्याया देवानन्दाभिधानायाः कुक्षावुत्पन्न इति पञ्चम स्तत स्त्र्यशीतितमे दिवसे क्षत्रियकुण्ड
ग्रामे नगरे सिद्धार्थमहाराजस्य त्रिशलाभिधानभार्यायाः कुक्षाविन्द्रवचनकारिणा हरिनैगमेषि नाम्ना देवेन संहृत स्तीर्थंकरतया च जातइति षष्ठः उक्तंभव

सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ सम ॥ मूल ॥
णेभगवंमहावीरे तित्थगरभवग्गहणाउ छठ्ठे पोट्टिलभवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्नपरियागं पाउणित्ता

धर्मनाथ कालीन पुरुषसिंह पांच मो वासुदेव दश लाख वर्ष लगे सगलो आउखो पालीने पांचमी धूमप्रभा पृथिवीने विषे नारकीपणें ऊपनोछे ॥ इतिदश ॥ भाषा ।
लाख नो थयो ॥ १०००००० ॥ हिवे एक कोटिनो लिखेछे । श्रमण भगवंत महावीर तीर्थंकर पणो उपार्ज्यो ते भवनाग्रहणथकी एतले तेभवथकी
पोटिलाना भवग्रहणे एक कोटिवर्ष लगे सामान्य पर्याय दीक्षापालीने आठमें देवलोके सर्वार्थ सिद्ध विमाने देवतापणें ऊपना ते छठो भव केम श्रीमहावीर
नो जीव पूर्व भवे पोटिलनाम राजा हुआ थो एक भव १ तिहां कोटि वर्ष प्रमाणे चारित्र पालीने बीजे सहस्रारे देव लोके देवता हुआ थो बीजो भव
तिहां थी त्रीजे भवे छत्राग्र नगरीये नंद राजा हुया तिहां गृहस्थपणे २४ लाख वर्ष रह्या । पछे १० लाख वर्ष चारित्र पाली ११ लाख ८५ सहस्र ६ से ४५

प्रहणं हि विना नान्यद्भवग्रहणं षष्टं श्रूयते भगवत इत्येतदेव षष्टभवग्रहणतया व्याख्यातं यस्माच्च भवग्रहणा दिदं षष्ठं तदप्येतस्मात्षष्टमेवेति सुष्टूच्यते तीर्थंक रभवग्रहणात्षष्टे पोट्टिलभवग्रहणे इति ॥ १००००००० ॥ उसभेत्यादि उसभसिरिस्सत्ति प्राकृतत्वेनश्रीऋषभ इति वाच्येव्यत्ययेननिर्देशः कृतः एकसागरोपमकोटाकोटी द्विचत्वारिंशता वर्षसहस्रैः किञ्चिदूनाधिकैरूनाप्यन्तरा इतिपस्था विशेषितेतिति ॥ + ॥ इहयएते अनंतरं संख्याक्रमस म्बन्धमात्रेण सम्बद्धाविविधा वस्तुविशेषाउक्ता स्तएवविशिष्टतरसम्बन्ध संबद्धा द्वादशांगे प्ररूप्यन्तइति द्वादशाङ्गस्यैव स्वरूपमभिधित्सुराह ॥ दुवाल संगेइत्यादि अथ चोत्तरोत्तरसंख्याक्रमसंबद्धार्थ प्ररूपणमनन्तरमकारि साम्प्रतंसंख्यामात्रसंबद्धपदार्थ प्ररूपणायोपक्रम्यते दुवालसंगेइत्यादि तत्रश्रुतपरमपुरुष ॥ टीका ॥

सहस्सारे कप्पे सव्वठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १००००००० ॥ उसभस्स भगवओ महावीरस्स य एगासागरोवमकोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥ ॥ दुवालसंगे गणिपिडए ॥ मूल ॥

मास खमण करी चौथे भवे दसमे देव लोके देव हुया। तिहां थकी पांचमे भवे ब्राह्मण कुंड ग्रामे नगरे ऋषभदत्त ब्राह्मणनी भार्या देवानंदाने कूखेंअप ना ५ तिहां थकी ८३ मे दिने खत्रीयकुंड ग्राम नगरे सिद्धार्थ राजाने घरे इन्द्रनी आज्ञाये हरिणे गमेषी देवें त्रिशला देवीनो कूखें अवतस्या एह छट्ठो भव आण्वो इति एक कोटी नो थयो ॥ १००००००० ॥ हिवे सागरोपमनो लिखे छे। श्री आदिनाथ भगवंतने छेहला श्रीमहावीरने बेयालीस सहस्र ऊणो एक सागरोपम कोडा कोडी आबाधायें विचाले आंतरो कह्यो। एकथकी मांडी कोडा कोडीनी संख्या कही ॥ ॥ हिवे द्वादशांग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

स्यांगानी वाङ्गानि द्वादशाङ्गानि आचारादीनि यस्मिंस्तद्द्वादशांगं गुणानांगणोस्यास्तीतिगणी आचार्यस्तस्य पिटकमिवपिटकं सर्वस्वभाजनं गणिपिटकं अथ वा गणिशब्द: परिच्छेदवचन स्तथाचोक्तम् आयारंमिअहीए जंनाओहोइसमणधम्मोउ तम्हाआयारधरो भस्सइपढमंगणिट्ठाणं परिच्छेदस्थानमित्यर्थ: ततश्च परिच्छेदसमूहो गणिपटकमवंचैवंपदघटना यदेतन्निपिटकं तत्द्वादशांगरूपम् तद्यथा आचार: सूत्रकृतइत्यादि सेकिंतमित्यादि अथ किंतदाचारवस्तु यद्वा अथ कोयमाचार: आचरणमाचार: आचार्यत इति वा आचार: साध्वाचरितो ज्ञानाद्यासेवनविधिरिति भावार्थ: एतत्प्रतिपादकोग्रन्थोप्याचारएवोच्यते आयारेणंति अनेनाचारेण करणभूतेन श्रमणानामाचारोव्याख्यायत इति योग: अथवा चारेधिकरण भूते णमितिवाक्यालंकारे श्रमणानां तप:श्रीसमालिं

॥ मूल ॥

प० तं० आयारे सूयगडे ठाणे समवाए विवाहपन्नत्ती णायाधम्मकहाउ उवासगदसाउ अंतगडदसाउ अणुत्तरोववाइयदसाउ पण्हावागरणाइं विवागसुए दिट्ठिवाए सेकिंतं आयारे आयारेणं समणाणं निग्गं

॥ भाषा ॥

नो वर्णन करे छे। इग्यारह अंग बारमो पूर्व एवं श्रुत रूप परम पुरुष ने १२ अंगसरीखाअंग वली केहवाछे गणीकहीये आचार्य तेहने पेटी सरीखो दर्शन चारित्र तेहनो स्थान कह्यो। तेकहेछे। आचारांग १ सूयगडांग २ ठाणांग ३ समवाय ४ विवाहपन्नती एतले भगवतीसूत्र ५ ज्ञाताधर्मकथा ६ उपासकदशा ७ अंतगडदशांग ८ अनुत्तरोपपातिक दशा ९ प्रश्नव्याकरण १० विपाक सूत्र ११ दृष्टिवादपूर्व १२ अथ स्यूंते आचार वस्तु अथवा कोण ते आचार। आचरवो ते आचार। अथवा आचरिये ते आचार ज्ञानादिक आसेवनविधि तेहनो प्रतिपादक ग्रंथ पणि आचार कहिये ते आचारांगने विषे श्रमण तपस्वी तेह निर्ग्रंथ बाह्याभ्यंतर ग्रंथि रहित तेहना आचार तेज्ञानादिक आचार गोचरतेभिक्षा ग्रहण ज्ञानादिक तेविनय वैनयक तेहनोफलकर्मक्ष

गितानां निर्ग्रन्थानां सवाह्याभ्यन्तरग्रन्थरहितानां श्रमणा,निर्ग्रन्थाएवभवन्तीति विशेषणं किमर्थमित्युच्यते शाक्यादिव्यवच्छेदार्थं मुक्तंच निग्गंथसक्कतावस गेरुयश्राजीवपंचहासमणत्ति तत्राचारो ज्ञानाद्यनेकभेदभिन्न: गोचरोभिक्षाग्रहणविधिलक्षणो विनयोज्ञानादिविनय: वैनयिकं तत्फलं कर्म्मक्षयादिस्थानं कायोत्सर्गोपवेशनशयनभेदा स्त्रिरूपं गमनं विहारभूम्यादिषु गतिश्चंक्रमणमुपाश्रयांतरे शरीरश्रमव्यपोहार्थमितस्ततः सञ्चरणं प्रमाणं भक्तपानाभ्यवहारोपध्या देर्मानं नियोजनं स्वाध्यायप्रत्युपेक्षणादिव्यापारेषु परेषां नियोजन भाषासंयतस्य भाषासत्याऽसत्या मृषारूपा: समितयईर्यासमित्याद्या:पञ्च गुप्तयोमनोगुप्त्या दयस्तिस्र: तथाच शय्याचवसतिरुपधिश्च वस्त्रादिकोभक्तं चाशनादिपानं चोष्णोदकादीतिद्वंद्व स्तथा उद्गमोत्पादनैषणा लक्षणानांदोषाणां विशुद्धिरभाव उद्ग मोत्पादनैषणाविशुद्धि स्ततः शय्यादीनामुद्गमादि विशुद्धाशुद्धानां तथा विधकारणे ऽशुद्धानांचग्रहणं शय्यादिग्रहणं तथा व्रतानि मूलगुणा नियमाउत्तरगु ॥ टीका ॥

थाणं आयारगोयरविणयवेणइयठाणगमणचंकमणपमाणजोगजुंजणभासासमितिगुत्तीसेज्जोवहिभत्तपाणउ ॥ मूल ॥

य स्थापना कायोत्सर्ग गमन बिहार भूमिचालवो । चंक्रमण उपाश्रयांतरे उपाध्यायादिकने अर्थे भमिवो । प्रमाण भक्तपानोपध्यादिकनो मान । योग योजन प्रतिलेखनादिकनेविषे परने योजवो व्यापारिवो । भाषासंयत मिश्र मृषाभाषात्यागरूप समिति ईर्यासमित्यादिक ५ गुप्ति गोपिवो । शय्यावसतिउप धि वस्त्रादिक । भात अशनादिक पान उष्णादिक पाणी उद्गमदोष १६ उत्पादनदोष १६ एषणा गवेषणा लक्षण दोषनो विशोधो अभाव । शुद्धभक्तपानादि कनो ग्रहिवो । तथा कारणे अशुद्धनो शय्यादिकनो ग्रहिवो । व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण । तपउपधान ते १२ बारे भेदे तप । एहसर्व सुप्रशस्तभलो जेह आचारांग ने विषे कह्यो आयछे । ते आचार संक्षेपे करी पांच प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । ज्ञानाचार श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक रूप आठप्रका ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वास्तपउपधानं द्वादशविधंतपः तत आचारश्च गोचरश्चेत्यादि यावद्गुप्तयश्च शय्यादिगृहणं चव्रतानिच नियमाश्च तपउपधानं चेतिसमाहारद्वंद्व स्तच्चतत्सुप्रश
स्तंचेति कर्म्मधारयः एतत्सर्वमाख्यायते भिधीयते एतेषु चाचारादिपदेषु यत्क्वचिदन्यतरोपादाने अन्यतरगतार्थस्याभिधानं तत्सर्वंतत्प्राधान्यख्यापनार्थमेवेत्यवसेय
मिति सेसमासइत्यादि स आचरोयमधिकृत्य गृन्थस्याचारइतिसंज्ञाप्रवर्त्तते समासतः संक्षेपतः पञ्चविधः प्रज्ञप्त स्तद्यथा ज्ञानाचारइत्यादि तत्रज्ञानाचारः श्रु
तज्ञानविषयः कालाध्ययनविनयाध्ययनादिरूपो व्यवहारोऽष्टधा दर्शनाचारः सम्यक्त्ववतांव्यवहारो निःशंकितादिरूपोऽष्टधा चारित्राचारश्चारित्रिणां समि
त्यादि पालनात्मकोव्यवहारः तपः आचारो द्वादशविधतपोविशेषानुष्टितिः वीर्याचारो ज्ञानादिप्रयोजनेषुवीर्यस्यागोपनमिति आयारत्ति आचारगृन्थस्य ण
मित्यलङ्कारे परित्तासंख्येया आद्यन्तोपलब्धेर्नानन्ताभवन्तीत्यर्थः कावाचना सूत्रार्थप्रदानलक्षणा अवसर्प्पिण्युत्सर्प्पिणीकालं वा प्रतीत्यपरीतेति संख्येयान्यनु

॥ मूल ॥

गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थमाहिज्जइसे समासउ पंचविहो प०
तं० णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारेतवायारे वीरियायारे आयारस्सणंपरित्तावायणा संखेज्जाअणुउगदारा
संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणंअंगठयाए पढमेअंगेदो

॥ भाषा ॥

रे १ दर्शनाचार निःशंकितादिरूप आठप्रकारे २ चारित्राचार आठप्रवचनमातारूप समिति गुप्ति लक्षण ३ तपआचार १२ भेदें तपनो करिवो ४ वीर्या
चार ज्ञानादिक प्रयोजन ने विषे वीर्यनो अगोपिवो ५ आचारांगगृंथना संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोग द्वार अनुयोगव्याख्या तेहनो
द्वार उपक्रमादिक । संख्याता प्रतिपत्ति द्रव्यादिक पदार्थनो मतांतर तेप्रतिपत्ति । संख्यातावेढा छंद विशेष२ संख्याता श्लोक अनुष्टुप आदिक । संख्याता

॥ टीका ॥

योगद्वाराणि उपक्रमादीनि अध्ययनानामिव संख्येयत्वात् प्रज्ञापकवचनगोचरत्वाच्च संखेज्जाओपडिवत्तीओत्ति द्रव्यादिपदार्थाभ्युपगमा मतान्तराणीत्यर्थः प्रतिमाद्यभिग्रहविशेषा वा संखेज्जावेढत्ति वेष्टकाश्छन्दोविशेषा एकार्थप्रतिबद्धवचनसंकलिकेत्यन्ये संखेज्जासिलोगत्ति श्लोका अनुष्टुप्छन्दांसि संख्यातानिर्युक्तयः निर्युक्तानां सूत्रेभिधेयतया व्यवस्थापितानामर्थानां युक्तिर्घटनाविशिष्टायोजना निर्युक्तियुक्ति रेतस्मिंश्चवाच्ये युक्तशब्दलोपान्निर्युक्तिरित्युच्यते एताश्चनिक्षेपनिर्युक्त्याद्याः संख्येयाइति सेणमित्यादि स आचारोणमित्यलङ्कारे अंगार्थतया अङ्गलक्षणवस्तुत्वेन प्रथममंगं स्थापनामधिकृत्य रचनापेक्षयातुद्वादशमंगं प्रथमं पूर्वन्तस्य सर्वप्रवचनात्पूर्वं क्रियमाणत्वादिति द्वौश्रुतस्कन्धावध्ययनसमुदायलक्षणौ पञ्चविंशतिरध्ययनानि तद्यथा सत्थपरिन्ना १ लोग विजओ २ सीओसणिज्ज सम्मत्तं ४ आवंति ५ धुयविमोहो ७ महापरिन्नो ८ वहाणसुयं ९ इति प्रथमश्रुतस्कन्धः पिंडेसण १ सेज्जिरिया ३ भासेज्जायाय ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्त सत्तिकया १४ भावण १५ विमुत्ती १६ इति द्वितीय श्रुतस्कन्धः एवमेतानिनिशीथवर्जानि पञ्चविंशतिरध्ययनानि तथा पञ्चाशीतिरुद्देशनकालाः कथमुच्यते अङ्गस्य श्रुतस्कन्धस्या ध्ययनस्योद्देशकस्य चैतेषां चतुर्णामप्येक एवोद्देशनकालः एवंशस्त्रपरिज्ञादिषु पंचविंशतावध्ययनेषु क्रमेण सप्त १

॥ मूल ॥

सुयखंधापणवीसंअज्झयणा पंचासीइं उद्देसणकालापंचासी समुद्देसणकाला अठारसपदसहस्साइं पदग्गे

॥ भाषा ॥

निर्युक्ति सूत्रने विषे कहिवा पणियाप्या अर्थनो जोडिशते युक्ति विशिष्ट घटनाये योजवो तेनिर्युक्ति। ते आचारांग अंगार्थपणे अंगलक्षण वस्तुपणे। पहिले अंगे वेश्रुतस्कंधछे पंचवीस अध्ययनछे तेकेहा सत्थपरिन्ना १ लोग विजय २ सिओसणिज्जं ३ संमत्तं ४ आवंति ५ धुय ६ विमोहा ७ महापरिन्नो ८ वहाण सुयंति ९ इति प्रथम स्कंध ॥ पिंडेसण १ सिज्जि २ रिया ३ भासज्जाया ४ वत्थ ५ पाएसा ६ उग्गहपडिमा ७ सत्तसत्तिकिया १४ भावण १५ विमुक्ति १६ इति

षट् २ चतु ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतु ९ रेकादश १० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ संख्याताउद्देशनकालाः षोडशस्वध्ययने
षु शेषेषुनवसुनवैवेति इह संगृहगाथा सत्तयछच्चउचउरो छपंचअट्ठेवसत्तचउरोय एक्कारातितिदोदो दोदोसत्तेक्कएक्कोयत्ति एवंसमुद्देशनकाला अपिभणितव्याः
अष्टादशपदसहस्राणि पदाग्रेणप्रमाणतः इहयत्रार्थोपलब्धिस्तत्पदं ननुयदि द्वौश्रुतस्कन्धौ पंचविंशतिरध्ययनान्यष्टादश पदसहस्राणि पदाग्रेणभवन्ति ततो
यद्भणितं नवबंभचेरगुत्तोओ अट्ठारसपदसहस्सिओवेओत्ति तत्कथं नविरुध्यते उच्यते यत्द्वौश्रुतस्कन्धाविल्यादि तदाचारस्य प्रमाण भणितं यत्पुनरष्टादश
पदसहस्राणि तत्रवब्रह्मचर्य्याध्ययनात्मकस्य प्रथमश्रुतस्कन्धस्य प्रमाणं विशेषार्थबद्धानिचसूत्राणि गुरूपदेशतस्तेषामर्थोवसेय इति संख्येयानि अक्षराणि वे
ष्टकादीनां संख्येयत्वात् अनंतागमाः इहगमा अर्थगमा गृह्यन्ते अर्थपरिच्छेदाइत्यर्थः तेचानन्ताः एकस्मादेवसूत्रात्तद्धर्मविशिष्टानंतधर्म्मात्मकवस्तुप्रतिपत्तेः

णासंखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडानिबद्धाणिकाइया

द्वितीयश्रुतस्कंध ॥ ८५ शास्त्र परिज्ञादिक २५ अध्ययनने विषे अनुक्रमे उद्देशा सप्त १ षट् २ चतुः ३ चतुः ४ षट् ५ पंच ६ अष्ट ७ सप्त ८ चतुः ९ एकादश
१० त्रि ११ त्रि १२ द्वि १३ द्वि १४ द्वि १५ द्वि १६ एतले पहिले २श्रुतस्कंधना ८ अध्ययनना ४४ उद्देशा नवमो अध्ययन उद्देशा १६ विच्छेदथया । एवं ६० उद्दे
शा पहिले श्रुतस्कंधे अने बीजे २५ सर्व मिली ८५ उद्देशा थया । कालते अवसर जेतला उद्देशाना काल अवसर तेतला समुद्देशाना अवसर कह्या । अठारह
सहस्रपद पदाग्रे पदने परिमाणे जिहां सूत्रार्थनो समाप्ति होय तेपदकहिये ते प्रथम श्रुतस्कंधे नव अध्ययनना १८ सहस्र पद । संख्याता अक्षर लिपिन्यास
अनन्तागमाअर्थपरिच्छेद । अनन्तापर्यव अक्षर पदार्थना पर्याय भेद जिहां परित्ता एतले अनन्ता नही एहवात्रसजीववेरिंद्रियादिक कहीये । अनंतस्थावर

अन्येतुव्याचक्षते अभिधानाभिधेयवशतोगमाभवन्ति तेचानन्ताः अनन्ताः पर्यायाः स्वपरभेदभिन्ना अक्षरपदार्थपर्याया इत्यर्थः परीतास्त्रसाआख्यायन्त इति योगः त्रसन्तीति त्रसाद्वींद्रियादयस्तेच परीतानानंता एवं रूपत्वादेव तेषां अनंताः स्थावरावनस्पतिकायसहिताः किंभूताएतेसासयाकडानिबद्धा निकाइयत्ति शाश्वताः द्रव्यार्थतया अविच्छेदेन प्रवृत्तेः कृताः पर्यायार्थतया प्रतिसमयमन्यथाभावात्ते निबद्धाः सूत्रएवग्रथिता निकाचिताः निर्युक्तिसंग्रहणि हेतूदाहर णादिभिः प्रतिष्ठिताजिनैः प्रज्ञप्ता भावाः पदार्था अन्वेष्यजीवादयः आघविज्जंतित्ति प्राकृतशैल्याआख्यायंते सामान्यविशेषाभ्यां कथ्यंतइत्यर्थः प्रज्ञाप्यन्तेना मादिभेदाभिधानेन प्ररूप्यन्ते नामादिस्वरूपकथनेन यथापज्जायाणभिधेयमित्यादि दर्श्यन्ते उपमामात्रतः यथागौर्गवय स्तथा इत्यादि निदर्श्यन्ते हेतुदृष्टा न्तोपन्यासेन उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यांसकलनयाभिप्रायतोवेति सांप्रतमाचाराङ्गग्रहणफलप्रतिपादनायाह सेएवमित्यादि सइत्याचारांगग्राहको ॥ टीका ॥

जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंतिपरूविज्जंति नंदिस्संति उवदंसिज्जा सेएवंणाए एवंविन्नाए ए · ॥ मूल ॥

वनस्पति सहित एह भाव । केहवाछे द्रव्यार्थनयें करी अविच्छेदपणें शास्वताछे वली केहवाछे कडाकहतां पर्यायार्थपणि प्रतिसमें अन्यथापणिहोय निबद्धासू ॥ भाषा ॥
त्र थकी गूंथ्या । निर्युक्ति संग्रहणी हेतु उदाहरणे करी निकाचित निबिड पणें प्रतिष्ठ्या । जिनवीतरागें प्रज्ञप्ता कह्या । एहवा भाव पदार्थ घनेरापणि अजीव पदार्थ जिहां सामान्यविशेष पणि कहियें । नामादिक भेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपियें । उपमाने करी देखाडियें । यथा गोस्त नागवय हेतु दृष्टान्तोपन्यासे करी निर्देसियेदेखाडियें । उपनय निगमने करी सकलनयें करी उपदेशियें । ते आचारांग एहवोछे । एम एहभणी ने ज्ञाता

गृह्यत एवंआयत्ति अस्मिन्भावतः सम्यगधीते सत्येवमात्माभवति तदुक्तक्रियापरिणामाव्यतिरेकात् सएवभवतीत्यर्थः इदंचसूत्रंपुस्तकेषु नदृष्टं नंद्यांतुदृश्यते इतीहव्याख्यातमिति एवं क्रियासारमेवज्ञानमितिख्यापनार्थंक्रियापरिणाममभिधायाधुनाज्ञानमधिकृत्याह एवंनायत्ति इदमधीत्य एवं ज्ञाताभवति यथैवेहोक्तमिति एवंविन्नायत्ति विविधोविशिष्टोवा ज्ञाताविज्ञाताएवं विज्ञाताभवति तंत्रांतरीयज्ञाताभवति,तंत्रांतरीयज्ञातृभ्यः प्रधानतरइत्यर्थः एवमित्यादि निगमनवाक्यंएवमनेन प्रकारेणाचारगोचरविनयाद्यभिधानरूपेण चरणकरणप्ररूपणता आख्यायत इति चरणं व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधं करणंपिण्ड विशुद्धि समित्याद्यनेकविधं तयोः प्ररूपणता प्ररूपणैव आख्यायतेइत्यादि पूर्ववदिति सेत्तआयारेत्ति तदिदमाचारवस्तु अथवा सोयमाचारोयः पूर्वदृष्टइति १ ॥ सेकिंतंसूयगडे सूचायांसूचनात् सूत्रं सूत्रेणकृतं सूत्रकृतमिति सुदृच्यते सयगडेणंति सूत्रकृतेन सूत्रकृतेवास्वसमयाः सूच्यंते इत्यादिकंव्यं तथा ॥ टीका ॥

वंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नंदिसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंआयारो ॥ १ ॥ सेकिंतंसूयगडे सूयगडेणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जंति ससमयपरसमयासूइज्जंति जीवासूइ ॥ मूल ॥

जाण होय। एवंविन्नतेत्ति विज्ञाताहोयअन्यशास्त्रन शास्त्रनाजाणतेहथकी पिण घणो जाणहोय। एम एणे प्रकारे आचार गोचर विनयादिकने कहिवा येकरी चरण श्रमण धर्म करण पिंडविशुद्धि तेहनी प्ररूपणाआख्यायते कहिये प्ररूपिये निर्देशीयेउपदेशिये पूर्ववत्। एह आचारांगकह्यो ॥ १ ॥ अथस्यूतेसूत्रकृतांग। सूत्रसूववाथकी सूत्रेकोधो तेसूत्रकृत जेणे सुयगडांग स्वसमयजिनमत सूचवियेकहिये परसमयपरमत सूचवीयेकहिये जीवपदार्थ सूचवी ये चेतनालक्षणजीव एहवो कहिये। अजीवपदार्थ धर्मास्तिकायादिक जिहांसूचवीये जीव अजीव बिहुंपदार्थ जिहांकहिये पंचास्तिकायमयलोकसूचविये ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

सूत्रकृतेन जीवाजीवपुण्यपापाश्रवसंवरनिर्जराबंधमोक्षावसानाः पदार्थाः सूच्यंते तथा समणाणमित्यादि अत्र श्रमणानां मतिगुणविशोधनार्थं स्वसमयः स्थाप्य तइतिवाक्यार्थः तत्र श्रमणानां किंभूतानां मचिरकालप्रव्रजितानां चिरप्रव्रजितादि निर्म्मलमतयोभवंत्यहचिरप्रव्रजितास्वपरिचया हढश्रुतसंपर्काच्चेति पुनः किंभू तानां कुसमयमोहमइ मोहियाणंति कुत्सितः समयः सिद्धांतोयेषांते कुसमयाः कुतीर्थिकास्तेषांमोहः पदार्थेष्वयथाववोधः कुसमयमोहस्तस्माद्योमोहः श्रोढ मनोमूढता तेममतिर्मोहिता मूढतांनीता येषांतेकुसमयमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयाः कुसिद्धांतास्तेषामोवः संघो मकारस्तुप्राकृतत्वात् तस्माद्योमो होमूढतातेनमतिर्मोहिता येषांते कुसमयौघमोहमतिर्मोहिताः अथवा कुसमयानां कुतीर्थिकानां मोर्घामोघोवा शुभफलापेक्षया निष्फलोयोमोहस्तेनमति मोहिता येषांते कुसमयमोघमोहमतिर्मोहिताः कुसमयमोहमतिर्मोहितावा तेषांतथासंदेहा वस्तुतत्वम्प्रतिसंसयाः कुसमयमोह २ मतिर्मोहितानामि

॥ मूल ॥

ज्जंति अजीवासूइज्जंति जीवाजीवासूइज्जंति लोगेसूइज्जंति अलोगेसूइज्जंति लोगालोगेसूइज्जंति सूय गडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खावसाणापयत्थासूइज्जंति समणाणं अचिरकालपव्व इयाणं कुसमयमोहमइमोहियाणं संदेहजायसहजबुद्धिपरिणामसंसइयाणं पावकरमइलमइगुणविसोहणत्थं

॥ भाषा ॥

पंचास्तिकायरहितअलोक सूचवियें लोकालोक बोहुंसूचवीयें सूयगडांगसूत्रे चेतनावंतजीव १ चेतनारहितअजीव २ सत्कर्मपुद्गलतेपुन्य ३ अशुभकर्मपुद्गलते पाप ४ कर्मनोसंचिवो तेआश्रव ५ कर्मनिरोध तेसंवर ६ कर्मनो निर्जरवो वेगलोकरिवो तेनिर्जरा ७ नवोकर्म उपार्जवो तेबंध ८ सकलकर्मक्षयकी मूंकाविवो ते मोक्ष ९ मोक्षछे अवसानछेहडे एहवा नवपदार्थ सूचवीयें । श्रमण यतीने मतिगुणविसोधिवाने अर्थे स्वसमय स्थापियें ते श्रमण केहवाछे । अचिरकाल

॥ टीका ॥

तिविशेषसान्निध्यात् कुसमयेभ्य: सकाशात् येषान्ते सन्देहजाता: तथासहजा त्स्वभावसम्पन्ना नकुसमयश्रवणसम्पन्ना हुद्धिपरिणामा मतिस्वभावात् संश योजातो येषांते सहजबुद्धिपरिणामसंशयिता: सन्देहजाताश्च सहजबुद्धिपरिणाम संशयिताश्च ये ते तथा तेषां श्रमणानामिति प्रक्रम: किमतश्राह पाप करो विपर्ययशंसयात्मकत्वेन कुत्सितप्रवृत्तिनिबंधनत्वादशुभकर्म्महेतु रतएव च मलिन: स्वरूपाच्छादनाच्छादनिर्म्मलोयोमतिगुणोबुद्धिपर्यायस्तस्य विशोधना यनिर्म्मलत्वाधानाय पापकरमलिनमतिगुणविशोधनार्थं असीयस्सकिरियावाइयसयस्सत्ति अशीत्यधिकस्य क्रियावादिशतस्य व्यूहं कृत्वा स्वसमय: स्थाप्यत इतियोग: एवं शेषेष्वपि पदेषु क्रियायोजनीयेति तत्र न कर्त्तारंविना क्रियासम्भवतीति ता मात्मसमयवायिनीं वदन्ति ये तच्छिलाश्च ते क्रियावादिन: ते पुन रात्माद्यस्तित्वप्रतिपत्तिलक्षणा अमुनोपायेनाशीत्यधिकस्य शतस्य संख्याविज्ञेया: जीवाजीवाश्रवबन्धसम्वरनिर्ज्जरापुण्यापुण्यमोक्षाख्यान्नवपदार्थान् विरचय्य परिपाट्या जीवपदार्थस्याध: स्वपरभेदावुपन्यसनीयौ तयोरध: नित्यानित्यभेदौ तयोरप्यध: कालेश्वरात्मनियतिस्वभावभेदा: पञ्च न्यसनीया: पुन रित्थं वि कल्पा: कर्त्तव्या अस्तिजीव: स्वतोनित्य: कालत इत्येको विकल्पो विकल्पार्थश्चायं विद्यते खल्वात्मास्वेनरूपेण नित्यश्च कालवादिन: उक्तेनैवाभिलापेन द्वितो

॥ मूल ॥

असीअस्ससकिरिआवाइयसयस्स चउरासीए अकिरियवाईणं सत्तठीए असाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइय

॥ भाषा ॥

मो थोडाकालनोछे प्रवज्या जेहनो एतले नवदीक्षितछे वली तेश्रमणकेहवाछे कुत्सितछे समय सिद्धांत जेहना तेकुसमय कुतीर्थीतेहनो मोह सत्य भावना यें विषे अयथार्थाश बोध तेहथकी ऊपनो मोह मूढता तेणेकरी मति मोहित छे जेहनी एहवाछे ।' कुत्सितशास्त्र श्रवणथकी संदेह ऊपनोछे । तथा सहज स्वभावनी बुद्धिमति तेहनोपरिणामतेहथकी संशयऊपनोछे जेहने एहवा नवदीक्षीत श्रमण साधुछे तेहने एहवो कहे । पापनो करणहार मइलो जे म

वोविकल्प ईश्वरकारिणिकस्य तृतीयः आत्मवादिनश्चतुर्थो नियतिवादिनः पञ्चमः स्वभाववादिनः एवं स्वत इत्यपरित्यजता लब्धाः पञ्चविकल्पाः परत इ ॥ टीका ॥
त्यनेनापि पञ्च लभ्यन्ते नित्यत्वापरित्यागेन चैते दश विकल्पा एव मनित्यत्वेनापि दशैवेत्येकत्र विंशतिर्जीवपदार्थेन लब्धा अजीवादिष्वप्यष्टास्वेवमेव प्रतिप
दं विंशतिविकल्पानां मतोविंशति र्नवगुणा शतमशीत्युत्तरक्रियावादिनामिति चउरासीए अकिरियवाईणंति एतेषांच स्वरूपं यथा नंद्यादिषु तथावाच्यं नवर
मेतद्व्याख्याने पुण्यापुण्यवर्जाः सप्तपदार्थाः स्थाप्यंते तदधः स्वतः परतश्चेति पदद्वयं तदधः कालादीनांषष्टीयदृच्छा न्यस्यते ततश्च नास्तिजीवः स्वतः कालत
इत्येको विकल्प एवमेते चतुरशीति र्भवन्ति सत्तट्ठीएअन्नाणियवाईणंति एतेपि तथैव नवरं जीवादी न्नवपदार्थान्नुत्पत्ति दशमा नुपरि व्यवस्थाप्याधः सप्तस
दादयः स्थाप्याः तद्यथा सत्व मसत्वं सदसत्व मवाच्यत्वं सदवाच्यत्व मसदवाच्यत्वं सदसदवाच्यत्वमिति तत्र कोजानाति जीवस्य सत्व मित्येकोविकल्पः एवमस
त्वमित्यादि तत एते सप्तनवका स्त्रिषष्टिरुत्पत्ते स्त्वाद्याएव चत्वारोवाच्या इत्येवं सप्तषष्टिरिति तथावत्तीमाएवेणइयवाईणंति एतेचैवं सुरनृपतिज्ञातियति
स्थविराधममातृपितृणाम्प्रत्येकं कायवाङ्मनोदानैश्चतुर्धा विनयः कार्य इत्यभ्युपगमवन्तो द्वात्रिंशदिति एवं चैतेषां चतुर्णां वादिप्रकाराणां मीलने त्रीणि त्रिषष्ट्य
धिकानि मन्यदृष्टिशतानि भवंत्यत उच्यते तिण्हमित्यादि वृद्धंकिंचन्ति प्रतिक्षेपं कृत्वा स्वसमयो जैनसिद्धान्तः स्थाप्यते यतएवं सूत्रकृतेन विधीयते अत स्त
त्सूत्रार्थयोः स्वरूपमाह नाणेत्यादि नाना अनेकविधा बहुभिःप्रकारै रित्यर्थः दिट्ठंतवयणनिस्सारंति स्याद्वादिना पूर्वपक्षीकृतानां प्रवादिना स्वपक्षस्थापनाय

ति गुण बुद्धि पर्याय तेहने विशोधिवाने अर्थे पापकरे मलिन मने विशोधनार्थं अशीअधिक १०० क्रियावादी तेहनो व्यूहकरीने स्वसमय स्थापीये एहक्रिया ॥ भाषा ॥
पद आगलि कयले लेवो कर्ताविना क्रिया पुण्यपापरूप नहोय तथा एहवो जेवदे तेक्रियावादी जीवने क्रिया पुण्यपापरूप नथी लागती ते अक्रियावादी

॥ १३२ ॥

॥ टीका ॥

यानि दृष्टान्तवचना न्युपलक्षणत्वा द्धेतुवचनानि तदपेक्षया निःसारं सारताशून्यं परेषां मतमितिगम्यते सुष्टुपुनरपि प्रतिक्षेपणीयत्वेन दर्शयन्तो प्रकटयन्तो तथा विविधश्चासौ सत्पदप्ररूपणाद्यनेकानुयोगद्वाराश्रितत्वेन विस्तारानुगमनीयानेकजीवादितत्वानां विस्तरप्रतिपादनं विविधविस्तारानुगमः तथा परमस द्भावो त्यंतसत्यता वस्तूना मैदम्पर्यमित्यर्थ स्तावेव गुणौ ताभ्यां विशिष्टौ विविधविस्तारानुगमपरमसद्भावगुणविशिष्टौ मोक्खपहोयारगत्ति मोक्षपथावतारकौ सम्यग्दर्शनादिषुप्राणिनाम्प्रवर्त्तका वित्यर्थः उदारत्ति उदारौ सकलसूत्रार्थदोषरहितत्वेन निखिलतद्गुणसहितत्वेन च तथा ऽज्ञानमेव तमोंधकारमात्यन्ति कांधकार मथवा प्रकृष्टमज्ञानमज्ञानतमं तदेवांधकार अज्ञानतमोंधकारम्वा तेन ये दुर्गा दुरधिगमा स्ते तथा तेषु तत्वमार्गेष्वितिगम्यते दीवभूयत्ति प्रकाश

॥ मूल ॥

वाईणं तिरहंतेसठाणं ग्रुणदिठियसयाणं वूढकिच्चा ससमएठाविज्जंति णाणादिठंतवयणणिस्सारंसुठुदरिसयं

ता विविहवित्थराणुगमपरमसब्भावगुणविसिठा मोक्खपहोयारगाउदारा ग्रुसाणतमंधकारदुग्गेसुदीवब्भूग्रा

॥ भाषा ॥

एतले नास्तिकमती ८४ भेद जाणिवा तेहना आत्मानेअजाणपणो ते श्रेय एहवो जेवदे तेअज्ञानवादी तेहनामत ६७ तेहनो । मनुष्यपशुपंखी सहुनोविनय करियोजे वदेतेविनयवादी तेहना ३२ भेद तेहनो । विशषेवेतह्नअविक्र अन्यदृष्टि मिथ्यादृष्टिना मत सईकडां तेहनोव्यूह तिरस्कारकरीने । स्वसमयजिनम तने स्थापिये । नाना अनेकप्रकारेदृष्टांतवचन तेणेकरी परमतनेनिःसार असारकरीनेस्थापें । सुष्टुभला आदरिवापणे दरिसयंति प्रगटता अनेकप्रकारसत्प दप्ररूपणादिक अनेक अनुयोग द्वाराश्रित पणे । विस्तरानुगम जीवादितत्वनो विस्तार प्रतिपादवो तेविविध विस्तरानुगम । तथा परमसद्भाव अत्यंतवस्तु नोसत्यपणे तेहोजद्विगुण तेणेकरी विशिष्ट विविध विस्तरानुगम परम सद्भाव गुणविशिष्ट मोक्षपथे अवतारक सम्यकदर्शननेविषे प्राणीनेप्रवर्तक सकल

॥ टीका ॥

कारित्वा द्दीपोपमौ सोपाणाचेवत्ति सोपानानीव उत्ततारोहणमार्गविशेषाइव सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्य सिद्धिलक्षणासुगतिः सिद्धिसुगति रथवा सिद्धिश्च सुगतिश्च सुदेवत्वसुमानुषत्वलक्षणा सिद्धिसुगतौ तल्लक्षणं यद्गृहाणामुत्तमं गृहोत्तमं वरप्रासादश्च स्तस्य सिद्धिसुगतिगृहोत्तमस्या रोहण इतिगम्यते निक्खोभ निप्पकंपत्ति निःक्षोभौ वादिना क्षोभयितुमशक्यत्वात् निःप्रकंपौ स्वरूपतोपौषद्व्यभिचारलक्षणकम्पाभावात् कावित्याह सूत्रार्थौ सूत्रंचार्थश्च निर्युक्ति भाष्य

॥ मूल ॥

सोवाणाचेवसिद्धिसुगइगिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्तावायणासंखेज्जा अणु
उगदारा संखेज्जाउपडिवत्तीउ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाउनिज्जुत्तीउ सेणंअंगठयाए दोच्चे
अंगे दोसुयखंधा तेवीसंअज्झयणा तेत्तीसंउद्देसणकाला तेत्तीसंसमुद्देसणकाला छत्तीसंपदसहस्साइं पयग्गेणं
प० संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धा णिकाइ

॥ भाषा ॥

सूत्रार्थदोषरहितपणे उदारप्रधानछे सूत्रार्थजेहनेविषेअज्ञान तेहीज तमअंधकार तेणेकरीदुर्ग्रह दुरधिगम दुःखसाध्य जेमक्षमार्ग तेहनेविषे जेसूत्रार्थ दीवा भूत प्रकाशकारी छे अज्ञानांधकारनो निषेधकारी ज्ञानरूप उद्योत प्रकाश करे दीवासमान छे। सिद्धिलक्षण सुगति तल्लक्षणघर मंदिर उत्तम प्रधानछे ते हने चाढियाने अर्थे सोपान पाउडीया रूपसूत्रार्थछे। वादीपुरुषे निःक्षोभ चालिवाअशक्य निप्पकंप थोडोईकोईएक पाडीसकेनही एहवा सूत्रार्थ जिहा सूयगडांग सूत्रमां परित्ता संख्याता वाचना सूत्रार्थप्रदानरूप संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक जाणिवा । संख्याती प्रतिपत्ति वादीहय मतांतरते प्रतिपत्ति संख्यातावेढा छंदविशेष संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद संख्याता निर्युक्ति सूत्रनेविषे अर्थनो योजवो तेनिर्युक्ति विशिष्टघटना ते निर्युक्ति ते अंगार्थपण

॥ टीका ॥

संग्रहणिवृत्तिचूर्णिपंजिकादिरूपइति सूत्रार्थौ शेषंकण्ठं यावत् सेत्तंसूयगडेत्ति नवरं चयस्त्रिंशदुद्देशनकाला: चउतियचउरोदोदो एक्कारसचेवहुंतिएक्कसरा स त्तेवमहज्झयणा एगसरावीयसुयखंधे इत्यतोगाथातो वसेया इति ॥ २ ॥ सेकिंतंठाणे इत्यादि अथकिन्तत् स्थानं तिष्टंत्यस्मिन्प्रतिपाद्यतया जीवादय इतिस्थानं तथाचाह ठाणेणमित्यादि स्थानेन स्थानेवा जीवा: स्थाप्यंते यथावस्थितस्वरूपप्रतिपादनायेति हृदयं शेषं प्रायोनिगदसिद्धमेव नवरं

॥ मूल ॥

जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि ण्णाए एवंचरणकरण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेत्तंसूयगडे ॥ २ सेकिंतंठाणे ठाणेणंससमयाठाविज्जंति परसमयाठाविज्जंतिससमयपरसमयाठाविज्जंतिजीवाठाविज्जंति अजी

॥ भाषा ॥

भंगलक्षण वस्तुपणे। बीजे अंगे बेश्रुतस्कंध तेवीसअध्ययन तेत्रीसउद्देशनकाल उद्देशनाअवसर तेत्रीस समुद्देशनकाल जेतला उद्देशतेतला समुद्देश। ३६ सहस्र पद सूत्रार्थ नी समाप्ति जिहांते पद पद परिमाणें कह्यो। संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनी परे परित्ता। अनंता नही। त्रस बेइन्द्रियादिक अनंता स्थाव र वनस्पतिविशेष द्रव्यार्थनयेकरी शाश्वता छे एह सूयगडांगने विषे एहवा भाव कह्या। तेकेहवा पर्यायार्थपणें कृताकीधा निबद्धा सूत्रार्थ पणें गूंथ्या। नि काचिता तेहने उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या जिनवीतरागे प्रज्ञप्ता कह्या। भाव पदार्थ आख्यायते कहियेछे। तेमज पूर्वनी परेंजाणीवा। निर्देशियै उपदेशि ये पूर्ववत् तेसूयगडांग एहवो छे। एवं एम एहभणीने ज्ञाता जाणहोय एम विज्ञाता घणोजाण होय। एम चरण ते श्रमणव्रत करण ते पिंडविशुद्धा दिक तेहनी प्ररूपणा जिहां आख्यायते कहिये निर्देशियै उपदेशियै ते सूयगडांग बीजोअंग ॥ २ ॥ अथ स्त्रूं ते ठाणांग। जीवादिकपदार्थ

ठाविय इत्यस्य पुनरुच्चारणं सामान्येनैव पूर्वोक्तस्यैव स्थापनाय विशेषप्रतिपादनायच वाक्यांतरमितिज्ञापनार्थं तत्र दव्वगुणखेत्तकालपज्जवत्ति प्रथमाबहुवच नलोपा द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवा: पदार्थानां जीवादीनां स्थाने स्थाप्यन्ते इतिप्रक्रम: तत्र द्रव्यं द्रव्यार्थतया यथा जीवास्तिकायो ऽनन्तानि द्रव्याणि गुण: स्वभा वो यथोपयोगस्वभावोजीव: क्षेत्रंयथा संख्येयप्रदेशावगाहनो ऽसौ कालोयया अनाद्यपर्यवसित: पर्यवा: कालकृता अवस्था यथा नारकत्वादयो बालत्वादयो वेति सेलाइत्यादि गाथाविशेष स्तत्र शैलाहिमवदादिपर्वता स्थाप्यन्ते स्थानेनेतियोग: सर्वत्र सलिलाय गङ्गाद्यामहानद्य: समुद्रालवणादय: सूरा: आदित्या भवनान्यसुरादीनां विमानानि चन्द्रादीनां आकारा: सुवर्णाद्युत्पत्तिभूमयो नद्य: सामान्यामहीकोसीप्रभृतयो निधय चक्रवर्त्तिसम्बन्धिनो नैसर्प्पादयो नव पुरिसजायत्ति पुरुषप्रकाराउन्नतप्रणतादिभेदा: पाठांतरेण पुरुसजायत्ति उपलक्षणत्वा त्तुष्यादिनक्षत्राणां चन्द्रेणसह पश्चिमाग्रिमोभयप्रमर्द्दकादियोगा: स्व

॥ टीका ॥

वाठाविज्जंति जीवाजीवा लोगा अलोगा लोगालोगावा ठाविज्जंति ठाणेणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जवपयत्थाणं सेलसलिलायसमुद्दसूरभवणविमाणआगरणदीओणिहीओपुरिसजायसरायगोत्तायजोइसंचाले एक्कविहवत्तव्व

॥ मूल ॥

जिहांतिष्ठे रहे तेठाणांग। स्वसमय जिनमत थापिये परसमय अन्यमत उथापीये स्वसमय थापीये परसमय उथापिये । जीवपदार्थ थापिये अजीवनो अजीवपणो स्थापिये। जीहां जीवाजीव बिहूं स्थापिये लोक थापिये अलोक थापिये लोकालोक बिहूंस्थापिये। ठाणांगे द्रव्य गुण क्षेत्र काल पर्यवा जीवा दिक पदार्थना ठाणांगे स्थापिया द्रव्य ते द्रव्यादिकार्थ पणे जीवास्तिकाय अने द्रव्य छे गुण तेस्वभाव यथा उपयोग स्वभाव जीव प्रति क्षेत्र असंख्य प्रदेशाव गाही जीव काल ते अनादि अपर्यवसित पर्यव ते कालकृतावस्था बालकपणादिक। तथा नारकपणादिक पदार्थ ने ठाणांगे स्थापिये। शैलहिमवंतादिक

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

राव षड्जादयः सप्त गोत्राणि च काश्यपादीनि एकोनपञ्चाशत् जोइसंचालयन्ति ज्योतिषः तारकरूपस्य संचालनानि तिहिंठाणेहिं तारारूवे चलेज्जा इ
त्यादिना सूत्रेण स्थाप्यन्ते स्थानेनेतिप्रक्रमः तथा एकविधस्य तद्वक्तव्यस्य तदभिधेयमित्येकविधवक्तव्यकं प्रथमेअध्ययने स्थाप्यतइतियोगः एवं द्विविधवक्तव्यकं द्विती
येध्ययने एवं तृतीयादिषु यावद्दशविधवक्तव्यकं दशमे ध्ययने तथा जीवानां पुद्गलानां च प्ररूपणताख्यायतइतियोगः तथा लोगट्ठाइंचणंति लोकस्थायिनांच
धर्मास्तिकायादीनांप्ररूपणता प्रज्ञापना शेष माचरसूत्रव्याख्यानादवसेयं नवर मेकविंशति रुद्देशनकालाः कथं द्वितीयतृतीयचतुर्थेश्वध्ययनेषु चत्वारश्चत्वार
उद्देशकाः पचमे चय इत्येते पंचदश शेषास्तु षट् षष्ठामध्ययनानां षट्उद्देशनकालत्वादिति बावत्तरिंपदसहस्साइंति अष्टादशपदसहस्रमानादाचाराद्द्विगुण

॥ मूल ॥

यंदुविहजावदसविहवत्तव्वयंजीवाणपोग्गलाणयलोगट्ठाइंचणंपरूवणयाआघविज्जंतिठाणस्सणंपरित्तावायणा
संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जासिलोगा संखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगठ
याए तइएअंगेपणसुयखंधे दसअज्झयणा एक्कवीसंउद्देसणकाला बावत्तरिसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाअ

॥ भाषा ॥

पर्वत सलिला नदी गंगादिक समुद्र लवणादिक सूर सूर्य भवनते असुरना विमान चंद्रमादिकना आगर सुवर्णोत्पत्तिभूमी नदी सामान्यनदी निधी ते नै
सर्पादिक निधान पुरिस जात उन्नत प्रनत भेदे पुरुष प्रकार स्वर ते षड्जादिक ७ गोत्र काश्यपादिक ४९ ज्योतिष तारारूप तेहना संचालन तिहिंठाणे
हिं। तारा रूपे चले इत्यादिक एतला स्थानांगे थापिये। एक विधिनो कहिवो त्रिविधनो जिहां लगे दसविध ठाणालगे कहिवो। जीवनो पुद्गलनो प्ररूप
णाठाणांगे करी। लोकस्थापीये धर्मास्तिकायनो प्ररूपणा ठाणांगे कही। वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूपं कही अनुयोगद्वार उपक्रमादिक संख्याती प्रतिपत्ति

त्वात् सूत्रकृतस्य ततोऽपि द्विगुणत्वात् स्थानस्येति ॥ २ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ कोसौ समवायः सूत्रेतु प्राकृतत्वेन वकारलोपात् समाये इत्युक्तं समवायनं समवायः सम्यक्परिच्छेदइत्यर्थः तद्धेतुश्च ग्रन्थोपि समवाय स्तथाचाह समवायेन समवायेवा स्वसमयाः सूच्यन्ते इत्यादिकंठ्यं तथा समवायेन समवायेवा। एगाइयाणंति एकद्वित्रिचतुरादीनां शतान्तानां कोटाकोट्यंतानां वाएगत्थाणंति एकोत्तरेअर्थासिल्लेकार्था स्तेषां अयमर्थः एकेषां केषाञ्चि न सर्वेषां

एकराइणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा अणंताथावरा सासयाकडा णिवद्धा णिकाइया जिणपन्नत्ताभा वाआघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंविन्नाए एवंचरणकरणपरू वणयाआघविज्जंति सेत्तंठाणे ॥ ३ ॥ सेकिंतंसमवाए समवाएणं ससमयासूइज्जंति परसमयासूइज्जं

वादीहयमतांतरप्रतिपत्ति। संख्याता वेढा छंदविशेष। संख्याता श्लोक अनुष्टुपछंद। संख्यातो संग्रहणी । ते अंगार्थपणे त्रीजेअंगे एक श्रुतस्कंधमा दस अध्ययन एकवीस उद्देशन काल उदेशना अवसर। बहुत्तरि सहस्रपद पदने परिमाणें कह्या संख्याता अक्षर तिमज पूर्वनीपरें परित्ता अनंतामही त्रस बेइन्द्रियादिक अनंताथावर वनस्पत्यादिक द्रव्यार्थनयेकरी सास्वताछे। पर्यायार्थपणे कीधा सूत्रार्थपणें गूंथ्या। उदाहरणें करी प्रतिष्ठ्या । वीतरागें कह्या भाव पदार्थ कहिये छे। नामादिकभेदनो कहिवो तेणेकरी प्ररूपिये। सर्वदा निर्देशिये उपदेशिये। तेठाणांग एहवोछे। एहभणीने जाण एम घणोजाण होय। एम चरण साधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा कहीजाय तेठाणांग ॥ २ ॥ अथ स्युं तेसमवाय। सम्यकप्रकारे जाणिवो तेसमवाय समवायांगसूत्रे स्वसमय जिनमत सूचवीयेछे। एम परसमय सूचवीयेछे स्वमतपरमत सूचवीयेछे समवायांगे करी। एकछे प्रथम जेहने एहवावे

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

निखिलानां स्वसमयपरसमयानां स्वलक्षणकथनेन प्रतिपाद्यत्वात् दर्शितानां जीवादीनां मेगुत्तरियेत्ति एकउत्तरीयस्यांसा एकोत्तरा सैव एकोत्तरिका इह प्राकृतत्वात् कस्वत्व म्परिवुड्ढियत्ति परिवृ द्धेति समनुगीयते समवायेनेति योगः तत्र च परिवर्द्धनं संख्यायाः समवसेयं चशब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च तत्र शतं यावदेकोत्त रिका परतो ऽनेकोत्तरिकेति तथाद्वादशाङ्गस्य च गणिपिटकस्य पल्लवग्गंति पर्यवपरिमाणं अभिधेयादि तद्धर्मसंख्यानं यथा परित्तातसाइत्यादि पर्यवशब्द स्य च पज्जवत्ति निर्देशः प्राकृतत्वात् पर्यंकः पल्यंक इत्यादिवदिति अथवा पल्लवाइव पल्लवाः अवयवा स्तत्परिमाणं समणुगाइज्जंति समनुगीयते प्रतिपाद्यते पूर्वोक्तमेवार्थं प्रपञ्चयन्नाह ठाणगेत्यादि ठाणगसयस्सत्ति स्थानकशतस्यैकादीनां शतानां संख्यास्थानाना न्तद्विशेषितात्मादिपदार्थानामित्यर्थः तथा द्वाद शविधो विस्तरो यस्याचारादिभेदेन तत्द्वादशविधविस्तरं तस्य श्रुतज्ञानस्य जिनप्रवचनस्य किम्भूतस्य जगज्जीवहितस्य भगवतः श्रुतातिशययुक्तस्य समा

॥ मूल ॥

ति ससमयपरसमयासूइज्जंति समवाएणं एकाइयाणं एगठाणं एगुत्तरियंपरिवुड्ढीए दुवालसंगस्सयगणिपिड गस्स पल्लवग्गेसमणुगाइज्जइ ठाणगसयस्सयबारसविहवित्थरस्ससुयणाणस्स जगजीवहियस्सभगवउ समासे

॥ भाषा ॥

त्रिणधार आदि कोटिलगे एकअर्थे जीवादिक पदार्थनो इकेक आगलि २ परें वधारिवो ते समवायांग कहिये। द्वादशांग केहवो छे। गणी आचार्य तेह ने पिटकरत्नकरंडीया सरीखो छे तेहनो पल्लव अवयव तेहनो परिमाण जिहां कहिये स्थानक शत एक आदि सौ छे केहडे [illegible] एहवी संख्या स्थानक तेहनो बारे प्रकारे विस्तारवो एहवो श्रुतज्ञानछे। ते श्रुतज्ञान केहवो छे। ते श्रुतज्ञान जगतना जीवने हितरूपछे। वली पूज्यछे। एहवा श्रुतज्ञाननो संक्षेपे समाधार स्थानक २ प्रति अंग अग प्रति अनेक प्रकारे कहिवा योग्य लक्षण व्यवहार कहिंये छे । ते समवायांग ने विषे नाना विध जीव अजीव

संक्षेपेण समाचार: प्रतिस्थानं प्रत्यक्षस्य विविधाभिधेयाभिधायकत्वलक्षणो व्यवहार: आहिज्जइत्ति आख्यायते अथसमाचाराभिधानानन्तरं तत्र यदुक्तं त दभिधातुमाह तत्थयेत्यादि तत्थयत्ति तत्रैव समवाये इतियोग: नानाविध: प्रकारो येषान्ते नानाविधप्रकारा: तथा ह्येकेन्द्रियादिभेदेन पंचप्रकारा जीवा: पुनरेकैकप्रकार: पर्याप्तापर्याप्तादिभेदेन नानाविध: जीवाजीवायत्ति जीवाश्चजीवाश्च वर्णिता विस्तरेण महतावचनसन्दर्भेण अपरेपिच बहुविधा 'वशेषा जीवाजीवधर्म्मावर्णिता इतियोग: तानेवलेशतआह नरयेत्यादि नरयत्ति निवासनिवासिनामभेदोपचारा नारका स्ततश्च नारकतिर्यग्मनुजसुरगणानां स म्बन्धिन आहारादय स्तत्र आहारओज आहारादि राभोगिकानाभोगिकस्वरूपोनेकधा उत्स्वासोऽनुसमयादिकालभेदेनानेकधा लेश्याकृष्णादिकाषोढा आ वाससंख्या यथा नारकावासानां चतुरशीतिलक्षाणीत्यादिका आयतप्रमाणनावासानामेवसंख्यातासंख्यातयोजनायामता उपलक्षणत्वा दस्य विष्कम्भबाहल्य परिधिमानान्यप्यत्र द्रष्टव्यानि उपपातएक एकएवसमये नैतावतामेतावतावा कालव्यवधानेनोत्पत्ति: च्यवनमेकसमये नैतावतामियतावा कालव्यवधानेन

॥ टीका ॥

णं समायारे आहिज्जतितत्थयणाणाविहप्पगारा जीवाजीवायवन्नियाविच्छरेण अवरेविअ बहुविहाविसेसा नरगतिरियमणुअसुरगणाणं आहारुस्सासलेसा आवाससंखआययप्पमाण उववायचवणउग्गहणोवहिवेय

॥ मूल ॥

पदार्थ वर्णव्या विस्तारेकरी। अनेरापणि घणप्रकारे विशेष जीवाजीव धर्म वर्णव्या। नरकगति तिर्यंच मनुष्य देवता गण संबंधीना आहार आभोगिक अनाभोगिक ओजलोमादिक भेदें करी अनेक प्रकार। तथा उच्छ्वासोच्छ्वास लेश्या कृष्णादिक आवास संख्या नरकावासा ८४ लक्ष आयतप्रमाण आयाम विष्कंभ परिधि प्रमाण। उपपात एकेसमे केतला एक नारकादिक जीव ऊपजे। एके केतला मरे। चवे अवगाहना शरीरनोप्रमाण अवधि अंगुलने अ

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मरणं अवगाहना शरीरप्रमाणमङ्गुलासंख्येयभागादि अवधि रंगुलासंख्येयभागक्षेत्रविषयादि वेदना शुभाशुभस्वभावा विधानानिभेदा यथा सप्तविधा नार
का इत्यादि उपयोग आभिनिबोधिकादि द्वादशविधः योगः पञ्चदशविध इन्द्रियाणि पञ्च द्रव्यादिभेदात् विंशतिर्वा श्रोत्रादिच्छिद्राद्यपेक्षयाष्टौवा कषायाः
क्रोधादयः आहारश्वोच्छासश्चेत्यादिद्वन्द स्ततः कषायशब्दा प्रथमाबहुवचनलोपोद्रष्टव्यः तथा विविधाच जीवयोनिः सचित्तादिकं जीवानां तथा विष्कम्भो
त्सेधपरिचयः प्रमाणं विधिविशेषाश्च मन्दरादीनां महीधराणामिति तत्र विष्कम्भो विस्तारउत्सेधउच्चत्वं परिरयः परिधिः विधविशेषा इति योगः तथा
वर्षाणांविधयो भेदा यथा मन्दरा जम्बूद्वीपीयधातकीखण्डीयपौष्करार्द्धिकभेदा त्रिधा तद्विशेषस्तु जंबूद्वीपको लक्षोच्चः शेषास्तु पंचाशीतिसहस्रोच्छ्रिता इ
त्येवमन्येष्वपि भावनीयं तथा कुलकरतीर्थंकरगणधराणां तथा समस्तभरताधिपानां चक्रिणांचैव तथा चक्रधरहलधराणां च विधिविशेषा इतियोगः तथा

॥ मूल ॥

णाविहाणउवउगजोगा इंदियकसायविविहायजीवजोणी विक्खंभुस्सेहपरिरयप्पमाणं विहिविसेसायमंदरा
दीणं महीधराणं कुलगरतित्थगरगणहराणं सम्मत्तभरहाहिवाणचक्कीणंचेव चक्कहरहलहराणय वासाणयनि

भाषा ॥

संख्येयभागक्षेत्र विषयादि वेदना शुभाशुभ स्वभावनो विधान भेद उपयोग मतिज्ञानादिक १२ भेदे योग १५ भेदे इंद्रिय ५ कषाय क्रोधादिक विविध अ
नेक प्रकार जीवायोनि जीवोत्पत्तिस्थानक विष्कंभ पिहुल पणो । उत्सेध ऊंचपणो । परिधिप्रमाण विधि विशेष विखंभ उत्सेध परिधि इत्यादिक भेदे
मंदरादिक पर्वतनो कुलगर विमलवाहनादिक तीर्थंकर ऋषभादिक गणधर गौतमादिकनो सगलाई भरत चक्रवर्तीनो चक्रधर वासुदेव हलधर बलदेव

वर्षाणाञ्च भरतादिक्षेत्राणां निर्गमाः पूर्वेभ्यः उत्तरेषामाधिक्यानि समायन्ति समवाये चतुर्थेअङ्गे वर्णिता इतिप्रक्रमः अथैतन्निगमयन्नाह एतेचोक्ताः पदार्था अन्येचघनतनुवातादयः पदार्था एवमादयः एवंप्रकाराः अत्रसमवाये विस्तरेणार्थाः समाश्रीयन्ते अविपरीतस्वरूपगुणभूषिता बुद्ध्यांगीक्रियंतइत्यर्थः अथवा समस्यन्ते कुप्ररूपणाभ्यः सम्यक्प्ररूपणायां क्षिप्यन्ते शेषंनिगदसिद्धमानिगमनादिति ॥ ४ ॥ सेकिंतंवियाहेइत्यादि अथकेयं व्याख्या व्याख्या ॥ टीका

गमायसमाए एएअण्णयेएवमाइत्थाविस्थरेणं अत्थासमाहिज्जंति समवायस्सणं परित्तावायणाजावसेणं अंगट्ठयाए चउत्थेअंगे एगेअज्झयणे एगेसुयखंधे एगेउद्देसणकाले एगेसमुद्देसणकाले एगेचउयाले पदसहस्से पदग्गेणंप० संखेज्जाणिअक्खराणि जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंसमवाए ॥ ४ ॥ ॥ मूल ॥

नो वर्ष क्षेत्रनो नेर्गमा पहिलाथकी अगिलानो अधिकारपणे समवायांग पणे। चौथे अंगे एह पूर्वोक्त पदार्थ वर्णव्या एह पूर्वे कह्या तेअनेरापणि पदार्थ घन तनु वातादिक समवायांगें विस्तारपणे पदार्थ आश्रीये । समवायांगनो वाचना सूत्रार्थ दानरूप । यावत् शब्दे वेढालगे जाणवो श्लोक संख्याता इत्यादिक आचारांगनी परे सर्व कहिवो तेअंगार्थपणे चौथे अंगे एक अध्ययन एकश्रुतस्कंध एक एक उद्देशनकाल एक एक समुद्देशनकाल एकला ख ४४ हजार पद पदपरिमाणें कह्या। संख्यात अक्षर जाव यावत् शब्दे एमचरणसाधुव्रतरूप करण पिंडविशुद्धादिकनो प्ररूपणा कहियेछे । तेसमवायांग चौथो ॥ ४ ॥ अथ स्यं एह व्याख्या वखाणिये अर्थ जेहने विषे तेव्याख्या भगवतीये सूत्रे स्वसमय जिनमत कहियेछे। परमत कहियेछे ॥ भाषा

॥ टीका ॥

यंते अर्था यस्यां सा व्याख्या वियाहेइतिच पुल्लिङ्गनिर्देशः प्राकृतत्वात् वियाहेणंतिव्याख्यायाव्याख्यायां वा ससमयाइत्यादीनि नवपदानि सूत्रकृतवर्णकव्या
ख्यातत्वा दिहकपव्यानि वियाहेणंति व्याख्यामित्यादि नानाविधैः सुरैः नरेन्द्रैः राजऋषिभिश्च विविहसंसइयत्ति विविधसंशयवद्भिः पृष्टानि यानितानि तथा
 तेषां नानाविधसुरेन्द्रराज ऋषिविविधसंशयितपृष्टानां व्याकरणानां षट्त्रिंशत्सहस्राणां दर्शनात् श्रुतार्था व्याख्यायन्तइति पूर्वापरेणवाक्यसम्बन्धः पुनः कि

॥ मूल ॥

से किं तं वियाहे वियाहेणं ससमयावि आहिज्जंति परसमयावि आहिज्जंति ससमय परसमयावि आ
हिज्जंति जीवाविआहिज्जंति अजीवाविआहिज्जंति जीवाजीवाविआहिज्जंति लोगेविआहिज्जइ अलो
गेविआहिज्जइ लोगालोगेविआहिज्जइ वियाहेणं नाणाविहसुरनरिंदरायरिसि विविहसंसइय पुच्छियाणं
जिणाणं वित्थरेण भासियाणं दव्वगुणखेत्तकालपज्जव पदेसपरिणाम जहात्थियभाव अणुगमनिक्खेवणयप्प

॥ भाषा ॥

स्वमत परमत विहूं कहियेछे। जीव कहियेछे अजीव कहिये छे जीवा जीव विहुं कहियेछे। लोक कहियेछे अलोक कहियेछे लोकालोक विहूं कहियेछे ए
णी व्याख्याये भगवती अनेक प्रकारे सुर देवता नरेंद्र राजऋषि तेणे विविध प्रकारे संशय पूछ्याछे। ३६ सहस्र प्रश्न पूछ्याछे। तेहने विषे जिनवीतरागे म
हावीर स्वामीये विस्तरे करी भाखितछे। जेह प्रश्न वली केहवा तेप्रश्न द्रव्य धर्मास्तिकायादिक गुणज्ञानवर्णादि क्षेत्रआकाशादिक काल समयादिक पर्यव
स्वर भेद भिन्न धर्मा अथवा काल कृतावस्था नव पुराणादिक पर्याय प्रदेश ते विभागरहित परिणाम ते अवस्थाये जाणिवा जेणे प्रकारे अस्तिभाव छताभा
व अनुगम संहितादि व्याख्यानप्रकाररूप निक्षेप नामस्थापना द्रव्य भावे करी थापवो नयते नैगमादिक प्रमाण प्रत्यक्षादिक मुनिगुण अति सूक्ष्म उपक्र

भूतानां जिनेनेति भगवता महावीरेण विथरेणभासियाणं विस्तारेणभणितानामित्यर्थः पुनः किंभूतानां द्रव्येत्यादि द्रव्यगुणक्षेत्रकालपर्यवप्रदेशपरिणामानां यथास्तिभावोनुगमनिक्षेपनयप्रमाणसुनिपुणोपक्रमैर्विविधप्रकारैः प्रकटः प्रदर्शितायै व्याकरणैस्तानितथा तेषां तत्र द्रव्याणि धर्मास्तिकायादीनि गुणा ज्ञानवर्णादयः क्षेत्रमाकाशं कालः समयादिः पर्यवाः स्वपरभेदभिन्नाधर्म्माः अथवा कालकृता अवस्था नवपुराणादयः पर्यवाः प्रदेशा निरंशावयवाः परिणा मा अवस्थातोवस्थान्तरगमनानि यथा येनप्रकारेणास्तिभावोऽस्तित्वं सत्ता यथास्तिभावः अनुगमः संहितादिव्याख्यानप्रकाररूपं उद्देशनिर्देशनिर्गमादिद्वा रकलापात्मको वा निक्षेपो नामस्थापनाद्रव्यभावै र्वस्तुनोन्यासः नयप्रमाणं नया नैगमादयः सप्त द्रव्यास्तिकपर्यायास्तिकभेदात् ज्ञाननयक्रियानयभेदाद्वा द्वौ तेएव तावेव वा प्रमाणं वस्तुतत्वपरिच्छेदनं नयप्रमाणं तथासुनिपुणः सुसूक्ष्मः सुनिपुणोवा सुष्टुनिश्चितगुण उपक्रमः आनुपूर्व्यादि विविधप्रकारैस्ता येषां भेद भणनत एवोपदर्शितेति पुनः किंभूतानां व्याकरणानां लोकालोकौ प्रकाशितौ येषुतानि तथा ससारसमुद्दरुंदउत्तरणसमत्थाणंति संसारसमुद्रस्य विस्तीर्णस्य उत्तारणे तारणे समर्थानामित्यर्थः अतएव सुरपतिसम्पूजितानां प्रच्छकनिर्णायकपूजनात् सूत्रत्वेन श्लाघितत्वाद्वा तथा भवियजणपयहियया भिणंदियाणंति

माण सुनिउणोवक्कम विविहप्पकारपगडपयासियाणं लोगालोगपयासियाणं संसारसमुद्दरुंदउत्तरण सम त्थाणं सुरवइसंपूजियाणं भवियजणपयहिययाभिनंदियाणं तमरयविद्धंसणाणं सुदिठदीवभूय ईहामति

म आनुपूर्व्यादि अनेकप्रकारे प्रगट पणें प्रकाश्याछे। वली प्रश्न केहवा छे लोकालोकनो छे प्रकाश जेहने विषे। वली केहवा संसार चतुर्गतिकतद्रूपप समुद्र वंद अतिविस्तीर्ण तेहने उतरवा समर्थछे। वली केहवा सुरपति इंद्र तेणे संपूजितछे। भविकजनपदलोक तेहनो हृदय चित्त तेणेकरी अभि

॥ टीका ॥ ॥ मूल ॥ ॥ भाषा ॥

भव्यजनानां भव्यप्राणिना मजालोको भव्यजनप्रजा भव्यजनपदोवा तस्या स्तस्य वा हृदये श्चित्तैरभिनन्दिताना मनुमोदिताना मितिविग्रह: तथा तमोरज सो अज्ञानपातके विध्वंसयति नाशयति यत्तत्तमोरजोविध्वंसं तच्च तद्ज्ञानञ्च तमोरजोविध्वंसज्ञानं तेन सुदृष्टस्थानि निर्णीतानि यानि तानि तथा अतएव तानिच तानि दीपभूतानिचेति अतएवच तानि ईहामतिबुद्धिवर्द्धनानि चेति तेषां तमोरजोविध्वंसज्ञानसुदृष्टदीपभूते हामतिबुद्धिवर्द्धनाना म्तत्र ईहा वितर्को मतिरवायो निश्चयइत्यर्थ: बुद्धिरौत्पत्तिक्यादिचतुर्विधेति अथवा तमोरजोविध्वंसनानामिति पृथगेवपद् म्पाठान्तरेण सुदृष्टदीपभूतानामितिच तथा छत्तीस सहस्समणूणयाणंति अन्यूनकानि षट्त्रिंशत्सहस्राणि येषान्तानि तथा इहमकारोऽन्यथापादनिपातश्च प्राकृतत्वादनवद्यइति वागरणाणंति व्याक्रियन्ते प्रश्ना नन्तरमुत्तरतया भिधीयन्ते निर्णायकेन यानि तानि व्याकरणानि तेषांदर्शनात्प्रकाशनादुपनिबन्धनादित्यर्थ: अथवा तेषां दर्शना उपदर्शका इत्यर्थ: कइत्याह सुयत्थबहुविहप्पयारेत्ति श्रुतविषया अर्था: श्रुतार्था अभिलाप्यार्थविशेषाइत्यर्थ: श्रुतावा कर्षिता जिनसकाशेगणधरेण ये अर्था स्तेश्रुतार्था: अथवा श्रुतमिति सूत्रं अर्था निर्युक्त्यादय इति श्रुतार्था स्तेच ते बहुविधप्रकाराश्चेति विग्रह: श्रुतार्थानां वा बहुविधा: प्रकारा इतिविग्रह: किमर्थं तेव्याख्यायंत इत्याह शिष्या ॥ टीका ॥

बुद्धिवद्धमाणाणं छत्तीससहस्समणूणयाणं वागरणाणं दंसणाउ सुयत्थबहुविहप्पगारा सीसहियत्था गुण ॥ मूल ॥

नंदित अनुमोद्याछे । वली केहवा तम अज्ञानरूपरज अज्ञान पातक तेहनो विध्वंसक नाशक छे रूडीपरें निर्णय कीधा एणे कारणेदीवारूप एणे कारणे ईहा वितर्क मतिते अवाय निश्चयार्थबुद्धि ते औत्पत्तिक्यादि चिहुं प्रकारे तेहने वधारेछे एहवा छत्रीस हजार ऊणामल्ही संपूर्ण प्रश्न ने देखाडता थ का सूत्रार्थपणें शिष्यने हितना अर्थ भणी गुणरूप अर्थ प्राप्त्यादिक लक्षण हाय सरीखो प्रधानहाथ । भगवती सूत्रना गणित वाचना । संख्याता अनुयोग ॥ भाषा

षां हितमनर्थप्रतिघातार्थंप्रातिरूप मदेवार्थः प्रार्थमानत्वा मस्य तस्मै इति किंभूतास्ते अतआह गुणहस्ता गुणएवार्थ प्राप्त्यादिलक्षणो हस्तइवहस्तः प्रधा नावयवो येषांते तथा वियाहस्सेत्यादितु निगमनांतंसूत्रसिद्धं नवरं शतमिहाध्ययनस्य संज्ञा चतुरशीतिः पदसहस्राणि पदाग्रेणेति समवायापेक्षया हिगु ॥ टीका ॥

हत्था वियाहस्सणं परित्ताबायणा संखेज्जा अणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जाबेढा संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ सेणं अंगठयाएपंचमे अंगे एगेसुयक्खंधे एगेसाइरेगे अज्झयणसते दसउ द्देसगसहस्साइं दससमुद्देसगसहस्साइं छत्तीसंवागरणसहस्साइं चउरासीइपयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता संखेज्जाइं अक्खराइं अणंतागमा अणंतापज्जवापरित्तातसाअणंताथावरा सासयाकडा णिबद्धा णिकाइ या जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंतिपण्णविज्जंति परूविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवंवि ॥ मूल ॥

द्वार उपक्रमादिक । संख्याती प्रतिपत्ती । संख्यातावेढाछंदविशेष । संख्याताश्लोक अनुष्टुपादिक । संख्याती निर्युक्ति । तेह अंगार्थपणे पांचमेअंगे १ श्रुतस्कंध १ अधिक १०० अध्ययन दशहजार उद्देशा दशहजार समुद्देशा ३६ हजार प्रश्न ८४ हजार पद समवायांगनी अपेक्षायें बेगुणाकीजे तो टीका ए ८८ हजार पदथाय । ते इहां नलेवा । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्ता पर्याय । त्रसवेइन्द्रियादिक । अनन्तास्थावर वनस्पती द्रव्यार्थे करी शाश्वताछे । पर्यायार्थ पणे कीधाछे । सूत्रार्थपणें गुंथ्या निकाचित ते हेतु उदाहरणे करी प्रतिष्ठ्या । जिन वीतरागे कह्या जे पदार्थ ते कहियेछे । नामादि क भेदें करीप्ररूपियेछे । सद्भावे उपदेश करियेछे । ते भगवती सूत्रने विषे शाश्वता कीधा शाश्वतादिक पदनीव्याख्या आचारांगाधिकारे कीधीछे जिहां ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

चताया द्दष्टान्ताश्चयथा दन्यथा तद्दिगुणत्वे इत्येवे अष्टाशीतिःसहस्राणिचभवन्तीति ॥ ५ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का सा ज्ञाताधर्मकथा ज्ञातान्युदाहरणानि तत्प्रधाना धर्मकथा ज्ञाताधर्मकथा दीर्घत्वं संज्ञात्वात् अथवा प्रथमश्रुतस्कंधे ज्ञाताभिधायकत्वात् ज्ञातानि द्वितीयस्तु तथैव धर्मकथा स्वतश्च ज्ञातानिच धर्मकथाश्च ज्ञाताधर्मकथा स्तत्र प्रथमव्युत्पत्त्यर्थं सूत्रकारो दर्शयन्नाह नायाधम्मकहासुणमित्यादि ज्ञातानामुदाहरणभूतानां मेघकुमारादीनां नगरादीन्याख्यायंते नगरादीनि द्वाविंशतिपदानि कंठ्यानिच नवरं उद्यानं पत्रपुष्पफल... विविध... दहुजनो यत्र भोजनार्थं यातीति चैत्यं व्यंतरायतनं वनखंडो नेकजातीयैरुत्तमैर्वृक्षैरुपशोभितमिति आघविज्जंति इहयावत्करणा दन्यानि पंचपदानि द्रष्टव्यानि यावद्दर्शयंते

॥ मूल ॥

ज्जाए एवं चरणकरण परूवणया आघविज्जंति सेत्तंवियाहे ॥ ५ ॥ सेकिंतंणायाधम्मकहाउ णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइआ परलोइअइड्ढीविसेसाभोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोव

॥ भाषा ॥

तगे। चरण श्रमण धर्मव्रत करण पिंडविशुध्यादिकनी प्ररूपणा ते भगवती सूत्र ने विषे कहिये ते व्याख्यांग एतले भगवती अंगपांचमो जाणिवो ॥ ५ ॥ स्यूंते ज्ञाता धर्मकथांग। ज्ञाता उदाहरण तत्प्रधान जेकथा ते ज्ञाताधर्मकथा अथवा पहिले श्रुतस्कंधे ज्ञाता मेघकुमारादिकना नगर नाम। उद्यान पत्र पुष्प फलेकरी शोभित चैत्य व्यंतरायतन। अनेक जाति ना वृक्षे करी शोभित वनखंड। राजा। माता। पिता। एहनानाम समोसरण घणांनो एकत्र मीलन। धर्माचार्यनाम। धर्मनी कथा। इहलोक मनुष्यलोक। परलोक देवगति तेहनी ऋधि विशेषनो भोग तेहनो त्या

॥ टीका ॥

वयवो यथा नायाधम्मेत्यादि तत्र ज्ञाताधर्मकथासु णमित्यलंकारे प्रव्रजितानां क्क विनयकरणजिनस्वामिशासनवरे कर्म्मविनयकरजिननाथसंबंधिनि शेषप्रव चनापेक्षया प्रधानेप्रवचने इत्यर्थः पाठांतरेण समणाणंविणयकरणजिणसासणंमि पवरे किंभूतानां संयमप्रतिज्ञा संयमाभ्युपगमः सैव दुरधिगम्यत्वात् कात रनरक्षोभकत्वा द्गंभीरत्वाच्च पातालमिवपातालं तत्र धृतिमतिव्यवसाया दुर्लभा येषांते तथा पाठांतरेण संयमप्रतिज्ञापालने ये धृतिमतिव्यवसाया स्तेषु दु र्बलाये ते तथा तेषां तत्र धृतिश्चित्तस्वास्थ्यं मतिर्बुद्धिव्यवसायो ऽनुष्ठानोत्साहइति तथा तपसि नियमोऽवश्यंकरण स्तपोनियंत्रितं तपः सच तपउपधानंचाऽ

॥ मूल ॥

हाणाइं परियागा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहि लाभो अंतकिरियाउय आघविज्जंति जावनायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणयकरणजिणसामिसासणवरे संजमपइन्नापालणधिइमइववसायदुब्बलाणं तवनियमतवोवहाणरणदुद्धरभरभग्गयाणिस्सहयाणिसिठाणं घो

॥ भाषा ॥

ग। प्रव्रज्यादीक्षा। सूत्रनो मेलवो । तपोपधान १२ भेदे तपनो करिवो । पर्याय दीक्षानो काल । संलेखणानों करिवो । भात पाणीनो पचखवो । पादपोपगमन छेदीवक्षोक्षचमास्ता जिम हालेचाले नही तिम ते यती संथारो कर्यांपछे हलोचाले नही। देवलोकनो आइवो। उत्तम कुलें अवतार। वली बोधिलाभ धर्मनी प्राप्ति। अंतक्रिया संसारना अंतनो करिवो। एह सर्व वस्तु ज्ञाताविषे कहियेछे । जिहां लगे ज्ञाताधर्म कथाने विषें प्रव्रजित यती नो विनयनो करिवो तिहांलगे। जिन स्वामि वीतराग देवना प्रधान शासन विषें संयमपालवाभणी कीधी प्रतिज्ञानो पालवो। धृति चित्तनो स्वस्थपणो मति बुद्धि व्यवसाय तेह अनुष्ठान विषें उत्साह तेहने विषे दुर्बल कातर थयाछे तेपुरुषाने तप तथा नियम अवश्यकरणीय तपोपधान बारे भेदे तप तेहिज

निर्वंचितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुश्चरभरस्ति श्रमकारणत्वा दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नका:पराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाणन्ति नि:सहा नितरामशक्तास्तएव नि:सहका निसृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउपधानरणदुर्धरभरभग्नकनि: सहकनिसृष्टा: पाठांतरेण नि:सहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेयं तथा घोरपरीषहै: पराजिता वासमर्था: सन्त: प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धा: अतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गता: प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरीषहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहंत: प्ररुद्धरुद्धा: प्रतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मार्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपत: आशावशदोषेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमूर्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छा:कस्यांचिदवस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वश: पारतंत्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय ॥ टीका ॥

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छासावसदोसमुच्छियाणं विरा ॥ मूल ॥

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे संयम मार्गे थाकाछे वली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असमर्थछे प्रारब्धा परीषह वसिकरिवाने रुंध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दोषे करी वसथई तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

सुषमहेच्छातुच्छाशयावमदोषमूर्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रलंबिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यका: सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदद्वयस्यचकर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह संसारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्र हणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किंभूतानां जितपरीषहकषायसैन्यं यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यंभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयो ऽत स्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धश्चातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयस्य सिद्धिमार्ग स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

॥ मूल ॥

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

॥ भाषा ॥

छे। एहवा भाव ज्ञातानें विषे कह्याछे। संसारनेविषें अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनी परंपरा संतति तेहना विस्तारने वि षे जेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रबन्ध ज्ञातानें विषे कहियेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा संयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

॥ टीका ॥

निर्वर्त्तितं तपएव श्रुतोपचारतपोवा तपोनियमतपउपधाने तेएव रणश्च कातरजनक्षोभकत्वात् संग्रामो दुद्धरभरस्ति श्रमकारणत्वात् दुर्धरभरश्च दुर्वहलोहादि भार स्ताभ्यां भग्ना इति भग्नकाःपराङ्मुखीभूता स्तथा निसहाशक्ति निःसहा नितरामशक्ताास्तएव निःसहका निकृष्टांगा मुक्तांगा ये ते तपोनियमतपउ पधानरणदुर्द्धरभरभग्नकनिःसहकनिकृष्टाः पाठांतरेण निःसहकनिविष्टा स्तेषां मिहच प्राकृतत्वेन वकारलोपसंधिकरणाभ्यांभग्ना इत्यादौ दीर्घत्व मवसेयं तथा घोरपरीषहैः पराजिता वासमर्थाः सन्तः प्रारब्धाश्च परीषहैरेव वशीकर्तुं रुद्धाश्च मोक्षमार्गगमने ये ते घोरपरीषहपराजिता सहप्रारब्धरुद्धाः अतएव सिद्धालयमार्गात् ज्ञानादे र्निर्गताः प्रतिपातिता ये ते तथा तेचतेचेति तेषां घोरपरीषहपराजितासहप्रारब्धरुद्धसिद्धालयमार्गनिर्गतानां पाठांतरेण घोरपरी षहपराजितानां तथा सह युगपदेव परीषहै र्विशिष्टगुणश्रेणिमारोहंतः प्ररुद्धरुद्धाः प्रतिरुद्धा सिद्धालयमार्गनिर्गताश्च ये ते तथा तेषां सहप्ररुद्धसिद्धालय मा र्गनिर्गतानां तथा विषयसुखेषु तुच्छेषु स्वरूपतः आशावशदोषेणमनोरथ पारतंत्र्यवैगुण्येन मूर्च्छिता अभ्युपपन्ना येते तथा तेषांविषयसुखतुच्छाशावशदोषमू र्च्छितानां पाठांतरेण विषयसुखेया महेच्छाःकस्यांचिद्वस्थायां या चावस्थांतरे तुच्छाशा तयो र्वशः पारतंत्र्यं तल्लक्षणेनदोषेण मूर्च्छिता ये ते तथा तेषांविषय

॥ मूल ॥

रपरीसहपराजियाणं सहपारद्धरुद्धसिद्धालयमग्गनिग्गयाणं विसयसुहतुच्छआसावसदोसमुच्छियाणं विरा

॥ भाषा ॥

दुर्वह भार रण संग्राम तेणें करी भग्न उपराठा थयाछे अत्यर्थ अशक्तछे संयम मार्गे थाकाछे वली घोर रुद्र उपद्रव करी भागाछे एहवा असह असम र्थछे प्रारब्धा परीषह वशिकरिवाने रुंध्याछे । वली सिद्धालयमार्ग ते मोक्षमार्ग ज्ञान दर्शन चारित्र थकी नीकल्याछे । तुच्छ विषय सुखनी आशा रूप दो षे करी वसवर्त्त तेमूर्च्छित थयाछे । विराध्याछे दर्शनज्ञानचारित्र । यतीना अनेक प्रकारना मूलगुण उत्तरगुणरूप गुण तेहने विषे निस्सार तेणेकरी शून्य

॥ टीका ॥

सुषमहेरहातुरछायायामदोषमूर्छितानां तथा विराधितानि चारित्रज्ञानदर्शनानि यैस्ते तथा तथा यतिगुणेषु विविधप्रकारेषु मूलगुणोत्तरगुणरूपेषु निःसारा सारवर्जिता प्रसंजिप्रायगुणधान्याइत्यर्थः तथा तैरेव यतिगुणैः शून्यकाः सर्वथा अभावा ये ते तथेति पदद्वयस्य कर्मधारयोऽतस्तेषां विराधितचारित्रज्ञान दर्शनयतिगुणविविधप्रकारनिःसारशून्यकानां किमतआह संसारे संसृतौ अपारदुःखा अनन्तक्लेशा ये दुर्गतिषु नारकतिर्यक्षु मानुषकुदेवरूपासु भवा भवग्रहणानि तेषां ये विविधाः परंपराः पारंपर्याणि तासांयेप्रपंचा स्ते संसाराऽपारदुःखदुर्गतिभवविविधपरंपरप्रपंचा आख्यायंते इतिपूर्वेणयोग स्तथा धीरा णांच महासत्वानां किंभूतानां जितंपरीषहकषायसैन्यं यै स्ते तथा धृतेर्मनःस्वास्थ्यस्य धनिकाः स्वामिनो धृतिधनिकाः तथा संयमे उत्साहो वीर्यं निश्चितो ऽव श्यंभावी येषांते संयमोत्साहनिश्चिताःततः पदत्रयस्य कर्मधारयोऽत स्तेषां जितपरीषहकषायसैन्यधृतिधनिकसंयमोत्साहनिश्चितानां तथा राधिता ज्ञानदर्शन चारित्रयोगा यैस्ते तथा निःशल्यो मिथ्यादर्शनादिरहितः शुद्धस्तातीचारविमुक्तो यः सिद्धालयस्य सिद्धिमार्ग स्तस्याभिमुखा येते तथा ततः पदद्वयस्य कर्मधार

॥ मूल ॥

हियचरित्तनाणदंसणजइगुणविविहप्पयारनिस्सारसुन्नयाणं संसारअपारदुक्खदुग्गइ भवविविहपरंपरापवं

धा धीराणयजियपरीसहकसायसेन्नधिइधणियसंजमउच्छाहनिच्छियाणं आराहियनाणदंसणचरित्तजोगनि

॥ भाषा ॥

छे। एहवा भाव ज्ञाताने विषे कह्याछे। संसारनेविषे अपार दुख दुर्गति ने विषे उपजवो तेहनो जे अनेक प्रकारनो परंपरा संतति तेहना विस्तारने वि षे वेधीर महासत्वनाधणी वली जेणे परीषह कषायनी सेना जीती छे। तेहना प्रवन्ध ज्ञाताने विषे कहियेछे। वली धृति जे मननो स्वस्थपणो तेहीजछे धन जेहने एतले धृतिना स्वामी। तथा संयमनेविषे उत्साह वीर्य निश्चित छे जेहना। जेणे ज्ञानदर्शन चारित्रनायोग आराध्याछे। जे निःशल्य मिथ्यात्व

॥ टीका ॥

च अतस्तेषामाराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगनिःशल्यशुद्धसिद्धालयमार्गाभिमुखानां किमतआह सुरभवने देवतयोत्पादे यानिविमानसौख्यानि तानि सुरभवन विमानसौख्यानि अनुपमानि ज्ञाताधर्मकथाखाख्यायंत इति प्रक्रम इहच भवनशब्देन भवनपतिभवनानि व्याख्याता न्याविराधितसंयमप्रव्रजितप्रस्तावात् तेहि भवनपतिषु नोत्पद्यन्तइति तथा भुक्ता चिर भोगान् मनोज्ञशब्दादीन् तथाविधान् दिव्यान् स्वर्गभवान् महार्हान् महतमाल्यन्तिकान् अर्हान् प्रशस्त
॥ १८१ ॥ तया पूज्यानितिभावः ततश्च देवलोकात् कालक्रमच्युतानां यथाच पुनर्लब्धसिद्धिमार्गाणा मनुजगता ववाप्तज्ञानादीना मन्तक्रिया मोक्षो भवति तथा च्यायतइतिप्रक्रमः तथा चलितानाञ्च कथञ्चित्कर्मवशतः परीषहादा वधीरतया संयमप्रतिज्ञायाः प्रभ्रष्टानां सहदेवै र्मानुषाः सदेवमानुषा स्तेषां सम्बन्धी नि धीरकरणे धीरत्वोत्पादने यानि कारणानि ज्ञातानि तानि सदेवमानुषधीरकरणकारणानि आख्यायन्तइतिप्रक्रमः इयमत्रभावना यथा आर्याषाढो देवे नधीरीकृतो यथावा मेघकुमारो भगवता शैलकाचार्यो वा पान्थकसाधुना धीरीकृत एवं धीरकरणकारणानि तत्राख्यायन्ते किम्भूतानि तानीत्याह बोधना

॥ मूल ॥

रसल्लसुद्धसिद्धालयमग्गमभिमुहाणं सुरभवणविमाणसुक्खाइं अणोवमाइं भुत्तूणचिरंच भोगभोगाणि ताणि दिव्वाणि महरिहाणि ततोयकालक्कमचुयाणं जहयपुणो लद्धसिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया चलियाणयसदेवमा

॥ भाषा ॥

दर्शनादि रहित अतीचार रहित थको सिद्धिना मार्गने अभिमुख छे तेहने देवताना भवने विषे विमानना अनुपम सुख ज्ञातानेविषे कहियेछे। तेह मनोज्ञ शब्दादिक पंचेंद्रियना विषय महर्घ्य देवतासंबंधी चिरकाललगे भोगीने कालक्रमे देवलोकथीचव्यो तथा वलीपाम्योछे सिद्धिनो मार्ग जेणे । एह पूर्वोक्त सहूनी अंतक्रिया ज्ञातानेविषे कहीछे । कोइक कर्मना वशथी जे चल्याछे संयमनी प्रतिज्ञाथी भ्रष्टथया छे देवता सहित मनुष्य तत्संबन्धी धीर

॥ टीका ॥

नुशासनानि बोधनानि मार्गभ्रष्टस्य मार्गसंस्थानानि अनुशासनानि दुःस्थस्य सुस्थतासम्पादनानि अथवा बोधनमामंत्रणं तत्पूर्वकान्यनुशासनानि बोधनानुशासनानि तथा गुणदोषदर्शनानि संयमाराधनायां गुणा इतरत्र दोषा भवन्तीत्येवन्दर्शनानि वरकान्याख्यायन्त इतियोगः तथा दृष्टान्तान् ज्ञातानि प्रत्ययांश्च बोधिकारणभूतानि वाक्यानि श्रुत्वा लोकमुनयः शुकपरिव्राजकादयो यथा येनप्रकारेण स्थिताः शासने जरामरणनाशनकरे जिनानांसम्बन्धिनीति भावः तथाख्यायन्तइतियोगः तथा आराहितसंजमत्ति एतएव लौकिकमुनयः संयमम्पालिताश्च जिनप्रवचनम्प्रपन्नाः पुनः परिपालितसंयमाश्च सुरलोककृत्वा चैते सुरलोकप्रतिनिवृत्ता उपयन्ति यथा शाश्वतं सदाभाविनं शिवमनाबाधकं सर्वदुःखमोक्ष निर्वाणमित्यर्थः एतेचोक्तलक्षणाः अन्येच एवमादय आदि

॥ मूल ॥

णुसथीरकरणकारणाणि बोधणअणुसासणाणि गुणदोसदरिसणाणि दिठंते पच्चयसोऊणलोगमुणिणो जह ठियसासणम्मि जरमरणनासणकरे आराहिअसंजमाय सुरलोगपडिनियत्ता उवेंति जहसासयं सिवं सव्वदु

॥ भाषा ॥

करिवाने अर्थे जेकारण उदाहरण ज्ञातानेविषें कह्याछे। जिम मेघकुमारने हाथीना उदाहरणथी थिरकीधो तथा बोधन जे मार्गथकी भ्रष्ट तेहने मार्ग थापिवो तथा शिक्षा देवी। गुणवली दोषनी देखाडवी। तथा प्रतिबोधना कारणभूत दृष्टांत सुणीने लोकमुनी शुकपरिव्राजकादिक जेणे प्रकारे जरा मरणनो नाश करणहार एहवा जिन शासन ने विषे रह्या। तेज्ञातानेविषे कह्याछे। आराध्योछे संयम जेणे एहवा एहीज लोकमुनी देवलोक पाम्या थको देवलोक थी उपराठा आवे वली धर्म आराधीने जिम शाश्वत सदाभावि बाधारहित सर्वदुःखमोक्ष एतले निर्वाण। इत्यादिक पूर्वे कह्याते अथवा

अन्दस्य प्रकारार्थत्वा देवंप्रकारार्थाः पदार्थाः वित्थरेणयत्ति विस्तरेण यथयदात्क्वचित्क्वचित् संक्षेपेण आख्यायन्त इतिक्रियायोगः नायाधम्मकहासुणमित्या दि कथ्यमानिगमना यवर मेगूणतीसमज्झयणत्ति प्रथमश्रुतस्कन्धे एकोनविंशतिर्द्वितीयेच दशेति दशधम्मकहाणंवग्गा इत्यादौ भावनेय मिहैकोनविंशतिर्ज्ञा ताध्ययनानि दार्ष्टान्तिकार्थज्ञापनलक्षणज्ञातप्रतिपादकत्वा त्तानि प्रथमश्रुतस्कन्धे द्वितीयेत्वहिंसादिलक्षणस्य धर्मस्य कथा आख्यानकानी त्युक्तंभवति तासां च दशवर्गा वर्गइतिसमूह स्ततत्रार्थाधिकारसमूहात्मकान्यध्ययनान्येवं दशवर्गाद्रष्टव्या स्तत्रज्ञातेष्वादिमानि दशज्ञातानि ज्ञातान्येव नतेष्वाख्यायिकादिस ॥ टीका ॥

स्कमोक्कं एए अक्खेय एवमाइत्थवित्थरेणय णायाधम्मकहासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदाराजावसं खेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए छठे अंगेदोसुअक्खंधा एगूणतीसं अज्झयणा ते समासउ दुविहा पण्णत्ता ॥ मूल ॥

अथभी विस्तार थी तथा संक्षेप थी ज्ञाताने विषे कह्याछे। ज्ञाताने विषे संख्याती वाचना सूत्रार्थ प्रदानरूप। संख्याता अनुयोगद्वार उपक्रमादिक। यावत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणिवी सूत्र थोडो अर्थ घणो ते संग्रहणी। तेह अंगार्थ पणे। एम छठे अंगे बे श्रुतस्कंध पहिले श्रुतस्कंधे उगणीस अध्ययन ते १९ ज्ञाताध्ययन संक्षेपथी बे प्रकारे कह्या। ते कहेछे। केइक अध्ययन मेघकुमारादिक चरित्ररूप। कईक जल्पितरूप समुद्रना अने कूवाना मीडको वा तकोधी। इत्यादिक। बीजे श्रुतस्कंधे दश धर्मकथानावर्ग समूह तिहां एकेकोये धर्मकथायें अधिकारना समूहात्मक अध्ययन ते मांहि ज्ञातानेविषे पहिला दश वर्ग ज्ञात उदाहरण रूपतेहने विषे आख्यायिकादिकनो संभवनथी शेष ९ ज्ञाताने विषे एकेक ज्ञातामांहि पैंतालीस २ अधिक आख्यायिकना सैंकडा ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

अथ: शेषाणि नवशतानि तेषु पुनरेकैकस्मिन् पञ्चपञ्चचत्वारिंशदधिकानि आख्यायिकाशतानि तत्राप्येकैकस्या माख्यायिकायां पञ्चपञ्चोपाख्यायिकाशता नि तत्राप्येकैकस्यामुपाख्यायिकायां पंचपंचाख्यायिकोपाख्यायिकाशतानि एवमेतानि संपिण्डितानि किंसङ्घातं इगवीसंकोडिसयं लक्खापन्नासमेववोधव्वा २१५०००००० एवंठिएसमाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो ॥ १ ॥ तद्यथा दसधम्मकहाणंवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पंचपंचअक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाएपंचपंचउवक्खाइयासयाइं एगमेगाएउवक्खाइयाएपंचपंचअक्खाइउवक्खाइसयाइंति एवमेतानि संपिण्डितानि किंसङ्घातं पणवीसंकोडिसयं २५०० ००००० एत्थयसमलक्खणाइयाजम्हा नवनायसंबद्धा अक्खाइयमाइयातेणं ॥ १ ॥ तेराहिज्जंतिफुडं इमाउरासीउवेगलाणंतु पुणरुत्तवज्जियाणं पमाणमेयं

॥ मूल ॥

तंजहा चरित्ताय कप्पियाय दसधम्मकहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ

॥ भाषा ॥

कहिवा। तिहां एकेक आख्यायिकनेविषें पांच पांच सो उपाख्यायिक छे। तिहां वली एकेक उपाख्यायिकनेविषे पांचपांच आख्यायिक उपाख्यायिकना संग्रहाछे। तिहां आख्यायिक नाम कथा उपाख्यायिक ते उपकथा एह सर्व एकठी करतां। इगवीसंकोडिसयं लक्खापन्नासमेववोधव्वा। २१५०००००० एवं ठिए समाणे अहिगयसुत्तस्सपत्थारो॥ १ ॥ तद्यथा। दस धम्मकहाणंवग्गा तत्थणंएगमेगाएधम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं एगमेगाएअक्खाइया ए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइउवक्खाइयासयाइंति। एसर्व एकठाकीधा तिवारे २५०००००० पंचवीस कोटि थई ते मांहिथी पाछली थोक एकवीस किरोड पंचास लाख पुनरुक्तपणामाटे बाहिर काढिये तो साढे ३ कोटि कथाहोय तेमाटे कहेछे। एव मेव सपूर्वा

॥ टीका ॥

विधिहिदं ॥ २ ॥ सोधितेचैतस्मिन् सति अर्द्धचतुर्थाएव कथानककोव्यो भवन्तीति अतएवाह एवमेवसपुव्वावरेणंति भणितप्रकारेण गुणनशोधनेकृते सतीत्युक्तं भवति अद्धुट्ठाओ अक्खाइयाकोडीओभवंतीति मक्खाओत्ति आख्यायिकाकथानकानि एताएवमेतत्संख्याभवंतीतिकृत्वा आख्याता भगवतामहावीरेणेति तथा संख्यातानि पदसयसहस्साणीति किल पञ्चलक्षाणि षट्सप्ततिश्चसहस्राणि पदाग्रेण अथवा सूत्रालापकपदाग्रेण संख्यातान्येवपदशतसहस्राणि भवन्तीत्येवं सर्वत्र भावयितव्यमिति ॥ ६ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ का सा उपासकदशा उपासकाः श्रावकास्तद्गतक्रियाकलापप्रतिबद्धा दशा दशा

॥ मूल ॥

अहसयाइं एवामेवसपुव्वावरेणं अद्धुठाउ अक्खाइयकोडीउ भवंतीति मक्खायाउ एगूणतीसं उद्देसणकाला एगूणतीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पन्नत्ता तंजहा संखेज्जाअक्खरा जावचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं णायाधम्मकहाउ ॥ ६ ॥ सेकिंतंउवासगदसाउ उवासगदसासुणं

॥ भाषा ॥

पर तेणें प्रकारे पहिलो गुणाकार करिये। पछे पाछला आंके आगलोआंक सोधिये तिवारे साढे ३ कोटिकथानो थाय। तेभगवान महावीर स्वामीये कह्यो। ज्ञाताने विषे उगणत्रीस उद्देशन काल उद्देशाना अवसर कह्या। उगणत्रीस समुद्देशनकाल। संख्याता पदना सत सहस्र ५ लाख ७६ हजार पद परिमाणें कह्या। ते कहेछे। वली संख्याता अक्षर यावत् शब्दंकरी संख्याता वेढा संख्याता श्लोक ज्ञाताने विषे चरण श्रमणधर्म करण पिंडविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा कहिये ते ज्ञाताधर्मकथा छट्ठो अंग ॥ ६ ॥ स्युंतेउपासक दशांग। उपासक श्रावकनी क्रियाकलाप प्रतिबद्ध दश अध्ययनछे

॥ टीका ॥

ध्ययनोपलक्षिता उपासकदशा स्तथाचाह उपासकदसासुणं उपासकानां नगराणि उद्यानानि चैत्यानि वनखण्डा राजानः अम्बापितरौ समवसरणानि धर्माचार्या धर्मकथा ऐहलौकिकपारलौकिकाऋद्धिविशेषा उपासकानाञ्च शीलव्रतविरमणगुणप्रत्याख्यानपौषधोपवासप्रतिपादनता स्तत्र शीलव्रतान्यणुव्रतानि विरमणानि रागादिविरतयः गुणा गुणव्रतानि प्रत्याख्यानानि नमस्कारसहितादीनि पौषध मष्टम्यादिपर्वदिनं तत्रोपवसनमाहारशरीरसत्कारादि त्यागः पौषधोपवासःततोद्वन्द्वस्तत्येतेषाम्प्रतिपादनताप्रतिपत्तय इतिविग्रहः श्रुतपरिग्रह स्तपउपधानानिचप्रतीतानि पडिमाशोत्ति एकादशउपासकप्रतिमाः कायोत्सर्गावा उपसर्गादेवादिकृतोपद्रवाः संलेखना भक्तपानप्रत्याख्यानानि पादपोपगमनानि देवलोकगमनानि सुकुलेप्रत्यायाति पुनर्बोधिलाभोऽन्तक्रिया

॥ मूल ॥

उवासयाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइआइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोइयपरलोइयइड्ढिविसेसा उवासयाणं सीलव्वयवेरमणगुणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जियाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ उवसग्गा संलेहणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोग

॥ भाषा ॥

ते उपासक दशा कहिये। तेहने विषे श्रावकना नगर नाम उद्याननाम चैत्यनाम बनखंडनाम राजानाम माता पितानाम समोसरण धर्माचार्य नाम धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष। श्रावकना शील शुभाचार व्रत १२ अणुव्रत रागादिकनो विरति गुणव्रतप्र त्याख्यान ते नवकारसी प्रमुख पौषध अष्टम्यादि पर्वतिथिये उपवास करिवो ते पौषधोपवासनो प्रतिपादवो कहिवो। श्रुतनो सांभलिवो। तथा बारे भेदे तपनो करिवो। प्रतिमा ११ श्रावकनी उपसर्ग देवताना कीधा। संलेखणा तपें करी आत्माने कषाय दुर्बल करिवो। भातपाणीनो पचखवो। संथारो। देवलोके जाइवो

॥ टीका ॥

ख्यायन्ते पूर्वोक्तमेव यतो विशेषत आह उवासगेत्यादि तत्र ऋद्धिविशेषा अनेककोटीसंख्यद्रव्यादिसम्पद्विशेषाः तथा परिषदः परिवारविशेषा यथा माता पितृपुत्रादिका ऽभ्यन्तरपरिषत् दासीदासमित्रादिका बाह्यपरिषदिति विस्तरधर्म्मश्रवणानि महावीरसन्निधौ ततो बोधिलाभो भिगमः सम्यक्त्वस्य विशुद्धता स्थिरत्वं सम्यक्त्वशुद्धिरेव मूलगुणोत्तरगुणा अणुव्रतादयः अतिचारा स्तेषामेव वधबन्धादितः खण्डनानि स्थितिविशेषा श्रोपासकपर्यायस्य कालमानभेदाः बहुविशेषाः प्रतिमाः प्रभूतभेदाः सम्यग्दर्शनादिप्रतिमाः अभिग्रहग्रहणानि तेषामेव च पालनानि उपसर्गाधिसहनानि निरुपसर्गश्चोपसर्गाभावश्चेत्यर्थः तपां

॥ मूल ॥

गमणाइं सुकुलपच्चाया पुणोबोहिलाभो अंतकिरियाउ आघविज्जंति उवासगदसासुणं उवासयाणं रिद्धिविसेसा परिसावित्थरधम्मसवणाणि बोहिलाभ अभिगमणे सम्मत्तविसुद्धया थिरत्तं मूलगुणउत्तरगुणाइयारा ठिईविसेसा बहुविसेसा पडिमाभिग्गहग्गहणउवसग्गाहियासणणिरुवसग्गा तवोय चित्ता सीलव्वयगुणवेर

॥ भाषा ॥

अने वलीसुकुले उपजवो। वली बोधनो प्राप्ति। अंतक्रिया करिवो। एहसर्वे उपासक दशामांहि कहियेछे। उपाशक दशाने विषे श्रावकनी ऋद्धिविशेष अनेक धन कोटि संख्या विशेष। परिषदा परिवारनो विस्तार। भगवंत महावीरने पासे धर्मनो सांभलिवो। धर्मनो प्राप्ति। धर्मनो आदरिवो। सम्यक्त्वनी विशुद्धता निर्मलतां। धर्मने विषे स्थिरपणो। मूलगुण उत्तरगुणना अतीचार वध बंधादिक। स्थिति विशेष। श्रावकपणांना कालनी मर्यादा। सम्यग्दर्शन प्रतिमा अभिग्रहनो बहु विशेष कहिये बहुत भेदनो ग्रहिवो पालवो उपसर्गनो सहिवो। तथा निरुपसर्ग उपसर्ग विना पणि चित्र विचित्र अने

॥ टीका ॥

सिच विचार्णि शीलव्रतादयो ऽनन्तरोक्तरूपा अपश्चिमाः पश्चात्कालभाविन्यः अकारस्त्वमङ्गलपरिहारार्थः मरणरूपे अन्ते भवा मारणान्तिक्यः आत्मशरीर स्य जीवस्यच संलेखनाः तपसा रोगादिजयेनच कृशीकरणानि आत्मनः संलेखनाः ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारय स्तासां जोसणंति जोषणाः सेवनाः करणा नीत्यर्थः ताभिरपश्चिममारणान्तिकात्मसंलेखनाजोषणाभि रात्मानं यथाच भावयित्वा बहूनिभक्तानि अनशनतया च निर्भोजनतया च्छेदयित्वा व्यवच्छेद्य उ पपन्ना स्त्वेतिगम्यते केषु कल्पवरेषु यानि विमानोत्तमानि तेषु यथानुभवन्ति सुरवरविमानानि वरपुंडरीकाणीव वरपुण्डरीकाणि यानि तेषु कानि सौख्या न्यनुपमानि क्रमेण भुक्तोत्तमानि ततः आयुष्कक्षयेण च्युताः सन्तो यथा जिनमते बोधिं लब्ध्वा इतिविशेषः यथाच संयमोत्तम प्रधानं संयमं तमोरजश्रोघ

॥ मूल ॥

मण पच्चक्खाणपोसहोववासा अपच्छिममारणंतियाय संलेहणा झोसणाहिं अप्पाणं जहय भावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए च्छेअइत्ता उववन्ना कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति सुरवरविमाणवरपोंडरीएसु सोख्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तउ आउक्खएचुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलझूणय सं

॥ भाषा ॥

ण प्रकारे शील शुभाचार व्रत अणुव्रतादिक विरति प्रत्याख्यान नवकारसी प्रमुख तथा पौषधोपवास छेहले काले मरणांतिक संलेखना मरणरूप अं तकाले होय एहवी संलेखना आत्माने कर्मथी हलुको करिवो। तेहनो जोषणो तेहनो सेविवो तेणे आपणा आत्माने भाविये जिमघणे प्रकारे अनसने करी कर्मछेदीने उपनोछे प्रधान उत्तम देवलोक ने विषे सुख अनुभवेछे। देवता संबंधी प्रधान विमान प्रधान पुंडरीक कमलनीपरें उत्तम तेहने विषे अनाम जाय एहवा अनुपम सुखप्रतें क्रमें अनुक्रमें भोगवीने देवलोक थकी आयुक्षयथी चव्याथका जिम जिन मतने विषे बोधि श्रीजिनधर्मनो प्राप्ति

॥ टीका ॥

विप्रमुक्ता अज्ञानकर्मप्रवाहविमुक्ता उपयन्ति यथा अक्षयं अपुनरावृत्तिकं सर्वदुःखमोक्षं कर्मक्षयमित्यर्थः तथोपासकदशाख्याख्यायन्त इतिप्रक्रमः एतेचान्ये चेत्यादि प्राग्वत् नवरं संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणंति किलैकादशलक्षाणि द्विपञ्चाशच्चसहस्राणि पदानामिति ॥ ७ ॥ सेकिंतमित्यादि अथ

॥ मूल ॥

जमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्का वेंति जहअक्खयसव्वदुक्खमोक्खं एते अन्नेय एवमाइ उवासयदसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जाअणुओगदारा जाव संखेज्जाउ संगहणीउ सेणं अंगठयाए सत्तमे अंगे एगेसुयक्खंधे दसअ ज्झयणा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाइं अक्खरा इं जाव एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जंति सेत्तं उवासगदसाउ ॥ ७ ॥ सेकिंतं अंतग

॥ भाषा ॥

होय वली उत्तम संयम आराधीने अज्ञानरूप अंधकार तल्लक्षण राजा तेहथी मूंकाणा जिम अक्षय अपुनरावृत्तिक सर्वदुः खक्षय लक्षण मोक्षपावे । इत्यादिक पूर्वोक्त तथा अनेरापिण पदार्थ उपासक दशाने विषें कहियेछे । परित्ता संख्याती वाचना । वली संख्याता अनुयोगद्वार । यावत् संख्याती संग्रहणी लगे जाणिवो । तेह अंगार्थपणें सातमो अंग तेहने विषें १ श्रुतस्कंध आनन्दादिक १० श्रावकना १० अध्ययन । दश उद्देशनकाल वली १० समुद्देशन काल । संख्याता पदना सहस्र पदाग्रे पद परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर इहांथी चरण साधुव्रत करणपिंड विशुद्ध्यादिक इहांतक पूर्वोक्त पाठ कहिवो । ते उपासक दशा मांहि कहिये ते उपासकदशा सातमो अंग ॥ ७ ॥ स्यूंते अंतगडदशा संसारनो अंत कहिये नाश को

॥ टीका ॥

का स्ता अन्तकृद्दशाः तत्रान्तोविनाशः सच कर्मण स्तत्फलस्यवा संसारस्य कृतो यैस्ते अन्तकृता स्तेच तीर्थकरादय स्तेषां दशाः प्रथमवर्गे दशाध्ययनानीति तत्संख्यया अन्तकृतदशा स्तथाचाह अंतगडदसासुणमित्यादि कण्ठ्यं नवरं नगरादीनि चतुर्दशपदानिषष्ठाङ्गवर्णकाभिहितान्येव तथा पडिमाओत्ति द्वाद श भिक्षुप्रतिमा मासिक्यादयो बहुविधाः तथा क्षमा मार्दवं आर्जवंच शौचञ्च सत्यसहितं तत्रशौचम्परद्रव्यापहारमालिन्याभावलक्षणं सप्तदशविधश्च संयम उत्तमञ्च ब्रह्ममैथुनविरतिरूपं आकिंचणियत्ति आकिंचन्यं तप स्त्यागइति आगमोक्तं दानं समितयो गुप्तयश्चैव तथा अप्रमादयोगः स्वाध्यायध्यानयोश्च उत्त

॥ मूल ॥

अंतगडदसासुणं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणचेइयवणरायाअम्मापियसमोसरणधम्माधम्मकहा इह लोइअपरलोइअ इड्डिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं पडिमाउ बहुविहाउ खमाअज्जवं मद्दवंचसोअंच सच्चसहियं सत्तरसविहोयसंजमो उत्तमंचबंभं आकिंचिणया तवो किरियाउ समि

॥ भाषा ॥

थी जेणे ते अंतकृत् तेहनी दशा जे संख्या जिम पहिले वर्गे दश अध्ययन इत्यादिक ते अंतगडदशा अंतगडदशाने विषें संसार अंतकारी जीवना नगर उ द्यान चैत्य वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा कहियेछे। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोग भोगीने पछे प्रव्रज्यादी क्षा लोधी। श्रुतनो भणिवो तपनो करिवो १२ भिक्षुप्रतिमा अनेक प्रकारे। क्षमा क्रोधनोजीतवो। आर्जव मायानो छांडिवो। मार्दव माननो त्याग। शौच कर्ममलनोछांडिवो। सत्यकरी सहित। सतरह भेदे संजम जाणिवो। उत्तम ब्रह्मचर्यनो पालवो मैथुननो अभाव। आकिंचनता निद्रव्यपणो। तप

॥ टीका ॥

मयो र्द्वयोरपि लक्षणानि स्वरूपाणि तत्र स्वाध्यायस्य लक्षणं सज्झाएणपसत्थंज्झाणमित्यादि ध्यानलक्षणं यथा अंतोमुहुत्तमित्तंचित्तावत्थाणमेगवत्थुमित्यादि व्याख्यायन्त इति सर्वत्रयोगः तथा प्राप्तानाश्च संयमोत्तमं सर्वविरति जितपरीषहाणां चतुर्विधकर्मक्षये घातिक्षयेसति यथा केवलस्य ज्ञानादे र्लाभः पर्यायः प्रव्रज्यायाः लक्षणो यावांश्च यावद्वर्षादिप्रमाणो यथा येनतपोविशेषाश्रयणादिना प्रकारेण पालितो मुनिभिः पादपोपगमनश्च पादपोपगमाभिधानमनशनं प्रतिपन्नो योमुनि र्यत्र शत्रुञ्जयपर्वतादौ यावन्तिच भक्तानि भोजनानि च्छेदयित्वा अनशनिनांहि प्रतिदिन भक्तद्वयच्छेदो भवति अन्तकृतो मुनिवरो जातइतिशेषः तमोरजओघविप्रमुक्तएवंच सर्वेपि क्षेत्रकालादिविशेषिता मुनयो मोक्षसुखमनुत्तरञ्च प्राप्ता आख्यायन्त इति क्रियायोगः एते अन्ये चेत्यादि

॥ मूल ॥

इगुत्ताउ चेव तहअप्पमायजोगो सज्झायज्झाणेणयउत्तमाणं दोण्हंपि लक्खणाइं पत्ताणयसंजमुत्तमं जियपरीसहाणं चउव्विहकम्मक्खयम्मि जहकेवलस्सलंभो परियाउ जत्तिउयजहपालिउ मुणीहिंपावोवगउय जहिं जत्तियाणिभत्ताणि छेयइत्ता अंतगडोमुणिवरो तमरयोघविमुक्को मोक्खसुहमणंतरंचपत्ता एए अन्नेय एव

॥ भाषा ।

१२ भेदे। क्रिया अनुष्ठान। समितिगुप्ति। तिमज अप्रमादना योग। स्वाध्याय सिद्धांत नुं भणवो। ध्यान धर्म ध्यानादि मुहूर्त्त लगे चित्तनूं एकाग्रपणोते स्वाध्यायध्यान। उत्तम एह बिहुंनालक्षण अंतगडदशा मांहि कहिये छे। संयमप्रते जेह पाम्या जेणे परीषह जीत्या घाति ४ कर्म ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ मोहनीय ३ अंतराय ४ एहनोनाशकरे जिम केवल ज्ञाननो लाभहोय प्राप्तिहोय। पर्याय ते दीक्षानोकाल जेणे मुनीश्वरें जेतला जेतला वर्ष प्रमाणें संयम पाल्यो होय। पादपोप गमन अनशनादिक जेह जेणें प्रकारे जेतलाभात पाणी छेदीने अंतकृत् संसारना अंतकारक मुनिवर तम

प्राप्नत् मवरं दशमध्ययनानि प्रथमवर्गापेक्षयैव घटन्ते नन्द्यां तथैव व्याख्यातत्वात् यच्चेह पठ्यते सत्तवग्गत्ति तत्प्रथमवर्गादन्यवर्गापेक्षया यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट व- ॥ टीका
र्गास्तत्रामपि तथापठितत्वा सदृशत्तिवेयं मष्ठवग्गत्ति मथवर्गः समूहः सचान्तकृताना मध्ययमानां वा सर्वाणिचैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततोभणितं चट्ठ
उद्देसणकालाइत्यादि इहच दशउद्देशनकाला अधीयन्ते इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तानिच किल त्रयो
विंशति र्लक्षाणि चत्वारिचसहस्राणीति ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि नास्मादुत्तरोविद्यते इत्यनुत्तर उपपतनमुपपातो जन्मेत्यर्थः अनुत्तरः प्रधानः

माइत्थविस्थरेणं परूवेइ अंतगडदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाओसंगहणीओ ॥ मूल
सेणंअंगठयाएअट्ठमेअंगेएगेसुयक्खंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणकाला संखे
ज्जाइं पयसहस्साइंपयग्गेणं पन्नत्ते संखेज्जाअक्खरा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतग

अंधकार अज्ञानरूप रजबी मूंकाणो अनुत्तर प्रधान मोच सुखप्रते पाम्यो। एह पूर्व कह्याते तथा अनेरापणि पदार्थ इहां अंतगडदशा मांहि कहिये ॥ भाषा
छे। प्ररूपियेछे। संख्याता वाचना। संख्याता अनुयोगद्दार। जिहांलगी संख्याती संग्रहणी होय तिहांलगी जाणिवो। अंगार्थपणे आठमें अंगी एक श्रुतस्कं
ध दश अध्ययन सात वर्ग तेप्रथम वर्गनी अपेक्षाये बीजा ७ एतले ८ वर्ग समूह। दश उद्देशनकाल दश समुद्देशन काल। संख्याता पदना सत सहस्र
एतले २३ लाख ४ हजार पद परिमाणे कह्या। संख्याता अक्षर इहां थोमांडो चरण साधुव्रत करण पिंड विशुद्ध्यादिक लगें पूर्वनी परें पाठ कहि
वो। इत्यादिक पदार्थ जिहां कहिये ते अंतगडदशा ८ मो अंग ॥ ८ ॥ सूंते अणुत्तरोववाई नथी उत्तर कहिये पाचलि जेहनें तेहना

॥ टीका ॥

संसारे अन्यत्र तथाविधस्या भावादुपपातो येषामस्ते तथा तएवानुत्तरोपपातिकाः तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दशाध्ययनोपलक्षिता अनुत्तरोपपातिकदशा स्तथा चाह अणुत्तरोववाइयदसासुणमित्यादि तथानुत्तरोपपातिकानामिति साधूनां नगरादीनि द्वाविंशतिः पदानि ज्ञाताधर्मकथावर्णकोक्तानि यथातथा एतेषा मेवच प्रपञ्चं रचयन्नाह अणुत्तरोपपातिकदशासु तीर्थंकरसमवसरणानि किम्भूतानि परममङ्गल्यजगद्धितानि जिनातिशेषाश्च बहुविशेषाश्च देहंविमलसुगंधमि

॥ सूत्र ॥

ऊदसाउ ॥ ८ ॥ सेकिंतं अणुत्तरोववाइयदसाउ अणुत्तरोववाइयदसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं न गराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इहलोग परलोअइड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागो पडिमाउ संलेहणाउ भ त्तपाणपच्चक्खाणाइं पाउवगमणाइं अणुत्तरोववाउ सुकुलपच्चायापुणोबोहिलाहोअंतकिरियाउ आघविज्जं ति अणुत्तरोववाइयदसासुणं तित्थकरसमोसरणाइं परममंगल्लजगहियाणि जिणातिसेसायबहुविसेसा जिण

॥ भाषा ॥

दश अध्ययन प्रतिबद्ध दशाते अनुत्तरोपपातिक दशा। तेहने विषे अनुत्तर विमाने ऊपना जे साधु तेहनां नगर उद्यान् चैत्य यथायतन वनखंड राजा माता पिता समोसरण धर्माचार्य धर्मकथा इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष भोगनो परित्याग दीक्षा श्रुतनो भणिवो। तप १२ भेद उपधान वली भिक्षुप्रतिमा संलेखना तेकिसी भातपाणीमा पच्चक्खाण पादपोप गमन अनुत्तर विमाने ऊपनो वली सुकुल ने विषें अवतरिवो। वली बोधिलाभ जिन धर्मनी प्राप्ति। अंतक्रिया एतलो वस्तु एहनें विषें कहिये छे। वली तीर्थंकरना समोसरण ते समोसरण केहवो छे। परम मंगलीकपणें जगतने हित

॥ टीका ॥

त्यादय चतुस्त्रिंशदधिकतरावा तथा जिनशिष्याणांचैव गणधरादीनां किम्भूतानां मतमाह श्रमणगणप्रवरगन्धहस्तिनां श्रमणोत्तमानामित्यर्थः तथास्थिर यशसां तथा परीषहसैन्यमेवपरीषहवृन्दमेव रिपुबल म्परचक्रं तत्प्रमर्द्दनानां तथा दववद्दावाग्निरिव दीप्तान्युज्वलानि पाठान्तरेण तपोदीप्तानि यानि चा रित्रज्ञानसम्यक्त्वानि तैः साराः सफलाः विविधप्रकारविस्तारा अनेकविधप्रपञ्चाः प्रशस्ताश्च ये क्षमादयोगुणा स्तैः संयुतानां क्वचिद्गुणध्वजाना मितिपाठः तथा अनगाराश्च ते महर्षयश्चेत्यनगारमहर्षय स्तेषा मनगारगुणानां वर्णकः श्लाघा आख्यायत इतियोगः पुनः किम्भूतानां जिनशिष्याणा मुत्तमाश्च ते ज्या त्यादिभि र्वरतपसश्च तेचते विशिष्टज्ञानयोगयुक्ताश्चे त्यत स्तेषा मुत्तमवरतपोविशिष्टज्ञानयोगयुक्तानां किंचापरे यथा च जगद्धित भगवत इत्यत्र जिनस्यशा सनमितिगम्यते यादृशाश्च ऋद्धिविशेषा देवासुरमानुषाणां रत्नोज्वलसर्वयोजनमानविमानरचनं सामानिकाद्यनेकदेवदेवीकोटिसमवायनं मणिसुवर्णमणि

॥ मूल ॥

सीसाणंचेव समणगणपवरगंधहत्थीणं थिरजसाणं परिसहसेण्णरिउबलपमद्दणाणं तवदित्तचरित्तणाणसम्म त्तसारविविहप्पगारपसत्थगुणसंजुयाणं अणगारमहरिसीणं अणगारगुणाणवण्णओ उत्तमवरतवविसिट्ठणा

॥ भाषा ॥

कारी छे। जिनना अतिशय देहंविमलसुगन्ध इत्यादिक चउत्रीस छे जिनेंद्र ना शिष्य गणधरादिक ते केहवा छे श्रमण समूह मांहि प्रधान वर गन्ध हाथी ने समानछे। ते थिर जस निश्चलयशछे। परीषह सेनारूप शत्रुनी सेनाने प्रमर्द्दकछे। तपें करीदीप्त तेजवंत जे चारित्र ज्ञान सम्यक्त तेणे करी सार सफल विविध अनेक प्रकार भलाजे गुणवंत सर्व छे ध्वजा जेहने तेहनो। अनगार एहवाजे महर्षिते अनगारमहर्षि तेहना एहवा जे अनगार तेहना गुण तेहनो वर्णक श्लाघा मोटे पंगे कहिये। वली केहवाछे। जात्यादिके करी उत्तम प्रधान तपसाधवी विशिष्ट ज्ञान योगे करी यु

॥ १८८॥

[illegible] तेषु चेतोपरिपतिज्ञनपाथाकैसपरनदेवादिमहाराजषिप्रकाश्य नेवमास्वय सम्पहित्तिषा: समवसरणमवप्रवृत्तानां वैमानिकज्योति [illegible] समरायां राजादिमनुजानां च अथवा अनुत्तरोपपातिकसाधूनां ऋद्धिविशेषा देवादिसम्बन्धिन स्ताद्दशा व्याख्यायन्त इतिक्रियायोग: तथा पर्षदं [illegible] वैमानिकी [illegible] मित्यादिनो [illegible] प्रादुर्भावा आगमनानि च जिनवरसमीपवन्ति जिनसमीपे यथाच येनप्रकारेण पर्युपास्य भिगमादिना उपासते सेवन्ते राजादयो जिनवरं तथाख्यायतइतियोग: यथाच परिकथयति धर्मं लोकगुरु रिति जिनवरो ऽमरनरासुरगणानां श्रुत्वा च तस्येति जिनवरस्य भाषितं अवशेषाणि क्षीणप्रायाणि कर्म्माणि येषांते तथा तेचते विषयविरक्तास्चेति अवशेषकर्म्मविषयविरक्ता: के नरा: किं यथा अभ्युपय

णजोगजुत्ताणं जहयजगहियं भगवउ जारिसाइड्ढिविसेसा देवासुरमाणुसाणं परिसाणं पाउब्भावय जिणस मीवं जहयउवासंतिजिणवरं जहयपरिकहंतिधम्मंलोगगुरू अमरनरसुरगणाणं सोऊणयतस्सभासियं अव सेसकम्मविसयविरत्तानरा जहा अब्भुवेंति धम्ममुरालं संजमं तवंचाविबहुविहप्पगारं जहबहूणिवासा

[illegible] जेम जगतने विषे जिन शासन हितकारी छे। जेहवा ऋद्धिना विशेष छे। देव वैमानिक असुर ते भवन पत्यादिक तथा मनुष्य तेहनो [illegible] हा नो प्रादुर्भाव आविवो उपासयंति पंचविध अभिगम ने करी सेवा करवी। जिनने समीपे सेवा करे। जिनवर लोक गुरु जिम देवता नर सुरनी [illegible] धर्म कथा प्रते कहे। तेह जिनवरनो भाषित सांभलीने। क्षीण प्रायछे कर्म जेहना। वली विषयथी विरक्त एहवा नर मनुष्य जिम धर्मे धर्म [illegible]

त्ति यथासुदारं विशालरूप मतयाह संयम तपश्चापि किंभूतमित्याह बहुविधप्रकारं तथा यथा बहूनि वर्षाणि अनुचरित्वा आसेव्य संयम तपसी इ-
तिवर्त्तते तत आराधितज्ञानदर्शनचारित्रयोगा तथा जिनवयणमणुगयमहिय भासियत्ति जिनवचनं आचारादि अनुगतं सम्यक् नाईविसंवादिमिथ्यं महितं
पूजितमधिकं वा भावितं यैः स्थापनादिना ते तथा पाठान्तरे जिनवचनमनुमत्यानुकूल्येन सुष्टुभावितं यैः ते जिनवचनानुगतिसुभाविताः तथा जिणवरा
णहिययेणमणुणेत्तत्ति इतिषष्ठीद्वितीयार्थे तेन जिनवरान् हृदयेन मनसा अनुनीय प्राप्य ध्यात्वेतियावत् येच यत्र यावन्ति च भक्तानि छेदयित्वा लब्ध्वा च स
माधिं उत्तमं ध्यानयोगयुक्ता उपपन्ना मुनिवरोत्तमा यथा अनुत्तरेषु तथाख्यायत इतिप्रक्रमः तथा प्राप्नुवन्ति यथानुत्तरं तत्रत्य अनुत्तरविमानेषु विषय
सुखं तथाख्यायन्ते तत्तोयत्ति अनुत्तरविमानेभ्यश्च्युताः क्रमेण करिष्यन्ति संयता यथाचान्तः क्रियन्ते तथा ख्यायन्ते अनुत्तरोपपातिकदशाख्येतिप्रकृतमि

णि अणुचरित्ता आराहियनाणदंसणचरित्तजोगा जिणवयणमणुगयमहिय भासित्ता जिणवराण हियएण
मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि भत्ताणि छेयइत्ता लद्धूणयसमाहिमुत्तमज्झाणजोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्त
मा जहअणुत्तरेसुपावंति जह अणुत्तरं तत्थविसयसोक्खं ततोयचुआक्रमेण काहिंतिसंजया जहायअंतकिरियं

प्रधान संयम तप घणें प्रकारे सर्व विरति रूप। जिम घणा वर्ष लगे अणुचरी सेवीने आराध्याछे ज्ञान दर्शन चारित्र योग जेणें जिनवचन आचा
रांगादिकें अनुगतसंमिश्रित महित पूजित भावित जेणे। जिन वरनें हृदयें करी मनेंकरी अनुमोदनाईने। जेह जिहां जेतला भात छेदीने उत्त
म ध्यानें उत्तम ध्यानयुक्त थको उपना मुनिवर अनुत्तर विमानने विषे जिम प्रधान विषय सुखपामीने चवी अनुत्तर विमानथी अनुक्रमें करी

॥ टीका ॥

तेषाम्बेवेत्यानि पूर्ववत् नवरं दसग्रज्झयणातिन्निवग्गत्ति दशाध्ययनसमूहो वर्गो वर्गश्चदशाध्ययनानि वर्गश्च युगपदेवोद्दिश्यते इत्यत स्वयएवोद्देशनकाला भवंतो त्येवमेवच मंधा मभिधीयन्ते इहतु दृश्यन्ते दशेत्यत्राभिप्रायो नज्ञायत इति तथा संख्यातानि पदसयसहस्साइं पयग्गेणंति किल षट्चत्वारिंशल्लक्षाणाष्टौच सहस्राणि ॥ ८ ॥ सेकिंतमित्यादि प्रश्न: प्रतीत स्तन्निर्वचनं व्याकरणं प्रश्नानाञ्च व्याकरणानाञ्च योगात्प्रश्नव्याकरणानि तेषु अङ्गुत्तरम्पसिणसयं

॥ मूल ॥

एए ग्रन्नेय एवमाइत्थ वित्थरेण ग्रणुत्तरोववाइयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जाग्रणुग्रगदारा संखेज्जाग्र संगहणीग्रसेणं ग्रंगठयाए नवमेग्रंगे एगेसुयखंधे दसग्रज्झयणातिन्निवग्गा दसउद्देसणकाला दससमुद्देसणका ला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखेज्जाणि ग्रखराणि जावएवंचरणकरण परूवणया ग्राघवि ज्जांति सेत्तं ग्रणुत्तरोववाइय दसाग्र ॥ ९ ॥ सेकिंतं पएहावागरणाणि पएहावागरणेसु ग्रहुत्तरं

॥ भाषा ॥

स्यें मुनिवर अंतक्रिया । एह पूर्वजे कह्याते अनेरापणि एवमादिक पदार्थ इहां अनुत्तरोपपातिक दशामांहि कहियेछे । एणेंसूत्रें परित्ता वाचना । संख्याता अनुयोग द्वारउपक्रमादिक । यावत् संख्याती संग्रहणी लगें जाणवी । तेह अंगार्थपणें नवमे अंगे एक श्रुत स्कंधना दश अध्ययन त्रिण वर्ग वली दश उद्देशन काल । दश समुद्देशनकाल । संख्याता पदनां शत सहस्र ४६ लाख ८ हजार पदने परिमाणें कह्यो । संख्याता अक्षर थी जिहां ल गे चरणसाधुव्रतनो प्ररूपणा होय तिहां लगे कहिवो । इत्यादि पूर्वोक्त पदार्थ जिहां कहिये ते अनुत्तरोपपातिक दशा नौमो अंग जाणिवो ॥ ८ . ॥ अथ सूंते प्रश्न व्याकरण प्रश्ननो व्याकरण कहिवांते प्रश्नव्याकरण प्रश्नव्याकरणने विषे अनुत्तर सर्वोत्तम प्रश्ननां अंगुष्ठबाहु प्र

॥ टीका ॥

तथाङ्गुष्ठबाहुप्रश्नादिका मंत्रविद्याः प्रश्ना याः पुनर्विधिनाजप्यमाना अपृष्टाएव शुभाशुभं कथयन्ति एताः अप्रश्नाः तथाङ्गुष्ठादिप्रश्नभावं तदभावं च प्रतीत्य या विद्याः शुभाशुभं कथयन्ति ताःप्रश्नाप्रश्ना विज्जाइसयत्ति तथा अन्ये विद्यातिशयाः स्तम्भस्तोभवशीकरणविद्वेषीकरणोच्चाटनादयः नागसुपर्णैश्च सह भवनपतिविशेषै रूपलक्षणत्वा यक्षादिभिश्च सह साधकस्ये तिगम्यते दिव्यास्तात्विकाः सम्वादाः शुभाशुभगताः संलापाः आख्यायन्ते एतदेव प्रायः प्रपञ्चयन्नाह पण्हावागरणदसेत्यादि स्वसमयपरसमयप्रज्ञापका ये प्रत्येकबुद्धा स्तैः करकण्ड्वादिसदृशै र्विविधार्थायकाभाषा गम्भीरेत्यर्थ स्तया भाषिता गदिताः स्वसमयपरसमयप्रज्ञापकप्रत्येकबुद्धविविधार्थभाषाभाषिता स्तासां किमादर्शाङ्गुष्ठादीनां सम्बन्धिनीना मप्रश्नानाम्विविधगुणमहार्थाः प्रश्नव्याकरणदशास्वाख्यायन्त

॥ मूल ॥

पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरंपसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवन्नेहिं सद्धिंदिव्वासंवाया आघविज्जंति पण्हावागरणदसासुणं ससमय परसमय पन्नवय पत्तेअबुद्ध विविहत्थभासाभासियाणं अइसयगुण उवसमणाणप्पगार आयरियभासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहिं विविह वित्थार भासियाणंच जगहि

॥ भाषा ॥

आदिक मंत्र विद्यानां पाठांतरें अंगुष्ठादिक प्रश्न अठोतरसो तथा विधिपूर्वक जे विद्या जपीथकी अदृष्ट थई शुभाशुभ प्रश्न कहेते अप्रश्नविद्या तेह ना सेंकडा तथा अनेरापणि विद्यानां अतिशय थंभनी वशीकरणी उच्चाटनी इत्यादिक। नाग सुपर्ण भवनपति विशेषने साथे दिव्यते तात्विक संवाद शुभाशुभ संलापक प्रश्न व्याकरण दशाने विषे कहियेछे। प्रश्न व्याकरण दशाने विषे स्वसमय जिनमत परसमय परमतना प्रज्ञापक कथक जे प्रत्येक बुद्ध करकंडुआदिक विविधार्थ अनेक प्रकारना अर्थ छे जेहना एहवी भाषायें कह्या। अदृष्ट अंगुष्ठादिक संबंधी भाषाना विविध गुण कहिये। ते

प्रतिशेष: पुन: विधूयाना ... आयरियभासियाणंति प्रतिशयाः सामर्थ्याद्भवाद्वी गुणाव ज्ञानादव उपशमव ... प्रयोग
नानाप्रकारा येषाम्रे तथा तेच ते आचार्यैश्च ते भाषिता या स्ता तथा तासां कव आषितानां मित्याह विस्तरेणंति विस्तरेण महावचनसन्दर्भेण तथाऽसिस्मम
हर्षिभि: पाठान्तरे वीरमहर्षिभि: विविहवित्थारभासियाणंपत्ति विविधविस्तरेण भाषितानाञ्च चकारस्तृतीयप्रश्नायकभेदसमुच्चयार्थ: पुन: कथम्भूताना म
नानां जगहियाणं जगद्धितानां पुरुषार्थोपयोगित्वात् किंसम्बन्धिनीना मित्याह अद्दागत्ति आदर्शश्चाङ्गुष्ठश्च बाहुश्च असिश्च खोमंच वस्त्रं आदिच्चश्चेति
द्वन्द्वः एते आदि येषां कुड्यशङ्खघण्टादीनां ते तथा तेषां सम्बन्धिनीना मप्रश्नविद्याभि रादर्शकादीना मावेशनात् किम्भूतानां प्रश्नाना मतआह विविधम
हाप्रश्नविद्याश्च वाचैव प्रश्नेसत्युत्तरदायिन्य: मन: प्रश्न विद्याश्च मन: प्रश्नितार्थोत्तरदायिन्य स्तासां दैवतानि तदधिष्ठातृदेवता स्तेषां प्रयोगप्राधान्येन तद्दा

याणं अद्दागंगुठबाहुअसिमणिखोमआइच्चमासियाणं विविहमहापसिणविज्जमणपसिणविज्जा देवयंपयोग

प्रश्न जेहवाहे । अतिशय आमर्षौषध्यादिक १ । गुण ज्ञानादिक २ । तथा उपशम पोताने परने उपशमाविवो ३ । एम नाना प्रकारके जेहने एहवाहे
आचार्य तेणें विस्तार करी कह्याहे । वीर महर्षि मोटायतीयें अनेक प्रकार जेविस्तार वचनसंदर्भे करी भाख्याहे । वली जगतने हित रूपहे । आरी
सो अंगुठ बाह खड्ग मणिरत्न इत्यादिक वली वस्त्र आदित्यसूर्य वलीशंख घंटादिक एहने आमलि प्रश्न पूछे तिवारे अधिष्ठायक विद्यादेवी पूर्वोक्त
पदार्थें अधिष्ठान करीने उत्तरदे । तेमाटे ते प्रश्नविद्यायें करी भाषित छे । विविध प्रकारना महाप्रश्नविद्या पूछे थकें तत्काल उत्तर देते महाप्रश्नविद्या
कही । मन:प्रश्नविद्या मननों चिंतित अर्थ कहे एहवी विद्या तेहना अधिष्ठाता देवताना प्रयोगनो व्यापार प्रधानपणे विविधार्थनो प्रकाशक । तथा

॥ टीका ॥

पारप्रधानतया गुण स्विविधार्थ सम्वादलक्षण म्प्रकाशयन्ति लोके व्यञ्जयन्ति या स्ता विविधमहाप्रश्नविद्यामनः प्रश्नविद्यादेवतप्रयोगप्राधान्यगुणप्रकाशिका स्तासां पुनः किंभूतानां प्रश्नानां समुद्भूतेन तात्विकेन द्विगुणेन उपलक्षणत्वा त्रौ किकप्रश्नविद्याप्रभावापेक्षया वहुगुणेन पाठान्तरे विविधगुणेन विद्याप्रभावेन माहात्म्येन नरगणमतीमनुजसमुदयबुद्धौविस्मयकार्य्येश्चमत्कारहेतवो याः प्रश्ना स्ताः सद्भूतद्विगुणप्रभावनरगणमति विस्मयकार्य स्तासां पुनः किम्भूतानां तासा मतिसयमतीतकालसमयेत्ति अतिशयेन यातीतः कालः समयः स तथा तत्र अतिव्यवहिते काले इत्यर्थः दमः शम स्तत्प्रधानं तीर्थकराणां दर्शनान्तरशा स्तृणा मुत्तमो यः स तथा भगवान्जिन स्तस्य तीर्थकरोत्तमस्य स्थितिकारणं स्थापनं आसीदतीतकाले सातिशयज्ञानादिगुणयुक्तः सकलप्रणायकशिरः शेखर कल्पः पुरुषविशेषः एवंविधप्रश्नाना मन्यथानुपपत्ते रित्येवरूप तस्य कारणानि हेतवो या स्तास्तया तासां पुनस्ताएव विशिनष्टि दुरभिगमं दुरवबोधं गम्भी रं सूक्ष्मार्थत्वेन दुरवगाह श्च दुःखाध्येयं सूत्रमङ्गलायतास्य सर्वेषां सर्वज्ञानां सम्मतमिष्टं सर्वसर्वज्ञसम्मतं अथवा सर्वज्ञ तत्सर्वज्ञसम्मतञ्चेति सर्वसर्वज्ञसम्मत मप्रव

॥ मूल ॥

पाहाणगुणप्पगासियाणं सब्भूयदुगुणप्पभावनरगणमइविम्हयकराणं अइसयमईयकालदमसमतित्थकरुत्तम स्सठिइकरणकारणाणं दुरहिगमदुरवगाहस्स सव्वसव्वन्नुसम्मअस्स अवुहजणबोहकरस्स पच्चक्खयपच्चयकरा

॥ भाषा ॥

सद्भूण तात्विकपणें द्विगुण लौकिक प्रश्न विद्यानो अपेक्षायें घणोजे प्रभाव माहात्म्य तेणे करी मनुष्य समूहनी बुद्धिने विस्मय करेछे चमत्कार उपजा वेछे। अतिशयें करी अतीतकाल समय अत्यंत व्यवहित काले दम शम तेणे करी सहित तीर्थंकरोत्तमनी स्थितिनो करण स्थापिवो तेहना कारणछे। दुरनिगम दुःखे जाणिये। गंभीर सूक्ष्मार्थ पणें दुरवगाह दुःखे ग्रहीसके। सर्व सर्वज्ञने मान्य। तथा अबुधजन मूर्ख जेनने प्रबोध ना कारण। प्रत्यक्ष प

॥ टीका ॥

चनतत्वमित्यर्थः तस्य भवधजनविबोधनकरस्य एकांतहितस्येतिभावः पच्चक्खयपच्चयकराणंति प्रत्यचकेन ज्ञानेन साचादित्यर्थो यः प्रत्ययः सर्वातिशयनिधा नमतीन्द्रियार्थोपदर्शनाव्यभिचारिचेदं जिनप्रवचन मित्येवंरूपा प्रतिपत्तिः अथवा प्रत्यचेणैवा नेनार्थाः प्रतीयन्त इति प्रत्यचमिवेद मित्येवं प्रतीतिः प्रत्यच कप्रत्यय स्तत् करणशीलाः प्रत्यचकप्रत्ययकार्यः प्रत्यचताप्रत्ययकार्यो वा यासां प्रत्यचकप्रत्ययकारीणां प्रत्यचताप्रत्ययकारीणां कासामित्याह प्रश्नानां प्रश्न विद्याना मुपलचणत्वा दन्यासाञ्च यासा मष्टोत्तरशतान्यादौ प्रतिपादितानि विविधगुणा बहुविधप्रभावा स्तेच ते महार्थाञ्च महान्तोभिधेयाः पदार्थाः शुभा शुभ सूचनादयो विविधगुणमहार्थाः किंभूता जिनवरप्रणीताः किमित्याह आघविज्जंतित्ति आख्यायन्ते शेषम्पूर्ववत् नवरं यद्यपीहाध्ययनानां दशत्वाद्दशैवो द्देशनकाला भवन्ति तथापि वचनान्तरापेचया पञ्चचत्वारिंशदिति सम्भाव्यते इति पणयालीस मित्याद्यविरुद्ध मिति संखेज्जाणिपयसयसहस्साणि पयग्गेणंति

॥ मूल ॥

णं पराहाणंविविहगुणमहत्थाजिणवरप्पणीया आघविज्जंति पराहावागरणेसुणं परित्तावायणा संखेज्जाअणु उगदारा जावसंखेज्जाउ संगहणीउ सेणंअंगठयाएदसमेअंगे एगेसुयखंधेपणयालीसं उद्देसणकाला पणयाली संसमुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प० संखेज्जाअखरा अणंतागमा जावचरणकरण

॥ भाषा ॥

यें प्रतीतना करणहार छे एतले प्रत्यचपणें मानिवा योग्य छे। एहवा प्रश्नना अनेक गुण अनेक प्रभाव मोटा पदार्थ शुभाशुभना सूचक जिनवरेंप्रणी त भाषित एहवा भाव पदार्थ प्रश्न व्याकरणनें विषें कहियेछे। प्रश्न व्याकरणने विषें संख्याती वाचना। संख्याता अनुयोग द्वारथी यावत् संख्याती संग्रह णी लगे पाठ कहिवो। तेणें अंगार्थपणें दशमें अंगे एक श्रुतस्कंध तेने विषें ४५ उद्देशनकाल ४५ समुद्देशनकाल संख्यातापदना शत सहस्र एतले ९२

तानि च किल.हिनशति लंक्षाणि षोडशच सहस्राणीति ॥ १० ॥ सेकिंतमित्यादि विपचनं विपाक: शुभाशुभकर्मपरिणाम स्तत्प्रतिपादकं श्रुत ॥ टीका ॥
म्विपाकश्रुतं विवागसुएणमित्यादि कंठ्यं नवरं फलविवागेत्ति फलरूपोविपाक: फलविपाक: तथानगरगमणाइंति भगवतो गौतमस्य भिक्षार्थं नगरप्रवेश

परूवणया आघविज्जंति सेत्तंपरहावागरणाइं ॥ १० ॥ सेकिंतं विवागसुए विवागसुएणं सुक्क ॥ मूल ॥
डदुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति सेसमासउ दुविहे पण्णत्ते तंजहा दुहविवागे सुहविवागेचेव
तत्थणं दसदुहविवागाणि दससुहविवागाणि सेकिंतं दुहविवागाणि दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं उ
ज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ णगरगमणाइं

लाख १६ हजार पद पदने परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर । अनंता गमा । अनंता पर्याय यावत् चरण करण श्रमणव्रत पिंडविशुद्ध्यादिक लगी ॥ भाषा ॥
जाणिवो । इत्यादिक पदार्थ जेहने विषे कहिये ते प्रश्नव्याकरण दशमोअंग ॥ १० ॥ अथस्यूंतेविपाक श्रुत । विपाकजे शुभाशुभ कर्म
ना परिणाम तेहनो प्रतिपादक कथक जे श्रुत ते विपाक श्रुत । विपाक श्रुतने विषे शुभ अशुभ कर्मना फलविपाक फलरूपविपाक परिपाक कहि
येछे । ते विपाक श्रुत संक्षेपे बेप्रकारनो कह्यो । तेकहेछे । दुख विपाक अने सुख विपाक । ते विहुंमांहि मृगापुत्रादिकना दश दुख विपाक अने सुबा
हु कुमारादिकना दश सुख विपाक । अथ किस्याते दुःखविपाक । दुःख विपाक ने विषे पापीजीव मृगापुत्रादिकना नगर । उद्यान । चैत्य । बनखंड ।
राजा माता । पिता । समोसरण । धर्माचार्य । धर्मकथा । नगर गमन । भगवंत गौतम भिक्षार्थें नगरमांहि प्रवेश करे । संसारनो प्रबंध विस्तार । दुः

॥ टीका ॥

॥ १९२ ॥

मानीति एतदेवपूर्वोक्तं प्रपञ्चयन्नाह दुहविवागेसुणमित्यादि तत्र प्राणातिपातालीकवचनचौर्यकरणपरदारमैथुनैः सह ससंगयाएत्तिया ससङ्गता सपरिग्रह ता तया संचितानां कर्मणामितियोगः महातीव्रकषायेंद्रियप्रमाद पापप्रयोगा शुभाध्यवसायानां संचितानां कर्मणां पापकानां पापानुभागा अशुभरसा ये फलविपाका विपाकोदया स्ते तथा आख्यायन्त इतियोगः केषामित्याह निरयगतौ तिर्यग्योनौच ये बहुविधव्यसनशतपरम्पराभिः प्रबद्धाः ते तथा तेषां जो

॥ मूल ॥

संसारपवंधे दुहपरंपराउय आघविज्जंति सेत्तंदुहविवागाणि सेकिंतंसुहविवागाणि सुहविवागेसुणं सुहविवा गाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयाइं वणखंडा रायाणो अम्मापियरो समोसरणाइं धम्मायरिया धम्मकहाउ इह लोय परलोय इड्ढिविसेसा भोगपरिच्चाया पव्वज्जाउ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा पडिमाउ संले हणाउ भत्तपच्चक्खाणाइं पावोवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चाया पुणबोहिलाहो अंतकिरियाउ आ घविज्जंति दुहविवागेसुणं पाणाइवायअलियवयणचोरिक्ककरणपरदारमेहुणससंगयाए महतिव्वकसायइं

॥ भाषा ॥

खनो श्रेणी कहिये छे ते दुःख विपाक। अथ स्यूं ते सुखविपाक। सुख विपाकने विषे सुख विपाकिया सुबाहु कुमारादिकना। नगर। उद्यान। चैत्य। वनखंड। राजा। माता। पिता। समोसरण। धर्माचार्य। धर्मकथा। इहलोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष। भोगनो परित्याग। दीक्षा। श्रुतनो भणवो। तपोपधान करिवो। पर्याय। प्रतिमा। संलेखना। भात पाणीनो पच्चक्खाण। पादपोपगमन। देवलोके उपजिवो। तिहां थकी चवीने सुकुलेउपजिवो। वली जिन धर्मनो प्राप्ति। अंतःक्रिया। एह जिहां कहिये ते सुख विपाक। दुःख विपाकने विषे। हिंसानो करिवो। अलीक वच

॥ टीका ॥

बाना मितिगम्यते तथा मणुयत्तेत्ति · मनुजत्वे प्यागतानां यथा पापकर्म्मशेषेण पापका भवन्ति फलविपाका अशुभाविपाकोदया स्ते तथा ते आख्यायन्ते इतिप्रक्रतं तथाहि बधो यष्ट्यादिताडनं वृषणविनाशो वर्द्धितककरणं तथा नासयोश्च कर्णयोश्च ओष्ठस्यचाङ्गुलानां अङ्गुष्टानांच करयोश्च चरणयोश्च नखा नांच यच्छेदनं तत्तथा जिह्वाच्छेदनं अंजणत्ति अञ्जनं तप्तायः शलाकया नेत्रयोः म्रक्षणं वा देहस्य क्षारतैलादिना कडग्गिदाहणंति कडानां बिदलवंशादि मयाना मग्निः कटाग्नि स्तेन दाहनं कटाग्निदाहनं कटेन परिवेष्टितस्य बोधनमित्यर्थः तथा गजचलनमलनम्फालन म्विदारणं उल्लम्बनं वृक्षशाखादावुद्बंध

॥ मूल ॥

दियप्पमायपावप्पउेय असुहज्झवसाणसंचियाणं कम्माणं पावगाणं पावअणुभागफलविवागाणि णरगति रिक्खजोणियविविहविसणपरंपरावद्धाणं मणुयत्तेवि आगयाणंजहापावकम्मसेसेणपावगा होंतिफलविवा गाणरगतिरिक्खजोणियविविहवसणविणासकन्नुठंगुठ करचरणनहछेयण जिह्वछेअण अंजणकडग्गिदाह

॥ भाषा ॥

न मुखथी कूडो बोलवो। चोरीनो करिवो। परस्त्री मैथुन संगमनो करिवो। परिग्रहनो धारण करिवो। महातीव्रकषाय। इंद्रिय प्रमाद। तथा। पाप प्रयोग। पापव्यापार। एह थको उपनो अशुभ अध्यवसाय तेणे करी संच्या पापरूप कर्म तेहना पापरूप अनुभाग अशुभरस जेफलविपाक फलनो उदय। दुःख विपाक ने विषे कहिये। नरक तीर्यंच योनिने विषे अनेक प्रकार कष्टनो श्रेणी तेणे करी बंधाणा जेजीव तेहनो। तथा मनुष्यपणे पणि आव्या थका जिम पापकर्म शेषेंकरी पापीहोय। फलनाविपाक अशुभ विपाकनो उदय। तथा नरकतीर्यंचयोनिने विषे अनेक प्रकारना कष्ट विनाश कान ओठ अंगूठा हात पग नख एहना छेदन। तथा जिह्वा जीभ छेदन। तथा अंजन लोहनी शलाका नेत्रने विषे घालवी। तथा कट बांसनो बेफाड तेह

॥ १९२ ॥

॥ टीका ॥

मं तथा मूलेन लतया लकुटेन यष्ट्याच भञ्जनं गात्राणां तथा त्रपुणा धातुविशेषेण सीसकेणच तेनैव तप्तेन तैलेनच कलकलत्ति सशब्देना भिषेचनं तथा कुंभ्यां भाजनविशेषे पाकः कुम्भीपाकः कम्पनं शीतलजलाच्छोटनादिना शीतकाले गात्रोत्कंपजननं तथा स्थिरबन्धनं निविडनियंत्रणं वेधः कुन्तादिना शस्त्रेण भेदनं अर्द्धकर्त्तनं त्वगुत्पाटनं प्रतिभयकर भयजननं तत्करप्रदीपनञ्च वसनावेष्टितस्य तैलाभिषिक्तस्य करयो रग्निप्रबोधनमिति कर्म्मधारयः ततश्च बधबन्धणविना शश्चेत्यादि यावत्प्रतिभयकरप्रदीपनं चेति द्वन्द्वः ततस्तानि आदि र्येषां दुःखानां तानिच तानि दारुणानि चेति कर्म्मधारयः कानीमानीत्याह दुःखानि किंभूता न्यनुपमानि दुःखविपाकेष्वाख्यायन्त इतिप्रक्रमः तथेद माख्यायते बहुविविधपरम्पराभिः दुःखानामितिगम्यते अनुबद्धाः सन्ततमालिङ्गिता बहुविधपरम्परानुबद्धा जीवाइतिगम्यते नमुच्यन्ते तत्याज्यन्ते कयापापकर्मवल्ल्या दुःखफलसम्पादिकया किमित्याह यतो ऽवेदयित्वा अननुभूयकर्मफलमितिगम्यते

॥ मूल ॥

गयचलणमलणफालणउल्लंवणसूललयालउइलठिभंजण तउसीसगतत्ततेल्लकलकलअहिसिंचण कुंभिपागकंपण थिरबंधणवेहवज्झकत्तण पतिभयकरपल्लीवणाइं दारुणाणि दुक्काणि अणोवमाणि बहुविविहपरंपराणुव

॥ भाषा ॥

नी अग्नीयें करी बालिवो। तथा हाथीना पगने हेठें मर्दिवो। कोहाडें करी बेफाड करिवो। वृक्षशाखाने विषें ऊंचो बांधिवो। शूलें करी लतायें करी लाकडी लठी लाठीये करी गात्रनो भांजिवो। तथा तातो सीसो कडकडायमान तेल तेणे करी स्नान करिवो। कुंभी भाजनमांहि पचाविवो। शीतल जलें करी शरीर छांटे तेहथको ऊपनो कंप। निगड बंधन। भालादिकें करी वींधवो। चामडानो त्रोडिवो। भयोत्पादक तेलें करी भीनोवस्त्र शरीरमां लपेटी ने अग्निनो लगाडिवो। इत्यादिक दारुण अनोपम एहवा दुःख विपाकने विषें कहिये। अनेक प्रकार दुःखनी श्रेणीयें करी निरंतर आलिंग्या

॥ टीका ॥

छुर्यस्मादर्थे नास्ति भवति मोक्षो वियोगः कर्म्मणः सकाशात् जीवाना मितिगम्यते किं सर्वथाने त्याह तपसा अनशनादिना किंभूतेन धृतिश्चित्तसमाधानं तद्रूपा धणियत्ति अत्यर्थं वद्दा निःपोडिता कच्छाबन्धविशेषो यत्र तत्तया तेन धृतिबलयुक्तेनेत्यर्थः॰ शोधनमुपनयनं तस्य कर्म्मविशेषस्य वाविति सम्भावना यां होज्जा सम्पद्येत नान्यो मोक्षोपायो स्तोति भावः एत्तोयेत्यादि इत ऋानन्तरं सुखविपाकेषु द्वितीयश्रुतस्कन्धाध्ययनेष्वित्यर्थः यदाख्यायते तदभिधीयत इतिशेषः शोलं ब्रह्मचर्यं समाधिर्वा संयमः प्राणातिपातविरति नियमा अभिग्रहविशेषाः गुणाः शेषमूलगुणाः उत्तरगुणाश्च तपो ऽनशनादि एतेषा मुपधानं विधानं येषान्ते तथा अत स्तेषु शौलसंयमनियमगुणतपउपधानेषु केष्वित्याह साधुषु यतिषु किंभूतेषु सुष्टुविहित मनुष्ठितं येषांते सुविहिता स्तेषु भक्तादि दत्वा यथा बोधिलाभादि निवर्त्तयंति तथेहाख्यायत इतिसम्बन्धः इहच सम्प्रदाने सप्तमी नदुष्टा विषयस्य विवक्षणात् अनुकम्पा अनुक्रोश स्तत्प्रधान आश्य चित्तं तस्य प्रयोगो व्यावृत्ति रनुकंपाशयाप्रयोग स्तेन तथा तिकालमतित्ति त्रिषु कालेषु या मति बुद्धि यदुत दास्यामीति परितोषोदीयमानेपरितोषो

॥ मूल ॥

ऊणमुंचंति पावकम्मवल्लीयवेयइत्ता ऊणत्यिमोक्खो तवेणधिइधणियबद्धकच्छेण सोहणंतस्सवाविज्जा
एत्तोयसुहविवागेसुणं सीलसंजमणियमसुयतवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपासयप्पउग तिकालमइ

॥ भाषा ॥

थका नमूकाये न छूट्या। पापकर्म वल्ली दुख फलदायक वेलडीथी तेपापी जीवनछूटे। विना भोगे निश्चयथी मोक्ष नहोय। सर्वथापि छूटिवो नथी। एम नही तो केम। तपंकरी तथा धृति चित्तनी समाधान तेणे करी अत्यंत बद्धकच्छ थईने शोधवो वेगलो थाईवो ते कर्मनो होय। इहां थकी बीजाश्रुत स्कंध सुखविपाक ने विषे जे कहिये तेलिखेछे। शील संयम नियम श्रुत तपोपधान छे जेहने। एहवा सुविहित साधूने विषे दयाभावे करी सहित जे चित्त

॥ टीका ॥

दत्तेच परितोष इति सा त्रिकालमति स्तयाच यानि विशुद्धानि तानि यथा तानिचतानि भक्तपानानि चेति अनुकंपाशयप्रयोगत्रिकालमतिविशुद्धभक्तपा
नानि प्रदाये तियोग: केनप्रदायेत्याह प्रयतमनसा आदरपूर्वचेतसा हितो ऽनर्थपरिहाररूपत्वात् सुखहेतुत्वात् सुख: शुभोवा नोसेसत्ति नि:श्रेयस: कल्याण
करत्वात् तीव्र: प्रकृष्ट: परिणामो ऽध्यवसान यस्यां सा तया सा निश्चिता असंशया मति बुद्धि र्येषांते हतसुखनि:श्रेयसतीव्रपरिणामनिश्चितमतय: किं पय
च्छिऊणंति प्रदाय किंभूतानि भक्तपानानि प्रयोगेशुद्धानि दायकदानव्यापारापेक्षया सकलाशंसादि दोषरहितानि ग्राहकगृहणव्यापारापेक्षया चोद्गमा
दिदोषवर्जितानि तत: किं यथाच येनच प्रकारेण पारंपर्येण मोक्षसाधकत्वलक्षणेन निवर्त्तयन्ति भव्या: जोवा इति गम्यते तृप्रब्धो भाषामात्रार्थ: बोधिलाभं

॥ मूल ॥

विसुद्धभत्तपाणाइं पयरमणसा हियसुहनोसेसतिव्वपरिणामनिच्छियमइपयच्छिऊणं पयोगसुद्धाइं जहनिव्वत्ते
तिभ्भो वोहिलाभंजहयपरित्तीकरंति नरनरयतिरियसुरगमणविपुलपरियट्ट भ्भरतिभयविसायसोगमिच्छत्त

॥ भाषा ॥

तेहनो व्यापार तेणेंकरी त्रिहुंकालने विषे विशुद्ध भात पाणी देवानी बुद्धि करे। देइने आदर पूर्वकचित्ते करी तेहना अनर्थ टाले तेमाटे। तथा सु
खनो हेतु निश्रेयस कल्याणवंत एहवो तीव्र प्रकृष्ट परिणाम अध्यवसाय छे जेहनो एहवा निश्चय मति संशय रहित बुद्धि छे जेहनी तेह देइने तेह
भातपाणी केहवा छे प्रयोग शुद्ध छे प्रयोगने विषे दायक दान व्यापारनी अपेक्षाये शुद्ध छे संशयादिक दूषण रहितछे। जिम जेणें प्रकारे परंपरा ये
मोक्ष साधक लक्षणें निवर्तावे निपजावे बोधिलाभ भव्यजीव जिम परित्ताकरे संसार सागर थोडोकरे। तेसंसार सागर केहवोछे। मनुष्य नरकतिर्यंच
देवता एह चिहुंनो गतिने विषे जोवनो एहवो गमागमे भमिवो विपुल विस्तीर्ण परिवर्तमत्स्यादिकनो अनेक प्रकारे संचरण जिहां। अरति भय वि

यथाच वर्त्तितुर्वन्ति प्रवालाम्बर्षि संसारसागर मितियोगः किंभूतं नरनिरयतिर्यक्सुरगतिषु यज्जीवानां गमन मरिभ्रमणं सएव विपुलो विस्तीर्णः प रिवर्त्तो महावर्त्तानां परिवर्त्तन मनेकधा संचरणं यत्र स तथा तथा अरतिभयविषादशोकमिथ्यात्वान्येव शैलाः पर्वताः तैः संकटः संकीर्णो यः स तथा ततः कर्मधारयो ऽत्र रत्तं रहन्य विषादो दैन्यभावं शोक स्वाक्रन्दनादिचिह्न इति तथा अज्ञानमेवतमोंधकारं महान्धकारं यत्र स तथा अत एव चिक्खिल सुदुत्तारंति चिक्खिलं कर्दमः संसारपक्षेतु विषयधनस्वजनादिप्रतिबन्ध स्तेन सुदुस्तरो दुःखोत्तार्योयः स तथातं तथा जरामरणयोनय एव संक्षुभितं महा मत्स्यमकराद्यनेकजलजंतुजातिसंमर्द्देन प्रविलोडितं चक्रवालं जलपारिमांडिल्यं यत्र स तथा तं तथा षोडश कषाया एव श्वापदानि मकरग्राहादीनि प्रका ण्डं चण्डानि अत्यर्थरौद्राणि यत्र स तथा तं अनादिक मनवदग्र मनन्तं संसारसागरमिमं प्रत्यक्षमित्यर्थः तथा यथाच सागरोपमाहिना प्रकारेण निब

सेलसंकडं अन्नाणतमंधकारचिक्खिल्लसुदुत्तारं जरमरणजोणिसंखुभियचक्कवालं सोलसकसायसावयपयंडचंडं अणाइअं अणवदग्गं संसारसागरमिणं जहयणिबंधंति आउगंसुरगणेसु जहयअणुभवंति सुरगणविमाण

शाद शोक मिथ्यात्वतद्रूप शैलपर्वतें करी संकीर्ण सांकडोछे। वली केहवोछे। अज्ञान तेहीज तम अंधकार छे जिहां। विषय धन स्वजनादिक प्रति बंध तद्रूप चिक्खिलकर्दमतेणेंकरी सुदुत्तार अत्यंत उत्तारछे दोहिलोजेहनो । जरामरण योनि तेहिज संक्षुभित महामत्स्य ने आदेँ आदेँ करी वि लोड्यो चक्रवाल जलनो सांकलो जिहां। तथा सोले कषाय अनंतानुबंध्यादिक भेदें क्रोध मान माया लोभ तद्रूप श्वापद मकरादिक प्रचंड अत्यंत रौद्र जेहने। वली [illegible] तेह अनंत छे। अनन्तो एहवो संसार सागर इम अनंतो एहवो संसार समुद्र तरें जेह जिम सागरो

बंधायु: सुरगणेषु साधुदानप्रत्ययमितिभाव: यथा चानुभवन्ति सुरगणविमानसौख्यानि अनुपमानि ततश्च कालान्तरेण च्युताना मिहैवर्त्ति तिर्यग्लोके नर
लोक मागताना मायुर्वपुर्वर्णरूपजातिकुलजन्मारोग्यबुद्धिमेधा विशेषा आख्यायन्त इतियोग: तत्रायुषो विशेष इतरजीवायुष: सकाशात् शुभत्वं दीर्घत्वं च
एवं वपु: शरीर न्तस्य स्थिरसंहननता वर्णस्योदारगौरत्वं रूपस्यातिसुन्दरता जाते रुत्तमत्वं कुलस्याप्येवं जन्मनो विशिष्टक्षेत्रकालनिराबाधत्वं आरोग्यस्य प्रक
र्ष: बुद्धि रौत्पत्तिक्यादिका तस्या: प्रकृष्टता मेधा पूर्वश्रुतग्रहणशक्ति स्तस्या विशेष: प्रकृष्टतैवेति तथा मित्रजन: सुहृल्लोक: स्वजन: पितृपितृव्यादि: धनधा
न्यरूपो यो विभवो लक्ष्मी: स धनधान्यविभव स्तया समृद्धि: पुरान्त: पुरकोशकोष्टागारबलवाहनरूपा या: सम्पदो यानि साराणि प्रधानानि वस्तूनि तेषां

सोक्खाणि अणोवमाणि ततोयकालंतरचुआणं इहेवनरलोगमागयाणं आउवपुवस्सरूवजातिकुलजम्मआरो
ग्गबुद्धिमेहाविसेसामित्तजणसयणधणधन्नविभवसमिद्धिसारसमुदयविसेसा बहुविहकामभोगुब्भवाणसोक्खा

पमादिक जेणे प्रकारे बांधे आउखो सुरगण ने विषे जिम अनुभवे भोगवे देवताना समूह विमानना सुखप्रतें ते सुख केहवाछे अनोपम कह्या न
आव ते देवलोक थको कालांतरे चव्या चवीने इहां मनुष्यलोक मांहि आव्या तेहनो पूरो आउखो उत्तम वपुशरीर वर्णभलो रूप ते पंचेंद्रिय पूरा जा
तिकुलजन्म जिहां जाति ते भलो मातृपक्ष कुल ते भलो पितृपक्ष तिहां जन्म आरोग्यते निरोगपणो बुद्धिते औत्पातिक्यादय मेधा विशेष ते पंडिताई
मित्रजन सुहृल्लोक स्वजनपितृ पितृव्यादिक धनते लक्ष्मी सुवर्णादि धान्यते २४ अन्नादिलक्षण कह्या विभव संपदा घणो समृद्धि ते पुरान्त:पुर कोठार बल
वाहनरूप समृद्धि संपदा सार प्रधान वस्तु तेहनो समुदाय समूह एहना विशेष प्रकृष्टपणो तथा घणे प्रकारे कह्या । कामभोग तेहथो ऊपना सुख

य: समुदय: समूह: स तथा इत्येतेषां द्वंद्व स्तत: एषां ये विशेषा प्रकर्षा स्ते तथा तथा बहुविधकामभोगोद्भवानां सौख्याना म्विशेषा इतीहापि सम्बन्धनी यं शुभविपाक उत्तमो येषा न्ते शुभविपाकोत्तमा स्तेषु जीवेष्विति गम्यं इह चेयं षष्ठ्यर्थे सप्तमी तेन शुभविपाकाध्ययनवाच्यानां साधूना मायुष्कादिविशेषा: शुभविपाकाध्ययनेष्वाख्यायन्ते इतिप्रकृतं अथ प्रत्येकं श्रुतस्कन्धयो रभिधेयं पुण्यपापविपाकरूपं प्रतिपाद्यतयोरेव योगपद्येन ते आह अणुवरयेत्यादि अनुपर त अविच्छिन्ना ये परम्परानुबद्धा के विपाका इतियोग: केषा मशुभानां शुभानांचैव कर्मणा प्रथमद्वितीयश्रुतस्कन्धयो: क्रमेणैवच भाषिता: उक्ता बहुविधा विपाका: विपाकश्रुते एकादशाङ्गे भगवता जिनवरेण सम्वेगकारणार्था: सम्वेगहेतवो भावा: अन्येपिचैवमादिका आख्यायन्त इति पूर्वोक्तक्रियया वचनपरिणा मा दोत्तरक्रियया योग: एवञ्च बहुविधा विस्तरेणार्थ प्ररूपणता आख्यायत इति शेषं कण्ठ्यं नवरं संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाग्रेणेति तत्र किल ए ॥ टीका ॥

णसुहविवागोत्तमेसु अणुवरयपरंपराणुबद्धा असुभाणचेवकम्माणभासिआवहुविवागा विवागसुयम्मि भगवयाजिणवरेण संवेगकारणत्था अन्नेवियएवमाइयावहुविहाविच्छरेणं अच्छपरूवणया आघविज्जंति ॥ मूल ॥

ना विशेष ते सुखविपाक उत्तमने विषे कहिये। निरंतर परंपराये वणाभवलगे बांध्या। अशुभ तथा शुभ कर्मना पहिले तथा बीजे भाषाश्रुतस्कंधे क्रमे कह्या घणे प्रकारे विपाक ते कर्मफलोदय तेह विपाकश्रुत इग्यारमे अङ्गे भगवंत जिनवरे संवेगकारणनाअर्थे संवेगनाहेतुनाभाव अनेरापणि एवंमा दिक घणें अने घणे प्रकारे विस्तारे अर्थनी प्ररूपणा आख्यायते कहिये। विपाक श्रुतना परित्ता गणतीयें वाचना सूत्रार्थनी देवो संख्याता अनुयोग ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पदकोटी चतुरशीतिश्च लक्षाणि द्वात्रिंशच्च सहस्राणीति ॥ ११ ॥ सेकिंतंदिट्ठिवाएत्ति दृष्टयो दर्शनानि वदनम्वादो दृष्टीनां वादोदृष्टिवा
दः दृष्टीनां वा पातो यत्रासौ दृष्टिपातः सर्वनयदृष्टय एवेहाख्यायन्त इत्यर्थः तथाचाह दिट्ठिवाएणमित्यादि दृष्टिवादेन दृष्टिपातेन वा सर्वभावप्ररूपणा
ख्यायते सेसमासओपंचविहेत्यादि सर्वमिदं प्रायो व्यवच्छिन्नं तथापि यथादृष्टं किमपिलिख्यते तत्र सूत्रादिगृहणयोग्यता सम्पादनसमर्थानि परिकर्माणि

॥ सूत्र ॥

विवागसुअस्सणं परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा जावसंखेज्जाओ संगहणीओ सेणं अंगठयाए एक्कारसमे
अंगे वीसंअज्झयणा वीसंउद्देसणकाला वीसंसमुद्देसणकाला संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० संखे
ज्जाणिअक्खराणि अणंतागमा अणंतापज्जवा जावएवंचरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंविवागसुए
॥ ११ ॥ सेकिंतंदिठिवाए दिठिवाएणं सव्वभावपरूवणया आघविज्जंतिसेसमासओ पंचविहे प० तं०

॥ भाषा ॥

द्वार जाव संख्यात संग्रहणी तेह अंगार्थपणे इग्यारमे अंगे वीस अध्ययन वली २० उद्देशनकाला २० समुद्देसनकाला संख्याता पदना लाख एतले १ कोटि
८४ लाख ३२ हजार पदने परिमाणें कह्या । संख्याता अक्षर । अनन्तागमा । अनन्तापर्याय । जाव चरण ते साधुनां महाव्रत करण ते पिंड विशुद्ध्या
दिकनो प्ररूपणा आख्यायते कहिये । तेह विपाकश्रुत इग्यारमो अंग ॥ ११ ॥ अथ स्यूंते दृष्टिवाद दृष्टिते दर्शन तेहनो वदवो कहिवोछे जि
हांते दृष्टिवाद सर्वभाव सकल नयादिक भाव तेहनो प्ररूपणा पूर्वने विषें कहिये तेह पूर्व संक्षेप थकी पांच प्रकारे कह्या ते कहे छे । परिकर्म १ सूत्र २

मथितपरिकर्मवत् तच परिकर्मयुतं सिद्धश्रेणिकादिपरिकर्ममूलभेदतः सप्तविधं उत्तरभेदत स्तु त्र्यंशीतिविध मातृकापदादि एतच सर्वं समूलोत्तरभे दं सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नं एतेषाञ्च परिकर्मणां षट् आदिमानि परिकर्माणि स्वसामयिकान्येव गोशालकप्रवर्त्तिताजीविकपाखण्डिकसिद्धान्तमतेन पुनः

परिकम्मं सुत्ताइं पुव्वगयं अणुजोगो चूलिया सेकिंतंपरिकम्मे परिकम्मेसत्तविहे प० तं० सिद्धसेणियापरिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे पुट्ठसेणियापरिकम्मे ओगाहणसेणियापरिकम्मे उवसंपज्जसेणियापरिकम्मे विप्पजह सेणियापरिकम्मे चुआचुअसेणियापरिकम्मे सेकिंतंसिद्धसेणियापरिकम्मे सिद्धसेणिआपरिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउयापयाणि एगट्ठियपयाणि पादोट्ठपयाणि आगासपयाणि केउभूयं रासिबद्धं एगगुणं दुगुणं तिगुणं केउभूए पडिग्गहे संसारपडिग्गहे नंदावत्तं सिद्धावद्धंसेत्तंसिद्धसेणिआपरिकम्मे सेकिंतंमणुस्ससेणिया

पूर्वगत ३ अनुयोग ४ चूलिका ५ अथ स्यूंते परिकर्म। परिकर्म पूर्व साते भेदें कह्या। तेकहेछे। परिकर्म शब्दे गणतो गणना विशेष सिद्ध श्रेणीनो परि कर्म गणना १ मनुष्य श्रेणीनी गणना २ पृष्ट श्रेणीगणना ३ ओगाहणाश्रेणीगणना ४ उपसंपादन श्रेणी गणना ५ विप्पजहश्रेणी गणना ६ च्युता च्युत श्रेणी गणना ७ एहना अर्थ गुरुभाग थकी जाणिवा। सिद्ध श्रेणी परिकर्मना वली १४ भेद कह्या। ते कहेछे। त्यांसो भेदे मातृका पद १ एक स्थितिपद २ पाद अर्थपद ३ आगास पद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ सिद्धावद्ध १४ एह सिद्ध श्रेणिका परिकर्म। अथ स्यूंते मनुष्य श्रेणी परिकर्म। मनुष्य श्रेणी परिकर्म १४ भेदे कह्या। ते कहेछे। मातृकापद १ एक स्थितिपद २ पाद अ

॥ टीका ॥

च्युताच्युतश्रेणिकापरिकर्मसहितानि सप्त प्रज्ञाप्यन्ते इदानीं परिकर्मसु नयचिन्ता तत्र नैगमोद्विविधः सांग्राहिकोऽसांग्राहिकश्च तत्र सांग्राहिकः संग्रहप्र विष्टो ऽसांग्राहिकश्च व्यवहारं तस्मात्तु संग्रहो व्यवहारऋजुसूत्रशब्दादय श्चैकएवेत्येवं चत्वारो नया एतै श्चतुर्भिर्नयैः षट्स्वसामयिकानि परिकर्माणि चिंत्यन्ते अतो भणित छचउक्कनयाइति भवन्ति तएवचाजीविकास्त्रैराशिका भणिताः कस्मादुच्यते यस्मात्ते सर्वं त्र्यात्मकं इच्छन्ति तथा जीवो ऽजी वो जीवाजीवः लोको ऽलोको लोकालोकः सत् असत् सदसत् इत्येवमादि नयचिन्तायामपि ते त्रिविधं नयमिच्छंति तद्यथा द्रव्यार्थिकः पर्यायार्थिकः उभयार्थिकः अतोभणितं सत्ततेरासियत्ति सप्तपरिकर्माणि त्रैराशिकपाखण्डिका स्त्रिविधया नयचिन्तया नयांश्चिन्तयन्तीत्यर्थः सेत्तंपरिकम्मोत्ति निगमनं

॥ मूल ॥

परिकम्मे मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोद्दसविहे पन्नत्ते तंजहा ताइंचेव माउआपयाणि जावनंदावत्तं मणु स्सवद्धं सेत्तंमणुस्ससेणियापरिकम्मे अवसेसपरिकम्माइं पुठाइयाइं एक्कारसविहाइं पन्नत्ता इच्चेयाइं सत्त परिकम्माइं ससमइयाइं सत्तआजीवियाइं छचउक्कणइयाइं सत्ततेरासियाइं एवामेव सपुव्वावरेणं सत्तप

॥ भाषा ॥

र्थ पद ३ आगाशपद ४ केतुभूत ५ राशिबद्ध ६ एकगुण ७ द्विगुण ८ त्रिगुण ९ केतुभूत १० प्रतिग्रह ११ संसार प्रतिग्रह १२ नंदावर्त्त १३ मणुस्सबद्ध १ तेह मनुष्यश्रेणी परिकर्म। शेषथाकता परिकर्म पांच पुष्टादिक इग्यारह भेदे कह्या। इत्यादिक सात परिकर्म मांहि पहिला छ परिकर्म स्वसमयप्रतिबद्ध जिनमतानुयायी सात परिकर्म च्युताच्युतश्रेणी परिकर्म लगे आजीविक गोशालमतानुयायी जाणिवा। धुरना छ परिकर्म चारनयें करी सहितछे संग्रह १ व्यवहार २ ऋजुसूत्र ३ शब्द ४ एहचारनय प्रतिबंधछे सात परिकर्म त्रिराशिक मतानुयायी जीव १ अजीव २ जीवाजीव एहत्रिराशिकना मतने विषे

सेकिंतंसुत्ताइमित्यादि तत्र सर्वद्रव्यपर्यायनयाद्यर्थसूचनात्सूत्राणि अष्टाशीत्यपिच सूत्रार्थतो व्यवच्छिन्नानि तथापि दृष्टानुसारतः किञ्चिल्लिख्यते एतानि किल ऋजुकादीनि द्वाविंशतिः सूत्राणि तान्येव त्रिभागतो ऽष्टाशीति भवन्ति कथ मुच्यते इच्चेइयाइं बावीसंसुत्ताइं छिन्नछेयनईयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए त्ति इह योनयः सूत्रं छिन्नं छेदेनेच्छति सच्छिन्न च्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्कठ्ठमित्यादि श्लोकः सूत्रार्थतः प्रत्येकच्छेदनस्थितो न द्वितीयादिश्लोक मपेक्षते प्रत्येककल्पितपर्यन्त इत्यर्थः एतान्येव द्वाविंशतिः स्वसमयसूत्रपरिपाट्या सूत्राणि स्थितानि तथा इत्येतानि द्वाविंशति सूत्राणि अच्छिन्नच्छेदनयिका न्या

रिकम्माइं भवंतीतिमक्खायाइं। सेत्तंपरिकम्माइं। सेकिंतं सुत्ताइं सुत्ताइं अट्ठासीति भवंतीति मक्खायाइं तंजहा। उज्जुगं परिणयापरिणयं बहुभंगियं विप्पच्चइयं अणंतरं परंपरसमाणं संजूहं भिन्नं अहच्चायं सो वत्थियं घंटं णंदावत्तं बहुलं पुट्ठापुट्ठं वियावत्तं एवंभूयं दुआवत्तं वत्तमाणुप्पयं समभिरूढं सव्वओभद्दं पणु मं दुपडिग्गहं इच्चेयाइं बावीसंसुत्ताइं छिन्नछेअणइआइं ससमयसुत्त परिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं

सात परिकर्म एणीपरे आगलो पाछलो मिलो सात परिकर्म होय भगवंते कह्या। ते पहिलो भेद पूर्वना परिकर्म नाम कह्या अथसूत्र सूत्र। पूर्वनो बीजोभेद सूत्र तेहमा ८८ भेद होय। भगवंते कह्या तेकहेछे। ऋजुअंग १ परिणता परिणत २ बहुभंगिय ३ विप्रत्ययिक ४ अनन्तर ५ परंपरसमान ६ संयूथ ७ भिन्न ८ यथात्याग ९ सौवस्तिक १० घंट ११ नंदावर्त्त १२ बहुल १३ पृष्टापृष्ट १४ वियावर्त्त १५ एवंभूत १६ द्विकावर्त्त १७ वर्त्तमानोत्पतक १८ समभिरू ढ १९ सर्वतोभद्र २० प्रशामंत २१ द्विप्रतिग्रह २२ इत्यादिक बावीससूत्र छेद्या छेदें करी नय जिहां तेछिन्न छेदनयिक जिम धर्म्मोमंगल इत्यादिक श्लोक

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

जीविकसूत्रपरिपाटीति प्रथमर्थः इह यो नयः सूत्रमच्छिन्नच्छेदेनेच्छति सोऽच्छिन्नच्छेदनयो यथा धम्मोमंगलमुक्किट्ठमित्यादि श्लोकएवार्थतो द्वितीयादिश्लोकं न पेक्षमाणो द्वितीयादयश्च प्रथममिति अन्योन्यसापेक्षा इत्यर्थः एतानि द्वाविंशति राजीविकगोशालकप्रवर्त्तितप्राखण्डसूत्रपरिपाट्या अक्षररचनाविभागस्थिता न्यप्यर्थतो ऽन्योन्यमपेक्षमाणानि भवन्ति इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं तत्र तिकनइयाइं ति नयत्रिकाभिप्रायतश्चिन्त्यन्तइत्यर्थं स्त्रैराशिकाश्चाजीविका एवोच्यन्ते इति यथा इच्चेइयाइं इत्यादि सूत्रं ततः चउक्कनइयाइं ति नयचतुष्काभिप्रायतश्चिन्त्यंत इति भावनाएवमेवेत्यादि सूत्रं एवञ्चतस्रो द्वाविंशतयोऽष्टाशीतिसूत्रा

आजीवियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्तपरिवाडीए इच्चेआइं बावीसंसुत्ताइं चउक्कणयससमयसुत्तपरिवाडीए एवामेवसपुव्वावरेणं अठासीयं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं ।

सूत्रार्थ थको प्रत्येक छेदथको छेद्यो बीजा श्लोकनी अपेक्षा नकरे ससमय जिनमतना सूत्रनी परिपाटीये अनुक्रमे पामीये एह ऋजु अंगादिक २२ सूत्र नथी छेद्या छेदेकरी नय जिहां ते अछिन्न छेदनयिक जिम धम्मोमंगल मुक्किट्ठ इत्यादि श्लोक बीजा श्लोकनी अपेक्षा करे । एह बावीस सूत्र आजीविक गोशालमतनो परिपाटीयें पामीये । इच्चेइयाइं एह २२ सूत्र त्रिण नय समेत जीव अजीव नोजीव एह त्रिणनय जिहां ते त्रिकनयिक त्रिराशिक पाखंडीना सूत्रनी परिपाटीयें पामीये । ऋजुअंग प्रमुख २२ सूत्र चतुष्क नयिक संग्रह १ व्यवहार २ ऋजु ३ शब्द ४ एह चार नय समेत तेह स्वसमय जिनमतनी सूत्र परिपाटीये पामिये । एम आगलो पाछलो मिलो २२ चोका अठ्यासी सूत्र होय ते भगवंते कह्या । एह पूर्वनो बीजो भेद सूत्र कह्यो

॥ टीका ॥

त्रि भवन्ति सेत्तंसुत्ताइंति निगमनवाक्यं सेकिंतंपुव्वगएइत्यादि अथ किन्तत्पूर्वगतमुच्यते यस्मा त्तीर्थकरः तीर्थप्रवर्त्तनाकाले गणधराणां सर्वसूत्राधारत्वेन पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थं भाषते तस्मात्पूर्वाणीति भणितानि गणधराः पुनःश्रुतरचनां विदधाना आचारादिक्रमेण रचयन्ति स्थापयन्तिच मतान्तरेणतु पूर्वगतसूत्रार्थः पूर्वमर्हता भाषितो गणधरैरपि पूर्वगतश्रुतमेव पूर्वंरचितं पश्चादाचारादि नत्वेवं यदाचारनिर्युक्त्या मभिहितं सव्वेसिंआयारोपढमो इत्यादि तत्कथ मुच्यते तत्स्थापनामाश्रित्य तथोक्त मिहत्वक्षररचनां प्रतीत्य भणितं पूर्वं पूर्वाणि कृतानीति तच्च पूर्वगतं चतुर्दशविधं प्रज्ञप्तं तद्यथा उप्पायेत्यादि तत्रोत्पादपूर्वं प्रथमं तत्र च सर्वद्रव्याणा म्पर्यवाणां चोत्पादभावमङ्गीकृत्य प्रज्ञापना कृता तस्यच पदपरिमाण मेकाकोटी आग्रणीयं द्वितीयं तत्रापि सर्वेषां द्रव्याणां पर्यवाणां जीवविशेषाणां चाग्रं परिमाणं वर्ण्यत इत्यग्रणीयं तस्य पदपरिमाणं षण्णवतिपदशतसहस्राणि वीरियंति वीर्यप्रवादं तृतीयं तत्राप्यजीवानांजीवानांच सकर्मेतराणां वीर्यं प्रोच्यत इति वीर्यप्रवादं तस्यापि सप्ततिः पदशतसहस्राणि परिमाणं अस्तिनास्तिप्रवादं चतुर्थं यत्लोके यथास्ति यथावा ना

॥ मूल ॥

सेत्तंसुत्ताइं । सेकिंतं पुव्वगयं । पुव्वगयं चउद्दसविहे पन्नत्ते । तंजहा उप्पाय पुव्वं अग्गणीयं वीरियं अ

॥ भाषा ॥

कह्यो । अथ सूते पूर्वनो चोथो भेद पूर्वगत । ते चौदह भेदें कह्यो तेकहेछे उत्पाद पूर्व १ तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तना काले गणधरने पूर्व पहिलो सूत्रार्थ भाष्यो तेमाटे पूर्व कह्यो । सर्व द्रव्य पर्यायनो उत्पादना भाव अंगीकार करीने जेकह्यो तेउत्पाद पूर्व इग्यारह कोडि पद परिमाण १ बीजो अग्रणीय तेमांहि सर्वद्रव्यपर्याय जीवनो अग्र परिमाण पामिये तेहनो पद परिमाण ९६ लाख पद २ । त्रीजो वीर्यप्रवाद तिहां जीवाजीवना वीर्य कह्या । पदसंख्या ७० लाख पद ३। चौथो अस्तिनास्तिप्रवाद जिहां स्याद्वादाभिप्राय अस्ति नास्ति कहिये ते अस्तिनास्तिप्रवाद पद संख्या ६० लाख पद ४ । पांचमो ज्ञानप्रवाद

॥ १९९ ॥

॥ टीका ॥

स्ति अथवा स्याद्वादाभिप्रायत: तदेवास्ति तदेवनास्तीत्येवं प्रवदतीति अस्तिनास्तिप्रवाद भणितं तदपि पदपरिमाणत: षष्टिपदशतसहस्राणि ज्ञानप्रवाद मपञ्चमं तन्मतिज्ञानादि पञ्चकस्य भेदप्ररूपणायस्मात् तत् ज्ञानप्रवादं तस्मिन्पदपरिमाण मेकाकोटीएकपदोनेति सत्यप्रवादं षष्ठं सत्यंसंयम: सत्यवचनम्वा तच्च सभेदं सप्रतिपक्षञ्च वर्ण्यते तत्सत्यप्रवादं तस्य पदपरिमाणं एकापदकोटीषट्चपदानीति आत्मप्रवादं सप्तमं आयत्ति आत्मा सोनेकधा यत्र नयदर्शनै र्वर्ण्यते तदात्मप्रवादं तस्य पदपरिमाणं षट्विंशतिपदकोट्य: कर्म्मप्रवादमष्टमं ज्ञानावरणादिक मष्टविधं कर्म्म प्रकृतिस्थित्यनुभागप्रदेशादिभि र्भेदै रन्यैश्चोत्तरोत्तरभेदै र्यत्रवर्ण्यते तत्कर्म्मप्रवादं तत्परिमाण मेकापदकोटीअशीतिश्चसहस्राणीति प्रत्याख्यानं नवमं तत्रसर्वप्रत्याख्यानस्वरूप म्वर्ण्यत इति प्रत्याख्यानप्रवादं तत्परिमाणं चतुरशीति: पदशतसहस्राणीति विद्यानुप्रवादं दशमं तत्रानेके विद्यातिशया वर्णिता स्तत्परिमाण मेकापदको टी दशचपदशतसहस्राणीति अवंध्य मेकादशं वंध्यंनाम निष्फलं नवंध्य मवंध्यं सफलमित्यर्थ: तत्रहि सर्वेज्ञानतप: संयमयोगा: शुभफलेन सफला व

॥ मूल ॥

त्थिणत्थिप्पवायं नाणप्पवायं सच्चप्पवायं आयप्पवायं कम्मप्पवायं पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणुप्पवायं अवंझं

॥ भाषा ॥

तिहांमत्यादि ५। ज्ञान सविस्तर पणे कह्या पद संख्या एकूण एक कोडीपद ५। छट्ठो सत्यप्रवाद तिहां सत्यसंयम तथा सत्य वचन सभेदें कह्यो ते सत्य प्रवाद पद संख्या एककोडी छ पद ६। इति षट् पूर्व। सातमों आत्म प्रवाद तिहां अनेक भेदें आत्मा वर्णव्यो ते आत्म प्रवाद पदसंख्या २६ कोडी पद ७ आठमो कर्मप्रवाद तिहां आठकर्म प्रकृतिनीप्ररूपणांकरी पद संख्या १ कोडी ८० हजार पद ८। नौमों प्रत्याख्यान प्रवाद तिहांप्रत्याख्यानस्वरूप वर्णव्यो पदसंख्या ८४ लाखपद ९। दशमो विद्यानुप्रवाद तिहां अनेक प्रकारनी अतिशायिनी विद्या वर्णवीछे पद संख्या १ कोडी १५ हजार पद १०। इग्यारह

॥ टीका ॥

वर्ण्यते अप्रशस्ताश्च प्रमादादिकाः सर्वे सशुभफला वर्ण्यन्ते अतोऽवन्ध्यं तस्यच परिमाणं षट्विंशतिपदकोटयः प्राणायु र्द्वादश न्तचाप्यायुः प्राणविधानं सर्वं स भेदं मन्येच प्राणावर्णिता तत्परिमाण मेकापदकोटीषट्पञ्चाशच्चपदशतसहस्राणीति क्रियाविशालं त्रयोदशं तत्र कायिक्यादयः क्रिया विशालत्ति सभेदाः संयमक्रियाश्चन्दक्रियाविधानानिच वर्ण्यन्त इति क्रियाविशालं तत्पदपरिमाणं नवपदकोट्यः लोकबिन्दुसार श्चतुर्दशमं तच्चास्मिन्लोके श्रुतलोकेवा बिन्दुरि वाक्षरस्य सर्वोत्तममिति सर्वाक्षरसन्निपातप्रतिष्टितत्वेनच लोकबिन्दुसार भणितं तत्प्रमाण मर्द्धत्रयोदशपदकोट्यइति उप्पायपुव्वस्सेत्यादिकंच्च नवरं वस्तुनिय तार्थाधिकारप्रतिबद्धो ग्रन्थविशेषो ध्ययनवदिति तथाचूडाइवचूडा इहदृष्टिवादे परिकर्म्मसूत्रपूर्वगतानुयोगोक्तानुक्तार्थ संग्रहपरा ग्रंथपद्धतय श्चूडाइति सेतं

॥ मूल ॥

पाणाउ किरियाविसालं लोगविंदुसारं १४ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थू चत्तारिचूलियावत्थू प० अग्गेणिय स्सणंपुव्वस्स चोद्दसवत्थू वारसचूलियावत्थू प०। वीरियपुव्वस्सणंपुव्वस्स अठवत्थू अठचूलियावत्थू प०।

॥ भाषा ॥

मो अवंध्य तिहां तप संयममा फल बंध्यनथी अफलनथी एहवो वर्णव्यो पद संख्या २६ कोडी पद ११। बारमो प्राणायु तिहां आउखानो भेद सर्व जीवनो कह्यो पद संख्या १ कोडी ५६ लाख पद १२। तेरमो क्रियाविशाल तिहां कायिक्यादिक क्रिया सत्तर भेदें वर्णवी पद संख्या ९ कोडी पद १३। चौदमो लोक बिंदुसार लोकने विषे बिंदुसरीखो बिंदु सघलामांही उत्तम तेहनी पद संख्या साढी बारह कोडीपद १४। एतले पूर्वनो बीजो भेद वर्णवी कह्यो। प्रथम उत्पाद पूर्वना दश वस्तु अध्ययन चार चूलिका वस्तु चूडा चोटली ते सरीखा तेहना वस्तु कह्या। अग्रणी बीजा पूर्वना चौदे वस्तु बारे चूलिका वस्तु कह्या। वीर्य प्रवाद पूर्वना आठ वस्तु आठ चूलिका वस्तु कह्या। अस्तिनास्ति प्रवाद चोथा पूर्वना अढारह वस्तु १० चूलिका वस्तु कह्या ४। ज्ञान प्रवाद

पुव्वगतेति निक्षयं वेदितव्यमिति चतुर्थोऽनुयोगो सुयोग: सूत्रस्य निजेनाभिधेयेन सार्थमनुरूप: सम्बन्धरूपार्थ: स च द्विविध: प्रज्ञप्त: तद्यथा मूल

अत्थिणत्थिप्पवायस्सणंपुव्वस्स अठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० । आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्वस्स तीसंवत्थू प० । पच्चक्खाणस्सणं पुव्वस्स वीसंवत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सणं पुव्वस्स वारसवत्थू प० पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरियाविसालस्सणं पुव्वस्सतीसंवत्थू प० । लोगविंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसंवत्थू प० । सेत्तंपुव्वगयं । सेकिंतंअणुओगे । अणुओगे दु

पांचमा पूर्वनां वारह वस्तू कह्या । ५ । सत्य प्रवाद छठा पूर्वना विहुं वस्तु कह्या ६ । आत्म प्रवाद सातमा पूर्वना १६ वस्तु कह्या ७ । कर्म प्रवाद आठमा पूर्वना ३० वस्तु कह्या ८ । प्रत्याख्यान नवमा पूर्वना २० वस्तु कह्या ९ । विद्यानुप्रवाद दशमा पूर्वना १५ वस्तु १० । अवंध्य इग्यारहमा पूर्वना १२ वस्तु कह्या ११ । प्राणायु बारमा पूर्वना १३ वस्तु कह्या १२ । क्रियाविशाल तेरमा पूर्वना ३० वस्तुकह्या १३ । लोक विंदुसार चौदमा पूर्वना २५ वस्तुकह्या १४ । दसचउदसअट्ठा रसेवबारसदुवेयवत्थूणि सोलसतीसावीसा पन्नरसअणुप्पवायंति ॥ १ ॥ बारसएक्कारसमे बारसमेतेरसेववत्थूणि तीसापुणतेरसमे चउद्दसमे पणवीसाओ ॥ २ ॥ चत्तारिदुवालस अट्ठचेवदसचेवचूलवत्थूणि आइल्लाणचउण्हं सेसाणंचूलिआनत्थि. ॥ ३ ॥ धुरना चिहूं पूर्वनी चूलिका कही जाणिवी । शेष वाकता दश पूर्वनी चूलिका नथी एह पूर्वगत चोथो भेद पूर्वनो कह्यो ॥ अथ स्युं ते अनुयोग चौथोभेद पूर्वनो । अनुरूप अनुकूल योग ते अनुयोग सूत्र

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

प्रथमानुयोग च गण्डिकानुयोगच सेकिंतमित्यादि इहधर्मप्रणयनात् मूलं तावत्तीर्थंकरा स्तेषां प्रथमसम्यक्त्वावाप्तिलक्षणपूर्वभवादिगोचरो नुयोगो मूलप्रथ मानुयोग स्तथाह सेकिंतं मूलपढमाणुयोगे इत्यादि सूत्रसिद्धं यावत् सेत्तंमूलपढमाणुयोगे सेकिंतमित्यादि इहैकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता वाक्यपद्धतयो ग

॥ मूल ॥

विहे पन्नत्ते । तंजहा । मूलपढमाणुत्रगे गंडियाणुत्रगे सेकिंतंमूलपढमाणुत्रगे एत्थणं अरहंताणंभगवंताणं पुव्वभवदेवलोगगमणाणि आउवयणाणि जम्मणाणिअभिसेयरायवरासिरीउ सीआउ पव्वज्जाउ तवोयउ ग्गाकेवलणाणुप्पयाओ तित्थपवत्ताणाणिअ संघयणसंठाणउच्चत्तआउवन्नविभागो सीसागणागणहराय अज्जा पवत्तणीउ संघस्सचउव्विहस्स जंवावि परिणामं जिणा मणपज्जवउहिनाणिसम्मत्तसुयनाणिणोय वाईअणुत्त

॥ भाषा ॥

नेविषे धर्मने विषे सरीखो संबंध तेकहेछे । मूल प्रथमानुयोग १ गंडिकानुयोग । अथ स्युंते मूल प्रथमानुयोग । मूल प्रथमानुयोगने विषे इहां धर्मनाप्ररूपक पणा थकी मूल ते तीर्थंकर देव ते अरिहंत भगवंतनो प्रथम पहिलो पूर्वभव तप संयम सूचक अनुयोग व्याख्या ते मूल प्रथमानुयोग कहिये ते अनुयोग बहु प्रकारे कह्यो अरिहंतना पूर्व भव देवलोक गमन जाइवो । आउखो च्यवन जन्म राज्याभिषेक राज्यवर श्री जिमभोगवे शिबिका दीक्षा दीक्षानोपाल वो तपना भत्त चोथभत्त छठभत्त इत्यादि । केवल ज्ञाननो उपजवो । तीर्थ चतुर्विध संघ तेहनो प्रवर्तावबो । संघयण वज्रऋषभादिक । संस्थान समचतुर स । शरीरनो उंचपणो । आउखो । वर्ण गौरादिक । तेहनो विभा कांति । शिष्य गण गछ । गणधर ते प्रथम शिष्य । आर्या साधवी प्रवर्तिनी मोटी सा ध्वी तेहना नायक । संघ चतुर्विध साधु साध्वी श्रावक श्राविका तेहनो तेहनो परिमाण आचार विचार । जिन केवलीनी संख्या । मनपर्यवज्ञानी अवधि

॥ टीका ॥

ण्डिका उच्यते तासामनुयोगोऽर्थकथनविधि र्गण्डिकानुयोगः तथाचाह गंडियाणुओगे अणेगेत्यादि तत्र कुलकरगण्डिकासु कुलकराणां विमलवाहनादीनां पूर्वजन्माद्यभिधीयते इति एवं शेषास्वपि अभिधानवशतो भावनीयं यावच्चित्रान्तरगण्डिका नवरं दशार्हाः समुद्रविजयादयो दश वसुदेवान्ताः तथा चित्रा

॥ मूल ॥

रगइय जत्तियासिद्धापावोवगनय जो जहिंजत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता अंतगडोमुणिवरुत्तमो तमरनघवि प्पमुक्कासिद्धिपहमणुत्तरंचपत्ता एए अन्नेय एवमाइया भावामूलपढमाणुओगकहिआ आघविज्जंति पन्नवि ज्जंति सेत्तंमूलपढमाणुओगे सेकिंतंगंडियाणुओगे गंडियाणुओगे अणेगविहे पन्नत्ते तंजहा कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ गणहरगंडियाओ चक्कहरगंडियाओ दसारगंडियाओ वलदेवगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ

॥ भाषा ॥

ज्ञानी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी । सम्यक जे यती तिहां जई ऊपना ते उपपात अनुत्तर विमान गतियें जाई ऊपना तेहनो गतिनो कहिवो। जेतला २ यती सिद्ध सकल कर्मक्षय करी मोक्ष गया । पादपोपगमन । अनशन करिवानो अधिकार जेहयती जिहां २ जेणे २ ठामे जेतलो २ भात छेदीने अंत कृत संसारनो अंत कीधो । मुनिवर उत्तमं । तम अज्ञान रूप रज पापरज थकी मूकांणा । सिद्धिपंथ मोक्षमार्ग अनुत्तर प्रधान तेह प्रते पाम्या। एह पूर्वें कह्या ते तथा अनेरा पणि । एवमादिक भाव पदार्थ प्रथमानुयोगने विषें कह्या । ते जिहां चौथा पूर्वना भेद मांहि आख्यायते कहियें प्रज्ञापियें आपवीये तेह मूलप्रथमानुयोग कहियें ॥ अथ स्युं ते गंडिकानुयोग । इहां एकवक्तव्यतार्थाधिकार तेहने अनुगतसरीखी वाक्यपद्धति ते गंडिका कहिये तेहनो अनुयोग अर्थकहिवानो विधि ते गंडिकानुयोग । ते गंडिकानुयोग अनेक प्रकारें कह्यो। तेकहेछे । कुलकर ते विमलवाहनादिक तेहनी गंडि

मनेकार्था अन्तरे ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे गण्डिका एकवक्तव्यतार्थाधिकारानुगता स्ततश्च चित्राश्च ता अन्तरगण्डिका श्च चित्रान्तरगण्डिकाः एतदुक्तम् भवति ऋषभाजिततीर्थकरान्तरे ऋषभवंशजभूपतीनां शेषगतिगमनव्युदासेन शिवगमनानुत्तरोपपातप्राप्ति रितिप्रतिपादिका चित्रांतरगण्डिका इति ताश्च चोद्यसख्याखिता निवर्द्धवेबोयहोइसव्वट्ठे एवेकेक्कठाणे पुरिसजुगाइं तिसंखेज्जेत्यादिना ग्रंथेन नन्दिटीकाया मभिहिता स्तत एवावधार्या इह सूत्रगमनिका

॥ मूल ॥

अमरनर तिरियनिरयगइगमणविविहपरियट्टणाणुजोगे एवमाइयाउगंडियाउ आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति सेत्तंगंडियाणुजोगे सेकिंतंचूलियाउ जंआइल्लाणं चउण्हंपुव्वाणंचूलियाउ सेसाइंपुव्वाइं अचूलियाइं दिट्ठिवा

॥ भाषा ॥

तीर्थकरना संबंध गणधर संबंध चक्रवर्त्तिका पूर्वजआदि संबंधी जिहां कही ते कुलकरगंडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रांतरगंडिकाआवे । तीर्थकरना संबंध गणधर संबंध चक्रव का पूर्वजआदि संबंधी जिहां कही ते कुलकरगंडिका । एमज सर्वत्र कहिवो । जिहांलगे चित्रांतरगंडिकाआवे । हरिवंश यदुवंशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण घणाजिम एह पाम्या। र्त्तिसंबंध।दस समुद्रविजयादिक दशदशार तेहना प्रबंध । वलदेव बलभद्रादिकनासंबंध। हरिवंश यदुवंशनी उत्पत्ति । भद्रकल्याण घणाजिम एह पाम्या। केहडेकेहवा तपकर्मकीधा । तेचित्रांतरगंडिका चित्रअनेकार्थ अंतरने आदिनाथ अने अजितनाथने आंतरे विचाले जिम आदीश्वरना पाट असंख्याता मो क्षपहुंता । तथा । सर्वार्थसिद्ध पहुंता। तेसर्व भावना कहणहार तेचित्रांतरगंडिका । उत्सर्पिणी ते चढतोसमय तेहनाभाव । अवसर्पिणी तेघटतोकाल तेह नाभाव । देवतानागणसमूह । तथा नरमनुष्यतिर्यंच नारकी एचिहूंनीगति जिहां विविध प्रकारे परिवर्तन संसारमांहि फिरवो तेहनो अनुयोग व्याख्यान एवमादिक गंडिका पर्याधिकार । तिहां चौथा पूर्वना भेदने विषे कहिये गंडिका चौथो भेद पूर्वनो ॥ अथ ते पूं चूलिकानुयोग । जे आदिना ध्रुरना चार

[illegible] पूर्वगत [illegible] संखेज्जापुव्वगुणि [illegible] वर्द्धमानम् । [illegible]

[illegible] परित्तावायणा संखेज्जाअणुओगदारा संखेज्जाओपडिवत्तीओ संखेज्जाओनिज्जुत्तीओ संखेज्जाओ [illegible] संखे
ज्जाओ [illegible] संखेज्जाओसंगहणीओ सेणंअंगठयाएग्यारसमेअंगे एगेसुयखंधे चउद्दसपुव्वाइं संखेज्जावत्थू संखे
ज्जाचूलवत्थू संखेज्जापाहुडा संखेज्जापाहुडपाहुडा संखेज्जाओपाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ
संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं पन्नत्ता संखेज्जाअक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा परित्तातसा
अणंताथावरा सासयाकडाणिबद्धाणिकाइया जिणपन्नत्ताभावा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति

पूर्व तेहनो चूलिका छे ते चूर्ठे कह्यो छे । शेष बाकता इम पूर्व चूलिका रहित छे ते चूलिका पूवनो पांचमो भेद दृष्टिवाद पूर्व तेहना परित्ता थकाती
[illegible] संख्याता अनुयोग द्वार उपक्रमादिक। संख्याती प्रज्ञप्ति । संख्याता वेढा। संख्याता श्लोक। संख्याती संग्रहणी। संख्याती निर्युक्ति [illegible] विषि
[illegible] । [illegible] पर्वें बारमें अंगे एक श्रुतस्कंधने विषि १४ पूर्व। संख्याती २२५ वस्तु। संख्याता [illegible] ३४। संख्याता प्राभृत [illegible]
[illegible] । संख्याता प्राभृतप्राभृत अधिकार विशेष । संख्याती प्राभृतिका । संख्याती प्राभृतप्राभृतिका । संख्याता पदनां [illegible]
[illegible] छे ते पूर्व । संख्याता अक्षर वर्ण । अनंतागम पर्यना परिच्छेद । अनंता पर्याय अंतर पदना भेद । परित्ता अनंतगमो [illegible]
[illegible] । [illegible] ए पूर्व आदि आत्र पदार्थ शाश्वता द्रव्यार्थ पणें विच्छेद रहित छे वली पर्याय पणें समे २ प्रति

॥ टीका ॥

साम्प्रतं द्वादशाङ्गविराधनानिष्पन्नं त्रैकालिकं फलमुपदर्शयन्नाह इच्चेयमित्यादि इत्येतद्द्वादशाङ्गं गणिपिटकमतीतकाले अनन्ताजीवा आज्ञया विराध्य चतुरन्तं संसारकान्तारं अणुपरियट्टिंसुत्ति अनुपरिवृत्तवन्तः इदं हि द्वादशाङ्गं सूत्रार्थोभयभेदेन त्रिविधं ततश्च आज्ञया सूत्राज्ञया अभिनिवेशतो न्यथापाठादिलक्षणया अ तीतकाले अनन्ता जीवाश्चतुरन्तं संसारकान्तारं नारकतिर्यङ्नरामरविविधवृक्षजालदुस्तर भवाटवीगहन मित्यर्थः अनुपरावृत्तवंतो जमालिवत् अर्थाज्ञया पुन रभिनिवेशतोऽन्यथाप्ररूपणादिलक्षणया गोष्टामाहिलवत् उभयाज्ञया पुनः पञ्चविधाचारपरिज्ञानकरणोद्यतगुर्वादेशादे रन्यथाकरणलक्षणया गुरुप्रत्यनी कइव द्रव्यलिङ्गधार्यनेकश्रमणवत् सूत्रार्थोभये विराध्येत्यर्थः अथवाद्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षयाऽऽगमोक्तानुष्ठान मेवाज्ञातया तदकरणेनेत्यर्थः इच्चेयमित्यादि गता

॥ मूल ॥

निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंणाए एवं विन्नाए एवं चरणकरणपरूवणया आघविज्जंति सेत्तंदिठिवाए॥ सेत्तंदुवालसंगेगणिपिडगे ॥ १२ ॥ इच्चेइयं दुवालसंगंगणिपिडगं अतीतकाले अणंताजीवाआणाए विरा

॥ भाषा ॥

अन्यथा पणे कहा कीधा छे निबद्धा सूत्र थकी गूंथ्या छे। हेतूदाहरणे करी प्रतिपाद्या छे जिनने प्रशाप्या जणाव्या भाव पदार्थ कहीजे। नाम भेद जणावे करी। निर्देशीये देखाडिये विशेष पणे युक्ति देखाडी सामान्य पणे एम पूर्व भणी ते ज्ञाता जाण्या। एम विशेष पणे जाण्या। चरण ते पांच·महाव्रत रूप करण ते पिण्डविशुद्ध्यादिकनी प्ररूपणा। जिहां कहिये ते दृष्टिवाद बारमो अंग जाणिवो ॥ १२ ॥ एह बारे अंग कहवाछे। गणी कह तां आचार्य तेहने पेटी रत्नकरंड समानछे। इत्यादि द्वादशांग एहने आचार्यने पेटी समान एहने अतीत गयेकाले अनन्ताजीव आज्ञाने विराधी खंडी ने चार अंत छेहडाछे नरकादिक लक्षण एहवो संसार कांतार गहन अटवी तेह प्रति अनुपरिवृतवंत भमता हुआ एह द्वादशांग गणि पिडगप्रते व

र्थमेव नवरं परित्ताजीवादति संख्येयाजीवा वर्त्तमानविशिष्टविराधकमनुष्यजीवानां संख्येयत्वात् अणुपरियट्टंतित्ति अनुपरावर्त्तन्ते भ्रमन्तीत्यर्थः इच्चेयमित्या
दि इदमपिभावितार्थ मेव नवर मणुपरियट्टिस्संतित्ति अनुपरावर्त्तिष्यन्ते पर्यटिष्यंतीत्यर्थः इच्चेयमित्यादि कंठ्यं नवरं विइवयंसुत्ति व्यतिव्रजितवन्तः चतुर्ग
तिकसंसारोल्लङ्घनेन मुक्तिमवाप्ता इत्यर्थः एवं प्रत्युत्पन्नेपि नवर मय म्विशेषः वीइवयंतित्ति व्यतिव्रजन्ति व्यतिक्रामन्तीत्यर्थः अनागते प्येवं नवरं वीवइस्संति
त्ति व्यतिव्रजिष्यन्ति व्यतिक्रमिष्यंतीत्यर्थः यदिद मनिष्टेतरभेदभिन्नं फल मतिपादित मेतत्सदावस्थायित्वे सति द्वादशाङ्गस्यो पजायत इत्याह दुवालसंगे इ

च्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीतेकाले अणंताजीवा आणाए विरा
हित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्नेकाले परित्ताजीवा आणाए
विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइयं दुवालसंगगणिपिडगं अणागएकाले अणंताजीवा
आणाए विराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं अणुपरियट्टिस्संति इच्चेइयं दुवालसंगगणिपिडगं अतीतेकाले
अणंताजीवा आणाए आराहित्ता चाउरंतसंसारकंतारं विइवइंसु एवंपडुप्पन्नेवि अणागएवि दुवालसंगं

र्तमानकाले परित्तासंख्याता जीव मनुष्य आज्ञामे विराधीने चातुरंत संसार कांतार प्रति अनुपरावर्ते भ्रमे छे। एह द्वादशांग गणिपिडगने। अनागत
भविष्यकाले अनंताजीव आज्ञानें विराधीने चातुरंत संसार कांतारप्रतें भ्रमस्ये। एहवा द्वादशांग गणिपिडगप्रतें अतीतकाले अनंताजीव आज्ञाने अराधी
ने चातुरंत संसार कांतारप्रते पार पांमताहुआ। एम वर्तमानकाले पार पामे छे। एम भविष्यकाले पार पामस्ये। एह द्वादशांग गणिपिटक। नही क
दाचित् किवारे वर्तमानकाले नथी एमनही। नही किवारे अतीतकाले नासीत् नहुती एमनही। तथा भविष्यकाले तिवारे नही होय एम नहीकेहडो

त्यादि द्वादशाङ्गं गणिपिटकं नकदाचिन्नासी दनादित्वा नकदाचिन्नभवति सदैवभावात् नकदाचिन्नभविष्यति अपर्यवसितत्वात् किंतर्हि भु ॥ टीका ॥
विंचेत्यादि अभूच भवतिच भविष्यतिच ततश्चेदं त्रिकालभावित्वादचलत्वाच्च ध्रुवं मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव नियत मस्तास्तिकायेषु लोकवचनवत् नियतत्वादेव
शाश्वतं समयावलिकादिषु कालवचनवत् शाश्वतत्वादेव वाचनादिप्रदानेप्य चयं गङ्गासिन्धुप्रवाहेपि पद्मद्रदवत् अचयत्वादेवा व्ययं मानुषोत्तराद्बहिः समु
द्रवत् अव्ययत्वादेव स्वप्रमाणे ऽवस्थितं जम्बूद्वीपादिवत् अवस्थितत्वादेव नित्यमाकाशवदिति साम्प्रतं दृष्टान्त मचाय आह सेजहानामएइत्यादि तद्यथा
नामपञ्चास्तिकाया धर्मास्तिकायादयः न कदाचिन्नास न्नित्यादि प्राग्वत् एवमेवेत्यादि दार्ष्टान्तिकयोजना निगदसिद्वैवेति एयणमित्यादि अत्र द्वादशाङ्गे

गणिपिडगं णकयाइणत्थि णकयाइणासी णकयाइणभविस्सइ भुवंच भवति भविस्सतिय धुवेणितिए ॥ मूल ॥
सासए अक्खए अव्वए अवठिए णिच्चे सेजहाणामए पंच अत्थिकाया णकयाइ णआसि णकयाइ णत्थी

नहो तेमाटे हुतो तोस्यूं। एह द्वादशांग पूर्वहुंता हिवडा छे आगलि होस्ये एतले त्रिहुंकाले पामिये एह द्वादशांग ध्रुव निश्चलछे वली नियतछे। सदाभावी ॥ भाषा ।
पंचास्तिकायनीपरे चयनहो व्ययनहो विनाशनहो चार समुद्रवत् शाश्वतछे समयादिकालनोपरे वलो अचय पद्मद्रहने विषे गंगासिंधुना प्रवाहनोपरे पंचा
स्तिकायनीपरे वली अवस्थित जंबूद्वीपनीपरे वली नित्य आकाशनीपरे सांप्रत दृष्टांत देखाडोयेछे। तेयथानाम जिम पंचास्तिकाय धर्मास्तिकायादि किवा
रे अतीतकाले नहो न हतो एम वर्तमान काले किवारे नथी एमनहो। तथा भविष्यकाले किवारे नहो हुस्ये एमनहो। एह पंचास्तिकाय हुतो अतीत
काले आगलिकाले होस्ये। वर्तमानकालेछे। ध्रुव नियत शाश्वत नित्य। एह पदार्थ वखाण्याछे।-एणे दृष्टांते द्वादशांग गणिपिटक किवारे अतीतकाले न

॥ टीका ॥

गणिपिटके अनन्ताभावा आख्यायन्त इतियोगः तत्रभवन्तीतिभावा जीवादयः पदार्थाः एतेच जीवपुद्गलानामनन्तत्वा दनन्ता इति तथा अनन्ता अभावाः सर्वभावानामेव पररूपेणासत्वा त्तएवा नंता अभावा इति स्वपरसत्ताभावाभावोभयाधीनत्वाद्वस्तुतत्वस्य तथाहि जीवो जीवात्मनाभावो ऽजीवात्मनाचाभावो ऽन्यथा ऽजीवत्वप्रसङ्गादिति अन्येतु धर्म्मापिचया अनंताभावाः अनंताऽभावाः प्रतिवस्त्वस्तित्वनास्तित्वाभ्या मतिबद्धा इति व्याचचन्ते तथा ऽनन्ताहेतवः तत्र हि

॥ मूल ॥

॥ २०७ ॥ णकयाइ ण नविस्संति नुविं नवंतिय नविस्संतिय धुवा णितिया सासया अक्खया अव्वया अवठि या णिच्चा एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे णकयाइ ण आसि णकयाइणत्थी णकयाइणनविस्सइ नुविं च नवति नविस्सइय धुवे जावअवठिए णिच्चे एत्थणं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंतानावा अणंताअना वा अणंताहेऊ अणंताअहेऊ अणंताकारणा अणंताअकारणा अणंताजीवा अणंताअजीवा अणंतानव

॥ भाषा ॥

हुतो एम नही। वर्तमानकाले किवारे नथी एमनही। भविष्यकाले किवारे नहोय एमनही। हुतो छे होस्ये एतले त्रिकालभाव। ध्रुवादिक पद सघला क हिवा जिहां लगी अवस्थित तथा नित्य पद आवे तिहांलगी कहिवो। एणि द्वादशांग गणिपिटकने विषे अनन्ताभाव जीव पुद्गलादिक भावपदार्थ अनंता छे। अनन्ता अभाव पोतानो अपेक्षाये आपणपो परने विषे नही एह अभाव तेही अनन्ता। हेतु ते जाणवा रूप वस्तु धर्मविशिष्ट अर्थने पामें ते हेतु व स्तु पणे अनंतछे। तद्विशिष्ट अर्थपणि अनंतछे। हेतुनालक्षणथी विपरीत अहेतु तेही अनंत छे। मृत्पिंडादिक जिम घटना कारण तेही अनंत छे। जिम मृत्पिंडादिक घटना कारण तेपटना अकारण छे तेही अनंतछे। जीव अनंतछे। अजीव स्याणुकादिक पुद्गल तेही अनंतछे। भव्य जीव अनंतछे। अभव्य

॥ टीका ॥

नोति गमयति जिज्ञासितधर्म्मविशिष्टानर्थानिति हेतु स्तेचानन्ता वस्तुनो नन्तधर्म्मात्मकत्वात् तत्प्रतिबद्धधर्म्मविशिष्टवस्तुगमकत्वाच्च हेतोः सूत्रस्य वानन्त्यगमपर्या याात्मकत्वात् यथोक्तहेतुप्रतिपक्षतो ऽनन्ता अहेतव स्तथाऽनन्तानि कारणानि मृत्पिण्डतंत्वादीनि घटपटादिनिवर्त्तकानि तथा अनन्तान्यकारणानि सर्वकार णानामेव कार्यान्तराकारणत्वा न हि मृत्पिण्डः पटंनिवर्त्तयतीति तथा अनन्ताजीवाः प्राणिन एवमजीवा द्व्यणुकादयः भवसिद्धिका भव्याः सिद्धा निष्टिता र्थाः इतरे संसारिण आघविज्जंती त्यादि पूर्ववदिति द्वादशाङ्गस्य स्वरूपमनन्तरमभिहित मथ तदभिधेयस्य राशिद्वयान्तर्भावतः स्वरूपमभिधित्सुराह दुवेरा सीत्यादि इहच प्रज्ञापनायाः प्रथमपद मप्रज्ञापनाख्यं सर्व न्तदत्र मध्येतव्यं किमवसानमित्याह जावसेकिंतमित्यादि केवल मस्य प्रज्ञापना सूत्रस्य चाय म्विशेषः इहदुवेरासीपन्नत्ता इत्यभिलाप स्तत्रतु दुविहापन्नवणापन्नत्ता जीवपन्नवणा अजीवपन्नवणायत्ति अनिर्दिष्टस्यच सूत्रतः सर्वस्य प्रज्ञापनापदस्य ले

॥ मूल ॥

सिद्धिया अणंताअभवसिद्धिया अणंतासिद्धा अणंताअसिद्धा आघविज्जंति पन्नविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति एवंदुवालसंगगणिपिडगं इति दुवेरासी पन्नत्ता तंजहा जीवरासी अजीवरासीय अजीवरासी दुविहा पन्नत्ता तंजहा रूवीअजीवरासी अरूवीअजीवरासीय सेकिंतंअरूवी

॥ भाषा ॥

जीव अनन्त छे। सिद्ध अनंतछे। एहसर्वभाव पूर्वने विषे कहिये। जणावीये देखाडिये विशेषपणे देखाडीये। उपदेश करिये। द्वादशांग स्वरूप कहीने हिवे तेहीजमां बेराशी कहीछे तेकहेछे। जीव राशि अजीवराशि। अजीवराशि बेप्रकारे छे तेकहेछे। रूपी अजीव राशि। अरूपी अजीवराशि। स्यूंते अरूपी अजीवराशि अरूपी अजीवराशी दशप्रकारे तेकहे छे। धर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३। अधर्मास्तिकाय स्कंध १ देश २ प्रदेश ३ आकाशा

खितुमशक्यत्वा दर्शतस्तल्लेश उपदर्श्यते तत्राजीवराशि र्द्विविधो रूप्यरूपिभेदा त्तत्रारूप्यऽजीवराशि र्दशधा धर्म्मास्तिकाय स्तद्देश स्तत्प्रदेशश्चे त्येवधर्म्मास्तिका ॥ टीका ॥
याकाशास्तिकायावपि वाच्यावेव नव दशमोऽद्धा समय इति रूप्यजीवराशि श्चतुर्द्धा स्कंधा देशाः प्रदेशाः परमाणवश्चेति तेच वर्णगन्धरसस्पर्शसंस्थानभेदतः
पञ्चविधाः संयोगतो नेकविधा इति जीवराशि र्द्विविधः संसारसमापन्नो ससारसमापन्नश्च तत्रा ऽसंसारसमापन्ना जीवा द्विविधा अनन्तरपरम्परसिद्धभेदा
त् तत्रा नन्तरसिद्धाः पञ्चदशप्रकाराः परम्परसिद्धा स्त्वनंतप्रकाराइति संसारसमापन्नास्तु पञ्चधै केन्द्रियादिभेदेन तत्रै केन्द्रियाः पञ्चविधाः पृथिव्यादिभेदेन
पुनः प्रत्येकं द्विविधः सूक्ष्मबादरभेदेन पुनः पर्याप्तापर्याप्तभेदेन द्विधा एवं द्वित्रिचतुरिन्द्रियाअपि पञ्चेन्द्रिया श्चतुर्द्धा नारकादिभेदा त्तत्रनारकाः सप्तवि
धाः रत्नप्रभादिपृथ्वीभेदात् पञ्चेन्द्रियतिर्यञ्च स्त्रिधा जलस्थलखचरभेदात् तत्र जलचराः पञ्चविधा मत्स्यकच्छपग्राहमकरसुंसुमारभेदात् पुन र्मत्स्या अनेक
धा श्लक्ष्णमत्स्यादिभेदात् कच्छपा द्विधा अस्थिकच्छपमांसकच्छपभेदात् ग्राहाः पञ्चधा दिलिवेष्टकमद्गुपुलकसीमाकारभेदात् मकरामत्स्यविशेषा द्विधा शु
ण्डामकरा करिमकराश्च सुंसुमारास्त्वेकविधा स्थलचराद्विधा चतुष्पदपरिसर्प्पभेदात् चतुष्पदाश्चतुर्द्धा एकखुरद्विखुरगण्डीपदसनखपदभेदात् क्रमेणचैते अश्व
गोहस्तिसिंहादयः परिसर्प्पाद्विधा उरःपरिसर्प्पभुजपरिसर्प्पभेदात् उरःपरिसर्प्पाश्चतुर्द्धा अह्यऽजगरा शालिकमहोरगभेदात् तत्राहयोद्विधा दर्वीकरामुकुलि

अजीवरासी अरूवीअजीवरासी दसविहा पन्नत्ता धम्मात्थिकाए जावअद्धासमए रूवीअजीवरासीअणे ॥ मूल ॥

स्तिकायस्कंध १ देश २ प्रदेश ३ एवं ८ दशमो अद्धा समय काल एवं १०। एमजीवराशि २ प्रकार त्रस १ थावर २। तेहो पणि सूक्ष्म बादर एम पर्यांप्ता अपर्यांप्ता एणि ॥ भाषा ॥
विधियें बेइंद्रियं तेइंद्रिय चउरिंद्रय। पर्यांप्ता अपर्यांप्ता पंचेंद्रिय नरकतिर्यंच मनुष्य देवता भवनपति व्यंतर ज्योतिषी बैमानिक पर्यांप्ता अपर्यांप्ता एम ति

॥ टीका ॥

नश्चेति खचराश्चतुर्धा चर्म्मपक्षिणो लोमपक्षिणः समुद्गपक्षिणो विततपक्षिणश्च तत्राद्यौ द्वौ वल्गुलीहंसादिभेदा वितरौ द्वीपान्तरेष्वेव स्तः सर्वेच पञ्चेन्द्रियति यञ्चो मनुष्याश्च द्विधा संमूर्च्छिमा गर्भव्युत्क्रान्तिकाश्च तत्र संमूर्च्छिमाः नपुंसकाएव इतरेतु त्रिलिङ्गाइति गर्भव्युत्क्रान्तिकमनुष्या स्त्रिधा कर्म्मभूमिजा अकर्म्म भूमिजा अन्तरद्वीपजाश्चेति कर्म्मभूमिजा द्विविधा आर्या म्लेच्छाश्च आर्याद्वेधा ऋद्धिप्राप्ता इतरेच तत्र प्रथमा अर्हदादयः द्वितीया नवविधा क्षेत्रजातिकुलक र्म्मशिल्पभाषाज्ञानदर्शनचारित्रभेदात् देवाश्चतुर्विधा भवनवास्यादिभेदा द्भवनपतयोदशधा असुरनागादयः व्यन्तरा अष्टविधा पिशाचादयः ज्योतिष्काः प ञ्चधा चन्द्रादयः वैमानिका द्विधा कल्पोपगाः कल्पातीताश्च कल्पोपगाद्वादशधा सौधर्म्मादिभेदात् कल्पातीता द्वेधा ग्रैवेयकाअनुत्तरोपपातिकाश्च ग्रैवेयका नवधा अनुत्तरोपपातिकाः पंचधेति एतत्समस्तं सूत्रकृतो क्तं जावसेकिंतं अणुत्तरेत्यादि पूर्वोक्तमेवजीवराशिं दण्डकक्रमेण द्विधादर्शयन्नाह दुविहेत्यादि सु

॥ मूल ॥

गविहा ॥ जावसेकिंतंअणुत्तरोववाइआ अणुत्तरोववाइआ पंचविहा पन्नत्ता तंजहा विजय वेजयंत ज यंत अपराजित सव्वठसिद्धिआ सेत्तंअणुत्तरोववाइआ सेत्तंपंचेंदियसंसारसमावन्नजीवरासी ॥ दुविहाणेर इया पन्नत्ता तंजहा पजत्ताय अपजत्ताय एवंदंडउभाणियव्वो जाववेमाणियत्ति इमीसेणंरयणप्पभाए पुढ

॥ भाषा ॥

हां सगी अनुत्तर विमानआवे । स्यूंते अनुत्तरोपपातिका । तेपांच प्रकारे कह्या तेकहेछे । पूर्व दिशि विजय विमान । दक्षिणे वेजयंत । पश्चिमे जयंत । उ त्तरे अपराजित । विहुं विचे सर्वार्थ सिद्ध । एह पांच विमानना देवता पर्याप्ता अपर्याप्ता । तेह अनुत्तरोपपातिक देवता । ते पंचेंद्रिय संसार प्राप्त जीव राशि एक भेद बीजो ते असंसार प्राप्त जीवराशि सिद्धनाजीव । बे प्रकारे नारकी कह्या ते कहे छे । पर्याप्ता नारकीमांहि आहार १ शरीर २ इंद्रिय ३

॥ २०६ ॥

गमं नवरं दंडओत्ति नेरइया १ असुराई १० १० पुढवाइ ५ बेइंदियादओ ३ मणुया १ वंतर १ जोइसवेमाणियाय १ अहदंडओएवं ॥ अथानंतरप्रज्ञप्ता नां नारकादीना म्पर्याप्तापर्याप्तभेदानां स्थाननिरूपणायाह इमीसेणमित्यादि अवगाहना सूत्रादर्वाकसर्वं कंठ्यं नवरं तेणंनिरया इत्याद्यत्रच जीवाभिग ॥ टीका ॥

वीए केवइयंखेत्तंउगाहेत्ता केवइयाणिरयावासा पण्णत्ता गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्त रजोयणसयसहस्सबाहल्लाए उवरि एगंजोयणसहस्संउगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसहस्संवज्जेत्ता मज्झे अठसत्त रिजोयणसयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणंतीसं णिरयावाससयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया ॥ मूल ॥

आणपाण ४ भाषा ५ मन ६ एह छ पर्याप्ती पूरीकरी ते पर्याप्ता । छ मांहि ५ पर्याप्ति ४ पर्याप्ति करीने मरे ते अपर्याप्ता १ एम २४ दंडकना जीव पर्याप्ता अपर्याप्ता भणिवा जिहांलगे वैमानिकनो २४ मो दंडक आवे तेहदंडकनीगाथा नेरइया १ असुराइ १० पुढवाइ ५ बेइंदिया ४ मणुया १ वंतर १ जोइस वेमाणियाय १ अहदंडओ एवं एह ठाणांगे बीजे ठाणे जिम जीवनां भेद बेबे कह्याछे पणि इहां सर्व कहिवो । हिवे २४ दंडक मांहि पहिलो नारकीनोछे तेह नारकीने रहिवानाठाम भगवंत आगलि गौतम स्वामी पूछेछे एणोयें हेभदंत हेपूज्य रत्नप्रभा पृथिवीनेविषे केतलो क्षेत्र ओगाहीने एतले अवगाहीने वलो केतला नरकावासाकह्या । हे गौतम एणी ये रत्नप्रभा पहिलीपृथिवीने विषे ८० हजार योजन उत्तरे आगलीछे जेहने एहवी १ लाख योजन बाहुल्य पणे जाडपणे पृथिवी पिंडछे तेमांहि उपरि एक सहस्र योजन अवगाहीने मूकीने हेठें एक हजार योजन वर्जीने पछे विचे १ लाख अठुत्तर हजार यो जन पृथिवी पिंड राखीये । इहां रत्नप्रभा पृथिवीयें तेरेपाथडाछे तेमांहि नारकीना ३० लाख नरकावासा कह्याछे । तेनरकावासा मांहि वाटला बाहिर ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

मचूर्ण्यनुसारेण लिख्यते किल द्विविधा नरका भवन्ति आवलिकाप्रविष्टाः आवलिकाबाह्यास्र तत्रावलिकाप्रविष्टा अष्टासु दिक्षु भवन्ति ते च वृत्तत्र्यस्रचतुर स्रक्रमेण प्रत्यवगन्तव्याः एतेषां च मध्ये इन्द्रकाः सीमन्तकादयो भवन्ति आवलिकाबाह्यास्तु पुष्पावकीर्णा दिग्विदिशामन्तरालेषु भवन्ति नानासंस्थानसंस्थि ताइति निरयसंस्थानव्यवस्था तत्र च बाहुल्यमङ्गीकृत्येद मभिधीयते अंतोवट्टेत्यादि उक्तं च सूत्रकृद्वृत्तिकृता नरकाः सीमन्तकादिकाः बाहुल्यमङ्गीकृत्यांतर्मध्ये वृत्ता बहिरपि चतुरस्रा अधश्च क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता एतच्च संस्थानं पुष्पावकीर्णकानाश्रित्योक्तं तेषामेव प्रचुरत्वात् आवलिकाप्रविष्टा स्तु वृत्तत्र्यस्रचतुरस्रसं स्थानाभवन्तीति तत्रांतर्वृत्ता मध्ये शुषिरमाश्रित्य बहिश्चचतुरस्राः कुड्यपरिधिमाश्रित्य यावत्कारणादिदं दृश्यं यदुत अधः क्षुरप्रसंस्थानसंस्थिता भूतलमाश्रित्य क्षुरप्राकारा स्तद्भूतलस्य संचारिमत्वपादच्छेदकत्वात् अन्येत्वाहुः स्तेशामधस्तनांशः क्षुरप्रवाग्रे ग्रे प्रतलोविस्तीर्णश्चेति क्षुरप्रसंस्थानता तथा निच्चंधयारतमसा ववगयगहचंदसूरनक्खत्ताजोइसप्पहामेयवसापूयरुहिरमंसचिक्खिल्ललित्ताणुलेवणतला असुइवीसापरमदुब्भिगंधाकाऊअगणिवन्नाभाकक्खडफासादुरभियास इति तत्र नित्यं सर्वदा अन्धकारं अत्यताकारक स्वहलवलाहकपटलाच्छादितगगनमंडलामावास्यार्द्धरात्रांधकारव त्तमस्तमिस्रं येषु ते नित्यान्धकारतमसः

॥ मूल ॥

तेणंणिरयावासा अंतोवट्टा बाहिंचउरंसा जावअसुन्नाणिरया असुन्नाउणिरएसुवेयणाउ एवंसत्तविन्नाणिय

॥ भाषा ॥

चउखूणा नरकावासा बेप्रकारना छे। एक आवलिका प्रविष्ट बीजा आवलिकाबाह्य तेमांहि आवलिका प्रविष्ट ते आठ दिशिने विषे छे ते वृत्त त्र्यस्र चतुर स्र क्रमे जाणिवा। एहमांहि इन्द्रक ते वाटला सीमंतादिक अने आवलिकाबाह्य ते पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशिने अंतराले नाना संस्थान संस्थित छे। जिहांलगी महा अशुभछे नारको वेदना भोगवेछे। एमज साते नरक पृथिवी भणवी कहिवी जे बाहुल्य पणुं नरकावासा परिमाण पृथिवीयें जोइये तेगाथा

॥ टीका ॥

॥ २०७ ॥

अथवा नित्येनान्धकारेण सार्वकालिकेनेत्यर्थः तमसस्तमिश्रा नित्यान्धकारतमसः जात्यन्धमेघान्धकाराऽमावास्यानिशीथतुल्याइत्यर्थः कथमित्यतआह व्यप गता अविद्यमाना ग्रहचन्द्रसूरनक्षत्ररूपाणां ज्योतिषां ज्योतिष्कलक्षण विमानविशेषाणां ज्योतिषो वा दीपाद्यग्नेः प्रभा प्रकाशो येषु ते तथा पहत्ति पथ शब्दो वायं व्याख्येयः तथा मेदो वसा पूयरुधिरमांसानि शरीरावयवा स्तेषां यच्चिक्खिल्लं कर्दम स्तेन लिप्त मुपदिग्ध मनुलेपनेन सकृल्लिप्तस्य पुनःपुनर्लेपनेन तल भूमिका येषा न्ते मेदोवसापूयरुधिरमांसचिक्खिल्ललिप्तानुलेपनतला यद्यपिच तत्रमेदः प्रभृतीन्यौदारिकपंचेंद्रियशरीरावयवरूपाणि नसन्ति वैक्रियश रीरत्वान्नारकाणां तथापि तदाकारा स्तदवयवा स्तत्रप्रोच्यन्त इति अशुचयो बिभत्साः आमगन्धयः पूतिगंधयइत्यर्थः अतएव परमदुरभिगंधाकाऊअगणिवन्ना भसि कृष्णाग्निर्लोहादीनां ध्यायमानानां तद्वर्णवदाभा येषान्ते कृष्णाग्निवर्णाभाः तथा कर्कशः स्पर्शो येषांते कर्कशस्पर्शा अतएव दुःखेन कृच्छ्रेणाधिसोढुं शक्यते वेदना येषु ते दुरधिसह्याः अतएवाशुभानरकाअ शुभानरकेषु वेदना इति एवंसत्तविभागियव्वत्ति प्रथमा ममुचता सप्तद्रत्युक्तं जंजासुजुज्जइत्ति यत्र यस्यां पृथि व्यां बाहल्यस्य नरकाणांच परिमाणं युज्यते स्थानान्तरोक्तानुसारेण तत्र तस्यां वाच्यं तच्चेदं असीतंगाहा तीसायगाहा अशीतिसहस्राधिकयोजनलक्षं रत्नप्र

॥ मूल ॥

बाए जंजासुजुज्जइ असीयंबत्तीसं अठावीसंतहेवयवीसंच अठारससोलसगं अठुत्तरमेववाहल्लं ॥ १ ॥ तीसा

॥ भाषा ॥

मांहि कहेछे। पहिलीयें १ लाख ८० हजार योजन पृथिवी पिंड। बीजीये १ लाख ३२ हजार योजन पृथिवीपिंड। त्रीजिवे १ लाख २८ हजार योज न पृथिवीपिंड। चौथीये १ लाख २० हजार योजन पृथिवीपिंड। पांचमीयें १ लाख १८ हजार योजन पृथिवीपिंड। छठीये १ लाख १६ हजार योजन पृथिवीपिंड। सांतमीये १ लाख ८ हजार योजन पृथिवीपिंड। पहिलीये ३० लाख नरकावासा। बीजीये २५ लाख त्रीजीये १५ लाख। चौथीये १०

॥ टीका ॥

भायाम्वाहल्यमेवं शेषासुभावनीयं तथा विंशल्लक्षाणिप्रथमायां नरकावासाना मित्येवं शेषास्वपिनेयमिति आवासपरिमाणं चासुरादीना मपि दशानां सौ धर्म्मादीनां च कल्पेतराणां सूत्रे वक्ष्यतीति तन्निवासपरिमाणसंग्रहः चउसठ्ठीइत्यादि गाथाः पंच एवंचेहसूत्राभिलापोदृश्यः सक्करप्पभाएणंपुढवीएकेवइयंभोगा

॥ मूल ॥

यपणवीसा पन्नरसदसेवसयसहस्साइं तिसंगंपंचूणं पंचेवअणुत्तरानरगा ॥ २ ॥ चउसठीअसुराणं चउ रासीइंचहोइनागाणं वावत्तरिसुवन्नाणं वाउकुमाराणछन्नउइ ॥ ३ ॥ दीवदिसाउदहीणं विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छण्हंपिजुवलयाणं वावत्तरिमोयसयसहस्सा ॥ ४ ॥ वत्तीसाठावीसा वारसअट्ठचउरोसयस

॥ भाषा ॥

लाख। पांचमीये ३ लाख। छठ्ठीयें ५ ऊणाएक लाख। सातमीये ५ नरकावासा जाणिवा ॥ २ ॥ चमरेंद्रना भवन ३४ लाख वलींद्रना ३० लाख बिहुंमिली ६४ लाख असुरकुमारना भवन। तथा धरणेंद्रना ४४ लाख भूतानेंद्रना ४० लाख बिहुंमिली ८४ लाख भवन नागकुमारनां। तथा वेणुदेवना ३८ लाख वेणुदालीनां ३४ लाख बिहुंमिली ७२ लाख भवन सुपर्ण कुमारनां। तथा वेलंबना भवन ५० लाख प्रभंजनना ४६ लाख बिहुंमिली ९६ लाख वायुकुमार ना भवन। तथा पूर्णना ४० लाख विशिष्ठना ३६ लाख बिहुंमिली द्वीपकुमारना ७६ लाख। एक युगल। अमितगति नां ४० लाख अमित वाहनना ३६ बिहुंमिली ७६ लाख। दिसाकुमारना। बीजोयुगल। तथा जलकांतना ४० लाख जलप्रभना ३६ लाख उदधिकुमारना। त्रीजुं युगल। हरि कांतना ४० लाख हरिसहना ३६ लाख बिहुंमिली ७६ लाख विद्युत कुमारना। चौथो युगल। घोषना ४० लाख महाघोषना ३६ लाख बिहुंना मिली स्तनितकुमारना ७६ लाख। पांचमो युगल। अग्निशिखनां ४० लाख अग्निमाणवनां ३६ लाख बिहुंमिली अग्निकुमारनां ७६ लाख भवन। एह छठ्ठो युग

॥ टीका ॥

हित्ता केवइयानिरया पन्नत्ता गोयमा सक्करप्पभाएणं पुढवीए बत्तीसुत्तरजोयणसयसहस्स वाहल्लाए उवरिएगंजोयणसहस्सं वज्जेत्तामज्झेतीसुत्तरे जोयणस यसहस्सेएत्थणं सक्करप्पभाए पुढवीएनेरइयाणंपणवीसंनिरयावाससयसहस्साभवंतीति मक्खाया तेणंनिरएइत्यादि एवंगाथानुसारेणा न्येपि पञ्चालापकावाच्या इत्येतदेवाह दोच्चाएत्यादि वेयणाओ इत्येतदन्तंसुगमं नवरं गाहाहिंतिगाथाभिः करणभूताभिर्गाथानुसारेणे त्यर्थाः भणितव्या वाच्या नरकावासाइति प्र

॥ मूल ॥

हस्सा पन्नाचत्तालीसा छच्चसहस्सासहस्सारे ॥ ५ ॥ आणयपाणयकप्पे चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि । सत्तवि माणसयाइं चउसुविएएसुकप्पेसु ॥ ६ ॥ एक्कारसुत्तरंहे ठिमेसुसत्तुत्तरंचमज्झिमए सयमेगंउवरिमए पंचेवअणु त्तरविमाणा ॥ ७ ॥ दोच्चाएणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छठीए पुढ

॥ भाषा ॥

ल एणी विधियें एह पूर्वोक्त छ युगलना छोत्तर लाख भवन कह्या । हिवे १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मांहि सर्वविमान नी संख्या कहैछे । सौधर्म देवलोके ३२ लाख विमान । ईशानें २८ लाख । सनत्कुमारें १२ लाख । माहेंद्रे ८लाख । ब्रह्मदेवलोके ४ लाख । एतलालगे लाख जाणिवा । लांत के ५० हजार विमान । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार विमान । सहस्रारलगे सहस्र कहिये । आनत प्राणत नोमे दशमे देवलोके ४ से बिमान । आरण अच्युतमिली ३०० । नोमा दशमा इग्यारमा बारमा एह चिहुंदेवलोकमिली ७०० बिमान । एकसोइग्यारहविमान नवग्रैवेयकमांहि हेठिलात्रिकने विषे । मध्यमत्रिकमांहि १०७ विमान । उपरिलात्रिकग्रैवेयकें एकसो । अनुत्तरविमाने पांच विमाज । सर्वमिली ८४ लाख ९७ हजार उपरि २३ । बीजी शर्करप्रभा पृथिवीये त्रीजी बालुकप्रभा पृथिवीये चौथी पंकप्रभा पृथिवीये पांचमी धूमप्रभा पृथिवीये छट्ठी तमप्रभा पृथिवीयें सातमी तमतमा पृथिवीयें

क्रम सया वट्टयंसायत्ति मध्यमोऽहत्त: शेषास्त्यस्रा इति अथा सुराद्यावासविषयमभिलापं दर्शयति केवइत्यादिं सुगमं नवरं तानि भवनानि वहि र्वृत्तानि ॥ टीका ॥

वीए सत्तमीएं पुढवीए गाहाहिंजाणियव्वा सत्तमाए पुढवीए पुच्छा गोयमा सत्तमाए पुढवीए अठुत्तरजो यणसयसहस्साइं वाहल्लाएउवरि अठुतेवन्नं जोयणसहस्साइं उगाहेत्ता हेठाविअठुतेवन्नं जोयणसहस्सा इं वज्जित्ता मज्झेतिसुजोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंचअणुत्तरा महइमहालया महा निरया पन्नत्ता तंजहा काले महाकाले रोरुए महारोरुए अप्पइठाणेनामं पंचमे तेणंनिरया वट्टाय तंसा ॥ मूल ॥

एह सात नरकपृथिवीना नरकावासानी संख्या पिछाडी गाथामांहि कहीछे तिम कहिवी । सातमी नरकपृथिवीनो स्वरूप पूछेछे भगवंतआगलि । भग वंत कहेछे । हेगौतम सातमी पृथिवीने विषे एकलाख अठुत्तर हजार योजन जाडपणे तेमांहि उपरि अर्द्धत्रेपनहजार योजन एतले साढा वावन सहस्र योजन अवगाहीने ऊपर मूकीने वली हेठे पणि साढात्रेपन हजार योजन वर्जीने मध्ये विचाले त्रिण हजार योजनने विषे एक पाथडो इहां सातमी तमतमा पृथिवीये नारकीना पांच अनुत्तर कहतां ते उत्तरे आगले एहवा वीजा नरकावासा नथी तेमाटे अनुत्तर घणाज घणा मोटा महा नरका वासा कह्या तेकहे छे। पूर्वदिशे काल १ दक्षिणे महाकाल २ पश्चिमे रुचक ३ उत्तरे महारुचक ४ पांचमो विचे अप्रतिष्ठान ५ तेह नरकावासा वाटला त्र्यंस त्रिखूणिया एतले पांच नरकावासामांही अपइठाण ते वाटलो अने चिंहदिशिना कालादिकना ४ त्रिखूणिया वलीकेहवाछे अहेत्ति हेठे खुरप्र एतले छरपलाने संस्थाने संस्थितछे । यावत् अस्ति चन्द्र सूर्य रहित कर्दमभूत अशुभ घणो भूंडो नरक छे । तथा अशुभ घणी भूंडी छे नरकने विषे वेदना । वली ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

वृत्तप्राकारावृतनगरवत् अन्तः समचतुरस्राणि तदवकाशादेतस्य चतुरस्रत्वात् अधः पुष्करकर्णिकासंस्थानसंस्थितानि पुष्करकर्णिकापद्ममध्यभागः साचोन्नत समचित्रबिन्दुकिनीभवतीति तथा उत्कीर्णान्तरविपुलगम्भीर खातपरिखानि उत्कीर्णं भुवनमुत्कीर्य पालीरूपं कृतमन्तरमंतरालं ययोस्ते उत्कीर्णान्तरे ते वि

॥ मूल ॥

य अहेखुरुप्पसंठाणसंठिया जावअसुभानरगा । असुभाउ वेयणाउ केवइयाणंभंते असुरकुमारावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयणसहस्सं ओगाहेत्ता अठहत्तरिजोयणसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए चउसठिं असुरकुमारावास सयसहस्सा प० तेणंभवणाबाहिंवट्टा अंतो चउरंसा अहो पोक्खरकण्णिआ संठाणसंठिया उक्किण्णंतर विउलगंभीरखाय

॥ भाषा ॥

गौतम पूछे छे । हेभगवंत केतला असुर कुमार भवनपतिना आवास कह्या । अनेकिहांछे । भगवंत कहेछे । हेगौतम । एणीयें रत्नप्रभा पहिली पृथिवी यें ८० हजार उत्तर आगलि १ लाख योजन जाडपणनो छेहडो तेमांहि उपरि १ हजार लगे अवगाहीने वली हेठेंपिण १ हजार योजन लगे वर्जी ने मध्येविचाले ७८ हजार योजन अधिक १ लाख योजनने विषे इहां रत्नप्रभा पृथिवीने विषे ६४ असुरकुमारना शत सहस्र एतले ६४ लाख भवना वास कह्या । ते भवन पतिना भवन घर बाहिर वाटला अंतो घरमांहि चोरंस । चोखूणिया हेठें पुष्करकर्णिका कमलमांहिली कर्णिका डोडो तेहने संस्थाने संस्थितछे। उत्कीर्ण पालीरूप कीधो छे अंतराल जेहनो ते उत्कीर्णांतर एहवो विपुल विस्तीर्ण गंभीर ऊंडो खात परिखा खाईछे जेह भवन ने उपरि विशाल हेठें संकुचित ते बिहूंने अंतलगे बिचे पाछिले एहभाव। अट्टालक गढ उपरि आश्रयविशेष चरिका नगर अने गढने बिचाले ८ ।

॥ टीका ॥

प्र पुलगम्भीरे खातपरिखे येषां तानि तत्र खातमधउपरिच सम म्परिखाउपरि विशाला अध: संकुचिता तयोरन्तरेषु पालीअस्तीतिभाव: तथा अट्टालका: प्रा कारस्थो पर्याश्रयविशेषा: चरिकानगरप्राकारयोरंतर मष्टहस्तोमार्ग: पाठान्तरेण चतुरयन्ति चतुरका: सभाविशेषा: ग्रामप्रसिद्धा: दारगोउरत्ति गोपुरद्वा राणि प्रतोल्यो नगरस्यैव कपाटानि प्रतीतानि तोरणान्यपि तथैव प्रतिद्वाराणि अवांतरद्वाराणि तत एतेषां द्वंद्व एतानि देशलक्षणेषु भागेषु येषांतानि तथा इह देशभागस्थानेकार्थ स्ततोन्योन्यमनयो विशेषविशेषणभावो दृश्यतइति तथा यंत्राणि पाषाणक्षेपणयंत्राणि मुशलानि प्रतीतानि भुसुंडय: प्रहरणवि शेषा: शतघ्न्य: शतानामुपघातकारिण्यो महाकाया: काष्टशैलस्तम्भयष्टय: ताभि: परियारियत्ति परिवारितानि परिकरितानीत्यर्थ: तथा अयोधानि योध यितुं संग्रामयितुं दुर्गतत्वादशक्यंते परबलै र्यानि तान्ययोधानि अविद्यमानावायोधा: परबलसुभटालि यानि प्रति तान्ययोधानि तथा अडयालकोठगरइय

॥ मूल ॥

फलिहा अट्टालयचरियदारगोउरकवाडतोरणपडिदुवारदेसभागा जंतमुसलमुसंढिसयग्घिपरिवारिया अउ ज्झा अडयालकोठरइया अडयालकयवणमाला लाउल्लोइयमहिया गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगु

॥ भाषा ॥

ह्यनो मार्ग गोपुरद्वार तेप्रतोली नगरी तेहना कमाड तेह आगलो तोरणछे तिमज प्रसिद्ध द्वार मांहिला द्वार एतला देशभागने विषे यथायोग्य स्थान कहेछे जेहने तथा यंत्रतेपाषाणनाखवाना तथा मुशल प्रसिद्ध भुसंडि तेप्रहरणविशेष तथा शतघ्नी ते सोमाणसनेमारे एहवीमोटी काष्टनी तथा पा षाणस्तंभरूप लाठी तेणे करी परिवारित सहितछे जेहने एहवा । अयोध्या पर कटके जूझ्या नजाय न भागे एहवा ४८ कोठा बुरज तेणे करी रचित छे । तथा अडतालीस कोधाछे वनमाल तथा अडयालकहिये शोभायमानछे वनमाला पल्लवनीमाला जेहनेविषे जेहवरनीभूमि छाणेकरी लीपी ऊपरिखी

॥ टीका ॥

त्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभिन्नविविचित्रछन्दो गोपुररचितानि अन्येभणन्ति अडयालशब्दः किलप्रशंसावाचकः तथा अडयालकयवणमालत्ति अष्टचत्वारिंशद्भेदभि
न्नाः प्रशंसार्हाःकृता वनमाला वनस्पतिपल्लवस्रजो येषु तानि तथालाइयंति यद्भूमेश्छगणादिनोपलेपनं उल्लोइयंति कुड्यमालानां सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं
ततस्ताभ्यामिव महितानि पूजितानि लाउल्लोइयमहितानि तथा गोशीर्षं चन्दनविशेषः सरसञ्च रसोपेतं यद्रक्तचन्दनं चन्दनविशेषः ताभ्यां दर्दराभ्यां घना
भ्यां दत्ताः पञ्चाङ्गुलय स्तला हस्तकाः कुड्येषु येषु अथवा गोशीर्षसरसस्य रक्तचन्दनस्य सत्का दर्दरेण चपेटाभिघातेन दर्दरेषु वा सोपानवीथीषु दत्ताः प
ञ्चाङ्गुलयस्तला येषु तानि गोशीर्षसरसरक्तचन्दनदर्दरदत्तपंचाङ्गुलितलानि तथा कालागुरुः कृष्णागुरु गंन्धद्रव्यविशेषः प्रवरः प्रधानः कुंदुरुक्क चीडा तुरुष्कः
सिल्हकं गन्धद्रव्यमेव एतानिच तानि डज्झंतित्ति दह्यमानानि चेतिविग्रहः तेषां यांधूमो मघमघेंतत्ति अनुकरणशब्दोयं मघमघायमानो बहलगंधद्रव्यर्थः
तेनोद्धुराणि उत्कटानि तानि तथा तानिच तान्यभिरामाणि रमणीयानीतिसमासः तथा सुगन्धयः सुरभयो ये वरगन्धाः प्रधानवासा स्तेषां गन्ध आमोदो
येष्वस्ति तानि सुगन्धिवरगन्धिकानि तथा गंधवर्त्ति गंन्धद्रव्याणां गंधयुक्तिशास्त्रोपदेशेन निवर्त्तित गुटिका तद्भूतानि तत्कल्पानीति गंधवर्त्तिभूतानि प्रव

॥ मूल ॥

लितला कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कडज्झंतधूवमघमघेंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया

॥ भाषा ॥

भाग खडोयें करी धोल्यो तेणेकरी महित पूजितछे जेह । गोशीर्षचंदनविशेष रक्तचंदन तेणेहुं दर्दर निबिडपणे दीधाछे पंचागुलितला हाथा भींतिने विषे
हाथा दीधा छे । कृष्णागरु प्रवर प्रधान चीड तुरुक्कसिल्हारस एह पूर्वोक्त डज्झंतं दह्यमान दाझता तेहनो जे धूप मघमघायमान बहुल गंध तेणे करी
उत्कृष्ट अने अभिराम रमणीय एहवा जाणिवा। तथा सुगंधत्ति सुगंध सुरभि वर प्रधान गंध तेणेकरी गुंधित छे गंधवंत छे तथा गंधनी वाती तेह समान

रगंधगुणानीत्यर्थ: तथा अच्छानिर्मलाकाशस्फटिकवत् सण्हत्ति श्लक्ष्णानि सूक्ष्मस्कन्धदलनिष्पन्नत्वात् श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत् लण्हत्ति मसृणानीत्यर्थ: घुटितपटव त् घट्ठत्ति घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणयापाषाणप्रतिमावत् मट्ठत्ति मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणयापाषाणप्रतिमेव शोधितानिवा प्रमार्जनिकयेव अतएव नीरयत्ति नीरजांसि रजोरहितत्वात् निम्मलत्ति निर्मलानि कठिनमलाभावात् वितिमिराणि निरन्धकारत्वात् विसुद्धत्ति विशुद्धानि निष्कलङ्कत्वा चन्द्रव त् सकलंकानीत्यर्थ: तथा सप्पहत्ति सप्रभाणि सप्रभावाणि अथवा स्वेनात्मना प्रभान्ति शोभन्ते प्रकाशन्ते चेति स्वप्रभाणि यत: समरीयत्ति समरीचीनि स किरणानि अतएव सउज्जोयति सहद्योतेन वस्त्वन्तरप्रकाशनेन वर्त्तंतइति सोद्योतानि पासाईयत्ति प्रासादीयानि मन:प्रसत्तिकराणि दरिसणिज्जत्ति दर्शनीयानि तानिहि पश्यं चक्षुषा नश्रमङ्गच्छतीतिभाव: अभिरूवत्ति अभिरूपाणि कमनीयानि पडिरूवत्ति प्रतिरूपाणि द्रष्टारंप्रति रमणीयानि नैकस्य कस्यचिदेवेत्यर्थ: एवमित्यादि यथा सुरकुमारावाससूत्रे तत्परिमाणमभिहित मेवामेवमिति यथायद्भवनादिपरिमाणं यस्य नागकुमारादिनिकायस्य क्रमते ॥ टीका ॥

अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोआ पासा ॥ मूल ॥

छे अच्छआकाशनीपरें स्फटिकनीपरें। सण्हा सूक्ष्म पुद्गलें करी नीपना छे। लण्हत्ति सुकुमाल कोमल छे घुंट्या वस्त्रनी परें। घट्ठत्ति खरशाणेंकरी पाषा णप्रतिमानीपरें घस्याछे। मट्ठत्ति घणीसुकुमालशाणेंकरी पाषाणप्रतिमानी परें मठाराछे एणे कारणें नीरज रजरहित निर्मल मलरहितछे। वितिमिरा अंधकार रहित छे। निष्कलंकछे। प्रभाकांति तेणे सहितछे। श्रीशोभा तेणेकरी सहितछे। उद्योत प्रकाश सहितछे। मनने प्रसाद करे तेमाटे देखवायो ग्यछे। कमनीयछे देखणहारप्रतें रमणीकछे। एमज जेहनो जे जे मान प्रमाण मनोहरपणो असुरकुमार भुवने विषे कह्योछे। जे जे भाव गाथायें भण्यो ते ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

घटते तत्तस्य वाच्यमिति किंविधं तत्परिमाणमतश्राह जंजंगाहाहिं भणियं यद्यत्गाथाभिः चउसट्ठिअसुराणमित्यादिकाभि रभिहितं किम्परिमाणमेव तथावाच्यंतदेत्याह तहचेववत्तव्वंत्ति यथाअसुरकुमारभवनानांवर्णकउक्त स्तथा सर्वेषामसौवाच्यइति तथाहि केवइयाणंभंते नागकुमारावासापत्तता गोय मा इमीसेणंरयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तरजोयणसयसहस्सपमाणाएउप्पिं एगंजोयणसहस्सं ओगाहेत्ताहेठ्ठाचेगंजोयणसहस्सं वज्जेत्ता मज्झेअठ्ठहत्तरे जोय

॥ मूल ॥

ईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा एवंजंजस्सकमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं तहचेववत्तव्वं केवइयाणं भंते पुढविकाइयावासा प० गोयमा असंखेज्जा पुढविकाइयावासा प० एवंजाव मणुस्सत्ति के वइयाणं भंते वाणमंतरावासा प० गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स वाहल्लस्स उवरिएगंजोयणसयं ओगाहेत्ता हेठाचेगंजोयणसयंवज्जेत्ता मज्झे अठसुजोयणसएसु एत्थ

॥ भाषा ॥

तिमज वर्णनकरिवो। नागकुमारादिनो पणि तिमज वर्णनकरिवो। वली गौतम पूछेछे हेपूज्य केतला पृथिवीकायिकावासा कह्या पृथिवी रहिवानाठाम भगवंत कहेछे हेगौतम। असंख्याता पृथिवीकायिकावासा छे। एमज पाणी अग्नि वायु रहिवाना ठाम असंख्याताछे। एमज बेइन्द्रिय तेरिन्द्रिय चौरि न्द्रिय तिर्यंचपंचेन्द्रिय असंख्याता कहिवा मनुष्यना ठाम असंख्याता कहिवा एतले गर्भज मनुष्यसंख्याता कहिवा। अने समूर्च्छिम मनुष्य असंख्याता क हिवा। वली पूछेछे केतला हेपूज्य वानमंतरावासा व्यंतरनारहिवानाठाम। भगवंत कहेछे। हेगौतम एणीयें रत्नप्रभापृथिवीये त्रिणकांडछे तेमांहि पहि लो १६ सहस्र योजन कांड तेमांहि पहिलो १ सहस्र योजन रत्नकांडछे तेह रत्न कांडनो योजन सहस्रनो वाहुल्यपणो तेहने विषे उपर एकसोयोजन

॥ टीका ॥

णसहस्से एत्थणं. रयणप्पभाएचुलसोइनागकुमारावाससयसहस्सा पणत्ता तेणंभवणाइत्यादोनि केवइयाणंभंते पुढवीत्यादि गतार्थं नवरं मनुष्याणां गर्भव्यु
त्क्रान्तिकानां असंख्यातानामभावात् संख्याताएवावासाः संमूर्च्छिमानांत्वसंख्येयत्वेन प्रतिशरीरमावास भावादसंख्याता इति भावनीयमिति केवइयाण

॥ मूल ॥

णं वाणमंतराणं देवाणं तिरियमसंखेज्जा भोमेज्जा नगरावाससयसहस्सा प० तेणंभोमेज्जानगरा बाहिंवट्टा
अंतोचउरंसा एवंजहाभवणवासीणं तहेवणेयव्वा णवरं पडागमालाउला सुरम्मापासाईया दरिसणिज्जा अभि
रूवा पडिरूवा। केवइयाणंभंते जोइसियाणं विमाणावासा प०। गोयमा इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवी
ए बहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ सत्तनउयाइं जोयणसयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तरजोयणसय बा
हल्ले तिरियं जोइसविसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसियविमाणावासा प० तेणं जोइसियविमाणा

॥ भाषा ॥

वर्जीने पछे वली हेठे पिण एकसो योजन मूकीने मध्ये विचे आठसे योजन जगस्था इहां वाणव्यंतर देवना तिरिछालोक मांहि असंख्यात भूमि
संबंधी नगरना आवासना लाख कह्या। ते भौमेय नगरवासा बाहिर बाटला मांहि चउरंसा चोखूणा। एमज जिम भवनपतिना घर वर्ण्व्या तिमइहां
पणि नवरं एतलोविशेष तेकिसो पताका विजय वैजयंती तेहनी माला तेणेकरी आकुल व्याप्त छे। वली सुरम्य रमणीकछे। देखवायोग्यछे। वली
गौतम पूछेछे। केतलाएक हेपूज्य जोतिषीना विमानावासा कह्या। हेगौतम एणीये रत्नप्रभा पहिली पृथिवीनो घणोज सम रमणीक भूमिभाग तेहथकी
सातसेनेउयोजन लगे ऊंचो उत्पतीने जईने इहां १० योजनना बाहुल्यपणां मांहि एतला आकाश प्रदेशना ऊंचपणामांहि जोतिषीनो विषयव्याप्योछे

॥ टीका ॥

॥ २१२ ॥

भंतेजोइसियाणंविमाणावासाइत्यादि अब्भुग्गयमुसियपहसियत्ति अभ्युद्गता सम्जाता उत्सृता प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा दीप्तिस्तया सिताः शुक्ला इत्यभ्युद्गतोत्सृतप्रभासिताः तथा विविधा अनेकप्रकारा मणय चन्द्रकान्तादयो रत्नानि कर्केतनादीनि तेषाम्भक्तयो विच्छित्तिविशेषा स्ताभि श्चित्राश्चि चवन्तः आश्चर्यवन्तोवेति विविधमणिरत्नभक्तिचित्राः तथा वातोद्भूता वातकम्पिता विजयो भ्युदयस्तत्संसूचिता वैजयन्तीत्यभिधाना याः पताका अथवा वि जयाइति वैजयन्तीनाम्पार्श्वकर्णिकाउच्यन्ते तत्प्रधानायावैजयंत्य स्ताश्च तद्वर्जिताः पताकाश्च छत्रातिच्छत्राणिच उपर्युपरिस्थितातपत्राणि तैः कलिता युक्ता वातोद्भूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिछत्रकलिता इति तुंगा उच्चैस्त्वगुणयुक्ता अतएव गगनतलमणुलिहंतसिहरंति गगनतल मम्बरमनुलिखदभिलंघयच्छि

॥ मूल ॥

वासा अब्भुग्गयमुसियपहसिया विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलि

॥ भाषा ॥

सगला हेठे तारा सगला उपरि शनैश्वर भूमिथकी ७०० नेउयोजन तारामंडलछे तेहथी १० योजने सूर्य ते ऊपरि ८० योजने चंद्रमा ते ऊपरि ४ योजन नक्षत्र ते ऊपरि ४ योजन बुध ते ऊपरि ३ योजन शुक्र ते ऊपरि ३ योजन बृहस्पति ते ऊपरि ३ योजन मंगल ते ऊपरि ३ योजन शनैश्वर छे। तारा मंडलथकी शनैश्वर १०० योजन मांहि सर्व जोतिषीछे। ज्योतिषीना देवता असंख्याता ज्योतिषीना विमानावासाकह्या। तेह जोतिषीना विमानावासा केहवाछे। अभ्युद्गत कहतां ऊपना विहुंदिशि प्रसरी पहत्ति एहवी प्रभा दीप्ति तेणेकरी शुक्ल ऊजला जेहनो एहवा। अनेक प्रकारनी मणि चंद्रकांतादि क रत्नते कर्केतनादिक तेहनी भक्ति भांति तेणेकरी चित्रा चित्रवंत छे। वली केहवा आश्चर्यवंत छे॰। वायरें कंपावी विजय वैजयंती पताका ने उपरि छत्र तेणे करीने कलितछे। एतावता व्यापछे। वली केहवाछे। अति ऊंचाछे गगनतल आकाश तेहने उलंघताछे शिखर जेहमा। घरनी भींतिमे विषे जा

॥ टीका ॥

खरं येषान्ते गगनतलाऽनुलिखच्छिखराः तथा जालान्तरेषु जालकमध्यभागेषु रत्नानियेषान्ते जालान्तररत्नाः इह प्रथमाबहुवचनलोपो द्रष्टव्यः जालकानि च भवनभित्तिषु लोकेप्रतीतान्येव तदन्तरेषुच शोभार्थं रत्नानि सम्भवन्त्येवेति तथा पञ्जरोन्मीलिताइव पञ्जरबहिःकृताइव यथा किलकिञ्चिद्वस्तुपञ्जरा द्वंशादिमयप्रच्छादनविशेषाद्बहिःकृतमत्यंतमविनष्टच्छायत्वा च्छोभते एवन्तेपीतिभावः तथा मणिकनकानां सम्बन्धिनो स्तूपिकाशिखरं येषां तेमणिकनकस्तूपिकाका स्तथा विकसितानियानि शतपत्रपुण्डरीकाणि द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन तिलकाश्च भित्त्यादिषु पुन्ड्राणि रत्नमयास्वये अर्द्धचन्द्राद्वाराग्रादिषु तैश्चित्रायेते विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्रा स्तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा मसृणाइत्यर्थः तथा तपनीयं सुवर्णविशेष स्तन्मय्या वालुकायाः शिकतायाः प्रस्तटः प्रतरोयेषु ततपनोयवालुकाप्रस्तटाः पाठान्तरे तु सण्हशब्दस्य वालुकाविशेषणत्वात् श्लक्ष्णतपनीयवालुकाप्रस्तटा इतिव्याख्येयं तथा सुखस्पर्शाः शुभस्पर्शा

॥ मूल ॥

या तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्वमणिकणगत्थूभियागा वियसियसयवत्त पुंडरीयतिलयरयणद्धचंदचित्ता अंतोवाहिंचसण्हा तवणिज्जवालुआपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया

॥ भाषा ॥

लियां तेहना आंतराने विषे शोभाने अर्थे रत्नकर्केतनादिक छे। पांजराथकी उन्मीलित बाहिर कीधा जेहवा तेजपुंजहुए तेहवा मणिरत्न सुवर्ण तेहनी थूभिका शिखर छे जेहना। वली केहवाछे विकसित जे शतपत्र कमल पुंडरीक छे द्वार देशने विषे। तथा भींतिने विषे तिलक छे। तथा रत्नमय अर्द्धचंद्र द्वारविभागें छे तेणेंकरी चित्रित छे। अंतो घरमांहि तथा बाहिर श्लक्ष्ण सुकुमाल छे। तपनीय सुवर्ण विशेष तेहनी वालुका तेह पाथरीछे जेहने विषे। वली केहवाछे। सुखस्पर्श सुकुमाल फरसछे। शोभायमानछे। रूप मनुष्य युग्मादिकना जिहां। वली केहवाछे। चित्तने प्रसन्नकरे वली देखिवा योग्यछे।

॥ टीका ॥

वा तथा सश्रीकं सशोभंरूपमाकारोयेषां अथवा सश्रीकाणि शोभावन्ति रूपाणि नरयुग्मादीनि रूपकाणि येषुते सश्रीकरूपाः प्रासादीया दर्शनीयाः अभि रूपाः प्रतिरूपाइतिपूर्ववत् केवइएत्यादि रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणिज्जाओभूमिभागाओत्ति बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य उड्ढं उपरि तथा चन्द्रमः सूर्यग्रहगणनक्षत्रताराऊपाणि णमित्यलंकारे वीइवइत्तत्ति व्यतिव्रज्य व्यतिक्रम्येत्यर्थः ताराऊपाणि चेह तारका एवेति तथा बह्नीत्यादि किमित्याह

॥ २१३ ॥ उड्ढं मुपरि दूरमत्यर्थंव्यतिव्रज्य चतुरशीति विमानलक्षाणि भवंतीति संबंध इति मक्खायत्ति इति एवंप्रकारा अथवा यतो भवंति तत आख्याताः

॥ मूल ॥

दरिसणिज्जा केवइयाणंभंतेवेमाणियावासा प० । गोयमा इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीएबहुसमरमणिज्जाउ भूमिभागाउ उड्ढं चंदिमसूरियगहगणनक्खत्तताराऊवाणं वीइवइत्ता बहूणिजोयणाणि बहूणिजोयणसयाणि बहूणि जोयणसहस्साणि बहूणिजोयण सयसहस्साणि जोयणकोडीउ जोयणकोडाकोडीउ असंखेज्जाउ जोयणकोडाकोडिउ उड्ढं दूरं वीइवइत्ता एत्थणं वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाणसणंकुमारमाहिंदबंभलंतग

॥ भाषा ॥

वली गौतम पूछेछे । केतला हेपूज्य वैमानिकावासा वैमानिक देवताना विमल निर्मल विमानरूप आवासा कह्या । हेगौतम एणीये रत्न प्रभा पहिली पृ थिवीनो वली घणोसम रमणीक भूमिभाग थकीऊंचो चंद्रमा सूर्य ग्रहगण नक्षत्र ताराऊपने व्यतिक्रमीने घणांयोजन घणांयोजननासेंकडा घणांयोजन नाहजार घणांयोजननालाख घणांयोजननीकोडी घणीयोजननीकोडाकोडी असंख्यातायोजननीकोडाकोडीने ऊपरि दूरं उल्लंघीने इहां वैमानिकदेवतासौ धर्म ईशान २ लगडाकार बराबरिछे ।,तेऊपरि सनत्कुमार माहेंद्र बराबरिछे । तेउपरि ब्रह्म देवलोक । ते ऊपरि लांतक । तेऊपर शुक्र । ते ऊपर सह

॥ टीका ॥

सर्ववेदिनेति तेषंति तानिविमानानि णमिति वाक्यालंकारे अच्चिमालिप्पभत्ति अर्चिमाली आदित्य स्तद्वत्प्रभांति शोभंते यानि तान्यर्चिमालिप्रभाणि तथा भासानां प्रकाशानां राशि भासराशि रादित्य स्तस्य वर्ण स्तद्वदाभा छाया वर्णो येषां तानि भासराशिवर्णाभानि तथा अरयत्ति अरजांसि स्वाभाविकरजोरहितत्वात् नोरयत्ति नीरजांसि आगंतुकरजोविरहात् निम्मलत्ति निर्म्मलानि कक्खडमलाभावात् वितिमिरत्ति वितिमिराणि अहा यांधकाररहितत्वात् विशुद्धानि स्वाभाविकतमोविरहा त्सकलदोषविरामाद्वा सर्वरत्नमयानि नदार्वादिदलमयानीत्यर्थः अच्छान्याकाशस्फटिकवत् सण्हानि

॥ मूल ॥

सुक्कसहस्सारआणयपाणयआरणअच्चुएसु गेवेज्जगमणुत्तरेसुय चउरासीइं विमाणावाससयसहस्सा सत्ताणउइंचसहस्सा तेवीसंचविमाणावत्तंतीतिमक्खाया। तेणंविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा अरया नीरया णिम्मला वितिमिरा विसुद्धा सव्वरयणामया अच्छासण्हा लण्हा घठा मठा णिप्पंका णिक्कंकडच्छा

॥ भाषा ॥

स्सार । तेऊपर आनत प्राणत लगडाकारेछे । तेऊपर आरण अच्युत । एवं १२ देवलोक थया । ते ऊपर ९ ग्रैवेयक ऊपरां ऊपर ५ अनुत्तर विमान । ए के प्रतरे चिहुंपासे ४ विजयादिक विमान विचे सर्वार्थसिद्ध । एवं १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक ५ अनुत्तर विमान मिलीने सगला ८४ लाख ९७ हजार २३ विमानछे ते भगवंते कह्याछे । तेविमानकेहवाछे । अर्चिमाली सूर्यनी सरीखो प्रभाछे जेहनी । प्रकाश दीप्तिराशि सरीखो वर्णछे जेहनो । स्वाभाविक र जना अभावथी रज रहितछे । कठिन मलना अभावथी निर्मलछे । अंधकार रहितछे । स्वाभाविक अंधकार रहितपणाथी विशुद्धछे । वली सर्वरत्न मयी छे । आकाशनी परें अच्छछे । स्फटिकरत्ननी परें सूक्ष्म पुद्गलथी नीपनांछे । सुकुमाल कीधाछे । खरशाणें करी पाषाण प्रतिमानी परे घठास्याछे । सकु

॥ २१४ ॥

॥ टीका ॥

सूक्ष्मस्कंधमयत्वात् घृष्टानीवघृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमेव मृष्टानीवमृष्टानि सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेवेति निःपंकानि कलंकविकलत्वात् कर्दमविशेषरहितत्वा द्वा । निष्कंकटा निःकंचुका निरावरणा निरुपघातेत्यर्थः । छाया दीप्ति येषां तानि निष्कंकटछायानि सप्रभाणि प्रभावंति समरीचीनि सकिरणानीत्यर्थः सोद्योतानि वस्त्वंतरप्रकाशनकारीणीत्यर्थः पासाइएत्यादिप्राग्वत् सोहम्मेणंभंते कप्पेकेवइयाविमाणावासापन्नत्ता गोयमा बत्तीसं विमाणावाससयसहस्सा पन्नत्ता एवमीशानादिष्वपि द्रष्टव्यं एतदेवाह एवंईसाणाइसुत्ति एवं गाहाहिं भाणियव्वंति बत्तीसअठ्ठवीसा इत्यादि काभिः पूर्वोक्तगाथाभि स्तदनुसारेणेत्यर्थः प्रतिकल्पं भिन्नपरिमाणाविमानावासा भणितव्या स्तद्दर्शकसूत्रवाच्चो जावतेणंविमाणेत्यादि यावत्पडिरूवा न

॥ मूल ॥

या सप्पन्ना सस्सिरीया उज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा। सोहम्मेणंभंतेकप्पे केवइया विमाणावासा प० । गोयमा बत्तीसंविमाणावाससयसहस्सा प० । एवंईसाणाइसुअठ्ठावीस वारस अठ चत्तारि एयाइं सयसहस्साइं पन्नासं चत्तालीसं छसहस्साइं चत्तारिसयाइं तिन्निसयाइं गाहाहिंभाणि

॥ भाषा ॥

मार शाणेंकरी पाषाण प्रतिमानी परे घस्याछे । कलंक रहित छे । वली आवरण रहित जेहनी छाया दीप्तिछे । प्रभा सहितछे शोभायमानछे । उद्योत सहितछे । वली समीप रही वस्तुने प्रकाशे चित्तने प्रसन्न करे एहवाछे । वली गौतमपूछेछे । हेभदंत सौधर्म पहिले देवलोके केतला विमानावास विमानलक्षण घर कह्या । हेगौतम । बत्तीसलाख विमानावासा कह्या । एम ईशाने अठ्ठावीस लाख । सनत्कुमारे १२ लाख माहेंद्रे ८ लाख । ब्रह्मे ४ लाख । लांतके ५० हजार । शुक्रे ४० हजार । सहस्रारे ६ हजार । आनत प्रानत मिली ४०० । आरण. अच्युत मिली ३०० विमान । एह सेकडां जिम प

॥ टीका ॥

वर मभिलापभेदोयं यथा ईसाणेणंभंते कप्पे केवइयाविमाणावासापन्नत्ता गोयमा अट्ठावीसं विमाणावास सयसहस्सा पन्नत्ता तेणंविमाणा जावपडिरूवा एवं सर्वं पूर्वोक्तगाथानुसारेण प्रज्ञापना द्वितीयपदानुसारेण च वाच्यमिति अनंतरं नारकादिजीवानां स्थानान्युक्ता अथ तेषामेव स्थिति मुपदर्शयितु माह नेरइयाणंभंतेइत्यादि सुगमं नवरं स्थिति र्नारकादिपर्यायेण जीवानामवस्थानकाल: अपज्जत्तयाणंति नारका: किल लब्धित: पर्याप्तका एव भवंति करणतस्तू पपातकाले अन्तर्मुहूर्त्तं यावदपर्याप्ता भवन्ति तत: पर्याप्तका स्ततएषा मपर्याप्तकत्वेन स्थिति र्जघन्यतो प्युत्कर्षतोपिचां तर्मुहूर्त्तमेव पर्याप्तका ना म्पुनरौघिक्येव जघन्योत्कृष्टा चान्तर्मुहूर्त्तोनाभवतीति अथ चेहपर्याप्तकापर्याप्तकविभाग: नारयदेवातिरिमणुय गब्भयाजेअसंखेज्जवासाऊ एतेउअपज्ज त्ता उववाए चेववोधव्वा। सेसायतिरियमणुया लद्धिंपप्पोववायकालेय। दुहओवियभइयव्वा पज्जत्तियरेयजिणवयणंति। उक्ता सामान्यतो नारकस्थिति र्विशेष त स्तामभिधातु मिदमाह इमीसेणमित्यादि स्थितिप्रकरणञ्च सर्वंप्रज्ञापनाप्रभिइ मित्यतिदिशन्नाह एवमिति यथाप्रज्ञापनायां सामान्यपर्याप्तकापर्याप्तक लक्षणेन गमत्रयेण नारकाणां नारकविशेषाणां तिर्यगादिकानाञ्च स्थितिरुक्ता एवमिहापिवाच्या कियद्दूरं यावदित्याह जावविजयेत्यादि अनुत्तरसुराणा मौघिकपर्याप्तापर्याप्तकलक्षणं गमत्रयं यावदित्यर्थ: इहचैव मतिदिष्टसूत्राण्यर्थतो वाच्यानि रत्नप्रभानारकाणा भदन्तकियतीतिस्थिति र्गौतम जघन्येन दश

यव्वं। नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं दसवाससहस्साइं उक्कोसेणंतेत्तीसं ॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥ हिले गाथामांहि कहि आयाछे तिम कहिबो। हिवे २४ दंडकने विषे जेजीव तेहना आउखानो स्वरूप पूछेछे। हेपूज्य नारकीनो केतला काल लगे स्थिति आउखो कह्यो। हे गौतम सर्वथापि थोडोतो १० हजार वर्षनो स्थिति कह्यो। पहिली नरकनो अपेक्षायें उत्कृष्टोस्थिति तेत्रीस सागरोपमलगे क

॥ टीका ॥

वर्षसहस्राणि उत्कर्षतः सागरोपमं १ अपर्याप्तकरत्नप्रभापृथिवीनारकाणां भदन्त कियन्तं कालं स्थितिः प्रज्ञप्ता गौतमो भयथापि अन्तर्मुहूर्त्तमेव म्पर्याप्तका
नां सामान्योक्तयैवांतर्मुहूर्त्तोनावाच्यैवंशेषपृथिवीनारकाणां प्रत्येकंदशाना मसुरादीनां पृथिवीकायिकानां तिरश्चा ङ्गर्भजेतरभेदानां मनुष्याणां व्यन्तराणा म
ष्टविधानां ज्योतिष्काणा म्पञ्चप्रकाराणां सौधर्म्मादीनां वैमानिकाना ञ्च गमत्रय म्वाच्यं इहच विजयादिषु जघन्यतो द्वात्रिंशत्सागरोपमान्युक्तानि गन्धह

॥ मूल ॥

सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्जत्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयंकालं ठिई प० । जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं उक्को
सेणवि अंतोमुहुत्तं । पज्जत्तगाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं अंतोमुहुत्तूणाइं । उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरो
वमाइं अंतोमुहुत्तूणाइं इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए एवंजावविजयवेजयंतजयंतअपराजियाणं देवाणं

॥ भाषा ॥

हो । पणि ३३ सातमीनो अपेक्षाथी । वली पूछेछे । हेपूज्य अपर्याप्तावस्थायें केतला काल लगे स्थिति कही । हेगौतम जघन्यपणे अंतर्मुहूर्त्त उत्कृष्टपणे
पणि अंतर्मुहूर्त्त । पछे पर्याप्ता होय । पर्याप्ता नारकीनी हेपूज्य केतला काललगे स्थिति हेगौतम पर्याप्तानी जघन्यपणे १० हजार बर्षनी पहिली नर
कनी अपेक्षायें अंतर्मुहूर्त्त ऊंणी । उत्कृष्टी सातमीये अंतर्मुहूर्त्तऊंणी तेत्रीस सागरोपमनी । अंतर्मुहूर्त्त अपर्याप्तावस्थानो ऊंणो जाणिवो । हे पूज्य एणीयें
रत्नप्रभा पृथिवीयें जघन्य आऊखो केतलो हेगौतम जघन्यतो १० हजार वर्षनो उत्कृष्टो १ सागरोपम । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री मनुष्य तिर्यंच भवन
पती व्यंतर ज्योतिषी १२ देवलोक ९ ग्रैवेयक लगे जघन्य उत्कृष्टो आऊखो ग्रंथांतरथकी कहिवो । अनुत्तर विमान पूछेछे । हे भगवंत विजय वैजयंत ज
यंत अपराजित विमाने केतली देवतानी स्थिति कही । गौतम जघन्यपणें ३२ सागरोपम उत्कृष्टपणें ३३ सागरोपमनी कही । ५ मेसर्वार्थ सिद्ध विमाने

॥ टीका ॥

स्थादिष्वपि तथैवदृश्यते प्रज्ञापनायांत्वे कस्मिंश्चदुक्तेति मतान्तरमिदं पर्याप्तकापर्याप्तकगमद्वय मिह समूह्यमेवं सर्वार्थसिद्धिस्थितिरपि त्रिभिर्गमै र्वाच्येति अ नन्तरं नारकादिजीवानां स्थितिरुक्ता दानींतच्छरीराणा मवगाहनाप्रतिपादनायाह कइयाणंभंतेइंत्यादि कंठ्यं नवर मेकेंद्रियौदारिकशरीरमित्यादौ याव त्करणा द्विविचतु:पञ्चेन्द्रियौदारिकशरीराणि पृथिव्याद्येकेंद्रियजलचरादिपञ्चेंद्रियभेदेन प्राक्प्रदर्शितजीवराशिक्रमेण वाच्यानि कियद्दूरमित्यादि गब्भवक्कंतिइ

॥ मूल ॥

केवइयंकालं ठिई प० । गोयमा जहन्नेणं बत्तीसं सागरोवमाइं उक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं सव्वठे ञ्ज जहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसंसागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता । कतिणं भंतेसरीरा प० । गोयमा । पंचसरीरा प० तं० । उरालिए वेउव्विए आहारए तेए कम्मए उरालियसरीरेणं भंतेकइविहे प० । गोयमा पंचविहे प० तं० । एगिंदियउरालियसरीरे जावगब्भवक्कंतियमणुस्सपंचिंदियउरालियसरीरेय । उरालियसरीरस्सणं भंते

॥ भाषा ॥

अजघन्य नथी उत्कृष्ट ३३ सागरोपमनी कही । हिवे स्थितिछे ते शरीराधीनछे । तेमाटे शरीर नूं स्वरूप पूछेछे । हेपूज्य शरीर केतलाकह्या । गौतम ५ श रीर कह्या । ते कहेछे । औदारिक १ वैक्रिय २ आहारक ३ तेजस ४ कार्मण ५ हेपूज्य औदारिक शरीर केतले प्रकारे कह्यो । गौतम ५ प्रकारे । एकेंद्री औदारिक शरीर १ एम बेइंद्री औदारिक शरीर २ तेइंद्री औदारिक ३ चौरिंद्री औदारिक शरीर ४ पंचेंद्री संमूर्च्छिम तिर्यंच औदारिक शरीर गर्भज पचेंद्रिय तिर्यंच औदारिक शरीर समूर्छिम मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिक शरीर गर्भव्युत्क्रांत मनुष्य पंचेंद्रिय औदारिकशरीर ५ एह सर्वनो औदारिक शरीर जाणिवो । औदारिकशरीरनी केवडो मोटो अवगाहनां कही, हेगौतम जघन्यपणे अंगुलने असंख्यात मे भाग पृथिवीनो अपेक्षायें । उत्कृष्टसातिरेक भा

॥ टीका ॥

त्वादि औरालियशरीरमित्यादि तत्रोदार प्रधानं तीर्थंकरादिशरीराणि प्रतीत्य अथवौरालम्विशालं समधिकयोजनसहस्रप्रमाणत्वात् वनस्पत्यादि प्रतीत्य अथवा उरालंस्वल्पप्रदेशोपचितत्वात् वृहत्वाच्च भाण्डवदिति अथवा मांसास्थिस्नायुबद्धं यच्छरीर न्तत्समयपरिभाषया उरालमिति तच्च तच्छरीरच्चेति प्राकृत त्वादौरालियंशरीरं तस्याऽवगाहन्ते यस्यांसाऽवगाहना आधारभूतंक्षेत्रं शरीराणा मवगाहना शरीरावगाहना अथ चौदारिकशरीरस्य जीवस्य औदारिक शरीररूपावगाहना सा भदन्त केमहालिया किन्महती प्रज्ञप्ता तत्र जघन्येनाङ्गुला संख्येयभागंयावत् पृथिव्याद्यपेक्षया उत्कर्षेण सातिरेकं योजनसहस्रमिति बादरवनस्पत्यपेक्षयेति एवंजावमणुस्सेति इहएवं यावत्करणा दवगाहनासंस्थानाभिधानप्रज्ञापनैकविंशतितमपदाभिहितग्रन्थो ऽर्थतो यमनुसरणीयः तथा हि एकेंद्रियौदारिकस्य पृच्छानिर्वचनच्च तदेव तथा पृथिव्यादीनां चतुर्णा म्बादरसूक्ष्मपर्याप्तापर्याप्तानां जघन्यत उत्कृष्टतश्चा ङ्गुलासंख्येयभागो वनस्पतीनां बादरपर्याप्ताना मुत्कर्षतः साधिकं योजनसहस्रं शेषाणां त्वङ्गुलासंख्येयभागएव द्वित्रिचतुरिंद्रियाणा म्पर्याप्ताना मुत्कर्षतस्त्वानुक्रमेण द्वादशयोजनानि त्री णिगव्यूतानि चत्वारिचेति पञ्चेंद्रियतिरश्चां जलचराणां पर्याप्तानां गर्भजानां संमूर्च्छनजानां चोत्कर्षतो योजनसहस्रं एवं स्थलचराणां चतुष्पदानां संमूर्च्छन जाना म्पर्याप्तानां गव्यूतपृथक्त्वं गर्भव्युत्क्रान्तिकानां तेषां षट्गव्यूतानि उरःपरिसर्पाणां गर्भव्युत्क्रान्तिकानां योजनसहस्रं एवमेव संमूर्च्छनजानां योजन

॥ मूल ॥

केमहालिया सरीरोगाहणा पन्नत्ता। गोयमा जहन्नेणं अंगुलअसंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं साइरेगं जोय

॥ भाषा ॥

अरी योजन सहस्र बादर वनस्पतीनी अपेक्षायें। जिम अवगाहना तिम ५ संस्थान पिण कहिवो। सर्व औदारिक बेइन्द्री तेइन्द्री चोरिन्द्री पंचेन्द्री ति र्यंचनो मान तिमज निरवशेस समस्तपणे तरतमयोगे कहिबो जिहां लगे मनुष्य औदारिक शरीर नो मान उत्कृष्टो ३ गाऊ युगलियानी अपेक्षायें। हिवे

॥ टीका ॥

पृथक्त्वं भुजपरिसर्पाणां गर्भजानां गव्यूतपृथक्त्वम् संमूर्छनजानां धनुः पृथक्त्वं खचराणां गर्भजानां संमूर्छनजानां च धनुःपृथक्त्वमेव तथामनुष्याणां गर्भव्युत्क्रान्ति
कानां गव्यूतत्रयं संमूर्छनजाना मङ्गुलासंख्येयभागः एषएव सर्वत्र जघन्यपदे अपर्याप्तपदेचेति तथा कइविहेणमित्यादि सुगमं नवरं विविधा विशिष्टावा
क्रियाविक्रियातस्या भव स्वैक्रिय म्विविध म्विशिष्ट म्वाकुर्वन्ति तदिति वैकुर्विकं मितिवा तत्रै केन्द्रियवैक्रियशरीर म्वायुकायस्य पञ्चेंद्रियवैक्रियशरीरं
नारकादीनामेवं जावेत्यादेरतिदेशादिदं द्रष्टव्यं यदुत जइएगिंदियवेउव्वियसरीरए किंवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियसरीरए अवाउकाइयएगिंदियवेउव्वियश
रीरए गोयमा वाउकाइयएगिंदियसरीरए नोअवाउकाइय इत्यादिना भिलापेना यमर्थोदृश्यः यदिवायोः किंसूक्ष्मस्य वादरस्यवा वादरस्यैव यदि वादरस्य
किम्पर्याप्तकस्या पर्याप्तकस्यवा पर्याप्तकस्य यदि पचेंद्रियस्य किंनारकस्य पंचेंद्रियतिरश्चांमनुजस्यदेवस्यवा गौतम सर्वेषां तत्रनारकस्य सप्तविधस्य पर्याप्तक
स्ये तरस्यच यदितिरश्चः किं सम्मूर्छिमस्य इतरस्यवा इतरस्य तस्यापिसंख्यातवर्षायुषएवपर्याप्तस्य तस्यापिच जलचरादिभेदेन त्रिविधस्यापि तथा मनुष्यस्य

॥ मूल ॥

णसहस्सं एवंजहा उगाहणसंठाणे उरालियपमाणं तहानिरवसेसं एवंजावमणुस्सेत्ति । उक्कोसेणंतिन्निगाउ
याइं । कइविहेणं भंते वेउव्वियसरीरे प० । गोयमादुविहे प० । एगिंदियवेउव्वियसरीरेय पंचिंदियवेउ

॥ भाषा ॥

वैक्रिय शरीरनो भाग पूछे छे । हे पूज्य केतले प्रकारे वैक्रिय शरीर कह्यो । हे गौतम बे प्रकारे कह्यो । एकेंद्री वैक्रिय शरीर तेहवायुनी अपेक्षाये । बीजो
पंचेंद्रिय वैक्रिय शरीर तेह पंचेंद्रिय गर्भज तिर्यंच मनुष्यने लब्धि विशेषे होय । भवधारणीय वैक्रिय शरीर नारकी भवनपती व्यंतर ज्योतिषी सौधर्म ईशा

॥ टीका ॥

गर्भजस्यैवतस्यापि कर्मभूमिजस्यैव तस्यापि संख्यातवर्षायुषएवं पर्याप्तकस्येवच तथा देवस्यभवनवास्यादेः तत्रा सुरादेर्दशविधस्य पर्याप्तकस्येतरस्यच एवं व्यंत
रस्याष्टविधस्य ज्योतिष्कस्यपञ्चविधस्य तथा यद्विवैमानिकस्य किल्पोपपन्नस्य कल्पातीतस्य उभयस्यापि पर्याप्तस्या पर्याप्तस्यचेति तथा वैक्रियभदन्तकिंसंस्थि
॥२१७॥ त' उच्यते नानासंस्थितं तत्र वायोःपताकासंस्थितं नारकाणा भवधारणीय मुत्तरवैक्रियञ्च हुंडसंस्थितं पंचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणां नानासंस्थितं देवाना भवधा
रणीयं समचतुरस्रसंस्थानसंस्थित मुत्तरवैक्रियं नानासंस्थितं केवलं कल्पातीताना भवधारणीयमेव तथा वैक्रियसरीरावगाहना भदन्तकिम्महती गौतम जघ
न्यतोंगुलाऽसंख्येयभाग मुत्कर्षतः सातिरेकं योजनलच्च स्वायोरुभयथा अङ्गुलासंख्येयभाग एवं नारकस्यजघन्येनभवधारणीय उत्कर्षतः पञ्चधनुः शतानि एषा
च सप्तम्यांषष्ठ्यादिषु त्वियमेवा र्द्धार्द्धहीनेति उत्तरवैक्रियातु जघन्यतः सर्वेषा मप्यङ्गुलासंख्येयभाग मुत्कर्षत स्व नारकस्यभवधारणीयद्विगुणेति पंचेंद्रियतिर
श्चां योजनशतपृथक्त्व मुत्कर्षतः मनुष्याणां तूत्कर्षतः सातिरेकं योजनानां लच्चं देवानांतुलच्चमेवोत्तरवैक्रिय भवधारणीयंतु भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशा
नानां सप्तहस्ताः सनत्कुमारमाहेंद्रयोः षट् ब्रह्मलान्तकयोः पञ्च महाशुक्रसहस्रारयो श्चत्वार आनतादिषुत्रयो ग्रैवेयकेषुद्वा वनुत्तरेष्वेक इति अनन्तरोक्तं

॥ मूल ॥

व्वियसरीरेच्च । एवंजाव सणंकुमारेच्चाढत्तं जावच्चणुत्तराभवधारणिज्जा जावतेसिं रयणीरयणीपरिहायइ ।

॥ भाषा ॥

न लगे सात हाथनो होय । समत्कुमार थी मांडी अनुत्तर विमान लगे भवधारणीय शरीर । बे बे देवलोके एकेक हाथ घटाडिये । ते किम सनत्कुमार
माहेंद्रे ६ हाथनं । ब्रह्मलांतके ५ हाथगे । शुक्रसहस्रारे ४ हाथनो । आनत प्राणत आरण अच्युते ३ हाथनो । नवग्रैवेयके २ हाथनो । पंचानुत्तरे १ हाथ

॥ टीका ॥

सूत्रतएवाह एवंजावसणंकुमारेत्यादि एवमिति दुविहेपन्नत्ते एगिंदियइत्यादिना पूर्वदर्शितक्रमेण प्रज्ञापनोक्तं वैक्रियावगाहनामानसूत्रं वाच्यं कियद्दूरमित्या दि यावत्सनत्कुमारेआरब्ध भवधारणीयवैक्रियशरीरपरिहाणमितिगम्यं ततोपि यावदनुत्तराणि अनुत्तरसुरसम्बन्धीनि भवधारणीयानि शरीराणि यानिभ वन्तितेषांरत्नी रत्निःपरिहीयतइति एतदर्थंसूत्रंभवेत्तावदिति पुस्तकान्तरेत्वि दम्वाक्य मन्यथापि दृश्यते तत्राप्यक्षरघटनै तदनुसारेणकार्येति आहारयेत्या दि सुगम नवरं एवमिति यथापूर्व आलापकः परिपूर्णं उच्चारितः एवमुत्तरत्रापि तथाहि जइमणुस्सत्ति जइमणुस्साहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्साहार गसरीरे समुच्छिममणुस्साहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे नोसमुच्छिममणुस्साहारगसरीरे जइगब्भवक्कंतियइत्यादि सर्वंसूत्रं जावजइप मत्तसंजयअपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे किंइड्ढिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तसंखेज्जवासाउयक

॥ मूल ॥

आहारयसरीरेणं भंते कइविहे पन्नत्ते । गोयमा एगाकारे प० । जइएगाकारे प० । किंमणुस्सआहारय सरीरे अमणुस्सआहारयसरीरे । गोयमा मणुस्सआहारगसरीरेणोअमणुस्सआहारगसरीरे । एवंजइमणु

॥ भाषा ॥

नो शरीर । बेहुं गतिना उत्तर वैक्रिय शरीरनो मानगाथाथी कहिवो । नरदेवलक्खमहियं । तिरियाणंजोयणाणिनवसयाइं । दुगुणंतुनारयाणं उक्कोसवेउ व्वियाभणिया ॥ १ ॥ अंतोमुहुत्तनिरए मुहुत्तचत्तारितिरियमणुएसु । देवेसु अद्धमासो उक्कोसवेउव्वियाकालो ॥ २ ॥ आहारक शरीर ते पूर्वधर जिन ऋ द्धिजोइवाने अथवा संदेहपूछिवाने तीर्थंकर पासे जाइवाने अर्थे करे १ हाथनो शरीर अंतर्मुहूर्त्त लगे रहे । ते १ प्रकारे छे । वली गौतम पूछे छे । हेपूज्य १ प्रकारे आहारक शरीर कह्यो ते मनुष्य आहारक शरीर होय किंवा अमनुष्य आहारक शरीर होय । हे गौतम मनुष्यने आहारक शरीर होय । परं

॥ टीका ॥ अभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे अपिड्डिपत्तपमत्तसंजयसम्मदिट्ठिपज्जत्तयसंखेज्जवासाउयकम्मभूमिगगब्भवक्कंतियमणुस्साहारगसरीरे गोयमा इ

॥ मूल ॥ स्सआहारगसरीरे किंगब्भवक्कंतियमणुस्सआहारगसरीरे समुच्छिममणुस्सआहारगसरीरे गोयमा गब्भवक्कं तियमणुस्सआहारयसरीरे नोसमुच्छिममणुस्सआहारयसरीरे। जइगब्भवक्कंतिया किंकम्मभूमिगा अकम्मभूमिगा गोयमा कम्मभूमिगा नोअकम्मभूमिगा। जइकम्मभूमिग किंसंखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय। गोयमा नोअसंखेज्जवासाउय। जइसंखेज्जवासाउय किंपज्जत्तया अपज्जत्तया गोयमा पज्जत्तयानोअपज्जत्तया। जइपज्जत्तया किंसम्मदिठी मिच्छदिठी सम्मामिच्छदिठी। गोयमा सम्मदिठी नोमिच्छदिठी नोस

॥ भाषा ॥ ममनुष्यने आहारक नहोय। जोमनुष्यने होय तो गर्भ व्युत्क्रांतनेहोय वा सनूर्च्छिमने होय। हेगौतम गर्भजने होय सनूर्च्छिम ने नहोय। हेपूज्य गर्भजने होय तो १५ कर्मभूमिगतने होय किंवा ३० अकर्म भूमिगतनें होय। हे गौतम कर्मभूमिगत मनुष्यने होय अकर्मभूमिगत मनुष्यने न होय। हे पूज्य कर्मभूमिगत मनुष्यने होय तो संख्यात वर्षायुष्कने होय किंवा असंख्यात वर्षायुष्कने होय। हे गौतम संख्यात वर्षायुष्कने होय पणि असंख्यात वर्षायुष्कने नथी। हे भदंत संख्यात वर्षायुष्क ने होय तो पर्याप्ता ने होय किंवा अपर्याप्तने होय। हे गौतम पर्याप्ताने होय पणि अपर्याप्ताने न होय। हे भदंत पर्याप्ताने होय तो सम्यग्दृष्टीने होय किंवा मिथ्यादृष्टीने। हे गौतम सम्यग्दृष्टीने होय परं मिथ्यादृष्टीने नही। सम्यग्मिथ्यादृष्टीने पणि नहोय। हेभदंत सम्यग्दृष्टी ने होय तो साधु यतीने होय किंवा असंयत अविरतीलोक संयतासंयत श्रावकने होय। हेगौतम संयतीने होय। पणि असंयतीने नहोय। संय

तीयस्यनिषेधः प्रथमस्यचा मुद्मा वाच्या एतदेवाह वयणाविभागियव्वत्ति सूचितवचनान्यप्युक्तन्यायेनसर्वाणिभणनीयानि विभागेनपूर्णान्युच्चारणीयानीत्यर्थः ॥ टीका ॥
आहारगत्तिआहारगशरीरस्सकेमहालियासरीरोगाहणापन्नत्तागोयमाइत्येतत्सूचितंजहन्नेणंदेसूणारयणीति कथमुच्यते तथाविधप्रयत्नविशेषत स्तथा रम्भक
द्रव्यविशेषत स्व प्रारम्भकाले प्युक्तप्रमाणभावात् नहीहौदारिकादेरिवां गुलासंख्येयभागमात्रता प्रारम्भकाले इतिभावः तेयासरीरेणंभंतेइत्यादि एवं यावत्कर

म्मामिच्छादिठी। जइसम्मदिठी किंसंजया असंजया संजयासंजया गोयमा संजया नोअसंजया नोसंजया ॥ मूल ॥
संजया। जइसंजया किंपमत्तसंजया अपमत्तसंजया। गोयमा पमत्तसंजया नोअपमत्तसंजया। जइपम
त्तसंजया किंइढ्ढिपत्ता अणिढ्ढिपत्ता गोयमा इढ्ढिपत्ता नोअणिढ्ढिपत्ता। वयणाविभाणियव्वा आहारयस
रीरे समचउरंससंठाणसंठिए। आहारय सरीरे जहन्नेणं देसूणारयणी उक्कोसेणं पडिपुन्नारयणी । तेअ

ता संयतने पणि न होय। हेपूज्य संयतीनेहोय तो प्रमत्तसंयती ६ ठागुणठाणवालाने होय किंवा अप्रमत्त संयतीने होय । हे गौतम ६ ठागुणठाणवासी ॥ भाषा ॥
प्रमत्तसंयत लब्धि प्रयुंजे तेमाटे प्रमत्तनेहोय। पणि अप्रमत्तलब्धि फोरवे नथी तेमाटे अप्रमत्त ने न होय । जो अप्रमत्तने होय तो ऋद्धिप्राप्तने होय
किम्वा अनृद्धिप्राप्तने होय। हे गौतम शरीर करवानो लब्धिरूपऋद्धि पाईहोय ते ऋद्धिप्राप्तने होय। अनर्द्धिप्राप्तने न होय। उक्तन्याये कह्या वचन सग
ला भणिवा। आहारकशरीर समचउरंस संस्थान संस्थित होय। आहारक शरीर जघन्य थोडो सर्वकाले देसूणा कांईकऊणा हाथ अने संपूर्ण होयतो
१ हाथहोय। हिवे चौथा तेजस शरीरनो स्वरूप पूछे छे। तेजस शरीर हे भदंत केतले प्रकारे कह्यो ॥ हे गौतम तेजस शरीर ५ भेदे कह्यो। एकेंद्रियतेज

॥ टीका ॥

या अप्रज्ञापनासत्वेकविंशतितमपदोक्ता तैजसशरीरवक्तव्यता इहवाच्या साचेय मर्थतः एगिंदियतेयगशरीरेणंभंतेकतिविहे गोयमा पंचविहेपन्नत्ते तंजहा पुढवीजाववणस्सइकाइएगिंदियतेयगसरीरे एवं जीवराशिप्ररूपणाऽनुसारेण सूत्र भावनीयं यावत् सव्वट्ठसिद्धगअणुत्तरोववाइयकप्पातीतवेमाणियदेवपं चेंदियतेयगसरीरे तेयगसरीरेणंभंते किंसंठिए नाणासंठिए यस्य पृथिव्यादिजीवस्य यदौदारिकादिशरीरसंस्थानं तदेव तैजसस्य कार्म्मणस्यच तथा जीवस्य

॥ २१९ ॥ मारणान्तिकसमुद्घातगतस्य कियती तैजसी शरीरावगाहना शरीरमात्रा विष्कम्भबाहल्याभ्या मायामतस्तु जघन्येना ङ्गुलस्याऽसंख्येयभाग उत्कर्षत ऊर्द्धमधश्च

॥ मूल ॥

सरीरेणं भंते कतिविहे पन्नत्ते । गोयमा पंचविहेपन्नत्ते । एगिंदिय तेयसरीरे वितिचउपंचएवंजाव गेवेज्ज स्सणं भंते देवस्समारणंतियसमुग्घाएणं समोहयस्ससमाणस्स केमहालियासरीरोगाहणा पन्नत्ता । गोयमा

॥ भाषा ॥

स १ वेइन्द्रीतेजस २ तेरिंद्री तेजस ३ चौरिंद्री तेजस ४ पंचेंद्रीतेजस ५ । तेजस शरीरनो संठाण अनेक प्रकारनो । गौतम पहिले स्कंध वचने पूछेछे । मरणां तिक समुद्घात प्राप्तजीवना तेजसशरीरनो अवगाहनां केतलो । भगवंत कहे छे । विष्कंभपणे बाहल्यपणे तेजस शरीरावगाहना शरीर प्रमाणे । जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग । उत्कृष्ट ऊंचो नीचो हेठिला लोकांतलगे । कार्मणशरीरनो पणि एमज अवगाहना एह एकेंद्रीय आश्रित जाणिवो । उत्पत्तिसमये वेरिंद्रिय तेरिंद्रिय चोरिंद्रियना तेजस शरीरनो अवगाहना उत्कृष्टलांबपणे तिर्यक्लोके लोकांतलगे । एम २३ दंडकना तेजसशरीरनो अवगाहना टीका थीजाणवी जिहां लगे ग्रैवेयकनादेवता मारणांतिकसमुद्घाते समोहितहोय एतले मरणसमुद्घात करतोहोय तिवारे देवतानो केवडीमोटी तेजस शरीरोगा हना कहिवी । हे गौतम शरीरप्रमाणे जाणवी । विष्कंभपणे पिहुलपणे बाहल्यपणे जाडपणे औदारिकशरीर प्रमाणे तेजस शरीरनो अवगाहना । आयामे

|| टीका ||

लोकान्ता लोकान्तंयाव देकेन्द्रियस्य तत स्तत्रोत्पत्ति मङ्गीकृत्येतिभाव: एवं सर्वेषामेवैकेंद्रियाणां द्वीन्द्रियाणान्तु आयामत उत्कर्षेण तिर्यग्लोका ल्लोकांतंयावत्प्राय स्तिर्यग्लोके द्वीन्द्रियादितिरश्चाभावात् नारकस्य जघन्यतो योजनसहस्रं कथं नारका त्पातालकलशस्य सहस्रमानं कुड्यभित्त्वा तत्र मत्स्यतयो त्पद्यमानस्य उत्कर्षेणतु अध: सप्तमींयावत् सप्तमपृथ्वीनारकं समुद्रादिमत्स्येषू त्पद्यमान मतीत्य तिर्यक्स्वयम्भूरमणंयावत् ऊर्द्ध मपण्डकवनपुष्करिणींयावत् यतस्तयो र्नारका उत्पद्यते नपरत: मनुष्यस्य लोकान्तंयावत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवानां जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: स्वस्थान एव पृथिव्यादितयो त्पादात् उत्कर्षतस्तु अधस्तृतीयपृथ्वींयावत् तिर्यक्स्वयम्भूरमणवेदिकान्तं ऊर्द्धमीषत्प्राग्भारां यावत् यत एतेषुच पर्याप्तबादरेष्वेव पृथिव्यादिषू त्पद्यन्ते मतो नपरतोपीति सनत्कुमारादिसहस्रारान्तदेवानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथं पण्डकवनादिपुष्करिणीमज्जनार्थं मवतारे मृतस्य तत्रैव मत्स्यतयो त्पद्य मानत्वात् पूर्वसम्बन्धिनीम्वा मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मपरिष्वज्य मृतस्यतद्गर्भे समुत्पादादिति उत्कर्षतस्तु अधोयाव महापातालकलसानां द्वितीय स्त्रिभाग स्तत्र हि जलसद्भावात्मत्स्येषूत्पद्यमानत्वात् तिर्यक्स्वयम्भूरमणसमुद्रंयावत् ऊर्द्धमच्युतंयाव त्तत्रहि सङ्गतिकदेवनिश्रयागतस्य मृत्वेहोत्पद्यमानत्वादिति आनता दीना मच्युतानान्तु जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभाग: कथ मिहागतस्य मरणकालविपर्यस्तमते र्मनुष्योपभुक्तास्त्रिय मपभिष्वज्य मृतस्य तत्रैवोत्पत्तेरिति उत्कर्षत स्त्वधोयाव दधोलोकग्रामान् तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रे ऊर्द्ध मच्युतविमानानियावत् मनुष्येष्वेवोत्पद्यन्ते इति भावनातथैवकार्या ग्रैवेयकानुत्तरोपपातिदेवानां जघन्य

|| मूल ||

सरीरप्पमाणमेत्ती विक्खंभवाहल्लेणं आयामेणं जहन्नेणं जावविज्जाहरसेढीउ उक्कोसेणं अहोलोइयग्गामा

|| भाषा ||

लांबपणे जघन्य हेठे विद्याधर श्रेणी लगे।गैवेयक देवताना तैजसनो अवगाहना एतलेमरतीवेला तिहांलगे तैजस कामर्णशरीरना प्रदेश विस्तारे उत्कृष्टो

तो विद्याधरश्रेणींयावत् उत्कर्षतो ऽधोयाव दधोलोकग्रामान्' तिर्यग्मनुष्यक्षेत्रं उर्द्धं तद्विमानान्येवेति एवं कार्म्मणस्या प्यवगाहना द्रष्ट्या समानत्वा देवतयो रिति उक्तार्थमेव सूत्रांशमाह.। गेवेज्जगस्सणमित्यादि अनन्तरं शरीरिणा मवगाहना धर्म्मउक्तो ऽधुना त्ववधिधर्म्मप्रतिपादनायाह ॥ भेदेइत्यादि द्वारगाथा तत्र भेदो वधेर्वक्तव्यो यथाद्विविधो वधि र्भवप्रत्ययः चायोपशमिकश्च तत्र भवप्रत्ययो देवनारकाणां चायोपशमिको मनुष्यतिरश्चामिति तथा विषयो गोचरो

॥ २२० ॥ ऽवधे र्वाच्यः सच चतुर्द्धा द्रव्यतः क्षेत्रतः कालतो भावतश्च तत्र द्रव्यतो जघन्येन तेजोभाषयो रग्रहणप्रायोग्यानि द्रव्याणि जानाति उत्कर्षत स्तु सर्वं मेकाणे

उ उड्ढं जावसयाइं विमाणाइं तिरियंजावमणुस्सखेत्तं । एवंजावअणुत्तरोववाइया । एवं कम्मयसरीरंपित्ता णियव्वं । भेदेविसयसंठाणे अभिंतरबाहिरेयदेसोही । उहिस्सवुड्ढिहाणी पडिवाईचेवअपडिवाई ॥ १ ॥ कति

हेठें जिहांलगे आधोग्राम पश्चिम महाविदेह क्षेत्रना तिहांलगे । ऊंचो जिहांलगे पोतानुंविमान । तिरछो मनुष्य क्षेत्र लगे ग्रैवेयकदेवनां तैजस शरीरनी अवगाहना । एमजग्रैवेयकनोपरे अनुत्तर विमानवासी देवना तैजस शरीरोगाहना जाणवी । तैजस शरीरनी परें कार्मण शरीरनी अवगाहना जाणवी संठाण पणि तिमज जाणिवो । हिवे अवधिज्ञानना भेद कहेछे । प्रथम अवधिज्ञानना बेभेद एक भवप्रत्यय १ वीजो चायोपसमिक । तेमांहि भवप्रत्यय अवधिज्ञान देवता नारकीने होय । चायोपसमिक मनुष्य तिर्यंचने होय । तथा अवधिज्ञान गोचर विषय ते चारप्रकारे । द्रव्यतः १ क्षेत्रतः २ कालतः ३ भावतः ४ तेमांहि द्रव्यथकी जघन्यपणें तैजस अनें भाषानें अग्रहणयोग्यद्रव्यजाणें । उत्कृष्ट सर्व एकादिअनंताणुकांत रूपीद्रव्यने जाणे । तथा क्षेत्रथी जघन्य अंगुलनो असंख्येयभाग जाणे । उत्कृष्ट असंख्याता अलोकने विषे लोकमात्र खंड जाणें । कालतः जघन्य आवलिकानो असंख्यातमोभाग अतीत अनाग

॥ टीका ॥

कायमनन्ताणुकान्तं रूपिद्रव्यजातं जानाति क्षेत्रं जघन्यतो ऽङ्गुलासंख्येयभागं जानाति उत्कर्षतो ऽसंख्येयान्यलोके लोकमात्राणि खण्डानि जानाति कालं जघन्यत आवलिकाया असंख्येयभाग मतीतमनागतञ्च जानाति उत्कर्षतः संख्यातीता उत्सर्पिण्यवसर्पिणीर्जानाति भावतो जघन्यतः प्रतिद्रव्य चतुरोवर्णादीन् उत्कर्षतः प्रतिद्रव्य मसंख्येयान् सर्वद्रव्यापेक्षया त्वनन्तानिति तथा संस्थान मवधेर्वाच्यं यथा नारकाणां तप्राकारो वधिः पल्याकारो भवनपतीना म्पटहाकारो व्यन्तराणां झल्लर्याकृति र्ज्योतिष्काणां मृदङ्गाकारः कल्पोपपन्नानां पुष्पावलीरचितशिखरचंगेर्याकारो ग्रैवेयकानां कन्याचोलकसंस्थानो ऽनुत्तरसुराणां लोकनाल्याकृति रित्यर्थः तिर्यग्मनुष्याणान्तु नानासंस्थानइति तथा अभ्भंतरत्ति के अवधिप्रकाशितक्षेत्रस्या भ्यन्तरे वर्त्तन्ते इतिवाच्यन्तत्र नेरइयदेवतित्थंकरा यओहिस्सबाहिराहुंतीत्यादि तथा बाहिरियत्ति के वधिक्षेत्रस्य बाह्या भवन्तीति वाच्यम् तत्रनेरइयदेवत्ति शेषाजीवा बाह्यावधयो ऽभ्यन्तरावधयश्च भवन्ति

॥ भाषा ॥

तजाणें। उत्कृष्ट असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जांणें। भावथकी जघन्यतः द्रव्य द्रव्यप्रति वर्णगंधरसस्पर्श एहचारप्रते जाणे। उत्कृष्टतः द्रव्यद्रव्यप्रति संख्याता सर्वद्रव्यनी अपेक्षायें अनंता वर्णादिकना भेदजाणे। त्रीजेंबोले अवधिनो संठाण कहेछे। नारकीनो अवधि त्रापाने आकारें। एतले नावने आकारे। भवन पतिनो पल्यने आकारें। व्यंतरनो पडहाने आकारें। ज्योतिषीनो झालरने आकारें। बारेदेवलोकना देवतानो मादलने आकारें। ग्रैवेयक देवतानो फूलचंगेरीने आकारें। अनुत्तर देवतानो लोकनालीने आकारें। एतले कन्यानो चोलीने आकारें । तिर्यंच मनुष्यनो अवधि नाना संस्थान। हिवे कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने अभ्यंतर वर्तेछे। तिहां नेरइयदेवतित्थं करायओहिस्सबाहिराहुंति। इत्यादि। तथा बाहिरत्ति कोण अवधि प्रकाशित क्षेत्रने बाहिर होय। शेष थाकता जीव बाह्य अने अभ्यंतरपणि होय। देशोहित्ति अवधि प्रकाशिवा योग्यवस्तुना देशनेप्रकाशे तेदेशावधि तेकोइक

॥ टीका ॥

तथा देशोहित्ति अवधिः प्रकाश्यवस्तुनो देशप्रकाशी अवधि र्देशावधिः स केषा भवतीति वाच्यम् तद्विपरीतस्तु सर्वावधि स्तत्र मनुष्याणां उभय मन्येषां देशावधिरेव यतः सर्वावधिः केवलज्ञानलाभप्रत्यासत्तावेवो त्पद्यत इति तथा वधे र्वृद्धिर्हानिश्च वाच्या योयेषाम्भवति तत्र तिर्यग्मनुष्याणा म्वर्द्धमानोहीय मानश्च भवति शेषाणामवस्थित एव तत्र वर्द्धमानों गुलासंख्येयभागादि दृष्ट्वा बहुबहुतर म्पश्यति विपरीतस्तु हीयमानइति तथा प्रतिपातीचा प्रतिपाती चावधिर्वाच्यः तत्रोत्कर्षतो लोकमात्रः प्रतिपात्यतः परमप्रतिपाती तत्र भवप्रत्ययः स्तं भवंयावन्न प्रतिपतति चायोपशमिकस्तूभयथेति एतदेवदर्शयति कइ विहेत्यादि अत्रावसरे प्रज्ञापनाया स्त्रयस्त्रिंशत्तम म्पदमन्यूनमध्येय मिति अनन्तर मुपयोगविशेषः चायोपशमिको जीवपर्यायः उक्तो धुना सएवौदयिकोवे

॥ मूल ॥

विहेणंभंतेओही पन्नत्ता । गोयमा दुविहा पन्नत्ता । भवपच्चइयखओवसमिएय । एवं सव्वंओहिपदं भाणियव्वं ।

॥ भाषा ॥

ने होय । एहथी विपरीतते सर्वावधि । तिहां मनुष्यने देशावधि सर्वावधि एह बिहुंहोय । बीजा सर्वने देशावधि होय । केवलज्ञान ढूंकडोहोय तिवारे सर्वावधि होय । वोहित्ति वुड्ढिहाणित्ति । अवधिनी वृद्धि अने हानि कहिवी । तिर्यंचने मनुष्यने हीयमान होय वर्द्धमान पिण होय । देवता नारकीने अवस्थित होय घटे न वधे । वर्द्धमान ते अंगुलनो असंख्यातमोभाग देखीने घणुं घणुं देखे । एहथकी विपरीत तेहीयमान । प्रतिपाती उत्कृष्टो लोकमात्र देखे । अलोकमांहि देखे तेअप्रतिपाती परमावधि । गौतम पूछेछे हेभदंत केतले प्रकारे अवधिज्ञान कह्यो । गौतम बेप्रकारें कह्यो । एकभवप्रत्यय तेदेवता नारकीने पोताना भवने विषे उपजे जिहांथीमरसे तिहांलगि रहे । बीजो चायोपशमिक ते अनंतानुबंधी कषायना उदये उपजे । गर्भजतिर्यंच मनुष्य ने होय । एम सर्वअवधिनोपद पन्नवणासूत्रथकी कहिवो । हिवे उपयोगविशेषचायोपशमिक जीवपर्यायकह्यो । हिवे तेहीजऔदयिकवेदनालक्षणकहेछे । शीता

॥ टीका ॥

दनालचणाभिधीयते ॥ सीयाइत्यादि द्वारगाथा तत्रसीयायत्ति चशब्दोनुक्तसमुच्चये तेन त्रिविधा वेदना शीता उष्णा शीतोष्णाचेति तत्र शीतामुष्णांचवेदयंति नारका: शेषास्त्रिविधामपि दव्वत्ति उपलचणत्वा चतुर्विधा वेदना द्रव्यादिभेदेन तत्र पुद्गलद्रव्यसम्बन्धात् द्रव्यवेदना नारकाद्युपपातक्षेत्रसम्बन्धात् क्षेत्रवेदना नारकाद्यायु: कालसम्बन्धात् कालवेदना वेदनीयकर्मोदया द्भाववेदना तत्र नारकादयो वैमानिकान्ता चतुर्विधामपि वेदनां वेदयन्तीति तथा सारीरत्ति त्रिधा वेदना शारीरी मानसी शारीरमानसीच तत्र संज्ञिपचेंद्रिया: सर्वे त्रिविधामपि इतरेतु शारीरीमेवेति तथा सायत्ति त्रिधावेदना साताअसाता सातासातावेति तत्र सर्वेजीवा: त्रिविधामपि वेदयन्तीति तहवेयणाभवेदुक्खत्ति त्रिविधावेदना सुखा दु:खा सुखदु:खाचेति तत्र सर्वेपि त्रिविधामपि वेदयन्ति

॥ मूल ॥

सीयायदव्वसारीर सायातहवेयणाजवेदुक्खं । अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाएचेवअणियाए ॥ १ ॥ नेरइया

॥ भाषा ॥

दिकवेदना तीन प्रकारें शीता उष्णा शीतोष्णा तेमांहिनारकी शीतवेदना अने उष्णवेदना वेदे । दव्वत्ति द्रव्यादिकभेदें चारप्रकारें । तेमांहि पुद्गल द्रव्यसंबंधथकी द्रव्यवेदना १ नारकादिक उपपातक्षेत्र संबंधथकी चेत्रवेदना २ नारकादिआयुकाल संबंधथकीकालवेदना ३ वेदनीयनामकर्मनाउदयथकी भाववेदना ४ तिहां नारकादि वैमानिकांतलगें चिहुं प्रकारनी वेदनावेदे । तथासारीरत्ति । तीनप्रकारेंवेदना शारीरी मानसी शारीरमानसी । इहांसंज्ञी पंचेंद्रिय त्रिणवेदनावेदे । बीजासगलाशारीरी वेदनावेदे । तथासायत्ति । तीनप्रकारनीवेदना साता असाता सातासाता सगलाहीजीव त्रीहुं प्रकारे वेदनावेदे । वेयणाभवेदु:खत्ति । त्रिप्रकारनीवेदना । सुखा दु:खा सुखदु:खा । सगलाही जीव त्रिणप्रकारे वेदनावेदे । साता असातामांहि अने सुखदु:खमांहिस्यूंविशेष ।

॥ टीका ॥

नवरं सातासातयोः सुखदुःखयोः श्चायं विशेषः सातासाते क्रमेणोदयप्राप्तवेदनीयकर्म्मपुद्गलानुभवलक्षणे सुखदुःखेतुपरेण उदीर्यमाणवेदनीयकर्म्मानुभवलक्ष
णेतथा अब्भुवगमुवक्कमियत्ति, द्विधावेदना आभ्युपगमिकी औपक्रमिकीचेति तत्राद्यामभ्युपगमतो वेदयन्ति जीवा यथा साधवः शिरोलोचनब्रह्मचर्यादि
कां द्वितीयांतु स्वयमुदीर्णस्यो दीरणाकरणेन चोदय मुपनीतस्य वेदनीयस्यानुभवतः तत्र पञ्चेंद्रियतिर्यग्मनुष्या द्विविधामपि शेषास्त्वौपक्रमिकी मेववेद
यंतीति तथाणीयाएचेव अणियाएत्ति द्विविधा वेदना तत्र निदयाआभोगत अनिदयात्वनाभोगत स्तत्र संज्ञिन उभयतो ऽसंज्ञिनस्त्व निदयेति एतत्द्वारवि
वरणाय नेरइयाणमित्यादि इहावसरे प्रज्ञापनायाः पञ्चत्रिंशत्तम स्वेदनाख्य स्पद मध्येयमिति अनन्तरं वेदनाप्ररूपिता साच लेश्यावत् एव भवतीति

॥ मूल ॥

णंभंते किंसीतंवेयणंवेयंति उसिणं वेयणं। सीतोसिणंवेयणं। गोयमा नेरइयाएवंचेव वेयणापदंनाणियव्वं।

॥ भाषा ॥

साता साततेअनुक्रमे उदयप्राप्तवेदनीयकर्मपुद्गलनो भोगिवो। सुखदुःखते परेउदीर्यमाण वेदनीयकर्म पुद्गलनो भोगिवो। तथा अभुवगमुवक्कमियत्ति। विहुं
प्रकार वेदनी अभ्युपगमिका अनेउपक्रमिका। पहिलीवेदना आगमीने ले एतले स्वीकारकरीनेले। जिमयतीशिरलोचादिकनी वेदनावेदे। बीजी सेउदी
रणाकरने तथा पोते आपणे उदयआवी वेदनावेदे। तिहां तिर्यंच पंचेन्द्रिय मनुष्य विहुं वेदना आगमीनेले जिमवेदनावेदे। तथा णीयाएत्ति। विहुं प्रकारे
वेदना एकआभोगतः जाणपणेवेदे तेणीयावेदना। बीजो अजाणपणे वेदना तेअणीयावेदना। तिहां संज्ञी पंचेंद्रियणीयावेदनावेदे। असंज्ञीअणीयावेदनावे
दे। हेपूज्यनारकी किम शीतवेदनावेदे। किंवाउष्णवेदनावेदे किंवाशीतोष्ण वेदनावेदे। गौतम नारकीनी वेदना एहपन्नवणाना पैत्रीसमापदथकी भणिवो

॥ टीका ॥

लेश्याप्ररूपणायाह कइणंभंते इत्यादि इहस्थाने प्रज्ञापनायाः सप्तदशं षडुद्देशकं लेश्याभिधानं पद मध्येतव्यं तच्चास्माभि रतिबहुत्वा दर्शतोपि न लिखितमि ति ततएवा वधारणीय मिति अनन्तरं लेश्या उक्ताः सालेश्याएवचाहारयंती त्याहारप्ररूपणाय. अणंतरायेत्यादि द्वारश्लोकमाह तत्र अणंतराय आहारे त्ति अनन्तरायावाव्यवधानाचाहारविषये अनंतराहाराजीवा वाच्याइत्यर्थः तथा हारस्याभोगताअपिचेति वचना दनाभोगताच वाच्या तथा पुद्गला न जा नंत्येव एवकारा न पश्यंतीति चतुर्भङ्गी सूचिता तथा अध्यवसानानि सम्यक्त्वञ्च वाच्यमिति तत्राद्यद्वारार्थमाह नेरइएत्यादि अनंतराहारएत्ति उपपातक्षेत्रप्रा प्तिसमय एवा हारयंतीत्यर्थः ततोनिव्वत्तणयाएइति ततः शरीरनिर्वृत्तिः ततोपरियाइयणयत्ति ततःपर्यापान मङ्गप्रत्यङ्गैः समन्ता त्यानमित्यर्थः ततोपरिणा

॥ मूल ॥

कतिणंभंतेलेसाउ प० गोयमाछलेसाउ प० तं० । किण्हा नीला काउ तेउ पउमा सुक्का । एवंलेसापदंभा णियव्वं । अणंतरायआहारे आहाराभोगणाइया पोग्गलानेवजाणंति अज्झवसाणेयसम्मत्ते ॥ १ ॥ नेरइ याणं भंते अणंतराहारा ततोनिव्वत्तणया ततोपरियाइयणया ततोपरिणामणया ततोपरियारणया ततोपच्छा

॥ भाषा ॥

हेभदंत केतला प्रकारनी लेश्याकही। गौतम ६ प्रकारनी कही। तेकहेछे। कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ तेजोलेश्या ४ पद्मलेश्या ५ शु क्ललेश्या ६ एम लेश्या पद सतरमो पन्नवणाथी भणिवो। हिवे आहारनो अधिकार पूछेछे। जीव आंतरा रहित आहार करेछे। आंतरे आंतरे तथा आहारनो आभोगपणो जाणीने ले तेआभोग। बीजो अनाभोग। आहारना पुद्गलने जांणके नजाणे। अध्यवसाय मनना परिणाम। तथा सम्यक्त। ए ह ५ पदकहिवा। नारकी जीव अनंतर आहार करेछे। उपजिवाने क्षेत्रे जई ऊपनो तेण समये करे। तिवारे पछे शरीरनोपजावे। तिवारे पछे आ

मयत्ति ततःशब्दादिविषयोपभोगइत्यर्थः ततोपच्छाविउव्वणयत्ति ततःपश्चाद्विक्रिया नानारूपाइत्यर्थः हन्तागौतम एवमेतदितिभावः एवं सर्वेषां मपञ्चेन्द्रिया
णां वक्तव्य नवरं देवानां पूर्वंम्विकुर्वणा पश्चात्परिचारणा शेषाणान्तु पूर्वम्परिचारणा पश्चाद्विकुर्व्वणा एकेन्द्रियादीनामप्येव मप्रश्ने निर्वचनेतु यत्र वैक्रियसम्भवो
नास्ति तत्र विकुर्वणा निषेधनीयेति एवमाहारपयंभाणियव्वंति यथा दाहारस्यप्रश्न उक्त स्तथा तदुत्तरंशेषद्वाराणिच भणद्भिः प्रज्ञापनाया श्चतुस्त्रिंशत्तम
म्परिचारणापदाख्य म्पदमिहभणितव्यमिति इदञ्चाचाहारविचारप्रधानतया आहारपदमुक्तमिति तत्पुनरेव मर्थतः तत्र आहाराभोगणाइयत्ति एतस्यवि
वरणं नारकाणां किमाभोगनिवर्त्तित आहारो ऽनाभोगनिवर्त्तितोवा उभयथापोति निर्वचन मेवं सर्वेषां नवर मेकेन्द्रियाणा मनाभोगनिर्वर्त्तित एवेति
तथापोग्गलानेवजाणंतित्ति अस्यार्थः नारका यान् पुद्गलान् आहारयन्ति तानवधिनापि नजानन्ति अविषयत्वात्तदवधे स्तेषां नपश्यन्ति चक्षुषापि लोमा
हारत्वात् तेषा मेव मसुरादय स्त्रीन्द्रियांताः कथमेकेंद्रिया अनाभोगाहारत्वा द्वित्रीन्द्रियाश्च मत्यज्ञानित्वा न्नजानन्ति चक्षुरिन्द्रियाभावाच्च न पश्यन्तीति
चतुरिन्द्रियास्तु चक्षुः सद्भावेपि मत्यज्ञानित्वात् प्रक्षेपाहारं नजानन्ति चक्षुषानुपश्यंति तथा तएवलोमाहारमाश्रित्य नजानन्ति नपश्यंतीति व्यपदिश्यते च
क्षुषोविषयत्वात्तस्य पञ्चेंद्रियतिर्यञ्चो मनुष्याश्च केचिज्जानंति पश्यन्ति चावधिज्ञानादियुक्ताः लोमाहारं प्रक्षेपाहारञ्च जानंत्यवधिना नपश्यंति चक्षुषा तथा
अन्ये न जानंति तत्र नजानंति प्रक्षेपाहारं मत्यज्ञानित्वा त्पश्यंति चक्षुषा तथा अन्ये नजानंति नपश्यन्ति लोमाहारं निरतिशयत्वादिति व्यंतरज्योति
ष्का नारकवत् वैमानिकास्तु ये सम्यग्दृष्टय स्ते जानंति विशिष्टावधित्वात् पश्यंतीचक्षुषोपि विशिष्टत्वात् मिथ्यादृष्टयस्तु नजानंति नपश्यन्ति प्रत्यक्षपरोक्ष
ज्ञानयो स्तेषा मस्पष्टत्वादिति तथाअज्झवसाणेयत्ति दारं नारकादीना मप्रशस्ता प्रशस्तान्यसंख्येयान्यध्यवसायानीति तथा संमत्तेत्ति दारं तत्र नारकाः किं
सम्यक्त्वाभिगमिनो मिथ्यात्वाभिगमिनः सम्यक्त्वमिथ्यात्वाभिगमिनश्चेति त्रिविधा अप्येवं सर्वेपि नवर मेकेंद्रिया मिथ्यात्वाभिगमिनएवेति अनन्तर माहारप्रक्रु

पथा कृता हारस्यायुर्बन्धवता मेव भवतीत्यायुर्बन्धप्ररूप णायाह कइविहेत्यादि तत्रायुषो बन्धनिषेक आयुर्बन्धः निषेकश्चप्रतिसमय बहुहीनहीनतरस्य द ॥ टीका ॥
लिकस्या नुभवनार्थं रचना निधत्तमपीह निषेकउच्यते अतएवाह जाइनामनिधत्ताउए जातिनाम्नासह निधत्तम् निषिक्त मनुभवनार्थं बह्वल्पाल्पतरक्रमेण
व्यवस्थापितमायु र्जातिनामनिधत्तायुः अथकिमर्थ ज्जात्यादिनामकर्म्मणायु विंशेष्यते आयुष्कस्य प्राधान्योपदर्शनार्थं यस्मा न्नारकाद्यायुरुदये सति जात्या
दिनामकर्म्मणा मुदयो भवति नारकादिभवोपग्राहकं चायुरेव यस्मा द्याख्या प्रज्ञप्त्यामुक्तं नेरइएणंभंतेनेरइएसु उववज्जइ अनेरइए नेरइएसुउववज्जइ गोय
मा नेरइएनेरइएसुउववज्जइ नो अनेरइएनेरइएसुउववज्जइ एतदुक्तंभवति नारकायुः प्रथमसमयसंवेदनकालएव नारक इत्युच्यते तत्सहचारिणाञ्च पञ्चेंद्रिय
जात्यादिनामकर्म्मणा मप्युदय इति तथा गतिनामनिधत्ताउएत्ति गतिर्नारकगत्यादि तल्लक्षणं नामकर्म्म तेनसह निषिक्तमायु र्गतिनामनिषिक्तायुः तथा
ठिईकालनामनिधत्ताउएत्ति स्थिति र्यथास्थातव्यं तेन भावेनायुर्दलिकस्य सैवनामपरिणामोधर्म्मइत्यर्थः स्थितिर्नाम गतिजात्यादिकर्म्मणाञ्च प्रकृत्यादिभेदेन

विकुव्वणया हंतागोयमाएवंआहारपदंभाणियव्वं । कइविहेणं भंते आउगबंधेपन्नत्ते गोयमाछव्विहे पन्नत्ते ॥ मूल ॥

हारलीधोहोय तेशरीरने विषे परिणमावे । तिवारपछे विषय सेविवानी इच्छा । तिवारपछे विकुर्वणा करे । एहवो प्रश्न पूछ्यापछे भगवंत कहेछे । ॥ भाषा ॥
एमहीज हेगौतम जिमतूंकहेछे तिमजछे । इहां पन्नवणानो चोत्रीसमो आहार पद भणिवो । केतले प्रकारे हेपूज्य आऊखानोबंध कह्यो । हेगौतम ६ प्र
कारे । तेकहेछे । जातिनाम साथे भोगिवाने अर्थे थाप्यो थोडो तथा घणो ते जातिनामनिधत्तायु १ । एम नरकगत्यादिक लक्षण नामकर्म तेहने साथे
थाप्यो बांध्यो ते गतिनामनिधत्तायु २ । एम आउखाना दलनो जेणे भवे नियत रहिवोते स्थितिनाम अथवा गति जात्यादि कर्मप्रकृति भेदेकरी जे स्थि

॥ टीका ॥

चतुर्विधानां यः स्थितिरूपोभेद स्तत् स्थितिनाम तेनसह निधत्तमायुः स्थितिनामनिधत्तायुरिति पएसनामनिधत्तायुएत्ति प्रदेशाना मनितपरिणामाना मायुः कर्म दलिकानां नामः परिणामोदयः तथाप्रदेशेषु सम्बन्धनं स प्रदेशनामो जातिगत्यवगाहनाकर्म्मणा म्वा यत्प्रदेशरूपं नामकर्म्म तत्प्रदेशनाम तेन सह निधत्तमायुः प्रदेशनामनिधत्तायुरिति तथा अणुभागनिधत्ताउएत्ति अनुभाग आयुः कर्म्मद्रव्याणां तीव्रादिभेदोरसः सएव तस्य वा नामः परिणामो नुभागनाम अथवा गत्यादीनांनामकर्म्मणा मनुभागबन्धरूपो भेदो ऽनुभागनाम तेनसह निधत्तमायु रनुभागनामनिधत्तायुरिति तथा ओगाहणानामनिध त्तायुएत्ति अवगाहते जीवो यस्यां सा वगाहना शरीरमौदारिकादि पञ्चविधं तत्कारणं कर्म्माप्यवगाहना तद्रूपन्नामकर्म्मा वगाहनानाम तेनसह निधत्तमा युरवगाहनानामनिधत्तायुरिति नेरइयाणमित्यादि स्पष्टं अनन्तरमायुर्बन्ध उक्तो ऽधुनाबद्धायुषां नारकादिगतिषूपपातो भवतीति तद्विरहकालप्ररूपणायाह

॥ मूल ॥

तंजहा । जाइनामनिहत्ताउए गतिनामनिहत्ताउए ठिईनामनिहत्ताउए पएसनामनिहत्ताउए अणुभागनाम

॥ भाषा ॥

ति ते स्थिति निधत्तायु ३ । प्रदेश परिमाण जे आऊखानादलनो परिमाण तेहने साथे बांध्यो आयु ते प्रदेश निहत्तायु ४ । आयुकर्मद्रव्यनो तीव्रादिक भेदें जेरस तेअनुभाग तेहने साथे बांध्यो आयु तेह अनुभागनामनिधत्तायु ५ । अवगाहीने रहे जीव जिहां तेअवगाहना औदारिकादि ५ भेदे तेहनो कारण कर्म तेहीपिण अवगाहनारूप नामकर्म अवगाहना ६ । नारकीनो हे पूज्य केतले प्रकारे आऊखानो बंध कहिवो । हे गौतम ६ प्रकारे नाकीनो आऊखानो बंध ६ प्रकारे । तेकहेछे । जातिनाम निहत्तायु १ । गतिनाम निहत्तायु २ । स्थितिनाम निहत्तायु ३ । प्रदेशनाम निहत्तायु ४ । अनुभागना म निहत्तायु ५ । जिहांलगे अवगाहना निहत्तायु ६ भेदहोवे ६ । एम २४ दंडके ६ भेदे आऊखानो बंध कहिवो जिहांलगे वैमानिक देवता आवे ।

॥ टीका ॥

निरयगतीणमित्यादि कंठ्यं नवरं यद्यपि रत्नप्रभादिषु चतुर्विंशतिमुहूर्त्तादिविरहकालो यथोक्तं चउवीसाइमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा मासोयदोयचउरो छम्मासाविरहकालो उएत्ति ॥ १ ॥ तथापि सामान्यगत्यपेक्षया द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तथा एवंकरणा द्य त्तिर्यग्मनुष्यगत्योः सामान्येन द्वादशमुहूर्त्ता उक्ताः तद्गर्भव्युत्क्रान्तिकापेक्षया देवगतौतु सामान्यतएव सिद्धिवज्जाउव्वट्टणेत्ति नारकादिगतिषु द्वादशमुहूर्त्तो विरहकाल उद्वर्त्तनाया मिति सिद्धानां तूद्

॥ मूल ॥

निहत्ताउए तुगाहणानामनिहत्ताउए । नेरइयाणंभंते कइविहे आउगबंधे पन्नत्ते गोयमा छव्विहे पन्नत्ते । तंजहा । जातिनामगतिनामठिईनामपएसनामअणुभागनामओगाहणानाम एवंजाववेमाणियाणं निरयगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया उववाएणं । गोयमा जहन्नेणं एक्कंसमयं उक्कोसेणं बारसमुहुत्ते । एवंतिरियगइ मणुस्सगइ देवगइ सिद्धिगईणं भंते केवइयंकालं विरहिया सिज्झयणा पन्नत्ता । गोयमा जहन्नेणं ए

॥ भाषा ॥

हिवे उपपात विरह च्यवन विरह आश्री प्रश्न करेछे। नरक गतिमांहि हे पूज्य केतलो उपपात विरह। हे गौतम नारकीनो जघन्य उपपात विरह १ समय एक नारकीनें उपनापछी बीजो१ समयने आंतरे उपजे यद्यपि रत्नप्रभादिकने विषे २४ मुहूर्त्तादिक विरह काल कह्योछे यदाह। चोवीसायमुहुत्ता सत्तअहोरत्ततहयपन्नरसा । मासोयदोयचउरो छम्मासो विरहकालोउत्ति ॥ १ ॥ तोहो पिण सामान्यगति अपेक्षाये १२ मुहूर्त्त कह्या। उत्कृष्टपणे १२ मुहूर्त्त जाणवा। एम तिर्यंचगति मनुष्यगति देवगति नोउपपात जाणिवो। हिवे सिद्धिगतिनो उपपात केतलेकाले सीझवो कह्यो। हेगौतम जघन्य १ समये १ सिद्ध उपनापछे बीजो सिद्ध १ समयना अंतरथी उपजे। उत्कृष्ट ६ मासनो विरह। एम जिम उपपात विरह तिमहीज च्यवनविरह। एक चव्यां पछे

॥ टीका ॥

सं नैव नास्ति अपुनरावृत्तित्वा त्तेषामिति इमीसेणंरयणप्पभाएपुढवीए नेरइयाकेवइयंकालंविरहियाउववाएणं पन्नत्ता एवंउववायदंडओभाणियव्वोत्ति सचा
यं गोयमा जहन्नेणंएक्कंसमयं उक्कोसेणंचउवीसंमुहुत्ताइं अनेनाभिलापेन शेषावाच्या: तथाहि सक्करप्पभाए उक्कोसेणंसत्तराइंदियाणि वालुयप्पभाए अद्धमासं
पंकप्पभाएमासं धूमप्पभाए दोमासा तमप्पभाए चउरोमासा अहेसत्तमाएछमासत्ति असुरकुमाराचउवीसइमुहुत्ता एवंजावथणियकुमारा पुढविकाइया अवि
रहियाउववाएणं एवंसेसावि बेइंदिया अंतोमुहुत्तं एवंतेइंदियचउरिंदियसमुच्छिमपंचिंदियतिरिक्ख जोणियाविगब्भवक्कंतियतिरियमणुयाय बारसमुहुत्ता
समुच्छिमणुस्सा चउवीसाइंमुहुत्ताविरहिआ उववाएणं वंतरजोइसियाचउवीसं मुहुत्ताइं एवं सोहम्मीसाणेवि सणंकुमारे णवदिणाइं वीसायमुहुत्ता माहिं
देबारसदिवसाइंदसमुहुत्ता बंभलोए अद्धतेवीसंराइंदियाइं लंतएपणयालीसं महासुक्केअसीइं सहस्सारेदिणसयं आणएसंखेज्जामासा एवंपाणएवि आरणे
संखेज्जावासा एवंअच्चुएवि गेवेज्जपत्थडेसुतिसुकमेणसंखेज्जाइं वाससयाइं वाससहस्साइं वाससयसहस्साइं विजयाइसु असंखेज्जंकालं सव्वट्ठसिद्धे पलिओवम
स्सासंखेज्जइभागंति एवंउव्वट्टणाइंति उपपातउद्वर्त्तनाचायुर्बंधेएव भवती त्यायुर्बन्धविशेषप्ररूपणायाह नेरइएत्यादि कंठ्यं नवरं आकर्षोनाम कर्म्मपुद्गलोपा

॥ मूल ॥

क्कं समयं उक्कोसेणं छम्मासे एवंसिद्धिवज्जा उव्वट्टणा । इमीसेणं भंतेरयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं

॥ भाषा ॥

बीजोचवे । पिण सिद्धने उद्वर्त्तनां च्यवन नथी सिद्धथकी निकलवो नथी । हिवे रत्नप्रभा पहिली नरक पृथिवी आश्री पूछेछे । हेपूज्य एणीये रत्नप्रभाने वि
षे केतलो नारकीनो उपपात विरह । जिम ओघवचने पूर्वे कह्यो तिमज कहिवो । जघन्य १ समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त्त एम २४ दंडकनो टीका तथा यं
त्रांतर थकी आणिवो । रत्नप्रभाने विषे जिम उपपात विरह तिम इहां पणि कहिवो । च्यवन विरह पिण कहिवो । हेपूज्य नारकी जातिनाम निद्दत्तायु,

दाम यथा गोःपानीयम्पिबती भयेन पुनःपुनः आहंहति एवञ्जीवोपि तीव्रेणायुर्बन्धाध्यवसानेन सकृदेव जातिनामनिधत्तायुः प्रकरोति मन्देनद्वाभ्यामाक || टीका ||
र्षाभ्यामन्दतरेणत्रिभिर्मंदतमेन चतुर्भिः पञ्चभिः षड्भिः सप्तभिरष्टाभिर्वानपुनर्नवभिरेवं शेषाण्यपि आउगणित्ति गतिनामनिधत्तायुरादीनिवाच्यानिया
वद्वैमानिकाइति यथचैकाद्याकर्ष नियमोजात्यादिना कर्मणानायुर्बन्धकालएवबंध्यमानानां नशेषकालमायुर्बन्धपरिसमाप्तेरुत्तरकालमपि बन्धोस्त्येवेषां
भुवबन्धिनीनाञ्च ज्ञानावरणादिप्रकृतीना मतिसमयमेवबन्धनिवृत्तिर्भवत्येतास्तुपरावृत्याबध्यन्तइति अनन्तरञ्जीवानामायुर्बन्धप्रकार उक्तो ऽधुनातेषामेव
संहननसंस्थानवेदप्रकारानाह कइविहेणमित्यादि दण्डकत्रयं कंठ्यम् नवरं संहनन मस्थिबन्धविशेषः मर्कटस्थानीयमुभयोः पार्श्वयो रस्थि नाराचं ऋषभस्तु

कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववायदंडउनाणियव्वो । उवट्टणादंडउय । नेरइयाणं भंते जातिनामनि || मूल ||
हत्ताउगं कतिआगरिसेहिं पगरंति सिय १ सिय २ ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । सियअठेहिं नोचेवणंनव

करेछे । आकर्ष करी कर्मपुद्गलनो अंगीकार करिवो जिम गाय पाणी पोतोथको भयेकरी वलीवली हिंसारो करी पोवे तिम जीवपणि तीव्र आयुबंधाध्य || भाषा ||
वसायेंकरी १ वेला जातिनाम निहत्तायु करे । स्यात्कदाचित् मन्दाध्यवसायें जातिनाम निहत्तायु करे तो बेआकर्षेकरे । मंदतरे करेतो त्रिहुयें करे । एम
त्रिहुंये।पांचे । छये । साते । आठें करे । एणत्ति शेष थाकता २३ दंडकनाजीवना नारकीनो परे आकर्ष कहिवा जिहांलग वैमानिक देवता आवे । हिवे
पूर्वे आयुबंध कह्यो तेसंघयणमा भणीने होय तेमाटे संघयण कहेछे । केतले प्रकारे हेभदंत संघयण कह्यो । हेगौतम ६ भेदे संघयणअस्थिबंधविशेष कह्यो ।
तेकहेछे । मर्कटनेठामे बिहुंपासे हाडते नाराच कहिये । ऋषभते पाटो वच्चते कीलिका एत्रिणवामा जिहां होय तेवज्र ऋषभनारायसंघयण कहिये १ ।

॥ टीका ॥

पट्टं वलं कीलिका वज्रश्च ऋषभश्च माराचश्च यत्रास्ति तद्वज्रर्षभनाराचं संहननं मर्कटकपट्टकीलिकारचनायुक्तः प्रथमो स्थिवन्धः मर्कटपट्टकीलिकाभ्यां द्विती यः मर्कटयुक्तस्तृतीयः मर्कटकैकदेशबन्धनद्वितीयपार्श्वकीलिकासम्बन्ध स्तुर्थः अङ्गुलिद्वयसंयुक्तस्य मध्ये कीलिकैवदत्ता यत्र तत्कीलिकासंहनन म्पञ्चमं यत्रा स्थीनि चर्मणा निकाचितानि केवलं तत्सेवार्त्तं स्नेहपानादीनां नित्यपरिशीलनामेवा तया ऋतं प्राप्तं सेवार्त्तमितिषष्टं छण्हंसंघयणाणंअसंघयणेत्ति उक्तरू पाणां षण्णां संहननानामन्यतमस्याप्यभावेन संहनिनो ऽस्थिसंचयरहिता अतएवाह नेवट्ठी नेवास्थीनि तच्छरीरके नेवच्छिरत्ति नैवशिराधमन्यः नैवण्हाउत्ति नैवस्नायूनीति कृत्वा संहननाभावः तद्रहितानांहि प्रचुरमपि दुःखमबाधाविधायिस्यात् नारकास्त्वत्यंत शीतादिबाधिता इति नचास्थिसञ्चया भावे शरीरं

॥ मूल ॥

ठीहिं एवं सेसाणविअ्राणुगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं । कइविहेणं भंते संघयणे पन्नत्ते । गोयमा छ व्विहे पन्नत्ते । तंजहा वइरोसभनारायसंघयणे रिसभनारायसंघयणे नारायसंघयणे अद्धनारायसंघयणे कीलियासंघयणे छेवठसंघयणे । नेरइयाणं भंते किंसंघयणी । गोयमा छण्हंसंघयणाणंअसंघयणी । णेव

॥ भाषा ॥

वीजो ऋषभनाराच ते मर्कट किलिका सहित २। त्रीजो नाराच संघयण मर्कट सहित ३। चउथो अर्द्धनाराच एकेपासे मर्कटबंध वीजेपासेकीलो ४। पांचमो कीलिका अंगुलबेने संयुक्तने मांहि कीलिका १ जिहांदीधी ते कोलिका संघयण ५। संवर्त्त तेजिहां हाडिकाचर्मवींटी छे घृत तेलना सेचेंकरी पाम्यो ते सेवार्त्त संघयण ६ । हिवें नारकी आश्री संघयण पूछेछे। हे भगवंत नारकीमांहि के संघयण पामिये। हे गौतम पूर्वोक्तछहुंमांहि १ छनपामिये हाडनही नाडीनही मोटीनशानथी जेनारकीमा पुद्गलछे तेअनिष्ट अवल्लभ अकांत अप्रिय द्वेषकरवायोग्य अनादेय अशुभ प्रकृतिथीअसुंदर अमनोज्ञ

॥ टीका ॥

नोपपद्यते स्वकुवत्तदुपपत्तेः अतएवाह जेपोग्गलेत्यादि येपुद्गला अनिष्टा अवल्लभाः सदैवेषां सामान्येन तथा अकान्ता अकमनीयाः सदैव तद्भावेन तथा अ प्रिया द्वेष्याः सर्वेषामेव तथा शुभाः प्रकृत्यसुन्दरतया अमनोरमाः कथयापि तथा अमणामा नमनःप्रिया चिन्तयापि तेएवम्भूताः पुद्गला स्तेषां नारकाणां असंघयणत्ताएत्ति अस्थिसञ्चयविशेषरहितशरीरतया परिणमति कइविहेसंठाणेत्यादि तत्र मानोन्मानप्रमाणानि अन्यूनान्यनतिरिक्तानि अङ्गोपाङ्गानिच यस्मिन् शरीरसंस्थाने तत्समचतुरस्रं संस्थानं तथा नाभितउपरि सर्वावयवाश्चतुरस्रलक्षणा ऽविसंवादिनो ऽधस्तु तदनुरूपंयत्तद्भवति तन्न्यग्रोधं संस्थानं तथा नाभितोऽधः सर्वावयवा चतुरस्रलक्षणाअविसम्वादिनो यस्योपरिच यत्तदनुरूपं नभवति तत्सादिसंस्थानं तथाग्रीवाहस्तपादा असमचतुरस्रलक्षणयुक्ता यत्र संक्षिप्त विकृतश्च मध्ये कोष्टं तत्कुब्जं संस्थान न्तथा यल्लक्षणयुक्तकोष्टं चतुरस्रलक्षणोपेतं ग्रीवाद्यवयवहस्तपादश्च तद्वामन न्तथा यत्र हस्तपादाद्यवयवा

॥ मूल ॥

णेवच्छिरा णेवराहाऊ जेपोग्गलाअणिठा अकंता अप्पिया अणाएज्जा असुत्रा अमणुन्ना अमणामा तेतेसिं असंघयणत्ताए परिणमंति । असुरकुमाराणं किंसंघयणा पन्नत्ता । गोयमा छराहंसंघयणाणं असं घयणी णेवठ्ठी णेवच्छिरा णेवराहाऊ जेपोग्गला इठा कंता प्पिया मणुन्ना मणाभिरामा तेतेसिं असंघयण

॥ भाषा ॥

अमनोरम । तेह नारकोने असंघयणपणे परिणमेछे । अस्थिसंचयरहित शरीर परिणामे परिणमे । हेपूज्य असुर कुमार कोण संघयणे कह्या । हे गोतम छ संघयण मांहि असंघयणी हाडनथी शिरानथी छोटीनशनथी बडोनशनथी असुर कुमारना जेह पुद्गल पदार्थ छे तेह इष्ट वल्लभ के कांतकम नीय प्रियमनोज्ञ मनोभिराम ते तेहने असंघयणपणे परिणमें । एम नागकुमार थकी मांडी जिहांलगे स्तनितकुमार दशमोनिकाय तिहांलगे असंघय

॥ मूल ॥

त्ताए परिणमंति । एवं जावथणियकुमाराणं पुढवी किंसंघयणी पन्नत्ता । गोयमा छेवठसंघयणी प० एवं जावसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खजोणियत्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विहसंघयणी समुच्छिम मणुस्साणं छेवठ संघयणी गब्भवक्कंतियमणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतर जोइसिय वेमाणियाय । कइविहेणं भंते संठाणे पन्नत्ते । गोयमा छव्विहे संठाणे प० तं० । समचउरंसे १ णिग्गोहे २ साइए ३ खुज्जे ४ वामणे ५ हुंडे ६ । णेरइयाणं भंते किंसंठाणी प० । गोयमा हुंडसंठाणी प० । असुर

॥ भाषा ॥

णी कहिवा । हिवे पृथिवी आश्रीपूछेछे । हेपूज्य पृथिवीनो कोण संघयण हेगौतम छेवठो संघयण । एम ५ थावर ३ विकलेंद्री समूर्च्छिम पंचेंद्रिय तिर्यंच योनिया जीव सर्व छेवठे संघयणे कहिवा । गर्भ व्युत्क्रांत तिर्यंचना ६ संघयण । समूर्च्छिम मनुष्यनो छेवठो संघयण । गर्भजना छहुं संघयण जाणिवा जिम असुर कुमार असंघयणी कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी वैमानिक देव जाणिवा । हिवे संस्थान आश्री पूछेछे । हेभदंत संस्थान केतलाछे । हे गौतम संस्थान ते आकार विशेष ६ प्रकारे कह्यो । तेकहेछे । मान उन्मान प्रमाणोपेत ओछा अधिकानहो अंगोपांग जेहना तेसमचतुरस्र संस्थान १ तथा नाभि ऊपर सगला अवयव चतुरस्र होय नाभिहेठे आकारमांठो होय ते न्यग्रोध परिमंडल २ । तथा नाभिथकीहेठे सगला अवयव चतुरस्र होय नाभि ऊपर मांठोहोय ते सादिसंस्थान ३ । तथा ग्रीवा हाथ पांव समचतुरस्रहोय मध्यकोठो संक्षिप्त होय नानूंहोय ते कुब्ज संस्थान ४ । तथा लक्षणोपेत कोठोहोय अने हाथ पग ग्रीवा तेछोटाहोय तेवामनसंस्थान ५ । तथा हस्त पादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होय तेहुंडकसंस्थान ६ । नारकीनो

बहुप्राय। प्रमाण्यविसम्वादिनश्च तद्दुण्डमित्युच्यते कइविहेबेदेत्यादि तत्र स्त्रीवेदः पुंस्कामिता पुरुषवेदः स्त्रीकामिता नपुंसकवेदः स्त्रीपुंस्कामितेति एतेंच ॥ टीका ।

कुमाराकिंसंठाणी प० गोयमा समचउरंससंठाण संठिया प० एवं जावथणियकुमारा । पुढवी मसूरियसं ठाणा प० । आउथिवुयसंठाणा पन्नत्ता। तेउसूइकलावसंठाणा पन्नत्ता । वाऊपडागसंठाणे पन्नत्ते । वण स्सई नाणासंठाणसंठिया पन्नत्ता । वेइंदियतेइंदियचउरिंदिय समुच्छिम पंचेंदियतिरिक्खाउंडसंठाणा प० गब्भवक्कंतियाछव्विहसंठाणा । समुच्छिम मणुस्सहुंडसंठाणसंठिया पन्नत्ता । गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छ व्विहासंठाणा पन्नत्ता । जहाअसुरकुमारा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । कइविहेणं भंतेवेए प० । गो ॥ मूल ॥

हे पूज्य कोण संठाणकह्या । हेगोतम हुंड संस्थान कह्यो । असुर कुमार देवता समचउरंस संस्थान संस्थित कह्या । जिहां लगे दशमो निकायना स्तनि त कुमार आवे । पृथिवी मसूर धान्य ने संस्थाने संस्थित कहो । पांणीनो संस्थान पाणीनापरपोटो कह्यो । अग्निनो संस्थान सूचीकलाप सूईना समूहने संस्थानेकह्यो । वायुनो पताका संस्थान कह्यो । वनस्पती अनेक प्रकारे संस्थितकहो । वेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पंचेंद्री तिर्यंचनो हुंड संस्थान क ह्यो । गर्भज तिर्यंच ६ संस्थान संस्थित कह्या । समूर्च्छिम मनुष्यनो हुंड संस्थान । गर्भजमनुष्य ६ संस्थान संस्थित कह्या । जिम असुर कुमार समच उरंस संस्थान संस्थित कह्या तिमज वाणव्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक कहिवा । हे भदंत वेद केतले प्रकारे कह्या । गौतम ३ प्रकारे कह्या । ते कहेछे । ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

पूर्वोदिता अर्थाः समवसरणस्थितेन भगवता देशिता इति समवसरणवक्तव्यता माह। तेणमित्यादि इह णङ्कारौ वाक्यालङ्कारार्थौ वत स्ते इति प्राकृतत्वात् तस्मिन् काले सामान्ये दुःखमसुखमालक्षणे तस्मिन् समये विशिष्टे यत्र भगवानेव विहरतिस्मेति कप्पस्स समोसरणं नेयव्वंति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण स

॥ मूल ॥

यमा तिविहेवेए प० । इत्थीवेए पुरिसवेए णपुंसगवेए । नेरइयाणं भंते किंइत्थीवेया पुरिसवेया णपुंसग वेया प० । गोयमा णोइत्थीवेया णोपुरिसवेया णपुंसगवेया प०। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिस न पुंसगवेया । गोयमा इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसगवेया । जावथणियकुमारा । पुढवीआऊतेउवाऊवणस्स ई बितिचउरिंदियसमुच्छिम पंचिंदियतिरिक्खसमुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा । गब्भवक्कंतियमणुस्सा पंचिंदिय तिरियायतिवेया जहाअसुरा तहावाणमंतरजोइसियवेमाणिया । तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्ससमोसर

॥ भाषा ।

स्त्रीवेद १ । पुरुषवेद २ । नपुंसकवेद ३ । नारकीनो हे भदंत स्यूं स्त्रीवेद किंवा पुरुषवेद किवा नपुंसकवेद । हे गौतम स्त्रीवेद नथी पुरुषवेद नथी नपुंस कवेदहोय । असुर कुमारने हे पूज्य किंस्त्रीवेद पुरुषवेद नपुंसकवेद होय । गोयमा स्त्रीवेदहोय पुरुषवेदहोय नपुंसकवेद नहोय । एम जिहां लगे स्तनि तकुमार आवे तिहांलगे कहिवो । पृथ्वी आऊ तेज वायू वनस्पत बेइन्द्री तेइन्द्री चोइन्द्री समूर्च्छिम पंचेंद्रियतिर्यंच समूर्च्छिम मनुष्य एतलानो नपुंस कवेद । गर्भजतिर्यंच गर्भज मनुष्य त्रिवेदी । जिम असुर कुमारमांहि पुंस्त्री बेवेद कह्या तिम वाण व्यंतर ज्योतिषी वैमानिक मांहि कहिवा । तेणे का ले चउथे आरे तेणें समयें जेणे समये भगवंत विहार करे छे तेणे अवसरे कल्पभाष्यने अनुक्रमें अनुयायी समोसरणनी वक्तव्यता कहिवी । वाचनांतरे

॥ टीका ॥

मवसरणवक्तव्यता ध्येयासा चावश्यकोक्ता या नव्यतिरिच्यते वाचनान्तरेतु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणे त्यभिहितं कियद्दूरमित्याह जावगणेत्यादि तत्र गणधरः प. ञ्चमः सुधर्माख्यः सापत्यः शेषानिरपत्या अविद्यमानशिष्यसन्ततय इत्यर्थः वोच्छिन्नत्ति मिहाइति तथाहि परिनिव्वुयागणहरा जीवन्ते नायएनजणाओ इंदभूइसुहम्मेय रायगिहेनिव्वएवीरेत्ति अयञ्च समवसरणनायकः कुलकरवंशोत्पन्नो महापुरुषश्चेति कुलकराणां स्वरूपकथाणाञ्च वक्तव्यतामाह जंबुद्दीवेत्यादि सुगमं नवरं म्पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे तत्तोयपसेणइ र मरुदेवेचेवनाभीयत्ति ॥ १ ॥ तया चंदजमचंदकन्ता सुरूवपडिरूवचक्खुकंताय

॥ मूल ॥

णं णेयव्वं । जावगणहरा । सावच्चा निरवच्चा वोच्छिन्ना । जंबूद्दीवेणंदीवे ञारहेवासे तीयाएउस्सप्पिणी ए सत्तकुलगराहोत्था तं० । मित्तदामेसुदामेय सुपासेयसयंपन्ने विमलघोसेसुघोसेय महाघोसेयसत्तमे ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे ञारहेवासे तीयाए ञसप्पिणीए दसकुलगराहोत्था तंजहा । सयंजलेसयाऊय जियसेणाणंत सेणय कज्जसेणेञीमसेणे महासेणेयसत्तमे ॥ २ ॥ दढरहे दसरहे सयरहे । जंबूद्दीवेणंदीवे ञारहेवासे इमी

॥ भाषा ॥

पर्युषणाकल्पोक्तक में जेकह्याछे स्थविरावलीने अधिकारे तेसर्व कहिवो जिहांलगे पांचमा गणधर सुधर्मास्वामी संतान सहित एतले शिष्य प्रशिष्या दिके युक्त शेष थाकता १० गणधर निरपत्य शिष्यादि संपत्ति रहित हुया । जंबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्र गई उत्सर्पिणीयें सात कुलकर हुया । मित्रदाम १ । सुपार्श्व २ । सुदाम ३ । स्वयंप्रभ ४ । वली विमलघोस ५ । सुघोस ६ । महाघोस ७ । सातमो । १ । जबूद्वीपनामा द्वीपने विषे भरतक्षेत्र गई अवसर्पिणीयें १० । कुलकर हुया । स्वयंजल १ । शतायु २ । अजितसेन ३ । अनंतसेन ४ । कार्यसेन ५ । भीमसेन ६ । महाभीमसेन ७ । दृढरथ ८ । दशर

॥ टीका ॥

सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणनामाइंति ॥ २ ॥ तथा नाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरेइय मेहेधरेपइट्ठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ३ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिए कयवम्मासीहसेणे भाणूयविस्ससेणेय ॥ ४ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजयेय रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्तिएत्ति ॥ ५ ॥

॥ मूल ॥

से उसप्पिणीए समाए सत्तकुलगराहोत्था तंजहा । पढमेत्थविमलवाहण चक्खुमजसमंचउत्थमभिचंदे । तत्तोपसेणइए मरुदेवेचेवनाभीय ॥ ३ ॥ एतेसिणं सत्तण्हंकुलगराणं सत्तभारिआहोत्था तंजहा । चंदजस चंदकंता सरूवपडिरूवचक्खुकंताय । सिरिकंतामरुदेवी कुलगरपत्तीणणामाइं ॥ ४ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे वासे इमीसेणं उसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा । णाभीयजियसत्तूय जियारीसंवरे वियमेहेधरेपइट्ठेय महसेणेयखत्तिए ॥ ५ ॥ सुग्गीवेदढरहेविण्हू वसुपुज्जेयखत्तिये । कयवम्मासीहसेणे

॥ भाषा ॥

य ६ । मरुदेव ७ । ... य ९ । सतरथ १० ॥ २ ॥ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीयें सात कुलकर थया । ते कहेछे । पहिला विमलवाहन १ । चक्षुष्मा २ । यशोमान् ३ । चउथो अभिचंद्र ४ । प्रसेनजित् ५ । मरुदेव ६ । नाभी ७ ॥ ३ ॥ एह सात कुलकरांनो ७ स्त्री थई । तेकहेछे । चंद्रयसा १ । चंद्रकांता २ । सुरूपा प्रतिरूपा ४ । चक्षुष्कांता ५ ५ । सिरिकांता ६ । मरुदेवा ७ । एहकुलकरानी स्त्रीनानाम जाणिवा ॥ ४ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रने विषे वर्त्तमान अवसर्पणीयें चोवीस तीर्थंकरांना पिता थया तेकहेछे । नाभि । १ । जितशत्रु २ । जितारि ३ । संवर ४ । मेघ ५ । धर ६ । प्रतिष्ठ ७ । महसेन क्षत्रिय ८ ॥ ५ ॥ सुग्रीव ९ । दृढरथ १० । विष्णु ११ । वसुपूज्य १२ । कृतवर्म्मा १३ । सिंहसेन १४ । भानु १५ । विश्वसेन १६ । सूर १७ सुदर्शन १८ । कुंभ १९ । सु

तथा मरुदेवि विजयसेणा सिद्धत्थामंगलासुसीमाय पुहवीलखणारामा नंदाविण्हूजयासामा ॥ ६ ॥ सुजमासुव्वयअइरा सिरिआदेवीपभावईपउमा वप्पासिवा ॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

ञाणूयविस्ससेणय ॥ ६ ॥ सूरेसुदंसणेकुंभे सुमित्तविजएसमुद्दविजएय । रायायआससेणेय सिद्धत्थेच्चियखत्ति
ए ॥ ७ ॥ उदितोदियकुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहिउववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । एएपियरोजिणवराणं ॥ ८ ॥
जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए चउवीसंतित्थगराणं मायरोहोत्था तं० । मरुदेवि विजयसेणा
सिद्धत्थामंगलासुसीमाय । पुहवीलखणारामा नंदाविण्हूजयासामा ॥ ९ ॥ सुजसासुव्वयअइरा सिरियादेवी
पभावईपउमा । वप्पासिवायवामा तिसलादेवीयजिणमाया ॥ १० ॥ जंबूद्दीवेभारहेवासे चउवीसंतित्थग

॥ भाषा

मित्र २० । विजय २१ । समुद्रविजय २२ । राजाअश्वसेन २३ । सिद्धार्थ क्षत्रिय २४ ॥ ६ ॥ एह २४ राजा केहवा हुवा उदय प्राप्त घणुं मोटोवंश तेहना
विशुद्ध महा निर्दोष वंशछे जेहना । राजानांगुणेकरी सहितछे । तीर्थ धर्मतीर्थना प्रवर्तक तीर्थंकर जिनवीतरागना पिता कह्या ॥ ७ ॥ जंबूद्वीपने
विषे भरतक्षेत्रे एणी अवसर्पिणी ये २४ तीर्थंकरानी मातायई । तेकहेछे । मरुदेवी १ । विजया २ सेना ३ । सिद्धार्था ४ । सुमंगला ५ । सुसीमा ६ ।
पृथिवी ७ । लक्ष्मणा ८ । रामा ९ । नंदा १० । विष्णु ११ । जया १२ । श्यामा १३ । सुयमा १४ । सुव्रता १५ । अचिरा १६ । श्री १७ । देवी १८ । प्रभा
वती १९ । पद्मावती २० । वप्रा २१ । शिवा २२ । वामा २३ । त्रिशला । २४ । एह जिनमाता २४ कही ॥ ८ ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरतक्षेत्रे एणीये अवस
र्पिणीये चौवीस तीर्थंकर देवहुया । ते कहेछे । ऋषभ १ । अजित २ । संभव ३ । अभिनंदन ४ । सुमति ५ । पद्मप्रभ ६ । सुपार्श्व ७ । चंद्रप्रभ ८ । सु

॥ मूल ॥

राहोत्था तंजहा। उसभअजियसंभव अभिणंदणसुमइ पउमप्पभसुपास चंदप्पभ सुविहिपुप्फदंतसीयल सिज्जंसवासुपुज्जा विमलअणंत धम्मसंतिकुंथु अर मल्लिमुणिसुव्वयणमिणेमि पासवद्धमाणोय। एएसिंचउवीसाएतित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा। पढमेत्थवइरणाभे विमलेतहविमलवाहणे चेव। तत्तोयधम्मसीहे सुमित्ततहधम्ममित्तेय ॥ ११ ॥ सुंदरबाहूतहदीहे। बाहूजुगबाहूलठ्ठबाहूय। दिन्नेयइंददत्ते। सुंदरमाहिंदेरेचेव ॥ १२ ॥ सीहरहेमेहरहे। रुप्पीअसुदंसणेयबोधव्वा। तत्तोयनंदणेखलु। सीहगिरीचेववीसइमे ॥ १३ ॥ अदीणसत्तुसंखे। सुदंसणेनंदणेयबोधव्वे। इमीसेउसप्पिणीए एएतित्थि

॥ भाषा ॥

विधि वीजोनाम पुष्पदंत ८। शीतल १०। श्रेयांस ११। वासुपूज्य १२। विमल। अनंत १४। धर्म १५। शांति १६। कुंथु १७। अर १८। मल्लि १९ मुनिसुव्रत २०। नमि २१। नेमि २२। पार्श्व २३। वर्द्धमान २४। एह २४ तीर्थंकरना पूर्व भवनानामधेय एतले। जेणे भवें तीर्थंकर नामकर्म उपार्ज्यो। तेह भवथी ३ भवकरे तेह पूर्व भवथयो। तेकहेछे। प्रथम आदिनाथनो जीव महाविदेह क्षेत्रे ११ मेभवे वज्रनाभचक्रवर्त्तीथयो तिहां २० स्थानक आराधीने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन कियो तिहांथी सर्वार्थ सिद्ध पहुंता तिहांथीचवी आदिनाथ थया एतले तीर्थंकरना भवथी ३ भवमनुष्यनो तेपूर्व भवने क्रमे २४ कहेछे। पहिलो वज्रनाभ १। विमल २। तथा विमलवाहन ३। ततः धर्मसिंह ४। सुमित्र ५। धर्ममित्र ६। सुंदरबाहु ७। तथादीर्घबाहु ८। युगबाहु ९ लष्टबाहु १०। दिन्न ११। इन्द्रदत्त १२। सुंदर १३। माहेंद्र १४। सिंहरथ १५ मेघरथ १६। रुपी १७। सुदंसण १८। ततः नंदन १९। सिंहगिरी २०।

यवामा तिसलादेवीयजिणमायत्ति सव्वोउगसुभाएछायाएत्ति सर्वर्त्तुकया सर्वषु शरदादिषु ऋतुषु सुखदयाच्छायया प्रभया आतपाभावलक्षणया वा युक्ता इति ॥ टीका ॥

कराणंतुपुव्वभवा । एएसिंचउव्वीसाएतित्थकराणं चउव्वीसंसीयाउहोत्था तंजहा । सीयायसुदंसणासुप्पभाय सिद्धत्थसुप्पसिद्धाय विजयायवेजयंती जयंतीअपराजियाचेव ॥ १४ ॥ अरुणप्पभचंदप्पभ । सूरप्पहअग्गि सप्पभाचेव । विमलायपंचवन्ना । सागरदत्तायणागदत्ताय ॥ १५ ॥ अभयंकरानिव्वुइकरी । मणोरमामणोह राचेव । देवकुरोत्तरकुरा । विसालचंदप्पभातीय ॥ १६ ॥ एआउसीआउ । सव्वेसिंचेवजिणवरिंदाणं । सव्व जगवच्छलाणं । सव्वोउयसुखयछायाए । पुव्विंउक्खित्तामणु । स्सेहिंसाहट्ठरोमकूवेहिं । पच्छावहंतिसीयं । अ ॥ मूल ॥

अदीनशत्रु २१ । शंख २२ । सुदर्शन २३ । नंदन २४ । एहअनुक्रमे जाणिवा ॥ ८ ॥ एणी अवसर्पिणीये तीर्थंकरानां पूर्व भवनाम जाणिवा एह २४ तीर्थ करानी २४ शिबिका दीक्षानो पालखीछे । तेकहेछे । सुदर्शना १ । सुप्रभा २ । सिद्धार्था ३ । सुप्रसिद्धा ४ । विजया ५ । वैजयंती ६ । जयंती ७ । अपराजिता ८ ॥ १४ ॥ अरुणप्रभा ९ । चंद्रप्रभा १० । सूर्यप्रभा ११ । अग्निसप्रभा १२ । विमला १३ । पंचवर्णा १४ । सागरदत्ता १५ । नागदत्ता १६ ॥ १६ ॥ अभयंकरा १७ । निवृतिकरी १८ । मनोरमा १९ । मनोहरा २० । देवकुरा २१ । उत्तरकुरा २२ । विशाला २३ । चंद्रप्रभा २४ । एह शिबिकामांबेसीने दीक्षा लीधी तेदीक्षा शिबिका जाणवी । सर्व जगत त्रिभुवन वत्सल महाउपकारी ऐसे जिनेंद्रनी । शिबिका केहवीछे । सर्व शरदादिक ऋतु विषे सुखदायक छाया युक्त आतापना रहित छे । तेह शिबिका पहिले हर्ष करी रोमकूप जेहना खडा थया छे एहवा मनुष्ये करी उपाडी पछे तेह शिबिका प्रते असुरेंद्र चमरा ॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

शेष: तथा माइस्तुरोमकूवेहिंति साशिविका यस्यां जिनोध्यारूढः हृष्टरोमकूपै रुद्धुषितरोमभि रित्यर्थ: तथा चलचवलकुंडलधरत्ति चलाश्च ते चपलकुण्डलधराश्चेति वाक्यं तथा स्वच्छन्देन स्वरुचा विकुर्वितानि यान्याभरणानि मुकुटादीनि तानि धारयंति येते तथा असुरेंद्रादयइतियोग: गरुलत्ति गरुडध्वजा: सुपर्णकुमारा इत्यर्थ: तथा सव्वेविएगदूसेण निग्गयाजिणवराचउवीसं नयणामन्नलिंगे नयगिहिलिंगेकुलिंगेयत्ति दूसेणत्ति एकेनवस्त्रेणेंद्रसमर्प्पितेनोपधिभूतेन युक्तानि

॥ मूल ॥

सुरिंदसुरिंदनागिंदा ॥ १८ ॥ चलचवलकुंडलधरा । सच्छंदविकुव्वियाभरणधारी । सुरअसुरवंदआणं । वहंति सीअंजिणंदाणं ॥ १९ ॥ पुरउवहंतिदेवा । नागादाहिणम्मिपासम्मि । पच्चत्थिमेणअसुरा । गरुलापुण उत्तरपासे ॥ २० ॥ उसभोअविणीयाए । बारवईएअरिट्ठवरणेमी । अवसेसातित्थयरा । निक्कंताजम्मभूमीसु ॥ २१ ॥ सव्वेविएगदूसे । णणिग्गयाजिणवराचउवीसं । णयणामअन्नलिंगे । णयगिहिलिंगेकुलिंगे

॥ भाषा ॥

दिक सुरेंद्र सौधर्मादिक नागेंद्र धरणेन्द्रादिक ॥ १८ ॥ एह असुरेंद्र केहवा छे चल हालता चपल जे कुंडल तेहना धरणहार छे । स्वच्छन्द आपणी रुचीये करी विकुर्व्या आभरण तेहना धरणहार छे। सुर देवता असुर भवनपत्यादिके करी वींद्या छे। एहवा थइने जिनेंद्रनो शिबिकाने उपाडे ॥ १९ ॥ आगलि वाले देवता नागदेवता दक्षिण पासे चाले पिछाडो असुरेंद्र चमरादिक गरुड देवता सुपर्ण कुमार वली उत्तर पासे एतले डावे पासे ॥ २० ॥ ऋषभ आदिनाथे विनीता नगरीयें दीक्षा लीधी । द्वारिकायें अरिष्टनेमीयें दीक्षा लीधी अने जाया सौरीपुरे । शेष २२ तीर्थंकर जन्म भूमियें दीक्षा लीधी ॥ २१ ॥ सवलाई तीर्थंकर देवने इन्द्रे १ देवदुष्य वस्त्र दीधी तेणे सहित नीकल्या अन्य लिंङ्गे नही तथा गृहस्थ लिंगे नही केवली तीर्थंकरने लिंगे कुलिंगी शाक्या

क्रान्ता इत्यर्थः नैवान्यलिङ्गे स्थविरकल्पिकादिलिङ्गे तीर्थंकरलिङ्ग एवेत्यर्थः कुलिङ्गे शाक्यादिलिङ्गे तथा एक्कोभगवंवीरो पासोमल्लीयतिहिंतिहिंसएहिं भय वंपिवासुपुज्जो छहिंपुरिससएहिंनिक्खंतं ॥ १ ॥ उग्गाणंभोगाणं राइन्नाणंच खत्तियाणंच चउहिंसहस्सेहिंउसभो सेसाओसहस्सपरिवारा ॥ २ ॥ सुमइत्थनिच्च भत्तेण निग्गओवासुपुज्जजिणो चोत्थेणंपुण्णपासो मल्लीवियअट्ठमेणमेभाओ ॥ ३ ॥ इदृशमिति सुमति एव नित्यभक्तेनानुपोषितो निष्क्रान्तइत्यर्थः तथा सम्वच्छरे

वा ॥ २२ ॥ एक्कोभगवंवीरो । पासोमल्लीयतिहिँतिहिँसएहिं । भगवंपिवासुपुज्जो । छहिँपुरिससएहिँनि क्खंतो ॥ २३ ॥ उग्गाणंभोगाणं । राइन्नाणंचखत्तियाणंच । चउसहस्सेहिंउसभो । सेसाउसहस्सपरिवारा ॥ १४ ॥ सुमइत्थणिच्चभत्ते । णग्गिग्गउवासुपुज्जचोत्थेणं । पासोमल्लीयअट्ठ । मेणंसेसाउछट्ठेणं ॥ २५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंचउव्वीसं पढमभिक्खादायारोहोत्था तंजहा । सिज्जंसवंभदत्त सुरिंददत्तेयइं

दिक ने लिंगे नही ॥ ५ ॥ भगवंत महावीर स्वामी एकला दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ अने मल्लिनाथ त्रिण २ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी । १२ वासुपूज्य ६ से पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २३ ॥ उग्रकुल भोगकुल राजाना तथा मोटा चत्रिय एहवा ४००० पुरुष साथे आदिनाथे दीक्षा लीधी । शेष १९ । तीर्थ कर १००० पुरुष साथे दीक्षा लीधी ॥ २४ ॥ सुमति नाथे नित्य भक्ते दीक्षा लीधी । वासुपूज्ये चउत्थ भक्त १ उपवासे दीक्षा लीधी । पार्श्वनाथ मल्लिनाथ त्रि हुं उपवासे दीक्षा लीधी । शेष २० तीर्थंकरे छट्ठ भक्त २ उपवासे दीक्षा लीधी ॥ २५ ॥ एह २४ जिनने २४ प्रथम भिक्षा दायक थया । ते कहे छे । श्रेयांश १ । आदिनाथने श्रेयांसे पारणूं करायो एम २४ जाणवा ॥ ब्रह्मदत्त २ । सुरिन्द्रदत्त ३ । इन्द्रदत्त ३ । पद्म ५ । सोमदेव ६ । माहेंद्र ७ । सोमदत्त ८ ॥ २६

॥ टीका ॥

॥ मूल ॥

॥ भाषा ॥

॥ टीका ॥

य भिक्खा लद्धाउसभेण लोगनाहेण सेसेहिंबीयदिवसे लद्धाओपढमभिक्खाओत्ति तथा उसभस्सपढमभिक्खा खोयरसोआसिलोगनाहस्स सेसाणंपरमन्नं अमिय

॥ मूल ॥

ददत्तेय । पउमेयसोमदेवे । माहिंदेसोमदत्तेय ॥ २६ ॥ पुस्सेपुणव्वसूपुण । णंदसुणंदेजयेयविजयेय । तत्तो यधम्मसीहे । सुमित्ततहवग्गसीहेच्च ॥ २७ ॥ अपराजियविससेणे । वीसइमोहोइउसन्नसेणोय । दिस्रेव रदत्तधणे । वहुलोतहआणुपुव्वीए ॥ २८ ॥ एएविसुद्धलेसा । जिणवरभत्तीइपंजलिउडाउ । तंकालंतंसमयं पडिलाभेईजिणवरिंदे ॥ २९ ॥ संवच्छरेणभिक्खा । लद्धाउसभेणलोयणाहेण । सेसेहिवीयदिवसे । लद्धाउ पढमभिक्खाउ ॥ ३० ॥ उसभस्सपढमभिक्खा । खोयरसोआसिलोगणाहस्स । सेसाणंपरमन्नं । अमियरस रसोवमंआसि ॥ ३१ ॥ सव्वेसिंपिजिणाणं । जहियंलद्धाउपढमभिक्खाउ । तहियंवसुंधराउ । सरीरमेत्ताउ

॥ भाषा ॥

पुष्पदन्त ८ । पुनर्वसु १० । नंद ११ । सुनंद १२ । जय १३ । विजय १४ । तिवारपछे धर्मसिंह १५ । सुमित्र १६ । तथा वर्गसिंह १७ ॥ २७ ॥ अपराजित १८ । विश्वसेन १९ । वीसमो ऋषभसेन २० । दिन्न २१ । वरदत्त २२ । धन २३ । बहुल २४ । एह अनुक्रमे २४ ॥ २८ ॥ एह दाताकेहवाछे भली लेश्याना धणी जिनवरनो भक्तियेकरी प्रांजलि हाथजोडो आगलिरह्या छे । तेणे काले तेणे समये जिनवरने आहारपाणीये प्रतिलाभ देता हुया ॥ २९ ॥ ऋषभनाथ परमेश्वरने १ वरसे भिक्षालीधी दीक्षानो पहिलो पारणूं थयो । शेषथाकता २३ तीर्थंकरने वीजेदिन पारणूंथयो । आदिनाथनो । इक्षुरसे करी शेष २३ नेखी रथी परमान्नथी पारणूंथयो तेह परमान्न अमृतरसनी उपमानुंछे ॥ ३१ ॥ सघलाई जिनने जिहां प्रथम भिक्षालीधी तिहां देवता साढे१२ कोडि सोनइयानी वृष्टि

॥ टीका ॥

रसरसोवमंग्रासि.॥ १ ॥ सरीरमेत्ताउत्ति पुरुषमाना चेइयरुक्खेत्ति वद्वपोठवृत्ता येषा मधः केवलान्युत्पन्नानीति बत्तोसाइ धणुयं गाहा निश्चोउगोत्ति नि त्यं सर्वदाऋतुरेव पुष्पादिकालो यस्यस नित्यतुकः असोगोत्ति अशोकाभिधानो यः समवसरणभूमिमध्ये भवति ओच्छन्नोसालरुक्खेणंति अवच्छन्नः शालवृक्षे

॥ मूल ॥

वद्वाउ ॥ ३२ ॥ एएसिंचउव्वीसाएतित्थगराणंचउव्वीसं चेइयरुक्खाहोत्था तंजहा । णिग्गोहसत्तिवन्नेसा लेपियएपियंगुछत्ताए । सरिसेयणागरुक्खे । मालीयपिलुंकरुक्खेय ॥ ३३ ॥ तंदुलपाडलजंबू । आसत्थेखलुत हेवदहिवन्ने । णंदीरुक्खेतिलए । अंबगरुक्खेअसोगेय ॥ ३४ ॥ चंपयबउलेयतहा । वतसिरुक्खेयधायईरुक्खे सालेयवद्धमाणे । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३५ ॥ बत्तीसाइंधणुइं । चेइयरुक्खोयवद्धमाणस्स । णिच्चोउगो असोगो । तच्छन्नोसालरुक्खेणं ॥ ३६ ॥ तिन्नेवगाउआइं । चेइयरुक्खोजिणस्सउसभस्स । सेसाणंपुणरुक्खा

॥ भाषा ॥

शरीर प्रमाणे उंचोकरी ॥ ३२ ॥ एह २४ जिनने २४ चैत्यवृक्ष पूज्यवृक्ष जेहेठे केवलज्ञान ऊपनो ते कहेछे। आदिनाथने न्यग्रोध १ । वडनां पेडनीचे केवलज्ञान उपनो एमअनुक्रमे २४ जगे कहिवो। सप्तपर्ण २ । शालवृक्ष ३ । प्रियालु ४ । प्रियंगु ५ । छत्रवृक्ष ६ । सरस ७ । नाग ८ । मालवी ९ । पीलुख १० । टींबरू ११ । पाडल १२ । जंबू १३ । पीपल १४ । दधिपर्ण १५ । नंदीवृक्ष १६ । तिलक १७ । आम्बा १८ । अशोक १९ । चंपा २० । बकुल २१ । वेतस २२ । धातकीआवला २३ । शालिवृक्ष २४ वर्द्धमानस्वामीनो चैत्यवृक्ष २४ जिनना कह्या ॥ ३५ ॥ ३२ धनुषप्रमाणे चैत्यवृक्ष जे हेठे पृथिवीशिलापट्ट तिहांबेसी भगवंतवर्द्धमानस्वामी व्याख्यान करे । नित्य बारेमासे फल्यो फूल्यो अशोकवृक्ष शालवृक्षे करी व्याप्त एतले अशोकवृक्षने ऊपर शालवृक्षछे । आदिनाथनो चैत्यवृक्ष ३ कोस ऊंचो एतले

॥ टीका ॥

चैत्यत एववचना दर्शांकस्योपरि शालवृक्षापि कथं चिदस्तीत्यवसीयत इति तिस्सेवगाउयाइं गाहा ऋषभस्वामिनो द्वादशगुणइत्यर्थः सवेइयत्ति वेदिकायुक्ता एतेचाशोकाः समवसरणसम्बन्धिनः सभायन्तइति तहा भरहोसगरोमघवं सणंकुमारोयरायसद्दूलो संतीकुंथूयअरोह वइसुभूमोयकोरव्वो ॥ १ ॥ नवमोय

॥ मूल ॥

 सरीरउ बारसगुणाउ ॥ ३७ ॥ सच्छत्तासपडागा । सवेइयातोरणेहिं उववेया । सुरअसुरगरुलमहिया । चेइयरुक्खाजिणवराणं ॥ ३८ ॥ एए सिचउवीसाए तित्थयराणं चउवीसंपढमसीसाहोत्था तंजहा । पढमेत्थ उसभसेणे बीएपुणहोइसीहसेणेय । चारूयवज्जनाभे । चमरेतहसुव्वएविदब्भेय ॥ ३९ ॥ दिन्नेवाराहेपुणआणंदेगोथुभेसुहम्मेय । मंदरजसेअरिट्ठे । चक्काउहसंबकुंभअभिगयेय ॥ ४० ॥ इंदकुंभेयसुभे वरदत्तेदिन्नइंदभूईय ॥ उदितोदितकुलवंसा विसुद्धवंसागुणेहिं उववेया । तित्थप्पवत्तयाणं । पढमासिस्साजिणवराणं ॥

॥ भाषा ॥

भगवतथी १२ गुणो ऊंचोथयो शेष २३ तीर्थ करनाक्षच पोतानां शरीरथी १२ गुणां कहिवा ॥ ३७ ॥ तेवृच ३ छत्र सहित ध्वजा सहित वेदिका सहित तोरणयुक्त सुरवैमानिकदेव असुर भवनपत्यादिक सुपर्णादिकदेवें करी पूजितछे एहवा जिनेंद्रना चैत्यवृक्ष जाणिवा ॥ ३८ ॥ २४ जिनना २४ प्रथम शिष्य वडागणधरथया तेकहेछे । आदिनाथनो वडोशिष्य ऋषभसेन १ । सिंहसेन २ । चारुरूप ३ । वज्रनाभ ४ । चमर ५ । सुव्रत ६ । बीजोनाम प्रद्योतन ६ विदर्भ ७ ॥ ३९ ॥ दिन्न ८ । वाराह ९ । आनंद बीजोनाम पद्मनंदी १० । गोस्तुभ बीजोनाम कृतार्थ ११ सुधर्मा बीजोनामसुभूम १२ । मंदर १३ । यशोधर १४ अरिष्ट १५ चक्रायुध १६ । साम्ब १७ । कुंभ १८ । अभिनय १९ ॥ ४० ॥ इन्द्रकुंभ बीजोनाम मल्ली २० । शुभ २१ । वरदत्त २२ । आर्यदिन्न २३ । इन्द्रभूति २४

॥ मूल ॥

४१ ॥ एएसिणंचउवीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढमसिस्सणीहोत्था तंजहा । बंभीयफग्गुसामा । अजिया कासवीरईसोमा । सुमणावारुणिसुलसा । धारणिधरणीयधरणिधरा ॥ ४२ ॥ पउमासिवासुयीतह । अंजुया भावयप्पायरक्खीय । बंधुमतीपुप्फवती । अज्जाअमिलायआहिया ॥ ४३ ॥ जक्खिणीपुप्फचूलाय चंदण ज्जायआहिया ॥ उदितोदियकुलवंससगाहा । जंबूद्दीवे भारहेवासे इमीसेओसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिपिय रोहोत्था तंजहा । उसभेसुमित्तविजए समुद्दविजएयअस्ससेणेय । विस्ससेणेयसूरे । सुदंसणेकत्तवीरिएचेव ॥ ४४ ॥ पउमुत्तरेमहाहरी । विजएरायातहेवय । बंभेबारसमेउत्ते । पिउनामाचक्कवट्टिणं ॥ ४५ ॥ जंबूद्दीवे

॥ भाषा ॥

एह २४ गणधर उदितोदित कुलवंशछे । इत्यादि पूर्वगाथा कहिवी ॥ ४१ ॥ एह २४ जिनवरानी २४ प्रथम शिष्यणी बडी साध्वीथई तेकहेछे । ब्राह्मी १ । फलगुनी २ । श्यामा ३ । अजिता ४ । काश्यपी ५ । रती ६ । सोमा ७ । सुमना ८ । वारुणी ९ । सुलसा १० । धारणी ११ । धरणी १२ । धरणीधरा १३ । ॥ ४२ ॥ पद्मा १४ । शिवा १५ । श्रुति १६ । अंजुका बीजोनाम दामिनी १७ । भावितात्मा एहवी रचिता १८ । बंधुमती १९ । पुष्पवती २० । अमिला २१ । ४३ ॥ यक्षिणी २२ । पुष्पचूला २३ । चंदनबाला २४ ॥ एह साध्वी बोहवी छे उदयप्राप्तवंशमे उपनी छे । इत्यादि पूर्वनी गाथा जाणवी ॥ जंबूद्वीप ने विषे भरत क्षेत्रे एणी वर्त्तमान अवसर्प्पिणीयें १२ चक्रवर्त्तिना पिताहुवा । ते कहेछे । भरतनो पिता ऋषभ १ । सुमतिविजय २ । समुद्रविजय ३ । अश्वसेन ४ । विश्वसेन ५ । सूर ६ । सुदर्शन ७ । कार्त्तवीर्य ८ । पद्मोत्तर ९ । महाहरी १० । राजाविजय ११ । ब्रह्म १२ .एह १२ चक्रवर्त्तिपितानानाम ॥ ४५

महापउमो हरिसेणोचेवरायसद्दूलो जयनामोयनरवई बारसमोबंभदत्तोय ॥ २ ॥ तथा पयावतीयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहसिरोय अग्गिसिहोयदसरहो न ॥ मूल ॥

भारहेवासे इमीसेउसप्पिणीए बारसचक्कवट्टिमायरोहोत्था तंजहा । सुमंगलाजसवती भद्दासहदेवी अइरा ॥ टीका ॥
सिरिदेवीतारा जालामेरावप्पाचुल्लणीअपच्छिमा ॥ ॥ जंबूद्दीवे० । बारसचक्कवट्टीहोत्था तंजहा । भरहे
सगरेमघवं । सणंकुमारोयरायसद्दूलो । संतीकुंथूयअरो । हवइसुभूमोयकोरव्वो ॥ ४६ ॥ नवमोयमहापउ
मो । हरिसेणोचेवरायसद्दूलो । जयनामोयनरवई । बारसमोवंभदत्तोय ॥ ४७ ॥ एएसिंबारसण्हंचक्कवट्टी
णं बारसइत्थिरयणाहोत्था तंजहा । पढमाहोइसुभद्दा । भद्दसुणंदाजयायविजयाय । किण्हसिरीसूरसिरी
पउमसिरीवसुंधरादेवी ॥ ४८ ॥ लच्छिमईकुरुमई इच्छीरयणाणणामाइं ॥ जंबूद्दीवे० नवबलदेवनववासु

जंबूद्वीपने विषे भरतक्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ति मातायई ते कहेछे । सुमंगला १ । यशोमती २ । भद्रा ३ । सहदेवी ४ । अचिरा ५ । श्री ६ ॥ भाषा ॥
देवी ७ । तारा ८ ज्वाला ९ मेरा १० वप्रा ११ छेहली चुलणी १२ ॥ जंबूद्वीप संबंधी भरत क्षेत्रे वर्त्तमान अवसर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्त थया ते कहे छे भरत १
सगर २ मघवा ३ सनत्कुमार ४ राजा मांहि सिंहसमान शांतिनाथ ५ । कुंथु ६ । अर ७ । संभूम ८ ॥ ४६ ॥ महापद्म । हरिषेन १० । जय ११ ब्रह्मदत्त
१२ ॥ ४७ ॥ एह १२ चक्रवर्त्तना १२ स्त्री रत्न थया ते कहेछे सुभद्रा १ भद्रा २ सुनदा ३ जया ४ विजया ५ कृष्णश्री ६ सूर्यश्री ७ पद्मश्री ८ वसुंधरा ९ देवी १०
४८ ॥ लक्ष्मीवती ११ कुरुमती १२ एह स्त्री रत्नना नाम जाणिवा ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे वर्त्तमान अवसर्पिणीये ९ बलदेव ९ वासुदेवना पिता थया

॥ टीका ॥

वमोभविभोयवसुदेवोत्ति ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेत्यादि दशाराणां वासुदेवानां मण्डलानि बलदेववासुदेवद्वयद्वयलक्षणाः समुदाया दशारमण्डलानि अतएव दोदो रामकेसवत्ति वक्ष्यति दशारमण्डलाव्यतिरिक्तत्वाच्च बलदेववासुदेवानां दशारमण्डलानीति पूर्वमुद्दिष्टापि दशारमण्डलव्यक्तिभूतानां तेषां विशेषणार्थमाह त यथेत्यादि तथ्येति बलदेववासुदेवस्वरूपोपन्यासारम्भार्थः केचित्तु दशारमण्डणा इति तत्रदशाराणां वासुदेवकुलीनप्रजानां मंडनाः शोभाकारिणो दशारमण्ड ना उत्तमपुरुषा इति तीर्थकरादीनां चतुःपंचाशत् उत्तमपुरुषाणां मध्यवर्त्तित्वात् मध्यमपुरुषा स्तीर्थकरचक्रिणां प्रतिवासुदेवानां च बलाद्यपेक्षया मध्यवर्त्तित्वात्

॥ मूल ॥

देवापितरोहोत्था तंजहा । पयावईयबंभो सोमोरुद्दोसिवोमहासिरोय । अग्गिसिहोयदसरहो । नवमोभणि अयवसुदेवो ॥ ४९ ॥ जंबूद्दीवेणं० । णववासुदेवमायरोहोत्था तंजहा । मियावईउमाचेव पुहवीसीया यअंबिया । लच्छिमईसेसमई केकईदेवईतहा ॥ ५० ॥ जंबूद्दीवेणं ० । णवबलदेवमायरोहोत्था तंजहा । भद्दातहसुभद्दाय । सुप्पभायसुदंसणा । विजयावेजयंतीय जयंतीअपराजिया ॥ ५१ ॥ णवमीयारोहिणीय

॥ भाषा ॥

प्रजापति १ ब्रह्म २ सोम ३ रुद्र ४ शिव ५ महेश्वर ६ अग्निसिंह ७ दशरथ ८ नवमोवसुदेव ९ ॥ १ ॥ जम्बूद्दीपना भरत ने विषे वर्त्तमान काले ९ वासुदेवनी माता थई तेकहेछे मृगावती १ उमा २ पृथिवी ३ सीता ४ अम्बिका ५ लक्ष्मीवती ६ शिववती ७ केकई वीजोनाम सुमित्रा ८ देवकी ९ एह नववासुदेवनी माता ॥ हिवे ९ बल देवनी माता कहेछे ॥ भद्रा १ सुभद्रा २ सुप्रभा ३ सुदर्शना ४ विजया ५ वैजयंती ६ जयंती ७ अपराजिता ८ रोहिणी ९ एह बलदेवनी माता जाणिवी ॥ २ ॥ जंबूद्दीपना भरतमे विषे एणी अवसर्प्पिणीये नव दशारना वासुदेवना मंडल वासुदेव बलदेव लक्षण समुदाय ते दशार मंडल थया तेकहे छे । उत्तम

॥ टीका ॥

प्रधानपुरुषास्तात्कालिक पुरुषाणां शौर्यादिभिः प्रधानत्वात् ओजस्विनो मानसबलोपेतत्वात् तेजस्विनो दीप्तशरीरत्वात् वर्चस्विनः शारीरबलोपेतत्वात् यश स्विनः पराक्रमं प्राप्यप्रसिद्धिप्राप्तत्वात् छायंमित्ति प्राकृतत्वात् च्छायावन्तः शोभायमानशरीरा अतएव कान्ताः कान्तियोगात् सौम्या अरौद्राकारत्वात् सुभगा जनवल्लभत्वात् प्रियदर्शना चक्षुष्यरूपत्वात् सुरूपा समचतुरस्रसंस्थानत्वात् शुभं सुखं वा सुखकरत्वा च्छीलं स्वभावो येषान्ते शुभशीलाः सुखशीला वा सुखे नाभिगम्यन्ते सेव्यन्ते ये शुभशीलत्वादेव ते सुखाभिगम्याः सर्वजननयनानांकान्ता अभिलाष्या ये ते तथा ततः पदत्रयस्य कर्म्मधारयः ओघबलाः प्रवाहबलाः अ व्यवच्छिन्नबलत्वात् अतिबलाः शेषपुरुषबलानामतिक्रमात् महाबलाः प्रशस्तबलाः अनिहता निरुपक्रमायुष्कत्वा दुरोयुद्धेच भूम्यामपातित्वात् अपराजिता

॥ मूल ॥

बलदेवाणमायरो ॥ जंबूद्दीवेणं० । णवदसारमंडलाहोत्था तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरि सा उयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी छायंसी कंता सोमा सुभगा पियदंसणा सुरूवा सुहसीला सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता उहबला अतिबला महाबला अनिहता अपराइयसत्तुमद्दणा रिपुसहस्समाणमहणा सा

॥ भाषा ॥

पुरुष ते मांहि वर्त्ति ते माटे वली मध्यम पुरुष तीर्थंकर चक्रवर्त्त तथा प्रतिवासुदेवनी अपेक्षाये प्रधान पुरुष सौर्यगुणे करी युक्त ओजस्वी मनो बलेकरी सहित तेजस्वी दीप्ति युक्त शरीर थी वर्चस्वी शरीर सम्बंधी बलेकरी सहित यशस्वी जसना धणी शोभायमान शरीरोपेत कांतिवान् रुद्रा कार नही सहुने वल्लभ देखवा योग्य समचतुरस्र संस्थानो सहुने सुखकारी सुखें सेविवा योग्य सर्व लोकना नेत्रने कांत देखिवा योग्य बल जेह नो तूटे नही शति वलना धणी महाबली निरुपक्रम आयुना धणी वैरीयें पराभव्या न जाय शत्रुनामर्द्दक रिपु सहस्रना मानने मथनहार नम्र

॥ टीका ॥

स्तैरेवगुणा मपराजितत्वात् एतदेवाह शत्रुमर्दना स्तच्छरीरतत्सैन्यकदर्थनाद्रिपुसहस्रमानमथना स्तद्वांछितकार्यविघटनात् सानुक्रोशाः प्रणतेष्वद्रोहकत्वा त् अमत्सराः परगुणलवस्यापि ग्राहकत्वात् अचपला मनोवाक्काय स्थैर्यात् अचण्डा निष्कारणप्रबलकोपरहितत्वात् मिते परिमिते मञ्जुलौ कोमलप्रलापश्चा लापो हसितंच येषान्ते मितमञ्जुलप्रलापहसिताः गम्भीरमदर्शितरोषतोषशोकादिविकार मेघनादव द्वा मधुरं श्रवणसुखकर मतिपूर्ण मर्थप्रतीतिजनकं सत्य मवितथ मवचन म्वाक्यं येषान्ते तथा ततः पदद्वयस्यकर्मधारयः अभ्युपगतवत्सला स्तत्समर्थनशीलत्वात् शरण्या स्त्राणकरणेसाधुत्वात् लक्षणानि मानादीनि वज्रस्वस्तिकचक्रादीनि वा व्यञ्जनानि तिलकमषादीनि तेषाङ्गुणा महर्द्धिप्राप्त्यादय स्तै रुपेताःसर्क्करादिदर्शनादुपपेता युक्ता लक्षणव्यंजनगुणो पपेता मानमुदकद्रोणपरिमाणशरीरता कथ मुदकपूर्णायां द्रोण्यां निविष्टे पुरुषे यज्जलं ततोनिर्गच्छति तद्यदिद्रोणप्रमाणं स्या त्तदा स पुरुषो मानप्राप्त

॥ मूल ॥

णुक्कोसा अमच्छरा अचपला अचंडा मियमंजुलपलावहसियगंभीरमधुरपडिपुण्णसच्चवयणा अब्भुवगय वच्छला सरण्णा । लक्खणवंजणगुणोववेआ माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगा ससिसोमागारकं

॥ भाषा ॥

त्रिषे दयावंत परगुण ग्राहक मन वचन कायाये करी धैर्यवान निष्कारण कोप रहित मित ते थोडो मञ्जुल कोमल जे प्रलाप बोलवो अने हसिवो छे जेहनो वलो गम्भीर रोष रहित मधुर बोलता सुखकारी प्रतिपूर्ण अर्थनो प्रतीति उत्पादक सांचो बिघटे नही एहवो छे वचन जेहनो तथा शरणाग तवत्सल शरण राखिवा समर्थ लक्षण तेस्वस्तिकादिक व्यञ्जन तेतिलक मसादिक तेहना गुण महाऋद्धि प्राप्ति लक्षण तेणे करी युक्त मान ते उदक द्रोण परिमाण शरीरनो उंच पणो उन्मान ते अर्द्ध भार परिमाणता प्रमाण ते अठोत्तर सो अंगुलनो ऊंच पणो तेणे मान १ उन्मान २ प्रमाणे ३

॥ टीका ॥

इत्यभिधीयते उन्मान मर्द्धभारपरिमाणता कथं तुलारोपितस्य पुरुषस्य यद्यर्द्धभार स्तौल्य भवति तदा सावुन्मानप्राप्त उच्यते प्रमाणमष्टोत्तरशतमङ्गुलानामु च्छ्रय: मानोन्मानप्रमाणै: प्रतिपूर्णमन्यूनंसुजातमागर्भाधानात् पालनविधिनासर्वाङ्गसुन्दरं निखिलावयवप्रधानमंगंशरीरं येषान्ते तथा शशिवत् सौम्याका रमरौद्रमवीभत्सम्वा कांतंदीप्तं प्रियंजनानां प्रमोदोत्पादकं दर्शनं रूपं येषान्ते तथा अमरिसणत्ति अमर्षणा: प्रयोजनेष्वनलसाअमर्षणावा अपराधिष्वपि कृतक्षमा: प्राकाण्डउत्कटोदण्डप्रकार आज्ञाविशेषो वा येषान्ते तथा अथवा प्रचण्डोदु:साध्यसाधकत्वा द्दण्डप्रचार: सैन्यविचरणं येषान्ते तथा गम्भीरामल क्षमाणांतर्वृत्तित्वेन दृश्यन्ते ये ते गम्भीरदर्शनीया स्तत: पदद्वयस्य कर्म्मधारय: प्रचण्डदण्डप्रचारेण वा ये गम्भीरा दृश्यन्ते तथा तालोवृक्षविशेषो ध्वजा येषान्ते तालध्वजा: वलदेवा उद्विद्धउच्छ्रितो गरुडलचित: केतु र्ध्वजो येषान्ते उद्विद्धगरुडकेतवो वासुदेवा: तालध्वजाश्च उद्विद्धगरुडकेतवश्च तालध्वजोद्विद्ध गरुडकेतव: महाधनुर्विकर्षका: महाप्राणत्वात् महासत्वलक्षणजलस्य सागरा इव सागरा आश्रयत्वा न्महासत्वसागरा: दुर्द्धरा रणाङ्गणे तेषां प्रहरतां केना

॥ मूल ॥

तपियदंसणा अमरिसणा पयंडदंडप्पयारा गंभीरदरसणिज्जा तालज्झउव्विद्धगरुलकेऊ महाधणुविकट्टया

॥ भाषा ॥

करो प्रतिपूर्ण अन्यून । गर्भाधानथको रूडोविधिये करी भलो नीपनोछे सर्व शरीरावयवें करी सुंदर शरीर जेहनो । चंद्रमाने समान सौम्य अरुद्रछे तेजा कार कांत दीप्तिवंत । प्रिय प्रेमोत्पादक दर्शनछे जेहनो । कार्यने विषे आलसी नही अथवा अमर्ष रहित । प्रचंड दु:साध्यने साधे एहवोछे दंडप्रचार सेनानो विचरवो जेहनो । गंभीर कल्पांनजाय दर्शन आकार चित्ताभिप्राय जेहनो । तालवृक्ष ध्वजाछे जेहने तेतालध्वज गरुडनो रूपछे ध्वजाने विषे ध्वजा ऊंचो करोछे जेणे । वलदेवने आगेतालध्वज होय वासुदेवने आगे गरुडध्वजहोय । तथामहाधनुषना खांचणहार । महासत्व लक्षण जलना.

॥ टीका ॥

पि धन्विना धारयितुं मशक्यत्वात् धनुर्धराः कोदण्डप्रहरणा धीरेष्विवेते पुरुषाः पुरुषकारवन्तो न कातरेष्विति धीरपुरुषा युद्धजनिता या कीर्त्ति स्तत्प्रधा ना: पुरुषा युद्धकीर्त्तिपुरुषाः विपुलकुलसमुद्भवा इति प्रतीतंमहारत्नं वज्रन्तस्य महाराणतया विघटका अङ्गुष्टतर्ज्जनीभ्यां चूर्णका महारत्नविघटका वज्रंहि अभिक्रस्थां धृत्वा अयोघनेना स्फोद्यते नच भिद्यते तावेवभिनत्तीति दुर्भेदं तदिति अथवा महनीया मारचनासागरशकटव्यूहादिना प्रकारेण सिसंग्राम विधी महासैन्यस्य तां रणरङ्गरसिकतया महाबलतया च विघटयंति वियोजयति ये ते महारचनाविघटकाः पाठान्तरेण तु महारणविघटकाः अर्द्धभरत स्वामिनः सौम्या नीरुजः राजकुलवंशतिलकाः अजिताः अजितरथाः हलमुशलकणकपाणयः तत्र हलमुशलेप्रतीते ते प्रहरणतया पाणौ हस्ते येषान्ते बलदेवा येषान्तु कणकाबाणाः पाणौ ते शार्ङ्गधन्वानो वासुदेवाः शङ्खश्च पाञ्चजन्याभिधान श्चक्रन्तु सुदर्शननामकं गदाच कौमोदकी संज्ञा लकुटविशेषः श

॥ मूल ॥

महासत्तसाअरा दुद्धरा धणुद्धरा धीरपुरिसा जुद्धकित्तिपुरिसा विउलकुलसमुब्भवा महारयणविहाडगा अद्ध भरहसामी सोमा रायकुलवंसतिलया । अजियाअजियरहा हलमुसलकणकपाणी संखचक्कगयसत्तिनंदगधरा

॥ भाषा ॥

समुद्र सरीखा समुद्र । रणांगणे दुर्द्धर कोईथी वास्यानजाय । धनुषनाधरणहार । धैर्ययुक्तछे । युद्धे करी उपार्जी कीर्त्ति तेणे करी प्रधान पुरुषछे वडाकु लना उपना । महारत्न वज्रने अंगूठें करी चूर्णन करणहार । अर्द्ध भरतना ३ खंडना स्वामी । सौम्य अत्यंत ठंढा । राजकुलने वंशने विषे तिलकसमान छ अतक्केहथी जीप्या नथी । जेहनारथकेहथी जीप्यानथी । तथा हल मुसलछे हाथने विषे ते बलदेव । अने कणककहीबाणछे हाथने विषे जेहने ते वासु देव । शंख पांचजन्य चक्र सुदर्शन गदा कौमोदकी लकुट विशेष शक्ति त्रिशूल विशेष नंदकनामा खड्गना धरणहारछे । तथा प्रवर प्रधान उजलो सु

॥ टीका ॥

क्तिय त्रिशूलविशेषो नन्दकश्च नन्दकाभिधानः खड्ग स्तान्धारयंन्तीति शङ्खचक्रगदाशक्तिनन्दकधराः वासुदेवाः प्रवरो वरप्रभावयोगा दुज्वलः शुक्लत्वात् स्व
च्छतया वा सुकान्तः कान्तियोगात् पाठांतरे सुकृतसुपरिकर्म्मितत्वात् विमलो मलवर्ज्जितत्वात् गोथुभत्ति कौस्तुभाभिधानो यो मणिविशेष स्तं तिरीडंति
॥ २३७ ॥ किरीटंच मुकुटं धारयंति येते तथा कुंडलोद्योतिताननाः पुंडरीकवन्नयने येषांते तथा एकावली आभरणविशेषः सा कंठे ग्रीवायां लगिता विलंबिता
सती वक्षसि उरसिवर्त्तते येषांते एकावलीकंठलगितवक्षसः श्रीवत्साभिधानं सुष्ठुलाञ्छनं महापुरुषत्वसूचकं वक्षसि येषांते श्रीवत्सलाञ्छना वरयशसः सर्वत्र
विख्यातत्वात् सर्वर्त्तुकानि सर्वऋतुसंभवानि सुरभीणि सुगंधीनि यानि कुसुमानि तैःसुरचिता कृता या प्रलंबा आप्रपदीना शोभितत्ति शोभमाना कांता
कमनीया विकसंती फुल्लंती चित्रा पंचवर्णा वा प्रधाना माला स्रक् रचिता निहिता रतिदा वा सुखकारिका वक्षसि येषान्ते सर्वर्त्तुकसुरभिकुसुमसुर
चितप्रलंबशोभमानकांतविकसच्चित्रवरमालारचितवक्षसः तयाअष्टशतसंख्यानि विभक्तानि विविक्तरूपाणि यानि लक्षणानि चक्रादीनि तैः प्रशस्तानि मं

॥ मूल ॥

पवरुज्जलसुकंतविमलगोत्थुभतिरीडधारी कुंडलउज्जोइयाणणा पुंडरीयणयणा। एकावलिकंठलइयवच्छा सि
रिवच्छसुलंछणा वरजसा सव्वोउयसुरभिकुसुमरचितपलंबसोभंतकंतविकसंतविचित्तवरमालरइयवच्छा। अठ

॥ भाषा ॥

कांत निर्मल कौस्तुभ मणि विशेष अने मुकुट ने धारण करेछे। कुंडलनी प्रभाये करी उद्योतितछे मुख जेहनो। पुंडरीक कमल सरीखा मनोहर नेत्र
छे जेहना एकावली आभरण विशेष तेकंठे लगाडी विलंबितछे वक्षस्थलने विषे जेहने। श्रीवत्स नामा भलो लक्षणछे जेहने। वर प्रधानछे यश जेहनो।
सघली ऋतुना सुरभि सुगंध फूल तेणेकरी सुरचित कीधीछे प्रलंबायमानछे शोभायमान कांत कमनीय विकसंती पांचवर्ण नी प्रधान माला तेणेकरी.

॥ टीका ॥

गत्यानि सुंदराणि चमनोहराणि विरचितानि विहितानि अंगमंगत्ति अंगोपांगानि शिरोंगुल्यादीनि येषान्ते अष्टशतविभक्तलक्षणप्रशस्तसुंदरविरचितांगोपा. गाः तथा मत्तगजवरेन्द्रस्य योललितोमनोहरो विक्रमः संचरणंतद्वद्विलासिताः संजातविलासागतिर्गमनं येषान्ते मत्तगजवरेन्द्रललितविक्रमविलासितगत यः तथा शरद्भिवः शारदः सचासौ नवं स्तनित रसितं यस्मिं विर्घोषे स नवस्तनितः सचेति समासः सचासौ मधुरो गम्भीरश्च यः क्रौंचनिर्घोषः पक्षि विशेषनिनाद स्तद्वद्दुन्दुभिस्वरवञ्च स्वरो नादो येषांते शारदनवस्तनितमधुरगम्भीरक्रौंचनिर्घोषदुन्दुभिस्वराः इहच शरत्कालेहि क्रौंचा मायन्ति मधुरध्वन यश्च भवत्तोति शारदग्रहणं तथा पौनःपुण्येन शब्दप्रवृत्तो तद्वंगादमनोज्ञता तत्स्यादिति नवस्तनितग्रहणं स्वरूपोपदर्शनार्थं मधुरगंभीरग्रहणमिति तथा कटीसूत्र माभरणविशेष स्तत्प्रधानानि नोलानि बलदेवानां पीतानि वासुदेवानां कौशेयकानि वस्त्रविशेषभूतानि वासांसि वसनानि येषांते कटीसूत्रकनो

॥ मूल ॥

सयविन्नत्तलक्खणपसत्थसुंदरविरइयंगमंगा मत्तगयवरिंदललियविक्कमविलसियगई सारयनवथणियमुहुरगं भीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिसरा कडिसुत्तगनीलपीयकोसेज्जवाससा पवरदित्ततेया नरसीहा नरवई नरिंदा न

॥ भाषा ॥

मंडितछे वक्षस्थल जेहनो। तथा १०८ प्रगटरूप जे लक्षण चक्रादिकें करी प्रशस्त मंगलकारी मनोहर कोधाछे सर्वे अंगोपांग जेहना। मदोन्मत्त गजेंद्रनो सुललित मनोहर चालवो तेहनो परे विलास सहितछे गतो जेहनो। शरत्काल सम्बन्धी नवीन मेघनो जे गंभीर शब्द तेहवो गंभीरछे कंठनो शब्द दुंदुभी ना शब्द सरीखो मीठो क्रौंचपक्षी शरत्काले मस्तहोय तेमाटे तेहना शब्द सरीखो गंभीर स्वरछे जेहनो। कटिसूत्र कणदोर तेणेकरी सहितछे नीलापीला वस्त्र जेहना बलदेवना नोलावस्त्र वासुदेवना पीलावस्त्र। प्रधान दीप्तिवंत। मनुष्यमांहि विक्रम गुणे करी सिंह समान छे। नरपती छे। नरिन्द्र छे। नर

॥ टीका ॥

सपोतकौशेयवाससः प्रवरदीप्ततेजसो वरप्रभावतया वरदीप्तितयाच नरसिंहा विक्रमयोगा नरपतयः तन्नायकत्वात् नरेन्द्राः परमैश्वर्ययोगात् नरवृषभा उत्क्षिप्तकार्यभारनिर्वाहकत्वात् मरुद्वृषभकल्पाः देवराजोपमा अभ्यधिकं शेषराजेभ्यः राजतेजोलक्ष्म्या दीप्यमानाः नीलकपीतकवसना इति पुनर्भणनं निगमनार्थं कथं तेनवेत्याह दुवेदुवेइत्यादि एवच नववासुदेव नवबलदेवा इति तिविठ्ठय यावत्करणात् दुविठ्ठय सयंभुपुरिसुत्तमेपुरिससीहे। तहपुरिसपुंडरीयेदत्तेनारायणेकण्हेत्ति॥ १॥ अयलेविजयेभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आनंदेणंदणेपउमे रामेयावियपच्छिमेत्ति॥ २॥ कित्तीपुरिसाणंति कीर्त्तिप्रधानपुरुषाणामिति महुरायकणगरत्थू मारिथायायणंवरायगिहं कायदोकासवो महिलपुरोहयियं पुरंव तया गाजिजुरसंगामे तहइत्थिपराहगोरंगे भज्जाणुरागगोट्ठी परद्ढीमाउयाइयति तया म सगावेताए मेरएमहकेडमेनिसुंभेय वलिपहिराएतह रावणेयनवमेजरासंधेत्ति॥ ३॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं सव्वेवि

॥ मूल ॥

रवसहा मरुयवसनकप्पा अब्भहियरायतेयलच्छी पदिप्पमाणा नीलगपीयगवसणा दुवेदुवेरामकेसवान्नाय रोहोत्था तंजहा। तिविठ्ठय जावकण्हे अयलो जावरामेय अपच्छिमे एएसिणं णवण्हं वलदेववासु

॥ भाषा ॥

मांहि वृषभ समान छे पाखो भार वाहवा समर्थपणां थी। इन्द्र समान छे। अन्य राजा थकी अधिक राजतेज लक्ष्मीयें प्रदीप्तमान छे। नीला अने पीला छे वस्त्र जेहना दो दो राम अने केशव दोनुं भाइ होय राम तेवलभद्र केशव तेवासुदेव दुमात पिताएक दोनुंभाई होय। एणीचोवीसीये ८ बलदेव ८ वासुदेव थया तेकहे छे। त्रिपृष्ठ १। प्रथमथी यावत् शब्दे द्विपृष्ट २। स्वयम्भू ३। पुरुषोत्तम ४। पुरुषसिंह ५। पुरुष पुंडरीक ६। दत्त ७। नारायण ८ कृष्ण ९ इहांलगे जाणवा॥ अचल १। यावत् शब्दे विजय २। भद्र ३। सुप्रभ ४। सुदर्शन ५। आनंद ६। नंद ७। पद्म ८। राम ९। एहबलभद्र जाणि

देवाणं पुव्वभविया नवनामधेज्जाहोत्था तंजहा । विसभूईपव्वयए धणदत्तसमुद्ददत्तइसिवाले। पियमित्तललि यमित्ते पुणव्वसूगंगदत्तेय ॥ ५२ ॥ एयाइंनामाइं पुव्वभवेआसिवासुदेवाणं। एत्तोबलदेवाणं जहक्कमंकित्तइ स्सामि॥ ५३॥ विसनंदीयसुबंधू सागरदत्तेअसोगललिएय वाराहधम्मसेणे अपराइयरायललिएय ॥ ५४ ॥ एएसिंनवण्हं बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियानवधम्मायरियाहोत्था तंजहा । संभूएयसुभद्दे सुदंसणेसेयकण्ह गंगदत्तेअ । सागरसमुद्दनामे दुमसेणेणवमिएहोइ ॥ ५५ ॥ धम्मायरियाकित्ती पुरिसाणंवासुदेवाणं। पुव्वभवेएआसिं जत्थनियाणाइं कासीए ॥ ५६ ॥ एएसिणंनवण्हं वासुदेवाणं पुव्वभवे नवनियाणभूमीउहो ॥ मूल ॥

वा॥ एह बलदेव वासुदेवना पूर्व भवना ९ नामधेय कहे छे। विश्वभूति १ प्रव्रतक २ धनदत्त ३ समुद्रदत्त ४ ऋषिपाल ५ प्रियमित्र ६ ललितमित्र ७ पुन र्वसु ८ गंगदत्त ९। एह पूर्वभवने विषे वासुदेवना नाम थया। हिवे बलदेवना नाम कहे छे। विश्वनन्दी १ । सुबंधु २ । सागरदत्त ३ अशोक ४ ललित ५ वाराह ६ धर्मसेन ७ अपराजित ८ राजललित ९। एह ९ बलदेवना वासुदेवना पूर्व भवनेविषे धर्माचार्य हुआ ते कहे छे। संभूति १ सुभद्र २ सुदर्शन ३ श्रेयां स ४ कृष्ण ५ गङ्गदत्त ६ सागर ७ समुद्र ८ द्रुमसेन ९ धर्माचार्य थया कीर्त्तिपुरुष ९ बलदेववासुदेवना। जिहां नियाणाकीधा तणे समये ९ पूर्वभवने विषे नियाणा भूमि थई ते कहे छे। मथुरा १ यावत् शब्दे कनकवस्तु २ सावत्थी ३ पोतनपुर ४ राजगृह ५ काकंदी ६ कोसंबी ७ मिथिला ८ हथणापुर ९ ॥ भाषा ।

॥ टीका ॥

चक्कजोही सव्वेविहयासचक्केहिंति अणियाणकडारामा सव्वेंवियकेसवानियाणकडा उद्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामीत्ति आगमिस्सेणंति आगमिष्यता
कालेन आगमेस्साणंति पाठांतरे आगमिष्यता भविष्यता मध्ये सेत्स्यंतीति जंबूद्दीपैरवर्ते अस्या मवसर्पिण्यां चतुर्विंशति स्तीर्थंकरा अभूवन् तांश्च स्तुतिद्वा

॥ मूल ॥

स्या तंजहा । मङ्कराजावहत्थिणाउरंच एतेसिणंनवण्हं वासुदेवाणं नवनियाणकारणाहोत्था तंजहा । गावी
जुवे जाव माउआ । एएसिं नवण्हंवासुदेवाणं नवपडिसत्तूहोत्था तंजहा । आसग्गीवेजावजरासंधे । जा
यसचक्केहिं । एक्कोयसत्तमीए पंचयछठीए पंचमीएक्को । एक्कोयचउत्थीए कण्होपुणतच्चपुढवीए ॥ ५७ ॥
अणिदाणकडारामा सव्वेवियकेसवानियाणकडा । उड्ढंगामीरामा केसवसव्वेअहोगामी ॥ ५८ ॥ अठंतकडा
रामा एगोपुणबंभलोयकप्पम्मि । एक्कोसेगब्भवसही सिज्झिस्सइ आगामिस्सेणं ॥ ५९ ॥ जंबूद्दीवे० एरवए

॥ भाषा ॥

लगे जाणवो । एह वासुदेवना ९ नियाणाना कारण थया ते कहे छे । गाइ १ यावत्शब्दे यूपस्तंभ २ संग्राम ३ स्त्रीपराभव ४ रंग ५ स्त्रीनोराग ६ गोष्टी ७
परऋद्धी ८ मातापराभव ९ । एह वासुदेवना ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव थया ते कहे छे । अश्वग्रीव १ यावत् शब्देंतारक २ मेरक ३ मधुकैटभ ४ निशुंभ ५ बलि
६ प्रल्हाद ७ रावण ८ जरासंध ९ जाणवा ॥ एहप्रतिशत्रु कीर्त्तिपुरुष वासुदेवथी चक्रेकरी युद्धकरे पोतानाचक्रथी मरे । पहिलो वासुदेव सातमीये गयो पांच
वासुदेव छठीये गया एक वासुदेव पांचमीये गयो १ चउथीये गयो कृष्ण ३ जीये गयो । बलदेव नियाणा न करे सघला वासुदेव नियाणाना करणहार छे उंच
गति जाणहार राम नीचगति जाणहार वासुदेव । आठ राम बलदेव थकी माडी पहिला अंतकृत थया मुक्ति गया । १ बलभद्र ५ मे ब्रह्म देवलोके गयो ।

॥ टीका ॥

रेणाह तद्यथा वंद्राणणंगाहा चंद्राणणंसुचंदं अग्गिसेणंचनंदिषेणञ्च क्वचिदाग्निसेनोप्ययं दृश्यते ऋषिदिन्नं व्रतधारिणञ्च वंदामहे श्यामचन्द्रञ्च वंदामिगाहा वंदेयुक्तिसेनं क्वचिदयंदीर्घबाहु दीर्घसेनोवोच्यते अजितसेनं क्वचिदयंशतायु रुच्यते तथैव शिवसेनं क्वचिदयं सत्यसेनोभिधीयते सत्यकिश्चेति बुद्धंवावगततत्वञ्च देवशर्माणं देवसेनापरनामकं सततंसदावंदे इति प्रकृतं निक्षिप्तशस्त्रंच नामांतरतः श्रेयांसं असंजलं गाहा असंज्वलं जिनवृषभं पाठांतरेण स्वयंजलं वंदेअनंत जिन ममितज्ञानिनं सर्वज्ञमित्यर्थः नामांतरेणायं सिंहसेनइति उपशांतंच उपशान्तसंज्ञं धूतरजसं वन्दे खलु गुप्तिसेनंच अइपासंगाहा अतिपार्श्वंच सुपार्श्वं

॥ मूल ॥

वासे इमीसेउस्सप्पिणीए चउव्वीसंतित्थगराहोत्था तंजहा । चंदाणणंसुचंदं अग्गीसेणंचनंदिसेणंच । इसिदिन्नवयहारिं वंदामोसोमचंदंच ॥ ६० ॥ वंदामिजुत्तिसेणं अजियसेणंतहेवसिवसेणं । वुद्धंचदेवसम्मंसिद्धं निक्खित्तसत्थंच ॥ ६१ ॥ असंजलंजिणवसहं वंदेयअणंतयंअमियणाणिं । उवसंतंचधुवरयं वंदेखलुगुत्तिसे

॥ भाषा ॥

१भव वासना अंतरथी मोक्ष जास्ये जंबूद्वीपने विषे ऐरवते एणी अवसर्पिणीये २४ तीर्थंकर हुआ ते कहे छे चंद्रानन १ । सुचन्द्र २ । अग्निसेन ३ । नंदिसेन ४ ऋषिदिन्न ५ । व्रतधारी ६ । एहोने वादुछुं । सोमचंद्र ७ ॥ ६० ॥ युक्तिसेन ८ । बीजो नाम दीर्घ बाहु दीर्घसेन अजितसेन ९ बीजो नाम शतायु । शिवसेन १० बीजो नाम सत्यसेन । तपना जाण देवशर्म बीजो नाम देवसेन ११ । सीधाछे सकलकार्यजेहना एहवो निक्षिप्त शस्त्र बीजो नाम श्रेयांश १२ ॥ ६१ ॥ असंज्वल १३ जिन वृषभ बीजो नाम स्वयंजल १४ वांदो अनंतक १४ अमित ज्ञानी नामांतरे सिंहसेन उपशांत १५ । कर्मरज रहित वांदो गुप्तिसेन १६ ।

|| टीका ||

देवेश्वरवंदितंच मरुदेवं निर्वाणगतं च धरं धरसंज्ञं क्षीणदुःखंश्यामकोष्ठं जियगाहा जितरागमग्निसेनं महासेनमपरनामकं वंदे क्षीणरजस मग्निपुत्रंच व्यवकृष्टप्रेमद्वेषं च वारिषेणं गतं सिद्धमिति स्थानान्तरे किंचिदन्यथा प्यानुपूर्वीनाम्ना मुपलभ्यते महापद्मादयो विजयान्ता चतुर्विंशतिः एवमिदं सर्वं

 || मूल ||

णंच ॥ ६२ ॥ अतिपासंचसुपासं देवेसरवंदियंचमरुदेवं । निव्वाणगयंचधरं खीणदुहंसामकोठंच ॥ ६३ ॥ जियरागमग्गिसेणं वंदेखीणरयमग्गिउत्तंच वोक्कसियपिज्जदोसं वारिसेणंगयंसिद्धं ॥ ६४ ॥ जंबूद्दीवे० आगमिस्साएउस्सप्पिणीए भारहेवासे सत्तकुलगराभविस्संति तंजहा । मियवाहणेसुभूमेय सुप्पभेयसयंपभे दत्तेसुहुमेसुबंधूय आगमिस्साणहोक्खंति ॥ ६५ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए एरवए वासे दसकुलगराभविस्संति तंजहा । विमलवाहणे सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे दसधणू दढधणू सयधणू

|| भाषा ||

॥ ६२ ॥ अतिपार्श्व १७ । सुपार्श्व १८ देवेश्वरेवंदित मरुदेव १९ निर्वाण प्राप्त एहवा धर २० । दुःखरहित एहवा श्यामकोष्ट २१ ॥ ६३ ॥ राग द्वेष रहित अग्निसेन २२ बीजो नाम महासेन क्षय गईछे पापरज जेहनो एहवो अग्निपुत्र २३ । दूर कियाछे राग द्वेष जेणे एहवो वारिसेण २४ ॥ ६४ ॥ जंबूद्वीपना भरतने विषे आगामी उत्सर्प्पिणीये ७ कुलकर थास्ये ते कहे छे । मितवाहन १ । सुभूम २ । सुप्रभ ३ । स्वयंप्रभ ४ । दत्त ५ सूक्ष्म ६ । सुबंधु ७ । आवती चोवीसीये ७ एह कुलकर थासे ॥ ६५ ॥ जंबूद्वीपना ऐरवतने विषे आगामी काले १० कुलकर थासे ते कहे छे । विमलवाहन १ । सीमंकर २ । सीमंधर ३ ।

पडिसुई सुमुइइंति जंबूद्दीवेणंदीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउवीसं तित्थगराभविस्संति तंजहा । महापउमेसूरदेवे सुपासेयसयंपभे । सव्वाणुभूईअरहा देवस्सुएयहोरकई ॥ १ ॥ उदएपेढालपुत्ते य पोहिलेसतकित्तिय । मुणिसुव्वएयअरहा सव्वभावविऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय निप्पलाएयनि म्ममे । चित्तउत्तेसमाहीय आगमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ संवरअणियट्टीय विवाएविमलेतहा । देवोववाएअ रहा अणंतविजएइय ॥ ४ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं भरहेवासम्मिकेवली आगमिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेस गा ॥ ५ ॥ एएसिणंचउव्वीसाएतित्थकराणं पुव्वभवियाचउव्वीसंनामधेज्जा भविस्संति तंजहा । सेणियसुपा

॥ मूल ॥

क्षेमंकर ४ । क्षेमधर ५ । दृढधनु ६ । दशधनु ७ । शतधनु ८ । प्रतिश्रुति ९ । सुमति १० । जंबूद्वीपना भरतनेविषे आगामिकाले २४ तीर्थंकर थासे ते कहेछे । महापद्म १ । सूरदेव २ । सुपार्श्व ३ । स्वयंप्रभ ४ । सर्वानुभूति ५ । देवश्रुत ६ । उदय ७ । पेढाल पुत्र ८ । पोट्टिल ९ । शतकीर्त्ति १० । मुनिसुव्रत ११ । सत्यभाववित् अमम १२ । निष्कसाय १३ । निष्पलाक १४ । निर्म्मम १५ । चित्रगुप्ति १६ । समाधि १७ । संवर १८ । यशोधर १९ । अनर्द्धिक २० । विजय २१ । विमलवीजोनाममल्ली २२ । देवोपपात २३ । अनंतविजय २४ वीजोनाम अनंतवीर्य ॥ एह कह्या २४ तीर्थंकर भरतक्षेत्रनेविषे आवतीउत्सर्पिणीयेंहो सें धर्मतीर्थना प्रवर्त्तक धर्मतीर्थना उपदेशक ॥ ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पूर्वभवना नाम थास्ये तेकहेछे । श्रेणिकराजा १ । सुपास २ । उदय । ३ । पो

॥ भाषा ॥

सउदए पोट्टिलञ्चणगारतहदढाऊय । कत्तियसंखेयतहा नंदसुनंदेयसतएय ॥ १ ॥ बोधव्वादेवईय सच्चइत
हवासुदेवबलदेवे । रोहिणिसुलसाचेव तत्तोखलुरेवईचेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइसयाली बोधव्वेखलुतहाञ्चयाली
य । दीवायणेयकराहे तत्तोखलुनारएचेव ॥ ३ ॥ ञ्चंबडदारुमडेय साईबुद्धेयहोइबोधव्वे । ञ्चावीतित्थगराणं
णामाइंपुव्वञ्चवियाइं ॥ ४ ॥ एएसिणंचउव्वीसाए तित्थगराणंपियरोमायरोञ्चविस्संति । चउव्वीसंपढमसीसा
ञ्चविस्संति । चउव्वीसंपढमसिस्सणीञ्चञ्चविस्संति । चउव्वीसंपढमञ्चिक्खादायगाञ्चविस्संति । चउव्वीसंचे
इयरुक्खाञ्चविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे ञ्चारहेवासे ञ्चागमिस्साए उस्सप्पिणीए बारसचक्कवट्टिणोञ्चविस्संति

॥ भाषा ॥

ट्टिल अणगार ४ । दृढायु ५ । कार्त्तिकसेठ ६ । शंखश्रावक ७ । आनन्द ८ । सुनन्द ९ । शतक १० । देवकी ११ । सत्यकी १२ । कृष्णवासुदेव १३ । वलभद्र
१४ । रोहिणी । १५ । सुलसाश्राविका १६ वली रेवतीश्राविका १७ ॥ ॥ सयाल १८ । भयाल १९ । द्वीपायन कृष्णनाम २० । नारद २१ ॥ ॥ अंवड २२ ।
दारुमृत बीजोनाम अमरजीव २३ स्वातिबुद्ध २४ । एह आगामिउत्सर्प्पिणीये भावी तीर्थंकरपूर्वभवनाम जाणिवा ॥ एह २४ तीर्थंकरना २४ पिता होस्ये । २४
माता होस्ये । २४ प्रथम शिष्य थास्ये । २४ प्रथम साध्वी थास्यें । २४ प्रथम भिक्षादायक थास्यें । २४ चैत्यवृक्षथास्यें । जंबूद्वीपना भरत मे विषे आगामिउ
त्सर्प्पिणीये १२ चक्रवर्त्ती थास्यें तेकहेछे । भरत १ । दीर्घदंत २ । गूढदंत ३ । शुद्धदंत ४ । श्रीपुत्र ५ । श्रीभूति ६ । श्रीसोम ७ । पद्म ८ । महापद्म ९ । विम

तंजहा ।· अरहेयदीहदंते गूढदंतेयसुद्धदंतेय । सिरिउत्तेसिरिभूई सिरिसोमेयसत्तमेपउमे ॥ १ ॥ महापउमेय
विमल वाहणेविपुलवाहणेचेव रिट्ठेबारसमेतह आगामिअरहाहिवाउत्ता ॥ २ ॥ एएसिणंबारसएहंचक्कव
ट्टीणं बारसपियरोभविस्संति बारसमायरोभविस्संति । बारसइत्थीरयणाभविस्संति । जंबूद्दीवेणंदीवे भारहे
वासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेव वासुदेवपियरो भविस्संति नवबासुदेवमायरो नवबलदेव
मायरो भविस्संति । नवदसारमंडलाभविस्संति तंजहा । उत्तमपुरिसा मज्झिमपुरिसा पहाणपुरिसा तेयंसी
एवंसोचेवबखाणे भाणियव्वो जावनीलगपीतगवसणा । दुवेदुवे रामकेसवाभायरो भविस्संति तंजहा । नंदेय

ल वाहन १० । विपुलवाहन ११ । रिष्ट १२ । आवती २४ वीसीये भरतक्षेत्रना अधिपति थास्ये । एह १२ चक्रवर्त्तना १२ पिता अने १२ माता थास्ये ।
१२ स्त्रीरत्न होसे । । आवती उत्सर्प्पिणीये जंबूद्वीपनां भरतक्षेत्रविषे ६ बलदेव ६ वासुदेवनांपिताहोसे । ६ बलदेवनी माता होसे । ६ वासुदेवनी माताहोसे
६ । दशारमंडल होसे । जिम पूठे उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष प्रधान पुरुष वर्णव्याछे तेहिज भणिवो जिहांलगे नीला पीला वस्त्रना पहिरणहार ए
ह भावे । दोदो रामते बलदेव केशवते वासुदेव एविहुं भाईहोवे पिता १ माता जुई जुई होय तेकहेछे । नंद १ । नंदमित्र २ । दीर्घबाहु ३ । म
हाबाहु ४ । अतिबल ५ । महाबल ६ । बलभद्र ७ । द्विपृष्ट ८ । त्रिपृष्ट ९ । आवती २४ सीये वासुदेवना नाम जाणिवा हिवे बलदेवनाम कहेछे । ज

॥ मूल ॥

नंदमित्ते दीहबाहूमहाबाहू । अइबलेमहाबले बलभद्देयसत्तमे ॥ १ ॥ तिविठूयदुविठूय आगमिस्सेणव
रिहणो । जयंतेविजएभद्दे सुप्पभेयसुदंसणे आणंदे नंदणेपउमे संकरिसणअपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणंनवरहं
बलदेववासुदेवाणं पुव्वभवियाणवनामधेज्जाभविस्संति । नवधम्मायरियाभविस्संति । नवनियाणभूमीउ
नवनियाणकारणाभविस्संति । नवपडिसत्तूभविस्संति तंजहा । तिलएयलोहजंघे वइरजंघेयकेसरी पल्हा
एअपराजिए भीमसेणेमहाभीमे सुग्गीवेयअपच्छिमे ॥ ॥ एएखलुपडिसत्तू कित्तीपुरिसाणवासुदेवाणं ।
सव्वेविचक्कजोही हम्मिंहंतासचक्केहिं ॥ १ ॥ जंबूद्दीवेएरवएवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए चउव्वीसं ति
त्थकराभविस्संति तंजहा । सुमंगलेअसिठत्थे णिव्वाणेयमहाजसे धम्मज्झएयअरहा आगमिस्सेणहोरकई १

॥ भाषा ॥

य १ । विजय २ । भद्र ३ । सुप्रभ ४ । सुदर्शन ५ । आनन्द ६ । नंदन ७ । पद्म ८ । संकर्षण ९ । एह ९ वलदेव ९ वासुदेवना पूर्व भवनाम होस्ये । नवध
र्माचार्य धर्मगुरू थास्ये । नवनियाणा भूमिहोस्ये । नवनियाणाना कारण होस्ये । ९ प्रतिशत्रु प्रतिवासुदेव होस्ये । तेकहेछे । तिलक १ । लोहजंघ २ ।
वज्रजंघ ३ । केसरी ४ । प्रल्हाद ५ । अपराजित ६ । भीम ७ । महाभीम ८ । सुग्रीव ९ । एह प्रतिशत्रुकीर्ति पुरुष वासुदेव ना सघलाई प्रतिवासुदेव चक्रे
करी युद्धकरे आपणा चक्रथी मरणपावे । जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रे आवती उत्सर्पिणीये २४ तीर्थंकरहोस्ये तेकहेछे । सुमंगल १ । अर्थसिद्ध २ । निर्व्वाण ३.

॥ मूल ॥

सिरिचंदेपुप्फकेऊ महाचंदेयकेवली । सुयसागरेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ २ ॥ सिद्धत्थेपुण्णघोसेय महाघोसेयकेवली । सच्चसेणेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ३ ॥ सूरसेणेयअरहा महासेणेयकेवली । सव्वा णंदेयअरहा देवउत्तेयहोरकई ॥ ४ ॥ सुपासेसुव्वएअरिहा अरहेयसुकोसले । अरहाअणंतविजए आगमि स्सेणहोरकइ ॥ ५ ॥ विमलेउत्तरेअरहा अरहायमहावले । देवाणंदेयअरहा आगमिस्सेणहोरकई ॥ ६ ॥ एएवुत्ताचउव्वीसं एरवयम्मिकेवली । आगमिस्सेणहोरकंति धम्मतित्थस्सदेसगा ॥ ७ ॥ वारसचक्कवट्टिणो भविस्संति वारसचक्कवट्टिपियरोभविस्संति । वारसइत्थीरयणा भविस्संति नवबलदेववासुदेवपियरोभवि स्संति णववासुदेवमायरो णवबलदेवमायरोभविस्संति । णवदसारमंडलाभविस्संति । उत्तमपुरिसा मज्झि

॥ भा षा ॥

महायश ४ । धर्मध्वज ५ । श्रीचन्द्र ६ । पुष्पकेतु ७ । महाचन्द्र ८ । श्रुतसागर ९ । सिद्धार्थ १० । पूर्णवास ११ । महाघोष १२ । सत्यसेन १३ । सूरसेन १४ सिद्धसेन वीजोनाम । महासेन १५ । सर्वानंद १६ । सुपार्श्व १७ । सुव्रत १८ । सुकोमल १९ अनंतविजय २० विमल २१ । उत्तर २२ । महावल २३ । देवा नंद २४ होस्ये । ऐरवतक्षेत्रे २४ तीर्थंकर धर्मना उपदेशक । १२ चक्रवर्त्तिना पिताहोस्ये । ९ वासुदेवनी माता ९ वलदेवनीमाता होस्ये । ९ दशारमंडल होस्ये

॥ टीका ॥

सुगमं ग्रंथसमाप्तिं यावत् नवरं आयाएत्ति बलदेवादेरायातं देवलोकादे श्च्युतस्य मनुष्येषूत्पादः सिद्धिश्च यथारामस्येति एवं दोसुवित्ति भरतैरावतयो रागमि
ष्यतो वासुदेवादयो भणितव्याः इत्येव मनेकधार्थानुपदर्श्या धिकृतग्रंथस्य यथार्थान्यभिधानानि दर्शयितुमाह इत्येतदधिकृतशास्त्रमेव मनेनाभिधानप्रकारेणा
ऽख्यायते अभिधीयते तद्यथा कुलकरवंशस्य तत्प्रवाहस्य प्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इतिच इतिरूपदर्शने च शब्दः समुच्चये एवंतित्यगरवंसे इयत्ति यथा दिशे
॥ २४३ ॥ न कुलकरवंशप्रतिपादकत्वात् कुलकरवंश इत्येतदाख्यायते एवं देशत स्तीर्थकरवंशप्रतिपादकत्वा त्तीर्थकरवंश इति आख्यायते एतदिति एवं चक्रवर्त्तिवंशइति
च दशारवंशइति च गणधरवंश इति च गणधरव्यतिरिक्ताः शेषाजिनशिष्या ऋषय स्तद्वंशप्रतिपादकत्वा दृषिवंशइतिच तत्प्रतिपादनंचात्र पर्युषणाकल्पस्य

॥ मूल ॥

मपुरिसा पहाणपुरिसा जावदुवेदुवेरामकेसवा आयरोत्रविस्संति णवपडिसत्तूत्रविस्संति । णवपुव्वत्रवणा
मधेज्जा णवधम्मायरिया णवणियाणभूमीउ णवणियाणकारणा आयाएएरवए आगमिस्साए जाणियव्वा ।
एवंदोसुवि आगमिस्साए जाणियव्वा इच्चेयएवमाहिज्जंति तंजहा । कुलगरवंसेइय एवंतित्यगरवंसेइय ।

॥ भाषा ।

उत्तमपुरुष मध्यमपुरुष प्रधानपुरुष यावत् शब्दे बलदेव वासुदेव भाई होस्ये । नव प्रतिशत्रुनाम । पूर्वभवनाम । धर्माचार्य । नियाणा भूमि नियाणानो का
रण । बलदेवराजा आगामिकाले देवलोकादिक थकी च्यवी जिम मनुष्यभवे उपजस्ये सिद्धथासे ऐरवतक्षेत्रे तेसर्व भणिवो । एम भरत ऐरवत क्षेत्रे आ
गामिकाले बलदेववासुदेव होस्ये तेसर्व भणिवो । अनेकप्रकारे एम अंगीकृतशास्त्र एणे प्रकारे कहिये तेकहेछे । कुलकरवंश एम तीर्थंकरवंश चक्रवर्त्तिवंश

॥ टीका ॥

समस्तस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रतिक्रमेण भणितत्वा दतएव यतिवंशो मुनिवंश श्चैतदुच्यते यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायत्वात् तथा श्रुतमिति चैतदाख्यायते परोक्षतया त्रैकालिकार्थविबोधनसहत्वादस्य तथाश्रुतांगमितिवा श्रुतस्य प्रवचनस्य पुरुषरूपस्याङ्ग मवयवइतिक्रत्वा तथा श्रुतसमासइति समस्तसूत्रार्थाना मिह संक्षेपेणाभिधानात् श्रुतस्कंधइति वा श्रुतसमुदायरूपत्वादस्य समाएवत्ति समवायइति चासमस्तानां जीवादिपदार्थाना मभिधेय तयेहसमवायनात् मीलनादित्यर्थः तथा एकादिसंख्याप्रधानतया पदार्थप्रतिपादपरत्वादस्य संख्येति व्याख्यायते तथा समस्त म्परिपूर्ण न्तदेतदङ्ग माख्यात भगवता नेह श्रुतस्कन्धइयादिखण्डनेना चारादिव दङ्गेतेतिभावः तथा अज्झयणंतित्ति समस्त मेतदध्ययन मित्याख्यातं नेहोद्देशकादि खण्डनास्ति मस्यप

॥ मूल ॥

चक्कवट्टिवंसेइय दसारवंसेइय गणधरवंसेइय इसिवंसेइय जइवंसेइय मुणिवंसेइय सुएइवा सुत्रंगेइवा

॥ भाषा ॥

एमदशारवंश तेवासुदेव वलदेव वंश गणधरवंश एम ऋषिवंश यतिवंश मुनिवंश एह सर्वनां वंश एह समवायांगने विषे कह्याछे तेमाटेएहना नामकहि वा। यद्यपि यतिवंशमुनिवंश एह बेहुं ऋषिवाचीछे तथापि आचारने विषे यत्नकरे तेयती अर्थ जाणे तेमुनी तेहना ज्ञान एहमांकह्याछे तेमाटे श्रुतकहिये। परोक्षपणे त्रिकालनो अर्थावबोध। श्रुत पुरुष अंगनो अवयव सरीखो अवयव तेमाटेश्रुतांग। समस्त सूत्रमांहि संक्षेपे कहिवाथी श्रुत समास कहिये। श्रुतना अंशनो समुदायरूप तेमाटे श्रुतस्कंध कहिये। समस्त जीवादि पदार्थ एह मांहि अवतरया तेथी समवाय कहिये। एकादिक कोटाकोटि लगे

॥ टीका ॥

रिमादिष्विवे तिभावः इतिशब्दः समाप्तौ ब्रेमित्ति किलसुधर्म्मस्वामी जंबूस्वामिनंप्रत्याहस्मब्रवीमि प्रतिपादयाम्येतत् श्रीमन्महावीरवर्द्धमानस्वामिनः समीपे यदवधारित मित्यनेन गुरुपारम्पर्य्य मर्थस्य प्रतिपादित भवति एवञ्च शिष्यस्य ग्रन्थे गौरवबुद्धि रुपजनिता भवति आत्मनश्च गुरुषु बहुमानोदर्शित श्रौद्धत्यञ्च परिहृतं अयमेवार्थः शिष्यस्य सम्पादितोभवति मुमुत्तूणा ञ्चाय म्मार्ग्ग इत्यावेदितमिति समवायाख्य ञ्चतुर्थमङ्ग म्वृत्तितः समाप्तम् ॥ * ॥

॥ मूल ॥

सुयसमासेइवा सुयखंधेइवा समएइवा संखेइवा ॥ सम्मत्तमंगमक्खायंज्झयणत्तित्तिबेमि ॥ ॥

॥ इति समवायं चउत्थमंगं सम्मत्तम् ॥

॥ भाषा ॥

संख्या एहमा कही तेथी संख्यकग्रंथ कहिये। परिपूर्ण एह चौथो अंग भगवंते कह्यो। एह अध्ययन समस्त कह्यो इति शब्द समाप्ति वाचक अर्थे किल सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीप्रतें कहिता हुआ ॥ ॥ जिम भगवान महावीर स्वामि समीपे सांभल्यो तिम तुमारे आगलि कह्यो एणे करी गुरुपारंपर्यपणो गुरुने विषे बहुमानपणो देखाड्यो ॥ इति समवायांग सूत्रटब्बार्थ संपूर्णथयो ॥ * ॥ * ॥ * ॥ श्रीपार्श्वचंद्रसूरि संतानीयेन मुनिश्रवणस्य शिष्येण गणि मेघराजेन कृतोयं। टब्बार्थ श्लोक सख्या ५६५७ अस्यैव टीकां विलोक्य प्रज्ञानुसारेण लिखितोयं यद ज्ञानभावा द्यदहं लिखितं तस्मै मिथ्यादुष्कृतं विशोधनीयं च धीधनै रिति ॥ सूत्रटब्बार्थसंख्या ७१३५ ॥ * ॥ * ॥

नमः श्रीवीराय प्रवरवरपार्श्वाय च नमो । नमः श्रीवाग्देव्यै वरकविसभायाश्च पि नमः ॥ नमः श्रीसङ्घाय स्फुटगुणगुरुभ्योपि च नमो । नमः सर्वस्मै च प्रकृतविधि
साहाय्यककृते ॥ १ ॥ यस्य ग्रन्थवरस्य वाक्यजलधे र्लक्षं सहस्राणि च । चत्वारिंशदहो चतुर्भिरधिका मानं पदानामभूत् ॥ तस्योच्चैश्चुलुकाकृतिन्निदधतः कालादि
दोषात्तथा । दुर्लेखाऽखिलताङ्गतस्य कुधियः कुर्व्वन्तु किम्मादृशाः ॥ २ ॥ स्वङ्कष्टेतिनिधाय कष्टमधिकम्मामेन्यदा जायतां । व्याख्यानेस्य तथाविवेक्तुमनसामल्पश्रु
तानाममुं ॥ इत्यालोचयतातयापिकिमपिप्रोक्तंमयातत्त्वच । दुर्व्याख्यानविशोधनं विदधतु प्राज्ञाः परार्थोद्यताः ॥ ३ ॥ इहवचसिविरोधोनास्तिसर्वज्ञवाक्यात् ।
क्वचनतदवभासोयः समायात्मबुद्धेः ॥ वरगुरुविरहाद्वातीतकालेमुनीशै । र्गणधरवचनानांश्रस्तमज्ञातनाद्वा ॥ ४ ॥ व्याख्यानंयद्यपीदम्प्रवरकविवचःपारतंत्र्ये
णदृष्टं । सम्भाव्येऽस्मिंस्तथापिक्वचिदपिमनसोमोहतोर्थादिभेदः ॥ किन्तुश्रीसङ्घबुद्धैरनुशरणविधेर्भावशुद्धेश्चदोषो । मामेभूदल्पकोपिप्रशमपरमनास्ताच्चदेवोश्रु
तस्य ॥ ५ ॥ निःसम्बन्धविहारिहारिचरिताश्रीवर्द्धमानाभिधान् । सूरीन्ध्यातवतोतितीव्रतपसोग्रन्थप्रणीतिप्रभोः ॥ श्रीमत्सूरिजिनेश्वरस्यजयिनोदप्योयसांवा
ग्मिनां । तद्बन्धोरपिबुद्धिसागरइतिख्यातस्यसूरेर्भुवि ॥ ६ ॥ शिष्येणाभयदेवाख्य । सूरिणाविवृतिःकृता ॥ श्रीमतःसमवायाख्य तुर्याङ्गस्यसमासतः ॥ ७ ॥
एकादशसुशतेष्वथ । विंशत्यधिकेषुविक्रमसमानां ॥ अणहिलपाटकनगरे । रचितासमवायटीकेयम् ॥ ८ ॥ प्रत्यक्षरंनिरूप्यास्याः । ग्रन्थमानम्विनिश्चितं ॥
त्रीणिश्लोकसहस्राणि । पादन्यूनाचषट्शती ॥ ९ ॥ ॥ * ॥ ॥ * ॥ * ॥ * श्रीरस्तु

——————००*००——————

सकल भव्यजनोंको सविनय निवेदन करतेहैं कि लुंपकगणोपासक मुर्शिदावाद अजीमगंज निवासी श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुरने परोपकारार्थ छपवायके जैनागम का संग्रह किया सोऐसा कि ५०० पुस्तक ५०० जगह भंडारकरके स्थापित किये जिस्में साधु श्रावक प्रभृति पठन पाठनादिकरके स्वधर्ममें दृढभक्तियुक्त होय और धर्मवृद्धि ज्ञानवृद्धि होय उस आगम संग्रहका यह समवायांग चतुर्थभागहै इस ग्रंथको हमने बहुत प्रयाससे शोधनकरके छापाहै तथापि कोई जगह मतिमान् लोगोंको यदि अशुद्ध नजर आवे तो वहलोग शुद्धकरलें अशुद्ध रहजानेमें कारण यहहै कि अनेक हाथसे काम होताहै और हमलोगभी प्रमादीहै और प्रायः लेखकदोषसे पुस्तकोंमें नये २ पाठ नजर आतेहैं इस पुस्तकोंमें इस पाठहैं इसलिये बहुसंमत टीकासंमत और श्रीमदुपाध्याय रामचन्द्रजीगणीके विदित पारंपर्यानुसार पाठ रखके मुद्रितकिया इसमें भूलचूक होय तो आपलोगों की साक्षीसे मिथ्या दुष्कृत है ॥

मुद्रासहस्त्रकिरणै ग्रंन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ।
पुस्तककमलविकासी द्युनिग्रंजैनप्रज्ञाकरोजयतु ॥ १ ॥

———ooo———

॥ इति टीकावार्त्तिकसंवलितं श्रीसमवायाख्यं चतुर्थाङ्गं समाप्तिमगमत् ॥

श्रीयुत रायधनपतिसिंह बहादुर की तरफसे छापागया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

नानकचंदजती

गणधर सुधर्म स्वामि सङ्कलित सूत्र, [तदुपरि श्रीमदभयदेव सूरि कृता संस्कृत टीका] और मेघराजगणि कृत भाषा टीका युत

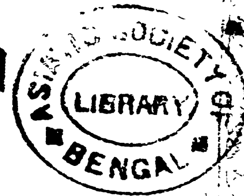
श्रीयुत राय धनपतिसिंह बहादुर के आगमसङ्ग्रह का भाग चउथा ४

अथवा

॥ समवायांग सूत्र चतुर्थाङ्ग ॥

बृहन्नागोरी लोंकागच्छीय वाचनाचार्य श्रीरामचन्द्रगणि शिष्य

ऋषि नानकचन्द से संशोधित होके मुद्रित हुवा



१०० जैनबुक सुसाइटी से
१०० राय धनपतिसिंह बहादुर